# क़राबादीन-ए-मासूमी

प्रकाशिका

नं: 46

सामान्य संपादक

प्रतापानंद झा

# क़राबादीन-ए-मासूमी

(फ़ारसी से हिन्दी अनुवाद)

लेखक

मुहम्मद मासूम बिन करीमुद्दीन शूश्तरी शीराज़ी

संपादक एवं अनुवादक

अब्दुल बारी फ़लाही

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन
॥ विज्ञानमुपास्व ॥
National Mission for Manuscripts

प्रकाशक

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, नई दिल्ली

असीला ऑफ़सेट प्रिंटर्स, नई दिल्ली

प्रकाशकः
राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन
11, मानसिंह रोड, नई दिल्ली-110001
E-mail : directornamami@gmail.com
Website : www.namami.org
फ़ोन : +91-1123073387

सह-प्रकाशकः
असीला ऑफ़सेट प्रिंटर्स
1307/8, कलाँ महल, दरयागंज, नई दिल्ली-110002
दूर भाषः 23289539 मोबाइल नं: 9871202888
E-mail : javedasila@gmail.com
ISBN : 978-93-80829-02-9 (Series)
978-93-80829-68-5

प्रथम संस्करण : 2019 ई0
मूल्य : 600/-

# विषय-सूची

❑❑❑

# आमुख

यह एक सत्य है कि भारत ज्ञान एवं साहित्य का संगम रहा है। इसकी सभ्यता एवं संस्कृति वर्षों पुरानी है। विभिन्न प्रकार के ज्ञान एवं कला के विकास एवं संरक्षण के संदर्भ में इस का नाम पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। एक अनुमान के अनुसार विभिन्न विषयों से संबंधित लगभग एक करोड़ पाण्डुलिपियाँ भारत की विभिन्न लाइब्रेरियों, संग्रहालयों, मठों और निजी पुस्तकालयों में सुरक्षित हैं।

''नेशनल मिशन फॉर मैनुस्क्रिप्ट'' की स्थापना का उद्देश्य इधर उधर फैली हुई पाण्डुलिपियों को एकत्रित करने और उन को नए तरीक़े से संरक्षित करना मात्र नहीं है अपितु महत्वपूर्ण पाण्डुलिपियों को संपादित कर के प्रकाशित करना भी है। इस मिशन के अंतर्गत विभिन्न विषयों से संबंधित अब तक बहुत सी अप्रकाशित पाण्डुलिपियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं।

यह पुस्तक ''क़राबादीन-ए-मासूमी'' का हिन्दी अनुवाद है। ''क़राबादीन'' यूनानी भाषा का शब्द है जिस का अर्थ है ''यौगिक औषधियाँ''। फ़ारसी तिब्बी अदब के हवाले से ''क़राबादीन-ए-मासूमी'' को विशेष महत्व प्राप्त है। इस के लेखक हकीम मोहम्मद मासूम बिन करीमुददीन शूश्तरी शीराज़ी, मुग़ल शहज़ादा मोहम्मद आज़म के निजी चिकित्सक थे। हकीम मासूम ने इस पुस्तक को 1649 ई० में अपने स्वर्गवास से पहले लिखा था। इसकी महत्वता का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि हकीम अलवी खाँ (1669 ई० में स्वर्गवासी) जैसे प्रसिद्ध तबीब और लेखक ने इस पुस्तक के हवाले दिए हैं। इस से पहले इस का प्रथम भाग एडिटिंग के पश्चात 2017 में प्रकाशित हो चुका है।

इस तिब्बी पाण्डुलिपि के अनुवादक डाक्टर अब्दुल बारी फ़लाही हैं जो लेखन, संपादन एवं अनुवाद के मैदान में बहुत ऊँचा मक़ाम रखते हैं। उन्होंने अरबी एवं फ़ारसी भाषा की विभिन्न तिब्बी पुस्तकों का उर्दू भाषा में अनुवाद किया है। इस पुस्तक का भी उर्दू भाषा में अनुवाद बहुत शीघ्र ही लोगों के सामने आएगा। डॉक्टर साहब

के इस कार्य को प्रकाशित कर के मुझे अत्याधिक हर्ष की अनुभूति हो रही है। मुझे उम्मीद है कि इस मिशन के अंतर्गत अन्य तिब्बी पाण्डुलिपियों के संपादन एवं अनुवाद के प्रकाशन का सिलसिला जारी रहेगा। यह मिशन उन सभी लोगों को हार्दिक धन्यवाद देता है जिन्होंने इस मिशन को सक्रिय बनाने एवं महत्वपूर्ण पाण्डुलिपियों के प्रकाशन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

प्रतापानन्द झा
डायरेक्टर
राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, नई दिल्ली

# प्राक्कथन

साहित्यिक भण्डार में क़राबादीन साहित्य की कहानी बहुत पुरानी है। इस में बढ़ोत्तरी के सुराग़ प्रत्येक काल में मिलते रहे हैं। इतिहास की पृष्ठिभूमि में अगर देखा जाए तो तिब्ब का साहित्य क़राबादीन के अतिरिक्त अदवियह मुफ़रदह (एकल द्रव्य औषधि), बयाज़ात (विभिन्न प्रकार की औषधियों के वर्णन वाली पुस्तक), मुजर्रबात (प्रमाणित औषधि), मअमूलात-ए-मतब (चिकित्सालय में प्रयोग में रहने वाली औषधियाँ) और अन्य शीर्षकों के अंतर्गत मिलता है। जहाँ तक अरबी भाषा में क़राबादीन का संबंध है, स्वंय ज़करिया राज़ी (Zakaria Razi) ने अपनी पुस्तक ''अलहावी अलकबीर फ़ितिब्ब'' में अलक़राबादीन अलक़दीम, अलक़राबादीन (लेखक हुनैन), अलक़राबादीन (लेखक इब्न-ए-सराबियून), अलक़राबादीन अलऔसत, अलक़राबादीन (लेखक अलहुबैश), अलक़राबादीन अस्सुहफ़, अलक़राबादीन अलअतीक़ और अलक़राबादीन अलकबीर के हवाले (References) दिए हैं।

अरबी भाषा की क़राबादीन पुस्तकों में साबूर इब्न-ए-सहल की अलक़राबादीन अलकबीर, याक़ूब किन्दी की किताबुलक़राबादीन, हुनैन इब्न-ए-इसहाक की किताबुन फ़ी असरारिल अदवियह अलमुरक्कबह, ज़करिया राज़ी की क़राबादीन, इब्नुलजज़्ज़ार की किताबुन फ़िलअदवियह अलमुरक्कबह (अलबुग़्यह), नजीबुद्दीन समरक़न्दी की मुजर्रबातुन फ़ितिब्ब, किताबुलक़राबादीन अलकबीर और किताबुलक़राबादीन अस्सग़ीर, बदरुद्दीन अलक़लान्सी की किताबुलक़राबादीन, मूसा बिन आज़ार की अलक़राबादीन, इब्न-ए-तिलमीज़ की क़राबादीन मारिस्तानी, हकीम अलवी खॉन की क़राबादीन, अबुलहसन ताहिर बिन इब्राहीम बिन मोहम्मद अश्शन्जरी की क़राबादीन ईज़ाहो महज्जतिलइलाज, हकीम सय्यद हसन अलवी बिन हकीम मोहम्मद हुसैन भोपाली की क़राबादीन मख़्ज़नुलजवाहर और सालेह आफ़िन्दी की क़राबादीन शाही एवं किताबुलक़राबादीन अलमुस्तअमलात महत्वपूर्ण क़राबादीन हैं। साबूर इब्न-ए-सहल की क़राबादीन तो वर्षों तक अस्पतालों एवं दवा बनाने वालों के बीच प्रचलित रही है। इस सिलसिले को इब्न-ए-तिलमीज़ की क़राबादीन ने समाप्त किया। इब्न-ए-जुलजुल, इब्न-ए-सीना, सईद बिन हिबतुल्लाह और सहलान बिन मिकयान की क़राबादीन पुस्तकों की मान्यता तो एक लम्बे समय तक रही।

बयाज़ पुस्तकों में जिन हकीमों की पुस्तकों का विशेष महत्व रहा है, उनमें हकीम अली गीलानी, ब्रादर मीर सय्यद वारिस अली, हकीम इस्माईल अकबराबादी, हकीम सय्यद करम हुसैन, हकीम अब्दुलक़ादिर खॉन, हकीम अब्दुर्रहमान खॉन पीलीभीती, हकीम निसार अली, शैख़ ताहिर और मिर्ज़ा मुहम्मद हबीबुल्लाह की पुस्तकें "बयाज़" के नाम से लाइब्रेरियों में पाई जाती हैं। इसी प्रकार हकीम ज़ियाउलहसन भोपाली और हकीम नूरुलहसन की बयाज़-ए-खुर्द, हकीम अब्दुलहई और हकीम हमीदुद्दीन की बयाज़-ए-तिब्बी, हकीम अलवी खॉन की बयाज़-ए-अलवी, हकीम ग़ुलाम-ए-किब्रिया खॉन की बयाज़-ए-ग़ुलाम-ए-किब्रिया, हकीम बदरुद्दीन की बयाज़-ए-मुसल्लस, हकीम हम्दुल्लाह की बयाज़ुन फ़ित्तिब्ब, हकीम अहमद अली की बयाज़-ए-मुजर्रबात, हकीम मुहम्मद किफ़ायतुल्लाह बहादुर, हकीम सआदत अली खॉन बहादुर और नवाब सय्यद अली खॉन की बयाज़-ए-नुस्खाजात, हकीम इफ़्तिखार अली खॉन की बयाज़-ए-तिब्ब, हकीम वारिस अली की बयाज़-ए-फ़वाइद-ए-वारिसियह, मुहम्मद अब्दुर्रहमान की बयाज़-ए-मुजर्रबात-ए-रहमानी, हकीम मुहम्मद अकबर अरज़ानी की बयाज़-ए-मुजर्रबात, आबिद अली मीर की बयाज़-ए-मुजर्रबात, किशन लाल की बयाज़-ए-मुजर्रबात, हकीम अली मुहम्मद की बयाज़-ए-नुस्खाजात व मुजर्रबात और हकीम मुआलिज खॉन की बयाज़-ए-नुस्खा मुजर्रबात-ए-मअमूलात अत्याधिक महत्वपूर्ण पुस्तकें हैं।

यौगिक औषधियों का वर्णन हकीमों ने मुजर्रबात के शीर्षक के साथ भी किया है। उदारहण के तौर पर सअदुल्लाह ज़न्जानी की तजरबातुलमुजर्रबात, हकीम मुहम्मद शरीफ़ खॉन की तुहफ़तुलमुजर्रबात, हकीम जमालुद्दीन की तुहफ़तुलमुजर्रबात जमाली, हकीम अली ज़मां खॉन की मुजर्रबुलमुजर्रबात, हकीम मुहम्मद अली की मुजर्रबात, हकीम क़ाज़ी रहमुल्लाह की मुजर्रबुलअतिब्बा, बू अली खॉ की मुजर्रबात, जमीलुद्दीन बिन मुहम्मद हसनुद्दीन की मुजर्रबात-ए-जमाली, बच्चू लाल तमकीन की मुजर्रबात, हकीम सय्यद मुहिब्ब हुसैन फ़ैलसूफ़ जंग की मुजर्रबात-ए-फ़लसफ़ी, हकीम मीर यहया बिलगरामी की मुजर्रबात-ए-यहया, मुजर्रबात-ए-हिन्दी, मुजर्रबात-ए-हाशमी, मुजर्रबात-ए-अलवी खाँ, मुजर्रबात-ए-हकीम रहमत शाह, मुजर्रबात-ए-नवाब सय्यदुलमलिक, मुजर्रबात-ए-मौलवी उम्दतुलअस्र, हकीम खादिम अली की मुजर्रबात-ए-नुस्खाजात, हकीम नईमुल्लाह की मुजर्रबात-ए-नईमी, हकीम मुहम्मद काज़िम तबरेज़ी की मुजर्रबात-ए-तबरेज़ी, मुजर्रबात-ए-हकीम इब्राहीम लखनवी, मुजर्रबात-ए-हकीम सादिक़ अली, हकीम सय्यद मुहम्मद अब्दुल्लाह की मुजर्रबात-ए-शाफ़िया, मुजर्रबात-ए-ग़ुलाम मुहिय्युद्दीन, मुजर्रबात-ए-अली ज़ामिन, हकीम अब्दुलहक़ इलाहाबादी की मुजर्रबात-ए-अब्दुलहक़ आदि इस संदर्भ में बहुत ही महत्वपूर्ण पुस्तकें मानी जाती हैं।

"मतब" के नाम से लिखी गई पुस्तकें भी इसी श्रेणी में आती हैं जैसे मतब अलवी खान, मतब-ए-मुरतइश, मतब-ए-याक़ूब लेखक हकीम अकरम रज़ा, मतब-ए-मसीहुद्दौलह, दस्तूरात-ए-मतब मोहम्मद हाशिम अली खान, मतब-ए-हकीम मोहम्मद बाक़र, मतब-ए-अहमदी लेखक हकीम अहमद रज़ा खान और मतब-ए-हकीम इमामुद्दीन खान।

क़राबादीन के शीर्षक के साथ फ़ारसी भाषा में जो साहित्य उत्पन्न हुआ उन में क़राबादीन-ए-जअफ़र अली मोमिन, क़राबादीन-ए-हकीम मुहम्मद शरीफ़ खाँ, क़राबादीन-ए-शैख़ मुहम्मद ताहिर, क़राबादीन-ए-इस्कन्दरी, क़राबादीन-ए-असलमी, क़राबादीन-ए-सिरयानी, क़राबादीन-ए-नज़ीर जान मुहम्मद सिद्दीक़ी गुजराती देहलवी, क़राबादीन-ए-आज़म अफ़सरुल अतिब्बा हकीम मुहम्द हसन भोपाली, क़राबादीन-ए -बदीई, क़राबादीन-ए-दाराशिकोही (गन्ज बादआवरद), मुहम्मद अताउल्लाह खॉन क़ुरैशी की क़राबादीन-ए-अताई, खाक़ान मुहम्मद मिर्ज़ा के खिताब से प्रसिद्ध अब्दुलकरीम की क़राबादीन-ए-काफ़ी, सय्यद मुहम्मद बख़्श की क़राबादीन-ए-करामतुश्शिफ़ा, हकीम मुहम्मद आरिफ़ पटनी की क़राबादीन-ए-मुम्ताज़िया, हकीम मुज़फ्फ़र बिन मुहम्मद हुसैनी शिफ़ाई असफ़हानी की क़राबादीन-ए-शिफ़ाई, हकीम मुहम्मद अकबर अरज़ानी की क़राबादीन-ए-क़ादरी, मीर मुहम्मद हुसैन बिन सय्यद मुहम्मद हादी अक़ीली अलवी की मजमउलजवामे अर्थात क़राबादीन-ए-कबीर, हकीम जलालुद्दीन अमरोही की क़राबादीन-ए-जलाली, हकीम मुहम्मद इस्माईल बिन हकीम बक़ा खॉ की क़राबादीन-ए-बक़ाई, हकीम ज़काउल्लाह खॉ की क़राबादीन-ए-ज़काई, हकीम मुहम्मद शरीफ़ खान की इलाजुलअमराज़, हकीम अहसन खान की अहसनुलक़राबादीन, हकीम मुहम्मद आज़म खॉ की क़राबादीन-ए-आज़म और मासूम बिन करीमुद्दीन शोस्तरी शीराज़ी की क़राबादीन-ए-मासूमी बहुत महत्वपूर्ण हैं।

फ़ारसी भाषा में तिब्ब के साहित्य में क़राबादीन-ए-मासूमी को विशेष स्थान प्राप्त है। इस के लेखक हकीम मुहम्मद मासूम बिन करीमुद्दीन शोश्तरी शीराज़ी उच्च कोटी के तबीब थे, उन्हें रोग के मूल्यांकन में महारत थी, मुग़ल राजकुमार के विशेष सेवक थे और उस के स्वास्थ्य संबंधी मामलों को देखते थे। राजकुमार मुहम्मद आज़म को उस के जलोदर रोग के संबंध में बता दिया था, साथ ही उस के उपचार, आहार विशेष और परहेज़ के बारे में हिदायत दी थीं प्रन्तु उस ने उस के उपचार में लापरवाही और बदपरहेज़ी की जिस के कारण उसी रोग से उस की मौत हो गई।

हकीम मुहम्मद मासूम बिन करीमुद्दीन शेशतरी शीराज़ी की यह पुस्तक इस विषय की बहुत महत्वपूर्ण और क़राबादीन की किताबों में उच्च कोटी की मानी जाती है। यह

भारत के विभिन्न पुस्तकालयों के अन्दर पाण्डुलिपि रूप (Manuscript form) में उपलब्ध है। तिब्ब के प्रसिद्ध ज्ञानी, लेखक और अनुवादक हकीम अब्दुल बारी फ़लाही शिक्षक कुल्लियात विभाग, जामिया हमदर्द, नई दिल्ली, ने इस पुस्तक की महत्वता को देखते हुए सब से पहले इस के विभिन्न पाण्डुलिपि नुस्खों को सामने रख कर एक नुस्खा तैयार किया, फिर उस का उर्दू और हिन्दी भाषा में अनुवाद किया। आप के समक्ष इस का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किया जा रहा है। उम्मीद है कि तिब्बी दुनिया में उन की यह कोशिश बहुत ही सम्मान की नज़र से देखी जाएगी।


हकीम वसीम अहमद आज़मी
(भूतपूर्व डिप्टी डायरेक्टर)
सेन्ट्रल रिसर्च इन्स्टीच्यूट ऑफ़ यूनानी मेडिसिन
लखनऊ

# दो शब्द

क़राबादीन, यूनानी भाषा का शब्द है जिस का अर्थ है "यौगिक औषधियाँ"। तिब्ब के इतिहास का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि तिब्ब के प्रारंभिक काल में उस की वह महत्वता नहीं थी जो उसे अब्बासी शासनकाल (750 से 1258 ई० तक) में प्राप्त हुई। अरब शसकों की इस तिब्ब से दिलचस्पी के कारण इसे अत्याधिक उन्नति प्राप्त हुई। यही कारण है कि सर्वप्रथम जिस व्यक्ति की क़राबादीन का उल्लेख मिलता है वह योहन्ना इब्न-ए-मासवैह (सन 857 ई० में स्वर्गवासी) है। उस ने इस पुस्तक द्वारा दुनिया के सामने क़राबादीन का एक नया रूप प्रस्तुत किया और तत्पश्चात यह श्रंखला बढ़ती ही चली गई। प्रारंभ में इस क्षेत्र में अपना योगदान देने वाले कुछ लोगों के नाम यहाँ प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

- साबूर इब्न-ए-सहल (869 ई० में स्वर्गवासी)
- याक़ूब किन्दी (870 ई० में स्वर्गवासी)
- हुनैन इब्न-ए-इसहाक़ (877 ई० में स्वर्गवासी)
- ज़करिया राज़ी (865 ई० से 925 ई० तक)
- इब्नुलजज्ज़ार (979 ई० में स्वर्गवासी)
- इब्न-ए-जुलजुल (976 ई० से 1007ई० तक)
- इब्न-ए-सीना (980 ई० से 1037 ई० तक)
- सईद इब्न-ए-हिबतुल्लाह (1101 ई० में स्वर्गवासी)
- इब्न-ए-तिलमीज़ (1119 ई० से 1164 ई0 तक)
- सहलान इब्न-ए-मिकयान (990 ई० में स्वर्गवासी)
- नजीबुद्दीन समरक़न्दी (1222 ई० में स्वर्गवासी)

क़राबादीन (Pharmacopoeia) के लेखन में भारतीय हकीम भी पीछे नहीं रहे। उन्होंने अपनी शेध द्वारा क़राबादीन को एक नई दिशा प्रदान की। उन्हों ने जहाँ एक ओर एकल द्रव्य औषधियों की खोज में अंथक मेहनत की वहीं दूसरी ओर उन औषधियों के संयोजन के साथ नए नुस्खों की बढ़ोत्तरी पर भी काम किया। उन्हों ने क़राबादीन जैसे विषय पर जो पुस्तकें लिखी हैं उन में से कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें निम्नलिखित है।

- क़राबादीन-ए-शिफ़ाई, लेखक हकीम मुज़फ्फ़र इब्न-ए-मुहम्मद हुसैनी शिफ़ाई अस्फ़हानी।
- क़राबादीन-ए-क़ादरी, लेखक हकीम मु. अकबर अरज़ानी।
- मजमउलजवामे (क़राबादीन-ए-कबीर), लेखक हकीम मीर मुहम्मद हुसैन इब्न-ए-सय्यद मुहम्मद हादी अक़ीली अलवी।
- इलाजुल अमराज़, लेखक हकीम मुहम्मद शरीफ़ खान।
- क़राबादीन-ए-जलाली, लेखक हकीम जलालुद्दीन अमरोही।
- क़राबादीन-ए-बक़ाई, लेखक हकीम मुहम्मद इस्माईल इब्न-ए-हकीम बक़ा खान।
- क़राबादीन-ए-ज़काई, लेखक हकीम ज़काउल्लाह खान।
- अहसनुलक़राबादीन, लेखक हकीम अहसन ख़ान।
- क़राबादीन-ए-आज़म, लेखक हकीम मुहम्मद आज़म ख़ान।
- क़राबादीन-ए-नजमुलग़नी, लेखक हकीम नजमुलग़नी।

उपर्युक्त पुस्तकों की महत्वता अपने स्थान पर सुनिश्चित है। इन में से अधिकतर पुस्तकें कई बार छप चुकी हैं। कुछ का अनुवाद भी किया जा चुका है। लेकिन वर्तमान में इस विषय से संबंधित कुछ ऐसी पुस्तकों का पता चला है जिन की ओर लेखकों ने अधिक ध्यान नहीं दिया है। इन में से अधिकतर पुस्तकें विभिन्न लाइब्रेरियों एवं निजी पुस्तकालयों में रखी हुई हैं।

- क़राबादीन अलक़लान्सी (अरबी भाषा में), लेखक बदरुद्दीन मुहम्मद बिन बहराम बिन मुहम्मद अलक़लान्सी।
- क़राबादीन-ए-मासूमी (फ़ारसी भाषा में), लेखक मुहम्मद मासूम बिन करीमुद्दीन शोश्तरी शीराज़ी।
- क़राबादीन-ए-काफ़ी (फ़ारसी भाषा में), लेखक अब्दुलकरीम, जो कि खाक़ान मुहम्मद मिर्ज़ा ख़ाँ बिन हकीम मुहम्मद यूसुफ़ ख़ान के नाम से प्रसिद्ध हैं।
- क़राबादीन-ए-अलवी ख़ान (फ़ारसी भाषा में), लेखक हकीम अलवी खान।
- क़राबादीन-ए-फ़रहतुलउयून (फ़ारसी भाषा में), लेखक सय्यद मुशर्रफ़।
- क़राबादीन (फ़ारसी भाषा में), लेखक इमादुद्दीन महमूद शीराज़ी।
- क़राबादीन-ए-जलाली (फ़ारसी भाषा में), लेखक मौलाना हाजीजलाल बिन अमीन तबीब मुर्शिदी गाज़रूनी।
- क़राबादीन-ए-फ़िरंगी (फ़ारसी भाषा में), लेखक हकीम डिसिल्वा फ़िरंगी।
- शिफ़ाउस्सालेह क़राबादीन (फ़ारसी भाषा में), लेखक हकीम मुहम्मद सालेह ख़ान बिन हाजी मुहम्मद ज़ाहिर बेग शीराज़ी।

- क़राबादीन-ए-ख़ान ज़मानी या गंज बादआवरद साहब-ए-क़िरानी (फ़ारसी भाषा में), लेखक हकीम अमानुल्लाह ख़ान।
- क़राबादीन-ए-सिकन्दरी (फ़ारसी भाषा में), लेखक हकीम सिकंदर बिन हकीम इस्माईल।
- क़राबादीन-ए-आज़म (फ़ारसी भाषा में), लेखक हकीम मुहम्मद मोहसिन अफ़सरूलअतिब्बा भोपाली।
- क़राबादीन-ए-कबीर (फ़ारसी भाषा में), लेखक हकीम मिर्ज़ा इस्माईल।
- क़राबादीन-ए-अहमदी (फ़ारसी भाषा में), लेखक हकीम अहमदुल्लाह देहलवी।
- क़राबादीन-ए-क़ासिम (फ़ारसी भाषा में), लेखक हकीम मुहम्मद क़ासिम।
- क़राबादीन-ए-मख़्ज़नुलजवाहिर (फ़ारसी भाषा में), लेखक सय्यद हसन अलवी बिन हकीम अहमद हुसैन भोपाली।

उपर्युक्त पंक्तियों में बहुत ही प्रसिद्ध एवं लाभदायक पुस्तकों का उल्लेख किया गया है। आवश्यकता इस बात की है कि उन की वास्तविकता को दुनिया के सामने लाया जाए और इस प्रकार की अन्य पुस्तकें, जो अभी तक लाइब्रेरियों में पड़ी हैं, उन को शिक्षित वर्ग के लोगों तक पहुँचाया जाए।

इन पुस्तकों में से, मैं ने जिस पुस्तक को चुना है, वह है "क़राबादीन-ए-मासूमी"। इस पुस्तक के लेखक हकीम मुहम्मद मासूम बिन करीमुद्दीन शोश्तरी शीराज़ी हैं। पुस्तक "मआसिर-ए-आलमगीर" के अनुसार, मासूम ख़ान प्रारंभ में राजकुमार आज़म ख़ान के विशेष नौकर थे। एक बार उन्हों ने राजकुमार की स्थिति देख कर बताया कि उसे जलोदर रोग हो गया है और उस को दवा के साथ परहेज़ की भी अधिक आवश्यकता है। लेकिन उस ने इस बात पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया। अंततः मासूम ख़ान के स्वर्गवासी हो जाने के दो साल बाद ही वह जलोदर रोग से ग्रस्त हो गया और लंबे समय तक उस से पीड़ित रहा।

"क़राबादीन-ए-मासूमी" को संपादन एवं अनुवाद के लिए चुनने के बहुत से कारण हैं।

एक कारण यह है कि इस पुस्तक को प्रमाण के तौर पर प्रयोग किया जाता है। हकीम मासूम ख़ान के बाद जिन हकीमों ने क़राबादीन को अपने लेखन का विषय बनाया, उन में से अधिकतर ने इस से लाभ उठाया है और इस के हवाले (References) भी दिए हैं, उदाहरण के तौर पर हकीम अलवी ख़ान(1669.1749 BC), जो अपने युग के बहुत ही प्रसिद्ध हकीम और प्रमुख लेखक हुए हैं, उन्हों ने औषधियों के संदर्भ में इस पुस्तक से कई हवाले (References) दिए हैं।

दूसरा कारण यह है कि इस पुस्तक की भाषा बहुत सरल अथवा प्रवाही है। इस के अर्थ को समझने में अत्याधिक सोच-विचार की आवश्यकता नहीं पड़ती है।

तीसरा कारण यह है कि इस पुस्तक के बहुत से हस्तलिपि नुस्ख़े भारत की विभिन्न लाइब्रेरियों में उपस्थित हैं जिन में से कुछ तो बहुत ही सुन्दर और साफ़ सुथरे हैं। इन में से कई नुस्ख़ों को एक साथ रखने से अनुवाद करने में कोई कठिनाई नहीं होती है।

चौथा कारण यह है कि लेखक ने इस पुस्तक में क़राबादीन के दृष्टिकोण से सभी पहलुओं को बयान करने का प्रयत्न किया है, साथ ही मनुष्य के मन में औषधियों और उन की निमार्ण-विधि के संदर्भ को अगर कोई प्रश्न उठता है तो उस का उत्तर इस पुस्तक में बड़ी आसानी से मिल जाता है।

जब मुझे इस बात की संतुष्टि हो गई कि इस हस्तलिपि नुस्ख़े के संपादन और अनुवाद से तिब्ब (Medicine) के शोधकर्ता लाभान्वित होंगे, तब मैं ने इस पुस्तक के हस्तलिपि नुस्ख़ों को खोजने और उन को प्राप्त करना प्रारंभ कर दिया। प्रारंभ में मैं ने देश की प्रसिद्ध लाइब्रेरियों से पत्राचार के माध्यम से संपर्क किया, प्रन्तु इस मेहनत का भली भाँति परिणाम नहीं मिला। कुछ लाइब्रेरियों से कई बार याद दिलाने के बावजूद कोई उत्तर नहीं मिला और कहीं से आधा अधूरा ही साकारात्मक जवाब मिला। अंततः एक लंबे समय तक लगातार प्रयत्न करने के पश्चात सफलता का द्वार खुला और कई लाइब्रेरियों से नुस्ख़ों की प्राप्ति का रास्ता साफ़ हुआ। उन नुस्ख़ों के नाम निम्न हैं।

- सालार जंग म्यूज़ियम लाइब्रेरी, हैदराबाद।
- खुदा बख़्श ओरिएन्टल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना।
- मौलाना आज़ाद लाइब्रेरी, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़।
- रामपुर रज़ा लाइब्रेरी, रामपुर।
- इब्न-ए-सीना एकेडिमी आफ़ मिडिवेल मेडिसिन एन्ड साइन्सेज़, अलीगढ़।
- आंध्राप्रदेश गवर्नमेन्ट मेनुस्क्रिप्ट लाइब्रेरी एन्ड रिसर्च इन्स्टीच्यूट, हैदराबाद।
- हकीम मोहम्मद सईद सेन्ट्रल लाइब्रेरी, जामिया हमदर्द, नई दिल्ली।

इन सभी नुस्ख़ों को ध्यानपूर्वक पढ़ने के बाद सब से बेहतर नुस्ख़ा मौलाना आज़ाद लाइब्रेरी, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़ का नज़र आया जिस को लिखने वाले व्यक्ति ने बहुत ही ध्यानपूर्वक लिखा है। इसी प्रकार रज़ा लाइब्रेरी, रामपुर का नुस्ख़ा भी साफ़ सुथरा है। खुदा बख़्श ओरिएन्टल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना के नुस्ख़े की लिखावट बड़े अक्षरों के साथ सुन्दर तो है लेकिन उस में जगह जगह पर

अस्पष्ट और ऐसे शब्द मिलते हैं जो समझ से बाहर हैं। इन नुस्खों का तुलनात्मक अध्ययन के बाद एक निर्णायक नुस्ख़ा तैयार किया गया और इस बात की हर प्रकार से कोशिश की गई कि यह प्रूफ़ रीडिंग (Proof-reading) की ग़लतियों से पाक हो।

अब आप की सेवा में फारसी भाषा में लिखी गई क़राबादीन-ए-मासूमी का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किया जा रहा है और यह अनुवाद उसी Edited work को सामने रख कर किया गया है। इस कार्य में सम्मिलित सभी लोगों की यह कोशिश रही है कि प्रस्तुत अनुवाद बहुत ही शुद्ध रूप में प्रकाशित हो। इतना ध्यान रखने के बावजूद गलती की संभावना बाक़ी ही रहती है क्योंकि मनुष्य ग़लती एवं भूल का मिश्रण होता है। फिर भी कोई भूल चूक अगर पाठकों के सामने आए तो अवश्य ही हमें उस से अवगत कराने की कृपा करें ताकि उस में सुधार किया जा सके।

यह लेखन उस समय तक सम्पूर्ण नहीं हो सकता जब तक कि उन सभी लोगों का आभार व्यक्त ना किया जाए जिन्होंने इस कार्य में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अतः मैं उन सभी लोगों को दिल की गहराइयों से धन्यवाद देता हूँ जिन्हों ने इस पुस्तक के अनुवाद में मेरी सहायता की। साथ ही मैं उन दोस्तों और भाइयों का भी आभारी हूँ जिन्हों ने इस पुस्तक की कम्पोज़िंग और Proof-reading और प्रकाशन में मेरी सहायता की।

इश्वर से प्रार्थना है कि उन सब को, जिन्होंने इस महत्वपूर्ण कार्य को बढ़िया ढंग से लोगों के सामने प्रस्तुत करने में अपना सहयोग दिया, बेहतर बदला दे। मुझे उम्मीद है कि पाठक गण इस प्रयत्न को स्वीकृति देंगे अथवा इस से अधिक से अधिक लाभ उठाएँगे।

अनुवादक
अब्दुल बारी फ़लाही
जामिया हमदर्द, नई दिल्ली

# लेखक की बात

जो पवित्र ज़ात स्वयं ही सम्पूर्ण ज्ञानी हो, उस की प्रशन्सा ज़बान से पूर्ण रूप से कर पाना संभव नहीं है, जो उस की ऊँचे ऊँचे मीनारों की भाँति महान पवित्रता के गुणगान में अपनी बेबसी एवं असमर्थता स्वीकार करती हो, उस की महानता ऐसी है कि उस के क़ानून और हिकमत के शोले और भाप की ताप मनुष्य के अन्दर घुस कर नुज़्ज देने (Concoction) के लिए जोश में है। उस का अस्तित्व ऐसा आदरणीय है कि उस की सत्यता में झांकने वाले मिट्टी के टीलों की ज़बान उस का वर्णन करने में असमर्थ है। वह हर प्रकार की अच्छाईयों का मलिक, पवित्र और ऐसा एक मात्र चिकित्सक है जिस का कोई उदाहरण नहीं है। उस के दान अनुदान की यह स्थिति है कि उस की कुशलता के हर संभव तरीक़ों से बीमारों तक पहुँच है, उस ने चारों मौसमों में उपचार की ऐसी विशेषता रखी है कि प्रत्येक प्रकार की एवं प्रत्येक दिशा की हवाओं में विकास की शक्ति उत्पन्न हो जाती है ताकि दवा तैयार करने वालों द्वारा मनुष्य को अपार लाभ की प्राप्ति हो सके। श्रष्टि के उस महान रचयिता और महान विशेषताओं के मालिक का शुक्र अदा करना अतिआवश्यक है। उस ने अपने पूर्ण ज्ञान एवं हिकमत द्वारा अफ़लातून के दिल में ज्ञान श्रोतों एवं ज्ञान की निशानियों को इतना अधिक जमा कर दिया है कि सारे संसार में रहने वाले उस के सभी बन्दे उन से लाभ की प्राप्ति कर सकें। अल्लाहु अकबर! उस की महानतम शान का यह आलम। श्रष्टि में उस की कृपा अथवा अनुदान इतना है कि कोई हिकमत से मालामाल है, कोई भ्रम का शिकार है और कोई हिकमत की तलाश में है। धरती से पाताल तक मनुष्य का सफ़र जारी है लेकिन काई भी कण उस की महानता की निशानी तक को छू नहीं सकता है।

अपनी जान न्योछावर हो उस पवित्र ज़ात पर जो संसार की हर ऊँचाई पर पूर्णतः बिराजमान है, जिन की शोहरत का शोर चारों दिशाओं में है, "क़ाबा क़ौसैन औ अदना" से मनोनीत हैं और "इन हुआ इल्ला वहयुंयूहा" के लक़ब से अल्लाह से बात करने वाले हैं, तेज़ भागने वाले हरिकारों द्वारा अपनी बेहतरीन उम्मत के सलात व सलाम के तोहफ़ो से नवाज़े जाते है, वह ऐसे ज्ञान दोस्त हैं कि अक़लमन्दों को समझाने बुझाने के लिए सभी मनुष्यों की गर्दनों के मालिक हैं। निःसंदेह उन की मन्ज़िल-ए-मक़सूद का सुराग़ कोई भी व्यक्ति कदापि नहीं पा सकता। उन की सम्पूर्ण विशेषताओं पर

जान न्यौछावर हो कि अपने दस्त-ए-लुत्फ़ा-व-करम की नब्ज़गीरी से दुख के मारों को राहत पहुँचाई, अपने उपचार के शर्बत-ए-उन्नाब से उन को गुनाह के रोग से बचाया, स्थिरता एवं अनुदान के अनुपान और स्वभाव को पहचानने की कला से स्वंय की शरीअत के उस महान हकीम ने हिदायत के दवाख़ाने से जिहालत और ज़लालत जैसे विभिन्न रूहानी रोगों से ग्रस्त व्यक्तियों को शर्बत-ए-दीनार से आदर प्रदान किया, उनको ख़मीरा-ए-सन्दल प्रदान किया, जिहाद की तलवार से विरेचक दिया, क़ुर्स-ए-लीमू जैसे ख़ुशबूदार उपदेश और गुल-ए-शकर जैसे मीठे एवं स्वादिष्ट उपदेश दिए जिन से लोगों को पूर्णतः नजात प्राप्त हुई। उन को गुमराही के गढ़े से निकाल कर हिदायत के श्रोत की ओर फेर दिया। मुर्दा दिलों एवं तिशना लब व काम को शहादत-ए-इस्लाम के शहद में तर कर के ईमान के गुलक़न्द से मीठा और ख़ुशबूदार बना दिया। उन पर हज़ार हज़ार सलाम हो। उन की पवित्र पीढ़ियों पर भी सलाम हो जिन की मुहब्बत और आदर गुनहगारों के लिए दवा-ए-मुजर्रबऔर मुफ़र्रेह(Exhilarant) है, टूटे दिलों और बड़े जुर्म करने वाले लोगों के लिए मोमियाई और दुखी लोगों के लिए तिर्याक़ है।

बुद्धिजीवियों के सामने यह बात छुपी नहीं है कि ज्ञानी एवं अनुभवी हकीमों ने नए एवं पुराने हकीमों की पुस्तकों से क़राबादीन को निकाला है। इस वर्ग के हकीमों में से प्रत्येक ने अपने अपने हौसले, समझबूझ, क्षमता, अंतर्ज्ञान एवं अंतर्दृष्टि के अनुसार विशेष लेखन, विशेष प्रतिरूप और उचित व्यवस्था को अपनाते हुए लेखन की विशेष लड़ी में पिरो कर क़राबादीन को लिखा ताकि उपचार के समय चिकित्सक के काम आए और ख़ुदा के बन्दे उस से आसानी के साथ लाभान्वित हो सकें।

अल्लाह के सब से कमज़ोर बन्दे और उस से गुनाहों की माफ़ी माँगने वाले मुहम्मद मासूम बिन करीमुद्दीन शोश्तरी शीराज़ी के संवेदनशील दिल में भी यह इच्छा उत्पन्न हुई कि अपने शक्ति सीमा एवं संभाव्यता के अनुसार बहुत अच्छी किया के साथ क़राबादीन के संदर्भ में एक लेखन प्रस्तुत की जाए ताकि सभी लोग उस से लाभान्वित हो सकें और अल्लाह की कृपा से एक यादगार बन जाए। अतः उपर्युक्त तरीक़ो से चिकित्सालयों में प्रयोग होने वाले मुरक्कबात को, इस फ़न की प्रयाप्त पुस्तकों से नुस्ख़ों को और भूतकाल एवं वर्तमानकाल में खोजे गए मुजर्रब नुस्ख़ों को जमा किया। यह सब औषधियाँ जनता के लिए अतिआवश्यक थीं। कुछ औषधियाँ ऐसी थीं जो पुराने हकीमों की पुस्तकों में वर्णित नहीं थीं लेकिन नए वर्ग के हकीमों के सम्पूर्ण परीक्षण से लगातार शोध की कसौटी से गुज़रने के बाद मुजर्रबात (Experiments) का दर्जा प्राप्त कर चुकी थीं और कुछ औषधियाँ भारतीय हकीमों के मुजर्रबात (Experiments) में से थीं, उन सब को हम ने 1059 हिजरी में बहुत ही अच्छे तरीक़े से लिख कर एक संग्रह के प्रारूप में प्रस्तुत

किया। हम ने मुरक्कबात की निर्माण-विधि, उन से प्राप्त होने वाले आवश्यक लाभ और उन की संरक्षण-विधि को संक्षेप में लेकिन व्यापक स्वरूप में भूमिका के अंतर्गत 12 लाभों के शीर्षक के साथ दर्ज किया है ताकि सभी लोग आसानी के साथ उन की सेवन-विधि, उपचार एवं प्रयोग-विधि के संबंध में अवगत रहें, ख़ूब लाभान्वित हों और क़राबादीन की अन्य पुस्तकों पर अश्रित न रहें।

यह पुस्तक एक भूमिका, सात खण्डों एवं एक उपसंगहार पर आधारित है और क़राबादीन-ए-मासूमी के नाम से मनोनीत है।

शिष्टाचारी, कुशल, दयालु ज्ञानी और कौशल एवं कला का आदर करने वाले लोगों से सविनय निवेदन है कि अगर उन को मेरे इस प्रयत्न में कोई कमी और ग़लती मिले तो दयाभावना के साथ उस का सुधार करें और मुझ जैसे छोटी एवं हल्की प्रतिष्ठा वाले व्यक्ति को ग़लती की क्षमा दें।

## पुस्तक का संक्षिप्त उल्लेख

### भूमिका

इस में 12 लाभों का उल्लेख है।

- प्रथम लाभः यौगिक औषधियों की निर्माण-विधि।
- द्वितीय लाभः पत्थरों आदि के धोने की विधि।
- तृतीय लाभः औषधियों को जलाने, खनिज पदार्थों को भस्म करने, बीजों को भूनने और इशक़ील को भूनने की विधि।
- चतुर्थ लाभः सातों धातुओं की शुद्धिकरण और औषधियों के प्रसंस्कृत।
- पन्चम लाभः तलक़ के घोलने, सीमाब संवर्धन करने और तिला पीसने की विधि।
- शष्टम लाभः अस्ल-ए-बलादुर की उद्धरण-विधि, दुख़ान-ए-कुन्दुर की प्राप्ति, ज़रारीह को दाना दाना करने और दिब्क़ को शुद्ध करने की विधि।
- सप्तम लाभः एकल द्रव्य औषधि की विकल्प औषधि को पहचानने की विधि।
- अष्टम लाभः ऐसे भार एवं तौल का विवरण जो हकीमों के चिकित्सालय में प्रयोग किए जाते और उनके बीच विशेष शब्दावली से मनोनीत हैं।
- नवम लाभः यूनानी, अरबी, फ़ारसी और हिन्दी भाषाओं से गृहण किए गए चिकित्सीय शब्दों अथवा नामों का अनुवाद एवं विवरण।
- दशम लाभः यौगिक औषधियों से लाभप्राप्ति की समय सीमा, उनके प्रयोग का समय एवं उनके स्वभाव को परखने की विधि।

- एकादशम लाभः तिर्याक़-ए-फ़ारूक़ की जाँच-विधि।
- द्वादशम लाभ(क): तिर्याक़ की यथा स्थिति को स्पष्ट करने, उस की सेवन-मात्रा एवं सेवन-विधि।
  (ख): यौगिक औषधियों के स्वभाव एवं उन के स्वभाव के दर्जों को पहचानने की विधि।

## प्रथम खण्ड

इस खण्ड में तिर्याक़, मुफ़र्रेह, माजून, जवारिश, अयारिज और इत्रीफ़ल औषधियों का विवरण है।

- प्रथम अध्यायः इस में तिर्याक़ के नुस्ख़े हैं।
- द्वितीय अध्यायः इस में मुफ़र्रेह के नुस्ख़े हैं।
- तृतीय अध्यायः इस में माजून के नुस्ख़े हैं। यह 5 भागों पर आधारित है। प्रथम भाग में उन माजूनों का उल्लेख है जिन का जुज़-ए-आज़म (Active ingredient) अफ़ियून है। द्वितीय भाग में बड़े एवं अत्याधिक लाभ प्रदान करने वाले माजूनों का, तृतीय भाग में कामोद्दीपक लबूब एवं माजूनों का, चतुर्थ भाग में विरेचक माजूनों का और पन्चम भाग में शेष प्रसिद्ध एवं प्रयोग में रहने वाले माजूनों का उल्लेख है।
- चतुर्थ अध्यायः इस में जवारिश के नुस्ख़े हैं। यह तीन भागों पर आधारित है। प्रथम भाग में विरेचक, द्वितीय भाग में कामोद्दीपक और तृतीय भाग में ऐसी जवारिश के नुस्ख़े हैं जो शक्तिवर्धक होने के साथ धारण-शक्ति वाली हों या शक्तिवर्धक होने के साथ धारण-शक्ति वाली ना हों।
- पन्चम अध्यायः इस में इत्रीफ़ल के नुस्ख़े हैं।
- शष्टम अध्यायः इस में अयारिज के नुस्ख़े हैं।

## द्वितीय खण्ड

इस खण्ड में शर्बत, लऊक, मुरब्बा,रुब्ब, सिकन्जबीन, हलवा और मुसम्मिन (मोटा करने वाली पाउडर औषधियों) का विवरण है।

- प्रथम अध्यायः इस में शर्बत के नुस्ख़े हैं।
- द्वितीय अध्यायः इस में लऊक के नुस्ख़े हैं।
- तृतीय अध्यायः इस में मुरब्बा के नुस्ख़े हैं।
- चतुर्थ अध्यायः इस में रुब्ब के नुस्ख़े हैं।

- पन्चम अध्यायः इस में सिकन्जबीन के नुस्ख़े हैं।
- शष्टम अध्यायः इस में हलवा और मोटा करने वाली औषधियों के नुस्ख़े हैं।

## तृतीय खण्ड

इस में हब्ब, कुर्स़, बुन्दुक़, सफ़ूफ़, सनून, ज़रूर, नफ़ूख, बख़ूर और शमूम औषधियों का विवरण है।

- प्रथम अध्यायः इस में हब्ब के नुस्ख़े हैं।
- द्वितीय अध्यायः इस में तीक्ष्ण विरेचक, धारण-शक्ति वाली एवं मृदु-विरेचक कुर्स औषधियों के नुस्ख़े हैं।
- तृतीय अध्यायः इस में तीक्ष्ण विरेचक व धारण-शक्ति वाली बुन्दुक़ के नुस्ख़े हैं।
- चतुर्थ अध्यायः इस में सफ़ूफ़ के नुस्ख़े हैं।
- पन्चम अध्यायः इस में सनून के नुस्ख़े हैं।
- शष्टम अध्यायः इस में नफ़ूख के नुस्ख़े हैं।
- सप्तम अध्यायः इस में ज़रूर के नुस्ख़े हैं।
- अष्टम अध्यायः इस में बख़ूर के नुस्ख़े हैं।
- नवम अध्यायः इस में शमूम के नुस्ख़े हैं।

## चतुर्थ खण्ड

इस खण्ड में माई अर्थात तरल, मतबूख़, नक़ूअ, नतूल, ग़रग़रह, मज़मज़ह, क़तूर और सऊत औषधियों का विवरण है।

- प्रथम अध्यायः इस में तरल औषधियों के नुस्ख़े हैं।
- द्वितीय अध्यायः इस में मतबूख के नुस्ख़े हैं।
- तृतीय अध्यायः इस में नक़ूअ के नुस्ख़े हैं।
- चतुर्थ अध्यायः इस में नतूल के नुस्ख़े हैं।
- पन्चम अध्यायः इस में ग़रग़रह एवं मज़मज़ह के नुस्ख़े हैं।
- शष्टम अध्यायः इस में मज़मज़ह के नुस्ख़े हैं।
- सप्तम अध्यायः इस में क़तूर के नुस्ख़े हैं।
- अष्टम अध्यायः इस में सऊत के नुस्ख़े हैं।

## पन्चम खण्ड

इस खण्ड में ज़िमाद, तिला, ख़िज़ाब, दुह्न, मरहम और फ़र्ज़जह का विवरण है।

- प्रथम अध्यायः इस में ज़िमाद के नुस्ख़े हैं।
- द्वितीय अध्यायः इस में तिला के नुस्ख़े हैं।
- तृतीय अध्यायः इस में ग़सूल के नुस्ख़े हैं।
- चतुर्थ अध्यायः इस में ख़िज़ाब एवं सबूग़ के नुस्ख़े हैं।
- पन्चम अध्यायः इस में ऐसी औषधियों के नुस्ख़े हैं जो सदैव या थोड़े समय के लिए बालों का रंग बदल देती हैं।
- शष्टम अध्यायः इस में विभिन्न प्रकार के दुह्न के नुस्ख़े हैं।
- सप्तम अध्यायः इस में मोम रोग़न के नुस्ख़े हैं।
- अष्टम अध्यायः इस में विभिन्न प्रकार के मरहम के नुस्ख़े हैं।

## शष्टम खण्ड

इस खण्ड में मुक़ी, विरेचक हुक़्ना, विरेचक शयाफ़, फ़र्ज़जह और हमूल औषधियों का विवरण है।

- प्रथम अध्यायः इस में मुक़ी के नुस्ख़े हैं।
- द्वितीय अध्यायः इस में विरेचक एवं धारण-शक्ति वाली हुक़्ना औषधियों का विवरण है। यह दो भागों पर आधारित है। प्रथम भाग में विरेचक हुक़्नों और द्वितीय भाग में धारण शक्ति वाले एवं शक्तिवर्धक हुक़्नों के नुस्ख़े हैं।
- तृतीय अध्यायः इस में विरेचक एवं धारण-शक्ति वाली शयाफ़ औषधियों का विवरण है। यह दो भागों पर आधारित है। प्रथम भाग में विरेचक शयाफ औषधियों और द्वितीय भाग धारण-शक्ति वाली शयाफ़ औषधियों के नुस्ख़े हैं।
- चतुर्थ अध्यायः इस में उन फ़र्ज़जह और हमूल औषधियों का विवरण है जो विशेष रूप से स्त्री रोगों में प्रयोग की जाती हैं।

## सप्तम खण्ड

इस खण्ड में नेत्र रोगों से संबंधित औषधियों का विवरण है।

- प्रथम अध्यायः इस में कहूल के नुस्ख़े हैं।
- द्वितीय अध्यायः इस में ज़रूर के नुस्खे हैं।
- तृतीय अध्यायः इस में बरूद के नुस्ख़े हैं।
- चतुर्थ अध्यायः इस में शयाफ़ के नुस्ख़े हैं।
- पन्चम अध्यायः इस में ऐसे तिला एवं ज़िमाद के नुस्ख़े हैं जो विशेष रूप से नेत्र रोगों में प्रभावी हैं।

## उपसंगहार

इस में "बीख़-ए-चीनी" से संबंधित मामलों का विवरण है। इस में दो भाग हैं।

- प्रथम भागः इस में बीख़-ए-चीन से संबंधित मामलों का विवरण है। इस में 7 संकेत हैं। प्रथम संकेत बीख़-ए-चीनी को साफ़ करने की विधि के संदर्भ में, द्वितीय उसके स्वभाव को पहचानने के संदर्भ में, तृतीय उस से प्राप्त होने वाले लाभों के संदर्भ में, चतुर्थ उस की उत्कृष्टि अथवा अउत्कृष्टि के संदर्भ में, पन्चम उस को खाने की शर्तों के संदर्भ में, शष्टम उस को पकाने और पीने के संदर्भ में और सप्तम माजूनों एवं बीख़-ए-चीनी का अर्क निकालने के संदर्भ में है।
- द्वितीय भागः इस में फ़ाद ज़हर की पहचान, लाभ, जाँच-विधि और उस की सेवन-विधि का विवरण है। यह 3 संकेतों पर आधारित है। प्रथम संकेत में फ़ादज़हर का अर्थ एवं उस की पहचान का, द्वितीय में उस से प्राप्त होने वाले लाभ एवं उस विशेषताओं का और तृतीय में उस की सेवन-विधि, सेवन-मात्रा एवं उपर्युक्त सातों शर्तों को अपनाने का उल्लेख है।

❑❑❑

# भूमिका

इस भूमिका में मिश्रित औषधियों की निर्माण-विधि, पत्थरों आदि का धोना, औषधियों को जलाना, धातु-उपधातु एवं खनिज पदार्थों का भस्म करना, बीजों को भूनना, सक़मूनिया एवं इश्क़ील जैसी औषधियों को जलाना, बलादुर रस की उद्धरण-विधि, तलक़ की मिश्रण-विधि, पारद का धोने एवं स्वर्ण को पीसने की विधि का विवरण है साथ ही यूनानी, अरबी, फ़ारसी एवं हिन्दी भाषाओं से गृहण किए हुए चिकित्सीय शब्दों अथवा नामों का अनुवाद एवं विवरण, तिर्याक़-ए-फारूक़ की जाँच-विधि, मिश्रित औषधियों से लाभ-प्राप्ति की समय सीमा, उनके प्रयोग का समय एवं उनके स्वभाव को परखने की विधि के साथ अमिश्रित औषधियों के बदल (Substitute) को परखने की विधि का विवरण किया गया है। इस भूमिका में 12 लाभों का उल्लेख है।

### भूमिका
## प्रथम लाभ

# यौगिक औषधियों की निर्माण-विधि

आप को यह ज्ञात रहे कि अधिकतर हकीमों की पुस्तकों में ये सिद्धाँत वर्णित हैं और उन पर सब की सहमति भी है कि डाक्टर, अगर किसी रोग के निदान के लिए एक औषधि मात्र को पर्याप्त समझता है तो वह उसी से रोग का निदार करे और किसी मिश्रित औषधि का सहारा ना ले क्योंकि एकल द्रव्य औषधि शरीर के लिए अधिक हल्की और अधिक योग्य होती है। अगर एकल द्रव्य औषधि से उद्देश्य पूरा ना हो रहा हो तो मिश्रित औषधि से इलाज करें। साराँश यह है कि आवश्यकतानुसार एकल द्रव्य या मिश्रित औषधि से इलाज करें, हाँ यह बात अवश्य है कि अधिकतर परिस्थितियों में शरीर के लिए एकल द्रव्य औषधि पर्याप्त नहीं होती और मिश्रित औषधि से इलाज करना अतिआवश्यक हो जाता है जिन का उल्लेख निम्नलिखित है।

1. पहला सिद्धाँतः जिस एकल द्रव्य औषधि से रोग का निदान किया जा रहा हो उस के संशोधन एवं सुधार की आवश्यता हो जो कि अन्य औषधि को मिलाए बिना असंभव हो।
2. दूसरा सिद्धाँतः अगर रोग मिश्रित हो और उपचार के लिए डाक्टरी दृष्टिकोण से एकल द्रव्य औषधि के साथ अन्य औषधि की भी आवश्यकता हो।
3. तीसरा सिद्धाँतः अगर एकल द्रव्य औषधि का स्वाद तेज़ एवं गर्म हो जिस के कारण तबीयत उस कों सहन ना कर रही हो, और उस की तेज़ी एवं गर्मी को तोड़ने के लिए किसी अन्य औषधि को उस के सम्मिलित करना आवश्यक हो ताकि तबीयत उस को सहन कर सके जैसे ज़न्जबील को क़न्द या शहद के साथ मिलाया जाता है।
4. चौथा सिद्धाँतः अगर किसी एकल द्रव्य औषधि की बास नागवार हो और आमाश्य उसे सहन ना करे, तो उस के साथ किसी अन्य औषधि को सम्मिलित किया जाता है ताकि उस की सुगंधित बास के कारण आमाश्य उसे क़ुबूल कर ले जैसे ख़्यार शंबर के साथ हकीम अर्क़-ए-गुलाब मिलाते हैं ताकि जमाई ना आए।

5. पाँचवाँ सिद्धाँतः अगर एकल द्रव्य औषधि अपनी क्रिया एवं विशेषता में कमज़ोर हो और उस से भरपूर उद्देश्य की प्राप्ति ना हो रहा हो, जैसे तुर्बुद के साथ ज़न्जबील को सम्मिलित किया जाता है जो तुर्बुद को और अधिक सशक्त बनाता है और गाढ़े बलग़म को दूर करता है। इसी वर्ग कोटि से यह प्रक्रिया भी है कि गर्म दवा के साथ किसी अन्य गर्म दवा को मिला लिया जाता है ताकि वो और अधिक गर्म हो जाए और इसी प्रकार अधिक ठंडक की प्राप्ति के लिए ठंडी दवा के साथ अन्य ठंडी दवा को मिला लिया जाता है।
6. छठा सिद्धाँतः कभी कभी ऐसा होता है कि एकल द्रव्य औषधि अत्याधिक शक्तिशाली होती है जिस से तबीयत को हानि पहुँच सकती है जैसे कि ज़न्जार में समग़-ए-अरबी को सम्मिलित किया जाता है ताकि उस की शक्ति कम हो जाए। इसी उद्देश्य से गर्म दवा के साथ ठंडी दवा को और ठंडी दवा के साथ गर्म दवा को सम्मिलित करते हैं।
7. सातवाँ सिद्धाँतः अगर एकल द्रव्य औषधि शरीर में अतिशीघ्र घुलनशील हो और एक विशेष अंग में अपना कार्य सम्पूर्ण करने के लिए एक लक्षित समय सीमा तक ना ठहरे, तो उस के साथ ऐसी दवा को मिलाना आवश्यक हो जाता है जो उसे उस विशेष अंग में एक लक्षित समय सीमा तक रोक सके। जैसे कि राज़ियाना, अनीसून और तुख़्म-ए-करफ़्स जिगर में शीघ्र ही घुल जाते हैं इसलिए उन के साथ किसी अवशोषक औषधि को सम्मिलित किया जाता है।
8. आठवाँ सिद्धाँतः अगर एकल द्रव्य औषधि शरीर में विलम्ब से घुलनशील हो और जिस अंग का इलाज करना हो उस तक पहुँचने से पहले ही उस की शक्ति बेकार हो जाती हो तो उस के साथ उचित सहायक औषधि को अवश्य मिलाएँ। जैसे कि काफ़ूर के लिए सहायक औषधि ज़ाफ़रान है।

## ● माजून की निर्माण-विधिः

माजून की निर्माण-विधि यह है कि ऐसी ताज़ा एवं साफ़ औषधियों का चयन करें जो पुरानी ना हों। उनको लकड़ी, झाड़ झंखाड़, धूल मिट्टी, घास व तिन्के इत्यादि मिलावटी वस्तुओं से पाक कर लें। अनावशयक मूल औषधि के स्थान पर उस के बदल का उपयोग ना करें। हाँ मूल औषधि के कम या ना पाए जाने की स्थिति में किसी उचित बदल का उपयोग कर सकते हैं। प्रत्येक औषधि को पत्थर के हावन में अलग अलग कूटे। पत्थर का हावन उपस्थित ना हो तो ताम्र के हावन में हल्के हाथों से कूटें। रेशम के कपड़े (जिस में छेद ना हो) से धीरे धीरे छान लें फिर हर औषधि को अलग अलग वज़न करें। सभी औषधियों को एक साथ मिला कर इस हद तक पीसें कि वो

एक दूसरे के साथ अच्छी तरह मिल कर एक भिन्न एवं स्वयं का स्वभाव प्राप्त कर लें जिस प्रकार सोंठ अपना स्वायत्व खो कर मधु में लीन हो जाती है।

जिस औषधि की महक रोटी जैसी हो और आमाशय उस को क़ुबूल ना कर रहा हो तो ऐसी स्थिति में उस के साथ कोई अन्य औषधि मिला ली जाए ताकि आमाशय को उस से कोई हानि ना हो जैसे कि अमलतास के साथ थोड़ा सा अक़-ए-गुलाब मिला लिया जाता है जिस से उस की चिपचिपाहट समाप्त हो जाती है और बहुत क्रिया-प्रतिक्रिया होती है।

पत्थरों इत्यादि को आवश्यकतानुसार अथवा विधि अनुसार धोने के पश्चात प्रयोग में लाएँ। इसी प्रकार औषधियों को आवश्यकतानुसार अथवा विधि अनुसार तल, भून अथवा जला लें। गोंद (Exudate) इत्यादि को किसी उचित तरल पदार्थ में घोल लें। जिन औषधियों को साफ़ करने की आवश्यकता हो उन्हें साफ़ खुरदुरे कपड़े या उल्टी छलनी से साफ़ कर लें। सभी औषधियों के तीन गुना साफ़, शुद्ध, स्वादिष्ट अथवा खुशबूदार मधु लें। हलकी आँच पर पका कर उस की झाग उतार लें। जब मौसम के अनुकूल क़िवाम तैयार हो जाए तो चूल्हे से उतार लें फिर दूध मिला कर धीरे धीरे पकाएँ और तत्पश्चात उसके ठंडा होने की प्रतीक्षा करें। ठंडा होने के पश्चात पिसी हुई औषधियों को एक एक कर के उस में डालते रहें और करछुल से चलाते रहें। यह कार्य इतनी देर तक करते रहें कि सभी औषधियाँ आपस में मिल कर एक समान हो जाएँ ।

जब तक मधु अधिक गर्म हो औषधियों को उस में बिल्कुल ना डालें क्योंकि गर्मी से मधु की ताक़त अथवा औषधियों के जवाहर कमज़ोर पड़ जाते हैं। गर्म मौसम और गर्म स्थानों पर दूध की मात्रा सभी औषधियों और मधु के दो गुना काफी होती है। जिस नुस्ख़े में अंबर सम्मिलित करने का इरादा हो उस नुस्ख़े के हिसाब से अंबर को थोड़े से रोग़न-ए-बनफ़्शा या रोग़न-ए-बादाम या किसी और खुशबूदार रोग़न में हल्की आँच पर पका लें और क़िवाम के गर्म रहते ही उस को सम्मिलित करें। अगर अंबर सूखा एवं पीसने योगय हो तो थोड़ी सी शकर के साथ पीस कर उस में सम्मिलित करें। अंबर सम्मिलित करने के पश्चात मधु का क़िवाम दोबारा पकाएँ।

अगर मिश्रित औषधि को रंगीन एवं खुश्बूदार बनाने का इरादा हो तो केसर को इस प्रकार प्रयोग करे कि पहले उस को अर्क़-ए-गुलाब या किसी उचित तरल प्रदार्थ में भिगो लें फिर चुटकी से मल कर हावन में खूब मलें।

मिश्रित औषधि (Compound drug) में उस को मिलाने का समय अंबर के बाद और अन्य औषधियों से पहले है। उस के बाद मुस्क पीस कर उस में सम्मिलित करें फिर पिसे हुए जवाहर सम्मिलित करें। अंत में शेष औषधियों को मिला कर हल्की

आँच पर पकाएँ।

अगर इस में तिला एवं नुक़रह को सम्मिलित करने का इरादा हो और उस का घोल विधि अनुसार तैयार हो तो उस के सम्मिलित करने का समय केसर के पश्चात अथवा पिसे हुए जवाहर से पहले है। वरक़ को मधु में सभी औषधियों के बाद सम्मिलित करें चाहे वह स्वर्ण का वरक हो या रजत का। इस बात का विशेष ध्यान रखें कि उस को इस प्रकार मिलाएँ कि वह वरक़ और अन्य औषधियाँ अच्छी तरह से मिल जाएँ।

- **जवारिश की बेहतर निर्माण-विधिः**

जवारिश की बेहतर निर्माण-विधि यह है कि मधु के क़िवाम में सभी औषधियों को बहुत ही हल्की आँच पर पकाएँ। जवारिश की सभी औषधियाँ थोड़ी सख़्त अथवा खुरदुरी हों। उस का क़िवाम गाढ़ा हो ताकि वो आमाशय में अधिक देर ठहर सके, अच्छे प्रकार से प्रभाव करे और पाचन में सहायक हो क्योंकि हकीमों के अनुसार जवारिश का अर्थ भी यही होता है।

माजून की औषधियों को प्रारंभ में ही रोग़न-ए-बलसाँ या रोग़न-ए-बादाम इत्यादि में हथेली से चर्ब कर लें ताकि औषधियों में अच्छी तरह मिल जाए और उस के गुण व स्वभाव उन में आ जाएँ लेकिन क़ुर्स और माजून के क़िवाम को सुखा लिया जाता है।

- **शरबत की निर्माण-विधिः**

माजूनों की निर्माण-विधि की भाँति ही लकड़ी तिनके, धूल मिट्टी, रेत इत्यादि से पाक और साफ़ औषधियों का चयन करें। जड़, डन्ठल और टहनी जैसी हल्की कूटने योग्य औषधियों को हल्का कूट लें फिर सब को एक साथ मिला कर किसी पात्र में कम से कम एक दिन और एक रात या चौबीस घंटे इतनी मात्रा पानी, अर्क़, शराब या किसी और उचित तरल पदार्थ में भिगोएँ जो शर्बत की औषधियों को भिगोने के लिए सुनिशिचत है फिर चाँदी ,पत्थर या तांबे की ताज़ा क़लई की हुई देग में हल्की आँच पर धीरे धीरे इतना पकाएँ कि तरल पदार्थ जल जाए और उस का आधा भाग शेष रह जाए अब उसे देग से उतार लें और ठंडा होने की प्रतीक्षा करें। सभी औषधियों को हाथों से मल छान कर अच्छी तरह साफ़ कर लें और उनके अवशेषों को भी थोड़े से पानी या अर्क़-ए-गुलाब में डाल कर दोबारा इस हद तक मलें कि उन में औषधियों की शक्ति बाक़ी ना रहे। तत्पश्चात उस तरल पदार्थ को मल छान कर साफ कर लें और देग में भर कर उस के साथ इतनी मात्रा में साफ़ सुथरी शकर या साफ़ सुथरी, ख़ुश्बूदार और स्वादिष्ट मधु सम्मिलित करें जो उस विशेष शरबत के लिए सुनिशिचत है। हल्की आँच पर पकाएँ और इस बीच ऊद, संदल या बेद की

लकड़ी की बनी हुई करछुल से जल्दी जल्दी चलाते रहें। आग आवश्यकतानुसार तेज़ रखें ताकि क़िवाम उबाल खा कर बहने ना लगे। क़िवाम (Consistency) बन जाने के पश्चात आँच से उतार कर ठंडा कर लें। माजूनों की निर्माण-विधि के अनुसार शर्बत में अंबर, मुस्क, वरक़-ए-नुक़रा या वरक़-ए-तिला अर्थात सोना या चाँदी की परत डालें। केसर को कपड़े की पोटली में रख कर देग में डालें ताकि अच्छी तरह पक जाएँ लेकिन क़िवाम तैयार होने के समय ही उस पोटली को देग से निकाल लें। उस को अर्क़-ए-गुलाब या किसी अन्य उचित तरल पदार्थ में डाल कर अच्छी तरह मलें और फिर उस प्रयाप्त तरल पदार्थ को भी उपर्युक्त क़िवाम में सम्मिलित कर दें। क़िवाम ठंडा होने के पश्चात माजूनों की भाँति साफ़ सुथरे अथवा उचित पत्रों में संरक्षित कर लें और आवश्यकतानुसार सुनिश्चित मात्रा में प्रयोग करें। सिकंजबीन आदि को भी इसी विधि अनुसार पकाएँ। आम सिकंजबीन एवं खट्टी सिकंजबीनों को पत्थर की देग में पकाना बेहतर एवं उचित है।

● **क़ुर्स की निर्माण-विधि:**

क़ुर्स की निर्माण-विधि यह है कि ऐसी औषधियों का चयन करें जो नई और ताज़ा हों साथ ही कंकड़ पत्थर, धूल मिट्टी और किसी भी प्रकार के मिलावट से पाक हों। हर औषधि को अलग अलग कूट छान कर उनके मूल मात्रा में लें फिर सभी औषधियों को एक साथ मिला लें। तत्पश्चात उन को समग़-ए-अरबी और पानी के घोल के साथ या उस विशेष क़ुर्स के लिए सुनिश्चित अर्क़ या शराब के साथ अच्छी तरह गूंधें और उचित चिपचिपाहट आ जाने के बाद उनका क़ुर्स तैयार करें। अब उन को छाँव में सुखाएँ और धूल मिट्टी से बचाएँ। इस बीच प्रतिदिन उन को उलटते पलटते रहें ताकि अच्छी तरह से सूख जाए। तत्पश्चात शीशे के पात्र में संरक्षित कर लें। उस पात्र का ढक्कन अच्छी तरह से बंद रखें। आवश्यकता पड़ने पर सुनिश्चित मात्रा में प्रयोग करें।

हुबूब, शयाफ़ और बनादिक़ की निर्माण-विधि को इसी विधि के अधीन मानें लेकिन हुबूब और क़ुर्सों में तुर्बुद को सम्मिलित करने का सिद्धाँत यह है कि छीले हुए तुर्बुद को रोग़न-ए-बादाम में चर्ब करने के पश्चात ही अन्य औषधियों के साथ कूटें पीसें। ग़ारिक़ून को छलनी के पिछले हिस्से पर रगड़ें क्योंकि उसे हावन में नहीं कूटा जा सकता है। उस को ताँबे की छलनी पर पीसने की जो विधि प्रचलित है वह बेहतर है।

● **सफ़ूफ़ की निर्माण-विधिः**

सफ़ूफ़ की निर्माण-विधि यह है कि क़ब्ज़ एवं आँतों की ख़राश आदि के लिए जिस प्रकार के सफ़ूफ़ तैयार करना चाहें, उनमें सम्मिलित हब्बुर्रशाद, बज़र क़तूना आधा भुना हुआ और तुख़्म-ए-रैहान आदि को अन्य औषधियों के साथ कूट छान कर एक साथ मिलाएँ। बज़र क़तूना को अवश्य कूटें। बेहतर यह है कि अन्य औषधियों को कूटने के पश्चात ही तुख़्म-ए-रैहान, तुख़्म-ए-मर्व, हब्बुर्रशाद, बारतंग आदि बुज़ूर को उनके साथ मिलाएँ। उचित बात यह है कि सफूफ के सभी औषधि द्रव्यों को सूक्ष्म चूर्ण कर लिया जाए अगर किसी विशेष सफ़ूफ़ से क़ब्ज़ (Constipation) जैसी क्रियाओं में बढ़ोत्तरी करने का इरादा हो तो जवारिश में सम्मिलित औषधियों की भाँति इस के औषधि द्रव्यों को भी थोड़ा खुरदुरा रखा जाए ताकि वो आमाश्य में अधिक समय तक रह सकें।

● **सनून् की निर्माण-विधिः**

अगर दाँतों की सफाई और उन में चमक पैदा करने का उद्देशय हो तो फिटकिरी, नमक, सिफ़ाल और नै जैसी औषधियों को भून कर जला लें। अन्य औषधि द्रव्यों के साथ पीस कर प्रयोग में लाएँ। इस बात का विशेष ध्यान रखें कि उन को सूक्ष्म चूर्ण ना किया जाए ताकि दाँतों की सफाई और उन में चमक अधिक उत्तम तरीके से पैदा की जा सके। अगर उद्देशय दाँतों की जड़ों को मज़बूत करना और रक्तस्राव को रोकना हो तो उस सनून विशेष की औषधि द्रव्यों कर सूक्ष्म चूर्ण किया जाना अतिआवश्यक है।

● **आँखों के लिए प्रयोग किए जाने वाले कुहल, ज़रूर, बरूद एवं शयाफ़ की निर्माण-विधिः**

उनके निर्माण में अत्यंत सावधानी बरतें और विधि की पाबंदी करें क्योंकि आँख एक अतिसंवेदनशील, कोमल और महत्वपूर्ण अंग है। शादनज, तूतिया और अक़लीमिया आदि पत्थरों का विधि अनुसार धोएँ। बुसुद एवं सुर्मा जैसी जलने योग्य औषधियों को जला लें। इसी प्रकार अंज़रूत को खिरिया में, तूतिया को आब-ए-ग़ौरह (अंगूर का रस) में और सुर्मा को आब-ए-बादियान (सौंफ का रस) में मुदब्बर (Detoxified) कर लें। उस के पश्चात हर औषधि द्रव्य को भिन्न भिन्न यवकुट चूर्ण कर के किसी मज़बूत एवं बारीक कपड़े से छान लें। आवश्यकतानुसार हर औषधि द्रव्य को एक विशेष मात्रा में लेकर सब को किसी पत्थर आदि पर इतना पीसें कि वो धूल की भाँति सूक्ष्म हो जाए। इस बात का विशेष ध्यान रखें कि इस बीच उन में किसी प्रकार की धूल मिट्टी सम्मिलित ना हो जाए। आवश्यकता के समय स्वर्ण,

रजत की सलाई या ज़रिश्क पेड़ की लकड़ी के रेशे (सलाइ) से आँखों में प्रयोग करें। शयाफों को आँखों में तिला करें।

## ● मतबूख़ की निर्माण-विधि:

अगर विरेचक मतबूख़ तैयार करना हो तो उस में सम्मिलित सभी औषधि द्रव्यों को साफ़ करने के पश्चात सर्वप्रथम काँटेदार और लकड़ी जैसे द्रव्यों को अर्द्धकुट कर के पात्र में डालें। बीजों को अर्द्धकुट कर के डालें फिर बूटियो, आलू, अंजीर और क़सब आदि को अर्द्धकुट कर के डालें। सब से अंत में बनफ़्शा और नीलोफ़र जैसे औषधि द्रव्यों को डालें।

मतबूख के औषधि द्रव्यों को पात्र में डालने की विधि यह है कि मज़बूत एवं सख़्त औषधि को पहले और कोमल औषधि को बाद में सम्मिलित करें। मतबूख के पात्र के लिए पत्थर की देग, मिट्टी की पकी हुई देग या ताज़ा क़लई की हुई देग का चयन करें। जल आवश्यकतानुसार लेकर हल्की आँच पर इतना पकाएँ कि उस का दो अंश जल जाए और एक अंश शेष रह जाए अब उसे आग से उतार लें। अगर औषधि द्रव्यों में अफ़्तीमून भी सम्मिलित हो तो उस को सूती कपड़े में बाँध कर देग को आग से उतारने से कुछ समय पहले ही उस में डालें।

आग से उतारने के पश्चात धीरे धीरे हाथ और हथेली से मलें फिर साफ़ कर के प्रयोग में लाएँ। शीर-ए-ख़िश्त, तुरंजबीन, फुलूस ख़्यार शंबर, गुलक़न्द और जुल्लाब को थोड़े गर्म पानी में भिगो कर घोल तैयार कर लें और साफ़ कर के मतबूख में सम्मिलित करें।

अगर आवश्यकता हो तो पूरे मतबूख़ को दोबारा साफ़ करें। अगर अनुपान का प्रयोग करना हो तो गर्म दुग्ध का प्रयोग करें।

अगर एलवा, अयारिज, तुर्बुद, सक़मूनिया और ग़ारिक़ून आदि का प्रयोग करना हो तो उनको कूट छान कर थोड़े से आब-ए-जुल्लाब के साथ हब्ब बना लें। उन को निगलने के बाद मतबूख़ का प्रयोग करें। अर्द्धकुट औषधियों को अनुपान के रूप में प्रयोग करना हो तो उन को मतबूख़ के साथ चम्मच में घोल कर प्रयोग करें फिर मतबूख़ का प्रयोग करें।

## ● नक़ूअ की निर्माण-विधि:

इस के सभी औषधि द्रव्यों को रात भर पानी में भिगोएँ और सुबह मल छान कर साफ़ कर लें। अगर उस में तुरंजबीन, शीर-ए-ख़िश्त और गुलक़ंद भी सम्मिलित करने का इरादा हो तो इन को नक़ूअ के उसी घोल में डालें और आवश्यकता हो तो

दोबारा साफ़ कर के प्रयोग में लाएँ।

● **नतूल की निर्माण-विधिः**

कूटने पीसने योग्य औषधियों को कूट पीस लें फिर सभी औषधि द्रव्यों का किसी उचित तरल पदार्थ में भिगो कर हल्की आँच पर पकाएँ और उस के बाद मल छान कर साफ़ कर लें। उस का भपारा लें और उस का हल्का गर्म पानी प्रभावित अंग पर नतूल करें अर्थात बहाएँ। अंग विशेष के लिए विशेष नतूल करें, भपारा लें और हल्का गर्म पानी बहाएँ।

तिला एवं ज़िमाद में अंतर यह है कि तिला का क़िवाम पतला होता है। लगाने के पश्चात अंग से इधर उधर बहता है और अनावशयक स्थानों तक भी पहुँच जाता है जब कि ज़िमाद का क़िवाम इतना गाढ़ा होता है कि लगाने के पश्चात वह अंग से इधर उधर नहीं बहता है ।

यह प्रथम फ़ायदा कुछ निर्मित औषधियों की निर्माण-विधि के संदर्भ में था। आगे भी इंशा अल्लाह विभिन्न प्रकार की औषधियों की निर्माण-विधि का उल्लेख उचित स्थान पर किया जाएगा।

❑❑❑

भूमिका

# द्वितीय लाभ

## पत्थरों आदि को धोने की विधि

### अरबी भाषा में इसे ग़ुस्ल एवं तस्वील कहा जाता है

- **बुसुद, मर्जान, अक़ीक़, यशब, मरवारीद, अक़लीमिया को धोने की विधि:**

इन को पहले हावन में कूटें फिर पत्थर की सिल पर पानी या किसी अन्य उचित तरल पदार्थ के साथ हल्का पीस लें। पीसने के पश्चात उनके जो भाग रह जाएँ उन्हें अलग एक प्याले में रख लें और जो भाग पानी के साथ पीसे गए हों उनको दूसरे प्याले में रख लें। अब उनके भारी कणों के नाचे बैठ जाने की प्रतीक्षा करें। जो सख़्त एवं भारी कण पानी की तह में बैठ जाएँ उन को दोबारा पीस लें। औषधियों को पीसने एवं उनके कणों के नीचे बैठने की प्रक्रिया इतनी बार की जाए कि उँगली के सिरे एवं ज़ुबान की नोक से छूने से उन औषधियों अथवा उनके कणों की सख़्ती महसूस ना हो। अंत में कुल घोल को प्याले में रखें और कणों को नीचे बैठने का अवसर प्रदान करें। उस के बाद पानी को फेंक दें और नीचे बैठे द्रव्यों को सुखा लें अब दोबारा उस को इतना पीसें कि वो सूक्ष्म धूल की भाँति हो जाए।

- **अक़लीमिया, सुर्मा, तूबाल-ए-मिस, ज़ाज एवं संज आदि को धोने की विधि:**

अक़लीमिया, सुर्मा, तूबाल-ए-मिस, ज़ाज एवं संज आदि में से जिस को आँख की बीमारियों में प्रयोग करने का इरादा हो उन को पहले जला लें फिर उपर्युक्त विधि से उन को धोएँ। आँख में प्रयोग की जाने वाली औषधियों को धोने और पीसने का कार्य बहुत ही सावधानी के साथ करें क्योंकि उनके कुछ भी भाग सख़्त रह गए तो आँखों को काफ़ी छति हो सकती है ।

- **लाजवर्द पत्थर को धोने की विधि:**

लाजवर्द पत्थर को सर्वप्रथम कूट छान कर इतना बारीक पीसें कि वो सूक्ष्म धूल की भाँति हो जाए फिर उस को रोग़न-ए-कुन्दुर या रोग़न-ए-मस्तगी में ख़मीर कर के मिला लें। गर्म पानी डाल कर हाथ से मलें। मलने के समय थोड़ा थोड़ा कर के गर्म

पानी डालते रहें ताकि अच्छी तरह से धुल जाए इस घोल को प्याले में रखें ताकि उस के कण नीचे बैठ जाए। पहली बार जो कण नीचे बैठतें हैं वो उत्तम होते हैं या वो लाजवर्द उत्तम होता है और दूसरी बार इस क्रिया से जो कण प्राप्त होते है वो बीच के या वस्त कहलाते हैं। ऐसे ही जो कण तीसरी बार में प्राप्त होते हैं उन्हे शम्त कहते हैं। उनको सुखा कर सुरक्षित कर लें।

## • मुर्दारसंग को धोने की विधिः

आवश्यक मात्रा में मुर्दारसंग ले कर हल्का कूट लें। उस के साथ उस का अर्द्धांश नमक मिलाएँ फिर उस को किसी पात्र में रख कर उस में इतना पानी भरें कि वो मुर्दारसंग के चार पाँच उँगली तक ऊपर हो। प्रतिदिन दो तीन बार किसी लकड़ी से चलाते रहें और यह कार्य बयालीस दिनों तक लगातार करते रहें। हर सातवें दिन पुराना जल फेंक दें और ताज़ा जल भर दें। इस प्रकार इस बीच छ बार जल बदला जाएगा। उसे सुखा कर हल्के से पीस लें और प्रयोग में लाएँ।

## • नौरह (चूना) की धोने की विधिः

आवश्यकतानुसार बिना बुझा हुआ चूना लें। किसी पात्र में रख कर उस पर पानी डालें और थोड़ी देर लकड़ी से चला कर रख दें। जब चूना नीचे बैठ जाए तो उस का पानी फेंक दें। इसी प्रकार सात बार ताज़ा पानी से धोएँ फिर सुखा लें और मज़बूत कोमल कपड़े से छान कर प्रयोग में लाएँ।

## • ग़िल–ए–अर्मनी, ग़िल–ए–शर्बती, अफ़्तीमून आदि को धोने की विधिः

जिस मिट्टी को धोना हो उस को किसी पात्र में भिगो दें फिर हाथ से मल कर खूब घोलें। जो सख़्त द्रव्य पात्र में रह जाएँ उन को निकाल दें। दोबारा उसी प्रकार साफ़ पानी में भिगो कर मलें और सख़्त कणों को बाहर निकाल दें। शेष घोल को पात्र में रख छोड़ें ताकि भारी कण नीचे बैठ जाएँ। धीरे से पानी फेंक दें और नीचे बैठे हुए कणों को सुखा कर प्रयोग में लाएँ।

## • घीकवार को धोने की विधिः

सक़ूतरी घीकवार 420 ग्राम की मात्रा में लें और छलनी से छान लें। साथ ही अफ़्सन्तीन रूमी, सुंबुलुत्तीब, क़सबुज़्ज़रीरा, दारचीनी, ऊद-ए-बलसाँ, हब्ब-ए-बलसाँ, सलीख़ा, इज़्ख़िर और असारून में से प्रत्येक 3.5 ग्राम को 420 मिली लीटर पानी में इतना पकाएँ कि आधा रह जाए उसे साफ़ कर लें। इस पके हुए पानी में उपर्युक्त वर्णित घीकवार को पत्थर के हावन में सूक्ष्म चूर्ण कर लें फिर किसी भारी पात्र में

उँडेल कर साफ़ कर लें और भारी कणों को निकाल दें।

दूसरी बार उसी पके हुए पानी के साथ सिल बट्टे पर इतना पीसें कि उस पानी का असर उस में मिल जाए फिर उन को किसी पात्र में रख छोड़ें ताकि भारी कण नीचे बैठ जाएँ।

तत्पश्चात पानी को फेंक दें और घीकवार प्राप्त कर लें। सूख जाने के बाद उस घीकवार में 10.5 ग्राम केसर को पानी में घिसकर मिलाएँ। आवश्यकता के समय अयारिजात आदि में प्रयोग करें।

- **लुक को धोने की विधि:**

लकड़ी से पाक साफ़ लुक को लेकर हल्का कूट पीस लें फिर हावन में रख कर उस पानी के साथ ख़ूब पीसें जिस में रेवन्द चीनी और बीख़-ए-इज़्ख़िर को पकाया गया हो। फिर ताँबे की छलनी या मोटे सूती कपड़े से साफ़ कर लें और किसी पात्र में पानी के साथ रख छोड़ें ताकि भारी कण नीचे बैठ जाएँ। तत्पश्चात पानी को फेंक दें और लुक को सुखा कर हल्का पीस लें। क़ुर्स-ए-लुक अथवा दवा-ए-लुक में प्रयोग करें।

- **मोम को धोने की विधि:**

मोम पिघलाकर साफ़ पानी में डालें फिर साफ़ कर लें। यह प्रक्रिया इतनी बार करें कि पानी में मोम के ज़ायक़े का आभास होना बंद हो जाए। अपनी रूचि अनुसार मरहमों में प्रयोग करें।

- **ज़ैतून तैल की धोने की विधि:**

आवश्यकतानुसार ज़ैतून तैल लेकर मज़बूत सूती कपड़े से छान लें। एक अंश तैल और उस के दो अंश ऊष्मजल ले कर किसी पात्र में रख लें फिर दो तीन ख़ुर्मा और जौ का आटा 24 ग्राम की मात्रा में ले कर मज़बूत सूती कपड़े में बाँधें और उसी पात्र में डाल दें। तत्पश्चात उस पात्र को हल्की आँच पर रख कर इतना पकाएँ कि पानी जल जाए और तैल शेष रह जाए।

- **सर्तान (केकड़ा) को धोने की विधि:**

यह उस सर्तान (केकड़ा) के धोने की विधि है जो माउशशईर में पड़ता है। आवश्यकतानुसी नहर के केकड़े लें। उनके पंजे तोड़ कर और पेट चीर कर साफ़ कर लें फिर हल्दी, राख और नमक से खूब धोएँ। तत्पश्चात ऊष्मजल से कई बार धोएँ ताकि नमक के ज़ायक़े का आभास होना बंद हो जाए फिर पत्थर के हावन में कूट पीस कर माउश्शईर में मिलाएँ।

- **अक़ाक़िया एवं साज़ज को धोने की विधिः**

इन औषधियों को सिल बट्टे पर पीस लें फिर किसी प्याले में भर कर उस में साफ़ पानी भी डाल दें और ख़ूब हिलाएँ। एक प्याले से दूसरे प्याले में कई बार डालें। शेष रह गए भारी कणों को ले कर दोबारा पीसें और फिर सब को एक साथ भर कर रख दें और भारी कणों के नीचे बैठ जाने की प्रतीक्षा करें।

अंत में पानी फेंक दें और नीचे बैठे भारी कणों को सुखा कर प्रयोग में लाएँ।

❑❑❑

भूमिका
# तृतीय लाभ

## औषधियों को जलाने, खनिज पदार्थों को भस्म करने, बीजों को भूनने और इश्क़ील मुशव्वा करने की विधि

- **लौह भस्म करने की विधि:**

सर्वप्रथम लौह की पर्तें बना कर रख लें। एक ताम्र की देग में हलीला, बलीला और आमला डाल कर पकाएँ और साफ़ कर लें। फिर उस पके हुए पानी को दोबार किसी ताम्र की देग में हल्की आँच पर पकाएँ। तत्पश्चात लौह की पर्तों को आग में लाल कर के उसी पके हुए पानी में बुझाएँ। यह प्रक्रिया 21 बार करें और साफ़ करने के बाद लौह के जो अवशेष देग में नीचे बैठ गए हों उन को सुरक्षित कर लें। उपर्युक्त क्वाथ (पके हुए पानी) की ही मात्रा में गौमूत्र ले कर उसी ताम्र की देग में हल्की आँच पर पकाएँ और ठीक पहली बार की भाँति 21 बार लौह की पर्तों को लाल कर के गौमूत्र में बुझाएँ। फिर लौह के जो कण नीचे बैठ जाएँ उन्हें पहली बार में प्राप्त होने वाले कणों के साथ मिला कर धीरे धीरे पीसें। उस के बाद उन्हें घरिया में भर कर अच्छे प्रकार से गिल-ए-हिकमत (घरिया को मिट्टी के लेप से बंद) करें और गाय के ओपलों की आग में रखें। तत्पश्चात घरिया से निकाल कर दोबारा त्रिफला के पानी में पीसें। यह पूरी प्रक्रिया इतनी बार करें कि लौह के कण पानी के पतल पर बहने लगें और नीचे ना बैठें। अब उन को प्रयोग में लाएँ।

भारतीय हकीमों या तबीबों के अनुसार लौह भस्म करने की विधि यह है कि लौह के बुरादे को गाय की छाछ में तीन दिनों तक भिगोएँ। फिर उस से निकाल कर त्रिफला के क्वाथ (पके हुए पानी) के साथ पत्थर पर खूब पीसें और गोली बना कर सुखा लें। उस के बाद उन गोलियों को एक मिट्टी के प्याले में रखें और दूसरे प्याले से उसे ढांक कर अच्छे प्रकार से गिल-ए-हिकमत (मिट्टी के लेप से बंद) कर दें और एक हफ़्ता तक घरेलू गाय के ओपलों की आग में रखें। फिर उस से निकाल लें और लौह के कणों को हलीलाजात के क्वाथ (पके हुए पानी) और गाजर के ताज़ा रस के साथ सिल बट्टे पर खूब पीसें और फिर सुखा लें। यह पूरी प्रक्रिया 10 बार करें।

उस के बाद दोबारा पहली बार की ही भाँति मिट्टी के प्याले में रख कर सात दिनों तक जंगली गाय के ओपलों की आग में रखें और आवश्यकतानुसार प्रयोग में लाएँ।

कुछ लोग अंत में इस निर्मित भस्म को दोबारा सिल बट्टे से पीस कर एक दिन और एक रात खट्टी दही में रखते हैं, फिर उस से निकाल कर थोड़ा सा नौशादर मिला कर बहुत सूक्ष्म पीसते हैं और गोलियाँ बना कर पहले की ही तरह मिट्टी के प्याले में रख कर सात दिनों तक तीसरी बार आग में रखते हैं। उस के बाद पीस कर प्रयोग में लाते हैं।

भारतीय हकीमों या तबीबों के बीच लौह भस्म करने की दूसरी विधि यह है कि लौह बुरादे को ताज़ा घीकवार के शीरह में मिला कर सिल बट्टे पर पीसें और जंगली गाय के ओपलों की आग में रखें। यह प्रक्रिया 10 बार करें ताकि वो अच्छी तरह से मिल जाए फिर दस बार हलीलाजात के क्वाथ (पके हुए पानी) के साथ मिला कर पीसें और सुखा लें। तत्पश्चात पहले की तरह मिट्टी के प्याले में रख कर सात दिनों तक गाय के ओपलों की आग में रखें। अंत में अत्यंत सूक्ष्म पीस कर और हरीर या रेशम के कपड़े से छान कर प्रयोग में लाएँ।

बढ़िया और उच्च कोटि के भस्म की निशानी यह है कि थोड़ा सा भस्म ले कर पानी के पतल पर डाला जाए अगर वह पानी के पतल पर तैरता रहे तो वह उच्च कोटि का भस्म है और अगर नीचे बैठ जाए तो ठीक नहीं है। इस स्थिति में कुछ और बार उस को हलीलाजात के क्वाथ (पके हुए पानी) के साथ मिला कर पीसें और आग में रखें।

- **ताम्र भस्म करने की विधि:**

भारतीयों के अनुसार ताम्र भस्म करने की विधि यह है कि आवश्यकतानुसार बढ़िया ताम्र का चयन करें। अच्छी तरह से कूट कर उस की परतें बना लें और कुछ दिनों तक गाय के छाछ में रखें। उस के बाद उन परतों पर नमक, कबूतर की बीट और ताज़ा घीकवार के रस का घोल लगाएँ और सभी परतों को एक दूसरे के ऊपर नीचे रख कर मिट्टी की देग में रखें। फिर उस देग को जंगली गाय के ओपलों की आग में रख कर खुब जलाएँ और लाल होने के बाद निकाल कर साफ़ कर लें। फिर इस ताम्र का एक अंश, पारद उस के अर्द्धांश एवं लाल गन्धक दोनो के समभाग लेकर घीकवार के ताज़ा शीरह में सूक्ष्म पीसें। परतों पर घोल लगा कर मिट्टी की नई देग में रखें। इस के लिए उन को मिट्टी के प्याले से बंद कर दें और मज़बूत गिल-ए-हिकमत (मिट्टी के लेप से बंद) कर के मिट्टी की देग में रखें। फिर देग में इतना नमक भरें कि प्याला नमक से हर ओर से छिप जाए अब देग को भट्टी पर रख कर लगातार

छः घंटे तक मध्यम दर्जे की आग जलाएँ। ठंडा होने के बाद परतों को गाय के दूध में डाल कर पत्थर पर ख़ूब सूक्ष्म पीसें। यह पहली बार की प्रक्रिया है। दूसरी बार की प्रक्रिया यह है कि इस सूक्ष्म को एक प्याले में रख कर देग में रखें और गिल-ए हिकमत कर के जंगली गाय के ओपलों की आग में जलाएँ। ठंडा होने के पश्चात फटी दही में सूक्ष्म पीसें।

तीसरी बार आग में जला कर गाय के घी में पीसें।

चौथी बार आग में जला कर मधु में पीसें और पाचवीं बार आग में जला कर शकर में पीसें ।

इस विधि से तैयार किया हुआ लौह भस्म भारतीय हकीमों की भाषा में "शैख़ -ए-अमृत" कहलात है। इस बात का विशेष ध्यान रहे कि इस प्रक्रिया में जो प्याला देग के अंदर उल्टा रखा जाता है उसके ऊपरी भाग में शंगरफ़ की भाँति एक प्रकार का पदार्थ एकत्रित हो जाता है। उन को छील कर सुरक्षित कर लें। जिन व्यक्तियों को पारद से किसी प्रकार की हानि विशेष रूप से मुखपाक (Stomatitis) का खतरा रहता है वो लोग इस पदार्थ को ताम्र के भस्म में सम्मिलित नहीं करते हैं हालांकि हकीम उस को पारद से पहुँचने वाली हानि से बचने के लिए ताम्र के साथ मिला कर दूध, दही, घी, मधु एवं शकर में सूक्ष्म पीस कर प्रयोग करते रहे हैं।

भारतवर्ष में ताम्र को भस्म करने की दूसरी विधि यह भी है कि एक ओर ताम्र की परतें बना लें, और दूसरी ओर ताम्र के दो गुना मात्रा में ज़र्द गन्धक लें और ताज़ा घीकवार के शीरह में पीस कर एक घोल तैयार कर लें। फिर उन परतों को उस घोल में लपेट कर सुखा लें और मिट्टी की देग में ऊपर नीचे रख कर उस का अच्छी तरह से गिल-ए-हिकमत (मिट्टी के लेप से बंद) कर दें और आग में रख कर जलाएँ। ठंडा होने के पश्चात उपर्युक्त घोल में दोबारा लपेट कर उसी तरह आग में जलाएँ।

यह प्रक्रिया तीसरी बार भी करें ताकि इच्छानुसार भस्म तैयार हो जाए जिस की निशानी यह है कि खाकिस्तर की सतह पर पानी ठहरा रहे और उस में अवशेष ना हो। जिन व्यक्तियों को पारद से किसी प्रकार की हानि का ख़तरा नहीं रहता है उन के लिए पहली विधि से तैयार किया गया ताम्र भस्म बेहतर साबित होता है।

भारतीय हकीमों के अनुसार उस में अनेक गुण होते हैं। भूक बढ़ाता है। विभिन्न प्रकार की बवासीर, कुष्ठ रोग, जलोदर रोग, दमा, आमाशय एवं आँतों में होने वाले गैसीय अशुद्धता, बलग़म की अधिकता के कारण होने वाली सूजन, बलग़म के कारण होने वाले पुराने बुख़ार, पेट दर्द, सर दर्द, तिल्ली के रोग और आमाश्य के नासूर में लाभदायक है। इसका मिज़ाज गर्म एवं सूखा है लेकिन ताप को संतुलित करता है।

यह मृदु-विरेचक (Laxative) भी है। इस का सुधारक (corrective) थोड़ी सी फ़िलफ़िल के साथ मधु का प्रयोग है।

इस क सेवन-मात्रा भारतीय हकीमों के अनुसार 500 मिली ग्राम है। भारतीय हकीम भस्म के अनेकों गुणों को मानते है।

- **सुर्ब को भस्म करने की विधिः**

सुर्ब का दूसरा नाम "आबार" है और यह नेत्र रोगों में प्रयोग की जाने वाली औषधियों में गिना जाता है। सर्वप्रथम सुर्ब का लेकर थोड़ी मात्रा में गन्धक में पिघला लें, फिर लौह पात्र में भर कर लोहे के कूज़े में रख लें और ख़ूब जला कर राख बना लें।

भारतीयों के अनुसार सुर्ब को भस्म करने की दूसरी विधि यह है कि सुर्ब को 270 ग्राम की मात्रा में ले कर उस की परतें बना लें। साथ ही पारद एवं गन्धक 27-27 ग्राम लेकर सूक्ष्म चूर्ण कर के अच्छी तरह मिला लें और सुर्ब की परतों पर लगा कर उन्हें मिट्टी के पात्र में रखें और उस के मुह पर एक प्याला रख कर गिले-ए-हिकमत (मिट्टी के लेप से बंद) कर दें। फिर जंगली गाय के ओपलों की आग में रख कर ख़ूब जलाएँ।

ठंडा होने के बाद दूसरी बार गन्धक 27 ग्राम और पारद 9 ग्राम की मात्रा में लेकर सूक्ष्म चूर्ण कर के अच्छी तरह मिलाएँ, फिर उस को (पहली बार जलाए गए) सुर्ब की राख के साथ अच्छी तरह मिलाकर आग में जलाएँ।

ठंडा होने के बाद तीसरी बार (दूसरी बार जलाए गए) सुर्ब की राख के समभाग ज़र्नीख़ सुर्ख़ और 45 ग्राम की मात्रा में गन्धक लेकर दोनों को सूक्ष्म चूर्ण कर लें और उस के तीन भाग कर लें। उस में से एक भाग ले कर सुर्ब की राख के साथ मिलाएँ और ख़ालिस पानी के साथ ख़ूब पीसें। फिर धूप में सुखा कर पहले की तरह आग में जलाएँ। ठंडा होने के बाद उस में सूक्ष्म का दूसरा भाग मिलाएँ और पहले की तरह पीसे और जलाएँ।

ठंडा होने के बाद सूक्ष्म का तीसरा भाग मिलाएँ और पहले की तरह इतना पीसे और जलाएँ कि अत्यंत सूक्ष्म राख हो जाए।

खनिज एवं धातुओं को भस्म करने की सम्पूर्ण प्रक्रिया यह है कि वह पदार्थ पूर्ण रूप से जल कर राख हो जाए। जलाने की कोई समय सीमा और आँच की तेज़ी की कोई मात्रा सुनिश्चित नहीं है। धातुओं के उच्च भस्म होने की निशानी यह है कि वह जल में डालने पर उसके तरल पर तैरता रहे और नीचे ना बैठे।

सात धातुओं (स्वर्ण, रजत, रांगा, लोहा, ताम्र, सीमाब और पारद) को भस्म करने के संदर्भ में कुछ हकीमों की सामान्य प्रक्रिया यह रही है कि धातु विशेष को घड़िया

में रख कर गिल-ए-हिकमत (घरिया को मिट्टी के लेप से बंद) करते हैं फिर उस को शीशे के पात्र में रख कर गिल-ए-हिकमत करते हैं। तत्पश्चात उस पात्र को मिट्टी की देग में रखते हैं और उस देग में शीशे के पात्र के ऊपर इतनी रेत भरते हैं कि वह पात्र छिप जाए फिर इस देग को भट्टी पर चढ़ा कर दो तीन दिन में ही इतनी अधिक आँच दें जितनी आम तौर पर दस दिनों में पहुँचाई जा सकती है ताकि कम समय में ही उस को तैयार किया जा सके।

भारतीय हकीम सुर्ब भस्म का स्वभाव गर्म मानते हैं। उनका कहना है कि जो व्यक्ति सुर्ब भस्म को लगातार प्रयोग करता है उस की उम्र बढ़ जाती है एवं वह हृष्ट पुष्ट हो जाता है।

सेवन-मात्राः 250 मिली ग्राम।

- **सीमाब (पारद) भस्म करने की विधिः**

भारतीय हकीमों के अनुसार पारद भस्म करने की प्रचलित विधि यह है कि साफ़ पारद 112.5 ग्राम और गन्धक 112.5 ग्राम लेकर दोनों को सूक्ष्म चूर्ण कर लें। फिर उस चूर्ण को धतूरा के पत्ते के रस में सात बार पीस कर सुखा लें। तत्पश्चात घीकवार के ताज़ा शीरा या किसी अन्य उचित रस में सात बार बहुत ही सूक्ष्म पीस कर सुखा लें। फिर किसी शीशे के पात्र में भर कर ढक्कन सहित ठोस गिल-ए-हिकमत (मिट्टी के लेप से बंद) कर लें। उस पात्र को मिट्टी के देग के बीच में रख कर उस शीशे के पात्र के ऊपर इतनी रेत डालें कि वह पात्र छिप जाए फिर इस देग को भट्टी पर चढ़ाएँ और तीन दिन व तीन रात उस के नीचे आग जलाएँ जो पहले दिन थोड़ी हल्की हो, दूसरे दिन थोड़ी और तेज़ हो और तीसरे दिन और अधिक तेज़ हो। ठिंडा होने के बाद शीशे के पात्र को तोड़ दे और जो कुछ प्राप्त हो उसे सुरक्षित कर लें।

अगर पारद भस्म को रंगीन जैसे लाल रंग का बनाना हो तो प्रारंभ में ही उस में गुल-ए-सुर्ख़, गेरू और सफ़ेद फिटकिरी मिला दें। ऐसे पारद भस्म का हिन्दी नाम "रस सुन्दर" है।

- **पारद को भस्म करने की अन्य विधिः**

आवश्यकतानुसार पारद एवं गन्धक को समभाग में लें, फिर दोनों को एक साथ घीकावार के ताज़ा शीरा में डाल कर पत्थर पर या पत्थर के हावन में सूक्ष्म पीसें और क़ुर्स बना कर सुखा लें। तत्पश्चात उन को सूती कपड़े के आठ परतों के अंदर रख कर एक पोटली बना लें। चार उँगली से अधिक मोटी दों ईटें लें और आधा आधा उन दोनों के बीच में इतने बड़े छेद बनाएँ कि उपर्युक्त पोटली समा सके। फिर दोनों

को एक दूसरे पर रख कर गिल-ए-हिकमत कर दें और जंगली गाय के ओपलों की आग में तीन दिन एवं तीन रात लगातार पकाएँ। ठंडा होने के बाद पारद को सुरक्षित कर लें। हकीमों के बीच पारद भस्म की अनेक विधियाँ प्रचलित हैं लेकिन इस संदर्भ में अनुसंधानी राय यह है कि पारद को किसी भी विधि द्वारा भस्म नहीं किया जा सकता है। उस को खाने की हिम्मत कदापि नहीं करनी चाहिए क्योंकि हानि होने का डर होता है। भारतीय हकीम उस को उनेक गुणों वाला बताते हैं। उन के अनुसार यह विभिन्न प्रकार के गैसीय अशुद्धता, उपदंश, सूज़ाक, कन्ठमाला, मूत्राशय की पथरी, शीघ्रपतन, वजीकरण, प्रत्येक प्रकार के फ़ोड़े, फ़ुन्सी, सूजन में लाभदायक है। उन के अनुसार उस की सेवन-मात्रा 32 ग्राम है, चाहे वह किसी भी विधि से तैयार किया गया हो। उस का सुधारक(Corrective) मधु है।

- **सोना (स्वर्ण) को भस्म करने की विधिः**

सोना (स्वर्ण) भस्म करने की विधि यह है स्वर्ण को 4.5 ग्राम सुर्ब के साथ रेती से रगड़ कर अत्यंत छोटे छोटे एवं नर्म कण बना लें। फिर उन कणों को स्वर्ण तैयार करने की घरिया में इतने समय तक रखें कि वो ठंडे हो जाएँ। उस के बाद दूसरी बार 4.5 ग्राम सुर्ब ले कर रेती से रगड़ कर अत्यंत छोटे छोटे एवं नर्म कण बना लें और पहली बार में प्राप्त स्वर्ण के साथ घरिया में भर कर इतनी देर रखें कि दूसरी बार डाला गया सुर्ब उस स्वर्ण के साथ अच्छी तरह से मिल जाए। तीसरी बार इस प्राप्त स्वर्ण को लेकर रेती से छोटे छोटे कण बना लें और उस को लोहे के चम्मच में भर लें। उस चम्मच में नमक का पानी भी डालें और इतना पकाएँ कि पूरा पानी जल जाए। तत्पश्चात स्वर्ण को चम्मच से निकाल कर पत्थर पर धीरे धीरे इतना पीसें कि अंबर की भाँति नर्म हो जाए अब उस को प्रयोग करें।

भारतीय हकीमों के अनुसार सोना भस्म करने की विधि यह है कि एक ओर स्वर्ण के सिक्के तैयार कर लें। दूसरी ओर स्वर्ण के दो गुना गन्धक एवं पारद लेकर एक साथ पीसें और एक घोल तैयार कर लें। इस घोल को स्वर्ण के सिक्कों पर लगा कर मिट्टी के ऐसे कच्चे पात्र में रखें जिस के अन्दर और बाहर अच्छी तरह से गिल-ए-हिकमत किया गया हो। फिर उसे जंगली गाय के ओपलों की आग में दो तीन घंटे रखें और ठंडा होने के बाद उन को पहले की तरह गन्धक व पारद के घोल में मलें। मिट्टी के पके पात्र में रख कर इतना गरम करें कि जल कर राख हो जाए।

- **चाँदी (रजत) को भस्म करने की विधिः**

चाँदी भस्म करने की विधि, भारतीय हकीमों के अनुसार वही है जो स्वर्ण की

है। इन धातों को भस्म करने की सम्पूर्ण विधि ताम्र (मिस या तांबा) के संदर्भ में वर्णित की जा चुका है।

दूसरी विधि यह है कि रेती से रजत के छोटे छोटे कण बना लें। उन को लोहे के चम्मच में रख कर नमक के पानी के साथ पकाएँ। इस बीच उस में थोड़ा सा गन्धक भी डाल दें। जब पानी जल जाए तो ठंडा होने के बाद पत्थर पर पीस कर प्रयोग करें।

- **याक़ूत को सोख़्ता करने की विधि:**

आसानी से पीसने योग्य बनाने के लिए याक़ूत को सोना तैयार करने की घरिया में रख कर इतना जलाएँ कि वह लाल हो जाए उस को निकाल कर सिरके के पानी में बुझाएँ। यह प्रक्रिया कई बार करें और फिर सिल बट्टे पर पीस कर प्रयोग में लाएँ।

- **मरवारीद को सोख़्ता करने की विधि:**

मरवारीद नासुफ़्ता और थोड़ा सा गाय का दूध लेकर मिट्टी के पके पात्र में भर कर ढक्कन अच्छी तरह बंद कर दें। फिर इतनी आँच पहुंचाएँ कि जल जाए। ठंडा होने के बाद प्रयोग करें।

- **बुसुद, मर्जान और अक़ीक़ को भस्म करने की विधि:**

इन में से जिस का भी भस्म तैयार करना हो उसे लेकर कोरे कूज़े में भर कर गिल-ए-हिकमत करें। रात में उस को तेज़ गर्म तन्दूर में रखें और सुबह निकाल लें। इस बात का विशेष ध्यान रखें कि अधिक जल कर राख ना हो जाएँ।

- **तलक़ (अभ्रक)सोख़्ता करने की विधि:**

भारतीय हकीमों के अनुसार उस को हथोड़े से नर्म कर लें। तीन दिन तक बहुत तेज़ और पुराने सिर्का में भिगो लें। फिर उसी सिर्का में पका कर निकाल लें, फिर सख़्त कंकरियाँ मिला कर थैली में भर लें। थैली को किसी पात्र में रख कर ऊपर से सिर्का भरें। धीरे धीरे सिर्का में थैली को हाथ से मलें ताकि पूरा तलक़ कमज़ोर हो जाए। उस को थैली व सिर्का से निकाल कर पत्थर पर हल्का पीस लें। क़ुर्स बना कर मिट्टी के कच्चे पात्र में रखें और दूसरे पात्र से बंद करके गिल-ए-हिकमत करें। फिर गाय के जंगली ओपलों की आग में उसी प्रकार राख करें जैसा कि लौह भस्म करने के संदर्भ में बताया गया है। हर बार ठंडा होने के बाद हलीला, बलीला, आब-ए-बर्ग-ए- धतूरा, आमला, आब-ए-भंगरह आदि से उसी प्रकार पीसें जैसा कि ताम्र एवं लौह को भस्म करने के संदर्भ में बयान किया जा चुका है। अंत में क़ुर्स बना कर फिर से मिट्टी के पके पात्र में प्रक्रियानुसार सोख़्ता करें। कुछ हकीमों का

कहना है कि तीन हज़ार बार या उस से भी अधिक बार आग में सोख़्ता करें। उस की राख में हर हाल में चमक बाक़ी रहती है इस लिए उस को उस समय तक सोख़्ता करते रहें कि धूप में रखने से उस की चमक बाक़ी ना रहे क्योंकि यही उस के सही सोख़्ता होने की निशानी है।

**अभ्रक भस्म के लाभः**

भारतीय हकीमों के अनुसार अभ्रक भस्म मिर्गी एवं बादी रोगों में लाभदायक, शरीर को मोटा करता, वीर्यवर्धक एवं पाचक, गुर्दे एवं मूत्राशय की पथरी को पारा पारा करता, विभिन्न प्रकार के दस्तों में लाभदायक और हरारत-ए-ग़रीज़ी को बढ़ाता है।

सेवन-मात्राः 1 ग्राम से 2.25 ग्राम तक है।

अनुपानः उचित औषधियों के साथ प्रयोग करें।

- **आबगीना (शीशा) को सोख़्ता करने की विधिः**

शीशे को नए कूज़ा में भरें और गिल-ए-हिकमतकर के आग में रखें। जिस समय यह पिघल कर पानी बनना प्रारंभ हो, आग से उतार लें और क़ल्यहके पानी में डाल कर पीसें।

- **संज को सोख़्ता करने की विधिः**

संज पर गिल-ए-हिकमत कर के रात भर के लिए गर्म तन्दूर में रख दें ताकि जल जाए। दिन में निकाल कर मिट्टी साफ़ करें और धोने के बाद सुर्मों और आँख की औषधियों में प्रयोग करें।

- **ज़ाजको सोख़्ता करने की विधिः**

ज़ाज सफ़ेद बिल्लोरी पर गिल-ए-हिकमत (मिट्टी का लेप) करें और एक ईंट पर रख कर गर्म तन्दूर में इतनी देर तक रखें कि जल कर तबाशीर की भाँति खिल जाएँ फिर प्रयोग में लाएँ।

- **आब्रेशम को मुहर्रक़ करने की विधिः**

आब्रेशम को क़ैंची से कतर लें। मिट्टी के पके पात्र की तह में आग के अंगारे रखें और आब्रेशम के टुकड़ों को उन पर रख कर धीरे धीरे इतना जलाएँ कि वो पीसने योग्य हो जाए।

- **रमादुलख़ुतातीफ़ तैयार करने की विधिः**

ख़ुत्ताफ़ का फ़ारसी नाम "प्रस्तूक और ब्रोस्तूक" है। ख़ुत्ताफ़ के बच्चे को मार कर उस के बाल एवं पंख साफ़ कर लें। पेट चीर कर उस की गंदगी को साफ़ कर

लें। थोड़ा नमक लगा कर नए कूज़े में रखें और गिल-ए-हिकमत कर के गर्म तन्दूर में इतनी देर तक रखें कि अच्छी तरह से जल कर राख हो जाए।

- **सर्तान (केकड़े) को सोख़्ता करने की विधिः**

सर्तान-ए-नहरी को उस समय प्राप्त करें जब सूर्य अच्छी तरह से चमक रहा हो। उस के पंजे निकाल दें और पेट चीर कर गंदगी को भी साफ़ कर दें। हल्दी की राख एवं नमक से धो कर मिट्टी के कूज़े में रखें। उस कूज़े पर भूसी, नमक एवं ख़तमी के साथ ख़मीर की गई मिट्टी का लेप कर दें और उसी मिट्टी से उस के ढक्कन पर गिल-ए-हिकमत भी कर दें। फिर उस को ऐसे तन्दूर में रखें जिस को हल्दी की आग से गर्म किया गया हो और उस तन्दूर को अच्छी तरह ढांप दें। अगर रात मे रखें तो सुबह निकाल लें और अगर सुबह में रखें तो रात में निकाल लें।

- **अक़रब (बिच्छू) को भस्म एवं सोख़्ता करने की विधिः**

ज़िन्दा बिच्छू को तांबे, लोहे या मिट्टी के हल्के पात्र में रख कर उस का ढक्कन ख़मीर से लेप कर के मज़बूती से बन्द कर दें और एक रात उस तन्दूर में रखें जिस को सिम्नह लकड़ी की आग से गर्म किया गया हो और उस की राख को निकाल लिया गया हो। लेकिन इस बात का विशेष ध्यान रखें कि तन्दूर इतना अधिक गर्म ना हो कि बिच्छू बिलकुल ही जल कर राख हो जाए।

- **सक़मूनिया को मुशव्वा करने की विधिः**

सेब या बेही का फल लें और उस का गूदा निकाल कर बीच में एक गढ़ा बना लें। उस गढ़े में जितना सक़मूनिया आ सके, सूती कपड़े में बाँध कर रखें। छेद को अच्छी तरह से बन्द करके ख़मीर का लेप लगाएँ और नार्मल गर्म तन्दूर में रख दें। तन्दूर से निकाल कर ख़मीर को फल से अलग कर दें। उस के बीच से सक़मूनिया निकाल कर छाँव में सुखाएँ और प्रयोग में लाएँ।

- **इशक़ील को बिरयाँ** (Parching) **करने की विधिः**

इशक़ील-ए-उन्सुल को ख़मीर में लपेट कर मिट्टी में लपेट लें। रात भर गर्म तन्दूर में रखें। सुबह ख़मीर एवं मिट्टी को अलग कर दें और उस का ऊपरी छिलका भी उतार दें। लकड़ी के चाक़ू से उस के टुकडे टुकड़े कर के सूती धागें में इस प्रकार पिरोएँ कि हर टुकड़ा एक दूसरे से दूर रहे। उन को छाँव में सुखा लें।

- **बुज़ूर (बीजों) को बिरयाँ** (Parching) **करने की विधिः**

मिट्टी के पके हुए पात्र को ख़ूब जलते हुए कोयले पर रखें ताकि वो अच्छी तरह

से गर्म हो जाए फिर बीजों को उस में डालें और आग से उतार लें। करछुल से उस समय तक चलाते रहें कि उन बीजों की बू महसूस होने लगें लेकिन वो जलने ना पाएँ। जिन बीजों से बू आती है उन को भिन्न भिन्न बिरयाँ करें वर्ना यूँ दो बीजों को एक साथ भी बिर्यां कर सकते हैं।

## ● हलीला को बिरयाँ करने की विधिः

यह विधि उस हलीला से संबंधित है जिस को सुफ़ूफ़ के नुस्खों में प्रयोग किया जाता है। पोस्त-ए-हलीला को कूट कर पानी में पकाएँ और सुखा कर रोग़न-ए-ज़ैतून या रोग़न-ए-गाव में भूनें, लेकिन सावधानी रखें कि जलने ना पाएँ।

## ● समग़ को बिरयाँ करने की विधिः

किसी भी प्रकार का गोंद हो, चाहे वह दूषित हो या साफ़ हो, बीजों की भाँति ही उस को इतना भूनें कि उस का रंग सफेद हो जाए और मलने पर कण-कण अलग हो जाएँ।

❑❑❑

भूमिका

# चतुर्थ लाभ

## सातों धातुओं एवं अन्य औषधियों की विषहरण-विधि

- **सात धातुओं को साफ़ करने की विधिः**

यह है कि उन में से जिस को भी साफ़ करने का इरादा हो उसे भस्म कर के आग में लाल करके पहली बार रोग़न-ए-कुंजद में, दूसरी बार सिर्का में और तीसरी बार गाय के छाछ में बुझाएँ। चौथी और अंतिम बार आग में गर्म करके खट्टी छाछ में बुझाएँ। भारतीय हकीमों के अनुसार धातों को साफ़ करने की विधि प्रारंभ से अंत तक यही है प्रन्तु वो भस्म करने से मना करते हैं।

- **सीमाब साफ़ करने (Detoxification) की विधिः**

पहले सात दिन पारद को ठंडे पाने में मलें फिर अगले सात दिन ईंट के पाउडर एवं नमक से मलें और फिर अगले सात दिन आब-ए-लीमू या आब-ए-तुरंज में मलें। उस के बाद सूती कपड़े से साफ़ करके प्रयोग करें। अगर पारद को शुद्ध एवं साफ़ प्राप्त करना चाहते हैं तो शंगरफ़ से प्राप्त करें क्योंकि यह उत्तम होता है और साफ़ करने की भी आवश्यकता नहीं पड़ती है।

- **खुब्सुलहदीद मुदब्बर करने की विधिः**

इस की कई विधियाँ हैं।

विधि नंबर-1: खुब्सुलहदीद को कूट पीस कर चार दिन तक ख़मीर में भिगोएँ फिर रोग़न-ए-बादाम में भूनें। तत्पश्चात सूक्ष्म चूर्ण करके जवारिश एवं माजून के नुस्खों में प्रयोग करें।

विधि नंबर-2: उस को हल्का कूट कर 14 दिन सिर्का में भिगो कर रखें फिर निकाल कर कई दिनों तक आब-ए-कुर्रास में भिगोएँ प्रन्तु उसे प्रतिदिन बदलते रहें। उस से निकालें और सुखा कर बारीक पीस लें। रोग़न-ए-बादाम या रोग़न-ए-मुख़्ख़ुल अज़्म या रोग़न-ए-ज़र्द या रोग़न-ए-शफ़्तालू में भूनें।

विधि नंबर-3: इस का प्रयोग उस समय किया जाता है जब उसे बवासीर में

प्रयोग करने का इरादा हो। उस को हल्का पीस कर 21 दिन तक शराब-ए-रैहानी में भिगोएँ और इस बीच प्रतिदिन शराब-ए-रैहानी को बदलते रहें। उस के बाद भून कर धीरे धीरे सिल बट्टेपर पीस लें और माजून के उन नुस्खों में प्रयोग करें जो आमाशय की कमज़ोरी में प्रयोग होते हैं।

विधि नंबर-4: हल्का पीस कर 7 दिन तक शराब के पुराने सिर्का में भिगोएँ और प्रतिदिन सिर्का बदलते रहें। फिर 7 दिन तक माउलअस्ल में भिगोएँ। फिर 7 दिन तक उस को ऐसे पानी में भिगोएँ जिस में शकर पड़ी हो। उस के बाद उस को सुखा कर रोग़न-ए-बादाम में भूनें और ख़ूब पीस कर प्रयोग में लाएँ।

- **बुरादा आहन (लोहे के बुरादे) बनाने की विधिः**

लोहे को मिट्टी के पके हुए कोरे पात्र में रख कर आग से गर्म करके लाल कर लें। फिर जिन विभिन्न प्रकार के जलों का उल्लेख ताम्र एवं रजत को मुदब्बर करने के संदर्भ किया जा चुका है, उनमें इस को बुझा लें और पीस कर प्रयोग में लाएँ।

- **किब्रीत को मुदब्बर करने** (Detoxification) **की विधिः**

किसी पात्र में गाय कर दूध भर कर उस के मुँह पर मज़बूत सूती कपड़ा बाँध दें। गन्धक को हल्का बारीक पीस कर उपरोक्त कपड़े पर फैला कर बिछा दें। फिर उस गन्धक पर मिट्टी की पकी पलेटें रखें जिन के बीच में गाय के ओपले रखें या अंगारे रख कर खूब फूँकें ताकि गन्धक पानी बन कर कपड़े से दूध में टपके। उस को जमा कर लें और आवश्यकता के समय प्रयोग में लाएँ।

- **माज़र्यून को मुदब्बर करने** (Detoxification) **की विधिः**

आवश्यकतानुसार ताज़ा एवं पाक साफ़ माज़र्यून लेकर 6 दिन तक पुरानी शराब के सिर्के में भिगोएँ। उस के बाद उस पर तीन बार ताज़ा सिर्का डालें जो कि अगले 18 दिनों में 6-6 दिनों के अंतराल से डालना है। इस प्रक्रिया के बाद माज़र्यून को निकाल कर मीठे पानी से धोएँ और छाँव में सुखा कर प्रयोग करें।

- **ज़ीरा को मुदब्बर करने** (Detoxification) **की विधिः**

सर्वप्रथम ताज़ा एवं पाक साफ़ ज़ीरा किरमानी का चयन करें। उसे चीनी या मिट्टी के पात्र में भर कर उस पर इतनी मात्रा में पुराना सिर्का डालें कि ज़ीरा से चार उँगली तक ऊपर आ जाए। एक रात और एक दिन भिगोने के बाद बाहर निकाल कर छाँव में सुखा लें और भून कर प्रयोग में लाएँ। भूनने की हद यह है कि उस की बू का पता चले लेकिन जलने ना पाए।

- **हब्बुस्सलातीन को मुदब्बर करने की विधि:**

किसी उचित देग में गाय का ताज़ा गोबर और थोड़ा सा पानी मिला कर भरें। जमालगोटा को सूती कपड़े में बाँध कर देग के बीच में इस प्रकार लटकाएँ कि गोबर में छिप जाए। अब देग के नीचे एक घंटे तक हल्की आग जलाएँ। फिर उस से निकाल कर उस का छिलका उतार लें। उस के मग़्ज़ के बीच का जमा हुआ पानी निकाल दें क्योंकि वह ज़हरीला होता है। मुदब्बर (Detoxified) हो जाने के बाद प्रयोग में लाएँ।

- **ख़ार-ए-ख़सक को मुदब्बर करने की विधि:**

ताज़ा ख़ार-ए-ख़सक कूट कर उस का रस प्राप्त करें फिर उस रस में सूखा ख़ार-ए-ख़सक भिगो दें और एक दिन में निकाल लें। इस प्रकार ताज़ा ख़ार-ए-ख़सक के रस में यह प्रक्रिया 5-6 बार करें। फिर सुखा कर प्रयोग में लाएँ।

- **अन्ज़रूत को मुदब्बर करने की विधि:**

साफ़ सुथरा सफ़ेद अन्ज़रूत लेकर लड़की को पैदा करने वाली माँ के दूध या गधी के दूध में कई बार पीस लें और छाँव में सुखाएँ। सुखाते समय उसको धूल मिट्टी से सुरक्षित रखें। शीशे के पात्र में रखें और आवश्यकता के समय नेत्र रोगों में प्रयोग करें।

- **तूतिया को मुदब्बर करने** (Detoxification) **की विधि:**

तूतिया किर्मानी को हल्का कूट छान लें। चीनी या शीशे के पात्र में उपरोक्त तूतिया को साफ़ आब-ए-ग़ौरह (कच्चे अंगूर के रस) में 9 दिन तक भिगोएँ। इस बीच हर तीसरे दिन दूसरा ताज़ा आब-ए-ग़ौरह डालें। 9 दिन के बाद उस को संग-ए-सुमाक़ पर रखें। उस समय तक आब-ए-ग़ौरह पूरी तरह से पाक साफ़ और बर्फ की तरह ठंडा हो चुका होता है।

अब उसे धीरे धीरे पीस लें और सुखा लें। सूख जाने के बाद दोबारा उस को आब-ए-ग़ौरह में ठंडा कर के धीरे धीरे पीसें ताकि अच्छी तरह नर्म हो जाए। अब उसे छाँव में सुखा कर शीशे के पात्र में सुरक्षित कर लें।

- **सुर्मा एवं हल्लजून को मुदब्बर करने की विधि:**

इन में से किसी को भी आब-ए-बादियान या आब-ए-सुमाक़ या आब-ए-ग़ौरह या अर्क़-ए-बेद मुश्क में तूतिया की भाँति मुदब्बर करें। अच्छी तरह नर्म पिस जाने के बाद छाँव में सुखा कर शीशे के पात्र में सुरक्षित कर लें। आवश्यकतानुसार प्रयोग करें।

भूमिका

# पन्चम लाभ

## तलक़ का महलूल बनाने, सीमाब बस्तह करने, तिला पीसने की विधि

- **तलक़ का महलूल (घोल) बनाने की विधिः**

तलक़ की परतों को तोड़ कर अलग अलग कर लें। उन के सूक्ष्म कण बना कर मोटी चादर वाले शीशे के पात्र में भरें। फिर उस पात्र को मनुष्य के मूत्र से भर दें। 40 दिन तक उस मूत्र में भीगने के बाद तलक़ को निकाल कर सुखा लें।

तत्पश्चात उस को गाय के मूत्राशय में भर दे और उस मूत्राशय को शीशे के मोटे पात्र में रखें। उस पात्र को पुराने सिर्के से भरे हुए मटके के बीच में लटकाएँ। मटके में लटकाते समय इस बात का विशेष ध्यान रखें कि सिर्का शीशे के पात्र में न जाने पाएँ 15 दिनो के पश्चात शीशे के पात्र को मटके से निकाल लें। अल्लाह के हुक्म से इस बीच सम्पूर्ण तलक़ पानी की भाँति साफ़ हो जाएगा।

- **सीमाब को अक्द एवं बस्तह करने (जमाने) की विधिः**

36 ग्राम पारद एवं थोड़ी मात्रा में पुराना सिर्का लेकर दोनों को अच्छी तरह मिलाएँ और लोहे के पात्र में इतना मलें कि पारद के सभी भाग भिन्न-भिन्न एवं कमज़ोर हो जाएँ। फिर पारद को निकाल कर उस के साथ 13.5 ग्राम हिन्दी नमक सुक्ष्म पीस कर अच्छी तरह मिलाएँ। पुराने सिर्के से भरे हुए लोहे के पात्र को आग की भट्टी पर चढ़ाएँ और पारद को हावन से उसी पात्र में उंडेल लें। फिर 13.5 ग्राम जले हुए ताम्र को सूक्ष्म पीस कर थोड़ी थोड़ी मात्रा में उस पात्र में डालते जाएँ और दस्ता से चलाते जाएँ ताकि पारद जम जाए।

फिर आग से उतार कर ठंडा होने के बाद सफ़ेद कपड़े पर फैलाएँ और जो कपड़े में रह जाए उस को धो लें ताकि उस का भारी पन और सियाही समाप्त हो जाए।

आवश्यकतानुसार उस के गोले बनाएँ। उन गोलों के बीच में छेद बनाएँ और सब को उनके छेदों की मदद से सुतली में पिरो कर एक दिन और एक रात आब-ए-लीमूं में लटकाएँ ताकि वो मज़बूत एवं पत्थर की भाँति सख़्त हो जाए।

तत्पश्चात उस को रोग़न-ए-तातूरह में भिगोएँ। फिर उस को कभी दूध, कभी रोग़न, कभी खाने की देग और कभी वानस्पतिक औषधि के रस में डालते और हाथ से चलाते रहें यहाँ तक कि वो शीशे की भाँति साफ़ हो जाए और उस में भद्दापन एवं भारीपन कदापि नज़र न आएँ अगर संभोग के समय शुक्राणुओं के धारण के उद्देश्य से उस को ध्यानपूर्वक देखते रहें तो यह शुक्राणुओं को धारण करने के संदर्भ में अद्वितीय होगा।

- **सीमाब को बस्तह (पारद को जमाने) करने की विधिः**

साफ़ किया हुआ इच्छानुसार पारद, क़लई या उसरुब का बुरादा, जलाया हुआ ज़ाज और पकी ईंट का बुरादा-

सब को समभाग लेकर सूक्ष्म चूर्ण कर लें फिर उस के साथ आब-ए-तुर्शी-ए-तुरंज डाल कर पत्थर पर या हावन में धीरे धीरे पीसें और सुखा लें। सूख जाने के बाद दोबारा उस के साथ आब-ए-तुर्शी-ए-तुरंज डालें और सूक्ष्म चूर्ण करें। तत्पश्चात उसे मिट्टी के पके पात्र में भर कर गिल-ए-हिकमत करें और हल्का भूनने के बाद निकाल लें। यह प्रक्रिया सात दिनों तक एक बार प्रतिदिन लगातार करें। तत्पश्चात शीशे के पात्र में रख कर गिल-ए-हिकमत करें और तीन दिन आग में रखें। फिर निकाल कर पहले की तरह ख़ूब पीसें। यह प्रक्रिया तीन बार करें।इस प्रक्रिया से यह मर्वारीद की तरह सफ़ेद हो जाता है।

सेवन-मात्राः 16 मिली ग्राम।

नोटः इस से अधिक मात्रा में प्रयोग ना करें क्योंकि बहुत विषैला होता है और हानि पहुँचा सकता है।

- **तिला को मसहूक़ (स्वर्ण को पीसने) की विधियाँः**

विधि नंबर-1: तिला और थोड़ी मात्रा में सुर्ब को पिघला कर आब-ए-नौशादर में डालें फिर दूसरी बार सुर्ब को पानी में कर के उसी आब-ए-नौशादर में डालें। यह प्रक्रिया 21 बार करें। हर बार सुर्ब को अवश्य पिघलाएँ। तिला को पिघलाकर आब-ए-नौशादर में डालें फिर उस से निकाल कर पत्थर पर सूक्ष्म पीसें।

विधि नंबर-2: घड़िया के अन्दरूनी भाग को मुर्दारसंग से तिला करें (लगाएँ)। फिर उस में स्वर्ण को पिघलाएँ और फिर उसे निकाल कर आब-ए-नौशादर में डालें ताकि पीसने योग्य हो जाए।

❑❑❑

भूमिका

## शष्टम लाभ

# अस्ल-ए-बलादुर की उद्धरण-विधि, दुख़ान-ए-कुन्दुर की प्राप्ति, ज़रारीह पारा पारा करने और दिब्क़ शुद्ध करने की विधि

- **अस्ल-ए-बलादुर प्राप्त करने की विधिः**

मिट्टी की पकी देग की तह में छेद करें और तीन पैरों वाले स्टैंड पर सीधा रख दें। एक शीशे का पात्र ले कर उस को गर्दन तक गिल-ए-हिकमत कर दें। फिर उस में बलादुर मुक़श्शर भर दें और उस के मुँह पर जाल बनाने के लिए थोड़े से घोड़े के बाल लपेट दें। फिर उस को उल्टा करके उस की गर्दन उपरोक्त देग की तह के छेद में जमा दें और देग के स्टैंड के नीचे बलादुर वाले पात्र के मुँह के ठीक सामने एक प्याला रख दें। देग के अन्दर शीशे के पात्र के ऊपर हल्की आग जलाएँ या देग में गाय के ओपले भर कर उन को सुलगाएँ ताकि उस की गर्मी से बलादुर का अस्ल टपकने लगे और नीचे रखे प्याले में जमा हो जाए। जब रस टपकना बन्द हो जाए तो यह समझें कि यह प्रक्रिया पूर्ण हो चुकी है। अब जमा हुए बलादुर के रस को सुरक्षित कर लें।

- **अस्ल-ए-बलादुर प्राप्त करने की विधिः**

लोहे के ज़ंबूर को आग में लाल कर के उस से बलादुर को दबाएँ। इस प्रक्रिया से टपकने वाला रस अस्ल-ए-बलादुर है। इसे प्राप्त करने हेतु हाथों में रोग़न-ए-अख़रोट या कुंजद लगा लें क्योंकि हाथों में आबले पड़ सकते हैं या जलन हो सकती है।

- **दुख़ान-ए-कुन्दुर प्राप्त करने की विधिः**

एक चिराग़ में कुन्दुर भर कर जलाओ और ठीक चिराग़ की लौ के ऊपर उल्टा करके तास या तबक़ (प्याला) रख दें। जो धुआँ उड़कर उस प्याले में जमा हो वही दुखान-ए-कुन्दुर है। इसी प्रक्रिया से ज़िफ्त, क़ुत्रान एवं निफ्त का दुखान भी प्राप्त करें।

- **ज़रारीह को पारा पारा करने की विधिः**

ज़रारीह के हाथ पाँव काट कर उसे साफ़ कर लें। फिर उसे एक नए अर्थात

कोरे कूज़े में भर लें और कूज़े के मुँह पर नर्म बारीक सूती कपड़ा बाँध दें। तत्पश्चात कूज़े को उल्टा कर के ऐसी देग के मुँह पर रखें जिस में सिर्का खौल रहा हो ताकि सिर्के की भाप से ज़रारीह पारा पारा हो जाए। अब उसे कूज़े से निकाल कर सुरक्षित कर लें और दवाउज़्ज़रारीह आदि में प्रयोग करें।

- **दिब्क़ की विषहरण-विधि:**

दिब्क़ को एक रात पानी में भिगो कर उसे छील लें। फिर उस के साथ उसी के समभाग मग़ज़-ए-हब्बुलखरूअ मिला कर हावन में खूब कूटें ताकि वो कमज़ोर हो जाए। तत्पश्चात उसे उसी के समभाग मधु के साथ मिला कर अच्छी तरह मलें ताकि सब एक हो जाएँ। अब उस को माजून-ए-अरस्तू आदि में प्रयोग करें। अगर दिब्क़ को सूखी दवाओं में प्रयोग करना हो तो सर्वप्रथम उस को रोग़न-ए-ज़ैत या रोग़न-ए-कुन्जद या रोग़न-ए-गाव में मिलाएँ और हावन में कूट कर प्रयोग में लाएँ।

❑❑❑

भूमिका

## सप्तम लाभ

# अबजद शब्दों के अनुसार एकल द्रव्य औषधियों की वैकल्पिक औषधि को पहचानने की विधि

### (अ)

1. अबहल का बदल जौज़ुस्सर्व है।
2. अफ़्सन्तीन का बदल शीह-ए-अरमनी या जअदह है और आमाशय को सशक्त बनाने के संदर्भ में उस का बदल असारून या उस के आधा वज़न पोस्त-ए-हलीला ज़र्द होता है।
3. अफ़्तीमून का बदल उस्तोखुद्दूस या बिस्फ़ाइज है।
4. इक्लीलुलमलिक का बदल बाबूनह या फ़रासियून है।
5. अनीसून को बदल राज़ियानह या करोया है।
6. असारून का बदल जालीनूस के अनुसार ज़जबील है लेकिन अन्य हकीमों के अनुसार उस के डेढ़ गुना अगर तुर्की है। कुछ हीकमों के अनुसार उस का बदल सन्दल सफ़ेद है और एक कथन के अनुसार उस का बदल क़िर्दमाना है।
7. उशक़ का बदल सकबीनज है।
8. अक़ाक़िया का बदल ख़र्नूब है प्रन्तु एक कथन के अनुसार हुज़ज़ है।

9ए उस्तुखुद्दूस का बदल अफ़्तीमून है।

10. इज़्ख़िर का बदल क़सबुज्ज़रीरह है।
11. अन्जोदान का बदल उस के एक तिहई भाग हिल्तीत है।
12. इस्मिद का बदल आबार और आबार का बदल इस्मिद है अर्थात ये एक दूसरे के बदल हैं।
13. अनीसून का बदल चौब-ए-कनार है।
14. आज़र्यूना का बदल उस के समभाग बादआवरद है।
15. असलुस्सूल का बदल उस के अर्धभाग रुब्बुस्सूस है।

16. अफ़ियून का बदल बज़रुलबन्ज है।
17. अन्जबार का बदल गिल-ए-मख़्तूम है।
18. अन्ज़रूत का बदल उस के अर्धभाग सिब्र है।
19. ईर्सा का बदल बीख़-ए-कबर है।

## (ब)

1. बाबूनह का बदल क़ैसूम है।
2. बूज़ीदान का बदल कामोत्तेजना के संदर्भ में शक़ाकुल या बहमन सफ़ेद और जोड़ों के रोगों के संदर्भ में सूरन्जान है।
3. बादरन्जबोया हृदय को आनन्दमय करने के लिए प्रयोग की जाती है और उस का बदल आब्रेशम है।
4. बिस्बासा का बदल जौज़बोवा है।
5. बलीला का बदल हलीला स्याह होता है।
6. पर्सियाउशाँ दमा और खाँसी के निदान के लिए प्रयोग किया जाता है और उस का बदल उस के अर्धभाग बनफ़्शा या अर्धभाग रुब्बुस्सूस है।
7. बिस्फ़ाइज का बदल अफ़्तीमून है।
8. बनफ़्शा का बदल खुब्बाज़ी होता है लेकिन कुछ हकीमों ने नीलोफर या पर्सियाउशाँ को उस का बदल माना है।
9. बूरह अरमनी का बदल नमक-ए-इन्द्रानी या नमक-ए-तल्ख़ है।
10. बहमन सुर्ख़ और बहमन सफ़ेद एक दूसरे के बदल हैं लेकिन कुछ हकीमों के अनुसार बहमन सुर्ख़ का बदल तूदरी है। बुख़ारों के इलाज के संदर्भ में बादआवरद का बदल शाहतरह होता है।
11. बादरूज का बदल सीसंबर है। खूनी दस्तों और रक्तनिष्ठिवान में बुसुद का बदल दमुलअख़वैन है।
12. बिरन्जासिफ़ का बदल अफ़्सन्तीन होता है।
13. पेट के कीड़ों के इलाज के संदर्भ में बरंग काबुली का बदल तुर्मुस या क़िंबील प्रयोग किया जाता है।
14. बज़र-ए-करफ़्स का बदल फ़ुत्रासालियून है।
15. बज़रुलफ़ुज्ल का बदल हब्बुर्रशाद और बज़रुलमर्व का बदल बज़रक़तूना होता है।

## (ज)

1. जावशीर का बदल क़िन्नह है। कुछ हकीमों के समीप उस का बदल सकबीनज

है जबकि शैख़ अबू अली इब्न-ए-सीना ने उस के बदल के तौर पर उशक़ को अधिक समीप माना है।

2. जअदह का बदल पोदीना जबली है।
3. जुन्तियाना का बदल उस के अर्धभाग पोस्त-ए-बीख़-ए-कबर या ज़रावन्द मुदहरज है।
4. जुन्द बेद स्तर का बदल एक कथन के अनुसार उस के अर्धभाग और दूसरे कथन के अनुसार उस के समभाग मुश्क तुर्की है।
5. जौज़बोवा का बदल उस के एक चौथाई या एक तिहाई भाग बिस्बासा या उस के डेढ़ गुना भाग सुंबुलुत्तीब है।
6. चिलग़ोज़ा का बदल उस के डेढ़ गुना मग़ज़-ए-बादाम है।
7. जुफ़्त बलूत का बदल गुलनार होता है। कुछ हकीमों के समीप पोस्त-ए-अनार, बर्ग-ए-मूरद और गुल-ए-सुर्ख़ एक दूसरे के बदल हैं।
8. जदवार का बदल उस के तीन गुना वज़न ज़रंबाद है।
9. जौज़ुस्सर्व का बदल उस के अर्धभाग कज़माज़ज है।

## (द)

1. दार-ए-शीशआन का बदल उस के दो गुना वज़न असारून है।
2. दारफिलफिल का बदल फिलफिल है।
3. दारचीनी का बदल सलीख़ा या उस के अर्धभाग कबाब चीनी या उस के डेढ़ गुना वज़न क़िर्फ़ह और एक कथन के अनुसार उस के समभाग ख़ूलन्जान है।
4. कामोत्तेजना के संदर्भ में दोक़ू का बदल शक़ाक़ुल और अन्य शेष सभी कार्यों में तुख़्म-ए-करफ़्स है।
5. दरूनज का बदल ज़रंबाद या क़रंफ़ुल होता है।
6. दमुलअखवैन का बदल उसारह-ए-काहू है।
7. नेत्र रोगों के संदर्भ में दनज फिरंगी का बदल तूतिया-ए-हिन्दी है।

## (ह)

1. हियूफ़ारिक़ून का बदल उस के समभाग बीख़-ए-इज्ख़िर या अर्धभाग बीख़-ए-कबर है।
2. हीलबोवा का बदल क़ाक़लह किबार है।
3. हल्यून का बदल बूज़ीदान है।
4. हरनोवह का बदल उस के एक भाग क़ाक़लह किबार है।

## (व)

1. वज का बदल ज़ीरह किर्मानी या उस के दो गुना रेवन्द चीनी है। कुछ हकीमों

के समीप वज का बदल उस के एक चौथाई ऊद या क़रन्फ़ुल है।

## (ज़)

1. ज़रंबाद का बदल जानवरों के काटे में उस के अर्धभाग दरूनज और गाढ़ी गैस के संदर्भ में शीतरज या उस के एक तिहाई वज़न तरखशक़ूक़ बर्री या अर्ध वज़न दाना-ए-उतरुज है। हाँ दिल की घबराहट और लक़वा में उस के बदल के तौर उस के डेढ़ गुना वज़न दरूनज प्रयोग किया जाता है।
2. ज़रावन्द मुदहरज का बदल क़ुस्त है लेकिन कुछ हकीमों ने उस का बदल ज़रंबाद माना है।
3. ज़रावन्द तवील का बदल ज़रावन्द मुदहरज है लेकिन साहिब-ए-मिनहाज (पुस्तक मिनहाज के लेखक) के समीप उस का बदल शीतरज हिन्दी है। कुछ हकीमों के समीप ज़रावन्द मुदहरज और ज़रावन्द तवील एक दूसरे के बदल हैं।
4. ज़िफ़्त का बदल क़ुत्रान है।
5. ज़न्जबील का बदल उस के समभाग दार-ए-फ़िलफ़िल है लेकिन कुछ हकीमों के अनुसार उस के डेढ़ गुना रासन है।
6. ज़ंगार का बदल अक़लीमिया है। कुछ लोग उस का बदल शंगरफ मानते हैं।
7. ज़ूफा ख़ुश्क का बदल पर्सियाउशाँ है।
8. ज़ूफा रतब का बदल मग़ज़-ए-साक़-ए-गाव है।
9. ज़र्नब का बदल सलीख़ा या मुर्गी का पोस्त-ए-संगदाना है और कुछ हकीमों के अनुसार उस का बदल हलीला है।
10. ज़ाफ़रान का बदल क़ुस्त या दाना-ए-उतरुज है।

## (ह़)

1. ह़ाशा का बदल उस अर्धभाग अफ़्तीमून है।
2. ह़ब्बुल्लैल का बदल सौदावी रोगों में ह़जर-ए-अरमनी और दस्त में शह़म-ए-हन्ज़ल होता है।
3. ह़ब्ब-ए-बलसाँ का बदल उस के अर्धभाग ऊद-ए-बलसाँ या सलीख़ा है।
4. ह़ब्ब काकनज का बदल जालीनूस के अनुसार इनबुस्सअलब है।
5. ह़ब्बुलकि़लकि़ल का बदल उस के समभाग ह़ब्बुस्सनोबर या तूदरी सफ़ेद है।
6. ह़ब्बुलग़ार का बदल ह़ब्बुलमोहल्लब है लेकिन कुछ ह़कीमों के अनुसार उस का बदल मग़ज़-ए-बादाम तल्ख़ और मग़ज़-ए-नारजील होता है।
7. ह़ब्बुस्सनोबर कबीर और सग़ीर एक दूसरे के बदल हैं।

8. हुर्फ़ का बदल हुर्मुल है लेकिन कुछ हकीमों के अनुसार उस का बदल तुख़्म-ए-जिर्जीर होता है।
9. हुज़ुज़ का बदल फ़ोफ़ल या सन्दल सुर्ख़ होता है।
10. हमामा का बदल उस के समभाग असारून या क़रन्फ़ुल है।
11. हन्ज़ल का बदल हब्बुलख़रूअ है।
12. हब्बुर्रुम्मान का बदल उस के समभाग या अर्धभाग बारतंग है।
13. हब्ब-ए-बलसाँ का बदल उस के अर्धभाग सलीख़ा होता है।
14. हिल्तीत का बदल उस के समभाग सकबीनज है।

## (त)

1. तालीसफ़र का बदल सुंबुलुत्तीब या साज़ज होता है।
2. तबाशीर का बदल गिल-ए-मख़्तूम या उस के समभाग काफूर या उस के अर्धभाग उसारा-ए-लेहयतुत्तीस होता है।
3. तीन-ए-मख़्तूम का बदल गुल-ए-अनार है जबकि कुछ हकीमों के अनुसार अक़ाक़िया और कुछ के अनुसार क़रज़ होता है।
4. तीन-ए-अरमनी का बदल गिल-ए-अहमर-(गेरू) है।
5. तीन-ए-क़ब्रसी का बदल उस के अर्धभाग गिल-ए-मख़्तूम है।
6. तरासीस का बदल उस के चौथाई भाग अक़ाक़िया या उस के छठा भाग माज़ू होता है।

## (य)

1. याक़ूत का बदल उस के समभाग तिला-ए-महलूल या वरक़-ए-तिला है।
2. यबरूज का बदल निश्चेतना (Anaesthesia) के संदर्भ में बज़रुलबन्ज और बेहोशी के संदर्भ में जौज़-ए-मासिल है।

## (क)

1. काफूर का बदल उस के दो गुना वज़न तबाशीर है।
2. कबाबा का बदल क़रन्फ़ुल है।
3. कतीरा का बदल समग़-ए-अरबी है लेकिन कुछ हकीमों के अनुसार उस का बदल समग़-ए-बादाम है।
4. करफ़्स का बदल राज़ियाना है।
5. करोया का बदल अनीसून है।
6. कमाफीतूस का बदल सीसालियूस है और एक कथन के अनुसार कमाज़र्यूस है।

7. कमाज़र्यूस का बदल उस्क़ूलोक़न्द्रयून या बीख़-ए-ग़ाफ़िस या उस के समभाग या अर्धभाग सलीख़ा है।
8. कुन्दुर का बदल मस्तगी या समभाग दिक़ाक़-ए-कुन्दुर है।
9. कहरुबा का बदल तबाशीर या उस के समभाग गिल-ए-अरमनी या करोया है।
10. कहरुबा की जड़ का बदल हिल्तीत होता है।
11. कमून किर्मानी का बदल ज़ीरा सब्ज़ और कुछ हकीमों के अनुसार करोया है।

## (ल)

1. लाजवर्द का बदल हजर-ए-अरमनी है।
2. लबनी का बदल जुन्द बेद स्तर है।
3. लेहयतुत्तीस का बदल गुल-ए-अनार है और कुछ हकीमों के अनुसार तुख़्म-ए-गुल-ए-अनार है।
4. लुक का बदल जिगर के सुद्दों के खोलने के संदर्भ में उस के अर्धभाग रेवन्द चीनी या उस के अर्धभाग असारून है।
5. लिसानुलअसाफ़ीर का बदल उस के अर्धभाग बहमन या उस के अर्धभाग तूदरी सुर्ख़ होता है।
6. लाग़िया का बदल फरासियून है।
7. लबलाब का बदल वरक़-ए-ख़त्मी या ख़ुब्बाज़ी है।
8. लिसानुस्सौर का बदल उस के अर्धभाग आब्रेशम मुहर्रक़ या बादरन्जबोया है।
9. लुफ़्फ़ाह का बदल उस के समभाग बज़रुलबन्ज है।

## (म)

1. माज़र्यून का बदल उस के तीन गुना वज़न ईर्सा या उस के दो गुना वज़न मुक़िल होता है।
2. मामीरान का बदल नेत्र संबंधिता औषधियों में ज़र्द चौब और अन्य में उस के दो गुना वज़न मुक़िल या मुर्र होता है।
3. मुर मक्की का बदल क़ुस्त तल्ख़ है लेकिन कुछ हेकीमों के अनुसार उस का बदल फुक़ाह-ए-इज़्ख़िर होता है।
4. मुश्क का बदल अधिकतर कार्यों में जुन्द बेद स्तर होता है।
5. मुश्कतरामशीअ का बदल उस के समभाग क़ैसूम है।
6. *मुग़ास* का बदल क़िल्त है।
7. मुक़िल का बदल कुन्दुर है लेकिन कुछ हेकीमों के अनुसार उस का बदल उस

के समभाग इल्कुलबुत्म होता है।

8. मोमियाई का बदल क़फरुलयहूद है।
9. मवीज़ज का बदल आक़रक़रहा होता है।
10. मामीसा का बदल नौशादर हिन्दी है।
11. माश का बदल बाक़ला है।
12. मस्तगी का बदल उस के डेढ़ गुना वज़न समग़ुलबुत्म और कुछ हेकीमों के अनुसार कुन्दुर है।
13. मरवारीद का बदल उस के दो गुना वज़न सदफ़ है।

## (न)

1. नारमुश्क का बदल क़ुस्त बहरी या उस के अर्धभाग सुंबुल है।
2. नारदीन का बदल उस के समभाग सुंबुलुत्तीब है।
3. नौशादर का बदल शिब-ए-यमानी है जबकि कुछ हकीमों ने उस का बदल नमक-ए-तल्ख़ माना है।
4. नीलोफ़र का बदल बनफ़्शा है।
5. नअनाअ का बदल पोदीना है लेकिन कुछ हकीमों के समीप उस का बदल सीसंबर होता है।
6. निफ़्त स्याह का बदल पोदीना है।
7. नशास्तह का बदल गर्द-ए-आसिया (चक्की की गर्द व ग़ुबार) होता है जबकि कुछ हकीमों ने उस का बदल सब्ज़ा-ए-सबूस-ए-गन्दुम को माना है।
8. नारजील का बदल मग़्ज़-ए-फुन्दुक़ या मग़्ज़-ए-गर्दगान (अखरोट) होता है।
9. नानख़्वाह का बदल अनीसून है लेकिन कुछ हकीमों के समीप शोनीज़ है।

## (स)

1. साज़ज का बदल उस के समभाग सुंबुलुत्तीब है लेकिन कुछ हकीमों के समीप उस का बदल सलीख़ा या तालीसफ़र है।
2. सअद कूफी और सअद हिन्दी दोनों का बदल सुंबुल रूमी है।
3. सक़मूनिया का बदल हब्बुलखरूअ है।
4. सक़न्क़ूर का बदल समके सैदा है लेकिन कुछ हकीमों के अनुसार उस का बदल सूखे क़ज़ीब-ए-गाव का रेती से तैयार किया हुआ बुरादा और कुछ के अनुसार खुस्यतुस्सअलब है।
5. सकबीनज का बदल जावशीर है लेकिन कुछ हकीमों के अनुसार उशक़ है।

6. सलीख़ा का बदल उस के समभाग दारचीनी है।
7. सन्दरूस का बदल कहरुबा है।
8. सूरन्जान का बदल जोड़ों के रोगों और अंगों की पीड़ा के संदर्भ में उस के समभाग बूज़ीदान है।
9. सुद्दाब का बदल सीसंबर है।

## (अ़)

1. आक़रक़रहा का बदल रासन है। कुछ हकीमों के अनुसार दार फ़िलफ़िल है।
2. अर्तनीसा का बदल ज़रावन्द तवील है।
3. असर्राई का बदल इनबुस्सअलब है।
4. उसारा-ए-मामीसा, नौशादर हिन्दी और हुज़ुज़ मक्की एक दूसरे के बदल हैं।
5. अफ़स-(माज़ू) का बदल कज़माज़ज है।
6. उसारा-ए-लेहयतुत्तीस का बदल अक़ाक़िया है।
7. अंबर का बदल उस के दो गुना वज़न मुश्क तुर्की है।
8. औसज का बदल उस के समभाग उशनह है।
9. ऊद-ए-बलसाँ का बदल हब्ब-ए-बलसाँ है।
10. अक़ीक़ का बदल बुसुद है।
11. अदस का बदल तबख-ए-माश है।
12. असल (शहद) का बदल उस के समभाग मैफ़ुख़्तज होता है।

## (फ़)

1. फ़ाशरा का बदल उस के समभाग दरूनज या अर्धभाग बिस्बासा है।
2. फ़र्फ़ियून का बदल जुन्द बेद स्तर या उस के अर्धभाग माज़र्यून होता है।
3. फ़रासियून का बदल फ़ाग़िया है।
4. फ़न्जमुश्क का बदल क़रन्फुल है।
5. फ़िलमोया का बदल दार-ए-फ़िलफ़िल है।
6. फ़ोफ़ल का बदल सन्दल सुर्ख़ है।
7. फ़ूह का बदल अधिकतर कार्यों में शीतरज प्रयोग होता है।
8. फ़ुत्रासालियून का बदल उस के दो गुना वज़न तुख़्म-ए-करफ़्स और जालीनूस के अनुसार उस के अर्धभाग अफ़्सन्तीन है।

## (स)

1. सिब्र का बदल अफ़्सन्तीन है। कुछ हकीमों के अनुसार ज़िमाद के नुस्खों में उस

का बदल हुज़ुज़ मक्की प्रयोग होता है।

2. सदफ़ का बदल वदअ या हल्लज़ून है।
3. सन्दल सफ़ेद और सन्दल सुर्ख़ एक दूसरे के बदल हैं लेकिन एक कथन के अनुसार सन्दल सफेद का बदल उशनह है।
4. समग़-ए-अरबी का बदल समग़-ए-बादाम है।
5. समग़-ए-सुद्दाब का बदल उस के दो गुना वज़न हिल्तीत है।

## (क)

1. क़रन्फ़ुल का बदल ख़ूलन्जान है लेकिन एक कथन के अनुसार जौज़बोवा या दारचीनी या फ़्रनजमुश्क है।
2. क़िर्फ़ह का बदल उस के आधा वज़न दारचीनी है और कुछ हकीमों के अनुसार उस के आधा वज़न क़रन्फ़ुल है।
3. क़ुस्त तल्ख़ का बदल वज है।
4. क़सबुज़्ज़रीरह का बदल अज़फ़ारुत्तीब है।
5. क़फ़रुलयहूद का बदल ज़िफ़्त है।
6. क़िर्दमाना का बदल इज़्ख़िर और एक कथन के अनुसार मुश्कतरामशीअ है।
7. क़ुस्त का बदल आक़रक़रहा है। एक कथन के अनुसार वज है।
8. क़न्तूरियून का बदल पर्सियावशां है लेकिन कुछ हकीमों के समीप उस का बदल उस के आधा वज़न बर्ग-ए-हिना है।
9. क़िन्बील का बदल पेट के कीड़े मारने के लिए तुर्मुस या ब्रंग काबुली या शीह़-ए-अरमनी हैं और इस रोग के लिए यह सभी औषधियाँ एक दूसरे का बदल हैं।
10. क़ाक़ला कबीर का बदल उस के डेढ़ गुना वज़न क़ाक़ला सग़ीर या आधा वज़न कबाबा या क़रन्फ़ुल है।
11. क़ुत्रान का बदल निफ़्त स्याह है।
12. क़िन्नह़ का बदल उस के दो गुना वज़न सकबीनज या बराबर वज़न जावशीर है और जिगर की कमज़ोरी के लिए उस का बदल उस के डेढ़ गुना वज़न रेवन्दचीनी है।

## (र)

1. रेवन्दचीनी का बदल उस के आधा वज़न गुल-ए-सुर्ख़ है और एक कथन के अनुसार संबुलुत्तीब या नारदीन उस के बदल हैं।
2. राज़ियाना का बदल उस के एक तिहाई भाग अनीसून है जबकि कुछ हकीमों ने उस का बदल ईर्सा को माना है।

3. रातीनज का बदल इल्कुलबुत्म और एक कथन के अनुसार पुराना ज़िफ़्त है।
4. रूसख़्तज का बदल मुक़िलुन्नहास है।
5. रासन का बदल ब्रास्मा है।
6. रोग़न-ए-बलसाँ का बदल रोग़न-ए-ज़ैतून है।

## (श)

1. शाहतरह का बदल उस के आधा वज़न सना मक्की है।
2. शक़ाकुल का बदल तुख़्म-ए-कुन्दुर और एक कथन के अनुसार बूज़ीदान है।
3. शन्ज का बदल वदअ या हल्लज़ून है और हल्लज़ून एक प्रकार का शन्ज है।
4. शीतरज का बदल फ़ूह या बीख़-ए-कबर है।
5. शाहस्फ़रम का बदल मर्ज़न्जोश है।
6. शादनज का बदल मुहर्रक़ और मग़सूल संग-ए-मक़नातीस है।
7. शातिल का बदल माज़र्यून है।
8. शिब-ए-यमानी, ज़ाज सफेद को कहते हैं जिस का बदल नमक-ए-तल्ख़ या नौशादर होता है।
9. शूकरान का बदल निशचेतना के संदर्भ में उस के दो गुना वज़न बज़रूलबन्ज है।
10. शीह-ए-अरमनी को दरेमनह तुर्की कहते हैं और उस का बदल तुरन्जबीन है।

## (त)

1. तुर्बुद का बदल उस के आधा वज़न ग़ारीक़ून या उस के एक तिहाई भाग सिब्र ज़र्द या छठा भाग शहम-ए-हन्ज़ल है।
2. तुरन्जबीन का बदल उस के आधा वज़न शीर-ए-खिशत है और एक कथन के अनुसार उस के डेढ़ गुना शकर सुर्ख़ अर्थात गुड़ है।
3. तमर हिन्दी का बदल आलू बुख़ारा है।
4. तूबालुन्नुहास का बदल रूसख़्तज है।
5. तूदरी ज़र्द, तूदरी सुर्ख़ और तूदरी सफेद यह तीनों एक दूसरे के बदल हैं और एक कथन यह भी है कि बहमन सुर्ख़ तूदरी का बदल है।
6. कामोत्तजना के संदर्भ में तूतिया-ए-हिन्दी का बदल क़लक़दीस है।
7. तूतिया-ए-किर्मानी का बदल शादनज या उस के आधा वज़न तूबालुन्नुहास है।

## (स)

1. सौमुलहैया, उस्क़ूरदियून को कहते हैं जिस का बदल सीर-ए-बुस्तानी है।

2. समरुत्तुरफा, कज़माज़ज है जिस का बदल उस के आधा वज़न माज़ू है।
3. समरुत्तुरफा या माज़ू एक दूसरे के बदल हैं।

## (ख़)

1. ख़रनूब शामी का बदल तरासीस है।
2. ख़रबक़ सफेद का बदल जौज़ुलक़ै है।
3. ख़रबक़ स्याह का बदल उस के आधा वज़न कुन्दुश है लेकिन कुछ हकीमों ने उस के आधा वज़न मवीज़ज या बराबर वज़न पोस्त-ए-बीख़-ए-कबर को माना है।
4. ख़ुस्यतुस्सअलब का बदल बूज़ीदान है जबकि कुछ हकीमों ने तुख़्म-ए-गाजर, शक़ाक़ुल और तुख़्म-ए-शिब्त को उस का बदल माना है।
5. ख़त्मी का बदल ख़ुब्बाज़ी है।
6. ख़ूलन्जान का बदल क़रन्फ़ुल या दारचीनी या क़िर्फ़ह है।
7. ख़्यार शंबर का बदल तुरन्जबीन या मवीज़ मुनक़्क़ा है।
8. खर्दल का बदल हब्बुर्रशाद है।

## (ज़)

1. ज़हब, सोना को कहते हैं। उस का बदल उस के आधा वज़न हजर-ए-अहमर अर्थात हीरा है।

## (ग़)

1. ग़ाफ़िस का बदल उस के आधा वज़न अफ़्सन्तीन रूमी या बराबर वज़न असारून होता है।
2. ग़ारीक़ून का बदल उस के आधा वज़न फ़र्फ़ियून है और बलग़म एवं सौदा के विरेचन के संदर्भ में उस के बराबर वज़न तुर्बुद प्रयोग होता है।
3. ग़ार का बदल सीसंबर है।
4. ग़रब, दरख़्त-ए-सिदरह (बेर के पेड़) को कहते हैं जिस का बदल बर्ग़-ए-दरख़्त-ए-सिदरह (बेर के पेड़ की पत्ती) या समग़-ए-अरबी या समग़-ए-दरख़्त-ए-सन्दरूस होता है।

❑❑❑

भूमिका

# अष्टम लाभ

# हकीमों के मतब में प्रचलित नाप तौल के पैमाने और उन के बीच वज़न के संदर्भ में प्रचलित विशेष परिभाषाएँ

1. मनः एक तिब्बी मन चौबीस ओक़िया के बराबर होता है जो कि एक सौ अस्सी मिस्क़ाल और दो सौ साठ दिरम के बराबर है।
2. रत्लः एक तिब्बी रत्ल बारह ओक़िया के बराबर होता है जो कि नौवे मिस्क़ाल और एक सौ तीस दिरम के बराबर है।
3. ओक़ियाः एक तिब्बी ओक़िया साढ़े सात मिस्क़ाल के बराबर है जो कि दस सही सात बटा पाँच दिरम के बराबर है।
4. सेरः तिब्बी सेर 4.5 मिस्क़ाल के बराबर है जो कि 6 दिरम और 2 दाँग के बराबर है।
5. मिस्क़ालः एक तिब्बी मिस्क़ाल तीन सही सात बटा तीन के बराबर है।
6. दिरमः एक तिब्बी दिरम आधा सही और पाँच बटा एक मिस्क़ाल के बराबर है जो कि अड़तालीस हब्बह के बराबर है।
7. दांगः एक तिब्बी दांग सवा ग्यारह हब्बह के बराबर है। इस प्रकार एक मिस्क़ाल में छः दांग और एक मिस्क़ाल में सरसठ से कुछ अधिक ह़ब्बह होते हैं।
8. तसूजः तिब्बी तसूज 1 हब्बह और 1 सामान्य जौ के बराबर है।
9. क़ीरातः एक तिब्बी क़ीरात तीन ह़ब्बह के बराबर है लेकिन कुछ हकीम उसे चार ह़ब्बह के वज़न के बराबर मानते हैं।

- **पैमानों के संदर्भ में हकीमों की विशेष परिभाषाएँ**

1. बुन्दुक़ः एक बुन्दुक़ एक दिरम के बराबर होता है लेकिन कुछ हकीमों ने उसे एक मिस्क़ाल के बराबर माना है।
2. जौज़ नब्तीः यह भी एक दिरम के बराबर है।
3. तुर्मुसः यह बाक़ला शामी है। दो क़ीरात के समकक्ष है।
4. बाक़ला मिश्रीः एक दिरम के बराबर है।
5. बाक़ला यूनानीः आधा दिरम के बराबर है।

6. जौज़ मुतलक़ः यह चार मिस्क़ाल के बराबर है लेकिन कुछ हकीमों ने उसे सात दिरम के बराबर माना है।
7. फ़लकीः यह छः दिरम के बराबर है।
8. नब्तिलः यह भी छः दिरम के बराबर है।
9. क़ुस्त रूमीः यह चौबीस ओक़िया के बराबर है।
10. क़ुस्त अन्ताकीः यह सोलह ओक़िया के बराबर है।
11. क़ीतरः एक मन के बराबर है जो 24 ओक़िया के बराबर है।
12. क़िन्तारः यह साठ मन के बराबर है।
13. सकरजह कबीरः इस का दूसरा नाम सदफ़ह है। यह नौ ओक़िया के बराबर है।
14. सकरजह सग़ीरः यह तीन ओक़िया के बराबर है।
15. मिल्अक़हः शहद, माजूनों के लिए 4 और सूखी दवाओं के लिए 2 मिस्क़ाल के समान है।
16. फ़ोतीलः यह सत्तर मिस्क़ाल के बराबर है।
17. इब्रीक़ः यह दो मन के बराबर है।
18. जाम-ए-कबीरः यह तीन मिस्क़ाल के बराबर है।
19. जाम-ए-सग़ीरः यह दो मिस्क़ाल के बराबर है।
20. खर्महः यह चार मिस्क़ाल के बराबर है।
21. नस्तून कबीरः यह तीन ओक़िया के बराबर है।
22. नस्तून सग़ीरः यह छः दिरम के वज़न के बराबर है।
23. क़वानूसः यह डेढ़ ओक़िया के बराबर है।
24. नातिलः यह छः ओक़िया के बराबर है।

- **भारतीय हकीमों के मतब में प्रचलित नाप तौल के पैमाने**

1. मनः एक शाहजहानी मन चालीस सेर के बराबर है।
2. सेरः एक हिन्दी सेर चालीस दाम के वज़न के बराबर है।
3. दामः यह इक्कीस माशा के बराबर है।
4. तोलहः यह बारह माशा के बराबर है।
5. माशाः आठ सुर्ख़ के बराबर है। सुर्ख़ और रत्ती एक होते हैं।
6. टॉकः यह चौबीस रत्ती के बराबर है। यह रत्ती वही सुर्ख़ है। इस प्रकार चार टॉक के बराबर एक तोलह है। मिस्क़ाल, दिरम और माशा या तोलह, टॉक और रत्ती हिन्द के अनुसार एक मिस्क़ाल चार माशा, एक दिरम तीन माशा और तीन मिस्क़ाल एक तोलह के बराबर है। दिरम और टॉक लगभग बराबर हैं।

❑❑❑

भूमिका
# नवम लाभ

# यूनानी, अरबी, फ़ारसी और हिन्दी भाषा से गृहण किए गए चिकित्सीय शब्दों अथवा नामों का अनुवाद एवं उनका शाब्दिक संधिविच्छेद

- **तिर्याक़-ए-फारूक़:**

प्रत्येक मिश्रित औषधि जो अपनी विशेषता से ज़हरों से लड़ाई करती अर्थात हानि से बचाती है, तिर्याक़ है। यह यूनानी शब्द है। इस का अर्थ फारूक़ यानी दो क़ुव्वतों/ क़ुव्वत-ए-तबीयत और क़ुव्वत-ए-ज़हुर में अन्तर पैदा करने वाला है। इस का दूसरा नाम तिर्याक़-ए-कबीर है क्योंकि यह अपनी विशेषता के कारण अत्याधिक हितकारी एवं अनेक लाभ प्रदान करने वाली है।

- **मसरूदीतूस:**

यह यूनानी शब्द है। इस का नाम जिस हकीम ने इसे तैयार किया या उस समय के बादशाह के नाम पर रखा गया है।

- **तिर्याक़-ए-अर्बअ़ह:**

अर्बअ़ह अरबी शब्द है जिस का अर्थ है "चार"। यह तिर्याक़ चार औषधियों से मिल कर बना है। यही सब से पहला तिर्याक़ है जिसे अन्दरूमाख़स ने तैयार किया।

- **तिर्याक़-ए-समानियह:**

यह अरबी शब्द है अर्थात "आठ"। तिर्याक़-ए-अरबअ़ह के अतिरिक्त इस में अन्य चार और दवाएँ सम्मिलिक की गई हैं।

- **माजून सन्जरीना:**

एक माजून जिस का अर्थ "अत्याधिक कामियाबी" है।

- **इत्रीफ़ल:**

माजून जैसी औषधि है जिसे भारतीय हकीमों ने बनाया है। "इत्रीफ़ल" हिन्दी शब्द

का अरबी किया हुआ शब्द है। यह हिन्दी में हलीला, बलीला आमला, का संग्रह है।

- **दवाउलकुर्कुमः**

एक प्रसिद्ध माजून जिस का अर्थ दवाउज़्ज़अफ़रान है क्योंकि कुर्कुम यूनानी शब्द है जिस का अर्थ है ''ज़ाफ़रान''।

- **माजून शीलसाः**

इस का अर्थ है ''ज़िम्मेदार''। हकीमों ने इस को अत्याधिक लाभों एवं अनेक अजूबों का मालिक माना है लेकिन शैख़ अबू अली इब्न-ए-सीना ने इस से इनकार किया है। उन का कहना है कि हकीमों ने जो कुछ कहा है, मैं ने इस माजून में नहीं पाया है।

- **माजून फ़न्जनोशः**

फ़न्जनोश का फ़ारसी नाम ''रीम-ए-आहन'' और अरबी नाम ''ख़ुब्सुलहदीद'' है। इस का दूसरा नाम ''अतिय्यतुल्लाह'' भी है। कुछ लोग इस को ''दवा-ए-इलाही'' कहते हैं।

- **माजून अरस्तून कबीर और माजून अरस्तून सग़ीरः**

''अरस्तून इलाही'' के नाम से प्रसिद्ध है। यह यूनानी शब्द है अर्थात ''अलग करने वाला''।

- **सवातीरः**

यह मुख़ल्लसह कबीर है।

- **दवाउस्सनहः**

इस का अविष्कार अरब हकीमों ने किया था। इस का अर्थ''साल की दवा'' है। इसे लगातार एक साल प्रयोग करते हैं।

- **अल्क़रूयाः**

यह माजून-ए-बलादुर का यूनानी नाम है।

- **माजून दहमरसाः**

इस का अर्थ है ''आर्तवजनक एवं वातहर'' है।

कुछ मिश्रित औषधियों में बादज़हरज का शब्द आया है।

- **माजून काकनजः**

इसे ईरानी हकीमों ने बनाया है। अबुलफ़ई इब्न-ए-हिन्द के अनुसार चूंकि इस में जौज़ुस्सर्व, बर्ग-ए-मूरद, ज़र्नीख़, ज़ाफरान हैं और रंग हरा होता है इसलिए यह नाम रखा गया है।

- **कसूसाः**

  एक क़ुर्स जो माजून काकनज में सम्मिलित किया जाता है।

- **माजून असानासियाः**

  इस का अर्थ है भेड़िये वाली दवा। इस में भेड़िये का जिगर होने के कारण यह नाम रखा गया।

  कुछ हकीमों के अनुसार इस का अर्थ "रोगों को समाप्त करने वाला"।

- **अयारिजः**

  यह यूनानी शब्द "अयारह" का अरबी किया हुआ शब्द है।

  यह विशेष रूप से विरेचक होती है। इस को "दवा-ए-इलाही" कहते हैं क्योंकि अल्लाह ने इस में यह विशेषता विशेष रूप से रखी है।

- **अयारिज फ़ीक़राः**

  फ़ीक़रा यूनानी शब्द है अर्थात "कड़वापन"।

  यह नाम इस के विशेष भाग घीकवार जो कड़वा होता है, के कारण रखा गया।

- **दवाउलख़ुतातीफ़ः**

  एक माजून का नाम है जिस में रमादुलखतातीफ़ पड़ती है।

  ख़ुत्ताफ़ एक प्रसिद्ध परिन्दा है जिस का फ़ारसी नाम "प्रस्तूक" व "फर्सगह", अरबी नाम "ख़ुताफ़" और यूनानी नाम "नीसा" है।

- **फ़लूनियाः**

  इसे हकीम फ़लन रूमी तर्सूसी के नाम पर रखा गया है।

- **बर्शअ़साः**

  इस माजून का नाम "बरउस्साअ़ह" से लिया गया है अर्थात इस से फौरन फ़ायदा मिलता और रोग का निदान शीघ्र होता है।

- **सनादरीतूसः**

  यह विरेचक माजूनों में से है। "सनादरीतूस" एक यूनानी बादशाह का नाम है जिस ने इसे सब से पहले तैयार किया था।

- **जवारिशः**

  यह "गवारिश" का अरबी भाषा में बदला गया शब्द है जिस का अर्थ है "पसन्द आने वाला और अच्छे स्वाद वाला"।

- **जवारिश ख़ौज़ी:**

यह ईरानी हकीमों द्वारा तैयार की हुई औषधि है और ख़ौज़िस्तान के नाम पर इस का यह नाम रखा गया।

- **जवारिश कमूनी:**

यह गवारिश-ए-ज़ीरा है क्योंकि कमून का अर्थ ज़ीरा है।

- **फ़लासफ़ह:**

एक प्रसिद्ध माजून जो फ़लसफ़ी हकीमों की तरफ़ मन्सूब है। इस का दूसरा नाम "माद्दतुलहयात" है।

- **रामहराम:**

इसे भारतीय हकीमों ने तैयार की है। "रामहराम" अर्थात "खुदाई दवा"।

- **कुर्स-ए-अन्दरूख़ोरून:**

यह क़ुर्स तिर्याक़-ए-फारूक़ में पड़ता है। इस का अविष्कार अन्दरूमाख़स ने किया था। अन्दरूख़ोरून यूनान का एक शहर है जो अन्दरूमाख़स का जन्म स्थल एवं निवास स्थल था।

- **कुर्स-ए-अक़रकूमग़मा:**

यह मुख़ल्लसह अकबर का भाग है। यह तिर्याक़ में भी डाला जाता है।

- **कुर्स-ए-अक़रकूमग़मा का अन्य नुस्ख़ा:**

यह दवाउलख़तातीफ़ में सम्मिलित किया जाता है। "अक़रकूमग़मा" यूनानी शब्द है अर्थात "ज़ाफ़रान का तलछट"।

- **कुर्सुलकवाकिब:**

यह क़ुर्स-ए-तलक़ है। तलक़ को कौकबुलअर्ज़ कहते हैं।

- **हब्ब-ए-शबयार:**

यह हब्ब-ए-सिब्र है क्योंकि सिब्र का फ़ारसी नाम शबयार अर्थात "रात का साथी" है। अधिकतर यह हब्ब रात में खाई जाती है इसलिए इस का यह नाम रखा गया है।

- **हब्ब-ए-क़ौक़ाया:**

यह एक प्रसिद्ध हब्ब है। "क़ौक़ाया" सिरयानी भाषा का शब्द है जिस का अर्थ है "सर"। इस के इस नाम का कारण यह है कि इस से सर के रोगों में लाभ मिलता है।

- **हब्बुन्निकहतः**

  यह हब्ब खुशबूदार होती है और मुँह की गंध को दूर कर के उसे खुशबूदार बनाती है।

- **दुहनुलख़लूक़ः**

  यह "रोग़न ज़ाफ़रान" है। ख़लूक़ का अर्थ "ज़ाफ़रान" है।

- **बासलीकूनः**

  यह रोशनाई का सहअर्थी है। यह दवा आँख को रोशनी प्रदान करती है।

- **अकसरीनः**

  यह एक सुर्मा का नाम है जो नेत्र रोगों में प्रयोग किया जाता है। इस शब्द का अर्थ है "रोगाहारी एवं लाभकारी"। कुछ हकीमों के अनुसार यह एक दवा का नाम है जो ताज़ा ज़ख़्मों को गोश्त से भरती है।

- **कुहलः**

  जो दवा आँखों में सलाई से लगाई जाती है वह कुहल कहलाती है। सुर्मा भी कुहल कहा जाता है क्योंकि उस को लोग आँख में सलाई से लगाते हैं।

- **बरूदः**

  हर वह दवा जो आँख को ठंडक पहुँचाती है।

- **ज़रूरः**

  वह दवा जो आँख में या ताज़ा ज़ख़्म पर छिड़की जाती है।

- **अ़तूसः**

  हर वह दवा जिस से छींके आती हैं।

- **क़तूरः**

  हर वह दवा जिस को लोग कान में बूँद बूँद टपकाते हैं।

- **कमादः**

  हर वो दवा जो शरीर के अंगों पर गर्मागर्म रखी जाती है और अंगों को गर्म रखती है।

- **नफ़ूख़ः**

  हर वो दवा जो नाक में या हलक़ में सुड़की जाती है।

- **तिलाः**

  हर वो दवा जिस को लोग अंगों पर मलते हैं।

- **ज़िमादः**

इस दवा का क़िवाम तिला से अधिक गाढ़ा होता है और अंगों पर रखा जाता है।

- **ग़रग़रहः**

वह तरल दवा जो मुँह में हलक़ तक भर कर इस प्रकार ख़ूब चलाई जाए कि हलक़ से नीचे ना उतरे।

- **मज़मज़हः**

वह तरल दवा जो मुँह में भर कर इस प्रकार ख़ूब चलाई जाए कि हलक़ तक ना पहुँचे।

- **नतूलः**

यह दवाओं का क्वाथ या कोई गर्म तरल पदार्थ है जिस की भाप से रोग ग्रस्त अंगों (Affected Parts) पर भपारा लिया जाता है और बाद में उन पर धीरे धीरे थोड़ी दूरी से गर्म गर्म बहाया जाता है।

❑❑❑

भूमिका

# दशम लाभ

## अनुभवी हकीमों के कथन के अनुसार यौगिक औषधियों के मिज़ाज-ए-सानी, उन से लाभप्राप्ति की समय-सीमा, प्रयोग का समय एवं स्वभाव को परखने की विधि

- **तिर्याक़्-ए-फारूक़ः**

इस का उल्लेख अधिकतर पुरानी किताबों में नहीं मिलता।

हकीमों के एक गिरोह का मानना है कि इस तिर्याक़ का प्रयोग इस की निर्माण अवधि के सात साल बाद करें क्योंकि इस में उत्तम गुण प्राप्त होने एवं इस के उच्चतम प्रभावी होने के लिए उतना ही समय आवश्यक होता है।

दूसरे गिरोह का मानन है कि यह छः साल के बाद प्रयोग योग्य हो जाता है लेकिन इस में उत्तम गुण प्राप्त होने एवं इस के उच्चतम प्रभावी होने के लिए दस साल का समय आवश्यक है।

अधिकतर हकीमों का मानना है कि इस को पाँच साल से पहले कदापि प्रयोग में ना लाएँ। कुल मिला कर बात यह है कि इस तिर्याक़ को प्रयोग करने की अवधि, इस की निर्माण-अवधि से कम से कम पाँच साल बाद प्रारंभ होती है। इस से पहले प्रयोग की हिम्मत कदापि ना करें। सभी हकीमों की इस बात पर सहमति है कि इस तिर्याक़ के कार्य क्षमता में तीस सालों तक बढ़ोत्तरी होती रहती है। फिर 31 से 60 साल तक इस की कार्य क्षमता पूर्ण रूप से प्रभावशाली रहती है।

तत्पश्चात उस में धीरे धीरे कमज़ोरी आती जाती है। एक समय के बाद यह ज़हरों से लड़ने के योग्य नही रहता फिर यह बड़े माजूनों जैसे कार्य अवशय करता है और ज़हरों के इलाज के अतिरिक्त अधिकतर रोगों के निदान में इस का कार्य प्रभावशाली रहता है। एक समय ऐसा भी आता है कि अंत में यह पूर्णतः बेकार हो जाता है।

- **तिर्याक़्-ए-अर्बअ़ह, मसरूदीतूस, शीलसा और माजून अरस्तूनः**

इन के प्रयोग का समय, इन की तैयारी के छः महीने के बाद प्रारंभ होता है।

सात साल तक उन की कार्य-क्षमता प्रभावशाली रहती है फिर उनके प्रभावों में कमी आती जाती है और दस साल तक पहुँचते पहुँचते ये बेकार हो जाते हैं।

- **असानासिया, फ़लूनिया रूमी, फ़लूनिया फ़ारसी, मुख़ल्लसह कबीर और बरशअ़साः**

  इन की तैयारी के तीन महीने बाद प्रयोग प्रारंभ किया जाए। सात साल बाद इन की कार्य-क्षमता कमज़ोर हो जाती है।

- **माजून सन्जरीना, दवाउलकिब्रीत, दवाउल्लुक और दवाउलख़ुतातीफ़ः**

  इन को इन की तैयारी के छः महीने के बाद प्रयोग किया जाए। ये तीन साल तक प्रयोग योग्य होते है।

- **फ़न्जनोश, अमरूसिया और दवाउलकुर्कुमः**

  इन को इन की तैयारी के दो महीने के बाद प्रयोग करें। आगे ये दो साल तक प्रयोग योग्य होते है।

- **सनादरीतूसः**

  इस की तैयारी के समय के चार महीने बाद से चार साल तक प्रयोग कर सकते हैं।

- **अयारिज अर्कागानीस, अयारिज जालीनूस, अयारिज रोफ़स, अयारिज लोगाज़िया और अधिकतर अयारिजः**

  ये छः महीने बाद प्रयोग योग्य हो पाते हैं। उन की योग्यता चार साल तक बाक़ी रहती है। फिर कमज़ोर व बेकार हो जाते हैं।

- अधिकतर विरेचक माजून छः महीने से नौ साल तक प्रभावशाली एवं शक्तिशाली रहते हैं। तत्पश्चात ये कमज़ोर एवं बेकार हो जाते हैं।
- विरेचक जवारिश जैसे जवारिश शहरयाराँ, जवारिश ख़्यार शंबर, जवारिश उस्क़ुफ़ और जवारिश सफ़रजली आदि को उन के तैयारी के समय के तुरंत बाद प्रयोग कर सकते हैं। ये दो साल तक प्रभावशाली एवं शक्तिशाली रहते हैं।
- जो माजून, मुफ़र्रेह और जवारिश प्रसिद्ध एवं प्रचलित हैं, वो अपनी तैयारी के समय के तीस चालीस दिन बाद प्रयोग योग्य हो जाते हैं। दो साल तक प्रयोग योग्य रहते हैं। तत्पश्चात ये कमज़ोर एवं बेकार हो जाते हैं।
- इत्रीफ़ल कबीर, इत्रीफ़ल सग़ीर, फ़न्दादीक़ून, फ़लाफ़िल, अधिकतर जवारिश और माजूनों के संदर्भ में हकीमों की इस बात पर सहमति है कि जब तक इन का मज़ा ना बदले इन की कार्य क्षमता प्रभावशाली रहती है।

जब इन का मज़ा इतना बदल जाता है कि कुछ भी अंतर कर पाना असंभव हो और किसी विशेष औषधि का पता ना चल पा रहा हो तो उस को ना खाएँ क्योंकि उस समय वो बिना किसी लाभ का और बेकार हो जाता है।

- सफ़ूफ़ को तैयारी के तुरंत बाद प्रयोग कर सकते हैं। ये दो साल तक प्रभावशाली रहते हैं।
- क़ुर्स जो कि कुछ विशेष रोगों एवं बुख़ारों के लिए प्रयोग किए जाते हैं, उन को तैयारी के तुरंत बाद प्रयोग कर सकते हैं प्रन्तु ये मात्रा छः महीने तक प्रभावशाली रहते हैं और उस के बाद ये कमज़ोर हो जाते एवं प्रयोग योग्य नहीं रहते हैं।
- क़ुर्स-ए-कौकब, क़ुर्स-ए-अन्दरूख़ूरून, क़ुर्स-ए-अक़रक़ूमग़मा आदि जैसे जिन क़ुर्सों को गोंद के साथ गूँध कर तैयार किया जाता है वो दो साल तक प्रभावशाली रहते हैं।

- **हुबूबः**

तत्कालीन आवश्यकता के लिए तैयार किए गए हब्ब की योग्यता दो महीने बाक़ी तक रहती है। तत्पश्चात ये कमज़ोर हो जाते हैं। कुछ हकीमों के अनुसार अधिकतर हब्बों की योग्यता एवं उनका प्रभाव छः महीने तक बाक़ी रहता है। एक कथन के अनुसार हब्ब-ए-जदवार, हब्ब-ए-फ़र्फ़िर्यून, हब्ब-ए-मुन्तिन और हब्ब-ए-सकबीनज जैसे हब्ब दो साल तक प्रभावशाली रहते हैं।

- **शर्बतः**

शर्बतों को उन की तैयारी के समय से ही प्रयोग कर सकते हैं। उन का प्रयोग योग्य समय एक साल तक है। कुछ हकीमों के अनुसार शरबतों की योग्यता एवं उनका प्रभाव छः महीने तक बाक़ी रहता है। जालीनूस के अनुसार सिकन्जबीन की योग्यता सात साल तक बाक़ी रहती है। इस बीच उस का मज़ा भी नहीं बदलता और प्रभाव भी बरक़रार रहता है।

- **रोग़नः**

जब तक रोग़न की आकृति नहीं बदलती, उस की योग्यता बाक़ी रहती है। पुराना हो जाने और आकृति बदल जाने परबेकार हो जाता है। रोग़न-ए-बलसाँ, रोग़न-ए-ज़ैत, रोग़न-ए-काफूर, रोग़न-ए-क़ुस्त, रोग़न-ए-मोमियाई, रोग़न-ए-राहत और इस प्रकार के अन्य रोग़न जितने अधिक पुराने होते हैं उतने ही बेहतर एवं प्रभावशाली होते हैं।

- ***तिला और ज़िमादः***

ये अपनी तैयारी के बाद ही प्रयोग योग्य होते हैं।

- **मरहमः**

यह एक साल प्रभावी रहता है फिर कमज़ोर हो जाता है।

- **मतबूख़ः**

यह अपनी तैयारी के बाद से ही प्रयोग योग्य होता है और दस घंटे बीतने के बाद यह कमज़ोर एवं बेकार हो जाता है।

- **नकूअः**

यह उपनी तैयारी के समय से आठ घंटे तक प्रयोग योग्य रहता है। उस के बाद यह कमज़ोर एवं बेकार हो जाता है। नक़ूअ-ए-सिब्र एवं नक़अ-ए-हलीला की आकृति जब तक बदल ना जाए प्रयोग योग्य रहते हैं।

- **माउलउसूलः**

इन की आकृति में बदलाव आने से पहले तक ये प्रयोग योग्य रहते हैं।

- **नतूलः**

इस का हुक्म मतबूख जैसा ही है।

❑❑❑

भूमिका

# एकादशम लाभ

# तिर्याक्‌-ए-फ़ारूक़ की गुणवत्ता की जाँच-विधि एवं प्रत्येक रोग में उस की सेवन-मात्रा और प्रयोग-विधि

- **प्रथम विधि:**

तिर्याक़-ए-फ़ारूक़ की गुणवत्ता को जाँचने की एक विधि यह है कि अगर किसी व्यक्ति ने कोई प्रभावशाली विरेचक औषधि जैसे सक़मूनिया, शहम-ए-हन्ज़ल, हब्बुस्सलातीन आदि का सेवन कर लिया हो तो उस को 1.75 ग्राम की मात्रा में तिर्याक़ का सेवन कराएँ या अगर किसी को साँप, काला नाग, रतीला या बिच्छू ने ड़स लिया हो तो उस को भी 1.75 ग्राम की मात्रा में तिर्याक़ का सेवन कराएँ। इस से अगर दस्त तुरंत बन्द हो जाए और कोई हानि ना पहुँचे तो यह तिर्याक़-ए-फ़ारूक़ बढ़िया है अन्यथा नहीं।

- **द्वितीय विधि:**

दूसरी विधि यह है कि अगर किसी ने कोई ज़हरीली औषधि जैसे अफ़ियून, शूकरान, जौज-ए-मासिल आदि खा ली हो तो इलाज करने वाला व्यक्ति उस रोगी के रोग एवं दशा के अनुसार उचित मात्रा में यह तिर्याक़ खिलाए। उस को बहुत हद तक लाभ मिले तो यह तिर्याक़-ए-फ़ारूक़ के बढ़िया होने की निशानी है नहीं तो वो बेकार है।

- **तृतीय विधि:**

सर्वप्रथम एक मुर्ग़े को थोड़ी मात्रा में तिर्याक़ का सेवन कराएँ, फिर ऐसा तरीक़ा अपनाएँ कि अफ़आ साँप उस के सर पर डस ले, फिर तुरंत ही डंक लगे स्थान पर थोड़ी मात्रा में तिर्याक़ को मल दें। अगर इस प्रक्रिया को अपनाने के बाद मुर्ग़ा ज़िन्दा रहता है तो यह तिर्याक़-ए-फ़ारूक़ बढ़िया है अन्यथा कमज़ोर एवं बेकार है।

- **चतुर्थ विधि:**

यह है कि कोई व्यक्ति पुराने और बारी वाले रोग जैसे बूलिमूस (Bolimus),

खाँसी, नाफ़िज़, पेट दर्द आदि से ग्रस्त हो उस को उस के रोग और उस की स्वयं की दशा के अनुसार उपयुक्त मात्रा में यह तिर्याक़ खिलाया जाए और अगर भली भाँति लाभ-प्राप्ति हो तो यह तिर्याक़ बढ़िया है अन्यथा बेकार एवं कमज़ोर है।

**नोटः** तिर्याक़-ए-फ़ारूक़ के प्रयोग के संदर्भ में अत्यंत सावधानी की आवश्यकता है। जब तक कई बार परीक्षण से गुज़र कर उस के प्रभाव एवं मकज़ोरी और उस की गुणवत्ता की अच्छी तरह से जाँच ना हो जाए, इस का प्रयोग कदापि ना किया जाए।

इसी प्रकार जब तक यह सिद्ध ना हो जाए कि इस दवा से कोई हानि नही होगी, उस वक़्त तक इस के प्रयोग में अतिसावधानी बरती जाए।

आवश्यकता के समय अतिसावधानी के साथ रोग एवं रोगी के मिज़ाज का ध्यान रखते हुए इस का प्रयोग किया जा सकता है। इन्शाअल्लाह पूर्ण रूप से लाभ मिलेगा।

❑❑❑

भूमिका

# द्वादशम लाभ (क)

## तिर्याक़्-ए-कबीर की सामान्य अवस्था, सेवन-मात्रा और प्रयोग-विधि

तिर्याक़-ए-कबीर की सामान्य अवस्था यह है कि यह मिश्रित औषधि अत्याधिक प्रभावशाली, लाभकारी और सभी प्रकार के ज़हरों के लिए विषहर औषधि है। यह शरीर को खतरनाक औषधियों की हानि से सुरक्षित रखता है। शरीर से ज़हरों एवं ज़हरीली दवाओं से होने वाली हानि को बाहर निकालता है चाहे वो ज़हर गर्म हों या ठंडे। यह महत्वपूर्ण दवा गर्म मिज़ाज की है। खतरनाक दवाओं और ठंडे रोगों और ज़हरों में इस से भली भाँति लाभों की प्राप्ति होती है। इस दवा से गर्म रोगों और ज़हरों में विशेष रूप से लाभ प्राप्त होता है। इस में यह विशेषता अल्लाह ने अधिक मात्रा में रखी है।

इस दवा की सेवन-मात्रा हकीमों ने रोग एवं स्थान के अनुसार निश्चित की है। बेहतर यह है कि अगर इस दवा की आवश्यकता हो तो इलाज करने वाला व्यकित मौसम, स्थान, मिज़ाज, रोग एवं रोगी की दशा का गहरी नज़र से जाँच करे फिर हालात के अनुसार उस का सेवन सुनिश्चित करे।

खाँसी, ज़ुकाम, सीने के दर्द, पुराने दमा में 832 मिलीग्राम की मात्रा में तिर्याक़-ए-कबीर, माउलअस्ल या सिर्का-ए-उन्सुल में घोल कर दें।

साँप, काले साँप, बिच्छू, रतीला, पागल कुत्ते और सभी प्रकार के ज़हरीले कीड़े मकोड़ों के काटे में आवश्यकतानुसार 416 मिलीग्राम से 4.5 ग्राम तक शराब के साथ दें और भिड़ के डसे में सिर्का के साथ 208 मिलीग्राम खिलाएँ और डसे हुए स्थान पर थोड़ा सा मलें।

अगर किसी को ज़रारीह अर्थात तेलनी मक्खी ने डस लिया हो तो शराब के साथ 4.5 ग्राम की मात्रा में खिलाएँ।

अफ़ियून, शूकरान, जौज़-ए-मासिल जैसी ख़तरनाक दवाओं से होने वाली हानि में शराब के साथ इस की सेवन-मात्रा 416 मिलीग्राम से लेकर 2.25 ग्राम तक है।

मिर्गी (Epilepsy), सकता (Apoplexy), पक्षघात (Paralysis/Hemiplegia)

और लक़वा (Bell's palsy) के रोगियों को माउलउसूल के साथ 1.75 ग्राम से 3.5 ग्राम तक खिलाएँ।

कुष्ठ रोग, स्वित्र, दाउलहैयह और दाउस्सअलब में 832 मिलीग्राम से 4.5 ग्राम तक माउलजुब्न के साथ दें।

हब्बुलक़रा और पेट के विभिन्न प्रकार के कीड़ों को मारने के लिए आब-ए-क़ैसूम के साथ 408 मिलीग्राम से 1.75 ग्राम तक प्रयोग करें।

हैज़ा के रोगी को आब-ए-सेब या रुब्ब-ए-सेब या रुब्ब-ए-बिही के साथ 416 मिलीग्राम खिलाएँ।

गर्भाशय के रोगों में इस को अबहल और मुश्कतरामशीअ के क्वाथ के साथ दें।

जलोदर रोग में इस की सेवन-मात्रा शर्बत-ए-बुज़ूर के साथ 832 मिलीग्राम है।

पेट दर्द में शराब-ए-ख़ालिस या शर्बत-ए-अफ़सन्तीन के साथ प्रयोग कराएँ।

इस को हकीम लोग क़ूलन्ज रीही (Pneumocloic), सुद्दा-ए-जिगर (Hepatic obstruction) और सुद्दा-ए-तिहाल (Splenic obstruction) में माउलबुज़ूर के साथ 832 मिलीग्राम की मात्रा में प्रयोग करते हैं।

गठिया एवं बलग़मी जोड़ो के दर्द में सूरन्जान के क्वाथ के साथ 1.75 ग्राम से 3.5 ग्राम तक खिलाएँ।

इलाज करने वाला व्यक्ति अपनी स्वेच्छा से इस की सेवन-मात्रा तै कर सकता है। हाँ इस के प्रयोग में सावधानी बरतनी अतिआवश्यक है।

कुछ हकीमों के अनुसार तिर्याक़-ए-कबीर की सेवन-मात्रा कम से कम 250 मिलीग्राम और अधिक से अधिक 4.5 ग्राम है।

❑❑❑

## भूमिका
# द्वादशम लाभ (ख)

## मिश्रित औषधियों के स्वभाव के दर्जों की पहचान

तिब्ब में स्वभाव की बहस को बहुत महत्वता प्राप्त है। मिश्रित औषधि में अनेक और विभिन्न मिज़ाज वाली औषधियों को सम्मिलित किया जाता है। फलस्वरूप मिश्रित औषधि में भी कोई ना कोई मिज़ाज पाया जाता है। इस की पहचान का तरीक़ा यह है कि उस में पाए जाने वाले विभिन्न मिज़ाज की विभिन्न औषधियों के मिज़ाज के दर्जों का आपस में तुलना किया जाए अर्थात गर्म को ठंडे के साथ, ठंडे को गर्म के साथ, ताज़ा को सूखे के साथ, सूखे को ताज़ा के साथ बराबर कर के देखा जाए फिर मिश्रित औषधि का मिज़ाज निर्धारित किया जाए। इस प्रकार अगर यह स्पष्ट हो जाए कि अगर कोई मिश्रित औषधि को समान मज़ाज वाली औषधियों को मिला कर बनाया गया हो, अर्थात उस के सभी भाग गर्म हों तो उस दवा के स्वभाव और स्वभाव के दर्जे को उन भागों के स्वभाव से क़यास कर के सुनिश्चित करें। इस संदर्भ में अधिक अनुसंधान के लिए और बड़ी किताबों को देखें। निम्न में कुछ औषधियों के मिज़ाज़ का उल्लेख किया गया है।

1. मुखल्लसह अकबरः यह डेढ़ दर्जे में गर्म और ढाई दर्जे में ख़ुश्क है।
2. नोशदारू सादाः यह लगभग मोअतदिल अर्थात सामान्य मिज़ाज वाली दवा है।
3. नोशदारू बदरुद्दीन क़लान्सीः यह आधे दर्जे में गर्म है। एक कथन के अनुसार पहले दर्जे में गर्म और दूसरे रर्जे में ख़ुश्क है।
4. फ़लासफ़हः यह दूसरे दर्जे के अंत में गर्म और पौने तीन दर्जे में ख़ुश्क है।
5. दवाउल मिस्क हुल्वः इस का दूसरा नाम "दवाउल मिस्क शीरीं" भी है। यह डेढ़ दर्जे में गर्म और पौने दो रर्जे में ख़ुश्क है।
6. दवाउल मिस्क मुर्रः इस को "दवाउल मिस्क तल्ख़" भी कहते हैं। यह पौने दो दर्जे में गर्म और ख़ुश्क है।
7. तिर्याक़-ए-अर्बअहः यह ढाई दर्जे गर्म और दूसरे दर्जे में ख़ुश्क है।
8. तिर्याक़-ए-तीनीः यह डेढ़ दर्जे में गर्म और ख़ुश्क है।

9. बादज़हरज रूमीः यह पहले दर्जे में ठंडी और सवा दो दर्जे में खुश्क है।
10. फ़लूनिया-ए-रूमी एवं फ़ारसीः यह पहले दर्जे में ठंडा और तीसरे दर्जे के अंत में खुश्क है।
11. माजून अताईः यह पहले दर्जे के तिहाई में गर्म और तीसरे दर्जे के अंत में खुश्क है।
12. माजून नजाहः यह सवा एक दर्जे में गर्म और पहले दर्जे में खुश्क है।
13. माजून जालीनूसः यह सवा दो दर्जे में गर्म और पहले दर्जे में खुश्क है।
14. माजून अरस्तूः यह डेढ़ दर्जे में गर्म व ढाई दर्जे में खुश्क है।
15. माजून सेरः यह तीसरे दर्जे के अंत में गर्म और दूसरे दर्जे में खुश्क है।
16. असानासियाः यह दूसरे दर्जे के अंत में गर्म और सवा दो दर्जे खुश्क है।
17. फ़लाफ़िलीः यह तीसरे दर्जे के अंत में गर्म और ढाई दर्जे में खुश्क है।
18. फ़न्दादीक़ूनः यह ढाई दर्जे में गर्म और खुश्क है।
19. माजून क़बाज़ुलमलिकः यह पहले दर्जे के अंत में गर्म और दूसरे दर्जे के अंत में खुश्क है।
20. माजून अतिया इलाहीः यह ढाई दर्जे में गर्म और खुश्क है।
21. माजून हजरूलयहूदः यह पहले दर्जे में ठंडा एवं सवा एक दर्जे खुश्क है।
22. अमरूसियाः यह तीसरे दर्जे के प्रारंभ में गर्म और सवा दो दर्जे खुश्क है।

❑❑❑

# प्रथम खण्ड

## विभिन्न प्रकार के माजूनों के नुस्खे़

### यह खण्ड छः अध्यायों पर आधारित है

## प्रथम खण्ड
# प्रथम अध्याय

# तिर्याक़ के नुस्खे

- **तिर्याक़-ए-फारूक़:**

इस का दूसरा नाम तिर्याक़-ए-कबीर है। सभी प्रकार के विष को तोड़ता है और साथ ही उनके लिए Antidote भी है। सभी प्रकार के ज़हरीले कीड़े, मकोड़ों अथवा जानवरों के काटे और डसे में अत्यंत लाभकारी है। हृदय, मस्तिष्क, सभी मुख्य अंगों (vital organs) एवं अन्दर अथवा बाहर के हवास(Senses) को सशक्त बनाता है। सुद्दों को खोलता है। तिल्ली की बीमारियों, कुष्ठ रोगों, Leprosy,Vitiligo, Apoplexy, Bell's palsy] Tremor, Paralysis, Bronchial asthm, बलग़मी Diphtheria, Nephralgia, Cystalgia में लाभदायक है, माहवारी को नियमित करता और गर्भाशय के रोगों, बवासीर और ख़ून के बहने में लाभकारी है। पेट दर्द, जिगर की सूजन, पित्त की सूजन को समाप्त करता है। Cholera, Bulaemia, Bolimus को समाप्त करता है। पेट के कीड़ों को मारता है। rigors और बलग़मी एवं सौदावी बखारों को खत्म करता है। Latent Heat को बढ़ाता है, Aphrodisiac और Erecting agent है, Colic और Anuria को समाप्त करता है। पुराने दस्तों में लाभकारी है। यह सर दर्द, खाँसी, Ascites, Colic और Anuria में लाभदायक है। साराँश यह कि यह सभी ठंडे रोगों में लाभदायक है।

औषधियाँ: क़ुर्स-ए-उंसुल 216 ग्राम, क़ुर्स-ए-अफ़आ, क़ुर्स-ए-अन्दरूखोरून, फ़िलफ़िल स्याह और अफ़ियून प्रत्येक 108 ग्राम, वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़, तुख़्म-ए-शलग़म बर्री, सौम बर्री, ईर्सा, ग़ारीक़ून, रुब्बुस्सूस, दार-ए-चीनी और रोग़न-ए-बलसाँ प्रत्येक 54 ग्राम, ज़ाफरान, ज़न्जबील, रेवन्द चीनी, क़न्तूरियून, फूदनज जबली, फ़रासियून, फुतरासालियून, उस्तुखुद्दूस, क़ुस्त,फ़िलफ़िल सफ़ेद, दार-ए-फ़िलफ़िल, कुन्दुर, मुश्कतरामशीअ, फ़ुक़ाह-ए-इज़्ख़िर, समग़ुल बुत्म, सलीख़ा, सुंबुलुत्तीब, जअदह प्रत्येक 27 ग्राम,मीअह सायलह, बजरुल करफ़्स, सीसालियूस, हुर्फ़, कमाज़रयूस, नानख़्वाह,

कमाफ़ीतूस, उसारा-ए-लिहयतुत्तीस, नारदीन इक्लीती, तज जबली, साज़ज हिन्दी, मू, जुन्तियाना, बज़र-ए-राज़ियानज, तीन-ए-मख़्तूम, ज़ाज सफ़ेद मुहर्रक़, हमामा, वज तुर्की, हब्ब-ए-बलसाँ, मूरद, हियूफ़ारीक़ून, समग़-ए-अरबी, क़िर्दमाना, अनीसून, अक़ाक़िया प्रत्येक 14 ग्राम, दोक़ू, दरमनह, मुक़िलुलयहूद, जावशीर, क़न्तूरियून बारीक, ज़रावन्द मुदहरज़ सलीख़ा, जुन्दबेद स्तर प्रत्येक 9 ग्राम। कुछ नुस्ख़ों में बाद आवरद 9 ग्राम भी वर्णित है। असल मुसफ़्फ़ा (साफ़ मधु) जिस को मधु मक्खी ने गुल-ए-हाशा का रस चूस कर बनाया हो 4 लीटर 200 मिलीलीटर, सुगंधित एवं स्वादिष्ट शराब-ए-रैहानी 1 लीटर 470 मिलीलीटर।

निर्माण-विधिः जो दवाएँ कूटने और पीसने योग्य हैं, उन्हें कूट पीस लें और रोग़न-ए-बलसाँ के साथ चुपड़ लें। Exudates एवं क़ुर्सों को शराब में भिगो कर घोल लें। तदुपरांत उस घोल को शुद्ध मधु में मिला कर एक दिन और एक रात रख छोड़ें। दूसरे दिन सभी पिसी हुई औषधियों को उसी मधु में डाल कर अच्छी तरह मिलाएँ। चाँदी या चीनी के पात्र में संरक्षित कर लें। इस बात का विशेष ध्यान रखें कि उस पात्र को अधिक ना भरें और प्रत्येक दूसरे व तीसरे दिन उस पात्र का ढक्कन खोलते रहें ताकि उस से बनने वाली भाप बाहर निकलती रहे और जब उस का मिज़ाज सानी एवं सुद्रिढ़ हो जाए तो उस को प्रयोग मे लाएँ।

## ● तिर्याक़-ए-मसरूदीतूसः

यह बड़े तिर्याक़ों के ग्रुप में से एक बड़ा और महत्वपूर्ण तिर्याक़ है। इस के संदर्भ में यह माना जाता है कि यह तिर्याक़-ए-फ़ारूक़ की तुलना में अत्यंत प्रभावशाली है। अन्दरूमाखस द्वारा इस में क़ुर्स-ए-अफ़आ सम्मिलित किए जाने से पहले तिर्याक़-ए-मसरूदीतूस को बड़ा तिर्याक़ समझा जाता था परन्तु इस समय मसरूदीतूस, ज़हरों अथवा विनाशकारी औषधियों के नुक़सान को दूर करने के संदर्भ में तिर्याक़-ए-फ़ारूक़ के समकक्ष नहीं है लेकिन उस के अतिररिक्त उपरोक्त वर्णित बीमारियों में यह लगभग तिर्याक़-ए-कबीरे जैसे ही गुण रखता है। उपरोक्त वर्णित बीमारियों में इस का सेवन तिर्याक़-ए-कबीर से अधिक मात्रा में करें।

औषधियाँः मुर मक्की, ज़ाफ़रान, ग़ारीक़ून, ज़न्जबील, दारचीनी, इल्कुल बुत्म और कतीरा प्रत्येक 35 ग्राम, सुंबुलुत्तीब, कुंदुर, खर्दल सफ़ेद, क़ुस्त, सीसालियूस, उस्तुखुद्दस, इज़्ख़िर, कमाफीतूस, उसारा-ए-लिहयतुत्तीस, जुन्द बेद स्तर, जावशीर, साज़ज हिन्दी, दार-ए-फ़िलफ़िल, क़िन्नह,मीअह सायलह प्रत्येक 28 ग्राम, सलीख़ा, फ़िलफ़िल सफ़ेद, फ़िलफ़िल स्याह, सूरन्जान मिश्री, जअदह, सौम बर्री, इक्लीलुलमलिक, जुन्तियाना

शामी, दोक़ू, रोग़न-ए-बलसाँ, हब्ब-ए-बलसाँ, अक़रास-ए-फ़र्फ़ियून, मुक़िलुलयहूद प्रत्येक 24.5 ग्राम, वरक़-ए-सुह्नाब बर्री 7 ग्राम, तुख़्म-ए-सुद्दाब एवं उशक़ प्रत्येक 21 ग्राम, नारदीन इक्लीती, मस्तगी रूमी, समग़-ए-अरबी, फ़ुतरासालियून, क़िर्दमाना, अफ़ियून मिश्री,बज़र-ए-राज़ियानज, वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़, मुश्कतरामशीअ प्रत्येक 17.5 ग्राम, अनीसून, फ़ू, मू, वज तुर्की, सकबीनज, असारून प्रत्येक 10.5 ग्राम, अक़ाक़िया, सर-ए-सक़न्कूर, हियूफ़ारीक़ून, ईर्सा प्रत्येक 15.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः उपर्युक्त औषधियों को रोग़न-ए-बलसाँ में चुपड़ लें। Exudates को पुरानी शराब-ए-रैहानी में भिगो कर अच्छे से मिला लें। उस घोल को सब के साथ तीन गुना मधु में मिला कर तिर्याक़ तैयार करें। कुछ मुस्लिम हकीम जो इस्लामी शरीअत का पालन करते हैं, शराब के बदले अर्क़-ए-मुखल्लसह या अर्क़-ए-दार-ए-चीनी का उपयोग करते हैं।

- **तिर्याक़-ए-अर्बअहः**

यह तिर्याक़-ए-कबीर के समकक्ष है। विषैले कीड़े मकोड़ों के डसे में लाभकारी है। उन गाढ़ी रियाह को दूर करता है जो पेट एवं Viscera की खलाओं में पाई जाती हैं। जिगर और पित्त के दर्दों, मिर्गी, लक़वा, Palpitation एवं सभी प्रकार के ठंडी बीमारियों में लाभदायक है।

औषधियाँः हमामा, मुर साफ़, सुंबुलुत्तीब, साज़ज हिन्दी, लुक, मामीसा, क़रन्फ़ुल, रेवन्द वीनी, तबाशीर, क़ुस्त तल्ख़ एवं जुन्तियाना रूमी प्रत्येक 54 ग्राम, फ़ुक़ाह-ए-इज़्ख़िर,उसारा-ए-लिहयतुत्तीस एवं मुक़िल अज़रक़ प्रत्येक 36 ग्राम, आक़रक़रहा, दारचीनी, गन्धक, तुख़्म-ए-शिब्त, असारून, क़िर्दमाना, फ़र्फ़ियून, नारदीन, शगूफ़ा-ए-अंगूर, गुल-ए-बाक़ला, तुख़्म-ए-करफ़्स कोही, दोक़ू और अफ़्तीमून इक्लीती प्रत्येक 13.5 ग्राम, बज़रूल बन्ज 126 ग्राम, कतीरा, खश्खाश सफ़ेद, फ़िलफ़िल एवं क़ुर्स-ए-अन्दरूखोरून प्रत्येक 40.5 ग्राम, तुख़्म-ए-सुद्दाब 4.5 ग्राम,क़िशर-ए-तुरंज एवं सुमाक शामी प्रत्येक 9 ग्राम, रोग़न-ए-बलसाँ 108 ग्राम, उसरा-ए-क़ैसूम 90 ग्राम, फ़ुक़ाह-ए-इज़्ख़िर 20.25 ग्राम और वरक़-ए-तुरंज 58.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर रोग़न-ए-बलसाँ में चुपड़ लें। साथ ही Exudate और उसारों को शराब-ए-मुसल्लस में भिगो कर अच्छी तरह मिला लें। अंत में सभी औषधिययों को एक साथ ले कर उनके तीन गुना मधु में अच्छे प्रकार से मिला कर तिर्याक़ तैयार करें। छः महीने के पश्चात प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 1.75 ग्राम से 4.5 ग्राम तक।

यह तिर्याक़ कई बिंदुओं के अनुसार अधिकतर तिर्याक़ों के समकक्ष है परन्तु "कामिलुस्सनाअह" में ज़ाफ़रान 67.5 ग्राम के स्थान पर 160 ग्राम और अनीसून 40.5 ग्राम वर्णित किया गया है।

ऐसे ही अनेक नुस्खों में इस की औषधियों की मात्रा अथवा सेवन-मात्रा में भारी अन्तर बताया गया है।

- **तिर्याक़-ए-अर्बअहः**

इस का दूसरा नाम "तिर्याक़-ए-सग़ीर" है साथ ही यह सब से पहला तिर्याक़ है जिस को अन्दरूमाख़स ने खोज निकाला था। विषैले जानवरों के काटे में लाभकारी है और क़ूलंज को दूर करता है। उन रियाह को दूर करता है जो पेट एवं Viscera की खलाओं में पाई जाती हैं। बच्चे की पैदाइश में आसानी उत्पन्न करता है। मुर्दा बच्चे को माँ के पेट से बाहर निकालता है। ठंडी बीमारियों में लाभकारी है।

औषधियाँः जुंतियाना रूमी, हब्बुल ग़ार, मुर मक्की, ज़रावंद तवील सभी समभाग में।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान लें, तीन गुना साफ़ मधु में डाल कर अच्छी तरह मिलाएँ। चालीस दिनों के बाद प्रयोग करें।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम से 4.5 ग्राम तक

अनुपानः सादा पानी के साथ सेवन करें।

- **तिर्याक़-ए-समानियहः**

इस तिर्याक़ का वर्णन हकीमों ने तिर्याक़-ए-अर्बअह के पश्चात किया है। क़ूलंज को दूर करता है। जिगर और पित्त के सुद्दों को खोलता है। कीड़े मकोड़ों के काटे में लाभदायक है। रियाह को दूर करता है। यह तिर्याक़, तिर्याक़-ए-अर्बअह से अधिक गुणकारी है।

औषधियाँः जुन्तियाना रूमी, पोस्त-ए-बीख़-ए-कबर, हल्दी, ज़रावंद तवील, मुर मक्की, हब्बुल ग़ार, रेवन्द चीनी, क़ुस्त तल्ख़।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान लें फिर साफ़ मधु में डाल कर अच्छी तरह मिलाएँ। चार महीनों के पश्चात प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः आवश्यकतानुसार 4.5 ग्राम।

- **तिर्याक़-ए-अस्करीः**

बिच्छू काटे हुए व्यक्ति के लिए अत्यंत लाभकारी है।

औषधियाँः तरख़शक़ूक़, पोस्त-ए-बीख़-ए-कबर, जुन्तियाना, ज़रावन्द तवील और अफ़्सन्तीन।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को समभाग में लेकर कूट छान लें फिर उनके तीन गुना साफ़ मधु का क़िवाम बना कर अच्छी तरह मिलाएँ और प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

बिच्छू काटे हुए व्यक्ति के लिए यह तिर्याक़ लगभग तिर्याक़-ए-कबीर के समकक्ष ही लाभकारी है।

- **तिर्याक़ का दूसरा नुस्ख़ाः**

यह बिच्छू काटे व अफ़ियून का सेवन किए हुए व्यक्ति के लिए लाभदायक है।

औषधियाँः अनीसून 35 ग्राम, फ़िलफ़िल 10.5 ग्राम, ज़रावन्द मुदहरज और जुन्द बेद स्तर प्रत्येक5.25 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान कर शराब-ए-मुसल्लस के साथ अच्छी तरह से मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम से 9 ग्राम तक।

- **तिर्याक़-ए-तीनः**

यह ज़हर खाए हुए व्यक्ति के लिए अत्यंत लाभदायक और Experimented है। साँप, बिच्छू और सभी प्रकार के कीड़े मकोड़ों के विष को दूर करता है। ज़हरीली औषधियों के नुक़सान अथवा कीड़े मकोड़ों के विष में लाभदायक है।

औषधियाँः गिल-ए-मख़्तूम और हब्बुल ग़ार।

निर्माण-विधिः कूट कर घी में मिला कर प्रयोग करें।

जिस व्यक्ति के संदर्भ में यह आशंका हो कि उस ने ज़हर खाया है या उसे ज़हर दिया गया है तो उस के लिए इस तिर्याक़ की सेवन-मात्रा 4.5 ग्राम है।

अगर इस तिर्याक़ के सेवन से उल्टी ना हो तो इस का अर्थ यह है कि उसने ना ज़हर खाया है और ना उसे ज़हर दिया गया है बल्कि यह एक इल्ज़ाम मात्र है क्योंकि इस के सेवन से इतनी उल्टी होती है कि पूरा शरीर ज़हर से पाक हो जाता है।

- **तिर्याक़-ए-तीन रूमीः**

यह नुस्खा "कामिलुस्सनाअह" से लिया गया है। अत्यंत ज़हरीली औषधियों ज़हर दूर होता है। साँप, बिच्छू, अफ़आ और सभी प्रकार के जहरीले जानवरों के ज़हरों में लाभदायक है।

औषधियाँः तीन-ए-रूमी, अन्फ़हा-ए-ज़बी 28 ग्राम, हब्बुल ग़ार प्रत्येक 7 ग्राम, अन्फ़हाअरनब 14 ग्राम, जुन्तियाना, ज़रावन्द मुदहरज, तुख़्म-ए-सुद्दाब, मूरद, वरक़-ए-मूरद प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान कर उन के तीन गुना मधु मे डालें। अच्छी तरह मिला कर तिर्याक़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम।

- **तिर्याक़्-ए-साबित बिन क़ुर्रहः**

बिच्छू के काटे में लाभदायक है।

औषधियाँः ज़रावन्द मुदहरज, पोस्त-ए-बीख़-ए-कबर, तरख़शक़ूक़ समभाग में।

निर्माण-विधिः सब को सम भाग में कूट छान ले और साफ़ व शुद्ध मधु मे अच्छी तरह मिला कर तिर्याक़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **तिर्याक़्-ए-मोहम्मद ज़करियाः**

यह तिर्याक़ भी उपर्युक्त गुण रखता है।

औषधियाँः पोस्त-ए-बीख़-ए-कबर, अफ़्सतीन, ज़रावन्द मुदहरज और जुन्तियाना।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को सम भाग में ले कर कूट छान ले और साफ़ व शुद्ध मधु मे अच्छी तरह मिला कर तिर्याक़ तैयार करें और प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **तिर्याक़्-ए-योहन्ना सिरयानीः**

औषधियाँः जुन्द बेद स्तर, पोस्त-ए-बीख़-ए-कबर, रेवन्द चीनी, आक़रक़रहा और ज़रावन्द तवील।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को सम भाग में ले कर कूट छान ले और साफ़ व शुद्ध मधु मे अच्छी तरह मिला कर माजून तैयार करें और प्रयोग में लाएँ। कुछ हकीमों के अनुसार यह तिर्याक़ बिच्छू के काटे में बहुत ही तेज़ी से लाभ पहुँचाता है।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

अनुपानः शराब-ए-रैहानी के साथ।

- **तिर्याक़्-ए-मुसन्निफ कन्नाश बुक़राती:**

इस से हशरात के ज़हरो और ज़हरीली औषधियों के दुष्प्रभाव में लाभदायक है ।

औषधियाँः ज़रावन्द तवील और ज़रावन्द मुदहरज प्रत्येक 432 मिली ग्राम, जुन्द बेद स्तर, जावशीर और बाद ज़हर प्रत्येक 648 मिली ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर जावशीर व बाद ज़हर को शराब में डाल कर नर्म कर लें फिर साफ़ व शुद्ध शहद मे अच्छी तरह मिला कर तिर्याक़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम से 4.5 ग्राम तक।

- **तिर्याक् का दूसरा नुस्ख़ाः**

यह तिर्याक़ भंग, अफ़ीम, शूकरान और धतूरा के दुष्प्रभाव को दूर करता है ।

औषधियाँः अबहल, हींग, जुन्द बेद स्तर और फ़िलफ़िल।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान ले और साफ़ व शुद्ध मधु मे अच्छी तरह मिला कर तिर्याक़ तैयार करें और प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम या 4.5 ग्राम।

- **तिर्याक् का दूसरा नुस्ख़ाः**

यह तिर्याक़ अफ़ीम के दुष्प्रभाव को दूर करता है।

औषधियाँः जुन्द बेद स्तर, फ़िलफ़िल और हींग समभाग में।

निर्माण-विधिः सब को कर कूट छान कर साफ़ व शुद्ध मधु मे अच्छी तरह मिला कर तिर्याक़ तैयार करें और प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम से 7 ग्राम तक।

- **तिर्याक्-ए-ज़रबः**

Spure, ज़ूसंतारिया मेअवी और दस्त में लाभदायक है।

औषधियाँः मरवारीद नासुफ़्ता, मर्जान, कहरुबा, अक़ीक़, यशब, बुरादा-ए-आज, तबाशीर, तरासीस, किशनीज़ ख़ुश्क बूदादा, सन्दल सफ़ेद, बहमन, फ़ूफ़ल सफ़ेद, ज़ीरा किरमानी मुदब्बर बूदादा, मस्तगी रूमी, करोया बूदादा, माज़ू सब्ज़, आरद-ए-कनार, पिस्त-ए-जौ, सन्जद, हब्बुलआस, कज़माज़ज, पोस्त बेरून-ए-पिस्ता, दाना-ए-मवीज़ प्रत्येक 10.5 ग्राम, वरक़-ए- नुक़रह 17.5 ग्राम, तुख़्म-ए-ख़ुर्फ़ह, ख़शख़ाश सफ़ेद बूदादा, ऊद ख़ाम, बज़रूलबन्ज प्रत्येक 35 ग्राम, आमला मुनक़्क़ा, अनारदाना, सुमाक़ और ज़रिशक प्रत्येक 10.5 ग्राम, गिल-ए-अरमनी, शादनज, अदस, समग़-ए-अरबी बूदादा प्रत्येक 10.5 ग्राम, आब-ए-अनार शीरीं, रुब्ब-ए-मूरद,रुब्ब-ए-बिही, रुब्ब-ए-सेब सभी को आवश्यकतानुसार लेकर मिलाएँ।

निर्माण-विधिः सब को अच्छी तरह मिला कर तिर्याक़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम या 7 ग्राम।

- **तिर्याक् का अन्य नुस्ख़ाः**

यह तिर्याक़ साँप, बिच्छू और रेतीला के काटे में अत्यंत लाभदायक है।

औषधियाँः शोनीज़ 7 ग्राम, दोकू और ज़ीरा किरमानी प्रत्येक 17.5 ग्राम, अबहल और जौज़ुस्सर्व प्रत्येक 10.5 ग्राम, सुंबुलुत्तीब, हब्बुलग़ार, ज़रावन्द मुदहरज,

हब्ब-ए-बलसाँ, दारचीनी, जुन्तियाना और तुख़्म-ए-हन्दक़ूक़ा प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूटने छानने के पश्चात साफ़ व शुद्ध मधु मे अच्छी तरह मिला कर माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

अनुपानः पुरानी शराब के साथ।

- **तिर्याक़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह सभी प्रकार के ज़हरो के दुष्प्रभाव को दूर करता है।

औषधियाँः हब्ब-ए-बलसाँ, ज़ूफ़ा-ए-ख़ुश्क, तुख़्म-ए-शलग़म बर्री, फ़िलफ़िल सफ़ेद, फ़िलफ़िल स्याह, दार-ए-फ़िलफ़िल, वज तुर्की, अनीसून, फ़ुत्रासालियून, असारून, ज़ीरा किरमानी और बज़रूलबन्ज प्रत्येक 42 ग्राम, ज़ाफ़रान 21 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूटने के पश्चात उनके तीन गुना साफ़ व शुद्ध मधु मे अच्छी तरह मिला कर तिर्याक़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः3.5 ग्राम।

अनुपानः शराब के साथ।

- **तिर्याक़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह पागल और दीवाने कुत्ते के काटे में लाभदायक है।

औषधियाँः सर्तान मुहर्रक़ 35 ग्राम, कुन्दुर और जुन्तियाना प्रत्येक 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूटने के बाद उनके तीन गुना साफ़ व शुद्ध मधु मे अच्छी तरह मिला कर तिर्याक़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

- **तिर्याक़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह तिर्याक़ उस व्यक्ति के लिए लाभकारी है जिस को बिच्छू ने डस लिया हो या उस ने अफ़ीम खा लिया हो। ठंडे ज़हरों के दुष्प्रभाव से शरीर को बचाता है। जो व्यक्ति पहले से ही इस तिर्याक़ को खाने का आदी हो उस पर ज़हरों का कोई दुष्प्रभाव नहीं होता है अर्थात वह उनके दुष्प्रभाव से बचा रहता है।

औषधियाँः दाना-ए-माज़ू सब्ज़ मुक़श्शर, बर्ग-ए-दरख़्त-ए-अन्जीर और बर्ग-ए-लाग़िया प्रत्येक 35 ग्राम, गिल-ए-अरमनी 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः सबको कूटने के पश्चात उनके तीन गुना साफ़ व शुद्ध शहद मे अच्छी तरह मिला कर तिर्याक़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम।

- **तिर्याक् का अन्य नुस्ख़ाः**

यह तिर्याक़ ज़हरों के दुष्प्रभाव को दूर करता है।

औषधियाँः अन्जीर ख़ुश्क 50 की संख्या में, बर्ग-ए-सुद्दाब 1.5 ग्राम, सेर बर्री (लहसन) 28 ग्राम और नमक 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः अंजीर को गला कर पका लें और फिर बाक़ी सभी औषधियों को कूट छान कर अंजीर के साथ अच्छी तरह मिलाएँ और तिर्याक़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम।

- **तिर्याक़्-ए-शैख़ अबू अली साहिब-ए-ज़ख़ीराः**

पुस्तक "ज़ख़ीरा" में वर्णित है कि मैं ने इस तिर्याक़ को बनाया है और मेरे Experiment के अनुसार यह कई सारे गुणों वाला सिद्ध हुआ है। हृदय एवं मस्तिष्क को बल प्रदान करता है अथवा वाजीकर है। ज़हरों के दुष्प्रावों के विरूद्ध लाभदायक है। इस के गुण बड़े प्रकार के माजूनों के समकक्ष हैं।

औषधियाँः पोस्त-ए-तुरन्ज, जुन्तियाना, हब्ब-ए-बलसाँ, मुर मक्की, तुख़्म-ए-बादरन्जबोया, तुख़्म-ए-फ़्रन्जमुश्क, ज़रन्बाद और दरूनज प्रत्येक 14 ग्राम, मुश्क ख़ालिस और अन्बर अशहब प्रत्येक 4.5 ग्राम, काफ़ूर रियाही 2.25 ग्राम,ऊद हिन्दी, बज्र-ए-जिर्जीर, तुख़्म-ए-शलग़म, गन्दना, लिसानुलअसाफ़ीर और मग़ज़-ए-हब्बुलक़िलक़िल प्रत्येक 7 ग्राम, क़ुस्त, दारचीनी, वज, ज़ाफ़रान, नारदीन और अफ़्सन्तीन प्रत्येक 10.5 ग्राम, फ़ू, मू और फ़ुत्रासालियून प्रत्येक 8.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर मधु के साथ अच्छी तरह मिलाएँ और तिर्याक़ तैयार करें। छः माह बाद प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

- **तिर्याक़् का अन्य नुस्ख़ाः**

इस को शैख़ अबू अली सीना ने बनाया है।

औषधियाँः हब्ब-ए-बलसाँ, क़ुस्त, मुर, जुन्तियाना, दारचीनी, फ़िलफ़िल सफ़ेद, ऊद हिन्दी और फ़ुत्रासालियून प्रत्येक एक एक भाग, जुन्द बेद स्तर चौथई भाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर शहद में अच्छी तरह मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

- **तिर्याक़् का अन्य नुस्ख़ाः**

इस को भी शैख़ अबू अली ने बनाया है। इस के गुण तिर्याक़-ए-अर्बअह जैसे होते हैं।

औषधियाँः ज़रावन्द तवील, पोस्त-ए-बीख़-ए-कनार, ज़र्द चौबा, जुन्तियाना,

हब्बुलग़ार, अफ़्सन्तीनबीख़-ए-हन्ज़ल, फ़ाशरा।

निर्माण-विधिः सब को समभाग में ले कर कूट छान लें और शहद के साथ अच्छी तरह मिला कर तिर्याक़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

- **तिर्याक़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यक तिर्याक़ शरीर से पारा, संखिया और ज़ंजार के दुष्प्रावों को दूर करता है।

औषधियाँः मुर, अफ़्सन्तीन और तुख़्म-ए-करफ़्स।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को समभाग में कूट छान लें और मधु के साथ अच्छी तरह मिला कर तिर्याक़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 9 ग्राम।

अनुपानः 35 मिली लीटर पानी के साथ।

- **तिर्याक़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह तिर्याक़ उस व्यक्ति के लिए अत्यंत लाभदायक है जिसे बिच्छू ने काट लिया हो साथ ही यह क़ूलंज, Viscera के दर्द और आँतों के दर्द में आराम देता है और बच्चा पैदा होने में आसानी पैदा करता है।

औषधियाँः मुर, हब्बुलग़ार, ज़न्जबील, फ़िलफ़िल, शोनीज़ और हिल्तीत।

निर्माण-विधिः सब को समभाग में ले कर कूट छान कर उनके तीन गुना शहद के साथ मिलाएँ और तिर्याक़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **तिर्याक़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह तिर्याक़-ए-कबीर की भाँति ही ज़हरों के दुष्प्रभावों को दूर करता है।

औषधियाँः अनीसून 35 ग्राम, फ़िलफ़िल 10.5 ग्राम, ज़रावन्द मुदहरज और जुन्द बेद स्तर प्रत्येक 3.5 ग्राम, हिल्तीत 7 ग्राम, हब्बुलग़ार और दाना-ए-तुरन्ज मुक़श्शर प्रत्येक 1.75 ग्राम, शोनीज़ और बज्र-ए-हुरमुल प्रत्येक 3.5 ग्राम, जुनतियाना 7 ग्राम और सुद्दाब ख़ुश्क 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर उनके तीन गुना मधु में मिलाएँ और तिर्याक़ तैयार करें। छः माह बाद प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

❑❑❑

प्रथम खण्ड

# द्वितीय अध्याय

# मुफर्रेह के नुस्खे

● **मुफर्रेह जवाहरी:**

यह मुफर्रेह घबराहट, बेचैनी, भय अथवा चिंतन में लाभदायक है। जिगर, हृदय और मस्तिष्क को बल प्रदान करता है। हर्ष एवं आनन्द प्रदान करता है। रंग को साफ़ करता है और त्वचा को चमकदार बनाता है। मुँह की बदबू को अच्छा करता है। खाने को पचाता है। आमाशय को बल देता है। शौच में नर्मी और आसानी पैदा करता है। वाजीकर है। लिंग में जोश और तनाव पैदा करता है। हृदय की कमज़ोरी को दूर करता है। स्मृणशक्ति को मज़बूत करता है। जवानी को बरक़रार रखता है। बूढ़े व्यक्तियों के लिए अत्यंत लाभदायक है। बवासीर में लाभदायक है। संक्षिप्त में यह कि इस में अनेकों गुण हैं।

औषधियाँ: मरवारीद नासुफ़्ता, याक़ूत रूम्मानी, याक़ूत ज़र्द, फ़ीरोज़ा नीशापूरी, ज़मर्रुद प्रत्येक 9 ग्राम, लअल बदख़्शानी, अक़ीक़ यमनी, कहरुबा शमई, बुसुद, हजर-ए-यशब प्रत्येक 15.75 ग्राम, लाजवर्द मग़सूल 5.25 ग्राम, रेवन्द चीनी, सन्दल सफ़ेद, नीलोफ़र, अंबर अशहब, तुख़्म-ए-ज़र्दक, बहमन सुर्ख़, तीन-ए-मख़्तूम,ऊद क़िमारी, सलीख़ा, किशनीज़ ख़ुश्क, ज़रिश्क बेदाना प्रत्येक 13.5 ग्राम, जुन्द बेद स्तर, तबाशीर सफ़ेद, ज़रन्बाद, ख़ूलन्जान,ऊद सलीब, सुंबुलुत्तीब, जौज़बोवा, ज़न्जबील, दारचीनी, क़ाक़ला किबार, सअद कूफ़ी, उस्तुखुद्दूस शामी, उश्ना, नअनाअ ख़ुश्क, फ़ूदनज, क़िशर-ए-उतरूज, फ़्रन्जमुश्क, मरज़न्जोश, आबरेशम मुक़र्रज, बहमन सफ़ेद, बिस्बासा, फ़ुक़ाह-ए-इज़्ख़िर, हमामा, लिसानुल असाफ़ीर, वरक़-ए-शिब्त, क़रन्फ़ुल, बिस्फ़ाइज फ़िस्तक़ी, ज़रावन्द मुदहरज, ज़रावन्द तवील,तुख़्म-ए-कासनी, तुख़्म-ए-करफ़्स, अनीसून, अफ़्तीमून शामी, दरूनज अक़रबी, मस्तगी रूमी, नानख़्वाह, गुल-ए-सुर्ख़ प्रत्येक 22.5 ग्राम, फ़िलफ़िल स्याह, फ़िलफ़िल सफ़ेद, आमला मुक़श्शर, पोस्त-ए-हलीला काबुली प्रत्येक 31.5 ग्राम, ज़ाफ़रान 45 ग्राम, मुश्क ख़ालिस, जदवार मुजर्रब, अफ़ियून मिश्री, गुल-ए-गावज़बान, तुख़्म-ए-गुल-ए-सुर्ख़ गावज़बान, बादरन्जबोया प्रत्येक 9 ग्राम, वरक़-ए-तिला, वरक़-ए-नुक़रह, फ़ाद ज़हर हैवानी, साज़ज, काफ़ूर क़ैसूरी प्रत्येक 6.75

ग्राम। कुछ हकीमों ने काफ़ूर की मात्रा 3.5 ग्राम रखी है। मोमिया-ए-कानी 4.5 ग्राम और नबात सफ़ेद सब के अर्धभाग।

निर्माण-विधिः सब के तीन गुना साफ़ मधु का क़िवाम तैयार करें और ठंडा होने के पश्चात उपर्युक्त सभी औषधियों को कूट छान कर उस में सम्मिलित करें फिर चीनी के पात्र में संरक्षित कर लें और तीन माह के पश्चात उस को प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 9 ग्राम है ।

अनुपानः इस मुफर्रेह का सेवन करने के पश्चात एक प्याला अर्क़-ए-गावज़बान या अर्क़-ए-गुलाब पिएँ क्योंकि इस से इस के गुणों में बढ़ोत्तरी होगी।

- **मुफर्रेह दिलकुशाः**

यह हकीम अज़ीज़ुल्लाह द्वारा बनाया गया मुफर्रेह है जो हर्ष एवं आनन्द प्रदान करता है। वसवास दूर करता है। हृदय की कमज़ोरी और सौदावी बीमारियों में लाभदायक होने के साथ घबराहट एवं बेहोशी को दूर करता है।

औषधियाँः याक़ूत रुम्मानी, लअल बदख़्शानी, मरवारीद बहरी नासुफ़्ता, कहरुबा शमई, बुसुद, फ़ीरोज़ा नीशापूरी, लाजवर्द मग़सूल प्रत्येक 7 ग्राम, वरक-ए-तिला 1.75 ग्राम, वरक़-ए-नुक़रह 3.5 ग्राम,मुश्क ख़ालिस 3.5 ग्राम, अंबर अशहब 3.5 ग्राम, सन्दल सफ़ेद,ऊद क़िमारी, क़रन्फ़ुल, क़ाक़ला किबार, जदवार खताई, दारचीनी, क़ाक़ला सिग़ार, वरक़-ए-उतरूज, साज़ज हिन्दी, शक़ाक़ुल मिश्री, उश्ना, बादरन्जबोया, तुख़्म-ए-मूरद, फ़्रन्जमुश्क, किशनीज़ खुश्क, ग़ारीक़ून, ऊद सलीब, उस्तुखुद्दूस, हाशा, बर्ग-ए-रैहान, तुख़्म-ए-रैहान, मोमिया-ए-कानी, कबाबा चीनी, हब्ब-ए-बलसाँ, आमला मुनक़्क़ा, पोस्त-ए-हलीला काबुली, सअद कूफ़ी, सुंबुलुत्तीब, नारदीन, आबरेशम मुक़र्रज़ प्रत्येक 7 ग्राम, ज़ाफ़रान 17.5 ग्राम, रासन, हब्बुस्सनोबर किबार, खुस्यतुस्सअलब मिश्री, दरूनज अक़बी, क़िश्र-ए-तुरन्ज, बहमन सुर्ख़, बहमन सफ़ेद, गावज़बान गीलानी, मग़ज़-ए-नारजील, पिस्ता प्रत्येक 10.5 ग्राम, आब-ए-सेब,आब-ए-अनार शीरीं, आब-ए-मूरद 420 मिलीलीटर, नबात सभी के समभाग और साफ़ शहद दो गुना।

निर्माण-विधिः नियमानुसार क़िवाम तैयार करें, ठंडा होने के पश्चात उपर्युक्त औषधियों को कूट छान कर सम्मिलित करें। एक रात पतीले में ही ठंडा होने के पश्चात स्वर्ण या रजत या चीनी के पात्र में भर लें और अच्छी तरह से उस का मुँह बंद कर के चालीस दिनों तक जौ के बीच में रखें क्योंकि उस के पश्चात उस में अल्लाह के हुक्म से अच्छे गुण पैदा हो जाते हैं।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम है लेकिन उस के बाद एक प्याला अर्क़-ए-गुलाब या चाय पिएँ ताकि भरपूर ताज़गी प्राप्त हो।

## ● मुफर्रेह लूलुवीः

यह घबराहट एवं वसवास (Hallucinations) में लाभदायक है। हृदय को बल प्रदान करता है। हर्ष एवं आनन्द प्रदान करता है। इस के अतिरिक्त इस के और भी कई सारे गुण हैं लेकिन यहाँ उन को संक्षेप में वर्णित किया गया है।

औषधियाँः मरवारीद बहरी नासुफ़्ता 28 ग्राम, लाजवर्द मग़सूल 5.25 ग्राम, लअल बदख़्शानी, अक़ीक़ यमनी, हजर-ए-यशब प्रत्येक 10.5 ग्राम, तबाशीर सफ़ेद, सन्दल मुक़ासरी प्रत्येक 17.5 ग्राम, कहरुबा, गुल-ए-नीलोफ़र, ज़रिशक बेदाना प्रत्येक 10.5 ग्राम, किशनीज़, सन्दल सफ़ेद, तुख़्म-ए-गुल-ए-सुर्ख़, सन्दल सुर्ख़, तीन-ए-मख़्तूम, ऊद हिन्दी, गावज़बान, उतरुज प्रत्येक 7 ग्राम, अफ़्तीमून 21 ग्राम, साज़ज हिन्दी, ज़रन्बाद, दरूनज अक़रबी, तुख़्म-ए-कासनी, आबरेशम मुक़र्रज़ प्रत्येक 10.5 ग्राम, काफ़ूरी क़ैसूरी, अंबर अशहब प्रत्येक 5.25 ग्राम, मुश्क तुर्की 1.75 ग्राम, अर्क-ए-गुलाब, नबात मिश्री प्रत्येक 816 ग्राम, रुब्ब-ए-सेब शीरीं, रुब्ब-ए-अनार शीरीं प्रत्येक 70 ग्राम, आब-ए-बिही शीरीं 140 ग्राम। कुछ नुस्ख़ों में इन रुबूब के बदले शराब-ए-सेब 816 ग्राम, आब-ए-अनार 140 ग्राम, शराब-ए-बिही 70 की वर्णन है।

निर्माण-विधिः कूटने वाली औषधियों को कूटने छानने और जवाहरात को अत्यंत बारीक पीसने के पश्चात अर्क़-ए-गुलाब, शकर एवं उपर्युक्त रुबूब में मिलाएँ। चीनी के पात्र में संरक्षित कर लें। चालीस दिनों तक जौ के बीच में रखने के बाद प्रयोग करें।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम से 7 ग्राम तक है।

## ● मुफर्रेह याक़ूतीः

यह शैख़ अबू अली सीना का तैयार किया हुआ नुस्खा है। सौदावी बीमारियों में अत्यंत लाभदायक है। अत्यंत हर्ष एवं आनन्द प्रदान करता है। शरीर के मुख्य अंगों को बल प्रदान करता है।

औषधियाँः याक़ूत रुम्मानी, गावज़बान गीलानी, तुख़्म-ए-कासनी, मुश्क ख़ालिस, काफ़ूर क़ैसूरी प्रत्येक 4.5 ग्राम, कहरुबा, मरवारीद नासुफ़्ता प्रत्येक 2.25 ग्राम, आबरेशम मुक़र्रज, सरतान नहरी मुहर्रक़ प्रत्येक 4916 मिली ग्राम, ज़र-ए-मुकल्लस 12.48 मिलीग्राम, तुख़्म-ए-फ़न्जमुश्क, तुख़्म-ए-बादरूज, उस्तुखुद्दूस प्रत्येक 3.5 ग्राम, सन्दल सफ़ेद,ऊद ख़ाम, हजर-ए-अरमनी, लाजवर्द मग़सूल, सलीख़ा, दारचीनी, हील, क़ाक़ला किबार, जदवार खताई प्रत्येक 4.5 ग्राम, अफ़्तीमून 11.25 ग्राम, दरूनज अक़रबी, तुरनजबीन, सुंबुलुत्तीब, अंबर अशहब प्रत्येक 7 ग्राम, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यार, बर्ग-ए-गुल-ए-सुर्ख़ प्रत्येक 18 ग्राम, शराब-ए-हुम्माज़, शराब-ए-सेब शीरीं, शराब-ए-अनार शीरीं प्रत्येक 135 ग्राम।

निर्माण-विधिः आवश्यकतानुसार साफ़ मधु में औषधियों को मिला कर माजून तैयार करें। चालीस दिनों पश्चात प्रयोग में लाएँ।

- **मुफर्रेह का अन्य नुस्खाः**

घबराहट, बेहोशी और हृदय व मस्तिष्क की कमज़ोरी में लाभदायक है। शरीर को बल प्रदान करता है साथ ही हर्ष एवं आनन्द भी प्रदान करता है।

औषधियाँः मरवारीद नासुफ़्ता 21 ग्राम, बुसुद 14 ग्राम, याक़ूत रूम्मानी, गिल-ए-मख़्तूम, बादरन्जबोया, बहमन सुर्ख़, सन्दल सुर्ख़ प्रत्येक 7 ग्राम, वरक़-ए-तिला, अक़ीक़ यमनी, हजर-ए-यशब, साज़ज हिन्दी, ज़रन्बाद, दरूनज रूमी प्रत्येक 5.25 ग्राम, लाजवर्द मग़सूल 3.5 ग्राम, लअल, कहरुबा, नीलोफ़र, ज़रिशक मुनक़्क़ा, किशनीज़ ख़ुश्क, तुख़्म-ए-गुल, पोस्त-ए-तुरन्ज प्रत्येक 10.5 ग्राम, गावज़बान, रेवन्द चीनी, तुख़्म-ए-कासनी, ऊद हिन्दी, आबरेशम मुक़र्रज प्रत्येक 10.5 ग्राम, तबाशीर 24.5 ग्राम, सन्दल सफ़ेद, वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़ प्रत्येक 17.5 ग्राम, काफ़ूर रियाही, अंबर अशहब प्रत्येक 1248 मिली ग्राम, मुश्क तिब्बती 1.75 ग्राम, शीरा-ए-आमला, पोस्त हलीलाकाबुली, शर्बत-ए-सेब शीरीं, आब-ए-अनार शीरीं, गुलाब और शर्बत-ए-बिही प्रत्येक 70 ग्राम।

निर्माण-विधिः साफ़ मधु में इन को मिला कर माजून तैयार करें। चालीस दिनों तक जौ में रखने के पश्चात प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम है।

- **माजून मुफर्रेहः**

घबराहट, वसवास, और हृदय व मस्तिष्क की कमज़ोरी में लाभदायक है। सभी ज्ञानेन्द्रियों एवं शरीर के मुख्य अंगों को बल प्रदान करता है। चेहरे का रंग साफ़ करता है। हर्ष एवं आनन्द भी प्रदान करता है। शोक एवं ग़म को दूर करता है। बुद्धि एवं स्मृति को बढ़ाता है।

औषधियाँः याक़ूत रुम्मानी, बुसुद, कहरुबा, हजर-ए-यशब, लाजवर्द, गिल-ए-अरमनी, सुंबुलुत्तीब, साज़ज हिन्दी, बहमन सफ़ेद और बादरूज प्रत्येक 9 ग्राम, याक़ूत ज़र्द, याक़ूत कबूद, अक़ीक़ यमनी, मरवारीद नासुफ़्ता, पोस्त-ए-बेरून-ए-पिस्ता, बादरन्जबोया, गिल-ए-मख़्तूम, वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़, दारचीनी, दरूनज रूमी और बहमन सुर्ख प्रत्येक 18 ग्राम, अंबर अशहब और ज़र-ए-महलूल प्रत्येक 3.5 ग्राम,मुश्क तिब्बती 1.75 ग्राम, लअल बदख़्शानी, फ़ीरोज़ा नीशापूरी, हजर-ए-यशब, आबरेशम मुक़र्रज, क़रन्फ़ुल, नीलोफ़र, सन्दल, कबाबा चीनी और क़ाक़ला किबार प्रत्येक 22.5

ग्राम, शीरा-ए-आमला 45 ग्राम, पोस्त-ए-हलीला काबुली 10.5 ग्राम, काफ़ूर 1.75 ग्राम, आब-ए-सेब, आब-ए-बिही और आब-ए-हुम्माज़ प्रत्येक 816 ग्राम, अर्क़-ए-बेद मुश्क, अर्क़-ए-गावज़बान और गुलाब प्रत्येक 408 ग्राम, नबात मिश्री 816 ग्राम, शहद आवश्यकतानुसार।

निर्माण-विधिः फलों के रस, शकर और मधु को एक साथ ले कर पकाएँ। साफ़ कर के क़िवाम तैयार करें। उपर्युक्त औषधियों को कूटने पीसने के बाद मिलाएँ और विधि अनुसार माजून तैयार करें। चालीस दिनों के पश्चात प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम है।

- **मुफर्रेह याकूती का अन्य नुस्ख़ाः**

यह रूह को हर्ष प्रदान करता है। जिगर, हृदय व मस्तिष्क को बल देता है। विषाद एवं सौदावी बीमारियों में लाभदायक है। चिंतन, शोक एवं वसवास को दूर कर हर्षोल्लास पैदा करता है।

औषधियाँः मरवारीद नासुफ़्ता, मरजान, कहरुबा, फ़न्जमुश्क और तुख़्म-ए-फ़न्जमुश्क प्रत्येक 4.5 ग्राम, सन्दल सुर्ख़, सन्दल सफ़ेद, तबाशीर, ज़रन्बाद, बादरन्जबोया, क़रन्फ़ुल, साज़ज, ऊद क़िमारी, आबरेशम मुक़र्रज़ और पोस्त-ए-तुरन्ज प्रत्येक 9 ग्राम, गावज़बान, दरूनज अक़रबी, लअल, याक़ूत रुम्मानी, अक़ीक़ यमनी, वरक़-ए-तिला, वरक-ए-नुक़रह, अंबर अशहब, ज़ाफ़रान और काफ़ूर क़ैसूरी प्रत्येक 4.5 ग्राम, मुश्क तिब्बती 2.25 ग्राम, क़न्द सफ़ेद 225 ग्राम और शहद आवश्यकतानुसार।

निर्माण-विधिः सब को साफ़ मधु के साथ मिला कर विधि अनुसार माजून तैयार करें। चालीस दिनों बाद प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम है।

- **लेखक का तैयार किया मुफर्रेह याकूती का नुस्ख़ाः**

हृदय कोबल प्रदान करता है। ताज़गी पैदा करता है। त्वचा के रंग को साफ़ अथवा लाल करता है। हैज़ा एवं हृदय की कमज़ोरी में लाभदायक है। पाचक है और भूख बढ़ाता है। मुँह की बू को खुशगवार बनाता है। आमाशय, हृदय अथवा जिगर को बल प्रदान करता है। शृष्टि में बढ़ोत्तरी करता है।

औषधियाँः याक़ूत रुम्मानी, लअल, मरवारीद नासुफ़्ता, अक़ीक़ यमनी, मरजान और कहरुबा प्रत्येक 9 ग्राम, लाजवर्द मग़सूल और हजर-ए-अरमनी प्रत्येक 5.25 ग्राम, मोमिया-ए-कानी, काफ़ूर क़ैसूरी, ज़र-ए-महलूल और मुश्क तुर्की प्रत्येक 1.75 ग्राम, जदवार मुजर्रब, अंबर अशहब, आबरेशम मुक़र्रज, वरक-ए-नुक़रह, बहमन,

पोस्त-ए-हलीला काबुली, गुल-ए-गावज़बान, फ्रन्जमुश्क, सन्दल सुर्ख़, सन्दल सफ़ेद, वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़, तबाशीर सफ़ेद, बादरन्जबोया, दरूनज अक़रबी, लिसानुलअसाफ़ीर, क़रन्फ़ुल, बिस्बासा, क़िर्फ़ह और क़ाक़ला किबार प्रत्येक 10.5 ग्राम, उशनह, साज़ज हिन्दी, ऊद क़िमारी, सुंबुलुत्तीब, ज़ाफ़रान और मस्तगी रूमी प्रत्येक 7 ग्राम, पोस्त-ए-तुरन्ज, पोस्त-ए-बेरून-ए-पिस्ता, तुख़्म-ए-फ्रन्जमुश्क, किशनीज़, बादरूज और बर्ग-ए-रैहान प्रत्येक 3.5 ग्राम,शीरा-ए-आमला, आब-ए-ज़रिशक, आब-ए-बिही शीरीं, आब-ए-अनार शीरीं और आब-ए-सेब शीरीं प्रत्येक 4.5 ग्राम,अर्क़-ए-बेद मुश्क और अर्क़-ए-गावज़बा प्रत्येक 225 ग्राम, नबात सफ़ेद सभी के अर्धभाग और साफ़ शहद उन के दो गुना।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूटने पीसने एवं जवाहरात को सूक्ष्म चूर्ण करने के पश्चात मधु के साथ मिला कर विधि अनुसार माजून तैयार करें और चीनी के पात्र में सुरक्षित कर लें। चालीस दिनों तक जै के बीच में रखें फिर प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम से 7 ग्राम तक है।

- **मुफर्रेह सर्दः**

गर्मी के कारण होने वाली घबराहट एवं हृदय की कमज़ोरी में लाभदायक है। टी.बी के मरीज़ों के लिए लाभदायक है।

औषधियाँः तबाशीर सफ़ेद, बहमन सुर्ख़, बहमन सफ़ेद, दरूनज अक़रबी, किशनीज़ ख़ुश्क, पोस्त-ए-बेरून-ए-पिस्ता, मरवारीद नासुफ़्ता, कहरुबा, नीलोफ़र, गुल-ए-गावज़बान, बुसुद और आबरेशम सोख़्ता प्रत्येक 7 ग्राम, याक़ूत 1664 मिलीग्राम, गावज़बान 35 ग्राम, काफ़ूर क़ैसूरी 832 मिलीग्राम, शीरा-ए-आमला 52.5 ग्राम, उसारा-ए-ज़रिशक 17.5 ग्राम, सन्दल मुक़ासरी 10.5 ग्राम, ज़रे महलूल 832 मिलीग्राम, नुक़रह महलूल 1248 मिलीग्राम, मुश्क ख़ालिस 832 मिलीग्राम, अंबर अशहब 1664 मिलीग्राम, आब-ए-सेब तुर्श और आब-ए-अनार मैख़ोश प्रत्येक 13.5 ग्राम, अर्क़-ए-बेद मुश्क और अर्क़-ए-गावज़बान प्रत्येक 225 ग्राम, क़न्द सफ़ेद 1632 ग्राम।

निर्माण-विधिः उपर्युक्त वर्णित सभी रसों अथवा अर्क़ों को गुड़ के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें और फिर सभी औषधियों को कूटने पीसेने के पश्चात वधि अनुसार उस क़िवाम में सम्मिलित करें और माजून तैयार करें ।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम।

- **लेखक का तैयार किया मुफर्रेह सर्द का नुस्ख़ाः**

सूए मिज़ाज बारिद के कारण होने वाली हृदय की कमज़ोरी में लाभदायक है और बूढ़े लोगों के स्वभाव के अनुकूल है।

औषधियाँः ज़रन्बाद, दरूनज, गावज़बान प्रत्येक 10.5 ग्राम, जुन्द बेद स्तर, क़ाक़ला किबार, क़िर्फ़ह, बादरन्जबोया प्रत्येक 7 ग्राम, उशनह, क़रन्फ़ुल, ज़न्जबील, बहमन प्रत्येक 10.5 ग्राम, याक़ूत, बुसुद, मरवारीद नासुफ़्ता प्रत्येक 7 ग्राम, फ़ादज़हर, मुश्क ख़ालिस और अंबर अशहब प्रत्येक 1.75 ग्राम, ज़रे महलूल 832 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट पीस कर उनके तीन गुना मधु में क़िवाम तैयार करें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

- **मुफ़र्रेह मुनश्शितः**

इस मुफ़र्रेह के गुण एवं विशेषताएँ अनेक हैं।

यह घबराहट, वसवास एवं दिल की कमज़ोरी में लाभदायक है। जिगर, गुर्दा, आमाशय एवं मस्तिष्क मज़बूत करता है। त्वचा में निखार लाता है। सौदावी रोगों को दूर करता है। हर्षोल्लास उत्पन्न करता है। इनके अतिरिक्त कई अन्य गुणों वाला भी है।

औषधियाँः याक़ूत सुर्ख़, मरजान, कहरुबा लाजवर्द, मग़सूल प्रत्येक 9 ग्राम, याक़ूत ज़र्द, अक़ीक़ यमनी, मरवारीद नासुफ़्ता प्रत्येक 18 ग्राम,शहद 13.5 ग्राम, ज़मर्रुद 6.75 ग्राम, हजर-ए-यशब, गुल-ए-नीलोफ़र, आबरेशम मुहर्रक़, क़रन्फ़ुल प्रत्येक 13.5 ग्राम, तुख़्म-ए-फ़न्जमुश्क 2.25 ग्राम, पोस्त-ए-बेरून-ए-पिस्ता, बादरन्जबोया, ऊद क़िमारी, दरूनज रूमी, तीन-ए-मख़्तूम, तबाशीर सफ़ेद प्रत्येक 18 ग्राम, आमला मुक़श्शर, पोस्त-ए-हलीला काबुली प्रत्येक 45 ग्राम, सन्दल सफ़ेद, सन्दल सुर्ख़, दारचीनी प्रत्येक 13.5 ग्राम, गावज़बान, सुंबुलुत्तीब, साज़ज हिन्दी, बहमन सफ़ेद, क़ाक़ला किबार प्रत्येक 9 ग्राम, उसारा-ए-ज़रिश्क 67.5 ग्राम, ज़ाफ़रान, अंबर अशहब प्रत्येक 9 ग्राम, मुश्क ख़ालिस 4.5 ग्राम, काफ़ूर क़ैसूरी 2.25 ग्राम, वरक़-ए-तिला 2.25 ग्राम, वरक़-ए-नुक़रह 4.5 ग्राम, रुब्ब-ए-सेब 816 ग्राम, आब-ए-हुम्माज़ 408 ग्राम, अर्क़-ए-बेद मुश्क 816 ग्राम, गुलाब 816 ग्राम और साफ़ शहद आवश्यकतानुसार।

निर्माण-विधिः अर्कों को शकर एवं मधु में मिला कर क़िवाम तैयार करें और थोड़ा सा आब-ए-हुम्माज़ भी मिला लें। क़िवाम के ठंडा होने के पश्चात शेष औषधियों को कूट छान कर उस में सम्मिलित करें और चालीस दिनों के पश्चात प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम से 4.5 ग्राम तक।

- **मुफ़र्रेह संदलैनः**

दिक़(टी.बी) के मरीज़ों के लिए लाभदायक है। दिल को मज़बूत करता है। घबराहट में लाभदायक एवं कषाय है। दस्तों में अत्यंत लाभकारी है। रोगी जिस समय तेज़ बुख़ार में ना हो, उस समय इस को दे सकते हैं। जिस समय रोगी को बुख़ार हो

लेकिन अधिक ना हो, उस समय इसे देने से बहुत नींद आती है।

औषधियाँ: गुलाब में घिस कर सूक्ष्म किया हुआ सन्दल सफ़ेद 21 ग्राम, सन्दल सुर्ख़ 10.5 ग्राम, तुख़्म-ए-खुर्फ़ह बूदादा, किशनीज़ ख़ुश्क बूदादा, ख़शख़ाश सफ़ेद बूदादा प्रत्येक 17.5 ग्राम, ज़रिशक बेदाना 24.5 ग्राम, तबाशीर सफ़ेद, वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़ और पोस्त-ए-बेरून-ए-पिस्ता प्रत्येक 14 ग्राम, बहमन, तुख़्म-ए- कासनी और तुख़्म-ए-काहू प्रत्येक 10.5 ग्राम, दरूनज रूमी और मस्तगी रूमी प्रत्येक 4.5 ग्राम, पोस्त-ए-तुरन्ज 13.5 ग्राम, मरवारीद नासुफ़्ता 5.25 ग्राम, बुसुद सोख़्ता, हजर-ए-यशब, याक़ूत रुम्मानी और ज़र-ए-महलूल प्रत्येक 1664 मिलीग्राम, वरक़-ए-नुक़रह और अंबर अशहब प्रत्येक 4.5 ग्राम, मुश्क ख़ालिस 1248 मिलीग्राम, आब-ए-सेब, आब-ए-बिही, आब-ए-अनार, आब-ए-हुम्माज़, अर्क़-ए-बेद मुश्क और अर्क़-ए-गुलाब प्रत्येक 90 ग्राम। कुछ नुस्खों में अर्क़-ए-गुलाब, अर्क़-ए-बेद मुश्क और अर्क़-ए-गावज़बान प्रत्येक 225 ग्राम का वर्णन है।

निर्माण-विधि: आवश्यकतानुसार शकर तबरज़द, क़न्द सफ़ेद एवं मिश्री व नबात सफ़ेद को अर्क़ों के साथ मिला कर हल्की आँच पर पकाएँ और क़िवाम तैयार करें। शेष औषधियों को कूट छान कर छाँव में सुखा लें और फिर दोबारा कूट छान कर तीन गुना शर्बत-ए-सेब शीरीं में मिला कर माजून तैयार करें।

सेवन-मात्रा: 3.5 ग्राम से 4.5 ग्राम तक।

- **तरबुलमजालिस:**

यह दिल को हर्षोल्लास एवं आनंद प्रदान करता है। वाजीकर है। भूक को बढ़ाता है और पाचक है।

औषधियाँ: याक़ूत रुम्मानी, लअल, लूलू बहरी और हजर-ए-यशब प्रत्येक 3.5 ग्राम, लाजवर्द, फ़ीरोज़ा नीशापूरी, कहरुबा शमई, अक़ीक़ यमनी, मरजान और ज़बरजद प्रत्येक 4.5 ग्राम, फ़िलफ़िल, ज़न्जबील, नारमुश्क, दरूनज अक़रबी, ज़रन्बाद, साज़ज हिन्दी, पोस्त-ए-हलीला काबुली, किशनीज़ ख़ुश्क और नीलोफ़र प्रत्येक 7 ग्राम, गावज़बान, बहमन सुर्ख़, बहमनी सफ़ेद, पोस्त-ए-तुरन्ज,ऊद क़िमारी, सन्दल सुर्ख़ और सन्दल सफ़ेद प्रत्येक 14 ग्राम, सअद कूफ़ी, मस्तगी रूमी और ज़रिशक बेदाना प्रत्येक 10.5 ग्राम, सुंबुलुत्तीब, क़िर्फ़ह, क़ाक़ला किबार, क़ाक़ला सिग़ार, गिल-ए-मख़्तूम, गिल-ए-अरमनी और फ़ादज़हर हैवानी प्रत्येक 3.5 ग्राम, तुख़्म-ए-बादरन्जबोया 7 ग्राम, जदवार खताई 3.5 ग्राम, फ़रन्जमुश्क 7 ग्राम, बादरन्जबोया 10.5 ग्राम, वरक़-ए-तिला और वरक़-ए-नुक़रह प्रत्येक 1.75 ग्राम, कबाबा चीनी 7 ग्राम, अंबर अशहब 3.5 ग्राम, मुश्क 1.75 ग्राम, अर्क़-ए-गुलाब, अर्क़-ए-बेद मुश्क और अर्क़-ए-गावज़बान प्रत्येक

350 ग्राम,नबात सभी के समभाग और मधु उन के दो गुना।

निर्माण-विधि: सभी औषधियों को लेकर नियमानुसार माजून तैयार करें और चालीस दिनों के पश्चात प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्रा: 4.5 ग्राम।

- **तरबुलमजालिस का अन्य नुस्ख़ा:**

यह बहुत कामोत्तेजक और आनन्दायक है। बदन के अत्यावशक अंगों और शुक्राणुओं के बनने से संबंधित अंगों को बल प्रदान करता है।

औषधियाँ: शक़ाक़ुली मिश्री, ख़ूलन्जान, ख़ुस्यतुस्सअलब मिश्री, बहमन सुर्ख़, बहमन सफ़ेद, तूदरी ज़र्द, तूदरी सुर्ख़, अगर तुर्की, लिसानुलअसाफ़ीर, हब्बुलबान, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यार, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यारज़ह, तुख़्म-ए-हल्यून ख़ुश्क मुदब्बर, दारचीनी, क़रन्फ़ुल, असारून, कबाबा चीनी, बिस्बासा, जौज़बोवा, क़ुस्त शीरीं, दरूनज अक़रबी, फ़्रन्जमुश्क, गावज़बान, बादरन्जबोया, तुख़्म-ए-फ़्रन्जमुश्क, सन्दल सुर्ख़, सन्दल सफ़ेद और बूज़ीदान प्रत्येक 9 ग्राम, तुख़्म-ए-खुर्फ़ह, तुख़्म-ए-कुन्दुर, तुख़्म-ए-ज़र्दक (गाजर), ऊद क़िमारी, नारमुश्क और दार-ए-फ़िलफ़िल प्रत्येक 4.5 ग्राम, मग़ज़-ए-बादाम, कुन्जद मुक़श्शर, हब्बुज्ज़लम, नारमुश्क और मग़ज़-ए-पिस्ता प्रत्येक 18 ग्राम, दोक़ू, कहरुबा, बुसुद और जदवार खताई प्रत्येक 9 ग्राम, लअल, याक़ूत, मरवारीद नासुफ़्ता, मरजान और फ़ीरोज़ा नीशापूरी प्रत्येक 4.5 ग्राम, ज़ाफ़रान 13.5 ग्राम, अंबर 4.5 ग्राम, मुश्क 1.75 ग्राम, वरक़-ए-तिला 50 की संख्या में और वरक़-ए-नुक़रह 100 की संख्या में, जुज़-ए-आज़म 130 और रोग़न-ए-जुज़-ए-आज़म 4.5 ग्राम, साफ़ शहद सभी औषधियों के तीन गुना और नबात 350 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को रोग़न-ए-जुज़-ए-आज़म में चर्ब कर के साफ़ शहद और नबात-के साथ मिला कर माजून तैयार करें। चालीस दिनों के पश्चात प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्रा: 1.75 ग्राम के 3.5 ग्राम तक।

- **मुफ़र्रेह का अन्य नुस्ख़ा:**

यह दिल, दिमाग़ और जिगर को बल प्रदान करता है। ग़शी, खफ़क़ान, डर, अनियमित विचारों और जुनून में लाभदायक है। शरीर में स्फ़ूर्ति उत्पन्न करता है। दिल से ग़म को दूर करता है। शारीरिक बल अथवा जवानी की रक्षा करता है। त्वचा को निखारता है। इनके अतिरिक्त यह और भी कई गुणों वाला है।

औषधियाँ: याक़ूत रुम्मानी, लाजवर्द, लअल, फ़ादज़हर हैवानी, यशब, सुंबुलुत्तीब, क़ाक़ला सिग़ार, क़ाक़ला किबार, गिल-ए-मख़्तूम, गिल-ए-अरमनी, अंबर अशहब, जदवार

खताई, वरक़-ए-तिला और वरक़-ए-नुक़रह प्रत्येक 3.5 ग्राम, कहरुबा, बुसुद, बहमन, क़िर्फ़ह, दरूनज, ज़रन्बाद, सअद, कबाबा चीनी, सन्दल सफ़ेद, सन्दल सुर्ख़, किश्नीज़ खुश्क, पोस्त-ए-हलीला, आमला मुनक़्क़ा, तुख़्म-ए-कासनी और मुश्क तिब्बती प्रत्येक 9 ग्राम, ज़न्जबील, साज़ज हिन्दी, शक़ाक़ुल, ज़रिशक बेदाना, गुल-ए-नीलोफ़र, मस्तगी रूमी और ज़ाफ़रान प्रत्येक 13.5 ग्राम, बादरन्जबोया, पोस्ते तुरन्ज, गुल-ए-गावज़बान, तबाशीर सफ़ेद और आबरेशम मुक़र्रज़ प्रत्येक 18 ग्राम, शर्बत-ए-फ़वाकेह, गुलाब और अर्क़-ए-बेद मुश्क प्रत्येक 225 ग्राम, नबात सफ़ेद सभी औषधियों के समभाग और साफ़ शहद उन के दो गुना।

निर्माण-विधिः सब को कूटने छानने और जवाहरात को पीसने के बाद नियमानुसार क़िवाम में मिलाएँ। चीनी या चाँदी के पात्र में सुरक्षित कर लें। चालीस दिनों तक जौ के बीच में रखें और उस के बाद प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

## ● मुफ़र्रेह शैख़ीः

यह शरीर में हर्षोल्लास एवं स्फ़ूर्ति उत्पन्न करने में तरबुलमजालिस की भाँति है।

औषधियाँः क़िर्फ़ह, गावज़बान, बादरन्जबोया, वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़ प्रत्येक 22.5 ग्राम, ख़ूलन्जान, कबाबा चीनी, क़रन्फ़ुल, सुंबुलुत्तीब, क़ाक़ला किबार, क़ाक़ला सिग़ार, जौज़बोवा, तुख़्म-ए-फ़न्जमुश्क, मस्तगी रूमी, तुख़्म-ए-तुरन्ज, उश्नह, लिसानुलअसाफ़ीर प्रत्येक 18 ग्राम, साज़ज हिन्दी, सअद कूफ़ी, ज़न्जबील, दार-ए-फ़िलफ़िल, मरवारीद नासुफ़्ता, याक़ूत रुम्मानी, कहरुबा, मरजान, जदवार खताई प्रत्येक 9 ग्राम, अंबर अशहब 4.5 ग्राम, मुश्क ख़ालिस 832 मिलीग्राम, ज़ाफ़रान 10.5 ग्राम, वरक़-ए-तिला 832 मिलीग्राम, वरक़-ए-नुक़रह 4.5 ग्राम, शहद सब के तीन गुना।

निर्माण-विधिः शहद के साथ मिला कर माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम से 5.25 ग्राम तक।

## ● मुफ़र्रेह शाही मोअतदिलः

यह दिल की कमज़ोरी में अत्यंत लाभदायक और हृदयवर्धक है। स्वभाव में ताज़गी और शरीर में हर्षोल्लास एवं स्फ़ूर्ति उत्पन्न करता है।

औषधियाँः फ़ादज़हर हैवानी और जदवार प्रत्येक 4.5 ग्राम, ज़ाफ़रान और आबरेशम मुक़र्रज़ प्रत्येक 22.5 ग्राम, बादरन्जबोया 31.5 ग्राम, लअल और लाजवर्द मग़सूल प्रत्येक 7 ग्राम, याक़ूत 10.5 ग्राम, मरवारीद नासुफ़्ता 10.5 ग्राम, सन्दल सफ़ेद, सदल सुर्ख़, गावज़बान और गुल-ए-गावज़बान गीलानी प्रत्येक 18 ग्राम, दरूनज

अक़रबी, शीरा-ए-आमला, ज़रन्बाद, तबाशीर और किश्नीज़ खुश्क प्रत्येक 18 ग्राम, बर्ग-ए-गुल-ए-सुर्ख़ 36 ग्राम, अंबर अशहब 4.5 ग्राम, मुश्क ख़ालिस 2.25 ग्राम, वरक़-ए-तिला 832 मिलीग्राम, वरक़-ए-नुक़रह 1248 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः जवाहरात को सूक्ष्म पीस कर अर्क़-ए-बेद मुश्क में मिलाएँ। छाँवमें सुखा लें और दोबारा कूट छान कर तीन गुना शर्बत-ए-सेब में मिलाएँ और नियमानुसार माजून तैयार करें।

- **दारू मुफ़र्रेहः**

यह क़ज़वीनी हकीमों का अविष्कार है। इस को उन्होंने बादशाह तमास सफ़वी के लिए बनाया था। यह शरीर में हर्षोल्लास एवं स्फ़ूर्ति उत्पन्न करता है और वाजीकर है। दिल एवं दिमाग़ की कमज़ोरी में लाभदायक है और आमाशयवर्धक है।

औषधियाँः मस्तगी, सुंबुलुत्तीब, हब्ब-ए-बलसाँ,ऊद-ए-बलसाँ, असारून, गुल-ए-गावज़बान, सलीख़ा और दारचीनी प्रत्येक 10.5 ग्राम, क़रन्फ़ुल, बादरन्जबोया, तुख़्म-ए-तोरह तेज़क और खरदल सफ़ेद प्रत्येक 3.5 ग्राम, ख़ूलन्जान, बिस्बासा, ज़ाफ़रान और शीरा-ए-आमला प्रत्येक 22.5 ग्राम, बहमन सुर्ख़, बहमन सफ़ेद, तूदरी ज़र्द, तूदरी सुर्ख़, पोस्त-ए- बेरून-ए-पिस्ता और तुरन्ज प्रत्येक 9 ग्राम, कहरुबा, हजर-ए-यशब और अंबर अशहब प्रत्येक 3.5 ग्राम, मुश्क 2.25 ग्राम, वरक़-ए-तिला 624 मिलीग्राम, वरक़-ए-नुक़रह 1248 मिलीग्राम, आब-ए-सेब, गुलाब, अर्क-ए-गावज़बान और अर्क़-ए-बेद मुश्क प्रत्येक 75 ग्राम, अर्क-ए-मुखल्लसह 105 ग्राम, शीरा-ए-आमला 35 ग्राम, नबात सभी औषधियों के अर्धभाग और शहद उन के तीन गुना।

निर्माण-विधिः नियमानुसार माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः चालीस दिनों के पश्चात 7 ग्राम प्रयोग करें।

- **मुफ़र्रेह मोअतदिलः**

यह खफ़क़ान, सौदावी रोगों, आमाशय की कमज़ोरी और दिल की कमज़ोरी में लाभदायक है। हवास को बल प्रदान करता है और स्वभाव में ताज़गी पैदा करता है।

औषधियाँः याक़ूत रुम्मानी और लअल प्रत्येक 3.5 ग्राम, मरवारीद नासुफ़्ता 10.5 ग्राम, वरक़-ए-नुक़रह, वरक़-ए-तिला और अंबर अशहब प्रत्येक 7 ग्राम, फ़ीरोज़ा नीशापूरी, मरजान सुर्ख़, मरजान सफ़ेद, अक़ीक़ यमनी, याक़ूत कबूद, तबाशीर सफ़ेद, पोस्त-ए-हलीला काबुली, आमला मुनक़्क़ा, गुल-ए-सुर्ख़, तुख़्म-ए- ख़ुर्फ़ह और जरन्बाद प्रत्येक 5.25 ग्राम, काफ़ूर, मुश्क ख़ालिस और कहरुबा प्रत्येक 70 ग्राम, लाजवर्द, सन्दल सुर्ख़, सन्दल सफ़ेद और आबरेशम मुक़र्रज़ प्रत्येक 7 ग्राम, फ़रन्जमुश्क और ऊद क़िमारी प्रत्येक 14 ग्राम, सुंबुलुत्तीब, जाज़बोवा, मस्तगी और क़ाक़ला किबार प्रत्येक

10.5 ग्राम, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यार, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यारज़ह और किशनीज़ ख़ुश्क प्रत्येक 7 ग्राम, ज़ाफ़रान 5.25 ग्राम, अर्क़-ए-गावज़बान और गुलाब प्रत्येक 350 ग्राम, कन्द सफ़ेद सब के अर्धभाग, साफ़ शहद उन के दो गुना।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर माजून तैयार करें।

- **मुफ़र्रेह फ़लासतियूनः**

यह रूम के हकीमों द्वारा तैयार किया हुआ मुफ़र्रेह है और पुराने हकीमों द्वारा आज़माया हुआ है। रूमी भाषा में इस का अर्थ हाता है छुटकारा देने वाला और चूंकि यह ज़हरों के दुष्प्रभावों को दूर करता और उन से छुटकारा दिलाता है इसलिए इस का यह नाम रखा गया। मालीख़ोलिया, वसवास, जुनून, फ़ालिज, लक़वा और सभी प्रकार के दिमाग़ी रोगों में लाभदायक है। साथ ही यह कुष्ठ रोग, दमा, श्वास की तंगी, जोड़ों के दर्द, गठिया और क़ूलन्ज में भी लाभदायक है। बवासीर को समाप्त करता है। गुर्दा एवं मुत्राशय की पथरी को सूक्ष्म कणों में तोड़कर बाहर निकालता है। यह वाजीकर है अथवा शरीर में हर्षोल्लास एवं स्फ़ूर्ति की संचार करता है। ग़म को दूर करता है। इन सब के अतिरिक्त इस के और भी अनेक गुण एवं लाभ हैं।

औषधियाँः ज़र्नब, ज़रन्बाद, बर्ग-ए-गुल-ए-सुर्ख़, किशनीज़ ख़ुश्क, गावज़बान, तूदरी ज़र्द, बहमन सफ़ेद, बहमन सुर्ख़ प्रत्येक 17.5 ग्राम, हब्बुलग़ार, मस्तगी रूमी, दारचीनी, उद हिन्दी, मुर मक्की, जुन्तियाना, हमामा, आबरेशम मुक़र्रज़ प्रत्येक 35 ग्राम, आब-ए-ग़ौरह, रुब्ब-ए-सेब, रुब्ब-ए-रीबास प्रत्येक 210 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को एक रात दिन गाए के दूध में भिगोने के बाद उस का अर्क़ निकालें। अर्क़ में शहद 420 ग्राम, नबात 420 ग्राम मिला कर क़िवाम तैयार करें और शेष को कूट छान कर उस क़िवाम में मिलाएँ और नियमानुसार माजून तैयार।

- **मुफ़र्रेह फ़लासतियून का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः सन्दल सफ़ेद, ऊद हिन्दी, क़रन्फ़ुल प्रत्येक 31.5 ग्राम, उश्ना, क़ाक़ला,बनफ़्शा, समग-ए-अरबी, दारचीनी प्रत्येक 13.5 ग्राम, मरवारीद नासुफ़्ता, मरजान, कहरुबा, याक़ूत सुर्ख़ प्रत्येक 27 ग्राम, वरक़-ए-नुक़रह, ज़ाफ़रान, अंबर प्रत्येक 9 ग्राम, वरक़-ए-तिला, मुश्क ख़ालिस, आबरेशम मुक़र्रज़ प्रत्येक 4.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर शहद वनबात के क़िवाम में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः चालीस दिनों के पश्चात 4.5 ग्राम प्रयोग में लाएँ।

- **मुफ़र्रेह गर्मः**

यह ठंडे मिज़ाज और बूढ़े व्यक्तियों के लिए लाभदायक है। शक्तिवर्धक व

कामोत्तेजक है। चेहरा लाल करता है।

औषधियाँः क़रन्फ़ुल, ख़ूलन्जान, बिस्बासा, क़ाक़ला किबार, उश्ना, गुल-ए-क़रन्फ़ुल, गुल-ए-गावज़बान, ज़न्जबील प्रत्येक 10.5 ग्राम, क़िर्फ़ह 14 ग्राम, जौज़बोवा, बहमन सुर्ख़, बहमन सफ़ेद, ख़ुस्यतुस्सअलब, सुंबुलुत्तीब, नारमुश्क, फ़्रन्जमुश्क प्रत्येक 17.5 ग्राम, आक़रक़रहा 3.5 ग्राम, मस्तगी रूमी, वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़ और मरवारीद नासुफ़्ता प्रत्येक 10.5 ग्राम, बुसुद, कहरुबा प्रत्येक 7 ग्राम, अंबर अशहब 3.5 ग्राम, मुश्क तुर्की 1.75 ग्राम, लअल 1.75 ग्राम, याक़ूत कबूद 1.75 ग्राम, ज़ाफ़रान 10.5 ग्राम, वरक़-ए-तिला, वरक़-ए-नुक़रा प्रत्येक 1.75 ग्राम, पोस्त-ए-तुरन्ज 10.5 ग्राम, सअद हिन्दी 7 ग्राम, क़न्द सफ़ेद 816 ग्राम, साफ़ शहद।

निर्माण-विधिः सब को मिला कर माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम।

- **मुफ़र्रेह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह सर्दी से होने वाले खफ़क़ान और दिल की कमज़ोरी में लाभदायक है। यह जिगर, आमाशय, दिमाग़ और दिल को बल देता है। पीठ और कमर को सशक्त बनाता है। यह लिंग में जोश एवं तनाव उत्पन्न करता है। शुक्राणु पैदा करता है। वाजीकर है।

औषधियाँः क़िर्फ़ह, बादरन्जबोया, बर्ग-ए-गुल-ए-सुर्ख़ और गावज़बान प्रत्येक 17.5 ग्राम, ख़ूलन्जान, कबाबा चीनी, क़रन्फ़ुल, जौज़बोवा, क़ाक़ला सिग़ार, क़ाक़ला किबार, तुख़्म-ए-फ़्रन्जमुश्क, बर्ग-ए-तुरन्ज, ज़ाफ़रान, मस्तगी रूमी, पोस्त-ए-तुरन्ज, लिसानुलअसाफ़ीर और बिस्बासा प्रत्येक 10.5 ग्राम, सुंबुलुत्तीब, उश्ना, बहमन सुर्ख़ और बहमन सफ़ेद प्रत्येक 14 ग्राम, साज़ज हिन्दी 7 ग्राम, ज़न्जबील और दार-ए-फ़िलफ़िल प्रत्येक 5.25 ग्राम, मरवारीद नासुफ़्ता 7 ग्राम, ज़र-ए-महलूल और नुक़रह महलूल प्रत्येक 1.75 ग्राम, ख़शख़ाश सफ़ेद 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान कर उन के दो गुना साफ़ शहद के साथ नियमानुसार माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम से 7 ग्राम तक।

- **मुफ़र्रेह मुअतदिल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह खफ़क़ान और दिल की कमज़ोरी में लाभदायक है।

औषधियाँः बहमन सुर्ख़ व सफ़ेद प्रत्येक 17.5 ग्राम, पोस्त-ए-हलीला काबुली, गावज़बान, तबाशीर सफ़ेद, शाहतरह, किशर-ए-उतरुज, पोस्त-ए-बेरून-ए-पिस्ता, आब्रेशम मुक़र्रज़, बादरन्जबोया प्रत्येक 7 ग्राम, ऊद ख़ाम, ज़रन्बाद प्रत्येक 3.5 ग्राम,

बुसुद, कहरुबा, मरवारीद नासुफ़्ता प्रत्येक 7 ग्राम, अंबर अशहब 3.5 ग्राम, वरक़-ए-नुक़रह, वरक़-ए-तिला, मुश्क तुर्की प्रत्येक 1.75 ग्राम, आब-ए-अनार, आब-ए-ज़रिशक और आब-ए-हुम्माज़ प्रत्येक 35 ग्राम, क़न्द सफ़ेद 175 ग्राम, शराब-ए-सेब 70 ग्राम।

निर्माण-विधिः क़न्द, आब-ए-फ़वाकेह के क़िवाम में सब को कूट छान कर मिलाएँ। चालीस दिनों के बाद प्रयोग करें।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम से 7 ग्राम तक।

- **मुफ़र्रेह सर्द का नुस्ख़ाः**

औषधियाँः लूलू ग़ैर मस्क़ूब, कहरुबा, बुसुद, ऊद ख़ाम, गावज़बान प्रत्येक 7 ग्राम, तुख़्म-ए-कासनी, किशानीज़ ख़ुश्क प्रत्येक 3.5 ग्राम, सन्दल सुर्ख़, सन्दल सफ़ेद, तबाशीर प्रत्येक 28 ग्राम, फ़रन्जमुश्क, अफ़्तीमून और गुल-ए-सुर्ख़ प्रत्येक 21 ग्राम, दरूनज रूमी, ज़ाफ़रान प्रतयेक 7 ग्राम, साज़ज हिन्दी, ज़रन्बाद, बादरन्जबोया, ख़शख़ाश सफ़ेद, गिल-ए-अरमनी, बनफ़्शा प्रत्येक 14 ग्राम, काफ़ूर क़ैसूरी 3.5 ग्राम, मुश्क तुर्की 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर शराब-ए-सेब में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

- **मुफ़र्रेह का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः बर्ग-ए-गुल-ए-सुर्ख़, तबाशीर, बहमन सफ़ेद और गावज़बान प्रत्येक 10.5 ग्राम, खुर्फ़ह मुक़श्शर, तुख़्म-ए-ख़्यार और तुख़्म-ए-ख़्यारज़ह प्रत्येक 3.5 ग्राम, ज़रिश्क बेदाना, कहरुबा और बुसुद प्रत्येक 1.75 ग्राम, मुश्क 416 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः क़न्द के साथ मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम।

- **मुफ़र्रेह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह खफ़क़ान-ए-हार और टी.बी के रोगियों के लिए लाभदायक है।

औषधियाँः बुसुद, कहरुबा, मरवारीद नासुफ़्ता, गावज़बान, गिल-ए-अरमनी प्रत्येक 7 ग्राम, किश्नीज़ ख़ुश्क, सन्दल सुर्ख़, सन्दल सफ़ेद, अर्क़-ए-गुल-ए-सुर्ख़ प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट कर शर्बत-ए-अनार शीरीं में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

- **मुफ़र्रेह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Tuberculosis और Pthysis के रोगियों लिए लाभदायक है। क़ब्ज़ पैदा

करता है। गर्मी के कारण होने वाली दिल की कमज़ोरी में लाभदायक है।

औषधियाँः मरवारीद नासुफ़्ता, बुसुद, कहरुबा, गिल-ए-अरमनी, समग़-ए-अरबी, तबाशीर सफ़ेद प्रत्येक 7 ग्राम, रुब्बुस्सूस 1.75 ग्राम, ख़शख़ाश सफ़ेद, मग़्ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यार और मग़्ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यारज़ह प्रत्येक 5.25 ग्राम, रुब्ब-ए-मूरद 17.5 ग्राम, शर्बत-ए-अनार शीरीं 70 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर उपर्युक्त रुबूब में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **मुफ़र्रेह मुअतदिल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह हृदय को बल देता, खफ़क़ान समाप्त करता, त्वचा का रंग साफ़ करता और फ़िक्र, ग़म, वसवास, डर दूर करता है।

औषधियाँः मरवारीद नासुफ़्ता, बुसुद प्रत्येक 35 ग्राम, कहरुबा 17.5 ग्राम, सन्दल सुर्ख़ व सफ़ेद प्रत्येक 28 ग्राम, गावज़बान 35 ग्राम, फ़न्जमुश्क 21 ग्राम, तुख़्म-ए-कासनी 17.5 ग्राम, दरूनज रूमी, ज़ाफ़रान, अंबर अशहब प्रत्येक 7 ग्राम, साज़ज हिन्दी, ज़रन्बाद, तुख़्म-ए-फ़न्जमुश्क, तुख़्म-ए-बादरन्जबोया, ख़शख़ाश सफ़ेद, बनफ़्शा ख़ुश्क और गिल-ए-अरमनी प्रतयेक 14 ग्राम, अफ़्तीमून और वरक़-ए-गुल प्रत्येक 21 ग्राम, तबाशीर सफ़ेद 28 ग्राम, मुश्क ख़ालिस 1.75 ग्राम,ऊद ख़ाम 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट छान कर शर्बत-ए-सेब में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 5.25 ग्राम।

- **मुफ़र्रेह मुख़्तसरः**

यह हृदय को बल प्रदान करता है। यह खफ़क़ान और डर को समाप्त करता है।

औषधियाँः बुसुद, कहरुबा, मरवारीद नासुफ़्ता, फ़न्जमुश्क, क़िशर उतरुज, आमला मुक़श्शर प्रत्येक 10.5 ग्राम, आब्रेशम ख़ाम, बादरन्जबोया, लिसानुस्सौर प्रत्येक 12.25 ग्राम, मुश्क 1.75 ग्राम

निर्माण-विधिःकूट कर शराब-ए-अफ़्तीमून में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम।

- **दवाउलमिस्क हुल्वः**

इस को "दवाउलमिस्क शीरीं" भी कहा जाता है। यह खफ़क़ान, सौदावी रोग, दिल की कमज़ोरी एवं आमाशय की कमज़ोरी में लाभदायक है। गर्भाधारण में लाभदायक है। चेहरे के रंग को साफ़ करता है। मिर्गी, क़ूलन्ज, लक़वा, चौथिया बुख़ार और श्वास की तंगी में लाभदायक है।

औषधियाँः ज़रन्बाद, दरूनज अक़रबी प्रत्येक 3.5 ग्राम, मरवारीद नासुफ़्ता, कहरुबा, बुसुद, आब्रेशम मुक़र्रज़ प्रत्येक 1.75 ग्राम, बहमन सफ़ेद, बहमन सुर्ख़, साज़ज हिन्दी, सुंबुलुत्तीब, क़ाक़ला किबार, क़रन्फ़ुल, जुन्द बेद स्तर, उश्ना प्रत्येक 1664 मिलीग्राम, दार-ए-फ़िलफ़िल, ज़न्जबील प्रत्येक 832 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर तीन गुना साफ़ शहद में मिलाएँ। चार महीने के पश्चात प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

- **दवाउलमिस्क हार का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से भी वही उपर्युक्त लाभ प्राप्त होते हैं।

औषधियाँः मरवारीद नासुफ़्ता, कहरुबा, बुसुद और आब्रेशम मुक़र्रज़, ज़रन्बाद और दरूनज प्रत्येक 3.5 ग्राम।कुछ हकीमों ने 1.75 ग्राम से 10.5 ग्राम की मात्रा में सम्मिलित किया है। दार-ए-फ़िलफ़िल, ज़न्जबील और मुश्क तिब्बती प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर तीन गुना पानी और आग से सुरक्षित शहद में मिलाएँ। चार महीने बाद प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम से 4.5 ग्राम तक।

- **दवाउलमिस्क का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः ज़रन्बाद, दरूनज प्रत्येक 10.5 ग्राम, मरवारीद नासुफ़्ता, कहरुबा, बुसुद, आब्रेशम मुक़र्रज़ प्रत्येक 15.75 ग्राम, बहमन सुर्ख़, सफ़ेद, क़ाक़ला, साज़ज हिन्दी, सुंबुलुत्तीब, क़रन्फ़ुल, जुन्द बेद स्तर, उश्ना प्रत्येक 2.25 ग्राम, मुश्क 1872 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर नियमानुसार साफ़ शहद में मिलाएँ जिस को आग से सुरक्षित रखा गया हो।

प्रयोग-समयः चार महीने के पश्चात प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

- **दवाउलमिस्क सर्दः**

यह ख़फ़क़ान और गर्मी से होने वाली बेहोशी में लाभदायक है। यह यक्ष्मा के रोगियों लिए लाभदायक है।

औषधियाँः कहरुबा, बुसुद, बर्ग गुल-ए-सुर्ख़, मरवारीद नासुफ़्ता प्रत्येक 3.5 ग्राम, तुख़्म-ए-ख़ुर्फ़ह अधा बिर्यां, किश्नीज़ ख़ुश्क, गावज़बान, आमला मुक़श्शर प्रत्येक 10.5 ग्राम, आब्रेशम मुक़र्रज़, सन्दल सुर्ख़ व सफ़ेद प्रत्येक 7 ग्राम, ज़ाफ़रान 3.5 ग्राम, मुश्क 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधि: कूट कर तीन गुना क़न्द सफ़ेद में मिलाएँ।

सेवन-मात्रा: 3.5 ग्राम से 4.5 ग्राम तक।

- **दवाउलमिस्क का अन्य नुस्ख़ा:**

औषधियाँ: तबाशीर, गुल-ए-सुर्ख़, सन्दल सुर्ख़, किशनीज़ ख़ुश्क अधा बिर्यां और तुख़्म-ए-ख़ुर्फ़ह अधा बिर्यां प्रत्येक 14 ग्राम, मरवारीद नासुफ़्ता, कहरुबा, बुसुद और आब्रेशम मुक़र्रज़ प्रत्येक 7 ग्राम, मुश्क तुर्की 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को कूट कर शर्बत-ए-सेब में मिलाएँ।

- **दवाउलमिस्क का अन्य नुस्ख़ा:**

औषधियाँ: मरवारीद नासुफ़्ता, बुसुद, तुख़्म-ए-ख़ुर्फ़ह, गुल-ए-सुर्ख़, कहरुबा, सन्दल सफ़ेद, गावज़बान, किश्नीज़ ख़ुश्क अधभुना, तबाशीर सफ़ेद प्रत्येक 7 ग्राम, मुश्क 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधि: कूट कर शर्बत-ए-फ़वाकेह में मिलाएँ।

- **दवाउलमिस्क मुअतदिल:**

औषधियाँ: मरवारीद नासुफ़्ता, कहरुबा, बुसुद, दरूनज, आब्रेशम मुक़र्रज़, ज़रन्बाद, बहमन सुर्ख़ और बहमन सफ़ेद प्रत्येक 7 ग्राम, क़रन्फ़ुल, उश्ना, सुंबुलुत्तीब, हीलबोवा, साज़ज हिन्दी, दार चीनी, ज़ाफ़रान, मस्तगी रूमी, तबाशीर सफ़ेद, सन्दल सुर्ख़, सन्दल सफ़ेद प्रत्येक 1.75 ग्राम, अंबर अशहब 3.5 ग्राम, मुश्क 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर शीरा-ए-नबात और साफ़ शहद में मिलाएँ।

- **मुफ़र्रेह मुअतदिल:**

औषधियाँ: मरवारीद नासुफ़्ता, बुसुद प्रत्येक 10.5 ग्राम, याक़ूत रुम्मानी, अक़ीक़ यमनी, लाजवर्द मग़सूल प्रत्येक 3.5 ग्राम, कहरुबा, बहमन सुर्ख़ व सफ़ेद, सन्दल सुर्ख़ व सफ़ेद, आब्रेशम मुक़र्रज़, साज़ज हिन्दी, बिस्बासा, किशनीज़ ख़ुश्क, फ़्रन्जमुश्क, तुख़्म-ए-बादरन्जबोया, तुख़्म-ए-ख़शख़ाश, गिल-ए-अरमनी, बनफ़्शा प्रत्येक 7 ग्राम, गावज़बान 17.5 ग्राम, आमला मुनक़्क़ा 24.5 ग्राम, फ़्रन्जमुश्क, तुख़्म-ए-बादरन्जबोया, बर्ग-ए-गुल-ए-सुर्ख़, तबाशीर, तुख़्म-ए-कासनी, सना मक्की, सरतान नहरी मुहर्रक़, मरजान प्रत्येक 10.5 ग्राम, ज़ाफ़रान, दरूनज प्रत्येक 3.5 ग्राम, ख़ुर्फ़ह 14 ग्राम, अंबर अशहब 1664 मिलीग्राम, काफ़ूर 832 मिलीग्राम,ऊद 2496 मिलीग्राम, मुश्क 416 मिलीग्राम, शीरा-ए-नबात 420 ग्राम, सेब शीरीं 210 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर मिलाएँ और चालीस दिन बाद प्रयोग करें।

सेवन-मात्रा: 4.5 ग्राम।

- **नोशदारू आमलाः**

इस को नोशदारू सादा भी कहते हैं। मुफ़र्रेह है। यह एक प्रसिद्ध, मुजर्रब और पसंद किया गया नुस्ख़ा है। सभी जीवनप्रद अंगों को बल प्रदान करता है। खफ़क़ान और मिर्गी में लाभदायक है। स्वभाव में ताज़गी पैदा करता है। बदन के रंग को साफ़ करता है। मुँह और पसीने की बदबू को ख़ुशगवार बनाता है। जिगर और आमाशय का सशक्त बनाता है। भूक बढ़ाता है। इस को खाने से पहले प्रयोग किया जाता है।

औषधियाँः गुल-ए-सुर्ख़ 21 ग्राम, सअद कूफ़ी 17.5 ग्राम, क़रन्फ़ुल, मस्तगी, सुंबुलुत्तीब, असारून प्रत्येक 10.5 ग्राम, क़ाक़ला सिग़ार, क़ाक़ला किबार, ज़रनब, बिस्बासा, जौज़बोवा, क़िर्फ़ह और ज़ाफ़रान प्रत्येक 7 ग्राम, आमला मुक़श्शर 405 ग्राम।

निर्माण-विधिः आमला को एक रात दिन गाए के दूध में भिगोएँ फिर साफ़ पानी से धो लें। उस को 3672 ग्राम पानी में इतना पकाएँ कि एक भाग शेष रह जाए। ठंडा होन के बाद अच्छी तरह मल छान कर उस का शीरा प्राप्त कर लें और सभी के तीन गुना क़न्द व शहद मिला कर क़िवाम तैयार करें। शेष औषधियों को कूट छान कर उसी क़िवाम में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम से 9 ग्राम तक।

- **नोशदारू लूलुवीः**

यह मुफ़र्रेह है। यह दिल, दिमाग़, आमाशय एवं जिगर को सशक्त बनाता है। भूक बढ़ाता और खाने को पचाता है। उन रोगों में लाभदायक है जो आमाशय एवं जिगर की मुशारकत से पैदा होते हैं। स्वाभाव में ताज़गी एवं हर्षोल्लास पैदा करता है।

औषधियाँः मरवारीद नासुफ़्ता, हजर-ए-यशब, बुसुद, सअद कूफ़ी, कहरुबा प्रत्येक 9 ग्राम, ऊद ख़ाम, तबाशीर सफ़ेद, साज़ज हिन्दी, सुंबुलुत्तीब, गिल-ए-अरमनी,आब्रेशम मुक़र्रज़ प्रत्येक 13.5 ग्राम, ज़ाफ़रान, दरूनज रूमी, बहमन सुर्ख़, बहमन सफ़ेद, उश्ना प्रत्येक 9 ग्राम, शीरा-ए-आमला 225 ग्राम, ज़रिशक बेदाना, अनारदाना प्रत्येक 45 ग्राम।

निर्माण-विधिः ज़रिश्क व अनारदाना को आमला के साथ पकाएँ और साफ़ करने के बाद औषधियों के तीन गुना शहद और क़न्द के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें फिर सब को कूट छान कर उस में सम्मिलित करें और नियमानुसार मुफ़र्रेह तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम से 9 ग्राम तक।

- **नोशदारू का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः बर्ग-ए-गुल-ए-सुर्ख़ 10.5 ग्राम, सअद कूफ़ी, क़रन्फ़ुल, मस्तगी रूमी, ज़ाफ़रान, असारून, हील, क़िर्फ़ह, मरवारीद नासुफ़्ता, कहरुबा, मरजान प्रत्येक 7

ग्राम, आब्रेशम मुक़र्रज़, हजर-ए-यशब, गावज़बान, सन्दल सुर्ख़, सन्दल सफ़ेद, दरूनज रूमी, बहमन सफ़ेद, बहमन सुर्ख़, गिल-ए-अरमनी गिल-ए-मख़्तूम, तबाशीर सफ़ेद, पोस्त-ए-बेरून-ए-पिस्ता प्रतयेक 5.25 ग्राम, जौज़बोवा, क़ाक़ला किबार, किशनीज़ खुश्क प्रत्येक 3.5 ग्राम, शीरा-ए-आमला 225 ग्राम, आब-ए-ज़रिशक, आब-ए-अनार तुर्श प्रत्येक 67.5 ग्राम, अंबर अशहब 3.5 ग्राम, मुश्क तुर्की 1.75 ग्राम, वरक़-ए-तिला 30 की संख्या में, वरक़-ए-नुक़रह 50 की संख्या में, क़न्द, शहद सब के तीन गुना।

निर्माण-विधिः क़न्द, शहद को नियमानुसार मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **नोशदारू बनुस्ख़ा-ए-बददीन कलान्सीः**

औषधियाँः वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़ 21 ग्राम, क़ाक़ला 35 ग्राम, सअद, बहमन सफ़ेद, आमला मुनक़्क़ा, गावज़बान प्रत्येक 17.5 ग्राम, क़रन्फ़ुल, सुंबुलुत्तीब, असारून, बादरन्जबोया, बहमन सुर्ख़ प्रत्येक 10.5 ग्राम, क़िर्फ़ह, ज़रनब, मस्तगी, शक़ाक़ुल, तूदरी सुर्ख़, तूदरी सफ़ेद, ख़ूलन्जान प्रत्येक 7 ग्राम, बिस्बासा, हीलबोवा, जौज़बोवा, ज़ाफ़रान प्रत्येक 3.5 ग्राम, अंबर अशहब 1.75 गग्रम, मरवारीद नासुफ़्ता, साज़ज हिन्दी प्रत्येक 7 ग्राम, मुश्क 832 मिलीग्राम, शीरा-ए-आमलाा 420 मिलीलीटर, फ़ानीज़ या क़न्द में से जो भी उपस्थित हो 420 ग्राम, साफ़ शहद 816 मिलीलीटर लें।

निर्माण-विधिः नियमानुसार सभी मुफ़र्रेह तैयार करें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम से 7 ग्राम तक।

- **नोशदारू लूलुवी ब नुस्ख़ा-ए-हकीम मुहम्मद बाक़रः**

औषधियाँः अयाक़ूत रुम्मानी 4.5 ग्राम, आब्रेशम मुक़र्रज़, मरवारीद नासुफ़्ता, कहरुबा, सुंबुलुत्तीब, तबाशीर सफ़ेद, वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़, ज़ाफ़रान प्रत्येक 3.5 ग्राम, यशब सब्ज़, मरजान, दरूनज अक़रबी, हील, तुख़्म-ए-बादरन्जबोया, साज़ज हिन्दी, ऊद हिन्दी, इज़्ख़िर, असारून रूमी, सन्दल सफ़ेद, पोस्त-ए-तुरन्ज, रेवन्द चीनी, ज़रिशक बेदाना और अंबर अशहब प्रत्येक 7 ग्राम, मुश्क तुर्की 3.5 ग्राम, वरक़-ए-तिला 832 ग्राम, दूध में मुदब्बर शीरा-ए-आमला 210 मिलीलीटर।

निर्माण-विधिः क़न्द, नबात, शहद को सब के समभाग मिला कर नोशदारू तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **मुफ़र्रेह जालीनूसः**

*लिंग* को कठोर बनाता है। शुक्राणु की थैलियों को खोलता है। बदन के रंग को साफ़ करता है। बदन में उत्तम ख़ून बनाता है। लिंग में जाश एवं तनाव भरता है।

औरत के दिल में मर्द की मुहब्बत पैदा करता है।

औषधियाँ: मरवारीद नासुफ़्ता, बुसुद, अनीसून, बहमन सफ़ेद प्रत्येक 3.5 ग्राम, बीख़-ए-काकनज, बीख़-ए-लबलाब, कहरुबा, समग़ अरबी प्रत्येक 1.75 ग्राम, कज़माज़ज, सअद कूफ़ी, सलीख़ा, दार चीनी, मस्तगी रूमी, फ़ुक़ाह-ए-इज़्ख़िर प्रत्येक 4.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: कूट छान कर तीन गुना शहद में मिलाएँ।

सेवन-मात्रा व समय: 4.5 ग्राम, सोते समय सेक्स से पहले।

अनुपान: गर्म पानी।

- **मुफ़र्रेह का अन्य नुस्ख़ा:**

यह हृदयवर्धक, मस्तिष्कवर्धक और वाजीकर है।

औषधियाँ: फ़िलफ़िल, ज़न्जबील, सुंबुलुत्तीब, जौज़बोवा, दार-ए-फ़िलफ़िल, क़ाक़ला किबार, लिसानुलअसाफ़ीर, शीतरज हिन्दी, दरूनज अक़रबी, बादरन्जबोया, मस्तगी रूमी, गावज़बान, ख़ूलन्जान, हील, फ़न्ज मुश्क, मरवारीद नासुफ़्ता, सन्दल सफ़ेद, ज़रावन्द मुदहरज, सलीख़ा, वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़, याक़ूत रुम्मानी, बहमन सुर्ख़ और सफ़ेद प्रत्येक 7 ग्राम, बिस्बासा 21 ग्राम, पोस्त-ए-तुरन्ज 10.5 ग्राम, पोस्त-ए-हलीला 3.5 ग्राम, अंबर अशहब 3.5 ग्राम, मुश्क 3.5 ग्राम, ज़ाफ़रान 7 ग्राम।

निर्माण-विधि: क़न्द, नबात, शहद को सब के समभाग मिला कर मुफ़र्रेह तैयार करें।

सेवन-मात्रा: 7 ग्राम।

- **मुफ़र्रेह रशीदी का नुस्ख़ा:**

यह हृदयवर्धक, मस्तिष्कवर्धक और वाजीकर है।

औषधियाँ: लअल बदख़्शानी, याक़ूत बदख़्शानी, मरवारीद नासुफ़्ता प्रत्येक 17.5 ग्राम, साज़ज हिन्दी, तुख़्म-ए-करफ़्स, सुद्दाब, उश्ना, ज़ाफ़रान, बिस्बासा, तुख़्म-ए- फ़न्जमुश्क, क़िशर-ए-तुरन्ज, अनीसून प्रत्येक 4.5 ग्राम, बादरन्जबोया 45 ग्राम, बहमन सुर्ख़, बहमन सफ़ेद, संगबोया प्रत्येक 9 ग्राम, आब्रेशम मुक़र्रज़, अंबर अशहब प्रत्येक 4.5 ग्राम, मुश्क तुर्की 2.25 ग्राम, वरक़-ए-तिला, वरक़-ए-नुक़रह प्रत्येक 50 की संख्या, ज़ायदुलफ़िक्र 67.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: नबात, क़न्द, साफ़ शहद को सब के समभाग लेकर अर्क़-ए-गुलाब में मिलाएँ और क़िवाम तैयार करें। फिर सब को कूट छान कर उस में सम्मिलित करें।

सेवन-मात्रा: 4.5 ग्राम।

❑❑❑

## प्रथम खण्ड
# तृतीय अध्याय

## माजून के नुस्खे
### यह अध्याय तीन वर्गों पर आधारित है

## प्रथम वर्गः उन विशेष माजूनों के नुस्खे जिन का जुज़-ए-आज़म अफ़्यून है लेकिन बहुत कम मात्रा में सम्मिलित किया जाता है

- **मुख़ल्लसह कबीरः**

इस का दूसरा नाम "शवातीर" है। यह मिश्रित औषधि उच्च कोटि की अथवा अत्यंत लाभदायक है। यह पित्ती उछलने, पक्षाघात, अर्धांगघात, बलग़मी कारणों से उत्पन्न ऐंठन, घेंघा, गठिया, कंपन्न, पुराना सिरदर्द, चक्कर आना, दाँत दर्द और वस्वास (Hallucination) में लाभदायक है। मियादी बुख़ारों को दूर करता है। शरीर में बलग़म एवं तरल पदार्थों की अधिकता के कारण होने वाले आँख के दर्द में इस को लगाने (तिला करने) से आराम मिलता है। जिगर के दर्द, पहलू के दर्द,आँतों एवं आमाशय के दर्द, शरीर के विभिन्न अंगों में बंद भारी हवा और बवासीर में लाभदायक है। सर्दी ज़ुकाम एवं कीड़े मकोड़ों के काटे में भी लाभदायक है।

अगर लिंग पर इस की मालिश की जाए तो उस में जोश एवं तनाव उत्पन्न करता है। इस के अतिरिक्त इस के और भी लाभ हैं।

औषधियाँः मुर मक्की, सलीख़ा और इज़्ख़िर प्रत्येक 18 ग्राम, जुन्द बेद स्तर और फ़ुत्रासालियून प्रत्येक 67.5 ग्राम, तुख़्मे करफ़्स 64 ग्राम, सीसालियूस रूमी 4.5 ग्राम, क़ुस्त तल्ख़ और दारचीनी प्रत्येक 27 ग्राम, फ़िलफ़िल सफ़ेद 54 ग्राम, फ़िलफ़िल स्याह 18 ग्राम, क़ुर्से अक़र्क़ूमग़्मा, मीअह सायला और असारून प्रत्येक 27 ग्राम, ज़ाफ़रान और हमामा प्रत्येक 18 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर तीन गुना मधु के साथ माजून तैयार करें।

प्रयोग-समयः छः महीनों के पश्चात प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम।

## ● बुज़ुर्ग दारू:

यह ईरानी हकीमों द्वारा तैयार की गई एक बहुत ही महत्वपूर्ण औषधि है जिस के सारे गुण लगभगा मुख़ल्लसह कबीर के जैसे ही हैं। इस के गुणों की अधिकता के कारण कुछ हकीमों ने इस को तिर्याक़ की श्रेणी में रखा है।

औषधियाँः ज़ाफ़रान और बज़रुलबन्ज सफ़ेद प्रत्येक 960 ग्राम, अफ़ियून और फ़र्फ़ियून प्रत्येक 70 ग्राम, मीअह और सुंबुलुत्तीब प्रत्येक 1720 ग्राम, साज़ज हिन्दी, क़रन्फ़ुल और तुख़्म-ए-हज़ार इस्फ़न्द, आक़रक़रहा, दार-ए-फ़िलफ़िल और मुर मक्की प्रत्येक 14 ग्राम, फ़िलफ़िल सफ़ेद, सकबीनज और जावशीर प्रत्येक 7 ग्राम, मरवारीद नासुफ़्ता, नोशादर, तुख़्म-ए-सुद्दाब दशती, मुश्क, काफ़ूर, क़ाक़ला, दारचीनी और सलीख़ा प्रत्येक 7 ग्राम, क़ुस्त, ज़रन्बाद, दरूनज और रोग़न-ए-बलसाँ प्रत्येक 28 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान लें। क्षार एवं अफ़ियून को शराब में घोल कर साफ़ कर लें फिर सब को तीन गुना साफ़ शहद के साथ मिला कर नियमानुसार माजून तैयार करें।

प्रयोग-समयः छः महीनों के पश्चात प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः रोगी के स्वभाव अनुसार 1.75 ग्राम से लेकर 3.5 ग्राम तक।

## ● माजून कैसरः

यह घबराहट से बचाता है। यह आमाशय के दर्द, मिर्गी अथवस ठंडे रोगों में लाभदायक है। हिचकी को बंद करता है और सुद्दों को खोलता है।

औषधियाँः जुन्द बेद स्तर, रुब्बुस्सूस, सलीख़ा, क़ुस्त तल्ख़, फ़िलफ़िल स्याह, अफ़ियून मिश्री, मीअह सायला, ज़ाफ़रान और सुंबुलुत्तीब प्रत्येक 10.5 ग्राम, जावशीर 3.5 ग्राम, दरूनज अक़रबी, ज़रन्बाद और मरवारीद नासुफ़्ता प्रत्येक 1.75 ग्राम, मुश्क 832 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान लें और तीन गुना शहद के साथ मिला कर नियमानुसार माजून तैयार करें।

प्रयोग-समयः छः महीनों के पश्चात प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 170 मिलीग्राम से 832 मिलीग्राम तक।

## ● माजून-ए-खुस्रूवीः

हृदय एवं मस्तिष्क को बल प्रदान करता है साथ ही वाजीकर भी है। मुँह की दुर्गंध को दूर कर के उस को सुगंधित बनाता है। शरीर में स्फ़ूर्ति पैदा करता एवं तरोताज़ा करता है।

औषधियाँः अंबर अशहब, क़ाक़ला किबार, बिस्बासा, क़रन्फ़ुल, ज़न्जबील, जौज़बोवा, सुंबुलुत्तीब, सन्दल सुर्ख़, सन्दल सफ़ेद, शक़ाक़ुल, क़िर्फ़ह, हील, बहमन सुर्ख़, बहमन सफ़ेद प्रत्येक 7 ग्राम, ख़ुस्यतुस्सअलब मिश्री 24.5 ग्राम, अफ़ियून 35 ग्राम, ज़ाफ़रान, दार-ए-फ़िलफ़िल, बज़रुलबन्ज प्रत्येक 21 ग्राम, मस्तगी रूमी 10.5 ग्राम, दारचीन 27 ग्राम, उश्ना 7 ग्राम, मुश्क 1.75 ग्राम, वरक़-ए-तिला 832 मिलीग्राम, वरक़-ए-नुक़रह 1296 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान लें और तीन गुना साफ़ मधु के साथ मिला कर नियमानुसार माजून तैयार करें।

प्रयोग-समयः छः महीनों के पश्चात प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 170 मिलीग्राम।

अगर अफियून के साथ बनाने का इरादा हो तो 70 ग्राम की मात्रा में अफ़ियून को भी सम्मिलित करें।

- **माजून मीअहः**

पुराने दस्तों एवं पेचिश में लाभदायक है।

औषधियाँः जुन्द बेद स्तर, असारून, अफ़ियून, मीअह सायला, बज़रुलबन्ज, कुन्दुर।

निर्माण-विधिः सब को समभाग में लेकर कूट छान लें और तीन गुना मधु के साथ मिला कर नियमानुसार माजून तैयार करें।

प्रयोग-समयः छः महीनों के पश्चात प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 170 मिलीग्राम से 340 मिलीग्राम तक।

- **फ़लूनिया-ए-रूमीः**

यह एक महत्वपूर्ण एवं अत्याधिक लाभदायक माजून है। क़ूलंज को दूर करता है। हैज़ा एवं मूत्र में कठिनाई को दूर करता है। साथ ही गुर्दा एवं मूत्राशय की पथरी को निकालता है। घबराहट, जिगर के रोगों, आमाशय के दर्द, नज़्ला, सिरदर्द,दाँतदर्द, पुरानी खाँसी, रक्तनिष्ठिवान, रक्तस्राव, ऐंठन, ख़ूनी उल्टी और ख़ूनी दस्त में लाभदायक है।

औषधियाँः ज़ाफ़रान 17.5 ग्राम, फ़िलफ़िल सफ़ेद, बज़रुलबन्ज प्रत्येक 70 ग्राम, अफ़ियून 35 ग्राम, फ़ुत्रासालियून 14 ग्राम, तुख़्म-ए-करफ़्स जबली 10.5 ग्राम, सुंबुलुत्तीब 14 ग्राम, साज़ज हिन्दी, सलीख़ा, आक़रक़रहा, फ़र्फ़ियून, हब्ब-ए-बलसाँ प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर रोग़न-ए-बलसाँ में चुपड़ें फिर तीन गुना मधु के साथ मिला कर नियमानुसार माजून तैयार करें और छ महीनों के पश्चात प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 170 मिलीग्राम।

क़ूलंज का रोगी इस को आब-ए-करफ़्स के साथ प्रयोग करे। कुछ हकीमों ने इस में करफ़्स के बदले दोक़ू मिलाया है। इस के प्रयोग की समय-सीमा तीन साल तक है।

- **फ़लूनिया-ए-फ़ार्सी:**

रक्तस्राव को बन्द करता है चाहे वह किसी भी अंग से हो। पीड़ाहारी है। उल्टी, दस्त और Physiometra में लाभदायक है। भ्रुण की रक्षा करता है। मस्तिष्क को बल प्रदान करता है एवं स्मृण-शक्ति को बढ़ाता है।

औषधियाँ: फ़िलफ़िल सफ़ेद और बज़रुलबन्ज प्रत्येक 70 ग्राम, अफ़ियून 35 ग्राम। कुछ हकीमों ने इस में 35 ग्राम की मात्रा में गिल-ए-मख़्तूम को सम्मिलित किया है। ज़ाफ़रान 17.5 ग्राम, सुंबुलुत्तीब, मुर मक्की, आक़रक़रहा और फ़र्फ़ियून प्रत्येक 7 ग्राम, जुन्द बेद स्तर 3.5 ग्राम, ज़रन्बाद और दरूनज अक़रबी प्रत्येक 1.75 ग्राम, मुश्क तुर्की और मरवारीद नासुफ़्ता प्रत्येक 7 ग्राम, काफ़ूर क़ैसूरी 648 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान लें। मधु के साथ मिला कर माजून की तरह तैयार करें। छः महीने बाद प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 416 मिलीग्राम से 832 मिलीग्राम तक।

यह माजून तीन साल तक प्रयोग में लाने योग्य होता है।

- **फ़लूनिया का अन्य नुस्ख़ाः**

यह हकीम इमादुद्दीन महमूद शीराज़ी का अविष्कार किया हुआ नुस्ख़ा है। कामोद्दीपन एवं धारण क्रिया हेतु अत्यंत लाभदायक है। दिल की कमज़ोरी में लाभदायक है। शरीर में नई उमंग अथवा जोश पैदा करता है। इस के और भी अन्य लाभ हैं।

औषधियाँ: याक़ूत रुम्मानी,मरवारीद नासुफ़्ता, कहरुबा शमई, फ़ादज़हर, जदवार खताई और मोमिया-ए-कानी प्रत्येक 7 ग्राम, दरूनज अक़रबी, शक़ाक़ुल और सन्दल सफ़ेद प्रत्येक 14 ग्राम, ज़रन्बाद, तबाशीर, दार-ए-फ़िलफ़िल, आमला मुक़श्शर, वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़, पोस्त-ए-बेरून-ए-पिस्ता, ज़रावन्द तवील, हब्बुलग़ार, हब्बुज़्ज़लम, हब्बुस्सौदा, ऊद हिन्दी, नानख़्वाह , अनीसून, बादियान, क़ाक़ला किबार, क़ाक़ला सिग़ार, क़िर्फ़ह, फ़ुत्रासालियून, मुर साफ़, जुन्द बेद स्तर, सअद कूफ़ी, आक़रक़रहा, साज़ज हिन्दी,माया-ए-शुत्रो आराबी, क़ुस्त शीरीं, असारून और सुंबुलुत्तीब प्रत्येक 17.5 ग्राम, ख़शख़ाश सफ़ेद, मस्तगी रूमी, खुस्यतुस्सअलब मिश्री, जोज़बोवा, बिस्बासा, रेवन्द चीनी, चिलग़ोज़ा शामी, मग़ज़-ए-नारजील और बज़रुलबन्ज प्रत्येक 35 ग्राम, फ़िलफ़िल गर्द (गोल काली मिर्च) 70 ग्राम, ज़न्जबील 24.5 ग्राम, पोस्त-ए-हलीला, बहमन, आबरेशम मुक़र्रज़, किशर-ए-तुरन्ज, तुख़्म-ए-प्याज़, तुख़्म-ए- गन्दना, हब्ब-ए-बलसाँ,

ऊद-ए-बलसाँ, जुन्तियाना और माही रूबियान (झींगा मछली) प्रत्येक 10.5 ग्राम, अंबर अशहब 35 ग्राम, मुश्क तुर्की 3.5 ग्राम, कुन्दुर 7 ग्राम, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़रबूज़ा 10.5 ग्राम, ज़ाफ़रान 105 ग्राम, वरक-ए-तिला 3.5 ग्राम, वरक-ए-नुक़रह 7 ग्राम, अफ़ियून मिश्री 175 ग्राम, नबात 350 ग्राम और साफ़ शहद सभी औषधियों के तीन भाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर माजून तैयार करें।

- **फ़लूनिया का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः रेवन्द चीनी, बिस्बासा, ज़रन्बाद, उद हिन्दी, दार चीनी, क़रन्फ़ुल, उश्ना, साज़ज हिन्दी, सुंबुलुत्तीब और हब्ब-ए-बलसाँ प्रत्येक 7 ग्राम, ख़ुस्यतुस्सअलब मिश्री, बज़रुलबन्ज, ज़ाफ़रान और तुख़्मे करफ़्स प्रत्येक 17.5 ग्राम, फ़िलफ़िल स्याह और अफ़ियून मिश्री प्रत्येक 70 ग्राम, मस्तगी रूमी 17.5 ग्राम, आक़रक़रहा और फ़र्फ़िर्यून प्रत्येक 3.5 ग्राम, मुश्क तुर्की 1.75 ग्राम, वरक़-ए-तिला 516 मिलीग्राम, वरक़-ए-नुक़रह 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर रोग़न-ए-बादाम में चुपड़ें। तीन भाग शहद में गूंध कर नियमानुसार माजून तैयार करें। छः महीने बाद रोगी के दशानुसार प्रयोग में लाना प्रारंभ करें।

- **गीलानी हकीमों द्वारा निर्मित फ़लूनिया का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः फ़िलफ़िल स्याह, सुंबुलुत्तीब, ज़न्जबील, दार चीनी, मुर मक्की, फ़र्फ़िर्यून प्रत्येक 35 ग्राम, ज़ाफ़रान, साज़ज हिन्दी, क़िर्फ़ह, सलीख़ा, असारून, जर्नब, ख़ुस्यतुस्सअलब, जुन्द बेदस्तर, ऊद-ए-बलसाँ, ऊद-ए-सलीब, लिसानुलअसाफ़ीर, उश्ना, ज़रावन्द, फ़्रन्जमुश्क, हब्बुज़्ज़लम, हब्बुलक़िलक़िल, तुख़्म-ए-हल्यून, शीतरज हिन्दी, आमला मुक़शशी, ख़ूलन्जान, मग़ज़-ए-हब्बुस्सनोबर किबार, बादियान, मुश्कतरामशीअ, पोस्त-ए-बेरून-ए-तुरन्ज, गावज़बान, बादरन्जबोया, रेवन्द चीनी प्रत्येक 17.5 ग्राम, पोस्त-ए-हलीला काबुला, मग़ज़-ए-बादाम, मग़ज़-ए-पिस्ता, तुख़्म-ए-करफ़्स, अनीसून, शक़ाक़ुल मिश्री, मग़ज़-ए-नारजीबल, बज़रुलबन्ज प्रत्येक 35 ग्राम, क़रन्फ़ुल, जदवार खताई, समग़-ए-अरबी प्रत्येक 10.5 ग्राम, मस्तगी रूमी, गिल-ए-अरमनी प्रत्येक 7 ग्राम, कबाबा चीनी, बहमन, शब अंगेज़ प्रत्येक 14 ग्राम, तूदरी सुर्ख़, तूदरी सफ़ेद, तबाशीर सफ़ेद, मरवारीद नासुफ़्ता, कहरुबा, हजर-ए-यशब, बुसुद, अक़ीक़ यमनी, याक़ूत रुम्मानी प्रत्येक 10.5 ग्राम, ज़ाफ़रान 70 ग्राम, अंबर 7 ग्राम, मुश्क 1.75 ग्राम, वरक़-ए-तिला 50 की संख्या मे, वरक़-ए-नुक़रह 100 की संख्या में, अफ़ियून सभी औषधियों का दसवाँ भाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर बादाम के तैल में चुपड़ें। उन के दो गुना नबात सफ़ेद सम्मिलित कर के उस में तीन भाग शहद डाल कर क़िवाम तैयार करें।

सेवन-मात्राः 170 मिलीग्राम।

- **बर्शअसा का नुस्ख़ाः**

यह नुस्खा शैख़ अबू अली सीना की पुस्तक "अलक़ानून" में वर्णित है। यह नज़्ला और ज़ुकाम में लाभदायक है। पीड़ाहारी है। किसी भी अंग से रक्त स्राव को रोकता है। अगर दाँतों पर थोड़ी मात्रा में मला जाए तो उस की पीड़ा को दूर करता है।

औषधियाँः फ़िलफ़िल सफ़ेद और बज़रुलबन्ज प्रत्येक 70 ग्राम, अफ़ियून 45 ग्राम, ज़ाफ़रान 22.5 ग्राम, सुंबुलुत्तीब, आक़रक़रहा और फ़र्फ़ियून प्रत्यक 4.5 ग्राम।कुछ नुस्खों में फ़िलफ़िल और फ़िलफ़िल दराज़ दोनों सम्मिलित हैं।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान लें और तीन भाग साफ़ मधु के साथ मिला कर नियमानुसार माजून तैयार करें।

प्रयोग-समयः छः महीनों के पश्चात प्रयोग में लाएँ।

- **अबुल बरकात द्वारा निर्मित बर्शअसा का अन्य नुस्ख़ाः**

हृदय एवं आमाशय संबंधित रोगों, सौदावी रोगों, विषाद, अनिद्रा और जलोदर रोग में लाभदायक है।

औषधियाँः फ़िलफ़िल सफ़ेद, फ़ाशरा, फ़्रन्जमुश्क, फ़ूह, बज़रुलबन्ज और मुक़िल अज़रक़ प्रत्येक 35 ग्राम, ज़ाफ़रान, ज़रावन्द तवील, जुनितयाना रूमी, उन्सुल मुशव्वा और जदवार खताई प्रत्येक 14 ग्राम, हब्बुलग़ार, अफ़ियून और मुर मक्की प्रत्येक 24.5 ग्राम, सुंबुलुत्तीब, नारदीन और जुन्द बेद स्तर प्रत्येक 7 ग्राम, फ़र्फ़ियून 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर मधु में हावन दस्ते की सहायता से अच्छी तरह मिलाएँ और चीनी के पात्र में रख लें।

प्रयोग-समयः छः महीनों के पश्चात प्रयोग में लाएँ।

- **बर्शअसा का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः मुर साफ़, ज़ाफ़रान, मीअह, कमाज़रयूस, जुन्तियाना और मुर साफ़ प्रत्येक 35 ग्राम, गिल-ए-मख़्तूम 17.5 ग्राम, अफ़ियून 35 ग्राम, जुन्द बेद स्तर, समग़-ए-अरबी, सुंबुलुत्तीब और ग़ारीक़ून प्रत्येक 10.5 ग्राम, अक़ाक़िया, हियूफ़ारिक़ून और फ़ुत्रासालियून प्रत्येक 7 ग्राम, क़सबुज़्ज़रीरह, दार-ए-शीशआन, हब्बुलग़ार और उसारा-ए-लिहयतुत्तीस प्रत्येक 19.25 ग्राम, ज़रावन्द तवील, रेवन्द चीनी,असारून, हमामा, जअदह और रोग़न-ए-बलसाँ प्रत्येक 12.25 ग्राम।

निर्माण-विधिः निर्यास एवं रसों को भिगो कर नर्म कर लें। शेष औषधियों को कूट छान कर साफ़ शहद में अच्छी तरह मिला कर नियमानुसार माजून तैयार करें।

- **बर्शअसा का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः जुन्तियाना, दार-ए-फ़िलफ़िल और जुन्द बेद स्तर प्रत्येक 14 ग्राम, सुंबुलुत्ती, फ़ुक़ाह-ए-इज़्ख़िर और ज़रावन्द तवील प्रत्येक 17.5 ग्राम, अनीसून, तुख़्म-ए-करफ़्स और बीख़-ए-करफ़्स प्रत्येक 70 ग्राम, फ़िलफ़िल 105 ग्राम, क़ुस्त तल्ख़, फ़ूह और असारून प्रत्येक 7 ग्राम, ज़न्जबील, ख़सक मुदब्बर और फ़ूदनह प्रत्येक 24.5 ग्राम, रोग़न-ए-बलसाँ 35 मिलीलीटर और शहद सभी औषधियों के तीन गुना।

निर्माण-विधिः नियमानुसार माजून तैयार करें। छः महीनों के बाद प्रयोग में लाएँ।

- **दहमर्सा का नुस्ख़ाः**

कासिर-ए-रियाह(Anti-flatulence) है। जिगर एवं तिल्ली के सुद्दों को खोलता है। बलग़मी खाँसी, दमा, अवरोधक पीलिया और क़ूलंज में लाभदायक है। आर्तवजनक है। इस के अतिरिक्त इस के और भी लाभ हैं।

औषधियाँः तुख़्म-ए-हज़ार स्फ़न्द 1290 ग्राम, कुन्दुर 35 ग्राम, ज़रावन्द तवील, ज़रावन्द मुदहरज और रेवन्द चीनी प्रत्येक 70 ग्राम, ज़रन्बाद और दरूनज रूमी प्रत्येक 13 ग्राम, मस्तगी, हब्ब-ए-बलसाँ, ज़ाफ़रान, इक्लीलुलमलिक, और सुंबुलुत्तीब प्रत्येक 35 ग्राम, अफ़ियून, ज़न्जबील, क़ुस्त, सलीख़ा और फ़रासियून प्रत्येक 42 ग्राम, सअद 35 ग्राम, सिब्र सक़ूतरी 49 ग्राम, क़रन्फ़ुल 21 ग्राम, ख़रबक़ सफ़ेद, गुल-ए-सुर्ख़ और शोनीज़ प्रत्येक 24 ग्राम, फ़िलफ़िल 35 ग्राम।

एक नुस्ख में फ़िलफ़िल 70 ग्राम की मात्रा में वर्णित है।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान लें और तीन गुना साफ़ शहद के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें।

- **माजून बादज़हरजः**

आमाशय, जिगर, गुर्दा, मूत्राशय, गर्भाशय की ठंडक, माहवारी की रुकावट में लाभदायक है। गाढ़ी गैस बाहर निकालता है। जिगर व तिल्ली के सुद्दे खोलता है। हकीमों ने इस को लगभग दहमर्सा जैसे गुणों वाला माना है। अधिकतर क़राबादीनी किताबों में बादमहरज का उल्लेख दहमर्सा-ए-लूलुवी के नाम से है।

औषधियाँः ज़रन्बाद, दरूनज रूमी, अफ़ियून, जुन्द बेद स्तर, आक़रक़रहा, फ़िलफ़िल, दार-ए-फ़िलफ़िल, सलीख़ा, हूमुलमजूस, बज़रुलबन्ज सफ़ेद, सुंबुलुत्तीब, क़ुस्त तल्ख़, जावशीर और ज़ाफ़रान प्रत्येक 21 ग्राम, हुल्बा 28 ग्राम, मरवारीद नासुफ़्ता 7 ग्राम, बाज़्रद और मुर प्रत्येक 42 ग्राम। "कामिलुस्सनाअह" में बाज़्रद के

स्थान पर कुंदुर का वर्णन है।

निर्माण-विधिः कूट कर तीन गुना साफ़ मधु में मिलाएँ।

- **माजून ग़यासी:**

बलग़मी रोगों, पुराने सिर दर्द, मिर्गी, बलग़मी खाँसी, दमा और पुराने दस्तों में आराम पहुँचाता है। सीने एवं फेफड़े के चिपचिपे बलग़म को साफ़ करता है। पेट दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँः मुर मक्की, सलीख़ा, दार-ए-चीनी, सीसालियूस और हमामा प्रत्येक 14 ग्राम, सुंबुलुत्तीब और फ़ुक़ाह-ए-इज़्ख़िर प्रत्येक 42 ग्राम, जाफ़रान 17.5 ग्राम, अफ़ियून 52.5 ग्राम, तुख़्म-ए-करफ़्स जबली 1..5 ग्राम, अनीसून और तुख़्म-ए-करफ़्स बुस्तानी प्रत्येक 70 ग्राम, फ़िलफ़िल स्याह 28 ग्राम, मीअह सायला, क़ुस्त, फ़ूह और असारून प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान लें और तीन गुना साफ़ शहद के साथ मिला कर माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः हल्के गर्म पानी के साथ 416 मिलीग्राम से 1.75 ग्राम तक।

- **दवाउलकिब्रीतः**

पुराने सौदावी बुख़ार, पुराने बलग़मी बुख़ार, पुरानी खाँसी, पुराने दर्द के साथ जानवरों, साँप एवं बिच्छू के काटे में लाभदायक है। मूत्रवर्धक है और माहवारी को जारी करता है। गुर्दा एवं मूत्राशय की पथरी को सूक्ष्म कणों में तोड़ता है। यह मिश्रित औषधि लगभग तिर्याक़े फ़ारूक़ की भाँति ही ज़हरों से होने वाले हानि को दूर करता है।

औषधियाँः फ़िलफ़िल सफ़ेद और गोगर्द ज़र्द प्रत्येक 21 ग्राम, बज़रुलबन्ज, क़िर्दमाना और मुर साफ़ प्रत्येक 42 ग्राम, ज़ाफ़रान और अफ़ियून प्रत्येक 35 ग्राम, दार-ए-फ़िलफ़िल, क़ुस्त तल्ख़, ज़रावन्द तवील, पोस्त-ए-बीख़-ए-लुफ़्फ़ाह, अफ़्तीमून और फ़र्फ़ियून प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः क्षारों को पुरानी शराब या शराब-ए-मुसल्लस में भिगो कर नर्म करें। सब को कूट छान कर आवश्यकतानुसार साफ़ शहद के साथ मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम से 4.5 ग्राम तक।

- **दवाउलकिब्रीत का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से होने वाले लाभ भी पहले दवाउलकिब्रीत की भाँति ही होते हैं।

औषधियाँः गोगर्द ज़र्द, बज़रुलबन्ज, क़िर्दमाना, मुर साफ़, मीअह सायला और सअतर फ़ारसी प्रत्येक 28 ग्राम, सलीख़ा 42 ग्राम, फ़िलफ़िल सफ़ेद 70 ग्राम,

अफ़ियून और ज़ाफ़रान प्रत्येक 35 ग्राम, सुद्दाब और क़ुस्त तल्ख़ प्रत्येक 7 ग्राम, बीख़-ए-लुफ़्फ़ाह, अफ़्तीमून और फ़र्फ़ियून प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः मुर्र और अफ़ियून को शराब-ए-मुसल्लस में भिगो कर नर्म कर लें। सब को कूट छान लें और तीन गुना साफ़ शहद के साथ मिला कर माजून तैयार करें।

प्रयोग-समयः छः महीने के पश्चात प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः हल्के गर्म पानी के साथ 3.5 ग्राम ।

बलग़मी बुख़ारों में इस को आब-ए-करफ़्स या आब-ए-बादियान के साथ प्रयोग करें।

- **असानासिया कबीरः**

यह जिगर के रोगो, पेट के दर्दों, आँतों के घावों, तिल्ली के रोगों, नसों के दर्द, गुर्दे के दर्द, मूत्र में कठिनाई, श्वास में कठिनाई और फेफड़े व सीने के तरल पदार्थों के कारण होने वाली खाँसी में लाभदायक है। इस से ख़िल्फ़ह मुज़्मिन (Chronic Sprue), रक्तस्राव और नकसीर में भी लाभ होता है।

औषधियाँः ज़ाफ़रान, मुर साफ़, क़िर्दमाना, ख़शख़ाश सफ़ेद, अफ़ियून मिश्री, सुंबुलुत्तीब, बीख़-ए-ग़ाफ़िस, उसारा-ए-ग़ाफ़िस, गुर्ग अर्थात भेड़िये का सूखा जिगर और बुज़ अर्थात बकरे का जलाई हुई सीधी सींग सभी समभाग में।

निर्माण-विधिः अफ़ियून को शराब-ए-मुसल्लस या शराब-ए-क़दीम में भिगो कर घोल लें। सब को कूट छान कर तीन गुना साफ़ शहद के साथ मिलाएँ और माजून तैयार करें।

प्रयोग-समयः छः महीनों के पश्चात प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः आब-ए-सेब के साथ 2.25 ग्राम।

- **असानासिया सग़ीरः**

इस से होने वाले लाभ भी असानासिया कबीर से काफ़ी मिलते जुलते हैं।

औषधियाँः मीअह सायला, ज़ाफ़रान, क़ुस्त तल्ख़, सुंबुलुत्तीब, अफ़ियून और सलीख़ा प्रत्येक 18 ग्राम, अस्लुस्सूल 54 ग्राम और उसारा-ए-ग़ाफ़िस 36 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान कर नियमानुयसार साफ़ शहद के साथ मिलाएँ और माजून तैयार करें।

- **माजून अबू मुस्लिमः**

इस का दूसरा नाम "फरियादरस" है क्योंकि इस से हर प्रकार की पीड़ा में आराम मिलता है।

औषधियाँः अफ़ियून मिश्री और बज़रुलबन्ज प्रत्येक 9 ग्राम, फ़र्फ़ियून, ज़ाफ़रान, सुंबुलुत्तीब, आक़रक़रहा, सूरन्जान, क़ाक़ला और दार-ए-फ़िलफ़िल प्रत्येक 22.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर तीन गुना साफ़ शहद के साथ मिलाएँ। छः महीनों के पश्चात प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 432 मिलीग्राम से 1.75 ग्राम तक।

- **माजून सीमरीः**

पक्षाघात, लक़वा और सभी प्रकार के बलग़मी रोगों में लाभदायक है। पक्षाघात, वाले अंग पर लगाएँ (तिला करें) तो लाभ होता है।

औषधियाँः अफ़ियून, बज़रुलबन्ज, जुन्द बेद स्तर, फ़र्फ़ियून, दारचीनी, सुंबुलुत्तीब और ज़ाफ़रान सभी समभाग में।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान कर तीन गुना साफ़ शहद के साथ मिलाएँ और माजून तैयार करें। छः महीनों के पश्चात प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः आवश्यकतानुसार 170 मिलीग्राम से 1.75 ग्राम तक है। अगर अंग में ढीलापन एवं निर्बलता हो तो इस को लगाना (तिला करना) चाहिए।

- **फिरोज़नोशः**

स्मृरण-शक्ति का लोप, पक्षाघात, रीही ऐंठन (Tenesmus) और ठंडक के कारण होने वाले स्त्रियों के रोगों में लाभदायक है। ग़लीज़ रियाह को दूर करता है।

औषधियाँः फ़र्फ़ियून, आक़रक़रहा, सुंबुलुत्तीब और ज़ाफ़रान प्रत्येक 4.5 ग्राम, अफ़ियून और बज़रुलबन्ज प्रत्येक 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान कर तीन गुना साफ़ शहद के साथ मिलाएँ और माजून तैयार करें।

प्रयोग-समयः छः महीनों के पश्चात प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 432 मिलीग्राम से 1.75 ग्राम तक।

- **माजून असवदः**

प्रवाहिका और पुराने दस्तों में लाभदायक है।

औषधियाँः अफ़ियून मिश्री, जुन्द बेद स्तर, मीअह सायला, बज़रुलबन्ज, ज़ाफ़रान, असारून, मुर मक्की, तुख़्म-ए-करफ़्स, सलीख़ा, अनीसून, सुंबुलुत्तीब, गिल-ए-अरमनी।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर तीन गुना साफ़ शहद के साथ मिलाएँ।

- **माजून अरस्तूमाखसः**

यह एक आश्चर्यचकित कर देने वाली गुणकारी औषधि है। शैख़ ने इस का उल्लेख अलक़ानून में मुजर्रबात के संदर्भ में किया है। रक्त निष्ठिवान, पुरानी खाँसी, सीने एवं आँतों के ज़ख़्म, उल्टी, हैज़ा, पुराने दस्त, अपातंत्रका, मूत्राशय के रोग,

मियादी बुख़ार और कीड़े मकोड़ों के डसे में लाभदायक है।

औषधियाँः दार चीनी, क़ुस्त, बार्ज़द, जुन्द बेद स्तर, अफ़ियून, फ़िलफ़िल, दार-ए-फ़िलफ़िल, मीअह सायला समभाग में।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान कर साफ़ शहद के साथ मिलाएँ और माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 432 मिलीग्राम से 1.75 ग्राम तक।

- **माजून इख़्तिलाफ़ः**

बलग़मी दस्तों में लाभदायक है।

औषधियाँः जुन्द बेद स्तर, बज़रुलबन्ज, अफ़ियून, ज़ाफ़रान, मुर मक्की, असारून, तुख़्म-ए-करफ़्स, सुंबुलुत्तीब,गुल-ए-अनार फ़ारसी, गिल-ए-अरमनी, अनीसून, करोया, समग़-ए-अरबी।

निर्माण-विधिः सब को समभाग में कूट छान कर उन के तीन गुना साफ़ शहद के साथ मिलाएँ और माजून तैयार करें। छः महीनों के पश्चात प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 1.75 ग्राम तक।

अनुपानः आब-ए-बिही और आब-ए-मूरद के साथ।

❑❑❑

## द्वितीय वर्गः उन महत्वपूर्ण माजूनों के नुस्खे जो अपने चित्रण के अनुसार विभिन्न प्रकार के पुराने रोग और पीड़ा में अत्यंत लाभदायक हैं

- **माजून वरउस्सिहतः**

यह मिश्रित औषधि मीर मोहम्मद बाक़र (उन पर सदैव अल्लाह की रहमत बनी रहे) का अविष्कार है। यह माजून बहुत ही लाभदायक है और तिर्याक़ों की श्रेणी में आता है। यह शरीर की अव्यक्त या जन्मजात गर्मी (हरारत-ए-ग़रीज़ी) की रक्षा करता है। यह वाजीकरण है और अंगों की पीड़ा हरण करता है। पुराने दमा में लाभदायक है। शरीर को विषों से होने वाली हानि से सुरक्षित करता है। कीड़े मकोड़ों और पागल कुत्ते के काटे में लाभदायक है। विषाद रोग, बलग़मी अथवा सौदावी रोगों में लाभकारी है। मूत्रजनक एवं आर्तवजनक है। साथ ही गुर्दा एवं मूत्राशय की पथरी को बाहर निकालता है। सौदा एवं बलग़म के कारण होने वाले जिगर एवं आमाशय की सूजन को कम करता है। वातरक्त, स्वित्र, बहक़ में लाभदायक है। कमर एवं गुर्दा के दर्द को दूर करता है। पुराने बलग़मी बुख़ार और चौथिया बुख़ार को समाप्त करता है।

औषधियाँः जदवार खताई, सक़न्क़ूर, मस्तगी रूमी, मीअह सायला, फ़ुत्रासालियून, बज्र-ए-करफ्स, इज़्ख़िर, जावशीर, रोग़न-ए-बलसाँ, ज़ाफ़रान, क़ुर्स-ए-अफ़आ, बज़रुलबन्ज, ख़ुस्यतुस्सअलब, लिसानुस्सौर,ऊद हिन्दी, लिसानुत्तैर, चौब चीनी, पोस्त-ए-बेरून-ए-पिस्ता प्रत्येक 35 ग्राम, मोमिया-ए-कानी, कमाफ़ीतूस, मुर मक्की, उस्तुखुद्दूस, इल्कुलबुल्म, खरदल सफ़ेद प्रत्येक 28 ग्राम, सलीख़ा, अनीसून, जौज़बोवा प्रत्येक 31.5 ग्राम, सूरन्जान मिश्री, क़ुस्त तल्ख़ और इशक़ील मुशव्वा, साज़ज हिन्दी, फ़ुक़ाह-ए-इज़्ख़र, जुन्तियाना रूमी, मुश्कतरामशीअ, तबाशीर, दार-ए-फ़िलफ़िल, हब्ब-ए-बलसाँ, ज़रावन्द तवील, शीतरज हिन्दी, दार-ए-शीशआन, कतीरा, रातीनज, ज़रावन्द मुदहरज प्रत्येक 21 ग्राम, जुन्द बेद स्तर, दार चीनी, शक़ाक़ुल मिश्री, हब्बुर्रासन, सुद्दाब, दोक़ू प्रत्येक 22.5 ग्राम, ग़ारीक़ून, असारून शामी, सअद कूफ़ी, क़िर्दमाना, ख़ूलन्जान, तुख़्म-ए-हल्यून, आक़रक़रहा, आमला मुक़श्शर प्रत्येक 18 ग्राम से 22.5 ग्राम तक, सीसालियूस, नारदीन, ज़ूफ़ा ख़ुश्क, ज़रनब, ज़न्जबील, वरक़-ए-नुक़रह, हब्बुलग़ार, बहमन सफ़ेद, हमामा प्रत्येक 31.5 ग्राम, फ़ूह, फ़रासियून, तुख़्म-ए-राज़ियाना, मवीज़ज, ख़सक मुदब्बर, वरक़-ए-तिला और अंबर अशहब प्रत्येक 7 ग्राम, मुश्क 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सर्वप्रथम सब को कूट छान लें। उन में से औषधीय तत्वों को रोग़न-ए-बलसाँ और मीअह सायलह के साथ चुपड़ लें और क्षारों को अर्क़-ए-दारचीनी में भिगो कर साफ़ करें। फिर सब को तीन गुना साफ़ शहद के साथ मिलाएँ और तिर्याक़े कबीर की भाँति माजून तैयार करें। शीशा या चीनी कि पात्र में भर कर चालीस दिनों तक जौ के अनाज में दफ़न कर दें। छः महीनों के पश्चात प्रयोग में लाएँ। यह मिश्रित औषधि लगभग तीन साल या उस से कुछ अधिक समय तक के लिए प्रयोग योग्य है।

सेवन-मात्राः 1.75 ग्राम से 3.5 ग्राम तक।

- **माजून फौलादः**

यह भारतीय हकीमों द्वारा तैयार किया गया है। पक्षघात, लक़वा, मिर्गी, मुर्छा, झटका, स्मृण-शक्ति का लोप, गृध्रसी, जोड़ों के रोग व सभी बलग़मी रोगों में लाभदायक है। स्मृतिवर्धक है, आमाशय को प्रबल बनाता और वाजीकर है। शीघ्रपतन व मूत्र असंयमिता दूर करता है। यह बूढ़े व्यक्तियों एवं ठंडे रोगों में अत्यंत उपयुक्त औषधि है।

औषधियाँः ज़ाफ़रान, दार-ए-फ़िलफ़िल, फ़िलफ़िल स्याह व सफ़ेद, सन्जरफ़ (मग़सूल और आब-ए-लीमू में पीसा हुआ), कबाबा चीनी, मस्तगी रूमी, अनीसून, माही सक़न्क़ूर, सुंबुलुत्तीब, बिस्बासा, क़रन्फ़ुल, दार चीनी, बहमन सुर्ख़, बहमन सफ़ेद, हलीला स्याह, कहरुबा, मरजान, मरवारीद नासुफ़्ता, लिसानुत्तैर, तुख़्म-ए-करफ़्स, मग़ज़-ए-पंबा दाना, तुख़्म-ए-धतूरा मुदब्बर, जुन्तियान रूमी, माया-ए-शुत्र-ए-आराबी, ज़न्जबील, मग़ज़-ए-सर-ए-कुन्जशक, मग़ज़-ए-सर-ए-खरूस, कुन्जद मुक़श्शर, बाबूना, जौज़बोवा, आमला मुनक्क़ा, क़ाक़ला किबार, पोस्त-ए-बलीला, शीतरज हिन्दी, नानख़्वाह, मग़ज़-ए-नारजील, हल्यून, सलीख़ा प्रत्येक 45 ग्राम, उशतरग़ार, मग़ज़-ए-चिलग़ोज़ा, हब्बुन्नील हिन्दी, खुस्यतुस्सअलब मिश्री, ज़रन्बाद, तुख़्म-ए-राज़ियाना, बलादुर मुदब्बर, अफ़्तीमून शामी, ज़रावन्द तवील, इशक़ील मुशव्वा, शाहतरह प्रत्येक 22.5 ग्राम, अफ़ियून 4.5 ग्राम, अंबर ख़ालिस, मुश्क तिब्बती प्रत्येक 6.75 ग्राम, वरक़-ए-नुक़रह, वरक़-ए-तिला 50 की संख्या में, फ़ौलाद मुकल्लस सभी का दसवां भाग, क़न्द सफ़ेद सभी का चौथाई और साफ़ शहद आवश्यकतानुसार।

निर्माण-विधिः नियमानुसार माजून बना कर छः महीने के पश्चात प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम से 4.5 ग्राम तक।

- **माजून रामहरामः**

यह भारतीय हकीमों की बहुत ही महत्वपूर्ण औषधि है जो माजून की भाँति

तैयार की जाती है। यह हर प्रकार के सूए-मिज़ाज बारिद और दिल की कमज़ोरी में लाभदायक है। वाजीकर है और भ्रुण की सुरक्षा करता है। गुर्दा एवं मूत्राशय के सूए मिज़ाज में लाभदायक है। गुर्दा एवं मूत्राशय की पथरी को पारा पारा करता है। सभी बलग़मी रोगों में लाभदायक है।

औषधियाँः वज तुर्की, क़ुस्त तल्ख़, ज़रावन्द तवील, ज़रावन्द प्रत्येक 54 ग्राम, दार-ए-फ़िलफ़िल, क़रन्फ़ुल, उश्ना, क़सबुज़्ज़रीरा, ऊद-ए-बलसाँ प्रत्येक 45 ग्राम, इक्लीलुलमलिक, बीख़-ए-ज़रनब, हब्ब-ए-बलसाँ, सलीख़ा, बिस्बासा, सलीख़ा, क़िर्फ़ह प्रत्येक 72 ग्राम, पोस्त-ए-हलीला ज़र्द, आमला मुनक़्क़ा प्रत्येक 48 ग्राम, बीख़-ए-लुफ़्फ़ाह, ख़रबक़ सफ़ेद, मुरमाहीज़, बज़रुलबन्ज बर्री मुदब्बर, बज़रुलबन्ज बुस्तानी मुदब्बर, शीतरज हिन्दी, बहमन सुर्ख़, बहमन सफ़ेद, ज़रिशक दाना-ए-तुरन्ज मुक़श्शर, लिसानुलअसाफ़ीर, बेदानाप्रत्येक 112 ग्राम, तुख़्म-ए-गज़र, हमामा प्रत्येक 27 ग्राम, पोस्त-ए-बीख़-ए-कबर, बीख़-ए-पन्जनकिशत प्रत्येक 54 ग्राम, अफ़ियून, फ़र्फ़ियून, जुन्द बेद स्तर प्रत्येक 10.5 ग्राम, जौज़बोवा 30 की संख्या में, हलीला स्याह 14 ग्राम, साज़ज हिन्दी, हुल्बा, मूफ़ुत्रसालियून, दोक़ू, रेवन्द चीनी प्रत्येक 21 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान लें। उन के बराबर बताशा व गाय का घी और दो गुना साफ़ शहद लें। सब से पहले बताशे को 1260 लीटर पानी में पका कर साफ़ करें फिर उस में मधु को सम्मिलित कर के क़िवाम तैयार करें। अब अन्य औषधियों को गाय के घी में चर्ब कर के नियमानुसार माजून तैयर करें और चीनी के पात्र में सुरक्षित कर लें। छः महीनों के पश्चात प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

प्रयोग-विधिः तीन दिन लगातार महीने के प्रारंभ में और तीन दिन महीने के अंत में हल्के गर्म पानी के साथ प्रयोग करें।

- **दवाउल्लुक कबीरः**

यह जिगर की कमज़ोरी, जलोदरा के प्रारंभ और आमाशय की ठंडक में लाभदायक है। जिगर एवं तिल्ली के सुद्दे खोलती है और मूत्रविरेचक है। सत्यता यह है कि जिगर के रोगों के लिए यह एक अभूतपूर्व एवं अनेक गुणों वाली औषधि है।

औषधियाँः लुक मग़सूल 36 ग्राम, मग़ज़-ए-बादाम मुक़श्शर, क़रन्फ़ुल, दारचीनी प्रत्येक 18 ग्राम, जुन्तियाना रूमी, ज़रावन्द तवील प्रत्येक 18 ग्राम, सिब्र सक़ूतरी, सुंबुलुत्तीब, रुब्बुस्सूस प्रत्येक 28 ग्राम, दोक़ू, फ़ुत्रासालियून, ज़ीरा किर्मानी, ज़न्जबील प्रत्येक 36 ग्राम, फ़ूह, हब्ब-ए-बलसाँ, सलीख़ा, मस्तगी रूमी, क़सबुज़्ज़रीरा, मुक़िल

अज़रक़ प्रत्येक 31.5 ग्राम, रेवन्द चीनी, जअदह, इज़्ख़िर प्रत्येक 7 ग्राम, फ़िलफ़िल स्याह और क़ुस्त तल्ख़ प्रत्येक 45 ग्राम, सीसालियूस, 12.25 ग्राम, कुन्दुर 18 ग्राम, फ़िलफ़िल और ज़रावन्द तवील प्रत्येक 15.75 ग्राम, रोग़न-ए-बलसाँ 13.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर तीन गुना साफ़ मधु के साथ मिलाएँ। छः महीनों के पश्चात प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम।

## ◉ दवाउल्लुक का अन्य नुस्ख़ाः

इस के भी वही लाभ हैं और यह अधिक विशवसनीय है।

औषधियाँः लुक-ए-मग़सूल 28 ग्राम, बादाम तल्ख़ मुक़श्शर, दारचीनी, साज़ज हिन्दी, क़रन्फ़ुल, जुन्तियाना, ज़रावन्द मुदहरज, रेवन्द चीनी प्रत्येक 17.5 ग्राम, कमाफ़ीतूस, मू, फ़ू, ज़ूफ़ा ख़ुश्क प्रत्येक 14 ग्राम, सुंबुलुत्तीब, सिब्र सक़ूतरी, सलीख़ा, मस्तगी रूमी, क़सबुज़्ज़रीरा प्रत्येक 42 ग्राम, दोक़ू, तुख़्म-ए-करफ़्स, ज़ीरा, फ़ुत्रासालियून, ज़न्जबील प्रत्येक 24.5 ग्राम, ज़ाफ़रान, जअदह, इज़्ख़िर प्रत्येक 42 ग्राम, असारून, हब्ब-ए-बलसाँ, मुक़िल प्रत्येक 26.25 ग्राम, फ़ूह 520.5 ग्राम, फ़िलफ़िल स्याह, क़ुस्त तल्ख़ प्रत्येक 35 ग्राम, सीसालियूस, रोग़न-ए-बलसाँ प्रत्येक 12.25 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर तीन गुना साफ़ मधु के साथ मिलाएँ। छःमहीनों के पश्चात प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

अनुपानः माउल उसूल।

## ◉ असवद सलीम का नुस्ख़ाः

यह अत्यंत विशवसनीय एवं लाभदायक माजून है। यह सभी प्रकार के बलग़मी एवं सौदावी रोगों में लाभदायक है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-इस्पन्दान 420 ग्राम, जावशीर 280 ग्राम, शोनीज़ 210 ग्राम, वज, सकबीनज, उशक़, ज़रावन्द तवील, मुक़िल अज़रक़, ख़रबक़ सफ़ेद, जुन्द बेद स्तर, किब्रीत ज़र्द, पोस्त-ए-बीख़-ए-हन्ज़ल, तुख़्म-ए-तुरह तेज़क, पन्जनकिशत, सुद्दाब जबली प्रत्येक 140 ग्राम, बीख़-ए-लुफ़्फ़ाह सफ़ेद, फ़र्फ़ियून, फ़िलफ़िल, नमक-ए-हिन्दी, नमक-ए-निफ़्ती, नमक-ए-इन्द्रानी, कुन्दुश, बजरुलबन्ज, आक़रक़रहा, मुर मक्की, सिब्र ज़र्द, कुन्दुर, शीतरज हिन्दी प्रत्येक 70 ग्राम, सुंबुलुत्तीब, मस्तगी, ज़रन्बाद, दरूनज अक़रबी, ज़ाफ़रान प्रत्येक 10.5 ग्राम, अफ़ियून 28 ग्राम।

निर्माण-विधिः क्षारों एवं क़ुत्रान शामी को पानी में भिगो कर नर्म करें। सब को

कूट लें। साफ़ मधु के साथ मिला कर माजून तैयार करें। दो महीनों तक ज़मीन के अन्दर दफ़न करने के पश्चात प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम।

- **माजून लना का नुस्खाः**

शैख़ अबू अली सीना ने अनेक गुणों के कारण इस को अपने नाम के साथ जोड़ा है। वसवास, घबराहट, दिल की कमज़ोरी, आमाशय की कमज़ोरी और तिल्ली एवं मस्तिष्क के रोगों में लाभदायक है। क़ूलंज, पुराने यौगिक बुख़ारों में लाभ पहुँचाता है। इस के और भी अन्य गुण एवं लाभ हैं।

औषधियाँः याक़ूत रुम्मानी,संग-ए-यशब एवं अक़ीक़ यमनी प्रत्येक 3.5 ग्राम, वरक़-ए-तिला महलूल 864 मिलीग्राम, वरक़-ए-नुक़रह महलूल 464 मिलीग्राम, ग़ारीक़ून, अफ़्तीमून, फ़िलफ़िल, ज़न्जबील, दार-ए-फ़िलफ़िल, मरज़न्जोश प्रत्येक 6.75 ग्राम, हजर-ए-अरमनी मग़सूल, लाजवर्द मग़सूल, नमक-ए-निफ़्ती, ज़रन्बाद, दरूनज रूमी, गावज़बान, बहमन सुर्ख़, बहमन सफ़ेद प्रत्येक 4.5 ग्राम, नारदीन, हमामा, अगर तुर्की, साज़ज हिन्दी, दार चीनी, सअतर फ़ारसी, हाशा, ज़ूफ़ा, ज़ीरा प्रत्येक 1944 मिलीग्राम, मुश्कतरामशीअ, फ़ुत्रासालियून, हजरुलयहूद, तुख़्म-ए-करफ़्स, मुर मक्की, कुन्दुर, ज़ाफ़रान, फ़िलफ़िल सफ़ेद प्रत्येक 1296 मिलीग्राम, बुरादा-ए-आज 4.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः याक़ूत, यशब एवं अक़ीक़ को आग में लाल कर लें फिर उस से निकाल कर ठंडे पानी में डालें ताकि खस्ता एवं जल्दी से पिसने योग्य हो जाएँ। संग-ए-सुमाक़ से पुरानी शराब-ए-अंगूरी में सूक्ष्म चूर्ण कर लें।स्वर्ण एवं रजत दोनों की हल्की चादर को घोल लें फिर उपर्युक्त धोए हुए द्रव्यों (जवाहर) को उसी घोल एवं शराब के साथ दोबारा आवश्यकतानुसार पीसें और फिर छाँव में सुखा लें। शेष औषधीय भागों को अत्याधिक सूक्ष्म चूर्ण कर के रेशम के कपड़े से छान कर शोधे हुए द्रव्यों (जवाहर) में मिलाएँ। हावन में दोबारा सूक्ष्म चूर्ण करें फिर सभी औषधियों के तीन गुना मात्रा में शीरा-ए-हलीला और साफ़ मधु के साथ मिला कर माजून तैयार करें। चालीस दिनों बाद प्रयोग करें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

- **अरस्तून कबीर का नुस्खाः**

यह माजून अरस्तू द्वारा तैयार किया गया है। इस से पेट दर्द, ठंडे रोगों, विभिन्न प्रकार के पुराने बुख़ारों, सुला, गर्भाशय के दर्द, यक्ष्मा एवं दमा में लाभदायक है।

औषधियाँः फ़र्फ़ियून, ज़ाफ़रान, सलीख़ा, अफ़ियून, हमामा, अक़ाक़िया, मुर

मक्की, क़ुस्त तल्ख़, सुंबुलुत्तीब, समग़-ए-अरबी, तुख़्म-ए-हन्दक़ूक़ा, तुख़्म-ए-अन्जोरह, मग़्ज़-ए-दाना-ए-ख़रूअ, मुक़िल अज़रक, कुन्दुर, सुमाक़ मुनक़्क़ा, दिब्क़ मुनक़्क़ा, किब्रीत ज़र्द, मीअह सायला, फ़िलफ़िल सफ़ेद प्रत्येक 27 ग्राम, बज़रुलबन्ज 45 ग्राम, दाना-ए-तुरन्ज मुक़श्शर, तुख़्म-ए-तरखशक़ूक़, वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़, तुख़्म-ए-पन्जनकिशत, तुख़्म-ए-सुद्दाब, नानख़्वाह, आक़रक़रहा, तुख़्म-ए-करफ़्स जबली प्रत्येक 18 ग्राम, तुख़्म-ए-बादरूज 4.5 ग्राम, मग़्ज़-ए-हब्ब-ए-क़ुर्तुम, ज़न्जबील प्रत्येक 4.5 ग्राम, फ़िलफ़िल स्याह 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान कर तीन दिन तक शराब-ए-मुसल्लस में भिगोएँ और तत्पश्चात उस घोल में 4.5 ग्राम रोग़न-ए-बलसाँ मिला कर ख़ूब घोंटें। शीशे के पात्र में उस सुरक्षित कर लें और छः महीनों के पश्चात प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम से 4.5 ग्राम तक।

कुछ हकीमों ने इस में रोग़न-ए-बलसाँ 35 मिली लीटर सम्मिलित किया है। यह तीन साल तक प्रयोग योग्य रहती है।

## ◉ माजून क़्बाजुलमलिकः

यह एक महत्वपूर्ण एवं लाभदायक माजून है। मूत्राशय की पथरी को बारीक कणों में बदल देता है। दमा (अस्थमा), पुरानी खाँसी, गले के दर्द एवं दृष्टिहीनता में लाभदायक है। जो व्यक्ति इस माजून का प्रयोग निरंतरता के साथ करता है उस का शरीर हृष्ट पुष्ट एवं स्वभाव अच्छा रहता है।

औषधियाँः जुन्तियाना, उस्तोखुद्दूस, क़िर्दमाना, जावशीर, कमाफ़ीतूस, तुख़्म-ए-सुद्दाब, फ़रासियून, उस्क़ूरदीक़ून और मीअह सायला प्रत्येक 22.5 ग्राम, ज़ाफ़रान, क़ुस्त तल्ख़, इज़्ख़िर, सुंबुलुत्तीब, फ़र्फ़ियून, पोस्त-ए-बीख़-ए-लुफ़्फ़ाह, उशक़, पोदीना कोही, राज़ियाना, दोक़ू, वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़, नारदीन और हब्ब-ए-बलसाँ प्रत्येक 13.5 ग्राम, दारचीनी 36 ग्राम, सलीख़ा 72 ग्राम, क़िन्नह, उसारा-ए-ग़ाफ़िस, काशिम, तुख़्म-ए-हन्दक़ूक़ा और समग़-ए-बादाम प्रत्येक 18 ग्राम, बज़रुलबन्ज सफ़ेद 27 ग्राम।

निर्माण-विधिः निर्यास एवं ताज़ा रसों को शराब-ए-मुसल्लस में भिगोएँ। अन्य को कूट छान कर तीन गुना साफ़ मधु के साथ मिलाएँ। छः महीने के पश्चात प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

## ◉ शीलसा का नुस्ख़ाः

बलग़म एवं सौदा के कारण होने वाले ठंडे रोग जैसे अपस्मरा, लक़वा, मर्छा की बीमारी, पक्षघात, कंपन, हृदय स्पंदन एवं गर्भाशय के रोग जैसे अपतंत्रक, गर्भाशय के

फूलने और स्वेतप्रदर में लाभदायक है। गर्भाशय में भ्रुण की रक्षा करता है। गाढ़ी यिाह को बाहर निकालता है। अधकपाटी और बलग़म के कारण होने वाले पुराने चक्कर आने के रोग में लाभदायक है बल्कि इस को नाक में क़तूर (टपकाने) से यह इस रोग में अधिक लाभदायक है। फुत्रा एवं अन्य ज़हरों से हाने वाली हानि से सुरक्षित करता है। मूत्रकृच्छ और बलग़मी गठिया में भी लाभदायक है।

शैख़ अबू अली सीना के अनुसार इस माजून की रचना बड़ी अजीब है। हकीमों ने इसे अनेक लाभ एवं गुणों वाला माना है परन्तु मैंने इसे जीभ के पक्षघात और हकलाने व तुतलाने आदि के अतिरिक्त किसी भी रोग में किसी प्रकार के बड़े लाभ वाला नहीं पाया है।

शैख़ का यह भी कहना है कि इस माजून की सेवन-मात्रा, उस की निर्माण-विधि एवं रचना संरचना आदि के संदर्भ में बड़ा मतभेद रहा है।

"ज़ख़ीरह ख़वारिज़्म शाही" के लेखक का कहना है कि मैं शैख़ की यह बात मानता हूँ और मुझे कोई आपत्ति नहीं है।

यह बहुत आशचर्यजनक बात है कि इस माजून के सभी नुस्खे एक दूसरे से भिन्न हैं। यहाँ जिस नुस्खे का उल्लेख है वो "कामिलुस्सनाअह" के अनुसार है।

औषधियाँः मुश्क ख़ालिस 7 ग्राम, मरवारीद 35 ग्राम, वरक़-ए-तिला और वरक़-ए-नुक़रह प्रत्येक 1.75 ग्राम, ज़रनब 1.75 ग्राम, आब्रेशम मुक़र्रज़ 14 ग्राम, ज़ाफ़रान 35 ग्राम, क़रन्फ़ुल और सुंबुलुत्तीब प्रत्येक 28 ग्राम, हब्ब-ए-बलसाँ 1.75 ग्राम, बिस्बासा 3.5 ग्राम, लुफ़्फ़ाह 20 की संख्या में, फ़िलफ़िल सफ़ेद, ज़न्जबील और बीख़-ए-शिब्त प्रत्येक 14 ग्राम, क़ुस्त तल्ख़ 28 ग्राम, जौज़बोवा और जुन्द बेद स्तर प्रत्येक 35 ग्राम, फ़र्फ़िर्यून 35 ग्राम, फ़ुक़ाह-ए-इज़्ख़र, तुख़्म-ए-शिब्त, जुन्तियाना और शगूफ़ा-ए-लिसानुलअसाफ़ीर प्रत्येक 14 ग्राम, चौब पर्सियाउशान, क़ाक़ला और हज़ार स्पन्द प्रत्येक 27 ग्राम, नमक-ए-हिन्दी और सअतर फ़ारसी प्रत्येक 14 ग्राम, राज़ियाना और ज़ूफ़ा प्रत्येक 21 ग्राम, शोनीज़ और ज़ाज स्याह प्रत्येक 1.75 ग्राम, उश्नान नब्ती, तुख़्म-ए-करफ्स, तुख़्म-ए-सुद्दाब, उश्ना और गोगर्द ज़र्द प्रत्येक 7 ग्राम, सर्गीन-ए-बुज़ कोही, सर्गीन-ए-गाव कोही और बादआवरद प्रत्येक 24.5 ग्राम, बज़रुलजिर्जीर, सिब्र और अबहल प्रत्येक 14 ग्राम, फ़िलफ़िल स्याह, दार-ए-फ़िलफ़िल, बज़रुलबन्ज और अफ़ियून प्रत्येक 70 ग्राम, ज़रावन्द मुदहरज 14 ग्राम, रेवन्द चीनी 24.5 ग्राम, बज़र-ए-आलू ज़र्द 35 ग्राम, बज़र क़तूना और बुसुद प्रत्येक 14.5 ग्राम, क़फरुलयहूद 14 ग्राम, काफ़ूर, ख़रबक सफ़ेद, ख़रबक़ स्याह, सअद, मीअह सायला, मामीरान चीनी और तुख़्म-ए-हल्यून प्रत्येक 7 ग्राम, असाबिउस्सुफ़र, बर्ग-ए-पर्सियाउशान, वज

तुर्की, बीख़-ए-कासनी और किशत बर किशत प्रत्येक 7 ग्राम, हलबे मुहल्लब और बीख़-ए-खरदल सफ़ेद प्रत्येक 7 ग्राम, माउस्सूस और माउशशौक प्रत्येक 3.5 ग्राम, अक़्दुत्तीब फिल हीतान 24.5 ग्राम, सर्गीन-ए-रूबाह 1.75 ग्राम, पोस्त-ए-बीख़-ए-कबर 1.75 ग्राम, हज़ार फ़शान और इस्पन्दान प्रत्येक 14 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर तीन गुना साफ़ मधु के साथ मिलाएँ।

प्रयोग-समयः छः महीने के पश्चात प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 170 मिली ग्राम।

- **शीलसा का अन्य नुसख़ाः**

इस का उल्लेख "मिन्हाजुन्नुबुव्वह" के लेखक ने अपनी किताब में किया है।

औषधियाँः मुश्क ख़ालिस, हमामा, उद-ए-बलसाँ, फ़र्फ़ियून, उश्नान नब्ती, तुख़्म-ए-करफ़्स, तुख़्म-ए-सुद्दाब, उश्ना, किब्रीत ज़र्द, सर्गीन-ए-गाव या सर्गीन-ए-बुज़ कोही, ख़रबक सफ़ेद, ख़रबक़ स्याह, मीअह सायला, सअद, मामीरान चीनी, तुख़्म-ए-हल्यून, असाबिउस्सुफ़र, बीख़-ए-कासनी, हलब़-ए-मुहल्लब, बीख़-ए-खरदल सफ़ेद प्रत्येक 7 ग्राम, मरवारीद नासुफ़्ता, ज़ाफ़रान, साज़ज हिन्दी, दिब्क़, सलीख़ा, जौज़बोवा, जुन्द बेद स्तर, फ़ुक़ाह-ए-इज़्ख़िर, तुख़्म-ए-जिर्जीर, बज़रुलवर्द प्रत्येक 5.25 ग्राम, आबरेशम मुक़र्रज़, फ़िलफ़िल सफ़ेद, ज़न्जबील, बीख़-ए-शिब्त, जुन्तियाना, नमक-ए-हिन्दी, सअतर, शगूफ़ा-ए-लिसानुलअसाफ़ीर, आक़रक़हा, ज़रावन्द मुदहरज, बुन्दुक़ हिन्दी, अबहल, क़फ़रुलयहूद, हज़ारफ़शान प्रत्येक 14 ग्राम, क़रन्फ़ुल, सुंबुलुत्तीब, क़ुस्त, मुर, हुरमुल, चौब पर्सियाउशान, क़ाक़ला प्रत्येक 3.5 ग्राम, मस्तगी 10.5 ग्राम, लुफ़्फ़ाह 20 की संख्या में, तुख़्म-ए-बादियान, ज़ूफ़ा ख़ुश्क प्रत्येक 21 ग्राम, फ़िलफ़िल स्याह, दार-ए-फ़िलफ़िल, बज़रुलबन्ज सफ़ेद, ज़रावन्द तवील और अफ़ियून प्रत्येक 70 ग्राम, इक्लीलुलमलिक 15.75 ग्राम, बज़रक़तूना और बुसुद प्रत्येक 15 ग्राम।

निर्माण-विधिः जो औषधियाँ भिगोने योग्य हों उन्हें शराब-ए-मुसल्लस में भिगोएँ और अन्य को कूट छान कर सभी को तीन गुना साफ़ शहद के साथ मिलाएँ।

प्रयोग-समयः छः महीने के पश्चात प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 170 मिली ग्राम।

अनुपानः आब-ए-बादियान या आब-ए-बीख़-ए-करफ़्स।

- **शीलसा का अन्य नुसख़ाः**

औषधियाँः मुश्क तुर्की, मीअह सायला, उश्नान नब्ती, तुख़्म-ए-करफ़्स, मामीरान चीनी, तुख़्म-ए-सुद्दाब, तुख़्म-ए-हल्यून, उश्ना, काफ़ूर, गोगर्द ज़र्द, सर्गीन-ए-गाव

कोही, सर्गीन-ए-बुज़ कोही, ख़रबक़ स्याह प्रत्येक 7 ग्राम, अंबर अशहब, दरूनज अक़रबी, ज़रन्बाद, सुंबुलुत्तीब, मुक़िल, फ़िलफ़िल सफ़ेद, ज़न्जबील, बीख़-ए-शिब्त, तुख़्म-ए-शिब्त, जुन्तियाना रूमी, नमक हिन्दी, शगूफ़ा-ए-लिसानुलअसाफ़ीर, सअतर फ़ारसी, अबहल, आक़रक़हा, तुराबुलमुरब्बिआत, बज़रक़तूना, इस्पन्द, हज़ारफ़शान प्रत्येक 14 ग्राम, जुन्द बेद स्तर, साज़ज हिन्दी, ज़ाफ़रान, मरवारीद, फ़र्फ़ियून, फ़ुक़ाह-ए-इज़्ख़िर, तुख़्म-ए-जिर्जीर, बज़रुलवर्द प्रत्येक 35 ग्राम, हब्ब-ए-बलसाँ, मस्तगी, ज़रनब, सखाला-ए-सीम, शोनीज़, ज़ाज-ए-कफ़शगरान, सर्गीन-ए-रूबाह, पोस्त-ए-बीख़-ए-कबर प्रत्येक 1.75 ग्राम, सलीख़ा, ऊद-ए-बलसाँ, बिस्बासा, ईर्सा प्रत्येक 3.5 ग्राम, जौज़बोवा, लुफ़्फ़ाह प्रत्येक 10 की संख्या में, क़ाक़ला, क़ुस्त, चौब-ए-पर्सियाउशान, बर्ग-ए-पर्सियाउशान प्रत्येक 28 ग्राम, बादआवरद, रेवन्द चीनी, अक़्दुत्तीन फ़िल हीतान प्रत्येक 24.5 ग्राम, फ़िलफ़िल स्याह, बज़रुलबन्ज, अफ़ियून प्रत्येक 28 ग्राम, बीख़-ए-कासनी 15.75 ग्राम, किशत बर किशत, बीख़-ए-इस्फ़न्द प्रत्येक 7 ग्राम, मग़्ज़ दाना-ए-मुहल्लब 3.5 ग्राम, सअद कूफ़ी, हमामा प्रत्येक 7 ग्राम, तुख़्म-ए-राज़ियाना 21 ग्राम।

निर्माण-विधिः जो औषधियाँ भिगोने योग्य हों उन्हें पुरानी शराब में भिगो कर नर्म कर लें। अन्य को कूट छान लें फिर सभी को तीन गुना साफ़ मधु के साथ मिलाएँ और माजून तैयार करें।

प्रयोग-समयः छः महीने के पश्चात प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 170 मिली ग्राम।

- **माजून याक़ूती कबीरः**

इस को हकीम सुलैमान साहब ने तैयार किया था जो बादशाह अब्बास सफ़वी के विशेष हकीमों के समूह के सरदार थे। यह बादशाह बहूत रोब व दबदबा वाला और क्रूर था। उस ने बहुत ही कड़े नियम लागू कर रखे थे। यह माजून अनेक लाभ एवं गुणों वाला है। शरीर की सभी प्रकार की शक्तियों की सुरक्षा करता है। गुर्दा एवं मूत्राशय की पथरी और रेत को कण कण कर के बाहर निकालता है। बलग़म एवं सौदा के कारण होने वाले रोगों और गठिया रोग में लाभदायक है। कमज़ोरी और बुढ़ापे को शीघ्र प्रतीत नहीं होने देता है। शक्राणुओं को पैदा करता है। अपस्मरा, मुर्छा की बीमारी, पक्षघात, लक़वा, स्वित्रा एवं सिध्म में लाभदायक है। External and internal senses को सशक्त बनाता है। जिगर, तिल्ली एवं आँतों के सुद्दों को खोलता है। अव्यक्त गर्मी की सुरक्षा करता है। आनन्दायक एवं प्राणपोषक है।

औषधियाँः याक़ूत रुम्मानी, लअल बदख़्शानी, फ़ीरोज़ा नीशापूरी, मरवारीद नासुफ़्ता, बुसुद, अक़ीक़ यमनी, यशब सब्ज़, कहरुबा, लाजवर्द मग़सूल, मोमिया-ए-कानी, फ़ादज़हर, दरूनज अक़रबी, बिस्फ़ाइज फ़िस्तक़ी, बहमन सुर्ख़, बहमनी सफ़ेद, क़ाक़ला किबार, दार-ए- फ़िलफ़िल, शीतरज हिन्दी, रेवन्द चीनी, हलीला स्याह, पोस्त हलीला ज़र्द, पोस्त हलीला काबुली, आमला मुक़श्शर, ज़न्जबील, वज तुर्की, ख़ुस्यतुस्सअलब, जुन्तियाना, ज़रावन्द तवील, मुर साफ़, क़रन्फ़ुल, मरज़न्जोश, मुश्कतरामशीअ, हजरुलयहूद, गावज़बान, नारदीन, हमामा, फ़ुत्रासालियून, साज़ज हिन्दी, तुख़्म-ए-कासनी, राज़ियाना, बादरन्जबोया, तुर्बुद सफ़ेद मुजव्वफ़, हब्ब-ए-बलसाँ,ऊद-ए-बलसाँ, दार चीनी, असारून, क़रन्फ़ुल, सूरन्जान, जुन्द बेद स्तर, तबाशीर सफ़ेद, गुल-ए-सुर्ख़, तुख़्म-ए-फ़न्जमुश्क, बिस्बासा, मग़ज़-ए-नारजील, काफ़ूर क़ैसूरी,ऊद हिन्दी, पोस्त-ए-बेरून-ए-पिस्ता, बर्ग-ए-तुरनज, तुख़्म-ए- फ़न्जमुश्क, रासन, जौज़बोवा, ज़रनब, सलीख़ा, सन्दरूस, मग़ज़-ए-फ़ुस्तुक़, नीलोफ़र, नअनाअ, नम्माम, कबाबा चीनी, हियोफ़ारीक़ून, फ़ूह, मुर, दोक़ू, अक़ाक़िया, हाशा, मुक़िलुलयहूद, बज़रुलक़ल्ब और फ़रासियून प्रत्येक 13.5 ग्राम, जदवार खताई, तूदरी सुर्ख़, तूदरी सफ़ेद, सअद कूफ़ी, ग़ारीक़ून, अफ़तीमून, गिल-ए-मख़्तूम, गिल-ए-अरमनी और ज़रन्बाद प्रत्येक 9 ग्राम, सन्दल सुर्ख़, सन्दल सफ़ेद, मस्तगी, आबरेशम मुक़र्रज़,लिसानुलअसाफ़ीर, माया-ए-शुत्र-ए-आराबी, फ़िलफ़िल सफ़ेद, क़नतूरियून दक़ीक़, उसारा-ए-लिहयतुत्तीस और समग़-ए-अरबी प्रत्येक 22.5 ग्राम, चौब चीनी, ज़रिशक बेदाना और मग़ज़-ए-सर-ए-कुन्जशक प्रत्येक 90 ग्राम, क़ज़ीब-ए-गाव ख़ुश्क (रेती से बुरादा किया हुआ), नानख़्वाह और शक़ाक़ुल मिश्री प्रत्येक 9 ग्राम, ज़ाफ़रान 90 ग्राम, वरक़-ए-तिला और मुश्क तुर्की प्रत्येक 4.5 ग्राम, वरक़-ए-नुक़रह और अंबर अशहब प्रत्येक 9 ग्राम, रुब्ब-ए-सेब शीरीं, रुब्ब-ए-बिही शीरीं, रुब्ब-ए-फ़वाकेह शीरीं,अर्क़-ए-गावज़बान,अर्क़-ए-बेद मुश्क, अर्क़-ए-मुखल्लसह और अर्क़-ए-गुलाब प्रत्येक 405 ग्राम, नबात सफ़ेद 1350 ग्राम, साफ़ शहद सभी औषधियों के तीन गुना।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर नियमानुसार माजून तैयार करें। छः महीने के पश्चात प्रयोग करें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम से 6.75 ग्राम तक।

## • माजून चौब चीनी कबीरः

यह निर्मित औषधि नवीन युग के प्रसिद्ध हकीम श्री इमादुद्दीन महमूद शीराज़ी द्वारा तैयार की गई है। अत्याधिक लाभ एवं गुणों वाला होने के कारण हकीमों ने इस माजून का उल्लेख बड़े माजूनों की श्रेणी में किया है। हृदया एवं मस्तिष्कबल्या है।

जोड़ों के दर्द, कमर दर्द एवं कूल्हे दर्द को दूर करता है। विषाद और सौदावी रोगों में लाभदायक है। अमाशय को बल प्रदान करने वाला, वाजीकर, चेहरे का रंग साफ़ करने वाला, मोटापा पैदा करने वाला और शुक्राणु के रास्तों को खोलने वाला है। गुर्दा एवं मूत्राशय के चिपचिपे द्रव्यों, रेत और पथरी को साफ़ करता है। मुँह की दुर्गंध को दूर करता है। शरीर में स्फूर्ति उत्पन्न करता है और सभी प्रकार की स्थितियों को ठीक रखता है। इन सब के अतिरिक्त इस के और भी अनेक लाभ हैं।

औषधियाँः चौब चीनी आला-ए-तबीब 225 ग्राम, मरवारीद नासुफ़्ता मसहूक़ 9 ग्राम, लाजवर्द मग़सूल, रेवन्द चीनी और अफ़्तीमून रूमी प्रत्येक 7 ग्राम, सुंबुलुत्तीब, दाना-ए-तुरन्ज, समक-ए-सैदा, माही रूबियान, दरूनज अक़रबी, ज़रन्बाद, तुख़्म-ए-गज़र, तुख़्म-ए-शलग़म, बहमन ख़ुश्क, बहमन तर,तुख़्म-ए-तुर्ब, तुख़्म-ए-फ़िलन्जह, तूदरी ज़र्द और तूदरी सुर्ख़ प्रत्येक 13.5 ग्राम, ख़ुस्यतुस्सअलब मिश्री 22.5 ग्राम, बूज़ीदान, सूरन्जान और सअद कूफ़ी प्रत्येक 9 ग्राम, दार चीनी, क़रन्फ़ुल, ज़न्जबील, असारून और आमला मुनक़्क़ा प्रत्येक 13.5 ग्राम, जौज़बोवा और बिस्बासा प्रत्येक 7 ग्राम, मस्तगी, ऊद ख़ाम, माया-ए-शुत्र-ए-आराबी, ज़ाफ़रान और अंबर अशहब प्रत्येक 7 ग्राम, मुश्क तुर्की 1.75 ग्राम, मग़्ज़-ए-फ़ुन्दुक़, मग़्ज़-ए-पिस्ता व बादाम, मग़्ज़-ए-गर्दगान और चिलग़ोज़ा प्रत्येक 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी पतली एवं तरल वस्तुओं को एक साथ मिला लें और उस में तीन गुना क़न्द एवं साफ़ मधु मिला कर क़िवाम तैयार करें। ठंडा होने के पश्चात पिसी हुई औषधियों को मिला कर माजून तैयार करें।चीनी या शीशे के पात्र में सुरक्षित कर लें और चालीस दिनों के पश्चात प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः रोगी के स्वभाव के अनुसार 9 से 18 ग्राम।

❑❑❑

**तृतीय वर्गः उन महत्वपूर्ण माजूनों के नुस्खे जो वाजीकर, कमर को बल प्रदान करने वाले और लिंग में जोश एवं तनाव उत्पन्न करने वाले हैं। इन की सभी क्रियाएँ अत्यंत शक्तिशाली होती हैं।**

- **माजून सक़न्क़ूरः**

यह नुस्खा हकीम मोईनुद्दीन द्वारा तैयार किया गया है। यह वाजीकर है और स्वभाव में हर्षोल्लास उत्पन्न करता है। गुर्दा, कमर, दिल और दिमाग़ को बल प्रदान करता है। लिंग में पूर्णरूप से जोश एवं तनाव भरता है।

औषधियाँः शक़ाक़ुल, बहमन सुर्ख़, बहमन सफ़ेद, बूज़ीदान, सूरन्जान, बिस्बासा, क़िर्फ़ह, क़रन्फ़ुल, रेती से तैयार किया हुआ क़ज़ीब-ए-गाव ख़ुश्क का बुरादा, हब्बुज़्ज़लम, मग़ज़-ए-चिलग़ोज़ा, मग़ज़-ए-हब्बतुलख़ज़रा, मग़ज़-ए-नारजील, लिसानुलअसाफ़ीर, ख़ूलन्जान, क़ाक़ला किबार, तुख़्म-ए-फ़न्जमुश्क, सन्दल सुर्ख़, सन्दल सफ़ेद, ख़शख़ाश सफ़ेद, गावज़बान, वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़, बादरन्जबोया, हल्यून, असारून, दरूनज अक़रबी, हील, जौज़बोवा, उश्ना,ऊद ख़ाम प्रत्येक 14 ग्राम, सर-ए-सक़न्क़ूर 52.5 ग्राम, ज़ाफ़रान और ख़ुस्यतुस्सअलब मिश्री प्रतयेक 35 ग्राम, कबाबा चीनी, सअद कूफ़ी, ज़न्जबील, ज़र्नब तुख़्म-ए-बादरन्जबोया, ज़रन्बाद, मस्तगी, तुख़्म-ए-गज़र, साज़ज हिन्दी, हजर-ए-यशब, कहरुबा, बुसुद, ज़र-ए-महलूल और सीम-ए-महलूल प्रत्येक 10.5 ग्राम, मरवारीद नासुफ़्ता 17.5 ग्राम, अंबर अशहब 7 ग्राम, मुश्क तुर्की 3.5 ग्राम, लअल 7 ग्राम, याक़ूत ज़र्द 3.5 ग्राम, ज़ायदुलफ़िक्र मसहूक़ 350 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान लें और जवाहरात को सुमाक़ के पत्थर पर हाथ से हल्का पीस लें। फिर सब को मिला कर नियमानुसार माजून तैयार करें और आवश्यकतानुसार प्रयोग में लाएँ।

- **माजून चौब चीनी का अन्य नुस्ख़ाः**

शुक्राणु पैदा करता है। गुर्दा, पीठ और कमर को मज़बूत करता है। मूत्राशय को साफ़ करता है। लिंग में जोश एवं तनाव पैदा करता है। दिल और दिमाग़ को बल प्रदान करता है।

औषधियाँः मग़ज़-ए-पिस्ता, मग़ज़-ए-हब्बुलक़िलक़िल, मग़ज़-ए-फ़ुन्दुक़, मग़ज़-ए-चिलग़ोज़ा, मग़ज़-ए-हब्बुज़्ज़लम, मग़ज़-ए-गर्दगान, कुन्जद मुक़श्शर, शक़ाक़ुल, बहमन सुर्ख़, तूदरी सुर्ख़ व सफ़ेद, मग़ज़-ए-सर-ए-कुन्जशक, बीख़-ए-बाबूना, ख़सक मुदब्बर, मग़ज़-ए-नारजील प्रत्येक 17.5 ग्राम, ख़ुस्यतुस्सअलब मिश्री, बहमन सफ़ेद प्रत्येक 35 ग्राम, ज़र्नब, ज़रन्बाद,

ख़शख़ाश सफ़ेद, ज़न्जबील, तुख़्म-ए-बादरन्जबोया, क़रन्फ़ुल, बिस्बासा प्रत्येक 10.5 ग्राम, ख़ूलन्जान, रेती से बुरादा किया हुआ खुश्क क़ज़ीब-ए-गाव, नुक़रा-ए-महलूल प्रत्येक 7 ग्राम, अंबर अशहब 3.5 ग्राम, मुश्क तुर्की 1.75 ग्राम,ऊद 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर उनके तीन गुना साफ़ शहद में मिलाएँ।

प्रयोग-समयः यौन-क्रिया से आधा घंटा पहले उचित है।

सेवन-मात्राः आवश्यकता के समय 7 ग्राम।

- **माजून असरारुल अतिब्बाः**

यह नुस्ख़ा मौलाना शम्सुद्दीन ने तैयार किया गया है। यह माजून अनेक लाभ एवं गुणों वाला है। वाजीकरण एवं यौन-क्रिया के संदर्भ में यह कुछ अधिक ही प्रभावशाली है। दिल और दिमाग़ को बल प्रदान करता है। स्वभाव में हर्षोल्लास उत्पन्न करता है। लिंग को मज़बूत करता है और त्वचा के रंग में निखार पैदा करता है। तांत्रिका के रोगों में लाभदायक है। शुक्राणु पैदा करता है।

औषधियाँः शक़ाक़ुल, ख़ूलन्जान, ख़ुस्यतुस्सअलब, बहमन, वज तुर्की, तूदरी सुर्ख़, तूदरी ज़र्द और लिसानुलअसाफ़ीर प्रत्येक 10.5 ग्राम, सर-ए-सक़न्क़ूर, 13.5 ग्राम, हब्ब-ए-बलसाँ, फ़िलफ़िल सफ़ेद, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-खरबज़ह, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यारैन, तुख़्म-ए-जिर्जीर, तुख़्म-ए-गज़र, तुख़्म-ए-शलग़म, ख़सक मुदब्बर, तुख़्म-ए-शिब्त, तुख़्म-ए-पियाज़, ख़शख़ाश सफ़ेद, तुख़्म-ए-हल्यून, दोक़ू और हब्ब-ए-क़ुर्तुम प्रत्येक 35 ग्राम, मग़ज़-ए-नारजील, मग़ज़-ए-पिस्ता, मग़ज़-ए-हब्बुस्सनोबर किबार, मग़ज़-ए-बादाम, मग़ज़-ए-हब्बतुलख़ज़रा, मग़ज़-ए-पन्बा दाना और कुन्जद मुक़श्शर प्रतयेक 24.5 ग्राम, दारचीनी, क़रन्फ़ुल, सुंबुलुत्तीब, असारून, बिस्बासा, कबाबा चीनी, सअद कूफ़ी, क़िर्फ़ह, दार-ए-फ़िलफ़िल, जौज़बोवा, नारमुश्क,ऊद ख़ाम,अंबर अशहब और ज़ाफ़रान प्रत्येक 4.5 ग्राम, मुश्क तुर्की 848 मिलीग्राम, ज़न्जबील, बूज़ीदान, क़ुस्त शीरीं, मग़ज़-ए-हब्बुज़्ज़लम और दरूनज अक़रबी प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान लें। मग़्ज़ियात को अलग धीरे से कूट लें। सब को शहद में मिला कर माजून तैयार करें।

- **माजून सक़न्क़ूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बहुत शक्तिशाली वाजीकर है। इस संदर्भ में इस माजून के बड़े अजीब प्रभाव पड़ते हैं। इस के सेवन से कमर मज़बूत होती है और यौन-क्रिया में अत्याधिक सक्षमता प्राप्त होती है।

औषधियाँः बहमन सुर्ख़, बहमन सफ़ेद, शक़ाक़ुल, क़िर्फ़ह, बूज़ीदान, बिस्बासा,

कबाबा चीनी, ख़ूलन्जान, लिसानुलअसाफ़ीर, क़ाक़ला किबार, क़ाक़ला सिग़ार, सुंबुलुत्तीब, फ़्रन्जमुश्क, क़रन्फ़ुल, मस्तगी रूमी, साज़ज हिन्दी, अंबर अशहब, मरवारीद नासुफ़्ता प्रत्येक 10.5 ग्राम, खुस्यतुस्सअलब मिश्री 35 ग्राम, सर-ए-सक़न्क़ूर 17.5 ग्राम, जवान बैल के ख़ुश्क क़ज़ीब का बुरादा 17.5 ग्राम, ऊद ख़ाम, तुख़्म-ए-हल्यून, ज़ाफ़रान प्रत्येक 14 ग्राम, सअद कूफ़ी, ज़न्जबील, बुसुद, कहरुबा प्रत्येक 7 ग्राम, मुश्क तुर्की 1.75 ग्राम, लअल 5.25 ग्राम, याक़ूत ज़र्द 3.5 ग्राम, ज़र-ए-महलूल, नुक़रह-ए-महलूल प्रत्येक 1.75 ग्राम, जुज़-ए-आज़म पीसा और पकाया हुआ 135 ग्राम, रोग़न-ए-बादाम 135 मिलीलीटर।

निर्माण-विधिः कूट कर तीन गुना क़न्द और शहद मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम से 7 ग्राम तक।

- **माजून बजूरः**

यह बहुत शक्तिशाली वाजीकर है। यौनशक्ति की विशेष एवं महत्वपूर्ण औषधि है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-गज़र, तुख़्म-ए-तेरह तेज़क, तुख़्म-ए-पियाज़, तुख़्म-ए-गन्दना, तुख़्म-ए-शिब्त, बूज़ीदान, तुख़्म-ए-शलग़म, तुख़्म-ए-जिर्जीर, तुख़्म-ए-हल्यून, क़ुस्त शीरीं, मग़ज़-ए-चिलग़ोज़ा, मग़ज़-ए-हब्बुलक़िलक़िल, लिसानुलअसाफ़ीर, मग़ज़-ए-हब्बुज़्ज़लम, तूदरी सुर्ख़, तूदरी सफ़ेद, शक़ाक़ुल मिश्री, बहमन सुर्ख़, बहमन सफ़ेद, दार-ए-फ़िलफ़िल और हिल्तीत।

निर्माण-विधिः कूट कर तीन गुना क़न्द और शहद मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम।

अनुपानः भैंस का दूध।

- **माजून का अन्य नुस्ख़ाः**

इस के प्रयोग से लिंग में अत्यंत जोश एवं तनाव उत्पन्न होता है। जो व्यक्ति कुंवारी स्त्री के यौनिद्वार की झिल्ली को फाड़ने की क्षमता न रखता हो, उस के लिए बहुत लाभदायक है।

औषधियाँः दार चीनी, खुस्यतुस्सअलब, शक़ाक़ुल, जौज़बोवा, लिसानुलअसाफ़ीर, मस्तगी रूमी, ज़ाफ़रान, दार-ए-फ़िलफ़िल, बूज़ीदान, गुल-ए-सुर्ख़, बहमन सुर्ख़, बहमन सफ़ेद, तुख़्म-ए-हल्यून, तुख़्म-ए-गन्दना प्रत्येक 9 ग्राम, मुश्क 432 मिलीग्राम, अंबर अशहब 3.5 ग्राम, मग़ज़-ए-हब्बुलक़िलक़िल 10.5 ग्राम, ज़ायदुलफ़िक्र 87.5 ग्राम, शहद सभी के तीन भाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर उन के तीन भाग शहद में मिलाएँ।

- **माजून मुबह्ही मुक़्व्वी:**

यह लेखक द्वारा तैयार किया गया नुस्खा है। यौनशक्ति, जोश व तनाव एवं आनन्द प्राप्ति में बेपनाह बढ़ोत्तरी करता है। हृदया है और लिंग में सख़्ती पैदा करता है। पीठ और गुर्दा को मज़बूत करता है।

औषधियाँ: बूज़ीदान, सूरन्जान, तूदरी सुर्ख़ व ज़र्द, बहमन सुर्ख़ व सफ़ेद, ज़न्जबील, नअनाअ ख़ुश्क, ख़सक मुदब्बर प्रत्येक 10.5 ग्राम, ख़ूलन्जान, शक़ाक़ुल, ख़ुस्यतुस्सअलब प्रत्येक 17.5 ग्राम, माया-ए-शुत्र-ए-आराबी 7 ग्राम, ख़शख़ाश सफ़ेद, कुन्जद मुक़श्शर, तुख़्म-ए-ज़र्दक, दार-ए-फ़िलफ़िल प्रत्येक 10.5 ग्राम, गावज़बान, बादरन्जबोया, फ़ृन्जमुश्क प्रत्येक 7 ग्राम, सुंबुलुत्तीब, क़ाक़ला किबार, ऊद ख़ाम प्रत्येक 5.25 ग्राम, ज़रन्बाद, मस्तगी रूमी, जौज़बोवा, बिस्बासा, ज़ाफ़रान प्रत्येक 10.5 ग्राम, लिसानुलअसाफ़ीर, दार चीनी, हील प्रत्येक 14 ग्राम, कज़माज़ज, समग़-ए-अरबी प्रत्येक 5.25 ग्राम, बजरुलबन्ज 3.5 ग्राम, समक-ए-सैदा, मग़्ज़ सर-ए-कुन्जशक प्रत्येक 7 ग्राम, असारून, जुन्द बेद स्तर, दरूनज अक़रबी प्रत्येक 3.5 ग्राम, क़ुस्त शीरीं 10.5 ग्राम, मग़्ज़-ए-चिलग़ोज़ा, मग़्ज़-ए-नारजील, मग़्ज़-ए-बादाम, मग़्ज़-ए-पिस्ता, मग़्ज़-ए-फ़ुन्दुक़ प्रत्येक 7 ग्राम, मग़्ज़ तुख़्म-ए-खरपज़ह 10.5 ग्राम, वरक़-ए-नुक़रह 3.5 ग्राम, अंबर 3.5 ग्राम, मुश्क तुर्की 1.75 ग्राम, साफ़ शहद सब के तीन गुना।

निर्माण-विधि: शहद का क़िवाम बना कर माजून बनाएँ।

सेवन-मात्रा: 7 ग्राम।

- **माजून का अन्य नुस्ख़ा:**

यह नुस्ख़ा हकीम इमादुद्दीन महमूद शीराज़ी द्वारा अविष्कार किया गया है। वाजीकरण में अत्यंत लाभदायक और प्रभावशाली है। इस के और भी अनेक गुण एवं लाभ हैं।

औषधियाँ: बहमन, आक़रक़रहा, मवीज़ज प्रत्येक 7 ग्राम, ज़रावन्द मुदहरज, ज़रन्बाद, दरूनज अक़रबी, लिसानुलअसाफ़ीर, कबाबा चीनी,ऊद हिन्दी, मस्तगी रूमी, ज़न्जबील, फ़िलफ़िल, दुवाला, बूज़ीदान, तबाशीर सफ़ेद, हब्बुन्नील प्रत्येक 10.5 ग्राम, ख़ुस्यतुस्सअलब 35 ग्राम, माया-ए-शुत्र-ए-आराबी प्रत्येक 17.5 ग्राम, सूरन्जान 7 ग्राम, तूदरी सुर्ख़ व ज़र्द, तुख़्म-ए-गज़र, तुख़्म-ए-तुर्ब, शक़ाक़ुल, बज़रुलबन्ज, दार चीनी, सुंबुलुत्तीब, हील प्रत्येक 17.5 ग्राम, बिस्बासा, मग़्ज़-ए-पन्बादाना,किशनीज़ ख़ुश्क, तुख़्म-ए-ख़ुर्फ़ह, तुख़्म-ए-कासनी, गुल-ए-सुर्ख़, बादरन्जबोया, ज़रिशक, समक-ए-सैदा, मग़्ज़-ए-सर-ए-कुन्जशक, ज़ाफ़रान, खाया-ए-खरूस प्रत्येक 17.5 ग्राम, कुन्जद, तुख़्म-ए-ख़शख़ाश सफ़ेद, तुख़्म-ए-खरबूज़ह, मग़्ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यारैन, सन्दल

सफ़ेद, जौज़बोवा, मग़्ज़-ए-गर्दगान, मग़्ज़-ए-पिस्ता, आमला मुक़श्शर, मग़्ज़-ए-फ़ुन्दुक़, मग़्ज़-ए-नारजील, पोस्त-ए-हलीला काबुली, पोस्त-ए-बलीला, गावज़बान, रूबियान प्रत्येक 7 ग्राम, आब-ए-अनार शीरीं, आब-ए-सेब शीरीं, आब-ए-बिही शीरीं, आब-ए-अमरूद प्रतयेक 70 मिलीलीटर, अर्क़-ए-गुलाब, अर्क़-ए-बेद मुश्क प्रत्येक 408 मिलीलीटर, अंबर 3.5 ग्राम, मुश्क तुर्की 1.75 ग्राम, क़न्द, नबात, साफ़ शहद तीनों सब के बराबर।

निर्माण-विधिः नियमानुसार माजून तैयार करें।

- **अन्य मुबह्ही माजूनः**

आमाशय को बल प्रदान करता है और स्मृतिवर्धक है। अंतरांग की सर्दी के साथ आमाशय के फूलन और सर्दी को दूर करता है। गुर्दा एवं शुक्राणु के मार्ग को बल प्रदान करता है। मुँह की दुर्गंध को समाप्त कर के उस को सुगंधिक कर देता है। काम वासना में उत्तेजना उत्पन्न करता है।

औषधियाँः दार चीनी, क़ुस्त शीरीं, सुंबुलुत्तीब, राज़ियाना, ज़न्जबील, नअनाअ खुश्क, सलीख़ा प्रत्येक 14 ग्राम, ज़ाफ़रान,ऊद हिन्दी प्रत्येक 10.5 ग्राम, साज़ज हिन्दी, दार-ए-फ़िलफ़िल, फ़िलफ़िल सफ़ेद, फ़िलफ़िल स्याह, असारून, बज़र-ए-अन्जोरह, करोया, क़रन्फ़ुल, ख़ूलन्जान, शक़ाक़ुल प्रत्येक 15.75 ग्राम, आक़रक़रहा, तुख़्म-ए-तुर्ब, तुख़्म-ए-शलग़म प्रत्येक 7 ग्राम, कुन्जद मुक़श्शर, मग़्ज़-ए-पिस्ता, मग़्ज़-ए-बादाम, मग़्ज़-ए-चिलग़ोज़ा प्रत्येक 7 ग्राम, नबात सफ़ेद सभी औषधियों के समभाग, साफ़ शहद सभी औषधियों के दो गुना भाग में लें।

निर्माण-विधिः नियमानुसार माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **लबूब-ए-कबीरः**

गुर्दा को गर्म करता है। शुक्राणुओं की संख्या में बढ़ोत्तरी करता है। कमर को मज़बूत करता है। स्वभाव में हर्षोल्लास उत्पन्न करता है। वाजीकरण शक्ति में उत्तेजना पैदा करता है। हृदय एवं मस्तिष्क वर्धक है। शरीर को मोटा करता है। त्वचा को चमकदार बनाता है और तांत्रिकावर्धक है। वासना शक्ति के प्राप्ति के संदर्भ में यह एक अभूतपूर्व औषधि है। इस माजून के लगातार प्रयोग से लिंग में इस हद तक भरपूर जोश एवं तनाव प्राप्त होता है कि यौन-क्रिया में पूर्ण रूप से आनन्द की प्राप्ति नही होती है बल्कि काम वासना की इच्छा बाक़ी रहती है।

औषधियाँः मग़्ज़-ए-पिस्ता, मग़्ज़-ए-फ़ुन्दुक़, कुन्जद, मग़्ज़-ए-हब्बतुलख़ज़रा, मग़्ज़-ए-चिलग़ोज़ा, ख़शख़ाश सफ़ेद, मग़्ज़-ए-हब्बुलक़िलक़िल, मग़्ज़-ए-अन्जोलक,

खुस्यतुस्सअलब, मग़्ज़-ए-नारजील, मग़्ज़-ए-हब्बुज़्ज़लम, मग़्ज़-ए-बादाम,मग़्ज़-ए-दाना-ए-मुहल्लब, मग़्ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़रबूज़ा, मग़्ज़-ए-पंबादाना, मग़्ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़रबूज़ा प्रत्येक 35 ग्राम, कबाबा चीनी, क़िर्फ़ह, ख़ूलन्जान, दार चीनी, क़रन्फ़ुल, शक़ाक़ुल प्रत्येक 17.5 ग्राम, मस्तगी रूमी, बिस्बासा, लिसानुलअसाफ़ीर, सुंबुलुत्तीब, ज़ाफ़रान, माही रूबिरयाँ, बहमन सुर्ख़, बहमन सफ़ेद, तूदरी ज़र्द, तूदरी सफ़ेद, दरूनज अक़रबी, रेती से तैयार किया हुआ खुश्क क़ज़ीब-ए-गाव का बुरादा, तुख़्म-ए-ज़र्दक, तुख़्म-ए-शलग़म, तुख़्म-ए-शिब्त, दोक़ू प्रत्येक 21 ग्राम, हल्यून, बूज़ीदान, मुग़ास, तुख़्म-ए-पियाज़ प्रत्येक 10.5 ग्राम, मग़्ज़-ए-सर-ए-कुन्जशक, सूरन्जान, नअनाअ खुश्क प्रत्येक 14 ग्राम, माया-ए-शुत्र-ए-आराबी, ऊद ख़ाम प्रत्येक 14 ग्राम, फ़िलफ़िल, ज़न्जबील, दार-ए-फ़िलफ़िल, जौज़बोवा, दुवाला, नारमुश्क, फ़्रन्जमुश्क प्रत्येक 10.5 ग्राम, ज़रन्बाद, क़ुस्त शीरीं, तुख़्म-ए-अन्जोरह, असारून, तुख़्म-ए-करफ़्स प्रत्येक 7 ग्राम,अंबर अशहब 3.5 ग्राम, मुश्क 1.75 ग्राम, वरक़-ए-तिला, वरक़-ए-नुक़रा प्रत्येक 3.5 ग्राम, साफ़ शहद सभी के तीन गुना।

निर्माण-विधिः नियमानुसार माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 9 ग्राम।

आहारः माउलहिम्मस (चने का पानी), क़लियह, आधा उबाले हुए अन्डे की ज़र्दी और कबाब आदि उचित वस्तुएँ हैं।

- **लबूब-ए-कबीर का अन्य नुस्ख़ाः**

शुक्राणुओं की संख्या में बढ़ोत्तरी करता है। गुर्दा एवं कमर को मज़बूत करता है। लिंग में जोश एवं तनाव उत्पन्न करता है। गुर्दा एवं मूत्राशय की रेत को बाहर निकालता है। वीर्य पथ को चौड़ा करता है। काम वासना शक्ति में बेपनाह बढ़ोत्तरी करता है।

औषधियाँः मग़्ज़-ए-बादाम, मग़्ज़-ए-पिस्ता, कुन्जद मुक़श्शर, मग़्ज़-ए-फ़ुन्दुक़, मग़्ज़-ए-नारजील, तूदरी ज़र्द, तूदरी सुर्ख़, मग़्ज़-ए-चिलग़ोज़ा, मग़्ज़-ए-हब्बतुलख़ज़रा, बहमन सफ़ेद, मग़्ज़-ए-हब्बुज़्ज़लम, मग़्ज़-ए-हब्बुलक़िलक़िल, तुख़्म-ए-शलग़म, तुख़्म-ए-गज़र, तुख़्म-ए-इस्पस्त, तुख़्म-ए-पियाज़, ज़न्जबील, लिसानुलअसाफ़ीर, तुख़्म-ए-अन्जोरह, दार-ए-फ़िलफ़िल, क़रन्फ़ुल, कबाबा चीनी, बहमन सुर्ख़, दार चीनी, खुस्यतुस्सअलब, क़िर्फ़ह, शक़ाक़ुल मिश्री, ख़ूलन्जान, बूज़ीदान, तुख़्म-ए-हल्यून प्रत्येक 21 ग्राम, समग़-ए-अरबी, कतीरा प्रत्येक 3.5 ग्राम, बिस्बासा, जौज़बोवा और क़ाक़ला किबार प्रत्येक 10.5 ग्राम, ज़ाफ़रान, मस्तगी रूमी प्रत्येक 7 ग्राम, साफ़ शहद सभी औषधियों के तीन गुना।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 9 ग्राम।

- **लबूब-ए-सग़ीरः**

शुक्राणुओं की संख्या बढ़ाता, गुर्दा एवं कमर को मज़बूत करता, लिंग को सख़्त करता एवं जोश व तनाव भरता है।

औषधियाँः मग़ज़-ए-पिस्ता, मग़ज़-ए-चिलग़ोज़ा मग़ज़-ए-फुन्दुक, मग़ज़-ए-नारजील प्रत्येक 17.5 ग्राम, कुन्जद मुक़श्शर 35 ग्राम, लिसानुलअसाफ़ीर, हब्बुर्रशाद, तुख़्म-ए-इस्पस्त प्रत्येक 3.5 ग्राम, ज़न्जबील, कबाबा, दार-ए-फ़िलफ़िल, कुन्दुर प्रत्येक 7 ग्राम, फ़ानीज़ 35 ग्राम, बहमन सुर्ख़, बहमन सफ़ेद, तूदरी ज़र्द, तूदरी सुर्ख़ प्रत्येक 14 ग्राम, ख़ार-ए-ख़सक मुदब्बर, तुख़्म-ए-पियाज़, तुख़्म-ए-अन्जोरह प्रत्येक 7 ग्राम, कतीरा, समग़-ए-अरबी प्रत्येक 1.75 ग्राम,साफ़ शहद सब के तीन गुना।

निर्माण-विधिः नियमानुसार माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 9 ग्राम।

- **लबूब-ए-सग़ीर का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः मग़ज़-ए-बादाम, मग़ज़-ए-हब्बतुलख़ज़रा, मग़ज़-ए-फ़ुन्दुक़, मग़ज़-ए-चिलग़ोज़ा, मग़ज़-ए-हब्बुज़्ज़लम, मग़ज़-ए-हब्बुलक़िलक़िल, मग़ज़-ए-पिस्ता मग़ज़-ए-नारजील, मग़ज़-ए-बिही दाना प्रत्येक 17.5 ग्राम, ज़न्जबील, नारमुश्क, दार-ए-फ़िलफ़िल प्रत्येक 8.75 ग्राम, बताशा सभी के तीन गुना।

निर्माण-विधिः कूट कर बताशे का क़िवाम में मिलाएं।

सेवन-मात्राः 9 ग्राम।

- **लबूब का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गर्म स्वभाव के लोगो को ख़ूब रास आता है।

औषधियाँः मग़ज़-ए-नारजील, मग़ज़-ए-पिस्ता, शक़ाक़ुल मिश्री, मग़ज़-ए-बादाम, मग़ज़-ए-हब्बुज़्ज़लम, कुन्जद मुक़श्शर, ख़शख़ाश सफ़ेद, तूदरी सुर्ख़, तूदरी सफ़ेद, बहमन सुर्ख़ और बहमन सफ़ेद प्रत्येक 17.5 ग्राम,बताशा सब के तीन गुना।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर शर्बत-ए-तुरन्जबीन मिला कर माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

- **लबूब का अन्य नुस्ख़ाः**

*यह गर्म स्वभाव के लोगों के लिए उचित और लाभदायक है प्रन्तु यह लेखक द्वारा तैयार किया गया नुस्ख़ा नहीं है।*

औषधियाँः मग़्ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यारैन, मग़्ज़-ए-बादाम शीरीं, मग़्ज़-ए-अन्जोलक, मग़्ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़रबूज़ा, ख़शख़ाश सफ़ेद, मग़्ज़-ए-हब्बुलक़िलक़िल, मग़्ज़-ए-पंबादाना, ख़सक प्रत्येक 17.5 ग्राम, माही रूबियान, बहमन सुर्ख़ व सफ़ेद, तुख़्म-ए-ज़र्दक प्रत्येक 7 ग्राम, गावज़बान, सूरन्जान, माया-ए-शुत्र-ए-आराबी प्रत्येक 3.5 ग्राम, अन्जोरह 10.5 ग्राम, समग़-ए-अरबी, कतीरा प्रत्येक 3.5 ग्राम, तुख़्म-ए-अन्जोरह 10.5 ग्राम, करसना 7 ग्राम, ज़ाफ़रान, शक़ाक़ुल मिश्री और बूज़ीदान प्रत्येक 5.25 ग्राम, क़ज़ीब-ए-गाव का बुरादा 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर शर्बत-ए-तुरन्जबीन और क़न्द में मिला कर माजून तैयार करें। अगर चाहें तो उस में 115 ग्राम जायदुलफिक्र और वरक़-ए-नुक़रह 50 की संख्या में बढ़ा लें। इस को सुरक्षित करने हेतु शीशा या चीनी का पात्र अधिक उचित होता है। चालीस दिनों बाद प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 9 ग्राम।

- **माजून ज़रऊनीः**

कामोत्तजना के संदर्भ में यह एक अभूतपूर्व औषधि है। गुर्दावर्धक है। शुक्राणुओं की संख्या में बढ़ोत्तरी करता है। लिंग में जोश एवं तनाव उत्पन्न करता है। अंगवर्धक है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-करफ़्स, तुख़्म-ए-गज़र, नानख़्वाह, मग़्ज़-ए-तुख़्म-ए-खरबूज़, राज़ियाना, मग़्ज़-ए-तुख़्म-ए-बादरंग, पोस्त-ए-बीख़-ए-करफ़्स, तुख़्म-ए-शिब्त, मग़्ज़-ए-हब्बुज़्ज़लम, मग़्ज़-ए-हब्बुलक़िलक़िल, मग़्ज़-ए-नारजील, मग़्ज़-ए-चिलग़ोज़ा प्रत्येक 17.5 ग्राम, बिस्बासा, क़रन्फ़ुल, फ़िलफ़िलमोया, कबाबा चीनी, आक़रक़रहा, ज़न्जबील, तुख़्म-ए-इस्पस्त, तुख़्म-ए-जिर्जीर, तुख़्म-ए-पियाज़, हब्बुर्रशाद, अन्जोरह, तुख़्म-ए-गन्दना, ख़ूलन्जान, जौज़बोवा, दार-ए-फ़िलफ़िल, गुल-ए-क़रन्फ़ुल प्रत्येक 19.5 ग्राम, मस्तगी, कुन्दुर, ज़ाफ़रान, ऊद हिन्दी प्रत्येक 14 ग्राम, तुख़्म-ए-हल्यून, शक़ाक़ुल मिश्री, बूज़ीदान, बहमन सुर्ख़, बहमन सफ़ेद, लिसानुलअसाफ़ीर प्रत्येक 35 ग्राम, उन्सुल बिर्यां, ख़ुस्यतुस्सअलब, क़ज़ीब-ए-गाव का बुरादा, ख़सक मुदब्बर, मग़्ज़ सर-ए-कुन्जशक प्रत्येक 35 ग्राम, अंबर अशहब 7 ग्राम, मुश्क तुर्की 1.75 ग्राम, फ़ानीज़ सब के बराबर और साफ़ शहद दो गुना।

निर्माण-विधिः नियमानुसार माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः गर्म स्वभाव के व्यक्तियों के लिए 7 ग्राम और ठंडे स्वभाव के व्यक्तियों के लिए 17.5 ग्राम ।

अनुपानः इस माजून के प्रयोग करने के तुरंत बाद 35 मिली लीटर दूध या शर्बत-ए-क़न्द या माउलअस्ल प्रयोग करें।

कामोत्तजना के संदर्भ में इस से श्रेष्ठ कोई माजून नहीं है।

● **माजून ज़रऊनी का अन्य नुस्ख़ाः**

कमर, गुर्दा एवं आमाशय वर्धक है। बलग़म को निकालता है। मुँह की दुर्गंध दूर करता है। मुँह से लार टपकना बन्द करता है। आंत्रवायु को बाहर निकालता है। गुर्दा एवं मूत्राशय के रेत को साफ़ करता है। शुक्राणुओं की संख्या बढ़ाता है। कामोत्तेजना को बढ़ाता है। पीठ एवं कमर को बल प्रदान करता है।

औषधियाँः जुन्तियाना, दार-ए-फ़िलफ़िल, तुख़्म-ए-करफ़्स, सलीख़ा प्रत्येक 17.5 ग्राम, आक़रक़रहा, मस्तगी, ज़ाफ़रान, ऊद हिन्दी प्रत्येक 10.5 ग्राम, बिस्बासा, क़रन्फ़ुल, कबाबा चीनी प्रत्येक 7 ग्राम, अंबर अशहब 3.5 ग्राम, मुश्क 416 मिलीग्राम, शहद तीन गुना।

निर्माण-विधिः नियमानुसार माजून तैयार करें।

● **लबूब-ए-हकीम इमादुद्दीन महमूद शीराज़ीः**

औषधियाँः मग़्ज़-ए-फ़ुस्तुक़, मग़्ज़-ए-फ़ुन्दुक़, कुन्जद मुक़श्शर, मग़्ज़-ए-चिलग़ोज़ा, मग़्ज़-ए-बादाम, तूदरी सुर्ख़, तूदरी सफ़ेद, मग़्ज़-ए-अन्जोलक, मग़्ज़-ए-नारजील, आब्रेशम मुक़र्रज़, खाया-ए-ख़रूस, मग़्ज़-ए-सर-ए-कुन्जशक, ख़ुस्यतुस्सअलब मिश्री,ऊद हिन्दी, माही रूबियान प्रत्येक 17.5 ग्राम, ख़शख़ाश सफ़ेद, बिस्बासा प्रत्येक 35 ग्राम, क़ज़ीब-ए-गाव का बुरादा, लिसानुलअसाफ़ीर, बुसुद प्रत्येक 14 ग्राम, बादरन्जबोया, क़रन्फ़ुल, बीख़-ए-बाबूना, शक़ाक़ुल, ज़रन्बाद, ज़रनब, ज़न्जबील, जौज़बोवा, दार चीनी, कबाबा चीनी, लअल बदख़्शानी, याक़ूत रुम्मीनी, मरवारीद नासुफ़्ता, ख़ूलन्जान, बूज़ीदान प्रत्येक 10.5 ग्राम, मग़्ज़-ए-गर्दगान, मग़्ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़रबूज़ा, ज़ाफ़रान प्रत्येक 17.5 ग्राम, अंबर अशहब 7 ग्राम, मुश्क 3.5 ग्राम, वरक़-ए-नुक़रा 3.5 ग्राम, वरक़-ए-तिला 1.75 ग्राम, शहद सभी के समभाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम।

● **लबूब-ए-मुख़्तसरः**

औषधियाँः मग़्ज़-ए-बादाम,मग़्ज़-ए-गर्दगान, कुन्जद, मग़्ज़-ए-नारजील, मग़्ज़-ए-पिस्ता, मग़्ज़-ए-चिलग़ोज़ा, ख़शख़ाश सफ़ेद प्रत्येक 17.5 ग्राम, ख़ुस्यतुस्सअलब, शक़ाक़ुल, तूदरी सुर्ख़ व सफ़ेद, बूज़ीदान, कबाबा चीनी, दार-ए-चीनी, दार-ए-फ़िलफ़िल प्रत्येक 10.5 ग्राम, क़ज़ीब-ए-गाव, जौज़बोवा, तुख़्म-ए-गज़र,बिस्बासा प्रत्येक 14 ग्राम, आक़रक़रहा, मस्तगी, ज़ाफ़रान प्रत्येक 7 ग्राम, वरक़-ए-नुक़रा, अंबर अशहब प्रत्येक 4.5 ग्राम, मुश्क 2.25 ग्राम, शहद सब के तीन गुना। नियमानुसार माजून तैयार करें।

## ● माजून मुबह्ही का अन्य नुस्ख़ाः

हृदयवर्धक, मस्तिष्कवर्धक, आमाशयवर्धक और जिगरवर्धक है। पीठ, गुर्दा, कमर और लिंग को मज़बूत करता है। शरीर को मोटा करता है। यौन-क्रिया के संदर्भ में अत्यंत लाभदायक है। इन सब के अतिरिक्त इस के और भी बहुत सारे लाभ व गुण हैं।

औषधियाँः शक़ाक़ुल, ख़ूलन्जान, ख़ुस्यतुस्सअलब, जौज़बोवा, आक़रक़रहा, गुल-ए-सुर्ख़, ज़न्जबील, मग़्ज़-ए-बादाम, मग़्ज़-ए-नारजील, चिलग़ोज़ा और माया-ए-शुत्र-ए-आराबी प्रत्येक 22.5 ग्राम, कबाबा चीनी, लिसानुलअसाफ़ीर, हब्बुज़्ज़लम, मग़्ज़-ए-हब्बुलक़िलक़िल, सलीख़ा, असारून, उश्ना, साज़ज हिन्दी, बहमन सफ़ेद, ज़रन्बाद, बादरन्जबोया, फ़िलफ़िल, दार-ए- फ़िलफ़िल, दाना-ए-हील और याक़ूत सुर्ख़ प्रत्येक 18 ग्राम, दार चीनी, तुख़्म-ए-गज़र, तुख़्म-ए-शलग़म, तुख़्म-ए-इस्पस्त और तुख़्म-ए-करफ़्स प्रत्येक 27 ग्राम, तबाशीर सफ़ेद, सन्दल, याक़ूत ज़र्द, लअल, हजर-ए-यशब सब्ज़, अक़ीक़ यमनी और लाजवर्द मग़सूल प्रत्येक 9 ग्राम, मस्तगी रूमी, सुंबुलुत्तीब, तुख़्म-ए-हल्यून, दरूनज अक़रबी, इज़्ख़िर, ऊद क़िमारी, क़ज़ीब-ए-गाव पहाड़ी का बुरादा, कहरुबा, मरवारीद नासुफ़्ता और मरजान प्रत्येक 13.5 ग्राम, अंबर अशहब और जदवार खताई प्रत्येक 9 ग्राम, मग़्ज़-ए-फ़ुन्दुक़, मग़्ज़-ए-पिस्ता, मग़्ज़-ए-बादाम, मग़्ज़-ए-अन्जोलक और मग़्ज़-ए-हब्बतुलख़ज़रा प्रत्येक 9 ग्राम, काफ़ूर क़ैसूरी 2.25 ग्राम, मुश्क तुर्की 4.5 ग्राम, वरक़-ए-तिला 50 की संख्या में, वरक़-ए-नुक़रा 100 की संख्या में, शर्बत-ए-फ़वाकेह शीरीं और शर्बत-ए-सेब शीरीं प्रत्येक 135 ग्राम, अर्क़-ए-गुलाब, अर्क़-ए-बेद मुश्क और अर्क़-ए-गावज़बान प्रत्येक 225 ग्राम, नबात सफ़ेद और फ़ानीज़ प्रत्येक 225 ग्राम, शहद सभी औषधियों के तीन गुना।

निर्माण-विधिः नियमानुसार माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम से 9 ग्राम तक।

## ● मुक़व्वी माजून का अन्य नुस्ख़ाः

शुक्राणुओं की संख्या में बढ़ोत्तरी करता है। लिंग में जोश एवं तनाव उत्पन्न करता है। गुर्दा और कमर को मज़बूत करता है। अत्याधिक वाजीकर है। अगर किसी व्यक्ति की काम वासना समाप्त हो गई हो तो इस माजून के खाने से वह वापस लौट आती है। अगर बूढ़े लोग इस माजून को लगातार खाते रहें तो उन को अपने अन्दर जवानी की अनुभूति होती है।

औषधियाँः बूज़ीदान, ज़न्जबील, दार-ए-फ़िलफ़िल, क़रन्फ़ुल, लिसानुल असाफ़ीर प्रत्येक 10.5 ग्राम, शक़ाक़ुल, ख़ुस्यतुस्सअलब मिश्री, क़ज़ीब-ए-गाव, तुख़्म-ए-बादरन्जबोया, काकनज, मग़्ज़-ए-सर-ए-कुन्जशक, ख़ाया-ए-ख़रूस प्रत्येक

35 ग्राम, फ़िलफ़िल, दार चीनी, ज़रन्बाद, तुख़्म-ए-जिर्जीर, तुख़्म-ए-करफ़्स, तुख़्म-ए-गन्दना, तुख़्म-ए-शिब्त प्रत्येक 24.5 ग्रम, माही रूबियान, मग़ज़-ए-नारजील, मग़ज़-ए-हब्बुज्ज़लम, मग़ज़-ए-हब्बुलक़िक़िल, मग़ज़-ए-हब्बुस्सनोबर, मग़ज़-ए-पिस्ता, मग़ज़- ए-बादाम, मग़ज़-ए-फ़ुन्दुक़, मग़ज़-ए-हब्बतुलख़ज़रा और मवीज़ मुनक़्क़ा प्रत्येक 35 ग्राम, जदवार खताई, अफ़ियून मिश्री, जुन्द बेद स्तर और आक़रक़हा प्रत्येक 7 ग्राम, मग़ज़-ए-मुहल्लब और कुन्जद मुक़श्शर प्रत्येक 17.5 ग्राम, ख़ूलन्जान, क़िर्फ़ह, बहमन सुर्ख़ और बहमन सफ़ेद प्रत्येक 10.5 ग्राम, ज़ाफ़रान और ख़सक मुदब्बर प्रत्येक 35 ग्राम, ज़र्दी-ए-बैज़ा-ए-कुन्जशक 10 की संख्या में, बिस्बासा, जौज़बोवा और क़ाक़ला प्रत्येक 17.5 ग्राम, मरवारीद नासुफ़्ता, याक़ूत सुर्ख़, याक़ूत ज़र्द, लअल और यशब सब्ज़ प्रत्येक 7 ग्राम, क़ुर्स-ए-अफ़आ, फ़ाद ज़हर और मुश्क ख़ालिस प्रत्येक 3.5 ग्राम, अंबर अशहब 35 ग्राम, वरक़-ए-तिला 1.75 ग्राम,वरक़-ए- नुक़रह 3.5 ग्राम,नबात सफ़ेद सब के अर्धभाग और साफ़ शहद सभी औषधियों के तीन गुना।

निर्माण-विधिः नियमानुसार माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः बूढ़ों के लिए 7, जवानों के लिए 3.5 ग्राम है।

- **माजून मुबह्ही का नुस्ख़ाः**

यह ठंडे स्वाभाव के व्यक्तियों के लिए अनुकूल है।

औषधियाँः शक़ाक़ुल मिश्री, तूदरी सुर्ख़ व सफ़ेद, ज़न्जबील, तुख़्म-ए-काकनज, फ़िलफ़िल, कबाबा प्रत्येक 7 ग्राम, तुख़्म ज़र्दक, मग़ज़-ए-सर-ए-कुन्जशक, लिसानुलअसाफ़ीर प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर रोग़न-ए-अख़रोट में चर्ब करें। तीन भाग साफ़ शहद व बताशा मिला कर माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः बूढ़ों के लिए 7, जवानों के लिए 3.5 ग्राम है।

- **माजून का अन्य छोटा नुस्ख़ाः**

औषधियाँः तुख़्म-ए-काकनज, तुख़्म-ए-शलग़म, नानख़्वाह , तुख़्म-ए-पियाज़, शक़ाक़ुल, तुख़्म-ए-बादरन्जबोया प्रत्येक 17.5 ग्राम, फ़िलफ़िल, दार-ए-फ़िलफ़िल प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट कर तीन गुना क़न्द और शहद मिलाएँ।

सेवन-समय एवं सेवन-मात्राः सोते समय 7 ग्राम।

अनुपानः 236 मिली लीटर भैंस का दूध।

- **माजून का अन्य नुस्ख़ाः**

जे अत्यंत छोटा है लेकिन बहुत ही लाभदायक है।

औषधियाँः कुन्जद मुक़श्शर, तुख़्म-ए-बादरन्जबोया प्रत्येक 7 ग्राम, दार-ए-फ़िलफ़िल 1.75 ग्राम, मग़्ज़-ए-हब्बुस्सनोबर 3.5 ग्राम, मग़्ज़-ए-सर-ए-कुन्जशक 5.25 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट कर तीन गुना साफ़ शहद मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम।

- **माजून का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः मग़्ज़-ए-बादाम शीरीं, मग़्ज़-ए-पिस्ता,मग़्ज़-ए-फ़ुन्दुक़, मग़्ज़-ए-नारजील, मग़्ज़-ए-अखरोट, मग़्ज़-ए-हब्बुस्सनोबर, मग़्ज़-ए-हब्बुलक़िलक़िल, मग़्ज़-ए-हब्बुज़्ज़लम प्रत्येक 3.5 ग्राम, ज़न्जबील, दार-ए-फ़िलफ़िल, क़िर्फ़ह, ख़ूलन्जान प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट कर शहद व बताशा के साथ माजून तैयार करें।

सेवन-समय एवं सेवन-मात्राः सुबह और शाम 14 ग्राम।

- **माजून का अन्य नुस्ख़ाः**

अत्यंत वाजीकर और शक्तिवर्धक है। ठंडे स्वाभाव के व्यक्तियों के लिए अनुकूल है। इन सब के अतिरिक्त इस के और भी बहुत सारे लाभ और गुण हैं।

औषधियाँः तुख़्म-ए-बादरन्जबोया, मग़्ज़-ए-हब्बुस्सनोबर, काकनज, हब्बुज़्ज़लम, तूदरी सुर्ख़ एवं ज़र्द, बूज़ीदान, क़ुस्त शीरीं, ज़न्जबील, दार-ए-फ़िलफ़िल, तुख़्म-ए-शिब्त प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर रोग़न-ए-गाव में चर्ब करें और उन के तीन भाग साफ़ शहद मिला कर माजून तैयार करें।

सेवन-समय एवं सेवन-मात्राः सोते समय 10.5 ग्राम।

- **दवाउत्तुरन्जबीनः**

यह गर्म स्वाभाव के व्यक्तियों के अनुकूल और उन के लिए लाभदायक है।

औषधियाँः तुरन्जबीन सफ़ेद 420 ग्राम, फ़ानीज़ 210 ग्राम, दूध 840 मिलीलीटर और आब-ए-ख़सक।

निर्माण-विधिः तुरन्जबीन सफ़ेद 420 ग्राम लें और ताज़ा आब-ए-ख़सक में मिला कर साफ़ कर लें फिर उस में फ़ानीज़ 210 ग्राम और दूध 840 मिलीलीटर डाल कर क़िवाम तैयार करें।

सेवन-समय एवं सेवन-मात्राः सोते समय 4.5 ग्राम।

- **दवाउत्तुरन्जबीन का अन्य नुस्ख़ाः**

इस के भी वही गुण एवं लाभ हैं अर्थात गर्म स्वाभाव के व्यक्तियों के लिए अनुकूल और लाभदायक है।

औषधियाँः मग़्ज़-ए-तुख़्म-ए-कदू, मग़्ज़-ए-पिस्ता, मग़्ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यारैन, मग़्ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़रबूज़ा, मग़्ज़-ए-बादाम शीरीं प्रत्येक 10.5 ग्राम, तुख़्म-ए-बादरन्जबोया, तुख़्म-ए-मारचोबा, तूदरी सुर्ख़, तूदरी सफ़ेद, तुख़्म-ए-शिब्त, तुख़्म-ए-शलग़म, बहमन सुर्ख़, बहमन सफ़ेद प्रत्येक 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर और मग़्ज़ियात को नर्म कर के शर्बत-ए-तुरन्जबीन और बताशा में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 17.5 ग्राम।

- **माजून का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से गर्म स्वभाव के व्यक्तियों की काम शक्ति में बढ़ोत्तरी होती है।

औषधियाँः आब-ए-ख़सक ताज़ा और आब-ए-अनार अमलसी प्रत्येक 420 मिलीलीटर, फ़ानीज़ सन्जरी 210 ग्राम, तुख़्म-ए-अस्पस्त 70 ग्राम।

निर्माण-विधिः दोनों को एक साथ मिला कर हल्की आँच पर क़िवाम तैयार करें और फिर उस में तुख़्म-ए-अस्पस्त 70 ग्राम की मात्रा में कूट छान कर मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

- **दवाउलख़सकः**

यह वाजीकर है प्रन्तु मात्र गर्म स्वभाव के व्यक्तियों के लिए ही लाभदायक है।

औषधियाँः आब-ए-ख़सक ताज़ा 35 ग्राम, फ़ानीज़ सन्जरी 1632 ग्राम, गाय का दूध 408 मिलीलीटर।

निर्माण-विधिः सब को एक साथ मिला कर हल्की आँच पर क़िवाम तैयार करें। फिर उस में तुख़्म-ए-अस्पस्त 105 ग्राम, मारचोबा 35 ग्राम और ख़ुस्यतुस्सअलब 1.75 ग्राम की मात्रा में कूट छान कर मिलाएँ।

सेवन-समय एवं सेवन-मात्राः सुबह और शाम 4.5 ग्राम।

- **दवाउलख़सक का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बहुत ही वाजीकर है। लिंग में जोश एवं तनाव उत्पन्न करता है। गुर्दा एवं मूत्राशय में पाई जाने वाली पथरी को तोड़ता है और वीर्यपथ को साफ़ करता है।

औषधियाँः ख़सक, आब-ए-ख़सक, दूध और फ़ानीज़।

निर्माण-विधिः ख़सक को कूट कर ताज़ा आब-ए-ख़सक में कई बार मुदब्बर करें और फिर सुखा लें। दूध के साथ 140 ग्राम बताशा मिला कर क़िवाम तैयार करें फिर उस में 105 ग्राम की मात्रा में उपर्युक्त सुखाया हुआ ख़सक मिला दवा तैयार करें।

सेवन-समय एवं सेवन-मात्राः सुबह और शाम 4.5 ग्राम।

- **दवाउलबस्ल का नुस्ख़ा:**

शुक्राणुओं को पैदा करता है। लिंग में जोश एवं तनाव उत्पन्न करता है। साथ ही यह बहुत ही वाजीकर है।

औषधियाँ: आब-ए-पियाज़ 816 मिलीलटर और गाय का दूध 1224 मिलीलीटर।

निर्माण-विधि: दोनों को एक साथ मिला कर हल्की आँच पर क़िवाम तैयार करें। अगर इस दवा को और प्रभावशाली बनाने का इरादा हो तो उस में तुख़्म-ए-अस्पस्त 35 ग्राम, ज़न्जबील और दार-ए-फ़िलफ़िल प्रत्येक 7 ग्राम और तुख़्म-ए-मारचोबा 17.5 ग्राम की मात्रा में कूट छान कर मिलाएँ।

सेवन-मात्रा: 4.5 ग्राम।

- **दवाउलअन्फ़हा का नुस्ख़ा:**

यह बहुत ही वाजीकर है और लिंग में जोश एवं तनाव उत्पन्न करता है।

औषधियाँ: माया-ए-शुत्र-ए-आराबी, सर्गीन-ए-गाव,सलीख़ा, रेती से तैयार किया हुआ क़ज़ीब-ए-गाव का बुरादा, ख़ूलन्जान, ज़न्जबील, तुख़्म-ए-अस्पस्त प्रत्येक समभाग में।

निर्माण-विधि: सब को कूट कर साफ़ शहद के साथ मिला कर दवा तैयार करें।

सेवन-मात्रा: 3.5 ग्राम।

- **माजून ख़ुस्यतुस्सअलब:**

शुक्राणुओं को पैदा करता है। लिंग में सख़्ती पैदा करता है और जोश एवं तनाव भी उत्पन्न करता है। काम वासना को उभारता है। यह बहुत ही वाजीकर है।

औषधियाँ: ख़ुस्यतुस्सअलब मिश्री 42 ग्राम, मग़ज़-ए-पंबादाना 35 ग्राम, मग़ज़-ए-हब्बुस्सनोबर, कुन्जद मुक़श्शर, तुख़्म-ए-बादरन्जबोया, दार-ए-फ़िलफ़िल प्रत्येक 24.5 ग्राम, माया-ए-शुत्र-ए-आराबी, तुख़्म-ए-ज़र्दक, शक़ाक़ुल मिश्री, मग़ज़-ए-सर-ए-कुन्जशक, रेती से तैयार किया हुआ क़ज़ीब-ए-गाव का बुरादा प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: नियमानुसार सब को कूट छान लें और उन के तीन गुना साफ़ शहद के साथ मिला कर माजून तैयार करें।

सेवन-मात्रा: 9 ग्राम।

- **माजून का अन्य नुस्ख़ा:**

यह बहुत ही वाजीकर है। कामवर्धक है। लिंग में सख़्ती और शुक्राणु पैदा करता है। काम वासना को उभारता है।

औषधियाँ: ख़ुस्यतुस्सअलब मिश्री, शक़ाक़ुल शीरीं, तुख़्म-ए-अस्पस्त, तुख़्म-ए-मारचोबा, तुख़्म-ए-ज़र्दक, ख़ूलन्जान, ज़रन्बाद, सुंबुलुत्तीब प्रतयेक 22.5 ग्राम,

माया-ए-शुत्र-ए-आराबी, क़ज़ीब-ए-गाव, मग़्ज़-ए-सर-ए-कुन्जशक, कुन्जद मुक़श्शर प्रतयेक 10.5 ग्राम, दार-ए-फ़िलफ़िल, कबाबा चीनी, बूज़ीदान, तुख़्म-ए-हल्यून, तूदरी सुर्ख़ और तूदरी सफ़ेद प्रत्येक 9 ग्राम, खुर्मा, बिस्बासा, ज़ाफ़रान और मस्तगी रूमी प्रत्येक 13.5 ग्राम, मुश्क और अंबर अशहब प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर उस शराब-ए-मुसल्लस में मिलाएँ जो अंगूर या किशमिश का उसारा पका कर बनाया हो।

सेवन-समय एवं सेवन-मात्राः सुबह के समय 9 ग्राम।

अनुपानः माउल्लहम या गाय का दूध या माउलहिम्मस।

❑❑❑

## चतुर्थ वर्गः विरेचक एवं मृदु विरेचक माजूनों के नुस्खे

- **माजून तुर्बुदः**

इस के प्रयोग से शौच साफ़ होता है। यह गठिया, जोड़ों के दर्द, पेट दर्द, गुर्दा के फोड़ों, मूत्राशय के फोड़ों, आँत के फोड़ों में लाभदायक और Antiflatulence है। यह पीलिया, जलोदर, लक़वा, बलग़मी क़ूलन्ज, रीही क़ूलन्ज और नसों के ढीलेपन में लाभदायक है। गुर्दा एवं मूत्राशय के लाल एवं गाढ़े देहद्रव्यों को साफ़ करता है। बन्द माहवारी को खोलता है। शरीर के विभिन्न अंगों एवं जोड़ो के दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँः ग़ारीक़ून, वज तुर्की, असारून, क़िर्दमाना, तुख़्म-ए-सुद्दाब, नानख़्वाह और क़रन्फ़ुल प्रत्येक 70 ग्राम, जुन्तियाना 210 ग्राम, हाशा और तुख़्म-ए-हाशा प्रत्येक 105 ग्राम, सुंबुलुत्तीब, पोदीना कोही, फ़ुत्रासालियून, कमाज़रयूस और उस्क़ूर्दियून प्रत्येक 280 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर पकाएँ। साफ़ शहद में मिला कर माजून तैयार करें।

प्रयोग-समयः रबी के मौसम में प्रयोग करें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम से 7 ग्राम तक।

- **अन्य नुस्खाः**

यह गठिया, जोड़ों के दर्द, पेट दर्द, गुर्दा के दर्द, आँत के फोड़ों, जलोदर और पीलिया में लाभदायक है। आमाशय और आँतों की गैस को तोड़ता है। यह बलग़मी क़ूलन्ज, रीही क़ूलन्ज, लक़वा और तशन्नुज (Spasm) में लाभदाय है। गुर्दा एवं मूत्राशय के अपशिष्ट उत्पादों को निकालता है। बन्द माहवारी को खोलता है।

औषधियाँः ग़ारीक़ून, वज, असारून, क़िर्दमाना, तुख़्म-ए-सुद्दाब, फ़र्फ़ियून, फ़ूह, ज़ूफ़ा ख़ुश्क प्रत्येक 70 ग्राम, ज़रावन्द तवील, हाशा, तुख़्म-ए-करफ़्स, बीख़-ए-अर्तनीशा, नानख़्वाह, क़रन्फ़ुल प्रत्येक 70 ग्राम, जुन्तियाना 210 ग्राम, सुंबुलुत्तीब, मुर मक्की, फ़ूदनज कोही, फ़ुत्रासालियून प्रत्येक 70 ग्राम, क़ुस्त तल्ख़, सलीख़ा, फ़रासियून, जअदह प्रत्येक 105 ग्राम, कमाज़रयूस, कमाफ़ीतूस और उस्क़ूर्दियून प्रत्येक 280 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान लें और उन के तीन गुना साफ़ शहद में मिला कर माजून तैयार करें।

- **माजून ज़ुबलः**

यह क़ूलन्ज को खोलता है।

औषधियाँः ज़ुबलुज़्ज़िअब 14 ग्राम, मुर मक्की, तुर्बुद सफ़ेद प्रत्येक 28 ग्राम,

तुख़्म-ए-करफ़्स, अनीसून प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः नियमानुसार माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम से 14 ग्राम तक।

अनुपानः आब-ए-करफ़्स के साथ प्रयोग करें।

- **माजून ज़बीबः**

इस के प्रयोग से शौच साफ़ होता है और यह मिर्गी के लिए लाभदायक है।

औषधियाँः पोस्त-ए-हलीला काबुली, पोस्त-ए-हलीला ज़र्द, पोस्त-ए-बलीला, आमला मुनक़्क़ा, उस्तुखुद्दूस प्रत्येक 35 ग्राम, ऊद सलीब 17.5 ग्राम, आक़रक़रहा 10.5 ग्राम, मवीज़ मुनक़्क़ा 420 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को मवीज़ के साथ कूटें।

सेवन-मात्राः 17.5 ग्राम।

- **माजून जुबलः**

यह क़ूलन्ज को खोलता है।

औषधियाँः जौज़बोवा, क़िर्फ़ह, सलीख़ा, दार-ए-फ़िलफ़िल, ज़न्जबील, ब्रंग काबुली, आमला मुनक़्क़ा, क़रन्फ़ुल प्रत्येक 4.5 ग्राम, ज़ाफ़रान,तुख़्म-ए-करफ़्स, मस्तगी, सुंबुलुत्तीब प्रत्येक 2.25 ग्राम,रोग़न-ए-बादाम में चर्ब तुर्बुद मुक़श्शर 35 ग्राम, सक़मूनिया मुशव्वा 4.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः नियमानुसार माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **सनादरीतूस अकबरः**

इस माजून के लाभ एवं इसकी विशेषताएँ अनेक हैं। यह अत्यंत प्रभावशाली हैं। ठंडे स्वभाव के व्यक्ति, जिगर के दर्द, आमाशयक के दर्द, आँतों के दर्द, तिल्ली के दर्द, गुर्दा के दर्द, आँड़ की सूजन, पुराने बुख़ारों, क़ूलन्ज और पुराने रोगों में लाभदायक है। चिपचिपे गाढ़े बलग़म को बाहर निकालता है। स्मृति-शक्ति के लोप, दृष्टिहीनता, श्वास की तंगी को समाप्त करता है। शरीर के अपशिष्ट पदार्थों को साफ़ करता है। गैस को तोड़ता है। जिगर एवं तिल्ली के सुद्दों को समाप्त करता है। जलोदर रोग, कुष्ठ रोग, स्वित्र, Ptyriasis and Ring worm को समाप्त करता है। पथरी, रेत और देहद्रव्यों को बाहर निकालता है। कंपन्न, पक्षघात, मिर्गी और मुर्छा के रोग को समाप्त करता है। शक्तिवर्धक है और सभी ठंडे रोगों में लाभदायक है।

जालीनूस स्वयं इस सत्य को मानता है कि हकीमों ने इस महत्वपूर्ण एवं मुबारक माजून

को हमारे समय से पहले तैयार किया था और उन्हों ने इस का नाम अपने समय के एक यूनानी बादशाह के नाम पर रखा था। इस की सेवन-मात्रा 18 ग्राम है। मतबूख़-ए-अफ़्तीमून और ग़ारीक़ून को सम्मिलित करना हकीम की सोच पर आधारित है।

औषधियाँ: सिब्र सक़ूतरी 52.5 ग्राम, ग़ारीक़ून 70 ग्राम, ज़ाफ़रान, दारचीनी, मस्तगी रूमी, वज तुर्की, रोग़न-ए-बलसाँ, हब्ब-ए-बलसाँ, फ़र्फ़ियून, फ़िलफ़िल स्याह, हमामा, दार-ए-फ़िलफ़िल, मुर मक्की, जुन्तियाना रूमी, फ़ुक़ाह-ए-इज़्ख़र और फ़िलफ़िल स्याह प्रत्येक 7 ग्राम, क़ुस्त तल्ख़, कमाज़रयूस और अफ़्तीमून इक़्लीती प्रत्येक 14 ग्राम, असारून, सलीख़ा और सक़मूनिया प्रत्येक 21 ग्राम, सुंबुलुत्तीब 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर रोग़न-ए-बलसाँ में चर्ब करें और उनके तीन गुना साफ़ शहद के साथ मिलाएँ।

सेवन-मात्रा: 18 ग्राम।

अनुपान: हल्के गर्म पानी के साथ प्रयोग करें।

- **सनादरीतूस सग़ीर:**

इस के लाभ भी लगभग सनादरीतूस कबीर जैसे ही हैं।

औषधियाँ: सिब्र ज़र्द 10.5 ग्राम, ग़ारीक़ून 21 ग्राम, ज़ाफ़रान, वज तुर्की, दारचीनी, मस्तगी रूमी, सूरन्जान और सलीख़ा प्रत्येक 10.5 ग्राम, कमाज़रयूस, फ़िलफ़िल अबयज़, फ़िलफ़िल असवद, असारून और ऊद-ए-बलसाँ प्रत्येक 7 ग्राम, जून्द बेद स्तर 14 ग्राम, मुर मक्की और सुंबुलुत्तीब प्रत्येक 3.5 ग्राम, शहद सभी औषधियों के तीन गुना।

निर्माण-विधि: नियमानुसार माजून तैयार करें।

सेवन-मात्रा: 18 ग्राम।

अनुपान: गर्म पानी के साथ प्रयोग करें।

- **कलकलानज कबीर:**

तरल पदार्थों की अधिकता से वाले आमाशय की कमज़ोरी, पुराने बुख़ार और मूत्रदमन में लाभदायक है। बहक़ (Ptyriasis), स्वित्र, बलग़मी खाँसी और श्वास की तंगी को दूर करता है। सामान्य सूजन और गाढ़े तरल पदार्थों की अधिकता से होने वाले जिगर एवं तिल्ली के सुद्दों में लाभदायक है। क़ूलन्ज, जलोदर, हिस्टीरिया और गर्भाशय की संबंध से होने वाली मिर्गी, स्त्री रोगों एवं ठंडे स्वभाव के व्यक्तियों के लिए लाभदायक है।

औषधियाँ: हलीला काबुली,बलीला और आमला मुनक़्क़ा प्रत्येक 24.5

ग्राम, फ़िलफ़िल, दार-ए-फ़िलफ़िल, ज़न्जबील, फ़िलफ़िलमोया, नमक-ए-हिन्दी सुर्ख़, नमक-ए-हिन्दी स्याह, नमक-ए-इन्द्राणी, नमक-ए-तबरज़द, नमक-ए-ख़मीर, लिसानुलअसाफ़ीर, शीतरज हिन्दी, सअद, जौज़बोवा, क़िर्फ़ह, क़रन्फ़ुल, ब्रंग काबुली मुक़श्शर, सअतर फ़ारसी, शोनीज़ और हब्बुन्नील प्रत्येक 17.5 ग्राम, तुर्बुद 52.5 ग्राम, फ़ुलूस ख़्यार शंबर 52.5 ग्राम, मवीज़ मुनक़्क़ा 408 ग्राम, आमला मुनक़्क़ा 816 ग्राम।

निर्माण-विधिः मवीज़ एवं आमला को पानी में इतना पकाएँ कि दो भाग पानी जल जाए और एक भाग शेष रह जाए।

अब उस अवशेष में फुलूस ख़्यार शंबर को मिला कर साफ़ करें। यह प्रक्रिया कई बार करें और फिर उस में 12 किलो 48 ग्राम फ़ानीज़ अर्थात बताशा डाल कर हल्की आँच पर पकाएँ।

तत्पश्चात उस में 408 ग्राम ताज़ा रोग़न-ए-कुन्जद मिला कर क़िवाम तैयार करें। शेष औषधियों को कूट छान कर उस क़िवाम में सम्मिलित करें।

प्रयोग-समयः आवश्यकता के समय।

सेवन-मात्राः 14 ग्राम से 17.5 ग्राम तक।

- **अन्य नुस्ख़ाः**

जलोदर रोग और जिगर एवं तिल्ली के रोगों में लाभदायक है। क़ूलन्ज को दूर करता है। वायुनाशक है। पीलिया एवं Chronic abscess में लाभदायक है। बलग़म एवं तरल पदार्थों की अधिकता के कारण होने वाले रोगो का हरण करता है।

औषधियाँः लुक-ए-मग़सूल, वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़, दोक़ू सुंबुलुत्तीब, फ़ुत्रासालियून, फ़ूह जिस को रूनास कहा जाता है, रेवन्द चीनी, नमक-ए-हिन्दी, बीख़-ए-सोसन आसमान्जोनी जो कि ईर्सा होती है, ग़ारीक़ून प्रत्येक 21 ग्राम, कमाज़र्यूस, सीसालियूस, ज़रावन्द तवील, असारून, मस्तगी, ऊद-ए-बलसाँ, जुन्तियाना, ब्रन्ग काबुली मुक़श्शर, सलीख़ा प्रत्येक 35 ग्राम, ग़ाफ़िस, उसारा-ए-अफ़्सन्तीन, सअद, इज़्ख़िर, पोस्त-ए-हलीला स्याह प्रत्येक 52.5 ग्राम, पोस्त-ए-हलीला ज़र्द 70 ग्राम, आमला मुक़श्शर 1224 ग्राम, ख़ुर्मा-ए-हिन्दी 175 ग्राम, मवीज़ मुनक़्क़ा 416 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को 1 किलो 128 ग्राम पानी में इतना पकाएँ कि तीन भाग जल जाए और एक भाग शेष रह जाए। अब उस अवशेष में 4.8 ग्राम ताज़ा फुलूस ख़्यार शंबर और 2448 ग्राम बताशा मिला कर साफ़ करें और मधु की भाँति गाढ़ा क़िवाम तैयार करें। तत्पश्चात उस में 600 ग्राम रोजन-ए-कुन्जद मिलाएँ। फिर उस में 70 ग्राम माज़र्यून को 408 मिलीलीटर पानी और 105 मिलीलीटर रोग़न-ए-बादाम शीरीं में पका कर सम्मिलित करें। अंत में उस को उपरोक्त बताशा के क़िवाम में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 14 ग्राम से 17.5 ग्राम तक।

अनुपानः दूध या आब-ए-इनबुस्सअलब के साथ।

- **कलकलानज बारिदः**

गर्मी के कारण होने वाले जलोदर रोग में लाभदायक है।

औषधियाँः माज़रयून मुदब्बर, ग़ारीक़ून, मग़ज़-ए-बादाम मुक़श्शर, पोस्त-ए-हलीला ज़र्द प्रत्येक 17.5 ग्राम, सोसन आसमान्जोनी, गुल-ए-सुर्ख़, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-खरपज़ह, तुख़्म-ए-कासनी, रुब्बुस्सूस प्रत्येक 7 ग्राम, तुरन्जबीन, मग़ज़-ए-फ़ुलूस ख़्यार शंबर, फ़ानीज़ सन्जरी प्रत्येक 52.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः जिन औषधियों से क़िवाम तैयार किया जाता है उन्हें साफ़ करके क़िवाम तैयार करें और शेष औषधियों को कूट छान कर उस में सम्मिलित करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम से 14 ग्राम तक।

- **कलकलानज हारः**

यह ऐसे जलोदर रोग में लाभदायक है जो गर्मी के कारण उत्पन्न ना हुआ हो।

औषधियाँः माज़रयून मुदब्बर, ग़ारीक़ून, पोस्त-ए-हलीला ज़र्द और सकबीनज प्रत्येक 17.5 ग्राम, ईर्सा 10.5 ग्राम, रेवन्द चीनी, उसारा-ए-ग़ाफ़िस, सुंबुलुत्तीब और अनीसून प्रत्येक 3.5 ग्राम, शहद सभी औषधियों के तीन गुना।

निर्माण-विधिः नियमानुसार माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः आवश्यकतानुसार 10.5 ग्राम।

- **कलकलानज का अन्य नुस्ख़ाः**

जिगर एवं तिल्ली के सुद्दों और पेशाब करने में असुविधा (Dysuria) में लाभदायक है। साँस की तंगी और कूलन्ज को दूर करता है। बलग़म एवं तरल पदार्थों के कारण होने वाले पुराने बुख़ारों को समाप्त करता है। मस्तिष्क के तरल पदार्थों के कारण होने वाली पुरानी ठंडक को दूर करता है।

औषधियाँः पोस्त-ए-हलीला ज़र्द, पोस्त-ए-बलीला, आमला मुक़श्शर, फ़िलफ़िल, शीतरज हिन्दी, जदवार, ज़न्जबील, हब्बुन्नील, ब्रंग काबुली, किशनीज़ ख़ुश्क, नानख़्वाह, फ़िलफ़िलमोया, तुख़्म-ए-करफ़्स, लिसानुलअसाफ़ीर, ज़ीरा किर्मानी और बुन्दुक़ हिन्दी प्रत्येक 17.5 ग्राम, शीरा-ए-फ़ुलूस ख़्यार शंबर, नमक-ए-हिन्दी, क़िर्फ़ह, साज़ज हिन्दी, क़ाक़ला किबार, क़ाक़ला सिग़ार और शोनीज़ प्रत्येक 10.5 ग्राम, तुर्बुद सफ़ेद 350 ग्राम, मवीज़ मुनक़्क़ा 350 ग्राम, आमला 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः मवीज़ एवं आमला को साफ़ कर के 8.2 किलोग्राम पानी में

पकाएँ। शेष को कूट छान कर 840 ग्राम ताज़ा रोग़न-ए-कुन्जद में सम्मिलित करें। फिर सब को एक साथ अच्छी तरह मिलाएँ। चीनी या शीशे के पात्र में सुरक्षित कर लें।

सेवन-मात्राः 18 ग्राम।

- **अनक़रूया मुलय्यनः**

मिर्गी, पक्षघात, लक़वा, कंपन्न एवं Flaccidity of nerves में लाभदायक है। मस्तिष्क के पदार्थों को साफ़ करता है। बुद्धिवर्धक है और स्मृण-शक्ति को बढ़ाता है। बूढ़े एवं ठंडे स्वभाव के व्यक्तियों के अनुकूल है। शौच साफ़ और नर्म होता है।

औषधियाँः सुंबुलुत्तीब, सलीख़ा, साज़ज हिन्दी, मू, फ़ूह, ज़ाफ़रान, दरमनह तुर्की, अफ़्तीमून, फ़ुक़ाह-ए-इज़्ख़िर, रेवन्द चीनी, हब्ब-ए-बलसाँ और क़रन्फ़ुल प्रत्येक 7 ग्राम, हब्बुलबान मुक़श्शर और ज़न्जबील प्रत्येक 3.5 ग्राम, मस्तगी रूमी और दार-ए-फ़िलफ़िल प्रत्येक 7 ग्राम, सिब्र ज़र्द 35 ग्राम, पोस्त-ए-बीख़-ए-राज़ियाना 1260 ग्राम, पुराना सिर्का 1260 ग्राम।

निर्माण-विधिः पोस्त-ए-बीख़-ए-राज़ियाना को तीन दिन पुराने सिर्का में भिगोने के बाा पत्थर की देग में तीन चार बार पका कर उतार लें। पोस्त-ए-बीख़-ए-राज़ियाना को मल व निचोड़ कर साफ़ कर लें और उस का तलछट फेंक दें। तत्पश्चात उस क्वाथ में 1470 ग्राम साफ़ शहद मिला कर क़िवाम तैयार करें। फिर उस में 10.5 ग्राम की मात्रा में बलादुर सम्मिलित करें और शेष औषधियों को कूट छान कर उस में मिलाएँ।

प्रयोग-समयः छः महीने के बाद प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम।

अनुपानः हल्के गर्म पानी के साथ प्रयोग करें।

- **"मिन्हाजुल्नुबुल्वह" से लिया गया अन्य नुस्ख़ाः**

Flaccidity of nerves, बलग़मी दर्द, भूलने का रोग, मिर्गी, ठंडक के कारण होने वाले सर दर्द, पेट दर्द, सर दर्द और ठंडक के कारण होने वाले सभी प्रकार के दर्दों में लाभदायक है।

औषधियाँः साज़ज हिन्दी, सुंबुलुत्तीब, मुर साफ़, सलीख़ा, ज़ाफ़रान, अफ़्तीमून , दरमनह तुर्की, इज़्ख़िर, रेवन्द वीनी, हब्बुलबान मुक़श्शर, क़रन्फ़ुल प्रत्येक 31.5 ग्राम, अस्ल-ए-बलादुर, मस्तगी रूमी प्रत्येक 9 ग्राम, हब्ब-ए-बलसाँ, ज़न्जबील, सिब्र सक़ूतरी प्रत्येक 33.75 ग्राम, ग़ारीक़ून 70 ग्राम, अस्ल-ए-सोसन आसमान्जोनी 67.5 ग्राम, पोस्त-ए-बीख़-ए-राज़ियाना 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः पोस्त-ए-बीख़-ए-राज़ियाना को तीन दिन तक सिर्का में भिगोने

के पश्चात पत्थर की देग में पाँच छः बार हल्की आँच पर पका कर उतार लें। पोस्त बीख़-ए-राज़ियाना को निचोड़ कर साफ़ कर लें और उस का तलछट फेंक दें। तत्पश्चात उस में तीन गुना साफ़ शहद में मिला कर क़िवाम तैयार करें और शेष को कूट कर मिलाएँ। शीशे के पात्र में सुरक्षित कर लें।

प्रयोग-समयः छः महीने के बाद प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम।

अनुपानः हल्के गर्म पानी के साथ प्रयोग करें।

- **"शरह-ए-अस्बाब व अलामात" से लिया गया नुस्ख़ाः**

भूलने का रोग(Amnesia), पक्षघात और बलग़म की अधिकता के कारण होने वाले सभी प्रकार के दिमाग़ी रोगों में लाभदायक है। यह माजून पुराने हकीमों का आज़माया हुआ नुस्खा है। स्मृण-शक्ति के लिए बहुत प्रभावशाली है।

औषधियाँः अस्ल-ए-बलादुर 70 ग्राम, सिब्र सक़ूतरी 36 ग्राम, ग़ारीक़ून 108 ग्राम, सलीख़ा, ज़रावन्द, वज तुर्की, ज़ाफ़रान, दार चीनी, मस्तगी रूमी प्रत्येक 27 ग्राम, क़ुस्त तल्ख़, तुख़्म-ए-सुद्दाब, फ़िलफ़िल सफ़ेद प्रत्येक 36 ग्राम,अफ़्तीमून 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट कर तीन गुना साफ़ शहद में मिलाएँ।

प्रयोग-समयः छः महीने के बाद प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

अनुपानः गर्म पानी के साथ प्रयोग करें।

- **"मिन्हाजुन्नुबुव्वह" से लिया गया अन्य नुस्ख़ाः**

Flaccidi ty ofnerves, बलग़म की अधिकता के कारण आने वाला चक्कर, भूलने का रोग, मिर्गी, ठंडक से होने वाले सर दर्द, पेट दर्द, सर दर्द और सभी प्रकार के दर्दों में लाभदायक है।

औषधियाँः साज़ज हिन्दी, सुंबुलुत्तीब, मुर साफ़, सलीख़ा, ज़ाफ़रान, अफ़्तीमून ,दरमनह तुर्की, इज़्ख़िर, रेवन्द वीनी, हब्बुलबान मुक़श्शर, क़रन्फ़ुल प्रत्येक 33.75 ग्राम,अस्ल-ए-बलादुर, मस्तगी रूमी प्रत्येक 4.5 ग्राम, हब्ब-ए-बलसाँ, ज़न्जबील, सिब्र सक़ूतरी प्रत्येक 33.75 ग्राम, ग़ारीक़ून 36 ग्राम, बीख़-ए-सोसन आसमान्जोनी 67.5 ग्राम, पोस्त-ए-बीख़-ए-राज़ियाना 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः पोस्त बीख़-ए-राज़ियाना को तीन रात एवं तीन दिन सिर्का में भिगोने के बाद पत्थर की देग में पाँच छः बार हल्की आँच पर पका कर उतार लें। पोस्त बीख़-ए-राज़ियाना को मल व निचोड़ कर साफ़ कर लें और उस का तलछट फेंक

दें। तत्पश्चात उस में तीन गुना साफ़ शहद में मिला कर क़िवाम तैयार करें और शेष को कूट छान कर उस में मिलाएँ। शीशे या चीनी के पात्र में सुरक्षित कर लें।

प्रयोग-समयः छः महीने के बाद प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम।

अनुपानः हल्के गर्म पानी के साथ प्रयोग करें।

- **दवाउलमिस्क का नुस्ख़ाः**

आमाशय के तरल पदार्थ साफ़ करता है। स्वरयंत्र-प्रदाह और सौदावी स्पंदन में लाभदायक है। इस से शौच साफ़ होता है।

औषधियाँः अफ़्सन्तीन रूमी, सिब्र सक़ूतरी, रेवन्द चीनी प्रत्येक 28 ग्राम, नानख़्वाह , ज़ाफ़रान, तुख़्म-ए-करफ़्स प्रत्येक 14 ग्राम, मुश्क, नारदीन, साज़ज हिन्दी और मुर साफ़ प्रत्येक 7 ग्राम, जुन्द बेद स्तर 5.25 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर शहद में मिलाएँ।

- **दवाउलमिस्क का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः मस्तगी रूमी, ज़ाफ़रान, अफ़्सन्तीन, बादरन्जबोया, अफ़्तीमून रूमी प्रत्येक 1.75 ग्राम, ज़रन्बाद, दरूनज अक़रबी और मुश्क तुर्की प्रत्येक 7 ग्राम, मरवारीद नासुफ़्ता, कहरुबा, बुसुद और आब्रेशम मुक़र्रज़ प्रत्येक 10.5 ग्राम, सिब्र ज़र्द 84 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर शहद में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

अनुपानः गर्म पानी के साथ प्रयोग करें।

- **दवाउलमिस्क का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः अफ़्सन्तीन रूमी, सिब्र ज़र्द प्रत्येक 28 ग्राम, नानख़्वाह, करफ़्स प्रत्येक 14 ग्राम, रेवन्द चीनी 21 ग्राम, जुन्द बेद स्तर 5.25 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर उन के तीन गुना साफ़ शहद में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

अनुपानः गर्म पानी के साथ प्रयोग करें।

- **माजून फीक़राः**

इस से शौच नर्म और साफ़ होता है। नमक, मिट्टी, कोयला खाने की इच्छा समाप्त होती है। सर दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँः अयारिज फ़ीक़रा 42 ग्राम, पोस्त-ए-हलीला काबुली, आमला मुनक़्क़ा

प्रत्येक 7 ग्राम, मिल्ह निफ़्ती 8.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर शहद में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम से 14 ग्राम तक।

अनुपानः पुदीना के जोशान्दह के साथ प्रयोग करें।

- **माजून तरबलाशहः**

Acute Colic को दूर करता और भरपूर लाभ पहुँचाता है।

औषधियाँः हीलबोवा, क़िर्फ़ह, दार-ए-फ़िलफ़िल, साज़ज हिन्दी, ब्रंग काबुली मुक़श्शर, ज़न्जबील, आमला मुक़श्शर और क़रन्फ़ुल प्रत्येक 4.5 ग्राम, तुख़्म-ए-करफ़्स, सुंबुलुत्तीब, ज़ाफ़रान और मस्तगी रूमी प्रत्येक 2.25 ग्राम, तुर्बुद सफ़ेद तराशीदा और सक़मूनिया मुशव्वा प्रत्येक 9 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर उन के तीन गुना साफ़ शहद में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

अनुपानः गर्म पानी के साथ प्रयोग करें।

- **माजून नजाहः**

सौदा विरेचक और मस्तिष्क के गाढ़े पदार्थ साफ़ करता है।

औषधियाँः हलीला स्याह, पोस्त-ए-हलीला काबुली, पोस्त-ए-बलीला और अफ़्तीमून रूमी प्रत्येक 35 ग्राम, तुर्बुद सफ़ेद मुजव्वफ़ तराशीदा, बिस्फ़ाइज फ़िस्तक़ी और उस्तुखुद्दूस प्रत्येक 17.5 ग्राम, ग़ारीक़ून 10.5 ग्राम, लाजवर्द मग़सूल, हजर-ए-अरमनी मग़सूल और सक़मूनिया मुशव्वा प्रत्येक 8.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर शहद में मिलाएँ।

- **माजून का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः हलीला स्याह, पोस्त-ए-हलीला काबुली, पोस्त-ए-बलीलाप्रत्येक 35 ग्राम, तुर्बुद सफ़ेद, उस्तुखुद्दूस,बिस्फ़ाइज फ़िस्तक़ी और अफ़्तीमून प्रत्येक 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर उन के दो गुना शहद में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

अनुपानः गर्म पानी के साथ प्रयोग करें।

- **माजून नजाह का असली नुस्ख़ाः**

इस के कुछ नुस्खों में हकीमों ने औषधियों की संख्या में कमी और बढ़ोत्तरी की है प्रन्तु इस का असली नुस्खा यह है।

औषधियाँः हलीला काबुली,बलीला, आमला, तुर्बुद सफ़ेद प्रत्येक 35 ग्राम, उस्तुखुद्दूस, बिस्फ़ाइज, अफ़्तीमून रूमी प्रत्येक 17.5 ग्राम, ग़ारीक़ून 10.5 ग्राम,हजर-ए-अरमनी, लाजवर्द मग़सूल प्रत्येक 7 ग्राम, सक़मूनिया, ख़रबक़ स्याह प्रत्येक 3.5 ग्राम। एक अन्य नुस्ख़ में दरूनज, नारमुश्क, सुंबुलुत्तीब, जौज़बोवा, मस्तगी, पोस्त-ए-तुरन्ज, गावज़बान प्रत्येक 7 ग्राम, ज़ाफ़रान, रेवन्द चीनी प्रत्येक 3.5 ग्राम सम्मिलित किया गया है।

### ● माजून सीसालियूसः

यह मिर्गी में लाभदायक, शौच को साफ़ वनर्म करता है।

औषधियाँः सीसालियूस, आक़रक़रहा, उस्तुखुद्दूस प्रत्येक 35 ग्राम, ग़ारीक़ून 1.75, क़िर्दमाना, हिल्तीत, ज़रावन्द प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को पीस कर सिकन्जबीन-ए-उन्सुली में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

### ● माजून सकबीनजः

विभिन्न प्रकार के क़ूलन्ज को दूर करता है अथवा बहुत तीक्ष्ण विरेचक है।

औषधियाँः सकबीनज, जुन्द बेद स्तर और तुख़्म-ए-करफ़्स प्रत्येक समभाग में एक एक भाग, सक़मूनिया मुशव्वा अर्धभाग।

निर्माण-विधिः सकबीनज को मधु में घोलें और फिर शेष सभी औषधियों को कूट छान कर उस घोल में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम।

### ● माजून ख़यार शंबरः

यह नुस्खा अत्याधिक प्रयोग में अथवा प्रचलित है। सफरा एवं बलग़म का विरेचक है और क़ूलन्ज खोलता है।

औषधियाँः रोग़न-ए-बादाम में सचर्ब किया हुआ तुर्बुद सफ़ेद तराशीदा 140 ग्राम, बनफ़्शा ख़ुश्क 70 ग्राम, नमक-ए-हिन्दी औ रुब्बुस्सूस प्रत्येक 24.5 ग्राम, राज़ियाना, अनीसून और मस्तगी प्रत्येक 17.5 ग्राम, सक़मूनिया 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः सक़मूनिया और बनफ़्शा को सूक्ष्म चूर्ण कर लें। शेष औषधियों को कूट छान कर 140 ग्राम रोग़न-ए-बादाम में चर्ब कर लें। अस्ल-ए-खयार शंबर (खयार शंबर के फल से प्राप्त होने वाला पदार्थ) 210 ग्राम लें। अंत में सब को 350 ग्राम क़न्द के क़िवाम के साथ अच्छी तरह मिला कर माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 17.5 ग्राम।

अनुपानः गर्म पानी के साथ प्रयोग करें।

- **माजून का अन्य नुस्ख़ाः**

यह नुस्खा पहले नुस्खे से अधिक प्रभावशाली है।

औषधियाँः रोग़न-ए-बादाम में चर्ब किया हुआ तुर्बुद सफ़ेद तराशीदा, बनफ़्शा ख़ुश्क प्रत्येक 14 ग्राम, रुब्बुस्सूस 31.5 ग्राम, नमक-ए-हिन्दी 24.5 ग्राम, मस्तगी, राज़ियाना और अनीसून मस्तगी प्रत्येक 17.5 ग्राम, सक़मूनिया 52.5 ग्राम, रोग़न-ए-बादाम 90 ग्राम, फ़ानीज़ और अस्ल-ए-फ़ुलूस-ए-ख़्यार शंबर प्रत्येक 350 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर रोग़न-ए-बादाम में चर्ब कर लें और फिर शेष सभी औषधियों को क्रियानुसार अस्ल-ए-खयार शंबर (खयार शंबर के फल से प्राप्त होने वाला पदार्थ) फ़ानीज़ में मिला कर माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम से 17.5 ग्राम तक।

- **माजून सूरन्जानः**

यह सफ़रा एवं बलग़म का विरेचक है। जोड़ो के दर्द, गठिया, सियाटिका, पीठ दर्द और कमर दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँः सूरन्जान मिश्री 21 ग्राम, शाहतरह, कमून किर्मानी, पोस्त बीख़-ए-कबर, शीतरज हिन्दी, बूज़ीदान मिश्री प्रत्येक 7 ग्राम, पोस्त-ए-हलीला 24.5 ग्राम, तुख़्म-ए-करफ़्स, नमक-ए-हिन्दी, बर्ग-ए-हिना, ज़ुबदतुलबहर, फ़िलफ़िल सफ़ेद, राज़ियाना, सअतर प्रत्येक 5.25 ग्राम, गुल-ए-सुर्ख़, ज़न्जबील, सक़मूनिया, किशनीज़ ख़ुश्क प्रत्येक 10.5 ग्राम, तुर्बुद सफ़ेद 35 ग्राम, रोग़न-ए-बादाम 26.25 ग्राम, साफ़ शहद 525 मिलीलीटर।

निर्माण-विधिः प्रचलित विधि से माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम से 17.5 ग्राम तक।

- **माजून सूरन्जान का अन्य नुस्ख़ाः**

इस के भी लाभ एवं गुण वही हैं।

औषधियाँः सूरन्जान मिश्री 4.5 ग्राम, वरक़-ए-हिना, फ़िलफ़िल प्रत्येक 9 ग्राम, ज़ीरा किर्मानी, शीतरज हिन्दी प्रत्येक 7 ग्राम, पोस्त-ए-बीख़-ए-कबर 11.25 ग्राम, ज़ुबदतुलबहर, नमक-ए-निफ़्ती प्रत्येक 9 ग्राम, रोग़न-ए-बादाम में सचर्ब किया हुआ तुर्बुद सफ़ेद 140 ग्राम, ज़न्जबील 24.5 ग्राम, बूज़ीदान 17.5 ग्राम, सक़मूनिया 10.5 ग्राम, पोस्त-ए-हलीला ज़र्द 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट कर तीन गुना साफ़ शहद में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 31.5 ग्राम।

### ◎ माजून सूरन्जान का अन्य नुस्ख़ा:

यह जोड़ों के दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँ: सना मक्की 17.5 ग्राम, असारून, ज़न्जबील, ज़ीरा किर्मानी और दार-ए-फ़िलफ़िल प्रत्येक 7 ग्राम, सूरन्जान 35 ग्राम, तुर्बुद सफ़ेद तराशीदा 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: सभी औषधियों को कूट छान कर शहद में मिलाएँ और प्रचलित विधि से माजून तैयार करें।

सेवन-मात्रा: 10.5 ग्राम।

अनुपान: गर्म पानी के साथ प्रयोग करें।

### ◎ माजून सीमरी:

यह क़ूलन्ज को खोलता है।

औषधियाँ: ज़न्जबील और फ़िलफ़िल सफ़ेद प्रत्येक 70 ग्राम, सक़मूनिया, ज़ीरा किर्मानी, क़ुस्त, सुंबुलुत्तीब, जौज़बोवा, मस्तगी, गावज़बान और पोस्त-ए-तुरन्ज प्रत्येक 7 ग्राम, ज़ाफ़रान और रेवन्द चीनी प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: नियमानुसार माजून तैयार करें।

### ◎ माजून का अन्य नुस्ख़ा:

मिर्गी में लाभदायक है और इस से शौच साफ़ होता है।

औषधियाँ: सीसालियूस, आक़रक़रहा, उस्तुखुद्दूस, असालियून, खर्मा बेदाना और मग़ज़-ए-बादाम मुक़श्शर प्रत्येक 21 ग्राम, सुद्दाब 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: सर्वप्रथम ख़ुर्मा को एक रात दिन सिर्का में भिगो कर हाथ से नर्म कर लें फिर सब को कूट छान कर 408 ग्राम साफ़ मधु में मिलाएँ और क्रियानुसार माजून तैयार करें।

### ◎ माजून तुर्बुद:

यह क़ूलन्ज खोलता, बलग़म बाहर निकालता और पीठ दर्द में आराम पहुँचाता है।

औषधियाँ: सक़मूनिया मुशव्वा 3.5 ग्राम, क़ाक़ला किबार, क़ाक़ला सिग़ार, ज़न्जबील, दार चीनी, क़िर्फ़ह, नार मुश्क और क़रन्फुल प्रत्येक 2.25 ग्राम, तुर्बुद सफ़ेद मुक़श्शर 7 ग्राम, क़न्द सफ़ेद 35 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को कूट पीस कर रोग़न-ए-बादाम में चर्ब कर लें और उन के तीन गुना साफ़ मधु में मिलाएँ।

सेवन-मात्रा: 10.5 ग्राम से 17.5 ग्राम तक।

अनुपान: गर्म पानी के साथ प्रयोग करें।

- **माजून का अन्य नुस्ख़ाः**

यह नुस्खा "कामिलुस्सनाअह" से लिया गया है। यह क़ूलन्ज को बड़ी आसानी से खोलता है। यह ऐसा आसान विरेचक है जिसे हर स्थिति में प्रयोग किया जा सकता है।

औषधियाँः खुर्मा बेदाना 175 ग्राम को एक रात दिन सिर्का में भिगो कर रखें और हाथ से मलने के बाद सूती कपड़े में रख कर शहद में डालें, सक़मूनिया मुशव्वा और बर्ग-ए-सुद्दाब ख़ुश्क प्रत्येक 10.5 ग्राम, फ़िलफ़िल स्याह 100 की संख्या में, बिस्बासा और ज़न्जबील प्रत्येक 13.5 ग्राम, बूरह अरमनी 4.5 ग्राम, मग़ज़-ए-बादाम मुक़श्शर 3 दाना।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट पीस कर अस्ल-ए- खुर्मा (गुठली निकाला हुआ खुर्मा 175 ग्राम की मात्रा में लेकर एक रात और एक दिन सिर्का में भिगो कर रखें फिर हाथ से मलने के बाद सूती कपड़े में रखकर शहद में डाल दें) में मलें और सभी औषधियों के तीन गुना शहद में मिला कर माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 18 ग्राम।

अनुपानः गर्म पानी के साथ प्रयोग करें।

- **माजून राहतः**

यह क़ूलन्ज को तत्काल दूर करता है।

औषधियाँः फ़िलफ़िल, दार-ए-फ़िलफ़िल, ज़न्जबील, ज़ीरा किर्मानी मुदब्बर, वरक़-ए-सुद्दाब, ख़ूलन्जान, मस्तगी रूमी और सक़मूनिया मुशव्वा।

निर्माण-विधिः कूट कर मधु में मिला मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

- **माजून शहरयाराँः**

क़ूलन्ज और Flatulence में लाभदायक है।

औषधियाँः ज़न्जबील, क़िर्फ़ह, दार-ए-चीनी, जौज़बोवा, मस्तगी रूमी, क़रन्फ़ुल, सलीख़ा, सुंबुलुत्तीब, क़ाक़ला और हब्ब-ए-बलसाँ प्रत्येक 14 ग्राम, सक़मूनिया 10.5 ग्राम, तुर्बुद सफ़ेद मुक़श्शर और हब्बुन्नील प्रत्येक 28 ग्राम, शकर सफ़ेद 24.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट पीस आवश्यकतानुसार साफ़ शहद में मिलाएँ और क्रियानुसार माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **माजून लौज़ीः**

सफ़रा और बलग़म को बाहर निकालता है।

औषधियाँः मग़ज़-ए-बादाम मुक़श्शर, मग़ज़-ए-हब्बुलक़ुर्तुम और शकर सफ़ेद प्रत्येक 105 ग्राम, सक़मूनिया मुशव्वा 14 ग्राम।

निर्माण-विधिः क़न्द को अर्क़-ए-गुलाब में घोल लें। मग़्ज़ियात को हल्का पीस लें और सक़मूनिया को हल्का कूट लें। सब को एक साथ मिलाएँ और माजून तैयार करें।

- **माजून लौज़ी का अन्य नुस्ख़ाः**

सफ़रा और बलग़म को बाहर निकालता है। यह उन व्यक्तियों के स्वभाव के अनुकूल है जिन को विरेचक औषधियों का प्रयोग पसन्द नहीं होता है।

औषधियाँः सक़मूनिया मुशव्वा, मग़ज़-ए-हब्बुलक़ुर्तुम और कुन्जद मुक़श्शर प्रत्येक 10.5 ग्राम, शकर तबरज़द 70 ग्राम।

निर्माण-विधिः विधि अनुसार माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

अनुपानः गर्म पानी के साथ प्रयोग करें।

- **माजून वर्दः**

यह सभी सूजनों अथवा जिगर की सख़्ती में लाभदायक है।

औषधियाँः गुल-ए-सुर्ख़ 14 ग्राम, बीख़-ए-सोसन 24.5 ग्राम, रेवन्द चीनी और लुक-ए-मग़सूल प्रत्येक 12.25 ग्राम, सलीख़ा और ज़ाफ़रान प्रत्येक 10.5 ग्राम, मुर मक्की 2.25 ग्राम।

निर्माण-विधिः ज़ाफ़रान को सिर्का में भिगोएँ और फिर शेष सभी औषधियों को कूट पीस कर उस घोल में मिलाएँ और अंत में सब को साफ़ शहद में मिला कर माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

- **माजून मुक़िलः**

इस के प्रयोग से शौच साफ़ होता है। बवासीर के साथ गुदा एवं आँतों में पाई जाने वाली हवा के लिए लाभदायक है। मलांत्रशोथ (Proctitis) में लाभदायक है।

औषधियाँः पोस्त-ए-हलीला ज़र्द, पोस्त-ए-हलीला, आमला मुनक्का, पोस्त-ए- बलीला, तुख़्म-ए-सपिन्दान, तुख़्म-ए-गन्दना, तुख़्म-ए-शाहतरह प्रत्येक 17.5 ग्राम, मुक़िल 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः मुक़िल को आब-ए-गन्दना में भिगोएँ और फिर शेष सभी को कूट पीस कर उस घोल में मिलाएँ और अंत में सब को शहद में मिला कर क्रियानुसार माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **माजून जुबलः**

यह क़ूलन्ज को खोलता है। यह क़ूलन्ज के लिए विशेष है।

औषधियाँः ज़ुबलुज्ज़िअब 14 ग्राम, मुर मक्की और तुर्बुद सफ़ेद प्रत्येक 28 ग्राम, तुख़्म-ए-करफ़्स, अनीसून प्रत्येक 7 गाम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर शहद के साथ मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम से 14 ग्राम तक।

अनुपानः आब-ए-करफ़्स के साथ प्रयोग करें।

- **माजून यशबः**

इस के प्रयोग से शौच साफ़ होता है। यह मिर्गी के व्यक्ति के लिए लाभदायक है।

औषधियाँः पोस्त-ए-हलीला काबुली, पोस्त-ए-हलीला ज़र्द, आमला मुनक्का और उस्तोखुद्दूस प्रत्येक 35 ग्राम, ऊद सलीब 17.5 ग्राम, आक़रक़रहा 10.5 ग्राम, मवीज़ मुनक़्क़ा 420 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट पीस कर मवीज़ के साथ मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 17.5 ग्राम।

- **माजून का अन्य नुस्ख़ाः**

यह आमाशय अथवा आँतों की गर्मी को दूर करता है। शरीर में उपस्थित तरल पदार्थों को पाक साफ़ करता है।

औषधियाँः फ़िलफ़िल, दार-ए-चीनी, दार-ए-फ़िलफ़िल, ब्रंग काबुली मुक़श्शर और जौज़बोवा प्रत्येक 4.5 ग्राम, हब्बुन्नील 27 ग्राम, तुर्बुद सफ़ेद मुक़श्शर 4.5 ग्राम, तुर्मुस और ज़न्जबील प्रत्येक 9 ग्राम, शकर 90 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट पीस कर रोग़न-ए-बादाम में चर्ब कर लें। दो गुना शहद के साथ मिला कर माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 24.5 ग्राम, एक प्याला दूध के साथ।

- **माजून का अन्य नुस्ख़ाः**

यह शरीर की गर्मी दूर करता, Tape Worm और लंबे कीड़े बाहर निकालता है।

औषधियाँः ब्रंग काबुली मुक़श्शर, पोस्त-ए-हलीला काबुली, पोस्त-ए-हलीला ज़र्द प्रत्येक 17.5 ग्राम, तुर्बुद सफ़ेद मुक़श्शर 42 ग्राम, फ़ानीज़ सन्जरी सब के तीन गुना।

निर्माण-विधिः फ़ानीज़ को पानी में घोल लें और फिर सभी औषधियों को उस घोल में मिलाकर क्रियानुसार माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 21 ग्राम।

अनुपानः गर्म पानी के साथ प्रयोग करें।

- **माजून का अन्य नुस्ख़ाः**

आमाशय और आँतों के कीड़ों को बाहर निकालता है।

औषधियाँः करफ़्स, ब्रंग काबुली मुक़श्शर प्रत्येक 3.5 ग्राम, तुर्बुद, सुंबुल प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर फ़ानीज़ के साथ मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम।

अनुपानः गर्म पानी के साथ प्रयोग करें।

- **माजून मुस्हिलः**

सौदा और बलग़म को बाहर निकालता है और दिमाग़ी रोगों में लाभदायक है।

औषधियाँः पोस्त-ए-हलीला काबुली, आमला प्रत्येक 3.5 ग्राम, अफ़्तीमून , उस्तोख़ुद्दूस, हजर-ए-अरमनी, बिस्फ़ाइज फ़िस्तक़ी, ग़ारीक़ून, कमाफ़ीतूस, तुर्बुद सफ़ेद और अयारिज फ़ीक़रा प्रत्येक 52.5 ग्राम, नमक-ए-हिन्दी 14 ग्राम, शहम-ए-हन्ज़ल 28 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर शहद के साथ मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम।

- **दवाउलकुर्कुम कबीरः**

यह नुस्खा जालीनूस ने तैयार किया है। यह जिगर एवं तिल्ली के ठंडे रोगों में लाभदायक है। सुद्दों को खोलता है। मूत्रविरेचक है। आमाशय एवं आँतों की गैस बाहर निकालता है। गुर्दा एवं मूत्राशय को बल प्रदान करता है। ठंडक, सूजन एवं जिगर के सुद्दों के कारण होने वाले जलोदर रोग में लाभदायक है।

औषधियाँः ज़ाफ़रान 45 ग्राम, मू, फ़ू, फ़ुत्रासालियून, दोक़ू, अनीसून, असारून, रेवन्द चीनी, ग़ारीक़ून प्रत्येक 14 ग्राम, सुंबुल हिन्दी 21 ग्राम, क़ुस्त, सलीख़ा, फ़ुक़ाह-ए-इज़्ख़िर, हब्ब-ए-बलसाँ प्रत्येक 3.5 ग्राम, फ़ूह 7 ग्राम, रुब्बुस्सूस, जअदह, ग़ाफ़िस, मस्तगी प्रत्येक 10.5 ग्राम, रोग़न-ए-बलसाँ 17.5 ग्राम,मुर साफ़ 14 ग्राम।

निर्माण-विधिः सबको कूट कर शहद के साथ मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 9 ग्राम।

अनुपानः माउलअस्ल के साथ प्रयोग करें।

- **माजून नमकः**

आमाशय एवं आँतों को पाक करता है। बलग़म एवं सौदा की अधिकता के कारण होने वाली उल्टी को रोकता है।

औषधियाँः पोस्त-ए-हलीला काबुली, आमला, बलीला स्याह, उस्तोखुद्दूस प्रत्येक 10.5 ग्राम, अफ़्तीमून 14 ग्राम, नमक-ए-हिन्दी 7 ग्राम, अयारिज फ़ीक़रा 35 ग्राम, ग़ारीक़ून 14 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर शहद के साथ मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम।

अनुपानः गर्म पानी के साथ प्रयोग करें।

- **माजून सना मक्कीः**

यह बलग़म और सफ़रा का विरेचक है। सर दर्द, अधकपारी के दर्द और खाज एवं खुजली में लाभदायक है।

औषधियाँः सना मक्की 175 ग्राम, तुरन्जबीन 105 ग्राम, बनफ़्शा, नीलोफ़र, गुल-ए-सुर्ख़ और रोग़न-ए-बादाम में चर्ब किया हुआ तुर्बुद सफ़ेद मुक़श्शर प्रत्येक 35 ग्राम, हल्का कूटा और मला हुआ किशमिश और साफ़ शहद प्रत्येक 110 ग्राम।

निर्माण-विधिः तुरन्जबीन को अर्क़-ए-गुलाब में साफ़ कर के शहद के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें और फिर शेष सभी औषधियों को कूट छान कर रोग़न-ए-बादाम में चर्ब करके उस क़िवाम में मिलाएँ और क्रयानुसार माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **माजून सना मक्की का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बलग़म और सफरा का विरेचक है। सर दर्द, अधकपारी के दर्द, खाँसी और दमा में लाभदायक है।

औषधियाँः सना मक्की 175 ग्राम, तुर्बुद सफ़ेद मुक़श्शर, गावज़बान, वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़ प्रत्येक 17.5 ग्राम, मवीज़ बेदाना, बनफ़्शा ख़ुश्क, नीलोफ़र प्रत्येक 35 ग्राम, तुरन्जबीन 105 ग्राम, शीर-ए-खिशत 70 ग्राम, क़न्द, साफ़ शहद प्रत्येक 175 ग्राम।

निर्माण-विधिः तुर्बुद को रोग़न-ए-बादाम में चर्ब करें और सब को कूट छान लें। तुरन्जबीन और क़न्द को अर्क़-ए-गुलाब में साफ़ कर के शहद साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें और सभी औषधियों को उस क़िवाम में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम।

अनुपानः गर्म पानी के साथ प्रयोग करन से लाभ होता है।

- **माजून बनफ़्शाः**

क़ूलन्ज को खोलता है। सफ़रा और बलग़म का विरेचक है।

औषधियाँः तुर्बुद मुक़श्शर 140 ग्राम, सक़मूनिया मुशव्वा 24.5 ग्राम, बनफ़्शा 105 ग्राम, गुल-ए-सुर्ख़ 35 ग्राम, राज़ियाना, कतीरा प्रत्येक 17.5 ग्राम, ज़ाफ़रान 8.75 ग्राम, क़न्द सफ़ेद, साफ़ शहद प्रत्येक 350 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट छान कर रोग़न-ए-बादाम में चर्ब करें।

सेवन-मात्राः 17.5 ग्राम।

- **माजून बनफ़्शा का अन्य नुस्ख़ाः**

सफ़रा व बलग़म को बाहर निकालता है। श्वास की तंगी व सर दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँः बनफ़्शा 140 ग्राम, अस्लुस्सूस मुक़श्शर 70 ग्राम, सक़मूनिया 70 ग्राम, गुल-ए-सुर्ख़ 35 ग्राम, कतीरा 17.5 ग्राम, ज़ाफ़रान 8.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः शहद और शकर तबर्ज़द सभी औषधियों के तीन गुना ले कर विधि अनुसार माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 14 ग्राम।

अनुपानः गर्म पानी के साथ प्रयोग करें।

- **माजून बनफ़्शा का अन्य नुस्ख़ाः**

इस के भी वही लाभ हैं।

औषधियाँः बनफ़्शा 140 ग्राम, वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़, रुब्बुस्सूस और सक़मूनिया प्रत्येक 35 ग्राम, कतीरा और राज़ियाना प्रत्येक 17.5 ग्राम, ज़ाफ़रान 8.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः क़न्द और मधु के साथ माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 14 ग्राम से 17.5 ग्राम तक।

- **माजून बनफ़्शा का अन्य नुस्ख़ाः**

इस के भी वही लाभ हैं।

औषधियाँः बनफ़्शा ख़ुश्क 140 ग्राम, फ़ुलूस ख़्यार शंबर 175 ग्राम, तुरन्जबील 175 ग्राम, तुर्बुद सफ़ेद 70 ग्राम।

निर्माण-विधिः फुलूस खयार शंबर को अर्क़-ए-गुलाब में साफ़ कर लें और विधि अनुसार माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 17.5 ग्राम।

- **माजून का अन्य नुस्ख़ाः**

सर दर्द, सफ़रावी बुख़ार और खाँसी में लाभदायक है। आँतों में ज़ख्म होने के कारण होने वाले क़ूलन्ज में लाभदायक है।

औषधियाँः मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यारज़ह, अस्लुस्सूस मुक़श्शर, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यार, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-कदू प्रत्येक 10.5 ग्राम, बनफ़्शा ख़ुश्क 105 ग्राम, कतीरा 35 ग्राम, सक़मूनिया 17.5 ग्राम, तुरन्जबीन 70 ग्राम, मवीज़ मुनक़्क़ा 35 ग्राम, फुलूस खयार शंबर 52.5 ग्राम, रोग़न-ए-बादाम 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः तुरन्जबीन व फुलूस खयार शंबर को अर्क़-ए-गुलाब में साफ़ करें। मवीज़ को पोस्त और तुख़्म से पाक साफ़ कर के हल्का कूट लें और शेष को कूट छान कर मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम।

- **माजून का अन्य नुस्ख़ाः**

सौदा अर्थात Black Bile का विरेचक है।

औषधियाँः हलीला ज़र्द, हलीला काबुली और हलीला स्याह प्रत्येक 35 ग्राम, आमला और बलीला प्रत्येक 17.5 ग्राम, सक़मूनिया 3.5 ग्राम, अफ़्तीमून और उस्तोख़ुद्दूस प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर रोग़न-ए-बनफ़्शा और रोग़न-ए-बादाम में चर्ब करें फिर क़न्द और मधु में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **माजून का अन्य नुस्ख़ाः**

यह अच्छे ज़ायक़ा पसन्द वाले व्यक्तियों के लिए उपयुक्त है। यह ऐसा विरेचक है जिस से कोई हानि नहीं होती है।

औषधियाँः तुर्बुद सफ़ेद 35 ग्राम, वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़ 17.5 ग्राम, ज़ाफ़रान और सक़मूनिया मुशव्वा प्रत्येक 1.75 ग्राम, मस्तगी रूमी 3.5 ग्राम, मग़ज़-ए-बादाम मुक़श्शर 35 ग्राम, क़न्द और शहद सभी औषधियों के तीन गुना।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर शहद में मिलाएँ। चाहें तो क़न्द व शहद के क़िवाम में अर्क़-ए-गुलाब मिला लें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **माजून का अन्य नुस्ख़ाः**

आँतों में पाई जाने वाली हवा को बाहर निकालता है। आमाशय और आँतों के तरल पदार्थों को भी बाहर निकालता है। सुद्दे खोलता है। बलग़मी रोगों में लाभदायक है। धमनियों के अन्दर से बलग़म और सौदा को बाहर निकालता है।

औषधियाँः सिब्र ज़र्द, हब्बुर्रशाद, शोनीज़, फ़िलफ़िल, ज़न्जबील और हलीला

स्याह प्रत्येक समभाग में।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को समभाग में लेकर कूट छान लें और उन के तीन गुना शहद में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम।

सेवन-अवधिः लगातार सात दिन तक प्रयोग करें।

- **माजून का अन्य नुस्ख़ाः**

इस के प्रयोग से शौच साफ़ होता है। यह बलग़म और सफ़रा को आसानी से बाहर निकालता है। आमाशय को बल प्रदान करता है। भाप जैसी वस्तुओं के दिमाग़ पर चढ़ जाने से होने वाले सर दर्द को दूर करता है। क़ूलन्ज को खोलता है।

औषधियाँः तुर्बुद सफ़ेद, पोस्त-ए-हलीला काबुली, सना मक्की, बनफ़्शा प्रत्येक 35 ग्राम, क़ाक़ला, ज़न्जबील, मस्तगी प्रत्येक 7 ग्राम, वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़ और रोग़न-ए-बादाम प्रत्येक 17.5 ग्राम, ज़ाफ़रान 3.5 ग्राम, राज़ियाना 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर रोग़न-ए-बादाम में चर्ब करें और उन के तीन गुना क़न्द एवं शहद में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 14 ग्राम।

- **माजून का अन्य नुस्ख़ाः**

खाज एवं खुजली में लाभदायक है और सफ़रा को बाहर निकालता है।

औषधियाँः पोस्त-ए-हलीला ज़र्द 35 ग्राम, सना मक्की, शाहतरह और रेवन्द चीनी प्रत्येक 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान कर उन के तीन गुना कूट कर नर्म किए हुए किशमिश में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 35 ग्राम।

- **माजून का अन्य नुस्ख़ाः**

गर्मी के कारण होने वाले जलोदर रोग में लाभदायक है।

औषधियाँः उसारा-ए-ग़ाफ़िस, रेवन्द चीनी, ज़ाफ़रान, तुर्बुद सफ़ेद प्रत्येक 10.5 ग्राम, तुख़्म-ए-कासनी, उसारा-ए-अफ़्सन्तीन, फ़ुक़ाह-ए-इज़्ख़िर, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यार, तुख़्म-ए-खुर्फ़ह, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यारज़ह प्रत्येक 7 ग्राम, लुक-ए-मग़सूल और तुख़्म-ए-कसूस प्रत्येक 14 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर शहद के साथ मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम से 9 ग्राम तक।

अनुपानः आब-ए-सुद्दाब, आब-ए-इनबुस्सअलब, लबलाब।

- **माजून का अन्य नुस्ख़ाः**

सर्दी और गर्मी हर मौसम में गर्म स्वभाव के व्यक्तियों के लिए उपयुक्त एवं अनुकूल है। पेट में नर्मी पैदा करता है। सफ़रा के कारण होने वाले सर दर्द में लाभदायक है। शरीर में पाए जाने वाले पदार्थों को साफ़ करता है।

औषधियाँः बनफ़्शा, गुल-ए-नीलोफ़र, गुल-ए-सुर्ख़, सना मक्की, पोस्त हलीला ज़र्द प्रत्येक 7 ग्राम, सक़मूनिया 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट छान कर रोग़न-ए-बनफ़्शा व बादाम में चर्ब करें और फिर उन के तीन गुना क़न्द एवं शहद में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम।

अनुपानः अर्क़-ए-गुलाब के साथ प्रयोग करें।

- **माजून का अन्य नुस्ख़ाः**

यह ऐसा विरेचक है जिस से कोई हानि नहीं होती है। साधारण स्वभाव और अच्छा ज़ायक़ा पसन्द करने वाले व्यक्तियों के लिए उपयुक्त एवं अनुकूल है। सफ़रा और बलग़म को बाहर निकालत है।

औषधियाँः तुर्बुद 17.5 ग्राम, सक़मूनिया 7 ग्राम, गुल-ए-गुलाब और गुल-ए-बनफ़्शा प्रत्येक 10.5 ग्राम, मस्तगी रूमी और अनीसून प्रत्येक 3.5 ग्राम, मग़ज़-ए-बादाम मुक़श्शर 35 ग्राम, शीर-ए-खिशत और तुरन्जबीन प्रत्येक 105 ग्राम।

निर्माण-विधिः शीर-ए-खिशत एवं तुरन्जबीन को साफ़ अर्क़-ए-गुलाब के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें और शेष सभी को कूट छान कर उस क़िवाम में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 17.5 ग्राम।

अनुपानः अर्क़-ए-गुलाब के साथ प्रयोग करें।

❑❑❑

## पन्जम वर्गः उन शेष प्रसिद्ध एवं प्रयोग किए जाने वाले माजूनों के नुस्खे जिन की क़ीमत कम और लाभ अधिक हैं और लोगों को उन माजूनों की अधिकतर आवश्यकता भी पड़ती है

- **माजून फ़लास्फ़हः**

इस का दूसरा नाम "माद्दतुलहयात" है। यह माजून बहुत ही प्रसिद्ध है। पाचनवर्धक है। वासना शक्ति को उभारता है। कमर को मज़बूत करता है। दाँतों को ठोस बनाता है। हृदयवर्धक है। तबीयत में हर्षोल्लास उत्पन्न करता है। त्वचा को चमकदार बनाता है। मुँह की दुर्गंध को दूर करता है। बूढ़े लोगों और ठंडे स्वभाव के व्यक्तियों के लिए बहुत अनुकूल औषधि है।

औषधियाँः ज़नजबील, फ़िलफ़िल, दार चीनी, आमला मुक़श्शर, पोस्त-ए-बलीला, ज़रावन्द मुदहरज, शीतरज हिन्दी, ख़ुस्यतुस्सअलब मिश्री, बीख़-ए-बाबूना, मग़ज़-ए-नारजील और मग़ज़-ए-चिलग़ोज़ा प्रत्येक 45 ग्राम, गुल-ए-बाबूना 22.5 ग्राम, मवीज़ मुनक़्क़ा 135 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूटने पीसने योग्य औषधियों को कूट पीस लें। मग़्ज़ियात और किशमिश को अलग से मरहम की भाँति नर्म कर लें। सब के तीन गुना साफ़ मधु का क़िवाम तैयार करें। उस क़िवाम में सब से पहले नर्म किए गए मग़्ज़ियात और किशमिश को मिलाएँ और फिर शेष औषधियों को भी उस सम्मिलित कर के अच्छी तरह मिलाएँ और चालीस दिनों के पश्चात प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 9 ग्राम।

- **माजून जालीनूसः**

गुर्दा एवं मूत्राशय को गर्म रखता है। सुद्दे खोलता है। मूत्रविरेचक और आर्तवजनक है। वायुनाशी है।

औषधियाँः फ़िलफ़िल स्याह, फ़िलफ़िल सफ़ेद, हमामा, क़ुस्त तल्ख़, सुंबुलुत्तीब, क़सबुज़्ज़रीरा, साज़ज हिन्दी, ज़ाफ़रान, तुख़्म-ए-करफ़्स, आक़रक़रहा, तुख़्म-ए-अन्जोरह, सुद्दाब।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर तीन गुना मधु में मिला कर माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

अनुपानः आब-ए-बादियान, आब-ए-करफ़्स, माउलउसूल।

- **माजून का अन्य नुस्ख़ाः**

जालीनूस के अनुसार यह माजून जिगर के रोगों में बहुत ही लाभदायक एवं

Experimented है। जिगर और तिल्ली के सुद्दों को गलाता है। पुरानी खाँसी और दमा में लाभदायक है। मूत्रविरेचक और आर्तवजनक है । इस संदर्भ में भी यह माजून बहुत ही लाभदायक एवं मुजर्रब है।

औषधियाँः मवीज़ मुनक़्क़ा 112.5 ग्राम, ज़ाफ़रान 4.5 ग्राम, मुक़िलुलयहूद 11.25 ग्राम, दारचीनी 9 ग्राम, सलीख़ा 2.25 ग्राम, सुंबुलुत्तीब 13.5 ग्राम, इज़्ख़र 11.25 ग्राम, मुर मक्की और समग़ुल बुत्म प्रत्येक 18 ग्राम, शहद 72 ग्राम।

निर्माण-विधिः Exudates को पुरानी शराब या शराब-ए-मुसल्लस में भिगोएँ। शेष को नियमानुसार कूट छान कर माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

## • माजून मुबद्दिलुलमिज़ाजः

लक़वा, कंपन्न, स्वित्र, कुष्ठ और पक्षघात में लाभदायक है। स्मृतिवर्धक है और बलग़म को दूर करता है। यह बूढ़े एवं ठंडे स्वभाव के लोगों के अति उपयोगी औषधि है।

औषधियाँः ज़न्जबील, आक़रक़रा, शोनीज़, क़ुस्त तल्ख़, वज तुर्की, अस्ल-ए-बलादुर प्रत्येक 35 ग्राम, सुद्दाब, हिल्तीत, ज़रावन्द, जुन्तियाना, शीतरज हिन्दी, हब्बुलग़ार, जुन्द बेद स्तर, खर्दल सफेद प्रत्येक 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट कर तीन गुना साफ़ शहद में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

## • अत्क़रूयाः

इस का दूसरा नाम माजून-ए-बलादुर है। तिल्ली की सख़्ती को नर्म करता है और उस के सुद्दों को भी खोलता है। पेट दर्द, गुर्दा दर्द और पुराने बुख़ारों में लाभदायक है।

औषधियाँः जुन्तियाना रूमी, फ़िलफ़िल प्रत्येक 28 ग्राम, क़ुस्त तल्ख, मुर मक्की, साज़ज हिन्दी, सुंबुलुत्तीब, रेवन्द चीनी प्रत्येक 33.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर रोग़न-ए-अख़रोट में चर्ब करें। अस्ल-ए-बलादुर 17.5 ग्राम और साफ़ मधु में सब के तीन गुना लें और नियमानुसार माजून तैयार करें।

प्रयोग-समयः छः महीने के बाद प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

## • माजून का अन्य नुस्ख़ाः

बालों की स्याही की रक्षा करता है। बूढ़े व्यक्तियों के स्वभाव के अनुकूल है।

औषधियाँः हलीला स्याह, पोस्त-ए-बलीला, आमला मुनक़्क़ा प्रत्येक 35 ग्राम, सअद कूफ़ी, सुंबुलुत्तीब, कुन्दुर ज़कर, वज तुर्की, फ़िलफ़िल स्याह, ज़न्जबील,

अस्ल-ए-बलादुर प्रत्येक 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर रोग़न-ए-अख़रोट में चर्ब करें और उन के तीन गुना साफ़ शहद में मिलाएँ।

प्रयोग-समयः छः महीने के बाद प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम।

- **माजून का अन्य नुस्ख़ाः**

यह मिर्गी में लाभदायक है। चक्कर आने को रोकता है और ठंडक के कारण होने वाले रोगों में भी लाभदायक है।

औषधियाँः पोस्त-ए-हलीला काबुली,बलीला, आमला मुनक़्क़ा, किशनीज़ ख़ुश्क और उस्तोखुद्दूस प्रत्येक 17.5 ग्राम, ऊद ख़ाम, ज़न्जबील, सअतर और अस्ल-ए-बलादूर प्रत्येक 10.5 ग्राम, साफ़ शहद सब के तीन गुना।नियमानुसार माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

- **माजून का अन्य नुस्ख़ाः**

पक्षघात, लक़वा, मिर्गी, स्मृति-शक्ति के लोप और सभी प्रकार के बलग़मी रोगों में लाभदायक है।

औषधियाँः आक़रक़रहा, शोनीज़, क़ुस्त तल्ख़, उस्तोखुद्दूस, हब्बुलग़ार, शीतरज हिन्दी और खर्दल प्रत्येक 17.5 ग्राम, हिल्तीत 7 ग्राम, अस्ल-ए-बलादूर 15.75 ग्राम, जुन्द बेद स्तर 8.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान कर उन के तीन गुना साफ़ शहद में मिला कर नियमानुसार माजून तैयार करें।

प्रयोग-समयः छः महीने के बाद प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

- **माजून अमरूसियाः**

जिगर के दर्द, जिगर के रोग, तिल्ली के रोग, आमाशय के रोग,पेट चलने और बलग़मी रोगों में लाभदायक है। वायुनाशी है। सुद्दों को खोलता है। गुर्दा एवं मूत्राशय की पथरी को तोड़ता है। जलोदर रोग के प्रारंभ में लाभदायक है और वायुनाशी है।

औषधियाँः दोक़ू, ज़ीरा किरमानी, ऊद-ए-बलसाँ, सलीख़ा, क़िर्दमाना, फ़ुक़ाह-ए-इज़्ख़िर, तुख़्म-ए-करफ़्स प्रत्येक 3.5 ग्राम,दार-ए-फ़िलफ़िल, क़ुस्त तल्ख़, फ़िलफ़िल प्रत्येक 1.75 ग्राम, मुर मक्की 10.5 ग्राम, हब्बुलग़ार 10.5 ग्राम, असारून, वज, ज़ाफ़रान प्रत्येक 7 ग्राम, शहद सभी के तीन गुना।

निर्माण-विधिः नियमानुसार माजून तैयार करें।

प्रयोग समयः छः महीने के बाद प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम से 4.5 ग्राम तक।

इस माजून की सेवन अवधि डेढ़ साल है लेकिन निर्माण-समय के दो महीने बाद यह प्रयोग योग्य हो जाता है।

- **माजून फ़न्जनूशः**

आमाशयवर्धक है। अर्ष में लाभदायक है। शक्तिवर्धक है। रंग व रूप को बढ़ाने वाला है। शीघ्रपतन के रोग को दूर करता है।

औषधियाँः पोस्त-ए-हलीला काबुली, पोस्त-ए-हलीला स्याह, पोस्त-ए-बलीला, आमला मुनक्क़ा, शीतरज हिन्दी, सुंबुलुत्तीब, फ़िलफ़िल, दार-ए-फ़िलफ़िल, ज़न्जबील और सअद प्रत्येक 35 ग्राम, तुख़्म-ए-गन्दना और तुख़्म-ए-शिब्त प्रत्येक 14 ग्राम, ख़ुब्सुलहदीद 350 ग्राम, शहद सभी औषधियों के तीन गुना।

निर्माण-विधिः ख़ुब्सुलहदीद को 14 दिनों तक सिर्का में भिगो कर सुखा लें। फिर इतना सूक्ष्म पीसें कि पानी में डालने पर उसके धरातल पर तैरता रहे। शेष को कूट छान कर मिलाएँ। कुछ हकीम इस में 832 मिलीग्राम मुश्क भी सम्मिलित करते हैं।

प्रयोग-समयः छः महीने के बाद प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **माजून फ़न्जनूश का अन्य नुस्ख़ाः**

ठंडक के कारण होने वाले बहुमूत्रता के रोग में लाभदायक है। आमाशयवर्धक है। आमाशय के तरल पदार्थों को सोखता है और मुँह से राल बहने को बन्द करता है।

औषधियाँः ख़ुब्सुलहदीद मुदब्बर 70 ग्राम, सिर्का में भिगोने के बाद सूखा किया हुआ क़ुशूर-ए-कुन्दुर 17.5 ग्राम, तबाशीर सफ़ेद 14 ग्राम, शूकरान 7 ग्राम, किशनीज़ ख़ुश्क 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान कर मीअह साइला के साथ मिलाएँ और नियमानुसार माजून तैयार करें।

सेवन-मात्रा एवं सेवन-समयः 10.5 ग्राम, सुबह और शाम।

अनुपानः शराब के साथ प्रयोग करें।

- **माजून फ़न्जनूश का अन्य नुस्ख़ाः**

यह आमाशयवर्धक एवं वाजीकर है। शीघ्रपतन एवं अर्ष में लाभदायक है।

औषधियाँः पोस्त-ए-हलीला काबुली, शीतरज हिन्दी, तुख़्म-ए-करफ़्स, हीलबोआ,

क़ुस्त तल्ख़, सलीख़ा, क़रन्फ़ुल, बिस्बासा और ख़ूलन्जान प्रत्येक 21 ग्राम, पोस्त-ए-हलीला, आमला मुक़श्शर, नानख़्वाह और दार-ए-फ़िलफ़िल प्रत्येक 14 ग्राम, तूदरी सुर्ख़, तूदरी सफ़ेद, क़िर्फ़ह, सुंबुलुत्तीब, जौज़बोआ और फ़िलफ़िलमोया प्रत्येक 28 ग्राम, सअद कूफ़ी 35 ग्राम, ज़ाफ़रान 17.5 ग्राम, मुश्क तुर्की 1.75 ग्राम, अंबर अशहब 3.5 ग्राम, ख़ुब्सुलहदीद मुदब्बर सभी औषधियों के समभाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर रोग़न-ए-गुल में चर्ब करें। दूसरे दिन उन के तीन गुना साफ़ शहद में मिलाएँ।

प्रयोग-समयः छः महीने के बाद प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 832 मिली ग्राम से 2.5 ग्राम तक।

अनुपानः बकरी का दूध।

- **माजून नानख़्वाह :**

आमाशय के तरल पदार्थों को स्वच्छ करता है। दीपन है और वाजीकर है।

औषधियाँः नान ख़्वाह, सअतर, ज़ूफ़ा, नअनाअ ख़ुश्क, ज़ीरा किर्मानी और शोनीज़ प्रत्येक 17.5 ग्राम, वज तुर्की, बिस्बासा, राज़ियाना, ज़न्जबील, जौज़बोआ और तुख़्म-ए-करफ़्स प्रत्येक 13.5 ग्राम, हाशा 9 ग्राम, सभी औषधियों के समभाग शहद।

निर्माण-विधिः नियमानुसार माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 9 ग्राम।

- **माजून फ़न्दादीकून:**

आँतों के दर्द में लाभदायक है। गैस बाहर निकालता और आमाशय गर्म रखता है।

औषधियाँः ज़ाफ़रान, अन्जोदान, तुख़्म-ए-करफ़्स, तुख़्म-ए-सुद्दाब, ज़न्जबील, हाशा, मग़ज़-ए-चिलग़ोज़ा प्रत्येक 21 ग्राम, फ़िलफ़िल 24.5 ग्राम, साफ़ शहद सभी के तीन गुना।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम से 9 ग्राम तक।

- **माजून का अन्य नुस्ख़ा:**

औषधियाँः ज़न्जबील, फ़िलफ़िल, सुंबुलुत्तीब प्रत्येक 21 ग्राम, मस्तगी रूमी, नानख़्वाह प्रत्येक 21 ग्राम, तुख़्म-ए-करफ़्स, फ़ूदनज प्रत्येक 7 ग्राम, साज़ज हिन्दी 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर शहद में मिलाएँ।

- **माजून का अन्य नुस्ख़ा:**

औषधियाँः ज़न्जबील, फ़िलफ़िल और सुंबुलुत्तीब प्रत्येक 35 ग्राम, मस्तगी रूमी,

नानख़्वाह, तुख़्म-ए-करफ़्स और फ़ूदनज प्रत्येक 17.5 ग्राम, हब्ब-ए-अलसां, सलीख़ा, आक़रक़रहा और ज़ीरा किर्मानी मुदब्बर प्रत्येक 7 ग्राम, साज़ज हिन्दी 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर उन के तीन गुना साफ़ शहद में मिलाएँ और नियमानुसार माजून तैयार करें।

- **माजून का अन्य नुस्ख़ाः**

यह नुस्खा "मिन्हाजुन्नुबुव्वह" से लिया गया है। आमाशय के फूलने एवं उस की ठंडक में लाभदायक है। बलग़म, ठंडक और बदहज़्मी से होने वाले दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँः ज़ाफ़रान, अन्जोदान, तुख़्म-ए-करफ़्स, ज़न्जबील, हाशा, चिलग़ोज़ा, तुख़्म-ए-सुद्दाब प्रत्येक 7 ग्राम, कुन्दुर, मग़्ज़-ए-बादाम तल्ख़ प्रत्येक 14 ग्राम, फ़िलफ़िल 56 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर उन के तीन गुना साफ़ शहद में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

- **माजून फ़ूदनजः**

ठंडक से होने वाले आमाशय और जिगर के दर्द, बलग़मी बुखार, चौथिया बुख़ार और पुराने बुख़ारों में लाभदायक है।

औषधियाँः फ़ूदनज नहरी, फ़ूदनज जबली, फ़ुन्नासालियून, सीसालियूस प्रत्येक 42 ग्राम, तुख़्म-ए-करफ़्स, बाबूना, हाशा प्रत्येक 14 ग्राम, काशिम 52.5 ग्राम, फ़िलफ़िल 14 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर उन के तीन गुना साफ़ शहद में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम।

अनुपानः जल के साथ प्रयोग करें।

- **माजून फ़लाफ़िलीः**

यह "कामिलुस्सनाअह" के लेखक द्वारा तैयार किया गया नुस्खा है। पेट दर्द और भूख की चाहत में लाभदायक है। गैस को दूर करता है। पाचक है और पेट की ठंडक को दूर करता है।

औषधियाँः फ़िलफ़िल सफ़ेद एवं स्याह, दार-ए-फ़िलफ़िल,प्रत्येक 70 ग्राम, ऊद-ए-बलसाँ 35 ग्राम,तुख़्म-ए-करफ़्स, ज़न्जबील,सलीख़ा, सीसालियूस, असारून, रासन प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर तीन गुनाशहद में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम।

अनुपानः जल के साथ प्रयोग करें।

## ◉ माजून फ़लाफ़िली का अन्य नुस्ख़ाः

इस के भी वही लाभ एवं गुण है।

औषधियाँः फ़िलफ़िल स्याह, दार-ए-फ़िलफ़िल प्रत्येक 105 ग्राम, हब्ब-ए-बलसाँ 35 ग्राम, हमामा, सुंबुलुत्तीब, ज़न्जबील, तुख़्म-ए-करफ़्स, सीसालियूस, सलीख़ा, असारून प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान कर उन के तीन गुना साफ़ शहद में मिलाएँ। नियमानुसार माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम से 7 ग्राम तक।

अनुपानः जल के साथ प्रयोग करें।

## ● माजून अफ़्सन्तीनः

यह ठंडक से पेट व जिगर दर्द, जलोदर में लाभदायक है।

औषधियाँः अफ़्सन्तीन, तुख़्म-ए-करफ़्स, अनीसून, असारून, मग़्ज़-ए-बादाम तल्ख़।

निर्माण-विधिः सब को कूट लें और तीन गुना साफ़ शहद में मिलाकर माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

## ◉ माजून अस्तमख़ीकूनः

यह Ill Temperament और पेट दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँः क़ुस्त तल्ख़, हमामा, मस्तगी रूमी, मुर मक्की, सुंबुलुत्तीब और सलीख़ा प्रत्येक 42 ग्राम, ज़रावन्द तवील, फ़िलफ़िल, तुख़्म-ए-करफ़्स, अनीसून, ज़ीरा किर्मानी, दोक़ू, फ़ुत्रासालियून, सीसालियूस, काशिम, असारून,अफ़्सन्तीन, फ़ूदनज और नअनाअ ख़ुश्क प्रत्येक 14 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान कर उन के तीन गुना साफ़ शहदमें मिलाएँ। नियमानुसार माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम से 7 ग्राम तक।

## ◉ माजून का अन्य नुस्ख़ाः

हृदयदुर्बल्य, आमाशयदुर्बल्य, आमाशय के Ill Temperament में लाभदायक है।

औषधियाँः पोस्त संगदाना खरूस, तबाशीर सफ़ेद प्रत्येक 4.5 ग्राम, गुल-ए-सुर्ख़ 13.5 ग्राम, फ़ुक़ाह-ए-इज़्ख़िर, नअनाअ ख़ुश्क, बहमन सुर्ख़ व सफ़ेद, सन्दल सुर्ख़ व सफ़ेद, किशनीज़ ख़ुश्क, हब्बुलआस प्रत्येक 7 ग्राम, पोस्त-ए-बेरून-ए-पिस्ता, क़िशर-ए-तुरन्ज, पोस्त-ए-हलीला ज़र्द प्रत्येक 4.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट कर शराब-ए-फ़वाकेह में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

अनुपानः अर्क़-ए-गुलाब।

- **माजून सुंबुलः**

आमाशय एवं यकृत के रोगों में लाभदायक है।

औषधियाँः सुंबुलुत्तीब, क़ुस्त तल्ख़, फ़ुक़ाह-ए-इज़्ख़िर, क़सबुज़्ज़रीरा और मवीज़ मुनक़्क़ा प्रत्येक 14 ग्राम, ज़ाफ़रान, मुर मक्की, अनीसून और फ़िलफ़िल प्रत्येक 3.5 ग्राम, सलीख़ा 17.5 ग्राम, मुक़िल अज़रक़ 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः मुक़िल एवं मवीज़ को शराब-ए-मुसल्लस में भिगोएँ और शेष को कूट छान कर उन के तीन गुना साफ़ शहद में मिला कर माजून तैयार करें।

- **माजून क़ुस्तः**

आमाशय एवं यकृत के दर्दों में लाभदायक है।

औषधियाँः क़ुस्त तल्ख़, दारचीनी, और सलीख़ा प्रत्येक 35 ग्राम, असारून 101.5 ग्राम, ज़ाफ़रान 28 ग्राम, फ़ुक़ाह-ए-इज़्ख़िर और मुर मक्की प्रत्येक 70 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान लें और उन के तीन गुना साफ़ शहद में मिला कर माजून तैयार करें।

- **माजून का अन्य नुस्ख़ाः**

यह मिन्हाज के लेखक द्वारा तैयार किया गया नुस्खा है।

औषधियाँः क़ुस्त तल्ख़, मुर मक्की, फ़ुक़ाह-ए-इज़्ख़िर, असल-ए-इज़्ख़िर प्रत्येक 105 ग्राम, दारचीनी, पोस्त-ए-सलीख़ा प्रत्येक 59.5 ग्राम, अनीसून, तुख़्म-ए-करफ़्स, असारून प्रत्येक 115 ग्राम, ज़ाफ़रान, ज़रावन्द मुदहरज, रेवन्द चीनी प्रत्येक 70 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान लें और उन के तीन गुना साफ़ शहद में मिला कर माजून तैयार करें।

- **माजून बुज़ूरः**

आमाशय, यकृत एवं तिल्ली के दर्दों को दूर करता है। यह वायुनाशी एवं अग्निवर्धक है और सुद्दों को खोलता है।

औषधियाँः सलीख़ा, हमामा, सुंबुलुत्तीब, नानख़्वाह , राज़ियाना, तुख़्म-ए-करफ़्स, अनीसून, तुख़्म-ए-शिब्त, सीसालियूस, जुन्द बेद स्तर, सअतर, ज़रावन्द तवील, मस्तगी रूमी, असारून, करोया और ज़ीरा किर्मानी सभी समभाग में।

निर्माण-विधिः कूट छान कर तीन गुना साफ़ शहद में मिला कर माजून तैयार करें।

- **माजून बुक़रातः**

गुर्दा, पीठ और कमर को मज़बूत करता है। वाजीकर, वीर्यवर्धक, दीपन, पाचन और आमाशयवर्धक है। अमाशय के तरल पदार्थों को समाप्त करता है और बलग़मी स्वभाव के व्यक्तियों के लिए अनुकूल है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-शिब्त, तुख़्म-ए-करफ़्स, नानख़्वाह , तुख़्म-ए-ज़र्दक, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-खर्पज़ह, बीख़-ए-करफ़्स, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-खयारैन, राज़ियाना, प्रत्येक 17.5 ग्राम, आक़रक़रा, क़िर्फ़ह, ज़ाफ़रान, मस्तगी रूमी, ऊद हिन्दी प्रत्येक 7 ग्राम, बिस्बासा, क़रन्फ़ुल, फ़िलफ़िलमोया, कबाबा चीनी, अंबर अशहब प्रत्येक 3.5 ग्राम, शहद सभी के तीन गुना।

निर्माण-विधिः नियमानुसार माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **माजून वजः**

यह आँख में प्रारंभिक मोतियबिंद को दूर करता है। आमाशय और मस्तिष्क के तरल पदार्थ को सोखता है। बलग़मी स्वभाव के व्यक्तियों के लिए बहुत अनुकूल है।

औषधियाँः वज तुर्की, हिल्तीत, ज़न्जबील, राज़ियाना।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर तीन गुना साफ़ शहद में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

- **माजून जुन्तियानाः**

आमाशय, यकृत, तिल्ली की कठोरता व गुर्दा एवं मूत्राशय के दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँः जुन्तियाना रूमी और फ़िलफ़िल स्याह प्रत्येक 35 ग्राम, क़ुस्त तल्ख़, साज़ज हिन्दी, सुंबुलुत्तीब और रेवन्द चीनी प्रत्येक 24.5 ग्राम, शहद सभी के समभाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर तीन गुना शहदमें मिलाएँ।

- **माजून का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से उस व्यक्ति को लाभ मिलता है जिस को भोजन पश्चात आमाशय में दर्द उत्पन्न होता है और उल्टी हो जाती है।

औषधियाँः बीख़-ए-इज़्ख़िर, सअद कूफ़ी प्रत्येक 3.5 ग्राम, उश्ना, फ़िलफ़िल, कुन्दुर, नानख़्वाह प्रत्येक 1.75 ग्राम, मस्तगी, ऊदख़ाम प्रत्येक 832 और क़रन्फ़ुल, सुक्क प्रत्येक 416 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर मैफुख़्तज में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम।

- **माजून इब्न-ए-इबादः**

यह उस आमाशय के लिए लाभदायक है जो भोजन को स्वीकार नहीं करता है। यह इम्तेलाई हिचकी में भी लाभदायक है।

औषधियाँः जुन्द बेद स्तर, क़ुस्त शीरीं, सुंबुलुत्तीब, फ़िलफ़िल स्याह, दार-ए-फ़िलफ़िल और दार चीनी प्रत्येक 32 ग्राम, सलीख़ा 7 ग्राम, मुर मक्की 10.5 ग्राम, अफ़ियून 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सर्वप्रथम अफ़्तीमून  और मुर मक्की को पुरानी शराबे रैहानी में भिगो कर नर्म कर लें। फिर सभी औषधियों को कूट छान कर मैफुख़्तज में मिलाएँ और नियमानुसार माजून तैयार करें प्रन्तु छः महीने के पश्चात प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

- **माजून सन्जरीनियाः**

इस माजून को हकीमों ने तिर्याक़ों की श्रेणी में सम्मिलित किया है। यह बहुत ही महत्वपूर्ण एवं लाभदायक माजून है। पेट दर्द, अग्निमन्दय, सुला, मूत्रकृच्छा और ठंडक एवं तरल पदार्थों से होने वाले सभी बलग़मी एवं बादी रोगों में लाभदायक है।

औषधियाँः जुन्द बेद स्तर, अफ़ियून, दार चीनी, असारून, फ़ूह, दोक़ू प्रत्येक 4.5 ग्राम, मुर साफ़, फ़िलफ़िल, क़ुस्त, क़रन्फ़ुल और दार-ए-फ़िलफ़िल प्रत्येक 27 ग्राम, ज़ाफ़रान 2.25 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर साफ़ शहद में मिला कर माजून तैयार करें। छः महीने के पश्चात प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 416 मिली ग्राम से 3.5 ग्राम तक।

- **माजून का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः जुन्द बेद स्तर और अफ़ियून प्रत्येक 7 ग्राम, दार चीनी, मू, फ़ूह, दोक़ू और असारून प्रत्येक 35 ग्राम, फ़िलफ़िल, दार-ए-फ़िलफ़िल, क़िन्नह, क़ुस्त और मुर मक्की प्रत्येक 7 ग्राम, ज़ाफ़रान 875 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः नियमानुसार माजून तैयार करें। यह नुस्खा लाभ एवं गुणों के संदर्भ में लगभग अमरूसिया के स्थान पर है।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

- **माजून क़राक़र:**

आमाशयवर्धक, आर्तवजनक, गर्भपतक, अग्निवर्धक है। पेट दर्द को दूर करता है।

औषधियाँ: मुर, दार चीनी प्रत्येक 7 ग्राम, वरक़-ए-सुद्दाब ख़ुश्क, पोदीना कोही, क़िर्दमाना, हिल्तीत, सकबीनज और जावशीर प्रत्येक 10.5 ग्राम, अबहल 7 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को कूट कर उन के तीन गुना शहद के क़िवाम में मिलाएँ। छः महीने के पश्चात प्रयोग में लाएँ।

- **माजून मुश्क:**

यकृत दर्द और पेट की कमज़ोरी में लाभदायक है। सुद्दों को खोलता है और सख़्त सूजन को समाप्त करता है।

औषधियाँ: मुश्क तुर्की, सलीख़ा, सुंबुलुत्तीब, साज़ज हिन्दी, लुक-ए-मग़सूल, रेवन्द चीनी और जुन्तियाना रूमी प्रत्येक 7 ग्राम, ज़ाफ़रान, नानख़्वाह , तुख़्म-ए-करफ़्स और मस्तगी रूमी प्रत्येक 10.5 ग्राम, ऊद हिन्दी, मुर साफ़ और क़रन्फ़ुल प्रत्येक 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधि: नियमानुसार माजून तैयार करें।

सेवन-मात्रा: 3.5 ग्राम।

अनुपान: गर्म पानी के साथ।

- **माजून ज़रावन्द:**

यह मोहम्मद इब्न-ए-ज़करिया द्वारा तैयार किया गया नुस्खा है। इस का दूसरा नाम माजून-ए-नीम है। यह दमा, श्वास में तंगी और बलग़मी खाँसी में लाभदायक है।

औषधियाँ: ज़रावन्द मुदहरज, क़िर्दमाना, फ़िलफ़िल, कर्सनह, तुख़्म-ए-सपिन्दान, मग़ज़-ए-बादाम तल्ख़ और अन्जोरह प्रत्येक 17.5 ग्राम, रुब्बुस्सूस, पर्सियाउशाँ और ज़ूफ़ा ख़ुश्क प्रत्येक 35 ग्राम, समग़-ए-अरबी 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: सभी औषधियों को कूट छान कर उन के तीन गुना साफ़ शहद में मिलाएँ। नियमानुसार माजून तैयार करें।

सेवन-मात्रा: 10.5 ग्राम।

अनुपान: तबीख़-ए-जूफ़ा के साथ।

- **माजून का अन्य नुस्ख़ा:**

श्वास में तंगी, दमा, सीने के रोग, फेफड़े के रोग, रक्तनिष्ठिवान में लाभदायक है।

औषधियाँ: समग़ुलबुत्म, ज़ाफ़रान, कुन्दुर, मुर साफ़, दारचीनी, मग़ज़-ए-चिलग़ोज़ा, बीख़-ए-सोसन सेहराई, क़ुस्त तल्ख़ और तीन-ए-शामूस प्रत्येक 18 ग्राम, हमामा, कतीरा, क़िर्दमाना और ख़रबक़ प्रत्येक 13.5 ग्राम, नारदीन 11.25 ग्राम, सलीख़ा 9

ग्राम, बारज़द 115 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान लें। बार्ज़द को मधु में पिघलाएँ। सब को एक साथ मिला कर माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

अनुपानः माउलअस्ल या शर्बत-ए-ज़ूफा के साथ।

- **माजून का अन्य नुस्ख़ाः**

सीने के रोग और फोड़ों में लाभदायक है। इस से शवास की तंगी, नफ्सुद्दम, नफ्सुलमिद्दह (Pyoptysis), नज़ला, ज़ुकाम और सीने के रोगों मेंलाभ पहुँचता है।

औषधियाँः समग़ुलबुत्म, ज़ाफ़रान, कुन्दुर, मुर मक्की, दारचीनी, मुग़ास और हमामा प्रत्येक 4.5 ग्राम, हब्बुस्सनोबर किबार, रुब्बुस्सूस, तीन-ए-शामूस, नारदीन और बारज़द प्रत्येक 22.5 ग्राम, क़ुस्त तल्ख़ 18 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान कर साफ़ शहद में मिलाएँ और नियमानुसार माजून तैयार करें।

- **माजून ज़ूफाः**

श्वास की तंगी, दमा और खाँसी में लाभदायक है।

औषधियाँः ज़ूफ़ा ख़ुश्क, रुब्बुस्सूस और पर्सियाउशाँ प्रत्येक 35 ग्राम, मग़ज़-ए-बादाम तल्ख़ और मग़ज़-ए-चिलग़ोज़ा प्रत्येक 17.5 ग्राम, हुल्बा, समग़-ए-अरबी और अन्जोरह प्रत्येक 10.5 ग्राम, ज़रावन्द मुदहरज 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर साफ़ शहद में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

अनुपानः गर्म पानी के साथ।

- **माजून कफ़ाः**

पुरानी खाँसी, सीने के दर्द, पेट के दर्द, जिगर के दर्द, तिल्ली के बढ़ने और दमा में लाभदायक है। आवाज़ साफ़ करता है। मूत्रविरेचक है।

औषधियाँः दाने और छिलके से साफ़ किया हुआ मोटा मवीज़ मुनक़्क़ा 87.5 ग्राम, ज़ाफ़रान, सुंबुलुत्तीब, सलीख़ा, दारचीनी और दार-ए-शीशआँ प्रत्येक 3.5 ग्राम, क़सबुज़्ज़रीरा, फ़ुक़ाह-ए- इज़्ख़िर, इल्कुलबुत्म और मुक़िल अज़रक़ प्रत्येक 8.75 ग्राम, मुर मक्की 14 ग्राम, शहद 56 ग्राम।

निर्माण-विधिः मुक़िल को शराब-ए-मुसल्लस या साफ़ शराब-ए-अंगूरी में घोल लें। मवीज़ को शराब में भिगोएँ और फिर धीरे से कूट लें। शेष सभी औषधियों

को कूट छान 65 ग्राम की मात्रा में लें और साफ़ शहद में मिलाएँ। अंत में सब को उपर्युक्त मुक़िल एवं मवीज़ के साथ में गूंध कर माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम।

अनुपानः सीने के दर्द के लिए शराब-ए-अज़रक़ के साथ और पेट दर्द के लिए गर्म पानी के साथ प्रयोग करें।

- **माजून का अन्य नुस्ख़ाः**

यह लेखक द्वारा तैयार किया गया नुस्खा है। पुरानी खाँसी, शवास की तंगी और दमा में लाभदायक है। आवज़ को साफ़ करता है साथ शवास में सहायक अंगों को भी साफ़ करता है। पेट दर्द, क़ूलन्ज और सीने के दर्द में आराम देता है। उपरोक्त रोगों में यह नुस्खा अत्यंत लाभदायक एवं Experimented है।

औषधियाँः मुर मक्की, मीअह साइला, कतीरा और समग़-ए-अरबी प्रत्येक 17.5 ग्राम, कुन्दुर, मग़्ज़-ए-बादाम तल्ख़, ज़रावन्द, क़िर्दमाना, ज़ाफ़रान, पर्सियाउशाँ, ईर्सा और फ़रासियून प्रत्येक 10.5 ग्राम, ज़ूफ़ा ख़ुश्क और चिलग़ोज़ा प्रत्येक 17.5 ग्राम, मवीज़ मुनक़्क़ा 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः निर्यास को शराब-ए-मुसल्लस या तबीख़-ए-ज़ूफा में घोल लें। शेष को कूट छान कर बताशा और साफ़ शहद के साथ मिला कर माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

अनुपानः गर्म पानी के साथ प्रयोग करें।

- **माजून हिल्तीतः**

बुख़ार एवं सभी प्रकार के जानवरों के काटे या डसे में लाभदायक है।

औषधियाँः अच्छी हिल्तीत, फ़िलफ़िल स्याह, साफ़ मुर सुद्दाब प्रत्येक 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर तीन गुना शहद में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

- **माजून का अन्य नुस्ख़ाः**

यह नुस्ख़ा "मिनहीजुन्नुबुव्वह" से लिया गया है। चौथिया बुख़ार, क़ूलन्ज और जिगर के दर्द में लाभदायक है। वायुनाशक है। जानवरों के काटे या डसे में लाभदायक है।

औषधियाँः साफ़ मुर, क़ुस्त तल्ख़, बर्ग-ए-सुद्दाब, फ़ूदनज बर्री, फ़िलफ़िल स्याह और आक़रक़रहा प्रत्येक 17.5 ग्राम, हिल्तीत सभी औषधियों के समभाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर तीन गुना शहद में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

● **माजून हब्बुलग़ारः**

यह नुस्खा मोहम्मद बिन ज़करिया का है। यह क़ूलन्ज, इस्तिरख़ा-ए-तबली (Ascitis Succatous) और सभी प्रकार के रीही रोगों में लाभदायक है।

औषधियाँः सुद्दाब बर्री 17.5 ग्राम, नानख़्वाह , ज़ीरा किर्मानी, काशिम, शोनीज़, सअतर, करोया, फ़ुत्रासालीयून, मग़ज़-ए-बादाम तल्ख़, फ़ूदनज कोही, दार-ए-फ़िलफ़िल, वज तुर्की, ज़ूफ़ा, हब्बुलग़ार और जुन्द बेद स्तर प्रत्येक 7 ग्राम, जावशीर 10.5 ग्राम, सकबीनज 14 ग्राम।

निर्माण-विधिः निर्यास को शराब में घोल लें। शेष सभी औषधियों को कूट छान कर उन के तीन गुना साफ़ शहद के साथ मिला कर माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 9 ग्राम।

● **माजून सीरः**

लक़वा, पक्षघात, स्वित्र और बहक़ में लाभदायक है। आमाशयकवर्धक, दीपन, बलग़म को दूर करने वाला, शक्तिवर्धक और त्वचा को निखारने वाला है। प्राकृतिक तापमान में बढ़ोत्तरी करता है। यह बूढ़े एवं ठंडे स्वभाव के व्यक्तियों के लिए काफी अनुकूल है।

औषधियाँः छिले हुए लहसन के दाने816 ग्राम, गाय का दूध, साफ़ शहद 350 ग्राम, रोग़न-ए-गाव 115 ग्राम, जौज़बोवा, फ़िलफ़िल, बिस्बासा, क़रन्फ़ुल, मस्तगी, क़ाक़लैन, पोस्त-ए-हलीला काबुली, दारचीनी और ज़न्जबील प्रत्येक 35 ग्राम, ऊद ख़ाम और ज़ाफ़रान प्रत्येक 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः 816 ग्राम की मात्रा में लहसन के छिले हुए दाने ले कर गाय के दूध में अच्छी तरह पका लें। फिर उस में 350 ग्राम साफ़ शहद और 115 ग्राम रोग़न-ए-गाव अर्थात घी मिलाएँ। तत्पश्चात जौज़बोवा, फ़िलफ़िल, बिस्बासा, क़रन्फ़ुल, मस्तगी, क़ाक़लैन, पोस्ते हलीला काबुली, दारचीनी और ज़न्जबील प्रत्येक 35 ग्राम, ऊद ख़ाम और ज़ाफ़रान प्रत्येक 17.5 ग्राम लेकर उपर्युक्त लहसन और शहद में मिला कर माजून जैयार करें।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम या 4.5 ग्राम।

● **माजून कासिर-ए-रियाहः**

बादी रोगों, रीही क़ूलन्ज, पेट दर्द, अंतरांग के दर्द, अधिक रीह उत्पन्न होने के कारण होने वाली आमाशय की कमज़ोरी, मासिकधर्म के रुकने, जोड़ों के दर्द, वातरक्त रोग और मूत्राक्षय में लाभदायक है।

औषधियाँः ज़ीरा किर्मानी मुदब्बर 27 ग्राम, सुद्दाब और मस्तगी प्रत्येक 27 ग्राम, क़रन्फ़ुल, गुल-ए-सुर्ख़, अनीसून, वज तुर्की, नानख़्वाह, पोस्त-ए-बेरून-ए-पिस्ता और बूरह अरमनी प्रत्येक 9 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान कर उन के तीन गुना साफ़ शहद में मिलाएँ। नियमानुसार माजून तैयार करें।

प्रयोग-समयः छः महीने के पश्चात प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 9 ग्राम।

- **माजून का अन्य नुस्ख़ाः**

यह पेट की गुड़गुड़ाहट और अंतरांग में गैस जमा होने को दूर करता है।

औषधियाँः अबहल, कुन्दुर, नानख़्वाह, दार चीनी, वज तुर्की, राज़ियाना।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को समभाग में लें। कूट छान कर शहद में मिलाएँ और नियमानुसार माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 9 ग्राम।

- **माजून हाफिजुस्सिहाः**

यह भारतीय हकीमों द्वारा तैयार किया गया नुस्खा है। शारीरिक शक्ति की सुरक्षा करता है और प्राकृतिक तरल पदार्थों को सोखता है।

औषधियाँः फिलफिल, दारचीनी, बादियान, जौज़बुवा, मस्तगी सभी समभाग में, जौज़-ए-मासिल सभी औषधियों के बराबर।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर रोग़न-ए-बलसाँ में चर्ब करें। शहद के साथ मिलाकर नियमानुसार माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 170 मिलीग्राम।

- **माजून कुर्कुमः**

जलोदर रोग और पेट, जिगर एवं तिल्ली की ठंडक में लाभदायक है। सुद्दे खोलता है।

औषधियाँः ज़ाफ़रान, सलीख़ा, मुर, संुबुलुत्तीब, क़ुस्त तल्ख़, फ़ुक़ाह-ए-इज़्ख़िर, दारचीनी।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर शहद में मिलाएँ।

- **दवाउलकुर्कुमः**

यह मोहम्मद इब्न-ए-ज़करया राज़ी द्वारा तैयार किया गया नुस्खा है। जिगर के रोगों, जलोदर रोग, पेट एवं तिल्ली की ठंडक में लाभदायक है। मूत्रविरेचक एवं आर्तवजनक है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-करफ़्स, इज़्ख़िर और सलीख़ा प्रत्येक 32 ग्राम, सुंबुलुत्तीब, क़ुस्त बहरी, फ़ूह, उसारा-ए-ग़ाफ़िस, रुब्बुस्सूस और सोसन बर्री प्रत्येक 16 ग्राम, रेवन्द चीनी 8 ग्राम, मुर मक्की 32 ग्राम, ज़ाफ़रान 48 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर दवा तैयार करें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

अनुपानः माउलउसूल के साथ प्रयोग करें।

- **दवाउलख़ुतातीफ़ः**

यह नुस्खा अत्याधिक प्रयोग में है और बहुत प्रचलित है। बलग़म एवं सौदा की अधिकता के कारण होने वाली डिफ्थीरिया में लाभदायक है चाहे इस का प्रयोग ग़र्ग़रह के रूप में करें या हलक़ के बाहरी भाग पर मलें।

औषधियाँः तुख़्म-ए-करफ़्स, अनीसून, नानख़्वाह ,दार चीनी, हज़ारस्पन्द, मुर मक्की, ज़रावन्द तवील, ज़ाफ़रान प्रत्येक 7 ग्राम, गुल-ए-सुर्ख़ 70 ग्राम, क़ुस्त, रमादुलखतातीफ़ प्रत्येक 115 ग्राम, बिस्बासा, सुंबुल प्रत्येक 17.5 ग्राम, माज़ू सब्ज़ 10 की संख्या में।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान कर शहद में मिलाएँ और आवश्यकता पड़ने पर प्रयोग में लाएँ।

- **दवाउलख़ुतातीफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

इस के भी वही लाभ हैं लेकिन यह नुस्खा पहले वाले की तुलना में प्रभावशाली है।

औषधियाँः अनीसून, तुख़्म-ए-करफ़्स, इज़्ख़िर, नानख़्वाह , बीख़-ए-सोसन सेहराई, सलीख़ा, शिब-ए-यमानी, हज़ारस्पन्द,रुब्बुस्सूस, दार चीनी, मुर मक्की, तुख़्म-ए-गुल-ए-सुर्ख़ प्रत्येक 7 ग्राम, क़ुस्त तल्ख़, रमादुलखतातीफ़ प्रत्येक 10.5 ग्राम, निशास्ता-ए-गन्दुम, सुंबुलुत्तीब प्रत्येक 1.75 ग्राम, माज़ू सब्ज़ 2 की संख्या में।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर तीन गुना शहद और ऐसे कशकाब में मिलाएँ जिस में अनीसून और बीख़-ए-सोसन का क्वाथ सम्मिलित हो। तत्पश्चात नियमानुसार दवा तैयार करें।

सेवन-विधिः हलक़ के बाहरी भाग पर मलें।

प्रयोग-समयः ग़र्ग़रह करने के बाद इस का सेवन भी करें।

- **दवाउस्सनहः**

इस का दूसरा नाम ''माजूनुलमुलूक'' है क्योंकि इस माजून को अरब अथवा ईरान के बादशाहों ने लगातार प्रयोग किया है।यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण एवं लाभदायक माजून है। हकीमों के अनुसार जोड़ों के दर्द, अर्श, नासूर, बहक़, स्वित्र

और कुष्ठ रोग में लाभदायक है। ज्ञानेंद्रियों एवं शरीर को बल प्राप्त होता है। बालों के कालेपन को बचाए रखता है। बुद्धिवर्धक है और यौन उत्तेजना को बढ़ाता है।

औषधियाँः पोस्त-ए-बलीला, हलीला स्याह, आमला मुनक्क़ा प्रत्येक 171 ग्राम, शोनीज़ 108 ग्राम, क़ाक़ला, नारमुश्क, सअद प्रत्येक 4.5 ग्राम, फ़िलफ़िल, दार-ए-फ़िलफ़िल, ज़न्जबील, उशक़, फ़िलफ़िलमोया प्रत्येक 54 ग्राम, अस्ल-ए-बलादुर 27 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर 1350 ग्राम बताशा के उस क़िवाम में मिलाएँ जो बताशा को अर्क़-ए-गुलाब और पानी में पिघला कर तैयार किया गया हो। हाथों को रोग़न-ए-ज़ैतून से चर्ब करके हब्ब तैयार करें जिन में से हर हब्ब का वज़न 9.63 ग्राम हो। इस दवा का सेवन लगातार एक वर्ष तक करें।

सेवन-मात्राः एक हब्ब।

अनुपानः थोड़ी मात्रा में पानी के साथ प्रयोग करें।

- **दवाउल्लुक सग़ीरः**

इस से भी दवाउल्लुक कबीर जैसे लाभ प्राप्त होते हैं।

औषधियाँः रेवन्दचीनी 5.25 ग्राम, लुकमुनक्क़ा, क़ुस्त,हुल्बा, फ़ुक़ाह-ए-इज़्ख़र, तुर्मुस, फ़िलफ़िल, हब्बुलग़ार प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर शहद में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम।

अनुपानः तबीख़-ए-अफ़्सन्तीन के साथ प्रयोग करें।

- **माजून अरस्तू सग़ीरः**

इस से भी वैसे ही लाभ प्राप्त होते हैं।

औषधियाँः अफ़ियून मिश्री 3.5 ग्राम, अक़ाक़िया और फ़िलफ़िल प्रत्येक 14 ग्राम, आक़रक़रहा और ज़ाफ़रान प्रत्येक 10.5 ग्राम, सुंबुलुत्तीब 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर उन के तीन गुना शहद में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

- **माजून का अन्य नुस्ख़ाः**

यह कुष्ठ रोग व शरीर में सौदा की अधिकता से होने वाले रोगों में लाभदायक है।

औषधियाँः हलीला स्याह और शीतरज हिन्दी प्रत्येक 35 ग्राम, दार-ए-फ़िलफ़िल 17.5 ग्राम, तुर्बुद सफ़ेद 8.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर रोग़न-ए-गाव में चर्ब करें फिर शहद में

मिलाकर माजून तैयार करें। सौदावी पदार्थों को पूरे तौर पर शरीर से बाहर निकालने के पश्चात प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम से 4.5 ग्राम तक।

- **माजून बुसुदः**

यह आर्तव की अधिकता, ख़ूनी दस्त और रक्तनिष्ठिवान में लाभदायक है।

औषधियाँः बुसुद मग़सूल, शादनज मग़सूल, करोया, गुल-ए-अनार, गिल-ए-अरमनी, गिल-ए-मख़्तूम, दमुलअखवैन और शिब-ए-यमानी प्रत्येक समभाग में।

निर्माण-विधिः कूट कर रुब्ब-ए-बिही, रुब्ब-ए-सुमाक़ या रुब्ब-ए-हब्बुर्रासन में मिलाएँ और विधि अनुसार माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **माजून कुन्दुरः**

यह स्मृतिवर्धक एवं आमाश्यवर्धक है। भूलने के रोग को दूर करता है। यह माजून बूढ़े व्यक्तियों के स्वभाव के बहुत उपयुक्त एवं अनुकूल है।

औषधियाँः कुन्दुर, वज और सअद कूफ़ी प्रत्येक 35 ग्राम, फ़िलफ़िल और ज़न्जबील प्रत्येक 17.5 ग्राम, ख़ूलन्जान और दार चीनी प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर तीन गुना शहद में मिलाएँ। सेवन-मात्राः 9 ग्राम।

- **माजून रेवन्दः**

यह जिगर एवं तिल्ली के रोगों में लाभदायक है। सुद्दों को खोलता है।

औषधियाँः रेवन्दचीनी, ज़न्जबील, शहदानज,वज और अन्जोदान प्रत्येक 32 ग्राम, तुख़्म-ए-करफ़्स, राज़ियाना, अनीसूनऔर नानख़्वाह प्रत्येक 16 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर तीन गुना शहद में मिलाएँ। कुछ नुस्ख़ों में शहदाना के स्थान पर रासन है।

- **माजून का अन्य नुस्ख़ाः**

यह स्मृतिवर्धक है। भूलने के रोग को दूर करता है।

औषधियाँः सअद कूफ़ी, कुन्दुर, मुर मक्की, फ़िलफ़िल सफ़ेद और ज़ाफ़रान प्रत्येक 35 ग्राम, मग़ज़-ए-पिस्ता और मवीज़ मुनक़्क़ा प्रत्येक 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर तीन गुना शहद में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम से 9 ग्राम तक।

- **माजून हजरुल यहूदः**

यह गुर्दा एवं मूत्राशय की पथरी को तोड़ता है।

औषधियाँः मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यारैन, तुख़्म-ए-खर्पज़ह, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-कदू और हब्ब-ए-काकनज प्रत्येक 17.5 ग्राम, हजरुल यहूद 175 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान लें। हजरुल यहूद को विशेष रूप से सूक्ष्म चूर्ण करें फिर सब को उन के तीन गुना साफ़ शहद में मिलाएँ।

- **माजून अक़रबः**

यह गुर्दा एवं मूत्राशय में उपस्थित पथरी को तोड़ता है और कण कण बना देता है। बिच्छू के काटे में लाभदायक है।

औषधियाँः अक़रब मुहर्रक़ 12.25 ग्राम, जुन्तियाना, फ़िलफ़िल, दार-ए- फ़िलफ़िल प्रत्येक 5.25 ग्राम, ज़न्जबील 3.5 ग्राम, बीख़-ए-काकनज 17.5 ग्राम, जुन्द बेद स्तर 14 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान लें। उन के तीन गुना साफ़ शहद में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 416 मिलीग्राम।

अनुपानः थोड़ी मात्रा में आब-ए-करफ़्स के साथ।

- **माजून का एक अन्य नुस्ख़ाः**

इस माजून का उल्लेख "कामिलुस्सनाअह" में आया है। जिगर के दर्द, गुर्दा के दर्द, मूत्राशय के दर्द और रक्तमेह में अत्याधिक लाभदायक है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-करफ़्स, राज़ियाना प्रत्येक 24.5 ग्राम, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यार 7 ग्राम, शूकरान, तुख़्म-ए-हुम्माज़ बर्री प्रत्येक 10.5 ग्राम, अफ़ियून 3.5 ग्राम, मग़ज़-ए-बादाम तल्ख़, मग़ज़-ए-बादाम शीरीं मुक़श्शर बूदादा, ज़ाफ़रान, मग़ज़-ए-फ़ुन्दुक़ मुक़श्शर बूदादा प्रत्येक 10.5 ग्राम, पके और बड़े हब्ब-ए-काकनज 25 की मात्रा में।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर शहद में मिलाएँ और माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम।

- **माजून काकनजः**

यह मूत्राशय के फोड़े और रक्तमेह में लाभदायक है।

औषधियाँः बज़रुल बन्ज, तुख़्म-ए-करफ़्स और राज़ियाना प्रत्येक 24.5 ग्राम, मग़ज़-ए-फ़ुन्दुक, मग़ज़-ए-बादाम तल्ख़ बूदादा प्रत्येक 10.5 ग्राम, ज़ाफ़रान 7 ग्राम, हब्ब-ए-काकनज 25 की मात्रा में, कतीरा 14 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान लें फिर शराब-ए-मुसल्लस में मिलाएँ।

प्रयोग-समयः छः महीने के पश्चात प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम।

अनुपानः शर्बत-ए-ख़शख़ाश के साथ प्रयोग करें।

- **माजून अताईः**

यह मूत्रकृच्छ और शीघ्रपतन में लाभदायक है।

औषधियाँः कुन्दुर, इल्क रूमी, जुफ़्त बलूत, दाना-ए-मवीज़।

निर्माण-विधिः सब को समभाग लेकर कूट छान लें और उन के तीन गुना शहद में मिलाकर माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 9 ग्राम।

- **माजून रशीदीः**

यह मूत्रकृच्छ में लाभदायक और वीर्यधारण करने वाला है।

औषधियाँः कबाब चीनी, फ़ोफ़ल, क़रन्फ़ुल, जौज़बोवा, ख़ुस्यतुस्सअलब, मस्तगी और नानख़्वाह प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान लें और उन के तीन गुना शहद में मिलाकर विधि अनुसार माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **माजून का अन्य नुस्ख़ाः**

मूत्रा असंयमता में लाभदायक है।

औषधियाँः गुलनार फ़ारसी, कुन्दुर, इल्क-ए-रूमी और सिर्का में भिगोया हुआ बलूत प्रत्येक 70 ग्राम, सअद कूफ़ी और करोया प्रत्येक 17.5 ग्राम, दार-ए-फ़िलफ़िल और ख़ुस्यतुस्सअलब प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान लें और उन के तीन गुना शहद में मिलाकर विधि अनुसार माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **माजून का अन्य नुस्ख़ाः**

बहुमूत्रता और शुक्रपात में लाभदायक है।

औषधियाँः अक़ाक़िया और गुल-ए-अनार प्रत्येक 10.5 ग्राम, क़सबुज़्ज़रीरा, सन्दलैन, तुख़्म-ए-हुम्माज़, समग़-ए-अरबी और तबाशीर प्रत्येक 7 ग्राम, तुख़्म-ए-मूरद 9 ग्राम, कुन्दुर 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर जुल्लाब एवं क़न्द में मिलाकर माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम।

आहारः खुश्कह एवं क़लियह का प्रयोग करें।

## ◉ माजून का अन्य नुस्खा:

यह स्वप्नमेह, शुक्रपात और शीघ्रपतन में लाभदायक है।

औषधियाँ: ख़शख़ाश 45 ग्राम, कतीरा खुश्क 9 ग्राम, जौज़बोवा, क़ाक़ला और दारचीनी प्रत्येक 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: औषधियों को कूट छान प्रयोग करें।

सेवन-मात्रा: 9 ग्राम।

## ◉ माजून का अन्य नुस्खा:

यह शीघ्रपतन, स्वप्नमेह और मूत्रकृच्छ में लाभदायक है।

औषधियाँ: इल्क-ए-रूमी, कुन्दुर, बलूत, गुलनार, शोनीज़ और किशनीज़ खुश्क प्रत्येक 7 ग्राम, ज़ीरा किर्मानी और नानख़्वाह प्रत्येक 17.5 ग्राम, पोस्त-ए-हलीला काबुली, हलीला ज़र्द, आमला मुनक्क़ा और हलीला स्याह प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर तीन गुना शहद में मिलाकर माजून तैयार करें।

## ◉ माजून चिलग़ोज़ा:

यह मूत्रकृच्छ में लाभदायक है।

औषधियाँ: दोक़ू, रेवन्द चीनी, इज़्ख़िर, हब्ब-ए-बलसाँ, अफ़ियून, सलीख़ा, ज़ाफ़रान, दार चीनी, फ़ुत्रासालियून, कमाफ़ीतूस प्रत्येक 10.5 ग्राम, नअनाअ खुश्क 1.75 ग्राम, चिलग़ोज़ा 105 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर तीन गुना शहद में मिलाकर माजून तैयार करें।

## ◉ माजून का अन्य नुस्खा:

इस माजून का उल्लेख "कामिलुस्सनाअह" में आया है। यह मूत्रविरेचक है। सुद्दों को खोलता है। आर्तवजनक है। मुर्दा बच्चे को माँ के पेट से बाहर निकालता है। जिगर और तिल्ली के सुद्दों को खोलता है।

औषधियाँ: दोक़ू, रेवन्द चीनी, फ़ुक़ाह-ए-इज़्ख़िर, हब्ब-ए-बलसाँ, सुंबुलुत्तीब, अनीसून, ज़ाफ़रान, बज़्र-ए-करफ़्स, सलीख़ा, क़ुस्त तल्ख़, असारून, फ़ुत्रासालियून, कमाफ़ीतूस, फ़ूदनज बर्री, उस्क़ूलोक़द्रियून, ज़रावन्द मुदहरज, नानख़्वाह, रासन, मस्तगी रूमी, इर्सा, मुर मक्की, जुन्द बेद स्तर, सअतर जबली, करोया, सीसालियूस, पोस्त-ए-कबर, क़रन्फ़ुल, ज़ीरा किर्मानी, तुख़्म-ए-राज़ियाना, इशक़ील मुशव्वा और खर्दल प्रत्येक 3.5 ग्राम, मग़ज़-ए-हब्बुस्सनोबर किबार 2 की संख्या में।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर तीन गुना शहद में मिलाकर माजून तैयार करें।

- **माजून का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गर्भवती महिलाओं में बनने वाली हवा को दूर करता है और उनके पेट में पल रहे बच्चे की सुरक्षा करता है।

औषधियाँः ज़रंबाद, दरूनज अक़रबी, जुन्द बेद स्तर, हिल्तीत, माज़ू और तबाशीर प्रत्येक 3.5 ग्राम, ज़न्जबील 35 ग्राम, मुश्क 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर क़न्द में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **माजून का अन्य नुस्ख़ाः**

कमर, गुर्दा और नितंब के दर्द को दूर करता है साथ ही कमज़ोरी में लाभदायक है।

औषधियाँः वज, नारदीन, मस्तगी रूमी, असारून और दार चीनी प्रत्येक 7 ग्राम, मुर मक्की 70 ग्राम, ज़रंबाद, तुख़्म-ए-करफ़्स और दरूनज प्रत्येक 21 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर तीन गुना शहद में मिलाएँ।

- **माजून काअन्य नुस्ख़ाः**

यह मूत्राशय के स्थानच्यति और मूत्र टपकने के रोग में लाभदायक है।

औषधियाँः कुन्दुर, हब्ब-ए-मुहल्लब, सअद, रासन, मीअह ख़ुश्क प्रत्येक 10.5 ग्राम, पोस्त-ए-हलीला काबुली 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः पोस्त-ए-हलीला को थोड़े से पानी में पका कर साफ़ कर लें फिर उस क्वाथ में 67.5 ग्राम मधु और 67.5 ग्राम संजरी बताशा मिला कर क़िवाम तैयार करें और शेष औषधियों को कूट छान कर उपर्युक्त क़िवाम में डालें और माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **माजून का अन्य नुस्ख़ाः**

इस के प्रयोग से गुर्दा एवं मूत्राशय की पथरी और रेत बाहर निकलती है, साथ ही उनके चिपचिपे पदार्थ भी बाहर निकलते हैं। यह मूत्रविरेचक एवं आर्तवजनक है।

औषधियाँः अस्लुस्सूस 18 ग्राम, सीसालियूस, कमाज़रयूस, हियूफ़ारिक़ून, हुर्फ़ प्रत्येक 18 ग्राम, हमामा 36 ग्राम, दार चीनी 54 ग्राम, सुंबुलुत्तीब, ज़ाफ़रान, तुख़्म-ए-करफ़्स जबली, जअदह, तुख़्म-ए-लबलाब बर्री, मुश्कतरामशीअ प्रत्येक 54 ग्राम, तुख़्म-ए-पन्जन्कश्त 108 ग्राम, क़िर्दमाना 216 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर तीन गुना शहद में मिलाकर माजून तैयार करें।

❑❑❑

प्रथम खण्ड

# चतुर्थ अध्याय

# विभिन्न प्रकार की जवारिश के नुस्ख़े

## यह खण्ड तीन वर्गों पर आधारित है

## प्रथम वर्गः विरेचक जवारिश के नुस्ख़े

- **जवारिश सफर्जली मुस्हिलः**

इस से शौच नर्म और साफ़ होता है। क़ूलन्ज को खोलता है और आमाशयवर्धक है।

औषधियाँ: बिही असफ़हानी 420 ग्राम, शराब-ए-मुसल्लस, साफ़ शहद 810 ग्राम, ज़न्जबील, दार-ए-फ़िलफ़िल, दार चीनी प्रत्येक 7 ग्राम, दाना-ए-हील, क़ाक़ला, ज़ाफ़रान प्रत्येक 10.5 ग्राम, मस्तगी 17.5 ग्राम, सक़मूनिया मुशव्वा 35 ग्राम, रोग़न-ए-बादाम में चर्ब तुर्बुद सफ़ेद मुजव्वफ़ 105 ग्राम।

निर्माण-विधिः सर्वप्रथम छिलके एवं गुठली से पाक साफ़, पका हुआ और उच्चतम गुणवत्ता वाले असफहानी बेही के फल 420 ग्राम की मात्रा में लेकर शराब-ए-मुसल्लस में अच्छी तरह पकाएँ फिर हावन में कूट कर उल्टी छलनी से छान लें। तत्पश्चात उस के साथ 810 ग्राम साफ़ शहद मिला कर क़िवाम तैयार करें और शेष सभी औषधियों को सूक्ष्म चूर्ण कर के विधि अनुसार उपर्युक्त क़िवाम में डालें और जवारिश तैयार करें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

अनुपानः गर्म पानी के साथ प्रयोग करें।

- **जवारिश सफर्जली मुस्हिल का अन्य नुस्ख़ाः**

इस जवारिश को मोहम्मद इब्न-ए-ज़करिया राज़ी ने तैयार किया है और हकीमों के क्षेत्र में इसे सफर्जली ताबिस्तानी के नाम से जाना जाता है। यह गर्मी के मौसम में, गर्म क्षेत्रों में, गर्म स्वभाव के व्यक्तियों के लिए बहुत अनुकूल एवं उपयुक्त है।

औषधियाँ: सक़मूनिया मुशव्वा, गुल-ए-सुर्ख़ और तबाशीर सफ़ेद प्रत्येक 8.75 ग्राम, रोग़न-ए-बादाम में चर्ब किया हुआ तुर्बुद सफ़ेद तराशीदा 105 ग्राम।

निर्माण-विधिः आवश्यकतानुसार ऐसे उसारह का क़िवाम तैयार करें जिस में

तुरन्जबीन को मिलाया गया हो, फिर शेष को कूट छान कर जवारिश तैयार करें।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम से 14 ग्राम तक।

- **जवारिश सफर्जली मुस्हिल का अन्य नुस्ख़ाः**

क़ूलन्ज को खोलता है और सफ़रा का विरेचक है।

औषधियाँः एक मोटा और पका हुआ बिही फल, सक़मूनिया मुशव्वा 14 ग्राम, फ़िलफ़िल और ज़न्जबील प्रत्येक 28 ग्राम।

निर्माण-विधिः बिही का एक मोटा और पका हुआ फल लेकर ख़मीर में गिल-ए-हिकमत कर के हल्की आँच में पकाएँ फिर उस के छिलके और बीज को निकाल कर साफ़ कर लें और हल्का कूट लें, फिर शेष औषधियों को कूट छान कर साफ़ शहद में मिलाएँ और विधि अनुसार जवारिश तैयार करें।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम से 7 ग्राम तक।

- **जवारिश तमरीः**

क़ूलन्ज को खोलता है। मूत्रकृच्छ एवं आमाशय की कमज़ोरी में लाभदायक है। इस से शौच साफ़ और नर्म होता है।

औषधियाँः बूरह अरमनी, कमून किर्मानी, फ़ुत्रासालियून, ज़न्जबील और फ़िलफ़िल सफ़ेद प्रत्येक 7 ग्राम, सक़मूनिया मुशव्वा 17.5 ग्राम, ख़ुर्मा मुनक़्क़ा 70 ग्राम, बादाम मुक़श्शर बिरयां 35 ग्राम, बर्ग-ए-सुद्दाब 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः ख़ुर्मा को एक रात दिन सिर्का में भिगोएँ फिर हाथों से मल कर छलनी से छान लें और तीन गुना साफ़ शहद के साथ पका कर क़िवाम तैयार करें। अंत में सभी औषधियों को कूट छान कर क़िवाम में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम।

अनुपानः गर्म पानी के साथ प्रयोग करें।

- **जवारिश का अन्य नुस्ख़ाः**

इस को मोहम्मद इब्न-ए-ज़करिया राज़ी ने तैयार किया है। यह काम वासना की क्षमता बढ़ाने में अत्यंत प्रभावशाली है।

औषधियाँः मस्तगी रूमी, सुंबुलुत्तीब, गुल-ए-सुर्ख़ की पंखड़ी, लुक-ए-मग़सूल, रेवन्द चीनी और आक़रक़रहा प्रत्येक 7 ग्राम, माज़र्यून मुदब्बर 14 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट छान लें। साफ़ शहद व उसारा-ए-ज़हरी मिला कर जवारिश तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **जवारिश उस्क़ुफ़:**

हृदयस्पंदन, बादी बवासीर और कमर दर्द में लाभदायक है। आमाशय के अन्दर बनने वाली हवा को बाहर निकालता है।

औषधियाँ: सक़मूनिया, रोग़न-ए-बादाम में चर्ब किया हुआ तुर्बुद सफ़ेद तराशीदा 17.5 ग्राम, फ़िलफ़िल और क़ाक़ला प्रत्येक 10.5 ग्राम, ज़न्जबील, दार चीनी, आमला, बिस्बासा, क़रन्फ़ुल और जौज़बोवा प्रत्येक 6.75 ग्राम, मुर मक्की 9 ग्राम, शकर तबरज़द 210 ग्राम,झाग से पाक साफ़ शहद सभी औषधियों के दो गुना।

निर्माण-विधि: सभी औषधियों को कूट छान कर विधि अनुसार जवारिश तैयार करें। छः महीने के बाद प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्रा: 9 ग्राम से 18 ग्राम तक।

- **जवारिश हिन्दी:**

जोड़ो के दर्द, गठिया, कमर दर्द, क़ूलन्ज में लाभदायक है।

औषधियाँ: सक़मूनिया मुशव्वा 35 ग्राम, जौज़बोवा, क़ाक़ला, कबाब चीनी, ज़न्जबील, क़िर्फह, नारमुश्क और फ़िलफ़िल प्रत्येक 17.5 ग्राम, हुआ तुर्बुद सफ़ेद तराशीदा मुसम्मग़ 70 ग्राम।

निर्माण-विधि: तुर्बुद को रोग़न-ए-बादाम में चर्ब कर लें फिर सभी औषधियों को एक साथ कूट छान कर मधु में मिलाएँ और विधि अनुसार जवारिश तैयार करें।

- **जवारिश का अन्य नुस्ख़ा:**

इस को मोहम्मद इब्न-ए-ज़करिया राज़ी ने तैयार किया है। बलग़मी एवं रीही क़ूलन्ज में लाभदायक है।

औषधियाँ: सक़मूनिया मुशव्वा 416 मिलीग्राम, तुर्बुद सफ़ेद 3.5 ग्राम, मस्तगी 416 मिलीग्राम, ज़न्जबील, दार चीनी और फ़िलफ़िल प्रत्येक 208 ग्राम।

निर्माण-विधि: सभी औषधियों को कूट छान कर क़न्द के साथ मिलाएँ और विधि अनुसार जवारिश तैयार करें। जवारिश की यह पूरी मात्रा एक बार सेवन के लिए है।

- **जवारिश शहरयाराँ:**

आमाशय एवं जिगर की ठंडक में लाभदायक है। जले हुए सफ़रा व सौदा को दस्तों द्वारा निकालता है। क़ूलन्ज खोलता है।

औषधियाँ: शीतरज हिन्दी, नारमुश्क, मस्तगी रूमी, सुंबुलुत्तीब, सलीख़ा, अबहल, क़ाक़ला किबार, राज़ियाना, अनीसून, तुख़्म-ए-करफ़्स और नानख़्वाह प्रत्येक 10.5

ग्राम, बिस्फ़ाइज फ़िस्तक़ी 31.5 ग्राम, अफ्तीमून 17.5 ग्राम, रोग़न-ए-बादाम में चर्ब किया हुआ तुर्बुद सफ़ेद तराशीदा 105 ग्राम, सक़मूनिया मुशव्वा 42 ग्राम, शकर तबरज़द 210 ग्राम, शहद आवश्यकतानुसार।

निर्माण-विधिः सबको कूट छान कर जवारिश तैयार करें फिर जौ के बीच में दफन कर दें और छः महीने बाद प्रयोग करें।

सेवन-मात्राः 21 ग्राम।

अनुपानः जिस पानी में ज़ीरा किरमानी को पकाया गया हो।

- **जवारिश शहरयाराँः**

आमाशय व जिगर की ठंडक में लाभदायक है। दस्तों द्वाराजले हुए सफ़रा व सौदा को निकालता है। क़ूलन्ज को खोलता है।

औषधियाँः शीतरज हिन्दी, ज़न्जबील, फ़िलफ़िल, ख़ूलन्जान, क़िर्फ़ह, क़रन्फ़ुल, साज़ज हिन्दी, नारमुश्क, मस्तगी रूमी, सुंबुलुत्तीब, सलीख़ा, हील, क़ाक़ला किबार, राज़ियाना, अनीसून, तुख़्म-ए-करफ्स और नानख़्वाह प्रत्येक 10.5 ग्राम, बिस्फ़ाइज फ़िस्तक़ी 31.5 ग्राम, अफ्तीमून 17.5 ग्राम, रोग़न-ए-बादाम में चर्ब किया हुआ तुर्बुद सफ़ेद तराशीदा 105 ग्राम, सक़मूनिया मुशव्वा 42 ग्राम, शकर तबरज़द 210 ग्राम, शहद आवश्यकतानुसार।

निर्माण-विधिः विधि अनुसार जवारिश तैयार करें फिर जौ के बीच में दफन कर दें और छः महीने के बाद प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 14 ग्राम से 21 ग्राम तक।

अनुपानः जिस पानी में ज़ीरा किरमानी को पकाया गया हो।

- **जवारिश शहरयाराँः**

इस नुस्खे को "मिनहाजुन्नुबुव्वह" पुस्तक के लेखक ने तैयार किया है। क़ूलन्ज को खोलता है। आमाशय एवं जिगर की ठंडक में लाभदायक है।

औषधियाँः क़िर्फ़ह, ज़न्जबील, दार चीनी, सलीख़ा, सुंबुलुत्तीब, जौज़बोवा, हील, मस्तगगी, क़ाक़ला, हब्ब-ए-बलसाँ और ज़ाफ़रान प्रत्येक 15.75 ग्राम, रोग़न-ए-बादाम में चर्ब किया हुआ तुर्बुद सफ़ेद तराशीदा 28 ग्राम, हब्बुन्नील, सक़मूनिया मुशव्वा प्रत्येक 10.5 ग्राम, क़न्द सफ़ेद सभी औषधियों के समभाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर शहद के साथ मिलाएँ और जवारिश तैयार करें। छः महीने के बाद प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 14 ग्राम।

● **जवारिश कैसरः**

क़ूलन्ज को खोलता है और गठिया में लाभदायक है। चिपचिपे पदार्थों को शरीर से बाहर निकालता है।

औषधियाँः दार-ए-फ़िलफ़िल, ज़न्जबील, पोस्त-ए-हलीला ज़र्द, सक़मूनिया प्रत्येक 7 ग्राम, तुख़्म-ए-करफ़्स, नानख़्वाह, आक़रक़रहा, नमक-ए-तबरज़द प्रत्येक 21 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर शहद के साथ मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

● **जवारिश का अन्य नुस्ख़ाः**

तरल पदार्थों को शरीर से बाहर निकालता है। पक्षघात एवं बलग़मी रोगों में लाभदायक है।

औषधियाँः फ़िलफ़िल, दार चीनी, दार-ए-फ़िलफ़िल, क़रन्फ़ुल, सलीख़ा, सअद, ब्रंग काबुली मुक़श्शर, जौज़बोवा प्रत्येक 4.5 ग्राम, हब्ब-ए-अबहल 27 ग्राम, तुर्बुद सफ़ेद तराशीदा 22.5 ग्राम, सक़मूनिया मुशव्वा 8.75 ग्राम, शहद सभी के तीन गुना।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान कर शहद के साथ मिलाएँ और विधि अनुसार जवारिश तैयार करें।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम।

● **जवारिश नारमुश्कः**

इस के प्रयोग से शौच साफ़ और नर्म होता है। यह क़ूलन्ज को दूर करता है।

औषधियाँः जौज़बोवा, क़ाक़ला किबार, दार चीनी प्रत्येक 10.5 ग्राम, क़रन्फ़ुल, ज़न्जबील, नारमुश्क प्रत्येक 21 ग्राम, सक़मूनिया 17.5 ग्राम, नबात सब के बराबर और शहद दो गुना।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर जवारिश तैयार करें।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम से 10.5 ग्राम तक।

● **जवारिश का अन्य नुस्ख़ाः**

यह आमाशय की कमज़ोरी एवं जलोदर में लाभदायक है।

औषधियाँः क़ाक़ला किबार और क़ाक़ला सिग़ार प्रत्येक 7 ग्राम, नारमुश्क 10.5 ग्राम, दार-ए-फ़िलफ़िल 17.5 ग्राम, दार चीनी 14 ग्राम, क़रन्फ़ुल 10.5 ग्राम, सक़मूनिया 7 ग्राम, तुर्बुद 35 ग्राम, मस्तगी और ज़न्जबील प्रत्येक 5.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान कर क़न्द एवं शहद के साथ मिलाएँ और विधि अनुसार जवारिश तैयार करें।

सेवन-मात्राः 9 ग्राम।

अनुपानः थोड़ी मात्रा में अर्क़-ए-गुलाब के साथ।

- **जवारिश बनफ़्शहः**

यह लेखक द्वारा तैयार किया हुआ नुस्ख़ा है। यह एक ऐसा विरेचक है जो सुख में पले बढ़े व्यक्तियों और उन व्यक्तियों के लिए उपयुक्त एवं अनुकूल है जिन को विरेचक औषधियों का सेवन भाता नहीं है। इस का स्वाद बहुत सुखद होता है और इस से कोई हानि भी नहीं होती है।

औषधियाँः ज़न्जबील, मस्तगी, क़रन्फ़ुल, क़ाक़ला और गुल-ए-सुर्ख़ प्रत्येक 3.5 ग्राम, बिस्फ़ाइज फ़िस्तक़ी, सना मक्की और सक़मूनिया मुशव्वा प्रत्येक 17.5 ग्राम, रोग़न-ए-बादाम में चर्ब किया हुआ तुर्बुद सफ़ेद तराशीदा और गुल-ए-बनफ़्शह प्रत्येक 35 ग्राम, शर्बत-ए-बनफ़्शह, शर्बत-ए-नीलोफ़र, शर्बत-ए-गावज़बाँ प्रत्येक 70 ग्राम, शीर-ए-ख़िशत 105 ग्राम, तुरन्जबीन, आलू बुख़ारा और आब-ए-तमर हिन्दी प्रत्येक 175 ग्राम, मुश्क तुर्की 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान लें। सक़मूनिया एवं बनफ़्शह को सूक्ष्म चूर्ण कर लें। तुरन्जबीन एवं शीर-ए-ख़िशत को अर्क़-ए-गुलाब में घोल कर साफ़ कर लें। उपर्युक्त रसों और शर्बतों को 350 ग्राम क़न्द सफेद के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें और विधि अनुसार जवारिश तैयार करें।

सेवन-मात्राः आवश्यकता के समय 10.5 से 17.5 ग्राम तक।

- **जवारिश ऊद मुस्हिलः**

आमाशय की ठंडक और उस में तरल पदार्थों की अधिकता के संदर्भ में लाभदायक और प्रभावशाली है।

औषधियाँः तुर्बुद सफ़ेद 14 ग्राम, क़रन्फ़ुल, ऊद, ज़ाफ़रान और जौज़बोवा प्रत्येक 3.5 ग्राम, सक़मूनिया मुशव्वा 1.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान कर क़न्द एवं शहद के साथ मिलएँ और विधि अनुसार जवारिश तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

अनुपानः गर्म पानी के साथ प्रयोग करें।

- **जवारिश ऊद मुस्हिल का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से भी वही लाभ प्राप्त होते हैं।

औषधियाँः ऊद ख़ाम, मस्तगी रूमी प्रत्येक 17.5 ग्राम, सक़मूनिया मुशव्वा 8.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान कर जुल्लाब एवं क़न्द के साथ मिलाएँ और विधि अनुसार जवारिश तैयार करें।

- **जवारिश तबाशीर मुस्हिलः**

इस से दस्तों द्वारा सफ़रा और बलग़म निकलते है। यह जवारिश गर्म स्वभाव के व्यक्तियों के लिए अनुकूल है।

औषधियाँः तुर्बुद सफ़ेद 35 ग्राम, सक़मूनिया मुशव्वा 3.5 ग्राम, तबाशीर सफ़ेद, गुल-ए-सुर्ख़ की पंखड़ी और ज़ाफ़रान प्रत्येक 5.25 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान कर क़न्द एवं शहद के साथ मिलाएँ और विधि अनुसार जवारिश तैयार करें।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम से 17.5 ग्राम तक।

- **जवारिश का अन्य नुस्ख़ाः**

यह नुस्ख़ा मोहम्मद इब्न-ए-ज़करिया राज़ी के मुजर्रब नुस्ख़ों में से है। यह आमाशय के सफ़रावी एवं अन्य पदार्थों को साफ़ करता है।

औषधियाँः तुर्बुद सफ़ेद 3.5 ग्राम, सक़मूनिया मुशव्वा 416 मिलीग्राम, गुल-ए-सुर्ख़ 17.5 ग्राम, ऊद-ए-हिन्दी 1.75 ग्राम, उसारा-ए-फ़िस्तक़ी 17.5 ग्राम, काफ़ूर, तबाशीर प्रत्येक 416 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर शीरह मुदब्बर के साथ मिलएँ। इस पूरे जवारिश को एक बार में ही प्रयोग करें।

- **जवारिश मुस्हिल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह आमाशय को साफ़ करता है और रद्दी उत्पादों को बाहर निकालता है।

औषधियाँः रोग़न-ए-बादाम में चर्ब किया हुआ तुर्बुद सफ़ेद तराशीदा 35 ग्राम, ज़न्जबील 17.5 ग्राम, क़न्द सफ़ेद 175 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर जवारिश तैयार करें।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम।

अनुपानः गर्म पानी के साथ प्रयोग करें।

❑❑❑

## द्वितीय वर्गः शक्तिवर्धक, वाजीकर और यौन उत्तेजना को बढ़ाने वाली जवारिश के नुस्ख़े जो इस संदर्भ में विशेष रूप से प्रभावशाली हैं

### • जवारिश सक़न्क़ूरः

इस से भरपूर जोश एवं तनाव उत्पन्न होता है। यौन उत्तेजना बढ़ती है। इस के अतिरिक्त इस से और भी अत्याधिक अन्य लाभ प्राप्त होते हैं।

औषधियाँः तुख़्म-ए-हल्यून, कर्सनह, तुख़्म-ए-पियाज़, तुख़्म-ए-गन्दना, हब्बुर्रशाद, तुख़्म-ए-शलग़म, तुख़्म-ए-शिब्त, तुख़्म-ए-जिर्जीर, मग़्ज़-ए-हब्बतुलखज़रा, लिसानुल असाफ़ीर, कुन्जद मुक़श्शर और मग़्ज़-ए-चिलग़ोज़ा प्रत्येक 17.5 ग्राम, जौज़बोवा, दारचीनी, बहमन सुर्ख़ और बहमन सफ़ेद प्रत्येक 7 ग्राम, सर-ए-सक़न्क़ूर 17.5 ग्राम, ख़ुस्यतुस्सअलब 35 ग्राम, ज़कर-ए-गाव ख़ुश्क अर्थात बैल का लिंग जिसे रेती से छील कर बुरादा कर लिया गया हो 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट छान कर उनके तीन गुना शहद के साथ जवारिश तैयार करें।

### • जवारिश सक़न्क़ूर का अन्य नुस्ख़ाः

जिस व्यक्ति की काम इच्छा समाप्त हो गई हो उस के लिए यह एक अद्वितीय औषधि है। यह बहुत ही वाजीकर है और भरपूर जोश एवं तनाव उत्पन्न करता है।

औषधियाँः सर-ए-सक़न्क़ूर, इल्क और क़ुस्त शीरीं प्रत्येक 6.75 ग्राम, हन्दक़ूक़ा, शक़ाक़ुल मिश्री, तुख़्म-ए-शलग़म, तुख़्म-ए-ज़र्दक, तुख़्म-ए-पियाज़ सफ़ेद, कर्सनह और ख़ुस्यतुस्सअलब प्रत्येक 4.5 ग्राम।

इस के कुछ नुस्ख़ों में इश्क़ील सम्मिलित किया गया है लेकिन बेहतर है कि उस को सम्मिलित ना करें क्योंकि वह अत्याधिक घुलनशील हो जाता है।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान लें। मग़्ज़ियात को अलग से हल्का कूट छान लें और सभी औषधियों को एक साथ लेकर उनके तीन गुना शहद के साथ जवारिश तैयार करें। किसी पात्र में भर कर उस का मुँह अच्छी तरह से बन्द कर के जौ में दफन कर दें और 40 दिनों के बाद निकाल कर प्रयोग में लाएँ। इस को सुरक्षित करने के लिए शीशे का पात्र अधिक उचित होता है।

सेवन-मात्रा व अवधिः 7 ग्राम, 40 दिन तक प्रयोग करें।

अनुपानः गाए या भैंस के दूध या माउलअस्ल के साथ।

आहारः ऐसे आहार का प्रयोग करें जिन में चना, प्याज़ और तरल मसाले हों।

परहेज़ः खट्टी वस्तुओं और ठंडी सबिज़यों से परहेज़ करें।

- **जवारिश ज़रऊनीः**

गुर्दा एवं कमर को बल प्रदान करता है। यौन शक्ति के लिए अद्वितीय औषधि है। जोश एवं तनाव और यौन शक्ति संदर्भ में यह अद्वितीय है। यह रीढ़ की हडडी में पाए जाने वाले तरल पदार्थ को बढ़ाता है। वायुनाशी एवं पाचक है। गुर्दा एवं मूत्राशय की रेत व पथरी को कण कण कर के बाहर निकालता है। यौन सुख को बढ़ाता है। अगर कोई व्यक्ति दस बादियाँ रखता हो तो उन सब को यौन सुख प्रदान कर सकता है अथवा संतुष्ट कर सकता है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-करफ़्स, नानख़्वाह, तुख़्म-ए-गज़र, तुख़्म-ए-अस्पस्त, राज़ियाना, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यार, बादरंग और बीख़-ए-करफ़्स प्रत्येक 22.5 ग्राम, आक़रक़रहा, क़िर्फह, मस्तगी रूमी, ज़ाफ़रान और ऊद ख़ाम प्रत्येक 7 ग्राम, बिस्बासा, क़रन्फ़ुल, कबाब चीनी और फ़िलफ़िल प्रत्येक 10.5 ग्राम, अंबर अशहब 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान लें और उनके तीन गुना शहद के साथ मिला कर जवारिश तैयार करें। दो महीनों के बाद प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम से 14 ग्राम तक।

- **जवारिश ज़रऊनी का अन्य नुस्ख़ाः**

यह नुस्खा शैख़ नजमुद्दीन समरक़न्दी ने तैयार किया है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-हल्यून, शक़ाक़ुल मिश्री, बहमन सफ़ेद, बहमन सुर्ख़, तूदरी ज़र्द, तूदरी सफ़ेद, सर-ए-सक़न्क़ूर, लिसानुल असाफ़ीर प्रत्येक 17.5 ग्राम, ज़न्जबील, तुख़्म-ए-शलग़म, तुख़्म-ए-गज़र, तुख़्म-ए-अस्पस्त, तुख़्म-ए-तेरह तेज़क, तुख़्म-ए-जिर्जीर, तुख़्म-ए-पियाज़, तुख़्म-ए-गन्दना, ख़ूलन्जान, जौज़बोवा, दारचीनी, दार-ए-फ़िलफ़िल और बूज़ीदान प्रत्येक 10.5 ग्राम, तुख़्म-ए-अन्जोरह 7 ग्राम, फ़ानीज़ 70 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान लें और उनके तीन गुना शहद के साथ मिला कर जवारिश तैयार करें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम से 9 ग्राम तक।

- **जवारिश का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः तुख़्म-ए-गज़र, हब्बुज़्ज़लम, तुख़्म-ए-शलग़म, तुख़्म-ए-पियाज़, तुख़्म-ए- तेरह तेज़क, तुख़्म-ए-हल्यून, मग़ज़-ए-चिलग़ोज़ा, हब्बुलक़िलक़िल, बहमन सफ़ेद, बहमन सुर्ख़, शक़ाक़ुल मिश्री, बूज़ीदान और लिसानुल असाफ़ीर प्रत्येक 7 ग्राम, हिल्तीत तैयब, खर्दल सफ़ेद और फ़िलफ़िल प्रत्येक 17.5 ग्राम, रोग़न-ए-जौज़ हिन्दी, मस्का-ए-हिन्दी।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान लें और आवश्यकतानुसार रोग़न-ए-जौज़ हिन्दी और गाए के मस्का में चर्ब करें फिर उनके तीन गुना शहद मिला कर जवारिश तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम से 14 ग्राम तक।

सेवन-समयः सुबह का समय इस को प्रयोग करने के लिए उत्तम है प्रन्तु इस को प्रयोग करने से पहले 70 ग्राम क़न्द सफेद, एक प्याला गाए के दूध में घोल कर पिएँ।

आहारः ऐसे माउलहिम्मस, कबाब, क़ल्यह का प्रयोग करें जिस में ज़रंबाद, ज़र्दक और उचित गर्म औषधियाँ सम्मिलित हों।

- **जवारिश अताईः**

वीर्यवर्धक एवं वाजीकर है। गुर्दा एवं कमर को शक्ति प्रदान करता है। मानसिक स्वभाव एवं मस्तिष्क को बल प्रदान करता है।

औषधियाँः शक़ाक़ुल मिश्री, क़ाक़ला किबार, दार-ए-फ़िलफ़िल, दार चीनी, ज़न्जबील और क़िर्फ़ह प्रत्येक 22.5 ग्राम, तूदरी ज़र्द, तूदरी सफ़ेद, तुख़्म-ए-अस्पस्त, तुख़्म-ए-ख़र्पज़ह, तुख़्म-ए-जिर्जीर, तुख़्म-ए-पियाज़, तुख़्म-ए-हुम्माज़, कर्सनह, कतीरा, तुख़्म-ए-हल्यून, तुख़्म-ए-शलग़म और तुख़्म-ए-करफ़्स प्रत्येक 13.5 ग्राम, झाड़ और झंखाड़ से पाक साफ़ तुरन्जबीन सफ़ेद सभी औषधियों के तीन गुना।

निर्माण-विधिः तुरन्जबीन को रात के समय गाए के दूध में भिगो दें और सुबह हाथ से मल छान कर साफ़ कर लें। हल्की आँच पर पका कर क़िवाम तैयार करें। ठंडा होने के बाद शेष को कूट छान कर अच्छी तरह मिलाएँ। चीनी या शीशे के पात्र में सुरक्षित कर लें।

सेवन-मात्राः 13.5 ग्राम।

अनुपानः 90 मिलीलीटर गाए के ताजा दूध के साथ।

- **जवारिश मलिकीः**

यह यौन शक्ति एवं उत्तेजना में बहुत अधिक बढ़ोत्तरी करता है। यह नुस्खा अत्याधिक लाभदायक और मुजर्रब है।

औषधियाँः क़रन्फ़ुल, जौज़बोवा, बिस्बासा, लिसानुल असाफ़ीर, बीख़-ए-इज़्ख़िर, ज़न्जबील, दारचीनी, मस्तगी, ऊद हिन्दी और ज़ाफ़रान प्रत्येक 10.5 ग्राम, क़ाक़ला और लबान ज़कर प्रत्येक 4.5 ग्राम, उशनह 13.5 ग्राम, मुश्क 642 मिलीग्राम, क़न्द और अर्क़-ए-गुलाब प्रत्येक 420 मिली लीटर, मधु सभी औषधियों के तीन गुना।

निर्माण-विधिः क़न्द एवं गुलाब को मधु के साथ मिलाएँ और हल्की आँच पर पका कर क़िवाम तैयार करें। ठंडा होने के बाद दवाओं को कूट छान कर उस क़िवाम

में सम्मिलित करें और अच्छी तरह मिला कर जवारिश तैयार करें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

- **जवारिश जलालीः**

यह वीर्यवर्धक है और यौन शक्ति को भी बढ़ाता है। गुर्दा की कमज़ोरी में लाभदायक है। आमाशयवर्धक एवं दीपन है।

औषधियाँः सुंबुलुत्तीब, क़रन्फुल और क़िर्फ़ह प्रत्येक 4.5 ग्राम, ज़ीरा किर्मानी सिर्का में भिगोने के बाद हल्का भूना हुआ, नअनाअ खुश्क और ऊद हिन्दी प्रत्येक 18 ग्राम, फ़िलफ़िल, शक़ाक़ुल और असारून प्रत्येक 9 ग्राम, खुस्यतुस्सअलब मिश्री और बूज़ीदान प्रत्येक 11.25 ग्राम।

निर्माण-विधिः सबको कूट छान लें और उनके तीन गुना क़न्द एवं 420 ग्राम शहद के साथ मिलाएँ और अच्छी तरह मिला कर विधि अनुसार जवारिश तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

❑❑❑

## तृतीय वर्गः ऐसी जवारिश के नुस्ख़े जो शक्तिवर्धक होने के साथ धारण-शक्ति वाले हों या ना हों

- **जवारिश जालीनूसः**

यह बहुत लाभदायक जवारिश है। इस से पूरे शरीर को शक्ति की प्राप्ति होती है। मुँह की दुर्गंध को दूर कर के उस को सुगंधित करने वाला और वायुनाशी है। अत्याधिक पेशाब होना, गठिया, बहक़, स्वित्र, बवासीर में लाभदायक है। यह गुर्दा की रेत को कण कण कर के बाहर निकालता है। बालों के कालेपन को सुरक्षित रखता है। जो व्यक्ति इस को 20 दिन लगातार प्रयोग करता है वह उपर्युक्त सभी प्रकार के रोगों से सुरक्षित रहता है।

औषधियाँः सुंबुलुत्तीब, सलीख़ा, क़ाक़ला, दार चीनी, ख़ूलन्जान, क़रन्फ़ुल, सअद कूफ़ी, ज़न्जबील, ज़ाफ़रान, फ़िलफ़िल सफ़ेद, दार-ए-फ़िलफ़िल, क़ुस्त बहरी, ऊद-ए-बलसाँ, असारून, हब्बुल आस और क़सबुज़्ज़रीरह प्रत्येक 7 ग्राम, मस्तगी रूमी 35 ग्राम, क़न्द सफेद सब के समभाग एवं साफ़ शहद उनके दो गुना।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर जवारिश तैयार करें।

सेवन-मात्राः 9 ग्राम।

सेवन-समयः भोजन से पहले एवं बाद में।

- **जवारिश मुश्कः**

आमाशय की कमज़ोरी में लाभदायक एवं वायुनाशी है। दिल में घबराहट और बवासीर में लाभदायक है।

औषधियाँः मुश्क तुर्की 2.25 ग्राम, क़ाक़ला, जौज़बोवा, क़रन्फ़ुल, ज़न्जबील और दार-ए-फ़िलफ़िल प्रत्येक 35 ग्राम, दार चीनी 10.5 ग्राम, ऊद-ए-क़िमारी 24.5 ग्राम, ज़ाफ़रान 7 ग्राम, क़न्द सफ़ेद सब के समभाग एवं साफ़ शहद उनके दो गुना।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर जवारिश तैयार करें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

- **जवारिश अंबरः**

दिल की घबराहट, कमज़ोरी, आमाशय की ठंडक, बदहज़्मी में लाभदायक है अथवा बूढ़े व्यक्तियों के लिए बहुत ही लाभदायक एवं प्रभावशाली है।

औषधियाँः क़ाक़लैन (क़ाक़ला कबीर, क़ाक़ला सग़ीर) और दार चीनी प्रत्येक 14 ग्राम, क़िर्फ़ह, क़रन्फ़ुल और ज़ाफ़रान प्रत्येक 5.25 ग्राम, सुंबुलुत्तीब 7 ग्राम,

मस्तगी और बिस्बासा प्रत्येक 10.5 ग्राम, जौज़बोवा 3.5 ग्राम, क़िर्फ़ह 7 ग्राम, क़िशर-ए-उतरुज 17.5 ग्राम, .जन्जबील और दार-ए-फ़िलफ़िल 3.5 ग्राम, नबात सभी औषधियों के समभाग एवं साफ़ शहद उनके दो गुना।

निर्माण-विधिः विधि अनुसार जवारिश तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **जवारिश का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः क़िर्फ़ह, क़रन्फ़ुल, ज़ाफ़रान प्रत्येक 8.75 ग्राम, जौज़बोवा 1.75 ग्राम, .जन्जबील, दार-ए-फ़िलफ़िल प्रत्येक 7 ग्राम, दूलह, मस्तगी, अंबर अशहब प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान लें। नबात के शीरा एवं अर्क़-ए-गुलाब में मिला कर जवारिश तैयार करें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

- **जवारिश ऊदः**

आमाशयवर्धक, हृदयवर्धक, क्षुधावर्धक एवं वायुनाशक है। यह जवारिश बूढ़े व्यक्तियों के लिए बहुत ही अनुकूल है।

औषधियाँः क़रन्फ़ुल 10.5 ग्राम, क़ाक़ला किबार 7 ग्राम, ऊद ख़ाम 17.5 ग्राम, ज़ाफ़रान 2.25 ग्राम, सुंबुलुत्तीब 7 ग्राम, मस्तगी, बिस्बासा प्रत्येक 10.5 ग्राम, जौज़बोवा 3.5 ग्राम, क़िर्फ़ह 7 ग्राम, क़िशर-ए-उतरुज 17.5 ग्राम, .जन्जबील, दार-ए-फ़िलफ़िल प्रत्येक 3.5 ग्राम, नबातसब के बराबर और साफ़ शहद उनके दो गुना ।

निर्माण-विधिः विधि अनुसार जवारिश तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **जवारिश का अन्य नुस्ख़ाः**

वायुनाशक है। दिल की घबराहट, दिल की तंगी और वहशत को दूर करता है।

औषधियाँः ऊद हिन्दी, राज़ियाना, तुख़्म-ए-करफ़्स, वज तुर्की और सुंबुलुत्तीब प्रत्येक 10.5 ग्राम,बिस्बासा, नारमुश्क, सअद, फ़न्जमुश्क, ज़र्नब और ज़रंबाद प्रत्येक 5.25 ग्राम, दार चीनी, .जन्जबील, क़रन्फ़ुल और मस्तगी प्रत्येक 7 ग्राम, गावज़बान, 17.5 ग्राम, काफ़ूर 624 मिलीग्राम, मुश्क तुर्की 832 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान कर उनके तीन गुना शहद के साथ मिलाएँ। विधि अनुसार जवारिश तैयार करें।

- **जवारिश का अन्य नुस्ख़ाः**

आमाशयवर्धक एवं हृदयवर्धक है। बूढ़े और ठंडे स्वभाव के व्यक्तियों के लिए

बहुत ही अनुकूल है।

औषधियाँ: ऊद ख़ाम, क़िर्फ़ह, साज़ज हिन्दी, .जन्जबील, क़ाक़ला, फ़्रन्जमुश्क, दार-ए-फ़िलफ़िल प्रत्येक 9 ग्राम, ज़ाफ़रान 4.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: सबको कूट छान कर जवारिश तैयार करें।

- **जवारिश ऊद:**

यह नुस्ख़ा शैख़ अबू अली ने तैयार किया है और यह उनके मुजर्रब नुस्ख़ों में सम्मिलित है। यह आमाशयवर्धक, हृदयवर्धक, दीपन एवं वायुनाशक है। बूढ़े व्यक्तियों के स्वभाव के बहुत ही अनुकूल है।

औषधियाँ: ऊद हिन्दी 10.5 ग्राम, मुश्क तिब्बती 832 मिलीग्राम, काफ़ूर 624 मिलीग्राम, बिस्बासा, नारमुश्क, सअद, फ़्रन्जमुश्क, ज़र्नब, ज़रंबाद प्रत्येक 4.5 ग्राम, दार चीनी, मस्तगी रूमी, .जन्जबील, क़रन्फ़ुल प्रत्येक 7 ग्राम, गावज़बान, 17.5 ग्राम, बादियान, तुख़्म-ए-करफ़्स, वज तुर्की और सुंबुलुत्तीब प्रत्येक 10.5 ग्राम, साफ़ शहद।

निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर शहद में मिलाएँ और जवारिश तैयार करें।

सेवन-मात्रा: 7 ग्राम।

- **जवारिश ऊद का अन्य नुस्ख़ा:**

आमाशय को ठीक करता है और दीपन है।

औषधियाँ: ऊद ख़ाम 35 ग्राम, तुरन्ज का बाहरी पोस्त 17.5 ग्राम, मस्तगी 5.25 ग्राम, नबात सफ़ेद 810 ग्राम।

निर्माण-विधि: सर्वप्रथम क़िवाम तैयार करें फिर सब को कूट छान कर जवारिश तैयार करें। अच्छी तरह मिलाने के लिए उचित पत्थर पर डाल कर ख़ूब फेंटें।

सेवन-मात्रा: 7 ग्राम।

- **जवारिश ऊद का अन्य नुस्ख़ा:**

हैज़ा, दस्त और आमाशय की कमज़ोरी में लाभदायक है। आमाशयवर्धक है।

औषधियाँ: ज़न्जबील 70 ग्राम, ऊद हिन्दी, दार चीनी, हील, समग़-ए-अरबी 17.5 ग्राम, क़रन्फ़ुल 10.5 ग्राम, कुन्दुर 7 ग्राम, मस्तगी 3.5 ग्राम, ज़ाफ़रान 5.5 ग्राम, निशास्ता 140 ग्राम।

निर्माण-विधि: माड़ी को हल्का भून लें। शेष को कूट छान लें। सभी के समभाग क़न्द का क़िवाम तैयार करें और फिर विधि अनुसार जवारिश तैयार कर के सुरक्षित कर लें। अच्छी तरह मिलाने के लिए किसी उचित पत्थर पर डाल कर ख़ूब फेंटें।

सेवन-मात्रा: 7 ग्राम से 10.5 ग्राम तक।

## ● लेखक का नुस्ख़ाः

दिल, जिगर एवं आमाशय को शक्ति प्रदान करता है। बदहज़्मी, उल्टी, हैज़ा, मतली और पेट से होने वाले दस्त में लाभदायक है। मुँह की दुर्गंध को दूर करके सुगंधित करता है।

औषधियाँः ऊद हिन्दी 17.5 ग्राम, सअद कूफ़ी, गुल-ए-सुर्ख़, ज़न्जबील, बादियान, फ़न्जमुश्क, गावज़बान, ज़रिशक मुनक़्क़ा और समग़-ए-अरबी प्रत्येक 10.5 ग्राम, क़रन्फ़ुल, मस्तगी, सुंबुलुत्तीब, क़िर्फ़ह, ज़रनब, जौज़बोवा, बिस्बासा, हीलबोवा, पिस्ता का बाहरी पोस्त, ज़रंबाद, दार चीनी और ज़ाफ़रान प्रत्येक 7 ग्राम, मुश्क तुर्की 3.5 ग्राम, काफ़ूर क़ैसूरी 832 मिलीग्राम, रुब्ब-ए-बिही, शर्बत-ए-सेब और शर्बत-ए-फ़वाकेह प्रत्येक 70 ग्राम, क़न्द सफ़ेद और साफ़ शहदप्रत्येक 810 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट छान कर रुब्ब, क़न्द, शहद के साथ जवारिश तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

## ● जवारिश सन्दलः

यह नुस्ख़ा लेखक द्वारा तैयार किया गया है। दिल की घबराहट और गर्मी के कारण होन वाले दिल के बुरे स्वभाव में लाभदायक है। आमाशय और गर्म जिगर को शक्ति प्रदान करता है। सफ़रा की अधिकता से होने वाले दस्त में लाभदायक है।

औषधियाँः अर्क़-ए-गुलाब में पीसा हुआ सन्दल सफ़ेद 3.5 ग्राम, अर्क़-ए-गुलाब में पीसा हुआ सन्दल सुर्ख़ 17.5 ग्राम, तबाशीर सफ़ेद, तुख़्म-ए-खुर्फ़ह बूदादा अर्थात हल्का भुना हुआ, किशनीज़ ख़ुश्क बूदादा अर्थात हल्का भुना हुआ, पिस्ता का बाहरी पोस्त प्रत्येक 7 ग्राम, मस्तगी और ज़ाफ़रान प्रत्येक 3.5 ग्राम, मरवारीद नासुफ़्ता और मरजान प्रत्येक 7 ग्राम, मुश्क 17.5 ग्राम, आब-ए-तुरन्ज 175 ग्राम, गुलाब 105 ग्राम, क़न्द सफ़ेद 810 ग्राम।

निर्माण-विधिः विधि अनुसार जवारिश तैयार करें।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम से 17.5 ग्राम तक।

## ● जवारिश काफ़ूरः

इस से सफ़रा की अधिकता से होने वाला दस्त बन्द हो जाता है। प्यास एवं गर्मी में कमी आती है।

औषधियाँः ज़रिशक मुनक़्क़ा 35 ग्राम, गुल-ए-सुर्ख़ 28 ग्राम, तबाशीर सफ़ेद, कहरुबा शमई, फ़ोफ़ल प्रत्येक 14 ग्राम, तुख़्म-ए-हुम्माज़ बूदादा 24.5 ग्राम, हब्बुलआस 21 ग्राम, सवीक़-ए-सेब, सवीक़-ए-अंबर और अनारदाना भुना हुआ प्रत्येक 28 ग्राम,

काफ़ूर क़ैसूरी 3.5 ग्राम, ज़ाफ़रान और शाह-ए-बलूत प्रत्येक 14 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर शर्बत-ए-हुम्माज़ के साथ मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **जवारिश काफ़ूरः**

आमाशय की कमज़ोरी, सू-ए-इस्तिमरार में लाभदायक है।

औषधियाँः फ़िलफ़िल, जौज़बोवा, ज़न्जबील, बिस्बासा, दारचीनी, क़िर्फ़ह, नारमुश्क, फ़िलफ़िलमोया, फ़न्जमुश्क, काफ़ूर, क़रन्फ़ुल और ज़ाफ़रान प्रत्येक समभाग में।

निर्माण-विधिः कूट छान कर उन के तीन गुना शहद के साथ मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **जवारिश काफ़ूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह नुस्ख़ा पहले नुस्ख़े की तुलना में अधिक प्रभावशाली है। आमाशय की कमज़ोरी सू-ए-इस्तिमरार में बहुत लाभदायक है और गाढ़े बलग़म को बाहर निकालता है।

औषधियाँः ज़न्जबील, फ़िलफ़िल, सुंबुलुत्तीब, जौज़बोवा, सन्दल सफ़ेद, हब्ब-ए-बलसाँ, क़ाक़ला, बिस्बासा, क़रन्फ़ुल, नार मुश्क प्रत्येक 8.75 ग्राम, क़न्द सफेद समभाग और शहद दो गुना।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर जवारिश तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **जवारिश सफर्जली मुम्सिकः**

यह कब्ज़ पैदा करके दस्त को रोकता है। आमाशय की कमज़ोरी और सू-ए-इस्तिमरार में बहुत लाभदायक है और दीपन अर्थात भूख बढ़ाने वाला है।

औषधियाँः छिलके एवं बीजों से पाक साफ़ सफ़रजल असफहानी 840 ग्राम, साफ़ शहद 420 ग्राम, ज़न्जबील और दार-ए-फ़िलफ़िल प्रत्येक 14 ग्राम, नानख़्वाह और तुख़्म-ए-करफ़्स प्रत्येक 7 ग्राम, ज़ाफ़रान 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः 840 ग्राम सफ़रजल असफ़हानी को उस के बीज और छिलके से साफ़ कर के और टुकड़े टुकड़े कर के एक रात और दिन सिर्का में भिगोएँ। सुबह हल्की आँच पर पत्थर की देगची में उबाल कर नर्म करलें।

फिर उस फल को लकड़ी या पत्थर के हावन में कूट कर अच्छी तरह नर्म कर लें और बालों की छलनी से छान कर उस के बीज एवं रेशे आदि निकाल दें। अब उस को 420 ग्राम साफ़ शहद के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें। अन्त में उस

घोल में ज़न्जबील, दार-ए-फ़िलफ़िल प्रत्येक 14 ग्राम, नानख़्वाह और करफ़्स के बीज प्रत्येक 7 ग्राम, ज़ाफ़रान 3.5 ग्राम कूट छान कर सम्मिलित करें और सभी औषधियों को एक साथ मिला कर विधि अनुसार जवारिश तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम से 14 ग्राम।

### ● जवारिश सफर्जली मुम्सिक का अन्य नुस्ख़ाः

यह मोहम्मद इब्न-ए-ज़करिया राज़ी का नुस्खा है। यह आमाशय को सशक्त बनाता है और हैज़ा में बहुत लाभदायक है।

औषधियाँः छिलके एवं बीजों से पाक साफ़ सफरजली हामिज़ 420 ग्राम, पानी 210 मिलीलीटर, सिर्का-ए-खम्र 70 मिलीलीटर, साफ़ पोस्त-ए-बेरून-ए-पिस्ता, ऊद ख़ाम, क़रन्फ़ुल, कबाब चीनी, मस्तगी रूमी, सुंबुलुत्तीब, रासन प्रत्येक 17.5 ग्राम, शहद आवश्यकतानुसार, मुश्क 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः 420 ग्राम खट्टी सफर्जल को उस के बीज और छिलके से साफ़ कर के 210 लीटर पानी और 70 मिली लीटर सिर्का-ए-खम्र में अच्छी तरह पका कर गला लें। फिर हल्का कूट कर आवश्यकतानुसार मधु के साथ मिलाएँ और क़िवाम तैयार करें। तत्पश्चात शेष को उस में सम्मिलित करके जवारिश तैयार करें।

सेवन-मात्राः 9 ग्राम।

### ● जवारिश सफर्जली मुम्सिक का अन्य नुस्ख़ाः

औषधियाँः बीज और छिलके से पाक साफ़ किए हुए पके सफरजल अर्थात बिही के फल 420 ग्राम, खल्ल-ए-ख़म्र, क़न्द 210 ग्राम, शहद 210 ग्राम, ऊद और मस्तगी रूमी प्रत्येक 7 ग्राम, सुंबुलुत्तीब, हीलबोवा, क़रन्फ़ुल, और ज़न्जबील प्रत्येक 10.5 ग्राम, तबाशीर और पोस्त-ए-बेरून-ए-पिस्ता प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः 420 ग्राम पके हुए सफ़रजल के फल को उस के बीज और छिलके से साफ़ कर के एक रात और दिन सिर्का-ए-खम्र में भिगोएँ फिर अच्छी तरह पका कर गला लें। फिर पत्थर के हावन में हल्का कूट कर नर्म कर लें और 210 ग्राम क़न्द एवं 210 ग्राम शहद के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें। तत्पश्चात शेष सभी औषधियों को कूट छान कर उस में सम्मिलित कर के जवारिश तैयार करें।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम।

### ● जवारिश सफर्जली मुम्सिक का अन्य नुस्ख़ाः

यह कब्ज़ पैदा कर के दस्त को रोकता है। आमाशय को सशक्त बनाता है। जमाई और उल्टी आने को रोकता है। रंग साफ़ करता है। भूख बढ़ाता है।

औषधियाँः छिलके एवं बीजों से पाक साफ़ पके हुए असफहानी सफर्जली के फल 210 ग्राम, सिर्का, शहद, ज़न्जबील, फ़िलफ़िल और दारे फ़िलफ़िल प्रत्येक 14 ग्राम, नानख़्वाह और तुख़्मे करफ्स और ज़ाफ़रान प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः 210 ग्राम पके हुए सफरजल अर्थात बिही के फल को उस के बीज और छिलके से साफ़ कर के एक रात और दिन सिर्का में अच्छी तरह पका कर गला और शहद के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें। शेष औषधियों को कूट छान कर उस में सम्मिलित करके विधि अनुसार जवारिश तैयार करें।

सेवन-मात्राः 14 ग्राम।

- **जवारिश तुफ़्फ़ाहः**

ठंडक के कारण आमाशय की कमज़ोरी में लाभदायक है। पाचन क्रिया को सशक्त बनाता है।

औषधियाँः बीज और छिलके से साफ़ मीठा शामी या असफ़हानी सेब 210 ग्राम, साफ़ शहद 420 ग्राम, ऊद हिन्दी, ज़न्जबील, क़रन्फ़ुल, जौज़बुवा और ज़ाफ़रान प्रत्येक 1.75 ग्राम, मुश्क तुर्की 250 मिलग्राम।

निर्माण-विधिः 210 ग्राम मीठे शामी या असफ़हानी सेब को उस के बीज और छिलके से साफ़ कर के एक रात पानी में भिगोएँ, फिर उबाल कर अच्छी तरह नर्म कर लें। ठंडा होने के बाद मरहम की तरह कूट कर 420 ग्राम साफ़ शहद के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें। फिर शेष सभी औषधियों को कूट छान कर सेब व मधु के उपर्युक्त क़िवाम में अच्छी तरह मिलाएँ और जवारिश तैयार करें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

- **जवारिश तुफ़्फ़ाह का अन्य नुस्ख़ाः**

आमाशय एवं जिगर को सशक्त बनाता है। बेहोशी एवं दिल की घबराहट में लाभदायक है। सौदावी स्वभाव के व्यक्तियों के लिए उपयुक्त एवं अनुकूल होता है।

औषधियाँः आब-ए-सेब तुर्श, आब-ए-सेब शीरीं प्रत्येक 1050 मिलीलीटर,गुलाब, क़न्द सफ़ेद, साफ़ शहद प्रत्येक 840 ग्राम, सुंबुलुत्तीब, दारचीनी, मस्तगी,गुल-ए-गावज़बान, ऊद हिन्दी, बादरंजबोया के बीज प्रत्येक 14 ग्राम और मुश्क 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः आब-ए-सेब तुर्श और आब-ए-सेब शीरीं प्रत्येक 1050 मिलीलीटर, गुलाब, क़न्द सफ़ेद और साफ़ शहद प्रत्येक 840 ग्राम को एक साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें। अंत में शेष औषधियों को कूट छान कर क़िवाम में सम्मिलित करें।

सेवन-मात्राः 17.5 ग्राम।

- **जवारिश तुफ़्फ़ाह का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से पेट, दिल और जिगर को मज़बूती मिलती है। उल्टी बन्द हो जाती है। सफ़रा की तेज़ी समाप्त होती है और दिल की घबराहट में लाभ मिलता है।

औषधियाँः आब-ए-सेब तुर्श और आब-ए-सेब शीरीं, आब-ए-अनारैन, आब-ए-बिही, आब-ए-अमरूद, आब-ए-ग़ौरह, आब-ए-ज़रिशक, आब-ए-सुमाक़ और आब-ए-लीमू सभी समभाग में, मुश्क 832 मिलीग्राम, मस्तगी 3.5 ग्राम, ज़ाफ़रान 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को समभाग में लेकर हल्की आँच से पत्थर की देगची में इतना पकाएँ पानी जल कर एक चौथाई बचे। फिर सभी औषधियों के समभाग क़न्द मिला कर क़िवाम तैयार करें और ठंडा होने के बाद छान लें फिर अंत में 832 मिलीग्राम मुश्क, 3.5 ग्राम मस्तगी और 1.75 ग्राम ज़ाफ़रान को पीस कर मिलाएँ। तत्पश्चात सभी औषधियों को पत्थर पर सूक्ष्म चूर्ण कर के प्रयोग में लाएँ।

- **जवारिश फ़वाकेहः**

यह आमाशय, दिल, जिगर को सशक्त बनाता एवं दस्त व गृहणि में लाभदायक है।

औषधियाँः आब-ए-सेब व बिही व अनारैन प्रत्येक 350 ग्राम, फ़ानीज़ सन्जरी 405 ग्राम, सवीक़-ए-कनार, जौज़बावा, ज़न्जबील, फ़िलफ़िल प्रत्येक 7 ग्राम, ज़ाफ़रान 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः आब-ए-सेब, आब-ए-बिही, आब-ए-अनारैन प्रत्येक 350 ग्राम, फ़ानीज़ सन्जरी 405 ग्राम को पका कर क़िवाम तैयार करें फिर शेष को कूट छान कर उस में सम्मिलित करें।

सेवन-मात्राः 13.5 ग्राम से 22.5 ग्राम तक।

- **जवारिश ज़रिश्कः**

पेट एवं आँतों से होने वाले दस्त में लाभदायक है।

औषधियाँः ज़रिश्क मुनक़्क़ा, सुमाक़, हब्बुलआस बूदादा, सवीक़-ए-कनार, नानख़्वाह और ज़न्जबील प्रत्येक 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-ज़रिशक और क़न्द के क़िवाम में मिलाकर विधि अनुसार जवारिश तैयार करें।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम।

- **जवारिश अनारः**

आवश्यकतानुसार आब-ए-अनार लेकर हल्की आँच से पत्थर की देगची में इतना पकाएँ कि जल कर एक चौथाई बचे फिर उसी के समभाग क़न्द मिलाकर क़िवाम तैयार करें। ठंडा होने के बाद औषधि को पत्थर पर डालें।

- **जवारिश दारचीनीः**

गुर्दा, मूत्राशय एवं आमाशय की कमज़ोरी में लाभदायक है। वायुनाशी है।

औषधियाँः दार चीनी, ऊद हिन्दी और रासन प्रत्येक 105 ग्राम, क़रन्फ़ुल, फ़िलफ़िल, सुंबुलुत्तीब और असारून पत्येक 7 ग्राम, मस्तगी, अनीसून, राज़ियाना और सलीख़ा प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट छान कर उनके तीन गुना शहद के साथ जवारिश तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **जवारिश हब्बुलआसः**

हैज़ा एवं पेट के दस्त में लाभदायक है। पेट के तरल पदार्थों की अधिकता के कारण होने वाली उल्टी बन्द करता है।

औषधियाँः हब्बुलआस 405 ग्राम, हलीला स्याह,आमला मुनक्क़ा, पोस्त-ए-हलीला, तालीस्फ़र प्रत्येक 70 ग्राम, फ़िलफ़िल स्याह, दार-ए-फ़िलफ़िल, ज़न्जबील प्रत्येक 35 ग्राम, मस्तगी,क़िर्दमाना, अनीसून, ज़ीरा किर्मानी, सुंबुलुत्तीब, सलीख़ा, क़ाक़ला, क़ुस्त प्रत्येक 21 ग्राम, जौज़बोवा, तुख़्म-ए-करफ़्स, नानख़्वाह प्रत्येक 17.5 ग्राम, साज़ज हिन्दी, हमामा प्रत्येक 14 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट छान कर उनके तीन गुना शहद के साथ जवारिश तैयार करें।

- **जवारिश बिस्बासाः**

बादी बवासीर, आमाशय की ठंडक और बदहज़्मी में लाभ दायक है। गाढ़ी हवा को दूर करता है।

औषधियाँः बिस्बासा, क़िर्फ़ह और क़ाक़ला किबार प्रत्येक 17.5 ग्राम, फ़िलफ़िल 7 ग्राम, क़रन्फ़ुल 5.25 ग्राम, ज़न्जबील, दार चीनी, दार-ए-फ़िलफ़िल, असारून और क़ाक़ला सिग़ार प्रत्येक 3.5 ग्राम, क़न्द सफ़ेद 70 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट छान कर उनके तीन गुना शहद के साथ जवारिश तैयार करें।

- **जवारिश जौज़ी का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः सुमाक़ साफ़ 105 ग्राम, सवीक़-ए-जौ, सवीक़-ए-सेब, कअक बग़दादी और खर्नूब शामी प्रत्येक 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर शर्बत-ए-सेब या शर्बत-ए-बिही में मिलाएँ और विधि अनुसार जवारिश तैयार करें।

सेवन-मात्राः 17.5 ग्राम।

अनुपानः थोड़ी मात्रा में ठंडे पानी के साथ प्रयोग करें।

- **जवारिश जौज़ीः**

इस को ईरानी हकीमों ने तैयार किया है। यह विभिन्न प्रकार के पेट दर्द, जिगर के रोगों, ठंडे सूए इस्तिमरार और जलोदर रोग के प्रारंभ में लाभदायक है। मूत्रविरेचक और पाचक है। पेट से आने वाले दस्त को बन्द करता है। आमाशय की सूजन को समाप्त करता है और आमाशय की कमज़ोरी को दूर करता है।

औषधियाँः क़ुस्त तल्ख़, मुर मक्की, सलीख़ा, क़िर्फ़ह, सुंबुलुत्तीब, हब्ब-ए-बलसाँ प्रत्येक 14 ग्राम, जौज़बोवा 5 की संख्या में, क़ाक़ला, क़रन्फ़ुल, अनीसून, इक्लीलुलमलिक, शीतरज हिन्दी, नारमुश्क प्रत्येक 14 ग्राम, बिस्बासा, दरूनज अक़रबी प्रत्येक 10.5 ग्राम, रेवन्द चीनी, ज़रावन्द गर्द प्रत्येक 17.5 ग्राम,हलीला स्याह, पोस्त-ए-हलीला काबुली दोनों रोग़न-ए-ज़ैत में भूने हुए 70 ग्राम,हलीला 10 की संख्या में, हब्बुलआस सब के बराबर।

निर्माण-विधिः विधि अनुसार जवारिश तैयार करें।

सेवन-मात्राः 17.5 ग्राम।

अनुपानः थोड़ी मात्रा में ठंडे पानी के साथ प्रयोग करें।

- **जवारिश का प्रचलित नुस्ख़ाः**

यह कब्ज़ पैदा करके दस्त रोकता है। आमाशय वआँतों की नर्मी एवं पेट की गुड़गुड़ाहट को दूर करता है। धारण शक्ति को मज़बूत करता है।

औषधियाँः सिर्का में भिगोया मवीज़ 105 ग्राम, हब्बुलआस बूदादा 210 ग्राम, खर्नूब नब्ती, गुलनार फ़ारसी, कज़माज़ज प्रत्येक 35 ग्राम, कुन्दुर नानख़्वाह , मस्तगी, सुंबुलुत्तीब प्रत्येक 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट कर जुल्लाब-ए-क़न्द में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम।

- **जवारिश का अन्य प्रचलित नुस्ख़ाः**

दस्त, सूए इस्तिमरार और ठंडक के कारण होने वाले आमाशय की कमज़ोरी में पूर्ण रूप से लाभदायक है।

औषधियाँः क़ुस्त तल्ख़, सलीख़ा, क़िर्फ़ह, सुंबुलुत्तीब, हब्ब-ए-बलसाँ प्रत्येक 35 ग्राम, जौज़बोवा 5 की संख्या में, क़ाक़ला किबार, क़रन्फ़ुल, अनीसून, इक्लीलुलमलिक, शीतरज हिन्दी, नारमुश्क प्रत्येक 14 ग्राम, पोस्त-ए-बेरून-ए-पिस्ता, बिस्बासा, तुरन्ज प्रत्येक 10.5 ग्राम, ज़रावन्द मुदहरज, दारचीनी और उशनह प्रत्येक 7 ग्राम, ज़न्जबील,

सअद, क़सबुज़्ज़रीरा, फ़िलफ़िल स्याह और दार-ए-फ़िलफ़िल प्रत्येक 17.5 ग्राम,हलीला स्याह 10 की संख्या में, हब्बुलआस सभी के दो गुना।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर उनके तीन गुना साफ़ शहद के साथ मिलाएँ और विधि अनुसार जवारिश तैयार करें।

## ● जवारिश कमूनी कबीरः

आमाशय की ठंडक,अंतरांग की अमलता, बलग़मी एवं सौदावी बुख़ार, अण्डाशय की ठन्डक, रक्त संकुलन के कारण हिचकी, पेट में गैस जमा होने और ठवसपउने में लाभदायक है।

औषधियाँः एक रात सिर्का-ए-अंगूरी में भिगोने के बाद छाँव में सुखाया और हल्का भूना हुआ ज़ीरा किर्मानी 420 ग्राम, ज़न्जबील और बर्ग-ए-सुद्दाब प्रत्येक 64 ग्राम, फ़िलफ़िल 48 ग्राम,सलीख़ा, दारचीनी, क़िर्फ़ह, हब्ब-ए-बलसाँ, सुंबुलुत्तीब और मस्तगी प्रत्येक 7 ग्राम, बूरह अरमनी 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर तीन गुना शहद के क़िवाम के साथ जवारिश तैयार करें। इस का विशेष ध्यान रखें कि क़िवाम के ठंडा होने के बाद सर्वप्रथम उस में बूरह अर्मनी डालें और फिर बहुत तेज़ आग पर पकाएँ। तत्पश्चात अन्य शेष औषधियों को मिला कर अच्छी तरह मिलाएँ। विशेष ध्यान रहे कि औषधियों को बहुत धीरे से छाना जाए ताकि वो ठोस ना हो जाएँ।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

## ● जवारिश कमूनी सग़ीरः

औषधियाँः ज़ीरा किर्मानी 175 ग्राम, फ़िलफ़िल 52.5 ग्राम, वरक़-ए-सुद्दाब, ज़न्जबील प्रत्येक 70 ग्राम, बूरह अरमनी 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः ऊपर वाले नुस्खे की तरह सब को कूट छान कर तीन गुना साफ़शहद के क़िवाम के साथ जवारिश तैयार करें।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम से 9 ग्राम तक।

नोटः जवारिश कमूनी को बूरह के साथ प्रयोग करें ताकि दाँतों को कोई हानि ना हो।

## ● जवारिश फुन्दादीकूनः

यह नुस्खा रूमी हकीमों ने तैयार किया है। पेट दर्द, जिगर की कमज़ोरी, पेट और आँतों की फूलन एवं उन में हवा अर्थात गैस बनने के रोग में लाभदायक है।

औषधियाँः ज़न्जबील, फ़िलफ़िल, सुंबुलुत्तीब प्रत्येक 21 ग्राम, मस्तगी रूमी, अनीसून प्रत्येक 14 ग्राम, तुख़्म-ए-करफ़्स, नअनाअ खुश्क प्रतयेक 17.5 ग्राम, ज़ीरा

किर्मानी, सलीख़ा, हब्ब-ए-बलसाँ, आक़रक़रा प्रत्येक 7 ग्राम, साज़ज हिन्दी 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान कर उनके तीन गुना साफ़ शहद के क़िवाम के साथ जवारिश तैयार करें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

- **जवारिश फ़लाफ़िलीः**

पेट और जिगर की ठंडक, शरीर में तरल पदार्थों की अधिकता, सू-ए-इस्तिमरार, गाढ़ी हवा, चौथिया बुखार और पुराने बलग़मी बुख़ारों में लाभदायक है।

औषधियाँः फ़िलफ़िल स्याह, दार-ए-फ़िलफ़िल, फ़िलफ़िल सफ़ेद, प्रत्येक 14 ग्राम, ज़न्जबील, तुख़्म-ए-करफ़्स, सीसालियूस रूमी, सलीख़ा, असारून और ज़रिशक मुनक्क़ा प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट छान कर उनके तीन गुना शहद के साथ जवारिश तैयार करें।

- **जवारिश हलीलाः**

इसे भारतीय हकीमों ने तैयार किया है। यह पाचक एवं दीपन है। बवासीर समाप्त करता, वायुनाशक एवं हल्का विरेचक है।

औषधियाँः पोस्त-ए-हलीला काबुली और हलीला ज़र्द प्रत्येक 17.5 ग्राम,हलीला स्याह 10.5 ग्राम, फ़िलफ़िल, दार-ए-फ़िलफ़िल, मवीज़ और ज़रनब प्रत्येक 14 ग्राम, नारमुश्क, क़ाक़ला, दार चीनी, सुंबुलुतत्तीब प्रत्येक 7 ग्राम, फ़िलफ़िलमोया 24.5 ग्राम, साज़ज हिन्दी 3.5 ग्राम, शीतरज हिन्दी 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर बताशा मिलाएँ।

- **जवारिश तालीसफ़रः**

यह नुस्खा भारतीय हकीमों ने तैयार किया है। आमाशय एवं जिगर की ठंडक और गाढ़ी हवा को बाहर निकालता है।

औषधियाँः तालीसफ़र 17.5 ग्राम, ज़न्जबील 70 ग्राम, दार-ए-फ़िलफ़िल 42 ग्राम, हील और क़िर्फ़ह प्रत्येक 21 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान कर उनके तीन गुना क़न्द सफेद के क़िवाम के साथ जवारिश तैयार करें।

- **जवारिश खुब्सुलहदीदः**

आमाशय के ढीलेपन, बवासीर, आमाशय की गड़बड़ी और उस की कमज़ोरी में लाभदायक है। त्वचा के रंग को निखारता है और वजीकर है।

औषधियाँः हलीला स्याह,बलीला, आमला मुनक़्क़ा, फ़िलफ़िल, दार-ए-फ़िलफ़िल, ज़न्जबील, सअद कूफ़ी, शीतरज हिन्दी और सुंबुलुतत्तीब प्रत्येक 14 ग्राम, ख़ुब्सुलहदीद, शराब, रोग़न-ए-बादाम, शहद, मुश्क तुर्की।

निर्माण-विधिः ख़ुब्सुलहदीद को सूक्ष्म कूट कर 14 दिनों तक शराब के सिर्का में भिगोएँ फिर सुखा कर भून लें। शेष को कूट पीस कर रोग़न-ए-बादाम में चर्ब करें। फिर सब को एक साथ उनके तीन गुना साफ़ शहद के क़िवाम के साथ जवारिश तैयार करें। अंत में 7 ग्राम मुश्क तुर्की मिलाएँ और चीनी के पात्र में सुरक्षित कर लें।

प्रयोग-समयाः छः महीने के पश्चात प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **जवारिश का अन्य नुस्ख़ाः**

यह आमाशय एवं बवासीर के लिए अत्यंत लाभदायक है। काम शक्ति में उत्तेजना उत्पन्न करता है और चेहरे के रंग को साफ़ करता है।

औषधियाँः पोस्त-ए-हलीला काबुली, हलीला स्याह, आमला मुक़श्शर, पोस्त-ए-बलीला, फ़िलफ़िल स्याह, दार-ए-फ़िलफ़िल, ज़न्जबील, सअद कूफ़ी, शीतरज हिन्दी, क़िशर-ए-उतरुज, ख़ुब्सुलहदीद मुदब्बर (उपर्युक्त विधि से), कुन्जद मुक़श्शर।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर रोग़न-ए-गाव अर्थात गाय के घी में चर्ब करें और साफ़ शहद के क़िवाम के साथ मिला कर जवारिश तैयार करें।

सेवन-मात्राः पहले दिन 3.5 ग्राम, दूसरे दिन 7 ग्राम और तीसरे दिन 10.5 ग्राम लें अर्थात प्रतिदिन 3.5 ग्राम बढ़ाते रहें। इस प्रकार सात दिन पूरे करें और उस के बाद प्रतिदिन 24.5 ग्राम की मात्रा में प्रयोग करते रहें।

- **जवारिश हब्बतुलख़ज़राः**

यह आमाशय की ठंडक और सू-ए-इस्तिमरार में अत्याधिक लाभदायक है।

औषधियाँः हब्बतुलख़ज़रा, अस्ल-ए-बलादुर, कुन्जद मुक़श्शर प्रत्येक 9 ग्राम, पोस्त-ए-हलीला काबुली, आमला मुक़श्शर, पोस्त-ए-बलीला, ज़न्जबील, दार-ए-फ़िलफ़िल, साज़ज हिन्दी, शीतरज हिन्दी, बिरंग काबुली प्रत्येक 14 ग्राम, क़रन्फ़ुल, मरज़न्जोश, बिस्बासा प्रत्येक 4.5 ग्राम, शकर तबरज़द 420 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर रोग़न-ए-गाव अर्थात गाय के घी में चर्ब करें और साफ़शहद और शकर के क़िवाम के साथ मिला कर जवारिश तैयार करें।

- **जवारिश बलादुरः**

यह भारतीय हकीमों द्वारा तैयार किया हुआ नुस्ख़ा है। भूलने की बीमारी को दूर

करता है। स्मृतिवर्धक है। मूत्र को साफ़ करता है। बलग़मी स्वभाव के व्यक्तियों एवं बूढ़ों केलिए बहुत अनुकूल है।

औषधियाँ: फ़िलफ़िल, दार-ए-फ़िलफ़िल, हलीला काबुली, हलीला ज़र्द और आमला मुक़श्शर प्रत्येक 14 ग्राम, जुन्द बेद स्तर 7 ग्राम, क़िशर-ए-उतरुज, अस्ल-ए-बलादुर, क़न्द सफ़ेद, क़ुस्त तल्ख़, हब्बुलग़ार और सअद कूफ़ी प्रत्येक 36 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर रोग़न-ए-गाव और अस्ल-ए-बलादुर में चर्ब करें। फिर तीन गुना साफ़ शहद के क़िवाम के साथ मिला कर जवारिश तैयार करें।

प्रयोग-समय: छः महीने के पश्चात प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्रा: 7 ग्राम।

- **जवारिश सअतर:**

यह ऐसी गैस में लाभदायक है जो पेट और आँतों में बंद होती है साथ ही यह आमाशय की पाचन शक्ति को बढ़ाता है।

औषधियाँ: सअतर जबली, सअतर बुस्तानी, ज़ूफ़ा, नानख़्वाह , नअनाअ, नम्माम और ज़ीरा किर्मानी प्रत्येक 17.5 ग्राम, ज़न्जबील, ऊद हिन्दी, अगर तुर्की और बिस्बासा प्रत्येक 10.5 ग्राम, तुख़्म-ए-करफ़्स, राज़ियाना और अनीसून प्रत्येक 14 ग्राम, हाशा 7 ग्राम, क़न्द सफ़ेद 175 ग्राम।

निर्माण-विधि: कूट छान कर शहद के क़िवाम में मिला कर जवारिश तैयार करें।

- **जवारिश मुक़्लियासा:**

यह पेट में दर्द, मरोड़ और बवासीर में लाभदायक है।

औषधियाँ: हुर्फ़ बूदादा एक भाग, ज़ीरा किर्मानी मुदब्बर दो भाग, मस्तगी एक तिहाई भाग, रोग़न-ए-गाव में भूना हुआ हलीला काबुली आधा भाग।

निर्माण-विधि: हुर्फ को मात्र कूटें और शेष सभी औषधियों को कूट छान लें। फिर सब को क़न्द और अर्क़-ए-गुलाब के साथ मिला कर जवारिश तैयार करें।

- **जवारिश अन्जोदान:**

पेट और आँतों के फूलने व गुड़गुड़ाने में लाभदायक है।

औषधियाँ: फ़िलफ़िल और तुख़्म-ए-करफ़्स प्रत्येक 42 ग्राम, फ़ुत्रासालियून, नअनाअ और सीसालियूस प्रत्येक 28 ग्राम, काशिम सब्ज़ 35 ग्राम।

निर्माण-विधि: शहद मिला कर जवारिश तैयार करें।

- **जवारिश अन्जोदान का अन्य नुस्ख़ा:**

यह नुस्खा पहले नुस्खे की तुलना में अधिक प्रभावशाली व लाभदायक है।

क़ूलन्ज को खोलता और वायुनाशी है।

औषधियाँ: फ़िलफ़िल, दार-ए-फ़िलफ़िल, ईर्सा और ज़न्जबील प्रत्येक 21 ग्राम, अनीसून, मस्तगी, राज़ियाना, नानख़्वाह और तुख़्म-ए-करफ़्स प्रत्येक 7 ग्राम, अन्जोदान 52.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर साफ़ शहद में मिलाएँ और जवारिश तैयार।

सेवन-मात्रा: 7 ग्राम।

- **जवारिश ख़ूलन्जान:**

पेट और आँतों की ठंडक में लाभदायक है। आहार के पाचन में यह आमाशय की सहायता करता है। गैस बाहर निकालता है। मुँह को सुगंधित करता है। चेहरे के रंग को साफ़ करता है।

औषधियाँ: ख़ूलन्जान, क़िर्फ़ह, फ़िलफ़िल सफ़ेद प्रत्येक 7 ग्राम, क़ाक़ला सिग़ार, दार चीनी, नार मुश्क प्रत्येक 10.5 ग्राम, दार-ए-फ़िलफ़िल 21 ग्राम, ज़न्जबील 28 ग्राम, तुख़्म-ए-करफ़्स, अनीसून, ज़ीरा किर्मानी, तालीस्फ़र, करोया प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: सभी औषधियों को कूट छान कर शहद या क़न्द या बताशा के साथ मिलाएँ और जवारिश तैयार करें।

- **जवारिश हाली:**

आमाशयवर्धक है। पाचक एवं दीपन है। बवासीर को समाप्त करता है। चेहरे के रंग को साफ़ करता है। मुँह को दुर्गंध को दूर कर के उसको सुगंधित करता है।

औषधियाँ: जौज़बोवा, बिस्बासा, क़रन्फ़ुल, दार चीनी, सुंबुलुत्तीब, सअद हिन्दी, आमला मुनक़्क़ा और हीलबोवा।

निर्माण-विधि: कूट छान कर शहद और क़न्द में मिलाएँ।

सेवन-मात्रा: 7 ग्राम।

- **जवारिश ज़न्जबील:**

पेट अथवा आँतों के रोगों और हैज़ा में लाभदायक है। वायुनाशी है। बलग़मी दस्तों को बन्द करता है।

औषधियाँ: ज़न्जबील 70 ग्राम, समग़-ए-अरबी, हीलबोवा प्रत्येक 35 ग्राम, क़रन्फ़ुल, दार चीनी प्रत्येक 17.5 ग्राम, ज़ाफ़रान 3.5 ग्राम, निशास्ता 154 ग्राम, जौज़बोवा 3.5 ग्राम, शकर तबरज़द।

निर्माण-विधि: कूट छान कर शकर तबर्ज़द में मिलाएँ।

- **जवारिश तबाशीर:**

बुख़ार और सफ़रावी दस्तों में लाभदायक है।

औषधियाँः तबाशीर सफ़ेद, हब्बुलआस प्रत्येक 3.5 ग्राम, तुख़्म-ए-हुम्माज़, समग़-ए-अरबी प्रत्येक 24.5 ग्राम, ख़रनूब, गुलनार, सुमाक़, उसारा-ए-लिहयतुत्तीस प्रत्येक 21 ग्राम, ज़ाफ़रान, अफ़ियून प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट कर शरबत-ए-सेब शीरीं में मिलाएँ।

- **जवारिश तबाशीर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह पेट की गर्मी बुझाता है। प्यास में आराम देता है। दीपन है और आमाशय को सशक्त बनाता है। शरीर में उत्पन्न अनचाही गर्मी को दूर करता है।

औषधियाँः तबाशीर सफ़ेद और गुल-ए-सुर्ख़ प्रत्येक 35 ग्राम, मस्तगी 17.5 ग्राम, सुमाक़ मुनक़्क़ा 7 ग्राम, गुलनार और क़ाक़ला किबार प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः क़न्द व शहद के साथ जवारिश तैयार करें।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम।

- **जवारिश कुन्दुरः**

बलग़मी दस्तों को बन्द करता है। आमाशयवर्धक है और अंतरांग में फूलन को दूर करता है।

औषधियाँः कुन्दुर 210 ग्राम, फ़िलफ़िल, दार-ए-फ़िलफ़िल, ज़न्जबील, ख़ूलन्जान प्रत्येक 35 ग्राम, क़रन्फ़ुल, जौज़बोवा प्रत्येक 17.5 ग्राम, मुश्क 1.75 ग्राम, क़न्द सभी औषधियों के समभाग।

निर्माण-विधिः क़न्द व शहद के साथ जवारिश तैयार करें।

- **जवारिश कुन्दुर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह नुस्खा "शरह-ए-अस्बाब व अलामात" से लिया गया है। आमाशय की कमज़ोरी के कारण गृहणी व दस्तों में लाभदायक है।

औषधियाँः कुन्दुर, गुलनार फ़ारसी प्रत्येक 7 ग्राम,काशिम, फ़िलफ़िल, नानख़्वाह, सुंबुलुत्तीब, अनीसून, शोनीज़ प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः क़न्द व शहद के क़िवाम में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम।

- **जवारिश शहवतः**

यह बहुत अच्छा दीपन है। आमाशयवर्धक है। गर्भवती महिलाओं के लिए लाभदायक है। रंग को साफ़ करता है।

औषधियाँः ज़रंबाद, तुख़्म-ए-करफ़्स, नानख़्वाह प्रत्येक 7 ग्राम, कुन्दुर 10.5

ग्राम, ज़ीरा किर्मानी 7 ग्राम, कुन्जद मुक़श्शर 35 ग्राम, ज़न्जबील, फ़िलफ़िल, क़ाक़लैन, दार चीनी प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान कर शकर तबर्ज़द और अर्क़-ए-गुलाब के साथ जवारिश तैयार।

- **जवारिश ख़रनूबः**

यह नुस्खा "शरह-ए-अस्बाब व अलामात" से लिया गया है। धारण शक्ति वाला है। गृहणी एवं आमाशय के कारण होने वाली दस्तों में लाभदायक है।

औषधियाँः ख़रनूब शामी मुनक़्क़ा, ज़ीरा किर्मानी सिर्का में मुदब्बर किया हुआ, हब्बुलआस, सवीक़-ए-कनार, बलूत और किशनीज़ ख़ुश्क प्रत्येक समभाग में।

निर्माण-विधिः रुब्ब-ए-मूरद के साथ जवारिश तैयार।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम।

- **जवारिश सोसनः**

यह रूमी हकीमों द्वारा तैयार किया नुस्खा है। आमाश व जिगर की कमज़ोरी, जलोदर रोग के प्रारंभ में लाभदायक है।

औषधियाँः अन्जोदान 4.5 ग्राम, बीख़-ए-सोसन 210 ग्राम, राज़ियाना, नानख़्वाह, तुख़्म-ए-करफ़्स प्रत्येक 128 ग्राम, फ़िलफ़िल स्याह 32 ग्राम।

निर्माण-विधिः शहद के क़िवाम के साथ जवारिश तैयार।

- **जवारिश बुक़रातः**

यह दीपन, पाचक एवं शक्तिवर्धक है, ताक़त व बहादुरी पैदा करता है, आमाशय की ठंडक दूर करता है, मुँह से राल बहना बन्द करता है और हिचकी व अंतरांग के रोगों में लाभदायक है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-करफ़्स एवं ज़र्दक, तुख़्म-ए-शिब्त, किशनीज़, राज़ियाना, नानख़्वाह प्रत्येक 15.75 ग्राम, आक़रक़रहा, मस्तगी, प्रत्येक 4.5 ग्राम, ऊद ख़ाम, क़रन्फ़ुल प्रत्येक 2.25 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान कर उनके तीन गुना शहद और बताशा के साथ जवारिश तैयार करें।

- **जवारिश बुक़रात का अन्य नुस्ख़ाः**

यह नुस्खा लेखक के प्रयोग में रहा है। आमाशय और जिगर को मज़बूत करता है। धारण शक्ति वाला है। हैज़ा, उल्टी, उबकाई और ख़ूनी दस्त में लाभदायक है।

औषधियाँः तबाशीर सफ़ेद, हब्बुलआस, अनारदाना, गुल-ए-सुर्ख़, बहमन, सुंबुलुत्तीब, असारून प्रत्येक 8.75 ग्राम, ज़रिशक मुनक्क़ा 17.5 ग्राम, पोस्त बेरून-ए-पिस्ता, मस्तगी, क़िर्फ़ह प्रत्येक 5.25 ग्राम, मुश्क 832 मिलीग्राम, रुब्ब-ए-बिही व सेब, रुब्ब-ए-मूरद, रुब्ब-ए-फ़वाकेह प्रत्येक 35 ग्राम, गुलाब 70 ग्राम।

निर्माण-विधिः विधि अनुसार जवारिश तैयार करें।

- **जवारिश अंबरः**

यह जवारिश केसरी के नाम से प्रसिद्ध है। आमाशयवर्धक है। बदहज़्मी और गर्भाशय के दर्द में लाभदायक, वाजीकर और स्मृतिवर्धक है। बूढ़े लोगों के लिए बहुत लाभदायक व मुजर्रब है।

औषधियाँः क़ाक़ला किबार, बिस्बासा, दारचीनी और लबान ज़कर प्रत्येक 14 ग्राम, ज़न्जबील और दार-ए-फ़िलफ़िल प्रत्येक 42 ग्राम, क़िर्फ़ह 3.5 ग्राम, क़रन्फ़ुल और ज़ाफ़रान प्रत्येक 35 ग्राम, उशनह 7 ग्राम, सुंबुलुत्तीब, मस्तगी और अंबर अशहब प्रत्येक 7 ग्राम, मुश्क तुर्की, बज़रुल बन्ज और अफ़ियून प्रत्येक 3.5 ग्राम, रोग़न-ए-बलसाँ 21 ग्राम।

निर्माण-विधिः अफ़ियून को शराब-ए-मुसल्लस में घोलें और अंबर को रोग़न-ए-बलसाँ में पिघलाएँ फिर सब को कूट छान कर उनके तीन गुना साफ़ शहद के क़िवाम के साथ जवारिश तैयार। शीशा या चीनी के पात्र में सुरक्षित रखें।

प्रयोग-समयः 20 दिनों के बाद प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 1.75 ग्राम से 3.5 ग्राम तक।

- **जवारिश उतरूजः**

आमाशयवर्धक और दीपन है। मुँह को सुगंधित करता है। उन गैसों को बाहर निकालता है जो आमाशय में बन्द रहती हैं।

औषधियाँः क़िशर-ए-उतरुज 105 ग्राम, क़रन्फ़ुल, जौज़बोवा, क़ाक़ला, दार चीनी, ख़ूलन्जान और ज़न्जबील प्रत्येक 3.5 ग्राम, मुश्क तुर्की 832 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान कर उनके तीन गुना साफ़ शहद के क़िवाम के साथ जवारिश तैयार।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **जवारिश मस्तगीः**

आमाशय और जिगर की ठंडक में लाभदायक है। बलग़म को शरीर से बाहर निकालता है और मुँह से पानी एवं राल बहना बन्द करता है।

औषधियाँः मस्तगी रुमी 13.5 ग्राम, क़न्द सफ़ेद 810 ग्राम, अर्क़-ए-गुलाब, जुल्लाब।

निर्माण-विधिः मस्तगी को हावन में पीस लें। क़न्द, अर्क़-ए-गुलाब और जुल्लाब का क़िवाम तैयार करें। मस्तगी को उस क़िवाम में डाल कर तेज़ आँच पर पकाएँ और तैयारी के बाद फिर उस की सतह पर उंडेल लें।

- **जवारिश मस्तगी का अन्य नुस्ख़ाः**

आमाशयवर्धक, क़ब्ज़ पैदा करने वाला और पाचन क्रिया में सहायक है।

औषधियाँः कहरुबा, गुल-ए-सुर्ख़ प्रत्येक 17.5 ग्राम, ऊद हिन्दी 10.5 ग्राम, सुंबुलुत्तीब, सिर्का में मुदब्बर किया हुआ ज़ीरा किर्मानी प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान कर जुल्लाब एवं शकर तबरज़द के क़िवाम के साथ जवारिश तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

अनुपानः रुब्ब-ए-बिही शीरीं या रुब्ब-ए-सेब।

- **जवारिश सलमोयहः**

आमाशय को सशक्त बनाने एवं बदहज़्मी में बहुत लाभदायक और मुजर्रब है। आमाशय में तरल पदार्थों की अधिकता और ठंडक को दूर करता है। आमाशय को गर्म करता और भूख बढ़ाता है।

औषधियाँः सुंबुलुत्तीब, क़रन्फ़ुल, दार चीनी, जौज़बोवा, क़ाक़ला, मुश्क प्रत्येक 17.5 ग्राम, कुन्दुर 35 ग्राम, फ़िलफ़िल और ज़न्जबील प्रत्येक 21 ग्राम, जुन्द बेद स्तर 17.5 ग्राम, शकर तबरज़द सभी औषधियों के समभाग और शहद उन के दो गुना।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान कर शकर तबर्ज़द और शहद के साथ जवारिश तैयार करें।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम।

- **जवारिश सलमोयह का अन्य नुस्ख़ाः**

आमाशय को सशक्त बनाता है। पाचक है। भूख बढ़ाता है। अंतरांग में फूलन को दूर करता है।

औषधियाँः कुन्दुर, नानख़्वाह और मस्तगी प्रत्येक 21 ग्राम, फ़िलफ़िल, इज़्ख़िर, हब्बुलग़ार, ऊद हिन्दी प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान लें। 350 ग्राम की मात्रा में मवीज़ ताइफी को उसके छिलकों एवं दानों सहित मरहम की भाँति धीरे धीरे कूट लें। फिर सभी औषधियों को मवीज़ के साथ मिला कर जवारिश तैयार करें।

- **जवारिश फ़ोफ़लः**

आमाशयवर्धक और हृदयवर्धक है। दाँतों को मज़बूत बनाता है। मुँह को सुगंधित करता है। पेट को धारण करता है। संकुचनशील और पाचक है।

औषधियाँः फ़ोफ़ल, दूध, दाना-ए-हीलबोवा, क़रन्फ़ुल, तुख़्म-ए-सेब प्रत्येक 10.5 ग्राम, सन्दल सफेद, ऊद हिन्दी, ज़ाफ़रान, कबाब चीनी, किशनीज़ ख़ुश्क प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः फ़ोफ़ल के 20 फल लेकर अधकुटा कर के एक रात दूध में उबालें। दो दिन बाद निकाल कर सुखा लें।

फिर छोटी इलाइची, लौंग और सेब के बीज प्रत्येक 10.5 ग्राम, सन्दल सफेद, ऊद हिन्दी, केसर, कबाब चीनी, सूखी धनिया प्रत्येक 7 ग्राम की मात्रा में लेकर उपर्युक्त प्राप्त फ़ोफ़ल के साथ एक रात अर्क़-ए-गुलाब में भिगोएँ।

सब को सुखा कर कूट लें।अब उन को थोड़ी मात्रा में दूध और 810 ग्राम क़न्द के क़िवाम में मिलाएँ। ठंडा होने के बाद पत्थर की सतह पर उंडेल कर सूक्ष्म चूर्ण करें।

प्रयोग-समयः भोजन से पहले और बाद में प्रयोग करें।

- **जवारिश मुतय्यबः**

हृदयवर्धक है। मुँह को सुगंधित करता है। उल्टी, हैज़ा और पेट की कमज़ोरी में लाभदायक है। पाचन एवं दीपन है। दाँतों व मसूढ़ों को मज़बूत बनाता है। वीर्यधारक है।

औषधियाँः फ़ोफ़ल, कबाब चीनी, सुंबुलुत्तीब, ऊद हिन्दी, प्रत्येक 3.5 ग्राम, काफ़ूर 32 ग्राम, शर्बत-ए-फ़वाकेह शीरीं 105 ग्राम, मैफ़ुख़्तज 175 ग्राम, फ़ानीज़ सन्जरी 350 ग्राम।

निर्माण-विधिः बताशा को अर्क़-ए-गुलाब में मिला कर शराब-ए-फ़वाकेह के साथ क़िवाम तैयार करें। शेष को कूट छान कर उस में मिलाएँ। पत्थर की सतह पर उंडेल कर सुखा लें। चाक़ू से काट कर टुकड़े टुकड़े कर के सुरक्षित कर लें।

- **जवारिश मुतय्यब का अन्य नुस्ख़ाः**

आमाशयवर्धक और दीपन है।

औषधियाँः क़ाक़ला किबार, क़रन्फ़ुल, ज़न्जबील, ज़ाफ़रान, दार-ए-चीनी, दार-ए-फ़िलफ़िल प्रत्येक 5.25 ग्राम, ऊद हिन्दी, फ़ोफ़ल 3.5 ग्राम, मुश्क 832 और अंबर अशहब 1248 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः कूट छान कर शकर तबर्ज़द के क़िवाम के साथ जवारिश तैयार करें।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम।

अनुपानः अर्क़-ए-गुलाब के साथ प्रयोग करें।

- **जवारिश हिन्दीः**

इस का उल्लेख शैख़ अबू अली सीना ने अपनी किताब "क़ानून" में किया है। यह क़ूलन्ज, आमाशय की ठंडक और जोड़ों के दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँः शीतरज हिन्दी और साज़ज हिन्दी प्रत्येक 14 ग्राम, जौज़बोवा और नानख़्वाह प्रत्येक 40 ग्राम, फ़िलफ़िल और दार-ए-फ़िलफ़िल 100 ग्राम, नारमुश्क और हील प्रत्येक 40 ग्राम, बिस्बासा 14 ग्राम, फ़ानीज़ 200 ग्राम, साफ़ शहद सभी औषधियों के दो गुना।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर जवारिश तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

अनुपानः पुरानी शराब के साथ प्रयोग करें।

❑❑❑

प्रथम खण्ड

# पन्चम अध्याय

## विरेचक व धारण-शक्ति वाले इत्रीफ़ल के नुस्ख़े

- **इत्रीफ़ल कबीरः**

इस से बवासीर में लाभ होता है। रंग साफ़ होता है। त्वचा में निखार आता है। इस के अतिरिक्त यह वाजीकर, आमाशयवर्धक, पाचक एवं वायुनाशी है।

औषधियाँः पोस्त-ए-हलीला काबुली, पोस्त-ए-हलीला स्याह, पोस्त-ए-बलीला, आमला मुनक्क़ा, फ़िलफ़िल, दार-ए-फ़िलफ़िल प्रत्येक 105 ग्राम, ज़न्जबील, बूज़ीदान, बिस्बासा, शीतरज हिन्दी, शक़ाक़ुल, तूदरी ज़र्द एवं सुर्ख़, लिसानुलअसाफ़ीर, हब्बुलक़िलक़िल, कुन्जद मुक़श्शर, ख़शख़ाश सफ़ेद और बहमन प्रत्येक 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर रोग़न-ए-गाव में चर्ब कर लें फिर सभी को उन के तीन गुना शहद के साथ मिला कर नियमानुसार इत्रीफ़ल तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्रामः पुरानी शराब के साथ प्रयोग करें।

- **इत्रीफ़ल का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से शौच साफ़ और नर्म आता है और आमाशय से सफ़रा अथवा बलग़म की सफ़ाई होती है।

औषधियाँः हलीला काबुली और हलीला ज़र्द प्रत्येक 35 ग्राम, अस्लुस्सूस 17.5 ग्राम, तुर्बुद 70 ग्राम, ज़न्जबील और शीतरज हिन्दी प्रत्येक 10.5 ग्राम, क़िर्फ़ह, दार-ए-चीनी और हील प्रत्येक 7 ग्राम, शाहतरह 35 ग्राम, गुल-ए-सुर्ख़ 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर रोग़न-ए-गाव में चर्ब कर लें फिर सब को उन के तीन गुना शहद के साथ मिला कर नियमानुसार इत्रीफ़ल तैयार करें।

सेवन-मात्राः 14 ग्राम।

- **इत्रीफ़ल सग़ीरः**

यह इत्सिर्ख़ा-ए-मेदा (Gastroptosis) एवं बवासीर में लाभदायक है। मुँह साफ़ करता और त्वचा में निखार लाता है।

औषधियाँः पोस्त-ए-हलीला काबुली,बलीला, आमला मुनक़्क़ा और हलीला ज़र्द सब को समभाग में लें।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर रोग़न-ए-गाव में चर्ब कर लें फिर सभी को उन के तीन गुना शहद के साथ मिला कर नियमानुसार इत्रीफ़ल तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 से 9 ग्राम तक।

सेवन समयः रात को सोते समय प्रयोग करें।

- **इत्रीफ़ल सग़ीर का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः हलीला काबुली, बलीला और आमला मुनक़्क़ा सभी समभाग में लें।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर रोग़न-ए-गाव में चर्ब कर लें फिर सब को उन के तीन गुना शहद के साथ मिला कर नियमानुसार इत्रीफ़ल तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

सेवन-समयः रात को सोते समय प्रयोग करें।

- **इत्रीफ़ल मियानाः**

यह सफ़रावी रोगों में लाभदायक है। यह उस घुमरीएवं Corneal Opacity में लाभदायक है जो आमाशय से उठने वाले बुख़ारात से पैदा होता है। यह मृदु विरेचक है।

औषधियाँः हलीला ज़र्द 140 ग्राम, हलीला काबुली 105 ग्राम, गुलए-ए-सुर्ख़ 24.5 ग्राम, बलीला और आमला मुनक़्क़ा प्रत्येक 28 ग्राम, शाहतरह 52.5 ग्राम, सना मक्की 35 ग्राम, अनीसून और मस्तगी प्रत्येक 17.5 ग्राम, तुर्बुद तराशीदा 21 ग्राम, सक़मूनिया 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर रोग़न-ए-गाव में चर्ब कर लें फिर सब को उन के तीन गुना शहद के साथ मिला कर नियमानुसार इत्रीफ़ल तैयार करें।

सेवन-मात्राः 9 ग्राम।

- **इत्रीफ़ल का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से आँख की रोशनी तेज़ होती है। आमाशय के तरल पदार्थ साफ़ होते हैं। शौच नर्म और साफ़ होता है। बवासीर में लाभदायक है।

औषधियाँः हलीला, बलीला, हलीला स्याह, फ़िलफ़िल, दार-ए-फ़िलफ़िल और क़न्तूरियून दक़ीक़ प्रत्येक समभाग में।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर रोग़न-ए-गाव में चर्ब कर लें। फिर सब को तीन गुना शहद के साथ मिला कर इत्रीफ़ल तैयार करें।

सेवन-मात्राः 9 ग्राम।

## ● इत्रीफ़ल खुब्सुलहदीदः

यह नुस्खा अबू अली इब्न-ए-सीना की पुस्तक ''अलक़ानून फ़ित्तिब'' से लिया गया है। यह बदहज़्मी, आमाशय एवं आँतों की ठंडक और बाद-ए-बवासीर में लाभदायक है। मूत्राशय के लिए हितकारी और वाजीकर है।

औषधियाँः पोस्त-ए-हलीला काबुली, हलीला स्याह, पोस्त-ए-बलीला, आमला मुनक़्क़ा, तुख़्म-ए-करफ़्स जबली, शीतरज हिन्दी, नानख़्वाह और सअतर फ़ारसी प्रत्येक 32 ग्राम, सुंबुलुत्तीब, हमामा, वज तुर्की और हीलबोवा प्रत्येक 10.5 ग्राम, दार चीनी 14 ग्राम, फ़िलफ़िल स्याह, फ़िलफ़िल सफ़ेद, नार मुश्क और नमक हिन्दी प्रत्येक 16 ग्राम, खरदल सफ़ेद 32 ग्राम, नौशादर 1.75 ग्राम, खब्सुलहदीद मुदब्बर 96 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर रोग़न-ए-गाव में चर्ब कर लें। फिर सब को उन के तीन गुना शहद के साथ नियमानुसार इत्रीफ़ल तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

## ● इत्रीफ़ल का अन्य नुस्खाः

यह वसवास, दीवानगी, जुनून और अनियमित विचार में लाभदायक है। बवासीर दूर करता है। शौच नर्म वसाफ़ करता है।

औषधियाँः हलीला काबुली, बलीला औरआमला मुनक़्क़ा प्रत्येक 35 ग्राम, अफ़्सन्तीन रूमी, सना मक्की, शीतरज हिन्दी, अफ़्तीमून , बिस्फ़ाइज, तुर्बुद सफ़ेद और उस्तोखुद्दूस प्रत्येक 17.5 ग्राम, सुंबुल, मस्तगी और जौज़बोवा प्रत्येक 7 ग्राम, गावज़बान, फ़्रन्जमुश्क, लाजवर्द, हजर-ए-अरमनी मग़सूल और बादरन्जबोया प्रत्येक 14 ग्राम, तुख़्म-ए-करफ़्स और अनीसून 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर रोग़न-ए-बादाम में चर्ब कर लें। शहद 350 ग्राम और मवीज़ मुनक़्क़ा को हल्का कूट लें। फिर सब को एक साथ मिला कर इत्रीफ़ल तैयार करें।

## ● इत्रीफ़ल का अन्य नुस्खाः

यह स्वित्रा, बहक और सौदावी व बलग़मी रोगों में लाभदायक है।

औषधियाँः हलीला काबुली, आमला मुनक़्क़ा, हलीला स्याह, अफ़्तीमून और दोक़ू प्रत्येक 17.5 ग्राम, जौज़बोवा, आक़रक़रहा और शीतरज हिन्दी प्रत्येक 7 ग्राम, दार-ए-फ़िलफ़िल और क़िर्फ़ह प्रत्येक 14 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान लें फिर उनके तीन गुना शहद के साथ मिला कर नियमानुसार इत्रीफ़ल तैयार करें। दो महीने के पश्चात प्रयोग करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

सेवन-समयः रात को सोते समय खा कर सो जाएँ।

- **इत्रीफ़ल किशनीज़ीः**

यह आमाशयवर्धक है। यह आमाशय से उठने वाले बुख़ारात से होने वाले सर दर्द में लाभदायक है। यह आँख दर्द, कान दर्द और सुद्दा से होने वाले दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँः पोस्त-ए-हलीला काबुली, हलीला ज़र्द, हलीला स्याह, आमला मुनक़्क़ा और किशनीज़ ख़ुश्क।

निर्माण-विधिः सब को समभाग में ले कर कूट छान लें फिर उनका रोग़न-ए-बादाम या रोग़न-ए-गाव में चर्ब कर लें। तत्पश्चात सभी औषधियों को उन के तीन गुना शहद के साथ मिला कर नियमानुसार इत्रीफ़ल तैयार करें। दो महीने के पश्चात प्रयोग करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

सेवन-समयः रात को सोते समय खा कर सो जाएँ।

- **इत्रीफ़ल मुक़िलः**

यह बवासीर में लाभदायक है।

औषधियाँः पोस्त-ए-हलीला ज़र्द, आमला मुनक़्क़ा और पोस्त-ए-बलीला प्रत्येक 35 ग्राम, मुक़िल अज़रक़ 105 ग्राम।

निर्माण-विधिः मुक़िल को पानी में भिगोने के पश्चात नर्म कर के साफ़ कर लें और सभी औषधियों को कूट छान लें फिर सभी औषधियों को उन के तीन गुना शहद के साथ मिला कर नियमानुसार इत्रीफ़ल तैयार करें। दो महीने के पश्चात प्रयोग करें।

- **इत्रीफ़ल मुक़िल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह विशेष प्रकार के बवासीर में अत्याधिक लाभदायक है।

औषधियाँः पोस्त-ए-हलीलाकाबुली, हलीला स्याह, पोस्त-ए-बलीला, आमला मुनक़्क़ा, अफ़्तीमून, उस्तोखुद्दूस और बिस्फ़ाइज प्रत्येक 35 ग्राम, मुक़िल और फ़ुलूस-ए-ख़्यार शंबर प्रत्येक 105 ग्राम।

निर्माण-विधिः मुक़िल को पानी में भिगो कर हल कर लें फिर उस को सभी औषधियों के तीन गुना शहद के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें। तत्पश्चात सब को कूट छान कर रोग़न-ए-बादाम में चर्ब कर लें।

- **इत्रीफ़ल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बवासीर में लाभदायक है और शौच नर्म करता है।

औषधियाँः पोस्त-ए-हलीला काबुली,हलीला ज़र्द,हलीला स्याह और आमला मुनक़्क़ा प्रत्येक 17.5 ग्राम, तुर्बुद सफ़ेद तराशीदा 24.5 ग्राम, मस्तगी 10.5 ग्राम, मुक़िल 70 ग्राम।

निर्माण-विधिः मुक़िल को पानी में भिगो कर हल कर लें। सभी औषकधियों को कूट छान कर रोग़न-ए-बादाम में चर्ब कर लें। सभी औषधियों के तीन गुना शहद का क़िवाम तैयार करें और सब को एक साथ मिला कर नियमानुसार इत्रीफ़ल तैयार करें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

- **इत्रीफ़ल अफ़्तीमूनः**

यह सौदावी रोगों में बहुत लाभदायक है। बालों के कालेपन को संरक्षित करता है।

औषधियाँः पोस्त-ए-हलीला काबुली, हलीला ज़र्द और आमला मुनक़्क़ा प्रत्येक 35 ग्राम, सना मक्की, तुर्बुद सफ़ेद तराशीदा, अफ़्तीमून प्रत्येक 17.5 ग्राम, शीतरज हिन्दी 120.5 ग्राम, बिस्फ़ाइज 3.5 ग्राम, अनीसून, नमक हिन्दी प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषकधियों को कूट छान लें और साफ़ शहद के साथ मिला कर नियमानुसार इत्रीफ़ल तैयार करें।

- **इत्रीफ़ल ग़ुददीः**

यह कण्ठमाला अथवा सौदावी एवं बलग़मी रोगों में बहुत लाभदायक है। इस के अतिरिक्त इस से और भी बहुत लाभ प्राप्त होते हैं और विशेष रूप से कण्ठमाला के रोगी को अत्याधिक लाभ की प्राप्ति होती है।

औषधियाँः हलीला स्याह, पोस्त-ए-हलीला,आमला मुनक़्क़ा, तुर्बुद सफ़ेद, गोस्फ़न्द की गर्दन के ख़ुश्क ग़ुदूद प्रत्येक 17.5 ग्राम, अफ़्तीमून 35 ग्राम, उस्तोख़ुद्दूस, सना मक्की प्रत्येक 24.5 ग्राम,शीतरज, ज़रन्बाद, ग़ारीक़ून, नौशादर प्रत्येक 17.5 ग्राम, अनीसून, मस्तगी रूमी, जौज़बोवा, क़रन्फ़ुल, सुंबुलुत्तीब प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान लें और उन के तीन गुना साफ़ शहद के साथ मिला कर नियमानुसार इत्रीफ़ल तैयार करें।

सेवन-मात्राः आवश्यकतानुसार 7 से 17.5 ग्राम तक।

- **इत्रीफ़ल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Ptyriasis Alba को साफ़ करता है।

औषधियाँः हलीला स्याह, बलीला, आमला मुनक़्क़ा और सना मक्की प्रत्येक 35 ग्रमा, दोक़ू 70 ग्राम, मस्तगी 10.5 ग्राम, अफ़्तीमून रूमी 17.5 ग्राम, वज 7 ग्राम, मवीज़ मुनक़्क़ 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान लें और उन के तीन गुना साफ़ शहद के साथ मिला कर नियमानुसार इत्रीफ़ल तैयार करें।

- **इत्रीफ़ल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Ptyriasis Nigra में लाभदायक एवं प्रभावी है।

औषधियाँः हलीला काबुली व स्याह,बलीला, अफ़्तीमून ।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर मवीज़ मुनक़्क़ा के साथ इत्रीफ़ल तैयार करें।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम।

- **इत्रीफ़ल काअन्य नुस्ख़ाः**

यह बादशनाम (Rosacia) में लाभदायक है।

औषधियाँः हलीला ज़र्द 42 ग्राम, हलीला स्याह 24.5 ग्राम, बलीला, आमला प्रत्येक 17.5 ग्राम, सना मक्की, शाहतरह प्रत्येक 21 ग्राम, गुल-ए-सुर्ख़, बनफ़्शा, तुख़्म-ए-कासनी प्रत्येक 9 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर राग़न-ए-गाव में चर्ब कर लें। शहद के साथ मिला कर इत्रीफ़ल तैयार करें।

सेवन-मात्राः 14 ग्राम।

- **इत्रीफ़ल माहवीः**

यह Ptyriasis alba/Nigra में लाभदायक है।बालों के कालेपन की रक्षा करता और बलग़मी व सौदावी रोगों में लाभदायक है।

औषधियाँः पोस्त-ए-हलीला काबुली 70 ग्राम, पोस्त-ए-बलीला और आमला मुनक़्क़ा प्रत्येक 35 ग्राम, बाव बड़ंग काबुली मुक़श्शर 52.5 ग्राम, शीतरज हिन्दी, सअद कूफ़ी और ज़न्जबील प्रत्येक 10.5 ग्राम, साज़ज हिन्दी 17.5 ग्राम, उस्तोखुद्दूस 24.5 ग्राम, मस्तगी रूमी, अनीसून, क़रन्फ़ुल और जौज़बोवा प्रत्येक 7 ग्राम, ग़ारीक़ून, नारमुश्क, फ़िलफ़िल, दार-ए-फ़िलफ़िल और हाशा प्रत्येक 14 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर राग़न-ए-गाव में चर्ब कर लें। शहद के साथ मिला कर इत्रीफ़ल तैयार करें।

प्रयोग-समयः दो महीने के पश्चात प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम से 14 ग्राम तक।

- **इत्रीफ़ल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह इर्क़-ए-मदनी (Dracunculosis) में लाभदायक है। अगर इस को लगातार

दस रोज़ तक प्रयोग करें तो रोग के कारण का निवारण हो जाता है।

औषधियाँः पोस्त-ए-हलीला काबुली, पोस्त-ए-बलीला, तुर्बुद सफ़ेद, आमला मुनक्क़ा, ज़न्जबील, क़िन्बील 1-1 भाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर राग़न-ए-बादाम में चर्ब कर लें फिर सब को उन के तीन गुना शहद मुसफ़्फ़ा के साथ मिलएँ। दो महीने के पश्चात प्रयोग करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम से 10.5 ग्राम तक।

- **इत्रीफ़ल शाहतरहः**

इस से जरब (Scbies), क़ूबा (Ring worm), खारिश, सअफ़ह (Favus) और बदन की ख़ुश्की में लाभदायक है।

औषधियाँः पोस्त हलीलाज़र्द 105 ग्राम, रेवन्दचीनी 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर राग़न-ए-बादाम में चर्ब कर लें फिर सब को उन के दो गुना किशमिश के साथ मिलाएँ। दो महीने के पश्चात प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम से 14 ग्राम तक।

- **इत्रीफ़ल दीदानः**

इस से छोटे बड़े कीड़े और Tape Worm मर जाते हैं। बलग़म और चिपचिपे द्रव्य दस्तों द्वारा बाहर निकल जाते हैं।

औषधियाँः पोस्त-ए-हलीला काबुली और बावबडंग काबुला मुक़श्शर प्रत्येक 35 ग्राम, हब्बुन्नील, तुर्बुद सफ़ेद तराशीदा और रोग़न-ए-बादाम में चर्ब किया हुआ क़ुस्त तल्ख़ प्रत्येक 17.5 ग्राम, दरमना तुर्की, नमक निफ्ती, खर्दल, शहम-ए-हन्ज़ल, सअद, रासन, अफ़्सन्तीन रूमी, अफ़्तीमून, क़िन्बील और तुर्मुस प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर शहद में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 9 ग्राम से 13.5 ग्राम तक।

❑❑❑

प्रथम खण्ड

# शष्टम अध्याय

# अयारिज के नुस्खे

## • अयारिज लोग़ाज़िया:

औषधियाँ: शहम-ए-हन्ज़ल17.5 ग्राम, इशक़ील मुशसव्वा, ग़ारीक़ून, सक़मूनिया मुशव्वा, ख़रबक स्याह, उशक़ और उस्क़ूर्दियून प्रत्येक 8.75 ग्राम,अफ़्तीमून , माज़र्यून, मुक़िलुलयहूद और सिब्र प्रत्येक 10.5 ग्राम, हाशा, हियूफ़ारिक़ून, साज़ज हिन्दी, फ़रासियून, जअदह, सलीख़ा, फ़िलफ़िल सफ़ेद, फ़िलफ़िल स्याह, जावशीर, मुर साफ़, जुन्द बेद स्तर, फ़ुत्रासालियून, ज़रावन्द तवील, उसारा-ए-अफ़्सन्तीन, फ़र्फ़ियून, सुंबुलुत्तीब, हमामा और ज़न्जबील प्रत्येक 7 ग्राम, जुन्तियाना रूमी, उस्तोख़ुद्दूस प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: सभी औषकधियों को कूट छान लें और उन के तीन गुनाशहद में मिलाकर अयारिज लोग़ाज़िया तैयार करें। छः महीने बीतने के पश्चात प्रयोग में लाएँ।

सेवन-समय: सुबह या रात में प्रयोग करें और उस के तुरंत बाद यह ज़ुलाल पिएँ।

अनुपान: ज़ुलाल का नुस्खा-बिस्फ़ाइज, ज़ूफ़ा, अफ़्तीमून और पोस्त-ए-हलीला काबुली को कूट छान लें। लिसानुस्सौर, उस्तोख़ुद्दूस, मवीज़ तायफ़ी और नमक-ए-निफ़्ती में से प्रत्येक आवश्यकतानुसार लें। सब को उबालने के बाद साफ़ कर के पिएँ।

## • अयारिज लोग़ाज़िया का अन्य नुस्ख़ा:

इस से भी लगभग पहले की भाँतिलाभ प्राप्त होते हैं।

औषधियाँ: शहम-ए-हन्ज़ल, सिब्र सक़ूतरी प्रत्येक 17.5 ग्राम, ख़रबक स्याह, अफ़्तीमून , ग़ारीक़ून प्रत्येक 7 ग्राम, इशक़ील मुशसव्वा 24.5 ग्राम, फ़िलफ़िल स्याह, दार-ए-फ़िलफ़िल, ज़ाफ़रान, सुंबुलुत्तीब, दार चीनी, मुर साफ़ और फ़ुत्रासालियून प्रत्येक 14 ग्राम, जावशीर, सकबीनज, उसारा-ए-अफ़्सन्तीन, ज़न्जबील, जुन्द बेद स्तर, ज़रावन्द तवील और जुन्तियाना प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को कूट छान लें और उन के तीन गुना शहद मुसफ़्फ़ा में मिलाकर अयारिज लोग़ाज़िया तैयार करें। छः महीने बीतने के पश्चात प्रयोग में लाएँ।

सेवन-समयः सुबह या रात में प्रयोग करें। उस के तुरंत बाद यह ज़लाल पिएँ।

सेवन-मात्राः 14 ग्राम।

अनुपानः रोग एवं रोगी के अनुसार जोशान्दा-ए-अफ़्तीमून आदि के साथ पिएँ।

- **अयारिज जालीनूसः**

इस से प्राप्त होने वाले लाभ अयारिज लोग़ाज़िया की तुलना में अधिक तेज़ होते हैं। यह स्पंदन, तांत्रिकाओं के ढीलेपन और बलग़मी एवं सौदावी रोगों में लाभदायक है। बदन से गाढ़े एवं चिपचिपे द्रव्यों को साफ़ करता है। यह मूत्राशय के ढीलेपन और मूत्र असंयमिता में लाभदायक है।

औषधियाँः शहम-ए-हन्ज़ल, सक़मूनिया मुशव्वा, ग़ारीक़ून, बसलुलफ़ार मुशव्वा, ख़रबक़ असवद, हियूफ़ारीक़ून और फ़र्फ़ियून प्रत्येक 54 ग्राम, बिस्फ़ाइज, अफ़्तीमून , मुक़िल अज़रक़, कमाज़रियूस, सलीख़ा और फ़रासियून प्रत्येक 31.5 ग्राम, मुर मक्की, सकबीनज, ज़रावन्द तवील, फ़िलफ़िल स्याह, दार-ए-फ़िलफ़िल, दार-ए-चीनी, जावशीर, जुन्द बेद स्तर और फ़ुत्रासालियून प्रत्येक 14 ग्राम। कुछ हकीम इस में ज़ाफ़रान और सिब्र सक़ूतरी प्रत्येक 14 ग्राम भी सम्मिलित करते हैं।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान लें। क्षारों को शराब-ए-मुसल्लस में भिगोएँ और मल छान कर साफ़ कर लें फिर सब को तीन गुना साफ़ शहद के क़िवाम में मिला कर अयारिज तैयार करें। चीनी या शीशे के पात्र में सुरक्षित कर लें और छः महीने के बाद प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 9 से 18 ग्राम तक।

अनुपानः इस को ऐसे पानी के साथ प्रयोग करें जिस में पोस्त-ए-हलीला काबुली, अफ़्तीमून और मवीज़ मुनक़्क़ा को पकाया गया हो और साफ़ करने के बाद नमक-ए-निफ़्ती 1.75 ग्राम की मात्रा में सम्मिलित किया गया हो।

- **अयारिज शैख़ अबू अलीः**

यह नुस्खा मुजर्रब और आज़माया हुआ है। यह अधिकतर सौदावी, बलग़मी एवं Chronic रोगों में लाभदायक है।

औषधियाँः ख़रबक़ स्याह 3.5 ग्राम, शहम-ए-हन्ज़ल 4.5 ग्राम, सिब्र सक़ूतरी 22.5 ग्राम, मिल्ह-ए-हिन्दी 4 ग्राम 332 मिलीग्राम, ग़ारीक़ून 9 ग्राम, हजर-ए-अरमनी 2.25 ग्राम, गुल-ए-सुर्ख़ 3.5 ग्राम, फ़िलफ़िल सफ़ेद 4.5 ग्राम, ज़न्जबील 9 ग्राम, वज तुर्की, असारून, हब्ब-ए-बलसाँ, सअतर फ़ारसी, तुख़्म-ए-करफ़्स, दोक़ू और तुख़्म-ए-गज़र प्रत्येक 10.5 ग्राम, लिसानुस्सौर 35 ग्राम, शाहस्फ़्रम, तुख़्म-ए-फ़न्जमुश्क,

बादरन्जबोया, तुख़्म-ए-तुरन्ज, नअनाअ ख़ुश्क प्रत्येक 7 ग्राम, अफ़्तीमून 5.25 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर साफ़ शहद के क़िवाम में मिला करअयारिज तैयार करें। छः महीने के पश्चात प्रयोग करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **अयारिज अर्कग़ानीसः**

यह सभी अन्दरूनी रोगों, घुमरी, श्वास की तंगी, गले के दर्द, तशन्नुज इम्तिलाई, क़ूलन्ज, जोड़ों के दर्द, मिर्रा सौदा, सफ़रा सोख़्ता, फ़ेफ़ड़े के न्सबमते, सीने के न्सबमत जो कि फ़ासिद अख़्लात से भर चुके हों, जरब (Scabies/Itching) और पागल कुत्ते के काटे में लाभदायक है।

औषधियाँः शहम-ए-हन्ज़ल 70 ग्राम, फ़रासियून, उस्तुखुद्दूस, ख़रबक़ स्याह, सक़मूनिया, फ़िलफ़िल और दार-ए-फ़िलफ़िल प्रत्येक 140 ग्राम, बसलुलफ़ार मुशव्वा, फ़र्फ़ियून, सिब्र सक़ूतरी, जुन्तियाना, जावशीर और फ़ुत्रासालियून प्रत्येक 35 ग्राम,दार चीनी, जअदह, सकबीनज, मुर साफ़, सुंबुलुत्तीब, इज़्ख़िर, फ़ूदनह जबली और ज़रावन्द तवील प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान लें। क्षारों को शराब-ए-इनब या शराब-ए-मुसल्लस में भिगोएँ और मल छान कर साफ़ कर लें फिर सब को तीन गुना साफ़ शहद के क़िवाम में मिला कर अयारिज तैयार करें। चीनी या शीशे के पात्र में सुरक्षित कर लें और छः महीने के बाद प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 18 ग्राम।

अनुपानः ऐसे पानी के साथ प्रयोग करें जिस में हलीला काबुली, अफ़्तीमून , अस्पस्त, हियूफ़ारीक़ून, क़ैसूम पकाया गया हो।

- **अयारिज रोफ़सः**

यह सौदावी एवं बलग़मी अख़्लात को दूर करता है। यह खलित्यमें लाभदायक है और पुरानेरोगों में बहुत प्रभावी है।

औषधियाँः शहम-ए-हन्ज़ल 70 ग्राम,सिब्र सक़ूतरी 17.5 ग्राम, सकबीनज और जावशीर प्रत्येक 21 ग्राम, ख़ूलन्जान 35 ग्राम, कमाज़रयूस 70 ग्राम, फ़ुत्रासालियून, ज़रावन्द तवील, ज़रावन्द मुदहरज, फ़िलफ़िल सफ़ेद, दार चीनी, ज़ाफ़रान, ज़न्जबील, जअदह और मुर साफ़ प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान लें। क्षारों को शराब-ए-मुसल्लस में भिगोएँ और मल छान कर साफ़ कर लें फिर सब को तीन गुना साफ़ शहद के क़िवाम

में मिला कर माजून तैयार करें। चीनी या शीशे के पात्र में सुरक्षित कर लें और छः महीने के बाद प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 9 ग्राम से 18 ग्राम तक।

अनुपानः इस को निम्नलिखित जोशान्दा के साथ पिएँ।

नुस्खा-ए-जोशान्दहः अफ़ियून, शाहतरह, हलीला स्याह, मवीज़ मुनक्क़ा, ग़ारीक़ून, उस्तुखुद्दूस, कमाफ़ीतूस, बिस्फ़ाइज और गावज़बान को आवश्यकतानुसार लें और नियमानुसार मल छान लें। इस को उपर्युक्त अयारिज रोफ़स के प्रयोग के बाद 70 मिलीलीटर की मात्रा में पिएँ।

- **अयारिज बुक़रातः**

यह आमाशय के तरल पदार्थों में और ऐसे सर दर्द में लाभदायक है जो आमाशय के बुख़ारात (Vapours) के चढ़ने के कारण होता है। शरीर के द्रव्यों को दूर करता है।

औषधियाँः जुन्तियाना रूमी, सुंबुलुत्तीब, जरावन्द मुदहरज, सलीख़ा, दार चीनी, फ़ुत्रासालियून, कमाफ़ीतूस, कमाज़रयूस, उस्तुखुद्दूस, फ़िलफ़िलमोया और मस्तगी प्रत्येक 5.25 ग्राम, सिब्र सक़ूतरी 63 ग्राम, शहम-ए-हन्ज़ल 21 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान करसाफ़ शहद के क़िवाम में मिलाएँ। चीनी या शीशे के पात्र में सुरक्षित कर लें।

प्रयोग-समयः छः महीने के बाद प्रयोग में लाएँ।

सेवन-मात्राः 9 ग्राम से 18 ग्राम तक।

- **अयारिज फ़ीक़राः**

यह क़ूलन्ज, बलग़मी उल्टी, मूत्राशय के ढीलेपन, ज़बान में भारीपन, सुनने में भारीपन और जोड़ो के दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँः सुंबुलुत्तीब, सलीख़ा, मस्तगी रूमी, दार चीनी, असारून, हब्ब-ए-बलसाँ, ज़ाफ़रान, मुक़िल अज़रक़, गुल-ए-सुर्ख़ प्रत्येक समभाग में, सिब्र सक़ूतरी सब के अर्धभाग।

निर्माण-विधिः नियमानुसार सभी औषधियों को कूट छान लें फिर सब को शहद के क़िवाम में मिला कर अयारिज तैयार करें।

- **अयारिज का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः मस्तगी रूमी, सुंबुलुत्तीब, असारून, सलीख़ा, हब्ब-ए-बलसाँ, दार चीनी प्रत्येक बराबर मात्रा में, सिब्र सक़ूतरी सब के बराबर।

निर्माण-विधिः कूट छान कर शहद के क़िवाम में मिला कर अयारिज तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **अयारिज का अन्य नुस्ख़ाः**

यह पुराने बुख़ारों को समाप्त करता और जिगर एवं तिल्ली को साफ़ करता है।

औषधियाँः उस्तुखुद्दूस 17.5 ग्राम,मस्तग 10.5 ग्राम, फ़ुक़ाह-ए-इज़्ख़िर, उसारा-ए-अफ़्सन्तीन और ग़ाफ़िस प्रत्येक 8.75 ग्राम, जअदह 10.5 ग्राम, सुंबुलुत्तीब, दार चीनी, असारून, सलीख़ा, ऊद-ए-बलसाँ, हब्ब-ए-बलसाँ और ज़ाफ़रान प्रत्येक 7 ग्राम, सिब्र सक़ूतरी सभी औषधियों के समभाग।

निर्माण-विधिः नियमानुसार सभी औषधियों को कूट छान लें फिर सब को शहद के क़िवाम में मिला कर अयारिज तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **अयारिज का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से बलग़मी रोगों एवं पुराने बुख़ारों में लाभ पहुँचता है।

औषधियाँः उसारा-ए-ग़ाफ़िस, उसारा-ए-अफ़्सन्तीन, दार चीनी, फ़ुक़ाह-ए-इज़्ख़िर, असल-ए-इज़्ख़िर, जोज़बोवा, क़रन्फ़ुल, मस्तगी, सलीख़ा, असारून, ऊद-ए-बलसाँ, हब्ब-ए-बलसाँ, सुंबुलुत्तीब और बिस्बासा प्रत्येक 10.5 ग्राम, ज़ाफ़रान 7 ग्राम, सिब्र सक़ूतरी 105 ग्राम। कुछ नुस्खों में सिब्र सक़ूतरी 210 ग्राम की मात्रा में सम्मिलित है।

निर्माण-विधिः नियमानुसार सभी औषधियों को कूट छान लें फिर सब को शहद के क़िवाम में मिला कर अयारिज तैयार करें।

नोटः आमाशय, जिगर और तिल्ली में गाढ़ा कैमूस जमा होता है इसलिए अयारिज को खाने से पहले प्रयोग करें ताकि अयारिज खाने के साथ अच्छी तरह मिल जाए।

❑❑❑

# द्वितीय खण्ड

## विभिन्न प्रकार के शरबत, लऊक, मुरब्बा, हब्ब, सिकन्जबीन और मुसम्मिन के नुस्ख़े

यह खण्ड छः अध्यायों पर आधारित है

## द्वितीय खण्ड
# प्रथम अध्याय

## शरबत के नुस्खे
**यह दो वर्गों पर आधारित है**

## प्रथम वर्गः तीक्ष्ण एवं मृदु विरेचक शरबत के नुस्खे

- **शरबत-ए-वर्दः**

सफ़रावी बुख़ारों में लाभदायक है। प्यास को मिटाता है और सफ़रा का विरेचक है। अगर सिकन्जबीन के साथ पिया जाए तो बलग़म या सफ़रा को शरीर से बाहर निकालता है।

औषधियाँः वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़ 420 ग्राम, जल 4200 मिलीलीटर, क़न्द 960 ग्राम।

निर्माण-विधिः वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़ 420 ग्राम को 4200 मिलीलीटर जल में इतना पकाएँ कि 3360 मिलीलीटर शेष रह जाए फिर हाथ से मल छान कर साफ़ कर लें और क़न्द 960 ग्राम के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें।

अगर इस को और अधिक प्रभावशाली बनाना चाहते हों तो ताज़ा वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़ को अलग अलग हर बार सात बार उसी जल में पकाएँ और हाथों से मल छान कर क़न्द के साथ मिलाएँ और क़िवाम तैयार करें।

सेवन-मात्राः 105 ग्राम से 35 ग्राम तक।

अनुपानः ऐसे सिकन्जबीन के साथ प्रयोग करें जिस को ओला और बरफ़ मिला कर ठंडा कर लिया गया हो।

- **शरबत-ए-वर्द का अन्य नुस्खाः**

इस में वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़ खुश्क को पकाया जाता है। इस के लाभ भी वही हैं। यह उपरोक्त नुस्खे की तुलना में अधिक प्रभावशाली होता है।

औषधियाँः वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़ 420 ग्राम, जल 4200 मिलीलीटर, क़न्द 420 ग्राम।

निर्माण-विधिः वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़ 420 ग्राम को 4200 मिलीलीटर साफ़ जल में

ऐसे पकाएँ कि देग का मुँह बन्द हो और उस की भाप उड़ती रहे यहाँ तक कि एक चौथाई जल शेष रह जाए फिर हाथ से मल छान कर साफ़ कर लें और क़न्द 420 ग्राम के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें।

सेवन-मात्राः 140 मिलीलीटर।

अनुपानः 35 ग्राम ऐसे सिकन्जबीन और ठंडे जल के साथ प्रयोग करें। जब भी ठंडा पानी पिएं इस का प्रयोग करें।

- **शरबत-ए-बनफ़्शाः**

यह Pleurodynia, Pleurisy, chest pain में लाभदायक है। हल्का विरेचक एवं मूत्रविरेचक है।

औषधियाँः बनफ़्शा 960 ग्राम, साफ़ जल 3840 मिलीलीटर, क़न्द 960 ग्राम।

निर्माण-विधिः बनफ़्शा को साफ़ जल में इतना पकाएँ कि एक चौथाई जल शेष रह जाए फिर हाथ से मल छान कर साफ़ कर लें और एक क़न्द मिला कर क़िवाम तैयार करें। अगर विरेचक प्रभाव को बढ़ाना हो तो शराब-ए-वर्द की भाँति कई बार पकाएँ।

सेवन-मात्राः आवश्यकता के समय 24 ग्राम प्रयोग करें।

- **शरबत-ए-बनफ़्शा का अन्य नुस्ख़ाः**

यह हल्का विरेचक है। यह Pleurisy, Asthama और गर्मी के कारण होने वाली खाँसी में लाभदायक है।

औषधियाँः बनफ़्शा ताज़ा 405 ग्राम, बेही दाना 35 ग्राम, तुख़्म-ए-ख़त्मी, तुख़्म-ए-खुब्बाज़ी, अस्लुस्सूस प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को 2430 मिलीलीअर साफ़ जल में भिगो दें और एक दिन रात बीतने के बाद पका कर साफ़कर लें फिर 405 ग्राम क़न्द के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें।

- **शरबत-ए-बनफ़्शा का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Pleurodynia, Pleurisy, chest pain, खाँसी में लाभदायक है।

औषधियाँः बनफ़्शा ताज़ा 420 ग्राम, तुख़्म-ए-ख़त्मी, बिही दाना, समग़-ए-अरबी, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यारैन प्रत्येक 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को 1700 मिलीलीटर साफ़जल में इतना पकाएँ कि एक तिहाई जल शेष रह जाए फिर हाथ से मल छान कर साफ़ कर लें और एक 810 ग्राम क़न्द या फ़ानीज़ के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें।

सेवन-मात्राः 24.5 ग्राम प्रयोग करें।

● **शरबत-ए-अनार मुलैयिनः**

हल्का विरेचक(Laxative) है। सफ़रा को शरीर से बाहर निकालता है और सफ़रावी बुख़ारों को दूर करता है।

औषधियाँः आब-ए-अनार तुर्श और आब-ए-अनार शीरीं प्रत्येक 810 मिलीलीटर, अर्धकुटा तुर्बुद मुक़श्शर 64 ग्राम।

निर्माण-विधिः तुर्बुद को कपड़े के एक टुकड़े में बाँधकर आब-ए-अनार में डालें और पकाएँ फिर तुर्बुद को उस कपड़े से निकाल कर आब-ए-अनार में मल छान लें। फिर सक़मूनिया मुशव्वा 17.5 ग्राम और ज़ाफ़रान पिसा हुआ 3.5 ग्राम लें और दोनों को अलग अलग पोटली में बाँध लें। फिर उन को और 810 ग्राम क़न्द को उपर्युक्त आब-ए-अनार में पकाएँ। क़िवाम के दर्जे तक पहुँचने के समय उपर्युक्त दोनों पोटलियों को मल छान लें और फिर देग को आग से उतार लें और ठंडा कर के चीनी या शीशे के पात्र में सुरक्षित कर लें।

सेवन-मात्राः 35 मिलीलीटर।

अनुपानः थोड़ी मात्रा में पानी या अर्क़-ए-गुलाब के साथ।

● **शरबत-ए-आलूः**

सफ़रा को शरीर से बाहर निकालता है। मृदु विरेचक है। गर्म स्वभाव के व्यक्तियों के लिए उपयुक्त है।

औषधियाँः आलू स्याह 100 की संख्या में, तमर हिन्दी और बनफ़्शा प्रत्येक 70 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को 4050 मिलीलीटर साफ़ जल में पका कर साफ़ कर लें। 70 ग्राम हल्का कूटे और छिले हुए सफेद तुर्बुद को कपड़े के एक टुकड़े में बाँध कर आब-ए-आलू, तमर हिन्दी और बनफ़्शा के साथ इतन पकाएँ कि एक भाग शेष रह जाए फिर उस को क़न्द 810 ग्राम के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें और झाग साफ़ करते रहें। इस घोल में 7 ग्राम सक़मूनिया और 17.5 ग्राम ज़ाफ़रान को सूक्ष्म चूर्ण कर के सम्मिलित करें और शीशे के पात्र में सुरक्षित कर लें।

● **शरबत-ए-आलू का अन्य नुस्ख़ाः**

यह सफ़रा का विरेचक (Purgative) है।

औषधियाँः आलू स्याह 100 की संख्या में, उन्नाब जुर्जानी मुनक़्क़ा 96 ग्राम, बनफ़्शा ख़ुश्क 64 ग्राम, अर्धकुटा तुर्बुद सफ़ेद मुक़श्शर 67.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः तुर्बुद को अलग से कपड़े में बाँध कर सभी औषधियों के साथ 4050 मिलीलीटर साफ़ जल में इतना पकाएँ कि दो भाग पानी जल जाए और एक भाग

शेष रह जाए। फिर उस घोल में 105 या 140 ग्राम तुरन्जबीन और 810 ग्राम शकर डाल कर क़िवाम तैयार करें और झाग साफ़ कर दें। अंत में उपर्युक्त घोल में 3.5 ग्राम इज़्ख़िर, 1.75 ग्राम सक़मूनिया और ज़ाफ़रान को हल्का कूट कर सम्मिलित करें।

- **शरबत-ए-तमर हिन्दी:**

यह सफ़रा का विरेचक (Purgative) है। अधिक सफ़रा के कारण होने वाली उल्टी को रोकता है। आमाशयवर्धक है।

औषधियाँ: तमर हिन्दी 810 ग्रामऔर क़न्द 810 ग्राम।

निर्माण-विधि: तमर हिन्दी 810 ग्राम को लेकर रात भर साफ़ पानी में भिगो दें फिर उस घोल को क़न्द 960 ग्राम के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें। अगर उस की शक्ति को बढ़ाना हो तो उस घोल में सक़मूनिया 3.6 ग्राम,तुरन्जबीन 35 ग्राम, तुर्बुद 1.75 ग्राम को सूक्ष्म चूर्ण कर के सम्मिलित करें।

सेवन-मात्रा: 17.5 ग्राम से 52.5 ग्राम तक प्रयोग करें।

अनुपान: पानी के साथ मिला कर प्रयोग करें।

- **शरबत-ए-नीलोफ़र:**

गर्मी के कारण होने वाले सर दर्द, सफ़रा की अधिकता के कारण होने वाले बुख़ार, खाँसी, Pleurisy, Pleuritis में लाभदायक है। साथ ही सीने के खुरदुरेपन में भी लाभदायक है और मृदु विरेचक (Laxative) है।

औषधियाँ: गुल-ए-नीलोफ़र 420 ग्राम, साफ़ जल 1680 मिलीलीटर, क़न्द 960 ग्राम।

निर्माण-विधि: गुल-ए-नीलोफ़र ताज़ा 420 ग्राम लें और 1680 मिलीलीटर पानी में पका कर अच्छी तरह से मिला लें फिर क़न्द 960 ग्राम के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें और चीनी या शीशे के पात्र में सुरक्षित कर लें।

- **शरबत-ए-उन्नाब:**

आबला, Urticaria, सीने का दर्द, खाँसी व रक्त की अधिकता में लाभदायक है।

औषधियाँ: उन्नाब जुर्जानी, जल, क़न्द।

निर्माण-विधि: उन्नाब जुर्जानी 210 ग्राम को लेकर 1620 मिलीलीटर पानी में पकाएँ। हाथों से अच्छी तरह मल छान कर साफ़ कर लें और क़न्द 420 ग्राम के साथ क़िवाम तैयार करें।

- **शरबत का अन्य नुस्ख़ा:**

यह आमाशयवर्धक है अथवा सौदा एवं बलग़म को शरीर से बाहर निकालता है

औषधियाँ: वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़ 840 ग्राम, तुर्बुद सफ़ेद, अफ़्सन्तीन प्रत्येक

33.75 ग्राम, पानी1680 मिलीलीटर, फ़ानीज़ 630 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को लेकर पानी में भिगो दें और एक दिन के पश्चात उस को हल्की आँच पर इतना पकाएँ कि आधा शेष रह जाए।अब उस को साफ़ कर के फ़ानीज़ 630ग्राम के साथ क़िवाम तैयार करें और झाग उतार कर साफ़ कर लें।

इन औषधियों को अर्धकुअटा कर के एक पोटली में बाँध लें और क़िवाम में डाल दें फिर थोड़ी थोड़ी देर बाद उन को मलते रहें यहाँतक कि क़िवाम के दर्जे तक पहुँच जाए। फिर उस में सक़मूनिया 7 ग्राम, ऊद हिन्दी, क़रन्फ़ुल, नमक और बिस्बासा प्रत्येक 1.75 ग्राम को हल्का कूट छान कर मिलाएँ।

- **शरबत का अन्य नुस्ख़ाः**

बदबूदार सफ़रा को शरीर से बाहर निकालता है।

औषधियाँः अर्धकुटा तुर्बुद सफ़ेद मुक़श्शर 210 ग्राम, जल 1680 मिलीलीटर, क़न्द 810 ग्राम।

निर्माण-विधिः तुर्बुद सफेद मुक़श्शर 210 ग्राम को कूट कर 1680 मिलीलीटर पानी में इतना पकाएँ कि एक तिहाई पानी शेष रह जाए। उस घोल को साफ़ कर केक़न्द 810 ग्राम के साथ मिलाएँ और क़िवाम तैयार करें। अंत में 3.5 ग्राम सक़मूनिया, 3.5 ग्राम ज़ाफ़रान, ज़न्जबील 2.25 ग्राम कूट छान कर सम्मिलित करें।

सेवन-मात्राः 70 मिलीलीटर।

- **शरबत-ए-अफ़्सन्तीन मुस्हिलः**

आमाशय को शक्ति प्रदान करता है। तिल्ली और जिगर की सख़्ती में लाभदायक है। यह मृदु विरेचक (Laxative) है।

औषधियाँः अफ़्सन्तीन रूमी 24.5 ग्राम, मस्तगी, इज़्ख़िर, साज़ज हिन्दी, सुंबुलुत्तीब, वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़, सिब्र सक़ूतरी, ग़ारीक़ून प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को अर्धकुटा कर लें फिर 2430 मिली[illegible]टर पुरानी शराब और 810 ग्राम शहद मुसफ़्फ़ा के साथ पकाएँ। फिर उस में ज़ाफ़रान 3.5 ग्राम मिला कर सात दिनों तक धूप में रखें और प्रतिदिन पोटली को हाथ से मलते रहें फिर निचोड़ कर छान लें। शरबत को शीशे के पात्र में सुरक्षित कर लें।

सेवन-मात्राः 35 मिलीलीटर, थोड़ी मात्रा में शकर के साथ।

- **शरबत का अन्य नुस्ख़ाः**

आमाशय को शक्ति प्रदान करता है, उस से सफ़रा को बाहर निकालता है। पेट दर्द में लाभदायक है। तिल्ली और जिगर के सुद्दों को खोलने में भी लाभदायक है।

औषधियाँः गुल-ए-सुर्ख़ 24.5 ग्राम, अफ़्सन्तीन रूमी 35 ग्राम, शाहतरह 52.5 ग्राम, आलू स्याह 20 की संख्या में, मवीज़ मुनक़्क़ा 70 ग्राम, तमर हिन्दी 70 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को 1620 मिलीलीटर साफ़ जल में पका कर साफ़ कर लें और क़न्द 810 ग्राम के साथ क़िवाम तैयार करें।

- **शरबत का एक अन्य नुस्ख़ाः**

मालीख़ोलिया (Melancholia) मुराक़ी में लाभदायक है।

औषधियाँः अफ़्सन्तीन रूमी 35 ग्राम,वरक़ गुल-ए-सुर्ख़ 70 ग्राम, तुर्बुद सफ़ेद, ग़ारीक़ून प्रत्येक 14 ग्राम, सुंबुलुत्तीब 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को 1680 मिलीलीटर साफ़पानी में इतन पकाएँ कि आधा पानी शेष रह जाए फिर उस को क़न्द 405 ग्राम के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें और झाग साफ़ कर दें।

सेवन-मात्राः 35 मिलीलीटर।

- **शरबत-ए-तुर्बुदः**

यह बलग़म का विरेचक है।

औषधियाँः अर्धकुटा तुर्बुद सफ़ेद मुक़श्शर 350 ग्राम।

निर्माण-विधिः तुर्बुद सफ़ेद मुक़श्शर को शीशे के पात्र में रख कर इतनी मात्रा में साफ़ पानी डालें कि उस के ऊपर पाँच उँगली तक पहुँच जाए। उस को तीन दिन धूप में रखें फिर ख़ूब मलें। फिर पानी को निकाल कर जमा कर लें। दूसरा ताज़ा पानी डाल कर तीन दिन धूप में रखें। इस प्रकार तीसरी बार भी यही प्रक्रिया करें जिस से 9 दिनों के बाद तुर्बुद को कोई स्वाद बाक़ी नहीं रह जाता है। फिर 810 ग्राम क़न्द क़िवाम तैयार करें। 70 ग्राम ज़न्जबील डालने से यह अधिक प्रभावशाली हो जाता है।

सेवन-मात्राः 70 मिलीलीटर।

- **शरबत-ए-दीनारः**

यह मृदु विरेचक (Laxative) है। दिल एवं जिगर को सशक्त बनाता है। सुद्दों को खोलता है। ज़ातुलजंब, शौसह, सूउलक़िन्यह और जलोदर रोग में लाभदायक है। प्यास बुझाता है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-कासनी, वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़ प्रत्येक 70 ग्राम, तुख़्म-ए-कसूस 17.5 ग्राम, गुल-ए-नीलोफ़र, गावज़बान प्रत्येक 7 ग्राम, सूती कपड़े में बाँधा हुआ अफ़्तीमून 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को 1260 मिलीलीटर पानी में इतना पकाएँ कि एक तिहाई

रह जाए। क़न्द मिला कर क़िवाम तैयार करें। आग से उतार लें। रेवन्द चीनी 35 ग्राम सम्मिलित करें।

- **शरबत-ए-दीनार का अन्य नुस्ख़ाः**

यह सुद्दे खोलता है। यह पीलिय और जिगर की गर्मी में लाभदायक है। मूत्रविरेचक एवं मृदु विरेचकभी है।

औषधियाँः बादियान, तुख़्म-ए-कासनी प्रत्येक 52.5 ग्राम,कसूस 17.5 ग्राम, पोस्त बीख़-ए-बादियान, पोस्त बीख़-ए-कासनी, गावज़बान, बीख़-ए-करफ़्स, वरक़ गुल-ए-सुर्ख़ प्रत्येक 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट छान कर भिगो दें फिर मल छान लें औरक़न्द 810 ग्राम मिला कर शराब तैयार करें। अन्त में रेवन्द चीनी 10.5 ग्राम कूट छान कर मिलाएँ।

- **शरबत-ए-उस्तोखुद्दूसः**

मिर्गी, मालीख़ोलिया, ठंडक से होने वाले सर दर्द और ऐसे सभी मस्तिष्क रोगों में लाभदायक है जो ठंडक के कारण होते हैं। यह मृदु विरेचक (Laxative) भी है।

औषधियाँः उस्तोखुद्दूस, पर्सियाउशान, ऊद-ए-सलीब, अस्लुस्सूस, गावज़बान प्रत्येक 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को पानी में भिगोएँ फिर पका कर साफ़ कर लें और क़न्द 810 ग्राम के साथ मिला कर शराब तैयार करें।

- **शरबत-ए-हलीलाः**

गर्मी के कारण होने वाले बुख़ारों और जोड़ों के दर्द में लाभदायक है। साथ ही सफरा को बाहर निकालता है और मृदु विरेचक (Laxative) भी है।

औषधियाँः पोस्त-ए-हलीला ज़र्द 10 की संख्या में।

निर्माण-विधिः पोस्त-ए-हलीला ज़र्द 10 की संख्या में ले कर अर्धकुटाकर लें और किसी पत्रा में भर कर उस में ऊपर तक साफ़ पानी भरें। तीन दिन तक धूप में रखें फिर साफ़ कर के शीशे के पात्र में सुरक्षित कर लें। फिर उस पानी में थोड़ा सा पानी मिला कर दोबारा 10 की संख्या में हलीला ज़र्द डालें और धूप में रखें। फिर तीसरी बार उस पानी में थोड़ा ताज़ा पानी मिला कर 10 की संख्या में हलीला डालें और धूप में रखें। इस प्रकार 9 दिनों तक धूप में रखने के बाद साफ़ कर लें फिर उस में 675 ग्राम तुरन्जबीन डाल कर क़िवाम तैयार करें और आग से उतारने के बाद सक़मूनिया 4.5 ग्राम पीस कर उस में सम्मिलित करें।

- **शरबत-ए-मफ़ासिल:**

बलग़म की अधिकता के कारण होने वाले जोड़ो के दर्द और नसों में ढीलेपन के लिए लाभदायक है। साथ ही यह बलग़म एवं तरल पदार्थों का विरेचक भी है।

औषधियाँ: पोस्त-ए-बीख़-कबर, पोस्त-ए-राज़ियाना, अनीसून, नानख़्वाह, क़िशर-ए-उतरुज, सूरन्जान, बूज़ीदान प्रत्येक 4.5 ग्राम, शकर और शहद 810 ग्राम।

निर्माण-विधि: विधि अनुसार शरबत एवं क़िवाम तैयार करें।

सेवन-मात्रा: 35 मिलीलीटर।

- **शरबत-ए-जुन्तियाना:**

कमज़ोर आमाशय को सशक्त बनाता है साथ ही आमाशय को तरल पदार्थो से पाक साफ़ करता है।

औषधियाँ: जुन्तियाना 35 ग्राम, सिब्र ज़र्द 14 ग्राम, मवीज़ मुनक़्क़ा 35 ग्राम, गुल-ए-सुर्ख़ और अफ़्सन्तीन प्रत्येक 10.5 ग्राम, तुर्बुद 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को 1260 मिलीलीटर पानी में भिगो दें फिर उस को इतना पकाएँ कि एक तिहाई रह जाए। उस को साफ़ कर के 420 ग्राम शकर के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें।

सेवन-मात्रा: तीन चम्मच अर्थात 13.5 मिलीलीटर।

- **शरबत-ए-ज़ूफ़ा:**

बलग़म की अधिकता के कारण होने वाली खाँसी, श्वास की तंगी और दमा में लाभदायक है। साथ ही यह सीने और फेफड़ों को Humours से पाक साफ़ करता है और मृदु विरेचक भी है।

औषधियाँ: उन्नाब 30 की संख्या में, सपिस्ताँ 50 की संख्या में, अन्जीर सफ़ेद 30 दाना, बनफ़्शा 14 ग्राम, पर्सियाउशां 24.5 ग्राम, तुख़्म-ए-ख़त्मी, ख़ुब्बाज़ी प्रत्येक 17.5 ग्राम, असलुस्सूस मुक़श्शर और ज़ूफ़ा ख़ुश्क प्रत्येक 24.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को बारिश के पानी में भिगोएं फिर पका कर साफ़ कर लें। क़न्द 810 ग्राम मिला कर क़िवाम तैयार करें। कुछ नुस्खों के अनुसार मवीज़ मुनक़्क़ा 70 ग्राम, इश्क़ील मुशव्वा, ज़रावन्द मुदहरज, मस्तगी प्रत्येक 7 ग्राम सम्मिलित करें।

- **शरबत-ए-ज़ूफ़ा का अन्य नुस्ख़ा:**

श्वास की तंगी एवं पुरानी खाँसी में लाभदायक है। गाढ़े द्रव्यों और तरल पदार्थों से सीने और फेफड़ों को पाक साफ़ करता है और मृदु विरेचक भी है।

औषधियाँ: उन्नाब जुर्जानी, मवीज़ मुनक़्क़ा प्रत्येक 70 ग्राम, सपिस्ताँ 20 दाना,

तुख़्म-ए-ख़त्मी, ख़ुब्बाज़ी, ईर्सा, फ़रासियून, ज़रावन्द मुदहरज प्रत्येक 10.5 ग्राम, असलुस्सूस मुक़श्शर, बीख़-ए-बादियान, पोस्त-ए-बीख़-ए-करफ़्स प्रत्येक 17.5 ग्राम, क़न्तूरियून दक़ीक़, क़न्तूरियून ग़लीज, पोस्त-ए-बीख़-ए-कबर, हाशा और ज़ूफ़ा प्रत्येक 14 ग्राम, अन्जीर 52.5 ग्राम, बनफ़्शा 10.5 ग्राम, पर्सियाउशां 24.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को 2430 मिलीलीटर पानी में भिगो दें फिर उस को इतना पकाएँ कि एक तिहाई बचे। उस को मल छान कर साफ़ कर लें। क़न्द 810 ग्राम मिला कर क़िवाम तैयार करें।

सेवन-मात्राः 17.5 से 35 मिलीलीटर तक।

अनुपानः गर्म पानी के साथ प्रयोग करें।

- **शरबत-ए-ज़ूफ़ा का अन्य नुस्ख़ाः**

गर्मी के कारण होने वाली खाँसी में लाभदायक है और मृदु विरेचक भी है।

औषधियाँः उन्नाब 20 दाना, अन्जीर सफ़ेद 10 दाना, सपिस्ताँ 50 दाना, असलुस्सूस, मवीज़ मुनक्क़ा प्रत्येक 35 ग्राम, तुख़्म-ए-करफ़्स 24.5 ग्राम,कतीरा, तुख़्म-ए-ख़त्मी, बेही दाना प्रत्येक 17.5 ग्राम, ज़ूफ़ा ख़ुश्क 52.5 ग्राम, कशक-ए-जौ 24 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को 1620 मिलीलीटर पानी में इतना पकाएँ कि आधा पानी शेष रह जाए।हाथों से मल छान कर साफ़ कर लें और क़न्द 840 ग्राम के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें।

सेवन-मात्राः 35 मिलीलीटर।

अनुपानः हल्के गर्म पानी के साथ प्रयोग करें।

- **शरबत-ए-ज़ूफ़ा का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Dyspnoea में लाभदायक है।

औषधियाँः अन्जीर सफ़ेद, ख़ुर्मा, बेही दाना प्रत्येक 15 दाना, बीख़-ए-सोसन सेहराई 35 ग्राम, पर्सियाउशाँ 24.5 ग्राम, हुल्बा 17.5 ग्राम, ज़ूफ़ा ख़ुश्क 52.5 ग्राम, बीख़-ए-करफ़्स 17.5 ग्राम, राज़ियाना, तुख़्म-ए-अन्जोरह, फ़रासियून प्रत्येक 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को 1680 मिलीलीटर पानी में इतना पकाएँ कि आधा पानी शेष बचे। उस को हाथों से मल छान कर साफ़ कर लें और क़न्द के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें।

- **शरबत-ए-ज़ूफ़ा का अन्य नुस्ख़ाः**

यह सीने को नर्म करता है। यह खाँसी एवं Dyspnoea में लाभदायक है।

औषधियाँः उन्नाब 30 की संख्या में, अन्जीर 10 की संख्या में, सपिस्ताँ 40 की

संख्या में, पर्सियाउशाँ 17.5 ग्राम, असलुस्सूस मुक़श्शर 35 ग्राम, गावज़बान 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को आब-ए-बिही में पका कर साफ़ कर लें। 70 ग्राम फुलूस ख़्यार शंबर मिलाएँ। 35 ग्राम रोग़न-ए-बादाम एवं 420 ग्राम फ़ानीज़ मिला कर क़िवाम तैयार करें।

सेवन-मात्राः 70 मिलीलीटर।

अनुपानः गर्म पानी के साथ प्रयोग करें।

- **शरबत का अन्य नुस्ख़ाः**

यह मृदु विरेचक है। जिगर को शक्ति प्रदान करता है और सुद्दों को खोलता है।

औषधियाँः मवीज़ मुनक़्क़ा और फ़ुलूस ख़्यार शंबर प्रत्येक 70 ग्राम, आब-ए-इनबुस्सअलब, आब-ए-बीख़-ए-कासनी और सुद्दा बप्रत्येक 105 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को मल छान कर साफ़ कर लें। 175 ग्राम तुरन्जबीन एवं 175 ग्राम क़न्द के साथ क़िवाम तैयार करें।

सेवन-मात्राः 70 मिलीलीटर।

- **शरबत-ए-उन्सुलः**

पुरानी खाँसी और श्वास की तंगी में लाभदायक है और मृदु विरेचक है।

औषधियाँः अन्जीर 60 की संख्या में, उन्सुल मुशव्वा 24.5 ग्राम, मवीज़ मुनक़्क़ा 52.5 ग्राम, अनीसून 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को थोड़ी मात्रा में पानी एवं सिर्का में तीन दिनों के लिए भिगोएँ फिर 810 मिलीलीटर साफ़ पानी डाल कर इतना पकाएँ कि सभी गल जाएँ। फिर उन को मल छान लें और साफ़ शहद 420 ग्राम मिला कर के क़िवाम तैयार करें।

- **शरबत का अन्य नुस्ख़ाः**

यह दमा, खाँसी और गुर्दे की कमज़ोरी में लाभदायक है। वाजी कर है। सीने को नर्म करता है और मृदु विरेचक है।

औषधियाँः अन्जीर सफ़ेद और मवीज़ तायफ़ी प्रत्येक 840 ग्राम, तुरन्जबीन 350 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को 1620 मिलीलीटर पानी में पकाएँ और झाग साफ़ कर लें। फिर 840 ग्राम साफ़ शहद एवं फ़ानीज़ सन्जरी के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 मिलीलीटर।

- **शरबत का अन्य नुस्ख़ाः**

यह नज़्ला, ज़ुकाम और खाँसी और में लाभदायक है। मृदु विरेचक है। सीने को

नर्म करता है।

औषधियाँ: उन्नाब 70 ग्राम,सपिस्ताँ 50 दाना, मवीज़ मुनक़्क़ा 52.5 ग्राम, कशक-ए-जौ 17.5 ग्राम, बेही दाना 10.5 ग्राम, कतीरा 3.5 ग्राम, असलुस्सूस 52.4 ग्राम, पोस्त-ए-ख़शख़ाश 17.5 ग्राम,अन्जीर सफ़ेद 10 दाना, ज़ूफ़ा, पर्सियाउशाँ प्रत्येक 10.5 ग्राम, पोस्त-ए-बीख़-ए-राज़ियाना 14 ग्राम, बनफ़्शा ख़ुश्क 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को साफ़ पानी में एक रात भिगोने के बाद पकाएँ और झाग उतार कर साफ़ कर लें। फिर शकर मिला कर क़िवाम तैयार करें।

सेवन-मात्रा: 35 मिलीलीटर।

अनुपान: थोड़ी मात्रा में हल्के गर्म पानी के साथ दें।

- **शरबत-ए-रेवन्द:**

यह जिगर व तिल्ली के रोगों में लाभदायक है। सुद्दे खोलता है। मृदु विरेचक है।

औषधियाँ: रेवन्द चीनी 35 ग्राम, तुर्बुद सफ़ेद, तुख़्म-ए-कासनी, बिस्फ़ाइज और ग़ारीक़ून प्रत्येक 17.5 ग्राम, ज़न्जबील 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: कूट कर रात भर गर्म पानी में भिगोएं। उसके बाद पकाएँ और क़न्द 810 ग्राम के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें।

- **शरबत-ए-उसूल:**

सुद्दों को खोलता है, बड़े एवं पुराने बुख़ारों और रक्तक्षय में लाभदायक है।

औषधियाँ: पोस्त-ए-बीख़-ए-करफ़्स, राज़ियाना, अनीसून, पोस्त-ए-बीख़-ए-कबर, सुंबुलुत्तीब, पर्सियाउशाँ, गावज़बान, कसूस प्रत्येक 10.5 ग्राम, रेवन्द चीनी, सलीख़ा, तुर्बुद मुक़श्शर प्रत्येक 7 ग्राम, ज़न्जबील 3.5 ग्राम, मवीज़ मुनक़्क़ा 35 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर पानी में भिगोएँ। फिर पका कर विधि अनुसार शहद के साथ क़िवाम तैयार करें।

- **शरबत-ए-उसूल का अन्य नुस्ख़ा:**

गाढ़े मवाद को पकाता है। सुद्दे खोलता है और वायुनाशी है। Anaemia, जलोदर रोग अथवा पेट, जिगर और तिल्ली के सभी प्रकार के ठंडे रोगों में लाभदायक है।

औषधियाँ: पोस्त-ए-कबर, पोस्त-ए-बीख़-ए-राज़ियाना, पोस्त-ए-बीख़-ए-करफ़्स, पोस्त-ए-बीख़-ए-कासनी प्रतयेक 14 ग्राम, मवीज़ मुनक़्क़ा 70 ग्राम, फ़ुक़ाह-ए-इज़्ख़िर, सुंबुलुत्तीब, असारून, सलीख़ा प्रतयेक 35 ग्राम, अन्जीर ज़र्द 20 दाना,।

निर्माण-विधि: सब को आधा कूट कर रात भर के लिए पानी में भिगो दें फिर पका कर साफ़ कर लें और 810 ग्राम शहद के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें।

## • शरबत-ए-बुज़ूरः

मूत्रविरेचक एवं आर्तवविरेचक है। गुर्दा एवं मूत्राशय की पथरी को तोड़ कर पारा पारा कर देता है। पीलिया और जिगर एवं तिल्ली के सुद्दों में लाभदायक है। पुराने बुख़ारों को समाप्त करता है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-कासनी, राज़ियाना, तुख़्म-ए-खरपज़ह, तुख़्म-ए-ख़्यारैन, तुख़्म-ए-कदू, हब्बुलक़ुर्तुम प्रत्येक 22.5 ग्राम, पोस्त-ए-कासनी, गुल-ए-ग़ाफ़िस, तुख़्म-ए-ख़त्मी, असलुस्सूस, सुंबुलुत्तीब, अनीसून, बनफ़्शा, गावज़बान प्रतयेक 13.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूटने योग्य औषधियों को आधकुटा कर लें फिर सब को 2100 मिलीलीटर पानी में एक दिन एवं एक रात के लिए भिगो दें फिर उस में 70 ग्राम मवीज़ मुनक़्क़ा डाल कर इतना पकाएँ कि 840 मिलीलीटर पानी शेष बचे। अब उस को साफ़ कर के क़न्द 810 ग्राम के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें।

## • शरबत-ए-बुज़ूर का अन्य नुस्ख़ाः

यह सौदावी रोगों एवं मालीख़ोलिया में लाभदायक है। साथ ही यह सौदा के लिए हल्का विरेचक भी है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-कासनी, तुख़्म-ए-बादरन्जबोया,फ़न्जमुश्क प्रत्येक 35 ग्राम, गावज़बान 10.5 ग्राम, बादरन्जबोया 26.25 ग्राम, ईर्सा 8.75 ग्राम, असलुस्सूस 17.5 ग्राम, राज़ियाना और बिस्फ़ाइज फ़िस्तक़ी प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को आधकुटा कर के साफ़ पानी में भिगोएँ और पका कर झाग उतार लें। फिर अर्क़-ए-गुलाब, आब-ए-सेब शीरीं प्रत्येक 210 ग्राम डाल कर क़न्द 810 ग्राम के साथ क़िवाम तैयार करें। अंत में उस क़िवाम में 2.25 ग्राम ज़ाफ़रान, 832 मिलीग्राम मुश्क और 3.5 ग्राम सक़मूनिया सूक्ष्म चूर्ण कर के सम्मिलित करें।

## • शरबत-ए-बुज़ूर का अन्य नुस्ख़ाः

यह नुस्ख़ा ख़ुरासान निवासी प्रयोग करते हैं। यह सफ़रा को शरीर से बाहर निकालता है और सफ़रावी बुख़ारों में लाभदायक है। यह नौजवानों एवं गर्म स्वभाव के व्यक्तियों के लिए बहुत लाभदायक है।

औषधियाँः आलू बुख़ारा और तमर हिन्दी प्रत्येक 70 ग्राम, तुरन्जबीन और शीर-ए-ख़िशत प्रत्येक 52.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को रात भर पानी में भिगोएँ और सुबह साफ़ कर के पका लें। फिर एक क़न्द 810 ग्राम के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें। अंत में उस क़िवाम में 832 मिलीग्राम सक़मूनिया को सूक्ष्म चूर्ण कर के सम्मिलित करें।

सेवन-मात्राः आवश्यकता के समय 70 मिलीलीटर।

अनुपानः 35 ग्राम हल्के गर्म अर्क़-ए-गुलाब के साथ।

- **शरबत-ए-बुज़ूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गर्म बुख़ारों में लाभदायक है। नौजवानों एवं गर्म स्वभाव के व्यक्तियों के लिए बहुत लाभदायक है।

औषधियाँः शीर-ए-खिशत, तुरन्जबीन प्रत्येक 35 ग्राम, आब-ए-सेब शीरीं, आब-ए-बेही शीरीं प्रत्येक 70 ग्राम, आब-ए-कतीरा 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को पानी में पका लें। हल्की आँच पर क़िवाम तैयार करें। अंत में 3.5 ग्राम सक़मूनिया सूक्ष्म चूर्ण और 416 मिलीग्राम काफूर सम्मिलित करें।

सेवन-मात्राः 17.5 मिलीलीटर। यह इस की एक खुराक है।

- **शरबत-ए-फ़वाकेह मुस्हिलः**

यह मृदु विरेचक है। गर्म स्वभाव के व्यक्तियों के लिए बहुत लाभदायक है। यह क़ूलन्ज सिफली में भी लाभदायक है।

औषधियाँः अन्जीर 20 दाना, मवीज़ स्याह मुनक़्क़ा 122 ग्राम, आलू स्याह और उन्नाब प्रत्येक 15 दाना, किशमिश 35 ग्राम, सपिस्ताँ 50 दाना, शफ्तालू 2 दाना।

निर्माण-विधिः सब को एक रात पानी में भिगोएँ फिर पका कर साफ़ कर लें और 122 ग्राम शकर के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें। एक पोटली में बनफ़्शा खुश्क 7 ग्राम, दूसरी में सक़मूनिया 1.75 ग्राम डाल कर देग में डालें और हाथ से मलते रहें यहाँ तक कि क़िवाम तैयार हो जाए। फिर उन पोटलियों को निकाल लें। अंत में क़िवाम में 3.5 ग्राम सक़मूनिया सूक्ष्म चूर्ण कर के और 416 मिलीग्राम ग्राम काफूर सम्मिलित करें।

सेवन-मात्राः 35 मिलीलीटर।

- **शरबत-ए-फ़वाकेह मुस्हिल का अन्य नुस्ख़ाः**

आमाशयवर्धक है और गाढ़े बलग़म के लिए विरेचक है। साथ ही पेट का तरल पदार्थों से पाक साफ़ करता है।

औषधियाँः क़िर्फ़ह, सलीख़ा, सुंबुलुत्तीब, ऊद हिन्दी प्रत्येक 17.5 ग्राम, वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़ 24.5 ग्राम, अफ़्सन्तीन 10.5 ग्राम, तुर्बुद सफ़ेद 17.5 ग्राम, असारून 7 ग्राम, राज़ियाना 14 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को अधकुटा कर के एक रात पानी में भिगोएँ फिर पका कर साफ़ कर लें। क़न्द 405 ग्राम मिला कर क़िवाम तैयार करें। अंत में 3.5 ग्राम सक़मूनिया, 1.75 ग्राम रेवन्द और 3.5 ग्राम ग़ारीक़ून सूक्ष्म चूर्ण कर सम्मिलित करें।

सेवन-मात्राः 35 मिलीलीटर।

❑❑❑

## द्वितीय वर्ग: विभिन्न प्रकार के शक्तिवर्धक, वाजीकर, धारण-शक्ति एवं अधारण-शक्ति वाले शरबत के नुस्खे

- **शरबत-ए-अंबर:**

पेट और शरीर के अन्य अंगों में दर्द, दिल की कमज़ोरी, दिमाग़ की कमज़ोरी और ठंडक की अधिकता के कारण होने वाली दिल की घबराहट के लिए लाभदायक है।

औषधियाँ: शहद 810 ग्राम और साफ़ पानी 1620 ग्राम।

निर्माण-विधि: शहद को पानी में पकाएँ और साफ़ कर के क़िवाम तैयार करें। अंत में उस क़िवाम में अंबर अशहब और ज़ाफ़रान प्रत्येक 4.5 ग्राम की मात्रा में हल्का पीस कर सम्मिलित करें और ख़ूब अच्छी तरह मिला कर सुरक्षित कर लें।

सेवन-मात्रा: आवश्यकता के समय 17.5 ग्राम की मात्रा में।

अनुपान: थोड़ी मात्रा में अर्क़-ए-गुलाब के साथ।

- **शरबत-ए-मुश्क:**

आमाशयवर्धक है, ठंडे रोगों और बूढ़े व्यक्तियों के स्वभाव के अनुकूल है।

औषधियाँ: शहद, शकर प्रत्येक 810 ग्राम और साफ़ पानी 1820 ग्राम।

निर्माण-विधि: शहद एवं शकर को पानी में पकाएँ और साफ़ कर के क़िवाम तैयार करें। अंत में उस क़िवाम में मुश्क ख़ालिस और ज़ाफ़रान प्रत्येक 4.5 ग्राम की मात्रा में हल्का पीस कर सम्मिलित करें।

सेवन-मात्रा: 7 ग्राम की मात्रा में प्रयोग करें।

अनुपान: अर्क़-ए-गुलाब के साथ प्रयोग करें।

- **शरबत-ए-मुश्क का अन्य नुस्ख़ा:**

आमाशयवर्धक है। मुँह की दुर्गंध को समाप्त कर के उस को सुगंधित करता है। पाचक है और हैज़ा में लाभदायक है।

औषधियाँ: ऊद हिन्दी और आमला मुनक़्क़ा प्रत्येक 35 ग्राम, सुंबुलुत्तीब, क़रन्फ़ुल, मस्तगी रूमी और जौज़बोवा प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को अधकुटा कर के सूती कपड़े की पोटली में बाँधें (पोटली को मज़बूती से बाँधें ताकि दवाओं की क़ुव्वत अर्क़-ए-गुलाब में आजाए) और 366 मिलीलीटर अर्क़-ए-गुलाब और पानी में पकाएँ फिर शकर 810 ग्राम के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें। अंत में उस क़िवाम में 1.75 ग्राम मुश्क को सूक्ष्म चूर्ण कर के सम्मिलित करें।

● **शरबत-ए-मुश्क का अन्य नुस्ख़ा:**

आमाशय की ठंडक, उल्टी और हैज़ा में लाभदायक है। पाचक है और मुँह की दुर्गंध को समाप्त कर के उस को सुगंधित करता है।

औषधियाँ: ऊद हिन्दी, शकर बग़दादी प्रत्येक 17.5 ग्राम, सुंबुलुत्तीब, क़रन्फ़ुल, मस्तगी रूमी, जौज़बोवा प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को अधकुटा कर के सूती कपड़े की पोटली में बाँधें और अर्क़-ए-गुलाब 1620 मिलीलीटर में पकाएँ। साथ ही हर समय पोटली को मलते रहें। जब अर्क़-ए-गुलाब आधा रह जाए तो पोटली को हाथों से ख़ूब अच्छी तरह मलें। फिर शकर 810 ग्राम के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें। अंत में उस क़िवाम में शुद्ध मुश्क 832 मिलीग्राम की मात्रा में सूक्ष्म चूर्ण कर के सम्मिलित करें।

सेवन-मात्रा: 17.5 ग्राम से 35 ग्राम तक।

● **शरबत-ए-मुश्क का अन्य नुस्ख़ा:**

आमाशयवर्धक है। मुँह की दुर्गंध समाप्त कर के सुगंधित करता है। पाचन शक्ति को बढ़ाता है। जमाई, उल्टी और मतली को दूर करता है। साथ ही चेहरे के रंग को साफ़ करता है।

औषधियाँ: ऊद हिन्दी और आमला मुनक़्क़ा प्रत्येक 35 ग्राम, सुंबुलुत्तीब, क़रन्फ़ुल, मस्तगी रूमी और जौज़बोवा प्रत्येक 7 ग्राम, क़ाक़ला, फ़ूदनह, ज़ीरा किर्मानी पोस्त-ए-बेरून-ए-पिस्ता, वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को अधकुटा कर के सूती कपड़े की पोटली में बाँधें और 366 मिलीलीटर अर्क़-ए-गुलाब और 810 मिलीलीटर पानी में पकाएँ फिर शकर 960 ग्राम के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें। अंत में 1.75 ग्राम मुश्क को सूक्ष्म चूर्ण कर के सम्मिलित करें और प्रयोग में लाएँ।

● **शरबत-ए-सन्दल:**

आमाशयवर्धक है। दिल की घबराहट में लाभदायक है और प्यास बुझाता है।

औषधियाँ: रेती से छीला हुआ सन्दल सफ़ेद 90 ग्राम।

निर्माण-विधि: सन्दल को एक रात और एक दिन अर्क़-ए-गुलाब में भिगोएँ फिर उस को पका कर हाथों से मल छान लें। उस का शीरा प्राप्त कर के दोबारा साफ़ करें फिर शकर 810 ग्राम के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें।

● **शरबत-ए-सन्दल का अन्य नुस्ख़ा:**

गर्मी से होने वाली दिल की घबराहट में लाभदायक है।

औषधियाँः कूटा छाना हुआ सन्दल सफ़ेद 140 ग्राम, किश्नीज़ ख़ुश्क 17.5 ग्राम, आब-ए-ग़ौरह 350 ग्राम।

निर्माण-विधिः सन्दल और किशनीज़ को 350 ग्राम आब-ए-ग़ौरह में इतना पकाएँ कि वह आधा बाक़ी बचे। ठंडा होने के बाद उसे हाथों से मल छान कर साफ़ कर लें और शकर 810 ग्राम के साथ मिला दोबारा पकाएँ और झाग उतार कर क़िवाम तैयार करें। साथ ही 3.5 ग्राम केसर कपड़े की पोटली में बाँध कर देग में रख दें और हर घड़ी हाथों से मलते रहें। क़िवाम तैयार होने के बाद पोटली और काफूर बाहर निकाल लें। अंत में 2.25 ग्राम काफूर और 7 ग्राम तबाशीर को सूक्ष्म चूर्ण कर के सम्मिलित करें।

सेवन-मात्राः आवश्यकता के समय 18 ग्राम प्रयोग करें।

अनुपानः शीरह-ए-क़िर्फह मुक़श्शर के साथ प्रयोग करें।

- **शरबत-ए-फुन्दादीकून:**

बूढ़े एवं ठंडे स्वभाव के व्यक्तियों के लिए लाभदायक है। सर्दी के कारण होने वाले जिगर और पेट के सूए मिज़ाज में भी लाभदायक है। सुद्दों को खोलता है।

औषधियाँः ज़न्जबील, सुंबुलुत्तीब और क़रन्फ़ुल प्रत्येक 17.5 ग्राम, ऊद हिन्दी, दार चीनी प्रत्येक 10.5 ग्राम, ज़ाफ़रान 7 ग्राम, सुक्क 3.5 ग्राम, मुश्क 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को अधकुटा कर के सूती कपड़े की पोटली में बाधें और 1620 मिलीलीटर शराब, शहद और शकर के साथ मिला कर पकाएँ और विधि अनुसार क़िवाम तैयार करें।

- **शरबत-ए-फुन्दादीकून का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः सुंबुलुत्तीब, क़रन्फ़ुल, ऊद ख़ाम प्रत्येक 10.5 ग्राम, क़ाक़ला, हील प्रत्येक 7 ग्राम, ज़न्जबील, दार चीनी प्रत्येक 17.5 ग्राम, फ़िलफ़िल, सअद प्रत्येक 10.5 ग्राम, ज़ाफ़रान 7 ग्राम, सुक्क, मुश्क बग़दादी प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को अधकुटा कर के कपड़े की छोटी या बड़ी पोटली में रखें और 840 ग्राम शहद और शकर के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें और झाग उतार लें। अंत में मुश्क और ज़ाफ़रान को हल्का पीस डालें।

- **शरबत-ए-आबेशमः**

दिल, जिगर और पेट के अन्दर पाए जाने वाले अंगों को सशक्त बनाता है। सुद्दे खोलता है। सभी प्रकार के ठंडे रोगों में लाभदायक होने के साथ काम शक्ति को भी बढ़ात है। स्वभाव में स्फ़ूर्ति उत्पन्न करता है।

औषधियाँः आब्रेशम ख़ाम 225 ग्राम, ख़ूलन्जान, वज तुर्की, मस्तगी रूमी प्रत्येक 10.5 ग्राम और ज़ाफ़रान 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः आब्रेशम को तीन रात ऐसे पानी में भिगोएँ जिस में गर्म लोहा बुझाया गया हो फिर संगी की देग में पका कर साफ़ कर लें। फिर ख़ूलन्जान, वज तुर्की, मस्तगी रूमी प्रत्येक 10.5 ग्राम और ज़ाफ़रान 3.5 ग्राम की मात्रा में डालें और शकर 810 ग्राम के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें।

सेवन-मात्राः आवश्यकता के समय 14 ग्राम की मात्रा में दें।

- **शरबत-ए-आब्रेशम का अन्य नुस्ख़ाः**

यह पहले नुस्ख़े की तुलना में अधिक प्रभावशाली है। आमाशय, दिल और जिगर को शक्ति प्रदान करता है। दिल की घबराहट, बेहोशी और डर एवं ख़ौफ़ को दूर करता है। स्वभाव में स्फूर्ति और हर्षोल्लास उत्पन्न करता और धारण शक्ति वाला है।

औषधियाँः आब्रेशम ख़ाम 175 ग्राम,बादरन्जबोया, गावज़बान, गुल-ए-गावज़बान, फ़न्जमुश्क, वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़, सुंबुलुत्ती और उशनह प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सर्वप्रथम आब्रेशम को एक रात दिन ऐसे पानी में भिगोएँ जिस में नुक़रा और तिला को डाला गया हो फिर शेष सभी औषधियों को अर्क़-ए-गुलाब में भिगोएँ और पकाएँ और फिर पके हुए को आब्रेशम भिगोए हुए पानी के साथ मिलाएँ। अब इन दोनों रसों को एक साथ संगी की देग में हल्की आँच पर पकाएँ और क़न्द सफेद और नबात सफेद 24 ग्राम की मात्रा में सम्मिलित कर के क़िवाम तैयार करें। अंत में उस क़िवाम में मरवारीद नासुफ़्ता, कहरुबा, यशब प्रत्येक 7 ग्राम, नर्म कूटा हुआ गुलाब एवं अर्क़-ए-गुलाब में पिसा हुआ सन्दल सफ़ेद प्रत्येक 10.5 ग्राम, अंबर अशहब 3.5 ग्राम और शुद्ध मुश्क 832 मिलीग्राम की मात्रा में डालें और सब को अच्छी तरह मिलाएँ और शीशे के पात्र में सुरक्षित कर लें।

सेवन-मात्राः आवश्यकता के समय 9 ग्राम की मात्रा में दें।

अनुपानः अर्क़-ए-गुलाब, अर्क़-ए-बेद मुश्क, अर्क़-ए-गावज़बान के साथ प्रयोग करें।

- **शरबत-ए-सुंबुलुत्तीबः**

यह पेट दर्द, जिगर दर्द और तिल्ली कि दर्द के साथ पुराने बुख़ारों में लाभदायक है।

औषधियाँः सुंबुलुत्तीब 14 ग्राम, साफ़ पानी 2430 मिलीलीटर, क़न्द 1620 ग्राम।

निर्माण-विधिः सुंबुलुत्तीब को 2430 मिलीलीटर साफ़ पानी में भिगोएँ और फिर इतना पकाएँ कि उसका दो भाग शेष बचे। अब उस को साफ़ कर के दोबारा 1620 ग्राम ग्राम क़न्द के साथ पकाएँ और क़िवाम तैयार करें।

सेवन-मात्राः 35 ग्राम।

- **शरबत-ए-गावज़बाँ:**

हृदय को सशक्त बनाता है। सौदावी स्वभाव के व्यक्तियों के लिए लाभदायक है। दिल की घबराहट को दूर करता है।

औषधियाँ: आब-ए-गावज़बान ताज़ा 810 मिलीलीटर, क़न्द सफ़ेद 810 ग्राम।

निर्माण-विधि: गावज़बाँ के ताज़ा रस को क़न्द सफेद के साथ पकाएँ और झाग उतार कर साफ़ करें। फिर आग से उतार कर सब से अंत में 90 ग्राम अर्क़-ए-गुलाब सम्मिलित करें। अगर ताज़ा गावज़बाँ प्राप्त ना हो तो सूखा गावज़बाँ 22.5 ग्राम की मात्रा में ले कर पकाएँ और साफ़ करें। फिर नियमानुसार क़न्द के साथ पका कर शरबत तैयार करें।

- **शरबत-ए-गावज़बाँ का अन्य नुस्ख़ा:**

हृदय को सशक्त बनाने, बेहोशी और दिल की घबराहट को दूर करने के संदर्भ में अधिक प्रभावशाली है। यह जबरदस्त हृदयवर्धक एवं बुद्धिवर्धक है।

औषधियाँ: गावज़बान 90 ग्राम, गुल-ए-गावज़बान 45 ग्राम, बादरन्जबोया 22.5 ग्राम, सन्दल, वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़, सुंबुलुत्तीब और उश्नह प्रत्येक 13.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को 840 मिलीलीटर पानी और अर्क़-ए-गुलाब में भिगोएँ और पका कर साफ़ कर लें। फिर क़न्द 420 ग्राम के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें और झाग उतार कर साफ़ करें। अंत में 3.5 ग्राम ज़ाफ़रान, 1.75 ग्राम मुश्क और 832 मिलीग्राम काफ़ूर सम्मिलित करें।

सेवन-मात्रा: 17.5 ग्राम।

अनुपान: अर्क़-ए-गुलाब और अर्क़-ए-बेद मुश्क के साथ।

- **शरबत-ए-बादरन्जबोया:**

हृदयवर्धक है। ठंड से होने वाली दिल की घबराहट और सौदा की अधिकता के कारण होने वाले डर को दूर करता है।

औषधियाँ: आब-ए-बादरन्जबोया ताज़ा।

निर्माण-विधि: ताज़ा बादरन्जबोया लेकर उस का रस प्राप्त कर लें और शराब-ए-गावज़बान की तरह पकाएँ। अगर ताज़ा बादरन्जबोया उपलब्ध ना हो तो सूखा ही ले कर पकाएँ और सुरक्षित कर लें।

सेवन-मात्रा: 17.5 ग्राम।

- **शरबत-ए-अनार शीरीं:**

उल्टी को रोकता है और आमाशयवर्धक है।

औषधियाँः आब-ए-अनार तुर्श और आब-ए-अनार शीरीं जिस को तुख़्म के साथ निचोड़ कर प्राप्त किया गया हो।

निर्माण-विधिः आवश्यकतानुसार आब-ए-अनार शीरीं लेकर पत्थर की देग में पकाएँ। क़न्द 24 मिला कर क़िवाम तैयार करें।

- **शरबत-ए-अनार शीरीं का अन्य नुस्ख़ाः**

आमाशयवर्धक है और उल्टी को रोकता है।

औषधियाँः आब-ए-अनार तुर्श और आब-ए-अनार शीरीं।

निर्माण-विधिः अनार तुर्श और अनार शीरीं को उनके बीजों सहित कूट कर और निचोड़ कर उनका रस प्राप्त करें। उस रस को लेकर पत्थर की देग में इतना पकाएँ कि एक तिहाई बाक़ी बचे फिर थोड़ी मात्रा में नअनाअ और 24 ग्राम क़न्द मिला कर उस का क़िवाम तैयार करें।

- **शरबत-ए-अनार मुनअनअः**

उल्टी, जमाई और उबकाई में लाभदायक है। हिचकी को बन्द करता है और सफ़रावी दस्तों को रोकता है।

औषधियाँः आब-ए-अनार तुर्श और आब-ए-अनार शीरीं।

निर्माण-विधिः अनार तुर्श और अनार शीरीं को उनके बीजों सहित कूट कर और निचोड़ कर उनका रस प्राप्त करें और साफ़ कर लें। उस रस को लेकर पत्थर की देग में इतना पकाएँ कि एक आधा बाक़ी बचे फिर उस बाक़ी बचे रस में से आब-ए-अनारैन अर्थात आब-ए-अनार तुर्श और आब-ए-अनार शीरीं 420 ग्राम को क़न्द 420 ग्राम और नअनाअ 420 ग्राम के साथ पकाएँ और क़िवाम तैयार होते समय छान कर नअनाअ को निकाल दें और विधि अनुसार क़िवाम तैयार कर के सुरक्षित कर लें।

- **शरबत-ए-अनार मुनअनअ का अन्य नुस्ख़ाः**

आमाशयवर्धक है। हिचकी में आराम देता है। जमाई और उबकाई को रोकता है।

औषधियाँः आब-ए-अनार शीरीं 1620 मिलीलीटर, आमला, ऊद ख़ाम और मस्तगी प्रत्येक 7 ग्राम, पोस्त-ए-बेरून-ए-पिस्ता 17.5 ग्राम, नअनाअ ताज़ा 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः मस्तगी के अतिरिक्त सब को आब-ए-अनार में इतना पकाएँ कि एक आधा बाक़ी बचे। उस को साफ़ कर के क़न्द के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें। अंत में 10.5 ग्राम की मात्रा में मस्तगी को सूक्ष्म चूर्ण कर के उस में सम्मिलित करें।

- **शरबत-ए-अनार मुनअनअ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह उपर्युक्त सभी नुस्खो की तुलना में अधिक प्रभावशाली है। आमाशयवर्धक है। उल्टी और हिचकी में आराम देता है। सफ़रा को शरीर से बाहर निकालता है और उस की गर्मी को तोड़ता है।

औषधियाँः आब-ए-अनार शीरीं, आब-ए-अनार तुर्श 1680 मिलीलीटर, ऊद ख़ाम, गुल-ए-सुर्ख़, पोस्त-ए-बेरून-ए-पिस्ता,आमला, सुक्क, ज़ीरा किर्मानी और सुंबुलुत्तीब प्रत्येक 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः अनार तुर्श, अनार शीरीं को उनके बीजों सहित कूट कर और निचोड़ कर रस प्राप्त करें। 1680 ग्राम की मात्रा में रस लेकर पत्थर की देग में हल्की आँच पर पकाएँ। ऊद ख़ाम, वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़, आमला,पोस्त-ए-बेरून-ए-पिस्ता, सुक्क, ज़ीरा किर्मानी और सुंबुलुत्तीब प्रत्येक 17.5 ग्राम की मात्रा में लेकर एक पोटली में बाधें और देग में रख दें। समय समय पर उस को मलते और निचोड़ते रहें ताकि इन औषधियों के प्रभाव उस रस में आजाए। नअनाअ की ताज़ा पत्तियों की एक गड्डी को देग में डालें और इतना पकाएँ कि आब-ए-अनारैन आधा बाक़ी बचे फिर उस को मल छान कर साफ़ कर लें। ठंडा हो जाने के बाद 10.5 ग्राम की मात्रा में मस्तगी को सूक्ष्म चूर्ण कर के उस में सम्मिलित करें और शीशे के पात्र में सुरक्षित कर लें।

सेवन-मात्राः ठंडा होने के बाद 17.5 ग्राम की मात्रा में।

- **शरबत-ए-सेबः**

आमाशयवर्धक है। उल्टी को रोकता है। दिल की घबराहट में लाभदायक है।

औषधियाँः सेब शामी या सेब असफ़हानी।

निर्माण-विधिः शामी या असफहानी सेब ले कर उनके छिलके और बीज निकाल दें और कूट निचोड़ कर 1620 मिलीलीटर आब-ए-सेब अर्थात उनका रस प्राप्त करें। उस को क़न्द 405 ग्राम के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें।

- **शरबत-ए-सफ़र्जलः**

हृदयवर्धक, आमाशयवर्धक, दीपन एवं धारण शक्ति वाला है साथ ही उल्टी और मतली को भी रोकता है।

औषधियाँः आब-ए-बेही तुर्श या शीरीं 4050 मिलीलीटर और क़न्द 810 ग्राम ।

निर्माण-विधिः बेही तुर्श या शीरीं दोनों अलग अलग या एक साथ, ले कर उनके छिलके व बीज निकाल दें फिर पत्थर के हावन में कूट कर रस प्राप्त कर लें। आब-ए-बेही 4050 मिलीलीटर और क़न्द 810 ग्राम मिला कर क़िवाम तैयार करें।

- **शरबत-ए-रीबासः**

सफ़रावी दस्तों को रोकता, प्यास बुझाता और आमाशय को शक्ति प्रदान करता है।

औषधियाँः पका हुआ रीबास और क़न्द।

निर्माण-विधिः रीबास को साफ़ करने के बाद पत्थर या लकड़ी के हावन में कूट कर रस प्राप्त कर लें और इतना पकाएँ कि एक तिहाई शेष रह जाए। 810 मिलीलीटर आब-ए-रीबास में 810 ग्राम क़न्द मिला कर इतना पकाएँ कि क़िवाम तैयार हो जाए।

- **शरबत-ए-हुम्माज़ः**

आमाशयवर्धक एवं दीपन है। सफ़रा की तेज़ी को तोड़ता, उल्टी रोकता, पाचन शक्ति को बढ़ाता और बुख़ार खत्म करता है।

औषधियाँः आब-ए-हुम्माज़ ताज़ा और क़न्द।

निर्माण-विधिः आवश्यकतानुसार ताज़ा हुम्माज़ का रस प्राप्त कर के रीबास की तरह पका कर शराब तैयार करें।

- **शरबत-ए-फ़वाकेह तुर्शः**

सुद्दों और जिगर की कमज़ोरी में लाभदायक है। आमाशयवर्धक है। उल्टी रोकता है। सफ़रा की तेज़ी को तोड़ता है। हृदय एवं अंतरांग के लिए लाभदायक है।

औषधियाँः आब-ए-बेही, आब-ए-सेब, आब-ए-ज़रिशक, आब-ए-सुमाक़, आब-ए-ग़ौरह, आब-ए-ज़अरूर प्रत्येक 1-1 भाग, आब-ए-लीमू, आब-ए-ख़ालिस आधा आधा भाग।

निर्माण-विधिः सब को पत्थर की देग में इतना पकाएँ कि एक तिहाई बाक़ी बचे। फिर आवश्यकतानुसार क़न्द डाल कर क़िवाम तैयार करें और आग से उतार लें।

- **शरबत-ए-फ़वाकेह शीरींः**

लाभ के संदर्भ में यह नुस्खा पहले वाले नुस्खें के समान ही है प्रन्तु खट्टेपन को ध्यान में रखना हो तो अधिक बेहतर है।

औषधियाँः आब-ए-बेही शीरीं, आब-ए-सेब शीरीं, आब-ए-अनार शीरीं, आब-ए-अमरूद, आब-ए-ज़अरूर और आब-ए-अंगूर शीरीं प्रत्येक एक एक भाग।

निर्माण-विधिः नियमानुसार क़िवाम तैयार करें।

- **शरबत-ए-ग़ौरहः**

पेट की गर्मी और प्यास को बुझाता है। सफ़रा की तेज़ी को समाप्त करता है। साथ ही शराब एवं गर्म खानों के दुष्प्रभावों के लिए ब्वततमबजपअ के रूप में मुजर्रब है।

औषधियाँ: आब-ए-ग़ौरह और क़न्द।

निर्माण-विधि: आब-ए-ग़ौरह को साफ़ कर के पत्थर के पतीले में रखें और हल्की आँच में पकाएँ और क़न्द के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें। अगर चाहें तो शराब-ए-अंगूर मैख़ोश को इसी प्रकार तैयार कर सकते हैं।

- **शरबत-ए-ज़रिशक:**

पेट और जिगर को मज़बूत बनाता है। सफ़रावी बुख़ारों में लाभदायक है और भूख बढ़ाता है।

औषधियाँ एवं निर्माण-विधि: आब-ए-ज़रिशक ताज़ा कोक़न्द के साथ नियमानुसार पका कर शराब तैयार करें।

- **शरबत-ए-सुमाक़:**

उल्टी और मतली को रोकता है। आमाशयवर्धक है साथ ही किसी भी अंग से होने वाले रक्तस्राव को रोकने में लाभदायक है।

औषधियाँ एवं निर्माण-विधि: आब-ए-सुमाक़ को साफ़ कर के क़न्द के साथ पकाएँ, झाग उतारें और क़िवाम तैयार करें।

- **शरबत-ए-तुरन्ज:**

सफ़रा की तेज़ी को तोड़ता है। आमाशयवर्धक है साथ ही सूए मिज़ाज हार (Ill Temperament due to heat) के कारण होने वाली दिल की कमज़ोरी और घबराहट में लाभदायक है।

औषधियाँ एवं निर्माण-विधि: आब-ए-तुरन्ज को प्राप्त कर के साफ़ कर लें और नियमानुसार क़िवाम तैयार करें।

- **शरबत-ए-नारन्ज:**

सूजन और प्यास की तेज़ी को बुझाता है। सफरा की तेज़ी में आराम देता है। दीपन है। सफ़रावी एवं गर्म स्वभाव के व्यक्तियों के लिए बहुत अनुकूल है।

औषधियाँ: आब-ए-नारन्ज या आब-ए-लीमू।

निर्माण-विधि: आब-ए-नारन्ज या लीमू में से जिस की भी इच्छा हो उसे लेकर शराब-ए-तुरन्ज की भाँति तैयार करें।

- **शरबत-ए-बर्ग-ए-तुरन्ज:**

पेट की कमज़ोरी और ठंडक के कारण होने वाली दिल की घबराहट में लाभदायक है।

औषधियाँ: तुरन्ज की ताज़ा और धूल मिट्टी से पाक पत्तियों 50 की संख्या में,

शराब-ए-मुसल्लस या शराब-ए-जमहूरी 3360 मिलीलीटर और शहद 840 ग्राम।

निर्माण-विधिः तुरन्ज की ताज़ा और धूल मिट्टी से पाक 50 पत्तियों को शराब-ए-मुसल्लस या शराब-ए-जमहूरी 3360 मिलीलीटर में सात दिनों तक भिगोएँ। फिर शहद 840 ग्राम मिला कर नियमानुसार पकाएँ और साफ़ कर के सुरक्षित कर लें।

- **शरबत-ए-मीबहः**

आमाशयवर्धक और जिगरवर्धक है। उल्टी को रोकता और प्यास मिटाता है। दीपन है और चेहरे के रंग को साफ़ करता है।

औषधियाँः बेही के पके फल।

निर्माण-विधिः बिही के पके हुए फलों से उनके छिलके और बीज अलग कर दें और फिर उन को पत्थर या लकड़ी के हावन में कूट कर 6480 मिलीलीटर आब अर्थात रस प्राप्त करें। उन को पका कर साफ़ कर लें। 8100 मिलीलीटर साफ़ और अच्छे स्वाद वाली शराब लें और उस में बिही के तलछट को इतना पकाएँ कि आधा शेष रह जाए फिर उस को साफ़ कर लें। उस के बाद बिही के तलछट को थोड़े अर्क़-ए-गुलाब के साथ मल कर धोएँ ताकि उस में कोई स्वाद बाक़ी ना रह जाए। फिर उन तीनों रसों के एक साथ मिला कर साफ़ कर लें और पत्थर की देग पर हल्की आँच पर पकाएँ फिर क़ाक़लैन, ज़ाफ़रान, उश्ना, दार चीनी और क़रन्फ़ुल प्रत्येक 10.5 ग्राम, मस्तगी और ज़न्जबील प्रत्येक 1.75 ग्राम लें। मस्तगी के अतिरिक्त सभी औषधियों का अधकुटा कर कपड़े की एक बड़ी सी पोटली में उस का सर बाँध कर देग में इस प्रकार रख दें कि रसों के साथ पक जाए और साथ ही हर समय उस पोटली को मलते रहें ताकि इन औषधियों की क़ुव्वत रसों में आ जाए। तत्पश्चात पोटली निकाल लें और थोड़े से अर्क़-ए-गुलाब के साथ उस को निचोड़ कर उस का अर्क़ प्राप्त कर शराब में डाल दें। फिर देग में क़न्द और शहद 4050 ग्राम डाल कर हल्की आँच पर इतना पकाएँ कि क़िवाम तैयार हो जाए। अंत में 3.5 ग्राम मुश्क का सूक्ष्म और मस्तगी का सफ़ूफ़ सम्मिलित कर के चीनी या शीशे के पात्र में सुरक्षित कर लें।

सेवन-मात्राः आवश्यकता के समय 24ग्राम की मात्रा में।

- **शरबत-ए-मीबह का अन्य नुस्ख़ाः**

आमाशयवर्धक और जिगरवर्धक है। उल्टी, मतली, दस्त और हैज़ा में लाभदायक है। बूढ़े एवं कमज़ोर स्वभाव के व्यक्तियों के लिए उपयोगी है। भूख बढ़ाता है। चेहरे को रौनक़ प्रदान करता है। शारीरिक शक्तियों की सुरक्षा करता है।

औषधियाँः उसारा-ए-बेही शीरीं 1620 मिलीलीटर, उसारा-ए-सेब 810 मिलीलीटर, स्वादिष्ट और ख़ुशबूदार पुरानी शराब 2430 मिलीलीटर।

निर्माण-विधिः उसारा-ए-बेही शीरीं 1620 मिलीलीटर, उसारा-ए-सेब 1920 मिलीलीटर, स्वादिष्ट और ख़ुशबूदार पुरानी शराब 2430 मिलीलीटर लेकर पत्थर की देग में हल्की आँच पर पकाएँ। निम्नलिखित औषधियों को इस से पहले बयान की गई विधि अनुसार पोटली में रख कर देग में लटका दें। क़रन्फ़ुल, दार-ए-फ़िलफ़िल, ऊद ख़ाम, हील, बिस्बासा, साज़ज, क़िर्फ़ह, ज़न्जबील, जौज़बोवा, क़ाक़ला, सअद और सुंबुलुत्तीब प्रत्येक 7 ग्राम,क़न्द सफ़ेद और शहद 2430 ग्राम। क़न्द सफ़ेद और शहद को पकाने के बाद झाग उतार दें और क़िवाम तैयार करें। अंत में औषधियों को देग से निकाल लें और 210 मिलीलीटर अर्क़-ए-गुलाब में मल छान लें। फिर उस अर्क़-ए-गुलाब को शराब में सम्मिलित करें। तत्पश्चात देग को आग से उतार लें और मुश्क, ज़ाफ़रान, मस्तगी और सुक्क प्रत्येक 3.5 ग्राम को हल्का पीस कर शराब में मिलाएँ और चीनी के पात्र में सुरक्षित कर लें।

सेवन-मात्राः 35 से 70 ग्राम तक की मात्रा में प्रयोग करें।

- **शरबत-ए-मैपुख़्तहः**

इस को अरबी में मैफुख़्तज कहा जाता है। पाचन क्रिया को मज़बूत करता है। पेट की कमज़ोरी को समाप्त करता है। गुर्दा एवं मूत्राशय के दर्दों में लाभदायक है।

औषधियाँः अंगूर शीरीं के पके फल।

निर्माण-विधिः अंगूर शीरीं के पके फलों से उन के बीज निकाल कर रस प्राप्त करें और इच्छानुसार मात्रा में लेकर एक पतीलें में इतनी हल्की आँच पर पकाएँ कि आग की लपटें पतीले के आस पास ना पहुँचें। इस प्रकार से हल्की आँच पर उस समय तक पकाते रहें और उस की झाग साफ़ करते रहें कि वो दो भागों में से एक भाग बचे। अगर उस को और अधिक प्रभावशाली बनाना हो तो आमाशय की कमज़ोरी के संदर्भ में वर्णित वस्तुओं को इस में सम्मिलित करें।

- **शरबत-ए-मुसल्लसः**

आमाशयवर्धक है। बलग़मी रोगों एवं बूढ़े व्यक्तियों के लिए लाभदायक है।

औषधियाँः शहद क़न्द एक एक भाग, साफ़ पानी और मैफुख़्तज दो दो भाग।

निर्माण-विधिः शहद और क़न्द 1-1 भाग, साफ़ पानी और मैफुख़्तज 2-2 भाग लेकर हल्की आँच पर इतना पकाएँ कि एक तिहाई बाक़ी बचे। फिर क़न्द सफेद एक भाग और अर्क़-ए-गुलाब ख़ुशबूदार तीन भाग को साफ़ देग में पकाते और उस की झाग साफ़ करते रहें। अंत में थोड़ी मात्रा में ज़ाफ़रान को हल्का सूक्ष्म पीस कर उस में सम्मिलित करें और सुरक्षित कर लें। आवश्यकता के समय ठंडा कर के प्रयोग करें।

● **शरबत-ए-कुहनाः**

पेट और जिगर की कमज़ोरी में लाभदायक है। वाजीकर है। कमर दर्द, पीठ दर्द, जोड़ो के दर्द, पक्षघात, लक़वा और तांत्रिकाओं के ढीलेपन जैसे ठंडे रोगों में लाभदायक है। मूत्रविरेचक और मोटापा बढाने वाला है। साथ ही त्वचा में ताज़गी पैदा करने वाला है।

औषधियाँः आब-ए-अंगूर (पका हुआ) 81 लीटर, तन्दुरुस्त खच्चर का गोश्त 16.2 किलोग्राम, ऊद हिन्दी 35 ग्राम, ज़ाफ़रान, मस्तगी रूमी, ख़ूलन्जान, जौज़बोवा प्रत्येक 17.5 ग्राम, क़रन्फ़ुल, बिस्बासा, ज़रन्बाद, सअद प्रत्येक 10.5 ग्राम, सलीख़ा, ज़न्जबील, दारचीनी, आक़रक़रहा, सुंबुलुत्तीब प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को अधकुटा कर के पोटली में बाँधें और देग में डाल कर पकाएँ। साथ हाथों से लगातार उस को मलते रहें ताकि गोश्त अच्छी तरह गल जाए। अगर देग के अन्दर थोड़ी मात्रा में नअनाअ डाल दें तो ज़्यादा बेहतर होता है। कुछ लोग इस में बालंगो और नअनाअ भी डालते हैं। कभी कभार दवा की पोटली को उस समय तक मलते और छानते रहें कि क़िवाम तैयार हो जाए। उस को साफ़ कर लें और दोबारा इतना पकाएँ कि बाक़ायदा क़िवाम तैयार हो जाए। अंत में मुश्क ख़ालिस 832 मिलीग्राम, अंबर अशहब 3.5 ग्राम, अर्क़-ए-गुलाब 420 मिलीलीटर सम्मिलित करें। ठंडा कर के चीनी या शीशे के पात्र में रख लें।

सेवन-मात्राः आवश्यकता के समय 24 ग्राम की मात्रा में लेकर अर्क़-ए-गुलाब में मिला कर पिएँ।

● **शरबत-ए-कुहना का अन्य नुस्ख़ाः**

यह नुस्खा पुस्तक "हावी सग़ीर" से लिया गया है। आमाशय, जिगर और गुर्दे की कमज़ोरी में लाभदायक है। कमर दर्द, जोड़ों के दर्द, पक्षघात, लक़वा और भूलने के रोग में लाभदायक है। त्वचा की रंगत को निखारता और मुँह की दुर्गंध को बढ़िया बनाता है। वाजीकर है सेक्स की शक्ति को बढ़ाता है। मूत्रविरेचक और स्मृतिवर्धक है। Antiflatulent है। बूढ़े लोगों के लिए अत्यंत लाभकारी है।

औषधियाँः आब-ए-अंगूर (पका हुआ) 81 लीटर, तन्दुरुस्त खच्चर का गोश्त 16.2 किलोग्राम, ऊद हिन्दी 35 ग्राम, ज़ाफ़रान 17.5 ग्राम, क़रन्फ़ुल और बिस्बासा प्रत्येक 10.5 ग्राम, जौज़बोवा, मस्तगी और ख़ूलन्जान प्रत्येक 17.5 ग्राम, सलीख़ा, कबाबा, ज़रन्बाद, सुंबुल, सअद हिन्दी, ज़न्जबील, दारचीनी, आक़रक़रहा और सुंबुलुत्तीब प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को अधकुटा कर के पोटली में बाँध कर उस का सर बाँध दें और आब-ए-अंगूर और गोश्त के साथ इतना पकाएँ कि गोश्त अच्छी तरह गल जाए। अब उस को साफ़ कर लें। अर्क़-ए-गुलाब 810 मिलीलीटर और शहद 1620 ग्राम के साथ दोबारा पकाएँ और झाग साफ़ करें। अंत में मुश्क ख़ालिस 3.5 ग्राम और ज़ाफ़रान 7 ग्राम सम्मिलित करें और ठंडा कर के शीशे के पात्र में सुरक्षित कर लें।

- **शरबत-ए-दारूबख़्तः**

यह Vital Organs को सशक्त बनाता है। यह बलग़मी रोगों में लाभदायक है। यह भूलने के रोग को दूर करता है। वाजीकर है। बूढ़े लोगों के लिए अत्यंत लाभकारी है। पाचक है।

औषधियाँः आब-ए-अंगूर (पका हुआ) 81 लीटर, बिही शीरीं 2430 ग्राम, सेब असफ़हानी 1620 ग्राम।

निर्माण-विधिः सेब और बेही को पोस्त और दाना से अलग कर के टुकड़े टुकड़े कर लें और आब-ए-अंगूर में डालें। आब-ए-अंगूर में अर्क़-ए-गुलाब 405 मिलीलीटर और साफ़ पानी 8.1 मिलीलीटर डाल कर सब को पकाएँ और निम्नलिखित औषधियों को अधकुटा कर के पोटली में बाँध कर देग में डाल दें। अंत में उस पोटली को निकाल कर थोड़ी मात्रा में अर्क़-ए-गुलाब में मल छान लें। दार चीनी, क़रन्फ़ुल, मस्तगी, सुंबुलुत्तीब, कबाबा चीनी, जौज़बोवा और ख़ूलन्जान प्रत्येक 17.5 ग्राम, ऊद हिन्दी, बिस्बासा और दोवाला प्रत्येक 10.5 ग्राम, ज़ाफ़रान 35 ग्राम को अर्धकुटा कर के पोटली में बाँध कर देग में डाल दें। अंत में उस पोटली को निकाल कर थोड़ी मात्रा में अर्क़-ए-गुलाब के साथ मल छान लें। उस अर्क़-ए-गुलाब को देग में डालें। साफ़ शरबत का क़िवाम तैयार करें। अंत में अंबर व मुश्क प्रत्येक 3.5 ग्राम सम्मिलित करें।

- **शरबत-ए-रैहानीः**

यह भूलने की बीमारी और बलग़मी रोगों में लाभदायक है। आमाशयवर्धक है। बूढ़े लोगों के स्वभाव के अनुकूल है।

औषधियाँः आब-ए-अंगूर, क़न्द या शकर।

निर्माण-विधिः आब-ए-अंगूर 81 लीटर को मटके में डाल दें और उस में क़न्द या शकर 4860 ग्राम डाल दें फिर दार चीनी, क़रन्फ़ुल, बिस्बासा और जौज़बोवा प्रत्येक 35 ग्राम को कूट कर हथेली में भर लें और उस को भी मटके में डाल दें। फिर उस को गिल-ए-हिकमत कर दें और छः महीने बाद प्रयोग में लाएँ।

- **शरबत-ए-अस्लः**

यह आमाशय और जिगर में गर्मी पैदा करता है। पाचक एवं दीपन है। बूढ़े और

ठंडे स्वभाव के व्यक्तियों के लिए अनुकूल है।

औषधियाँ: सुंबुलुत्तीब, क़ाक़ला, दारचीनी, ऊद हिन्दी, हीलबोवा और जौज़बोवा प्रत्येक 3.5 ग्राम, क़रन्फ़ुल 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को अर्धकुटा कर के 1260 मिलीलीटर साफ़ पानी में इतना पकाएँ कि 840 मिलीलीटर शेष रह जाए। फिर स्वादिष्ट एवं साफ़ शहद 17.5 ग्राम में दोबारा उस समय तक पकाते और झाग उतारते रहें कि उस का क़िवाम तैयार हो जाए। अंत में मस्तगी 3.5 ग्राम को बारीक पीस कर सम्मिलित करें।

- **शरबत-ए-क़न्दी:**

यह तरल पदार्थों एवं चिपचिपे बलग़म को आमाशया में सोखता है। ठंडे स्वभाव के व्यक्तियों के लिए लाभदायक है।

औषधियाँ: ज़न्जबील और दारचीनी प्रत्येक 17.5 ग्राम, हील और क़ाक़ला प्रत्येक 10.5 ग्राम, क़रन्फ़ुल 8.75 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को अर्धकुटा कर के 2940 मिलीलीटर साफ़ पानी में इतना पकाएँ कि एक तिहाई रह जाए। 2100 ग्राम क़न्द सफ़ेद के साथ क़िवाम तैयार करें और झाग साफ़ कर दें। अंत में मुश्क 1.75 ग्राम बारीक पीस कर सम्मिलित करें।

सेवन-मात्रा: 17.5 ग्राम से 35 ग्राम तक है।

- **शरबत-ए-फ़न्जनोश:**

यह आमाशयवर्धक, पाचक और बवासीर में लाभदायक है।

औषधियाँ: तुख़्म-ए-करफ़्स, राज़ियाना, ज़ीरा किर्मानी, अनीसून, नानख़्वाह, सअतर, अन्जोदान, काशिम, करोया, किशनीज़ ख़ुश्क, फ़िलफ़ि, दार-ए-फ़िलफ़िल, कुन्दुर, दार-ए-चीनी, सुंबुलुत्तबी, क़िर्फ़ह, जौज़बोवा, तुख़्म-ए-जिर्जीर, तुख़्म-ए-प्याज़, सअद कूफ़ी और ज़न्जबील प्रत्येक 13.5 ग्राम, ख़ुब्सुलहदीद जिस को बहुत बारीक पीसा गया हो 135 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को अर्धकुटा कर के उसारा-ए-अंगूर शीरीं 2520 मिलीलीटर पानी में इतना पकाएँ कि दो तिहाई शेष रह जाए। फिर उस को साफ़ कर के दोबारा इतना पकाएँ फिर से दो तिहाई जल जाए और एक तिहाई शेष रह जाए।

सेवन-मात्रा: 52.5 मिलीलीटर।

- **शरबत-ए-फ़न्जनोश का अन्य नुस्ख़ा:**

यह वाजीकर है और शीघ्रपतन में लाभदायक है।

औषधियाँ: किशनीज़ ख़ुश्क, सअतर फ़ारसी, सअद कूफ़ी, सुमाक़, माज़ू सब्ज़,

गुलनार फ़ारसी, गुल-ए-सुर्ख़ प्रत्येक 7 ग्राम, ज़ाफ़रान, मुर मक्की, शिब यमानी प्रत्येक 3.5 ग्राम, ख़ुब्सुलहदीद मुदब्बर 135 ग्राम, उसारा-ए-अंगूर शीरीं 2520 मिलीलीटर।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को नियमानुसार पकाएँ।

- **शरबत-ए-सोसनः**

यह आमाशय की ठंडक एवं कमज़ोरी अथवा जिगर की ठंडक एवं कमज़ोरी और उस बेहोशी में लाभदायक है जो अत्याधिक Evacuation के कारण होता है। यह दस्त, रक्तस्राव और दिल की कमज़ोरी में बहुत लाभदायक है।

औषधियाँः गुल-ए-सोसन मोवाज़ी 4 की संख्या में,

निर्माण-विधिः गुल-ए-सोसन मोवाज़ी 4 की संख्या में लें और उस के किनारों को निकाल दें फिर किसी पात्र में मल लें और कपड़े पर फैला दें ताकि कुछ मुरझा जाए। फिरक़ुस्त, क़रन्फ़ुल और क़सबुज़्ज़रीरा प्रत्येक 64 ग्राम, मिल्ह-ए-इन्द्राणी और सलीख़ा प्रत्येक 9 ग्राम, हमामा, सुंबुलुत्तीब और मस्तगी रूमी प्रत्येक 32 ग्राम, ऊद-ए-बलसाँ 128 ग्राम लें। सभी औषधियों को अर्धकुटा कर के गुल-ए-सोसन के साथ मिलाएँ और शीशे या चीनी के पात्र में रख कर एक रात दिन छोड़ दें। फिर उस में 6720 मिलीलीटर शराब-ए-मुसल्लस डालें। ज़ाफ़रान 13.5 ग्राम और मुश्क 9 ग्राम को बारीक पीस कर थोड़ी मात्रा में शराब-ए-मुसल्लस में घोलें। शीशे के पात्र में रख दें। फिर मीअह सायलह 128 गाम और रोग़न-ए-वलसाँ 32 ग्राम बढ़ा कर सब को एक साथ मिलाएँ और शीशे के पात्र के मुँह को सूती कपड़े से बन्द कर दें। पूरे पात्र को ऐसी मिट्टी से गिल-ए-हिकमत कर दें जिस में सोसन और आरद-ए-जौ मिलाया गया हो। अब उस पात्र को ऐसे स्थान पर छः महीने तक रखें जहाँ उत्तरी हवा का गुज़र होता हो। तत्पश्चात आवश्यकता के समय प्रयोग करें।

- **शरबत-ए-गज़रः**

यह कमर दर्द में लाभदायक है। गुर्दे को सशक्त बनाता है और वाजीकर है।

औषधियाँः गज़र 1620 ग्राम।

निर्माण-विधिः गज़र जिस को पाक साफ़ कर के और ऊपर के मोटे भाग को अलग कर के टुकड़े टुकड़े किया गया हो 1620 ग्राम लेकर पत्थर की देग में रखें और ऊपर से साफ़ पानी डाल कर देग के मुँह को मिट्टी या ख़मीर से इस प्रकार से ढक दें कि उस की भाप बाहर ना निकल पाएँ फिर हल्की आँच पर धीरे धीरे पकाएँ और ठंडा होने के लिए रख छोड़े। फिर औषधियों को देग से निकाल लें और हाथों से मल छान कर साफ़ कर लें और उतनी ही मात्रा में शहद मिलाएँ। सुंबुलुत्तीब, क़रन्फ़ुल,

ख़ूलन्जान, दान चीनी प्रत्येक 3.5 ग्राम, ज़ाफ़रान 1.75 ग्राम को एक पोटली में बाँध कर देग में लटका कर पकाएँ और समय समय पर उस को मलते रहें ताकि उस का अर्क़ क़िवाम में आजाए।

- **शरबत–ए–अन्जीरः**

यह गुर्दा एवं मूत्राशय के लिए लाभदायक है। शुक्राणुओं को बढ़ाता है। वाजीकर है। कमर दर्द को दूर करता है।

औषधियाँः अन्जीर सफ़ेद 1920 ग्राम, आब-ए-बेही 4200 ग्राम।

निर्माण-विधिः अन्जीर सफ़ेद के मोटे दाने 1620 ग्राम को आब-ए-बेही 8.1 लीटर में भिगोएँ और हाथों से मल कर अच्छी तरह मिलाएँ फिर साफ़ शहद 810 ग्राम के साथ मिला कर शरबत का घोल तैयार करें। साथ ही दारचीनी, ख़ूलन्जान, क़रन्फ़ुल और सुंबुलुत्तीब प्रत्येक 3.5 ग्राम, ज़ाफ़रान 1.75 को कूटने छानने के बाद सूती कपड़े की पोटली में रख कर उपर्युक्त घोल के साथ पकाएँ। जब क़िवाम तैयार होने वाला हो तो उस पोटली को निकाल कर थोड़े से अर्क़-ए-गुलाब से अच्छी तरह धोएँ और मल कर निचोड़ लें ताकि औषधियों की Efficacy उस अर्क़-ए-गुलाब में आ जाए। फिर उस अर्क़ को उपयुक्त घोल में मिला कर शरबत का क़िवाम तैयार करें।

- **शरबत–ए–अन्जीर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गुर्दा एवं शुक्राणु के अंगों को गर्म करता है। वाजीकर है। ठंडे स्वभाव के व्यक्तियों के लिए लाभदायक है। सीने में गर्मी पैदा करता और बलग़म निकालता है।

औषधियाँः पका हुआ, सूखा और बड़े दाने वाला अन्जीर का फल 4050 ग्राम और हुल्बा 2430 ग्राम।

निर्माण-विधिः अन्जीर को धो कर गर्द व ग़ुबार से पाक कर लें और हुल्बा के साथ दो दिनों तक पानी में भिगोएँ ताकि हुल्बा में नर्मी आ जाए। फिर सब को हल्की आँच पर पकाने के बाद हाथों से मलें और सूती कपड़े से छान कर साफ़ कर लें फिर साफ़ शहद 4050 ग्राम सम्मिलित कर के दोबारा पकाएँ। साथ ही तुख़्म-ए-हल्यून, तूदरी सुर्ख़ और तूदरी ज़र्द प्रत्येक 7 ग्राम, सुंबुल, क़रन्फ़ुल, दारचीनी और ज़ाफ़रान प्रत्येक 3.5 ग्राम को अच्छी तरह कूटने के बाद पोटली में रख कर उसी देग में डालें और हल्की आँच पर पकाएँ। हर समय पोटली का मलते रहे ताकि औषधियों की Efficacy शराब में आ जाए।जब क़िवाम तैयार होने वाला हो तो उस पोटली को बाहर निकाल लें। शराब तैयार हो गई। उस को सुरक्षित कर लें।

सेवन-मात्राः 70 ग्राम।

- **शरबत-ए-अंगूर:**

  यह वाजीकर है। यौन शक्ति को बढ़ाता है। मोटापा बढ़ाने वाला है।

  औषधियाँ: आब-ए-अंगूर 4050 ग्राम।

  निर्माण-विधि: आब-ए-अंगूर (पके हुए और मीठे अंगर का रस) 4050 ग्राम को साफ़ कर के हल्की आँच पर पकाएँ। साथ ही तुख़्म-ए-शलग़म, जिर्जीर, बूज़ीदान, बहमन सुर्ख़, बहमन सफ़ेद तुख़्म-ए-हल्यून, लिसानुलअसाफ़ीर, हब्बुलक़िलक़िल, सूरन्जान और तुख़्म-ए-गज़र प्रत्येक 17.5 ग्राम लेकर अर्धकुटा कर लें और नियमानुसार हल्की आँच पर पका कर क़िवाम तैयार करें।

- **शरबत-ए-मवीज़:**

  यह बूढ़े एवं ठंडे स्वभाव के व्यक्तियों के स्वभाव के अनुकूल है। आमाशय, गुर्दा और शुक्राणु के अंगों को गर्म करता है। समृतिवर्धक एवं वाजीकर है। भूलने की बीमारी को दूर करता है। भूक बढ़ाता है। बदन के रंग को लाल करता है।

  औषधियाँ: मवीज़ स्याह का बड़ा दाना 9600 ग्राम और साफ़ पानी 4200 मिलीलीटर।

  निर्माण-विधि: मवीज़ स्याह को 4200 मिलीलीटर साफ़ पानी से धोएँ और उस के बाद एक साफ़ पात्र में 8100 मिलीलटर पानी के साथ एक रात दिन भिगो कर नक़ूअ तैयार करें। फिर उस नक़ूअ में 4050 मिलीलीटर पानी डाल कर पतीले में हल्की आँच पर पका कर गला लें। अब इस घोल को साफ़ सूती कपड़े से छान लें और उस के भारी भागों के नीचे जम जाने की प्रतीक्षा करें। फिर उसे निथार कर दोबारा छानें ताकि अच्छी तरह साफ़ हो जाए। उस के बाद उसे देग में रख कर हल्की आँच पर रख कर पकाएँ और झाग उतारते रहें। दूसरी ओर क़रन्फ़ुल, सुंबुलुत्तीब, दार चीनी, कबाबा, जौज़बोवा, बिस्बासा, कुन्दुर और मस्तगी प्रत्येक 10.5 ग्राम कूट कर एक पोटली में बाँधें और देग में रख कर नियमानुसार पकाएँ। अंत में मुश्क 3.5 ग्राम की मात्रा में सूक्ष्म चूर्ण कर के उस में सम्मिलित करें।

  सेवन-मात्रा 70 ग्राम।

  अनुपान: अर्क़-ए-गुलाब के साथ मिला कर।

  सेवन समय: ख़ाली पेट सोते समय प्रयोग करें।

- **शरबत-ए-हल्यून:**

  यह मूत्राशय को पथरी के कणों से पाक करता है और वाजीकर है।

  औषधियाँ: हल्यून, पानी, क़न्द।

निर्माण-विधिः हल्यून 135 ग्राम को 1620 मिलीलीटर पानी में इतना पकाएँ कि आधा शेष रह जाए फिर क़न्द 405 ग्राम के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें।

सेवन-मात्राः 17.5 ग्राम।

- **शरबत-ए-इन्जबारः**

यह ख़ूनी दस्त, रक्तनिष्ठिवान, रक्तस्राव में लाभदायक है।

औषधियाँः सन्दल सुर्ख़ और सन्दल सफ़ेद प्रत्येक 17.5 ग्राम, पोस्त-ए-बीख़-ए-इन्जेबार 31.5 ग्राम, अक़ाक़िया 9 ग्राम,क़न्द 480 ग्राम।

निर्माण-विधिः विधि अनुसार सब को कूट छान कर रात भर पानी में भिगोएँ और सुबह पका कर साफ़ कर लें फिर क़न्द के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें।

- **शरबत का अन्य नुस्ख़ाः**

यह ख़ूनी दस्त व आमाशय की कमज़ोरी में लाभदायक है।

औषधियाँः आब-ए-बेही शीरीं 135 ग्राम, कज़माज़ज, आमला, गुलनार और ख़रनूब शामी प्रत्येक 9 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को रात भर पानी में भिगोएँ फिर उस को साफ़ कर लें और रुब्ब-ए-बेही के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें।

- **शरबत-ए-सलमोयाः**

यह आमाशयवर्धक है। भूक बढ़ाता और Palpitationa में लाभदायक है।

औषधियाँः पोस्त-ए-बेरूने-ए-पिस्ता, तुरन्ज प्रत्येक 405 ग्राम, मुरमाहौज़ 32 ग्राम, क़रन्फ़ुल 9 ग्राम, ऊद हिन्दी4.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को अर्धकुटा कर के पोटली में बाँध कर एक घड़े में रखें फिर पुरानी शराब 2025 मिलीलीटर डालें। तीन दिन बाद क़न्द 2835 ग्राम के साथ पका कर क़िवाम तैयार करें।

अंत में ज़ाफ़रान 1.75 ग्राम, मुश्क 3.5 ग्राम और सुक्क 1.75 ग्राम सूक्ष्म चूर्ण कर के उस में सम्मिलित करें।

सेवन-मात्राः 35 ग्राम।

- **शरबत-ए-हब्बुलआसः**

यह आमाशयवर्धक है। ख़ूनी दस्त, सफ़रावी दस्त और रक्तस्राव में लाभदायक है।

औषधियाँः हब्बुलआस और मूरद ख़ुश्क प्रत्येक 175 ग्राम, क़ुस्त और तरासीस प्रत्येक 35 ग्राम, आब-ए-सेब, आब-ए-बेही और आब-ए-अनार प्रत्येक 810 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को अर्धकुटा कर लें औररसों में इतना पकाएँ कि एक दो तिहाई शेष रह जाए फिर उस को साफ़ कर के दोबारा पकाएँ और साफ़ कर के क़न्द के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें। अंत में अगर थोड़ी सी तबाशीर को हल्का पीस कर उस में सम्मिलित करें तो बेहतर होता है।

- **शरबत का अन्य नुस्ख़ाः**

यह ख़ूनी दस्त, आँतों में ख़राश, Hepatic diarrhoea और रक्तस्राव में लाभदायक है।

औषधियाँः आमला, पोस्त बीख़-ए-अन्जेबार, गुलनार फ़ारसी, गुल-ए-सुर्ख़, तुख़्म-ए-हुम्माज़ बर्री, ख़रनूब शामी प्रत्येक 7 ग्राम, सन्दल सफ़ेद का सफ़ूफ़ 10.5 ग्राम, हब्बुलआस 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को नियमानुसार पकाएँ। साफ़ कर के रुब्ब-ए-बेही शीरीं, रुब्ब-ए-अनार शीरीं प्रत्येक 70 मिलीलीटर, रुब्ब-ए-ज़रिशक 35 मिलीलीटर, अर्क़-ए-गुलाब 240 मिलीलीटर के साथ क़िवाम तैयार कर के चीनी के पात्र में सुरक्षित कर लें।

- **शरबत-ए-अफ़्सन्तीनः**

यह शैख़ अबू अली का तैया किया हुआ और आज़माया हुआ नुस्खा है। आमाशय की कमज़ोरी और भूख खत्म होने की स्थिति में लाभदायक है।

औषधियाँः अफ़्सन्तीनरूमी, पानी।

निर्माण-विधिः अफ़्सन्तीनरूमी 350 ग्रामको पानी 2520 मिलीलीटर में इतना पकाएँ कि आधा रह जाए। दूसरी ओर पके हुए बेही के फल को ख़मीर में गिल-ए-हिकमत कर के आग में दफ़न कर दें। पकने के बाद उस के रेशों और दानों को निकाल दें। फिर साफ़ कर लें और हल्का कूट कर निचोड़ लें। उस घोल में अच्छी तरह मिलाएँ। उसारा-ए-बहमनैन 810 मिलीलीटर भी आब-ए-अफ़्सन्तीन में सम्मिलित करें। उस पूरे घोल में अंगबीन 26.25 ग्राम मिलाएँ।

- **शरबत का अन्य नुस्ख़ाः**

यह आँतों की गैस, आमाशय के फूलने और क़ूलन्ज में लाभदायक है।

औषधियाँः अफ़्सन्तीन रूमी 175 ग्राम, तुख़्म-ए-करफ़्स 105 ग्राम, सलीख़ा 70 ग्राम और पानी 1620 मिलीलीटर।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को 1620 मिलीलीटर पानी में इतना पकाएँ कि एक तिहाई जल जाए साफ़ कर के क़न्द 960 ग्राम के साथ क़िवाम तैयार करें।

### ● शरबत का अन्य नुस्ख़ाः

यह आमाशय की कमज़ोरी में लाभदायक है। यह आमाशय के दर्द और उस के फूलने को समाप्त करता है। जिगर एवं तिल्ली के सुद्दों को खोलता है और मूत्रविरेचक है।

औषधियाँः अफ़्सन्तीन रूमी 17.5 ग्राम, तुख़्म-ए-करफ़्स 10.5 ग्राम, सलीख़ा 7 ग्राम, अनीसून, वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़ प्रत्येक 35 ग्राम, सुंबुलुत्तीब 24.5 ग्राम, पानी 1620 मिलीलीटर।

निर्माण-विधिः सब को अर्धकुटा कर के 1620 मिलीलीटर पानी में इतना पकाएँ कि आधा शेष रह जाए। उस को अच्छी तरह मल छान कर साफ़ कर लें और क़न्द 810 ग्राम के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें।अंत में जब यह ठंडा हो जाए तो मस्तगी 24.5 ग्राम को सफ़ूफ़ कर के सम्मिलित करें।

सेवन-मात्राः 17.5 ग्राम से 35 ग्राम तक दें।

### ● शरबत-ए-सअतरः

यह बलग़मी बुख़ार, क़ूलन्ज रीही, अंतरांग के क़ूलन्ज को समाप्त करता है। आमाशयवर्धक है।

औषधियाँः सअतर फ़ारसी, नानख़्वाह, ज़न्जबील, गुल-ए-सुर्ख़, फ़ूदनह और किशनीज़ ख़ुश्क प्रत्येक 10.5 ग्राम, मवीज़ मुनक़्क़ 70 ग्राम।

निर्माण-विधिः नियमानुसार पकाएँ और साफ़ कर के शहद 105 ग्राम के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें।

सेवन-मात्राः 52.5 ग्राम।

अनुपानः माउलउसूल के साथ दें।

### ● शरबत-ए-मरज़न्जोशः

यह बलग़मी बुख़ार में लाभदायक है और तरल रोगों को समाप्त करता है।

औषधियाँः मरज़न्जोश, बाबूना, इज़्ख़िर और आक़रक़हा प्रत्येक 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को 105 ग्राम शहद के साथ मिलाएँ और नियमानुसार पका कर क़िवाम तैयार करें।

### ● शरबत का अन्य नुस्ख़ाः

यह हिचकी, उल्टी और मतली को समाप्त करता है। आमाशयवर्धक है।

औषधियाँः ज़ीरा किर्मानी, अनीसून, फ़ूदनह, कुन्दुर प्रत्येक 7 ग्राम, नअनाअ ख़ुश्क, सअतर, राज़ियाना और नानख़्वाह प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को पकाएँ और साफ़ करें। क़न्द मिला कर क़िवाम तैयार

करें। अंत में कुन्दुर कूट कर सम्मिलित करें।

- **शरबत का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से भी उपर्युक्त लाभों की प्राप्ति होती है।

औषधियाँः ज़ीरा किर्मानी, अनीसून,पोस्त-ए-बेरून-ए-पिस्ता,सअद, सुंबुलुत्तीब, वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़ प्रत्येक 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को अर्धकुटा कर के 1260 मिलीलीटर पानी में इतना पकाएँकि आधा शेष रह जाए फिर उसे साफ़ कर के शरबत-ए-बेही 420 ग्राम के साथ क़िवाम तैयार करें।

सेवन-मात्राः 35 ग्राम।

अनुपानः अर्क़-ए-गुलाब के साथ दें।

- **शरबत का अन्य नुस्ख़ाः**

यह पाचन क्रिया को सशक्त बनाता है। उल्टी को रोकता है। पाचक एवं दीपन है।

औषधियाँः आब-ए-सेब, आब-ए-बिही, आब-ए-अमरूद, आब-ए-अनारैन, आब-ए-ज़रिशक, आब-ए-ग़ौरह, अर्क़-ए-गुलाब प्रत्येक 420 ग्राम, नअनाअ ताज़ा 27 ग्राम, राज़ियाना, पोस्त-ए-बेरून-ए-पिस्ता प्रत्येक 35 ग्राम, ऊद हिन्दी, सुंबुलुत्तीब और क़ाक़ला प्रत्येक 17.5 ग्राम,क़न्द 1620 ग्राम।

निर्माण-विधिः फलों के आब को पत्थर की देगची में पकाएँ साथ ही कूटने योग्या औषधियों को अर्धकुटा कर लें और साफ़ कपड़े की पोटली में बाँध कर उस देग में डालें। इस बीच पोटली को हाथ से मलते और निचोड़ते रहें। जब घोल ठंडा हो जाए तो मस्तगी 70 ग्राम को सूक्ष्म चूर्ण कर के उस में डालें और चीनी के पात्र में सुरक्षित कर लें।

सेवन-मात्राः 35 ग्राम।

- **शरबत का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बदन को मोटा करता है, वाजीकर है, लिंग में जोश एवं तनाव भरता है और बूढ़े व्यक्तियों के स्वभाव के अनुकूल है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-हल्यून, मग़ज़-ए-बादाम, शक़ाकुल, मग़ज़-ए-हब्बुलकुर्तुम, बहमन सुर्ख़ व सफ़ेद, तुख़्म-ए-गाजर, क़िर्फ़ह, ज़न्जबील, क़रन्फुल, जौज़बोवा, बिस्बासा, दार चीनी प्रत्येक 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर 840 मिलीलीटर पानी में पकाएँ और साफ़ कर के 420 मिलीलीटर शराब-ए-मुसल्लस के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें।

सेवन-मात्राः 70 ग्राम।

अनुपानः माउल्लहम के साथ ख़ाली पेट की स्थिति में थोड़ा थोड़ा कर के पिएँ।

- **शरबत का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गुर्दा एवं मूत्राशय की पथरी और रेतीले कणों को बाहर निकालता है।

औषधियाँः हब्बुलक़िल्त 52.5 ग्राम, उस्क़ूलोक़न्द्रियून, पर्सियाउशाँ प्रत्येक 24.5 ग्राम, दोक़ू, फ़ुत्रासालियून प्रत्येक 14 ग्राम, ख़सक 35 ग्राम, अन्जीर ज़र्द 10 की संख्या में।

निर्माण-विधि : नियमानुसार पकाएँ और क़न्द मिला कर क़िवाम तैयार करें।

सेवन-मात्राः 70 ग्राम।

अनुपानः गर्म स्वभाव के लोगों को शीरा तुख़्म-ए-ख़्यारैन और ठंडे स्वभाव के लोगों को माउलबुज़ूर के साथ प्रयोग कराएँ।

- **शरबत का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः फ़ूदनह, दार चीनी, अफ़्सन्तीन रूमी, अबहल, सलीख़ा, मीअह सायला, ईर्सा, मुश्कतरामशीअ और अनीसून प्रत्येक 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूटने योग्य को अर्धकुटा कर लें फिर सब को एक रात दिन पानी में भिगो दें। फिर साफ़ कर के शहद और क़न्द के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें।

सेवन-मात्राः 52.5 ग्राम।

अनुपानः गर्म पानी के साथ प्रयोग कराएँ।

- **शरबत-ए-दयाक़ूज़हः**

यह नज़ला के तरल पदार्थों को रोकता है और सूखी खाँसी में लाभदायक है।

औषधियाँः पोस्त समेत ख़शख़ाश सफ़ेद 20 की संख्या में, तुख़्म-ए-ख़त्मी, कतीरा, समग़-ए-अरबी, तुख़्म-ए-ख़्यारैन, बिही दाना प्रत्येक 17.5 ग्राम, असलुस्सूस 7 ग्राम, बज्र-ए-क़तूना 35 गाम।

निर्माण-विधिः सब को 2520 मिलीलीटर वर्षा के पानी में दो दिन भिगोएँ ताकि अच्छी तरह नर्म हो जाए। फिर हल्की आँच पर इतना गला कर पकाएँ कि आधा शेष रह जाएँ अब उस को साफ़ कर लें और क़न्द सफ़ेद 810 ग्राम के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें।

- **शरबत-ए-ख़शख़ाशः**

यह Pthysis के रोगियों अथवा उन व्यक्तियों के लिए लाभदायक है जिन को रात अत्याधिक खाँसी आती है। इस से नींद भी आती है।

औषधियाँः ख़शख़ाश सफ़ेद, ख़शख़ाश स्याह प्रत्येक 175 ग्राम, तुख़्म-ए-काहू, बज़रुलबन्ज सफ़ेद प्रत्येक 105 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को अर्धकुटा कर के 1620 मिलीलीटर वर्षा के पानी में एक रात के लिएँ भिगोएँ फिर इतना पकाएँ कि आधा शेष रह जाए। अब उस घोल को साफ़ कर के वर्षा के पानी में एक रात के लिएँ भिगोएँ फिर इतना पकाएँ कि आधा शेष रह जाए। तत्पश्चात हाथों से मल कर साफ़ कर लें और लुआब-ए-बज़रक़तूना 175 ग्राम और मैफ़ुख़्तज 420 मिलीलीटर सम्मिलित कर के क़िवाम तैयार करें।

- **शरबत का अन्य नुस्ख़ाः**

यह खाँसी और नज़ला के रोगियों के लिए लाभदायक है। साथ ही यह उस व्यक्ति के लिए भी लाभदायक है जिस की खाँसी में ख़ून आता हो और च्जीलेपे के प्रारंभिक दिनों में भी लाभदायक है।

औषधियाँः तुख़्म समेत ख़शख़ाश ताज़ा, वर्षा का पानी 5670 मिलीलीटर, साफ़ शहद 405 ग्राम और मैफ़ुख़्तज 405 ग्राम।

निर्माण-विधिः तुख़्म समेत ख़शख़ाश ताज़ा को अर्धकुटा कर के 5670 मिलीलीटर वर्षा के पानी में दो दिन के लिएँ भिगोएँ ताकि अच्छी तरह नर्म हो जाए। फिर इतना पकाएँ कि आधा शेष रह जाए। अब उस को मल छान कर साफ़ कर लें और साफ़ शहद 405 ग्राम, मैफ़ुख़्तज 405 ग्राम के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें।अंत में अक़ाक़िया, ज़ाफ़रान, मुर मक्की, गुलनार, उसारा-ए-लिहयतुत्तीस प्रत्येक 3.5 ग्राम कूट छान कर मिलाएँ।

- **शरबत-ए-ख़शख़ाश सादाः**

यह खाँसी, श्वास की तंगी, जमे हुए नज़ला के पदार्थों, Insomnia को दूर करता है।

औषधियाँः तुख़्म समेत ख़शख़ाश 100 की संख्या में, वर्षा का पानी 2520 मिलीलीटर, क़न्द810 ग्राम।

निर्माण-विधिः ख़शख़ाश को अर्धकुटा कर लें और वर्षा के पानी में दो दिन के लिए भिगोएँ फिर हल्की आँच पर इतना पकाएँ कि आधा शेष रह जाए। अब उस घोल को मल छान कर साफ़ कर लें और क़न्द 810 ग्राम के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें।

- **शरबत-ए-दयाक़ूज़हः**

यह पुरानी खाँसी में लाभदायक है। इस से दिमाग़ से नज़ला के तरल पदार्थ सीने पर गिरना बन्द हो जाती हैं।

औषधियाँः ताज़ा पका हुआ औसत दर्जे का बड़ा ख़शख़ाश 100 की संख्या में, वर्षा का पानी 5670 मिलीलीटर, सिकन्जबीन, मैफ़ुख़्तज, शहद कुल 1215 ग्राम।

निर्माण-विधिः ताज़ा ख़शख़ाश अर्धकुटा कर के 5670 मिलीलीटर वर्षा के पानी में दो दिन के लिए भिगोएँ ताकि अच्छी तरह नर्म हो जाए। फिर हल्की आँच पर पकाएँ और साफ़ कर लें फिर सिकन्जबीन, मैफ़ुख़्तज और शहद सब को 1215 ग्राम की मात्रा में लें और एक साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें। अंत में ज़ाफ़रान, अक़ाक़िया, मुर मक्की, गुलनार, उसारा-ए-लिहयतुत्तीस प्रत्येक 3.5 ग्राम को हल्का कूट छान कर उस में सम्मिलित करें।

- **शरबत का अन्य नुस्ख़ाः**

यहआबला को समाप्त करता है।

औषधियाँः वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़ और अदस मुक़श्शर प्रत्येक 24.5 ग्राम, पका हुआ अन्जीर ज़र्द10 की संख्या में, कतीरा 10.5 ग्राम, मवीज़ मुनक़्क़ा 35 ग्राम, लुक-ए-मग़सूल 10.5 ग्राम, राज़ियाना और तुख़्म-ए-करफ़्स प्रत्येक 14 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूटने वाली दवाओं को अर्धकुटा कर लें। सब को 1215 मिलीलीटर पानी में पकाएँ। साफ़ कर के क़िवाम तैयार करें। अंत में ज़ाफ़रान 3.5 ग्राम को सफ़ूफ़ कर के डालें।

सेवन-मात्राः पूरी औषधि को दिन में 3 बार में प्रयोग करें।

- **शरबत का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से भी उन्हीं लाभों की प्राप्ति होती है।

औषधियाँः पका हुआ अन्जीर 30 की संख्या में, मवीज़ मुनक़्क़ा 70 ग्राम, राज़ियाना 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को 1215 मिलीलीटर साफ़ पानी में पकाएँ और साफ़ कर के क़िवाम तैयार करें।

सेवन-मात्राः इस को दिन में कई बार में प्रयोग करें।

- **शरबत का अन्य नुस्ख़ाः**

यह रक्तनिष्ठिवान, गर्मी के कारण बुख़ार में लाभदायक है।

औषधियाँः आब-ए-हिन्दुवाना, अर्क़-ए-गुलाब प्रत्यक 420 ग्राम, आब-ए-ख़्यार 1664 मिलीग्राम, हब्बुलआस 210 ग्राम और अमरूद ख़ुश्क 525 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को साफ़ कर के हल्की आँच पर इतना पकाएँ कि आधा शेष रह जाए फिर उस को दोबारा साफ़ कर के क़न्द 420 ग्राम के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें। अंत में ठंडा होने के बाद कहरुबा, साज़ज हिन्दी और तबाशीर सफ़ेद प्रत्येक 17.5 ग्राम को सफ़ूफ़ कर के उस में सम्मिलित करें।

सेवन-मात्राः 35 ग्राम।

- **शरबत का अन्य नुस्ख़ाः**

यह ख़ुमारी को समाप्त करने वाली अद्वितीय औषधि है।

औषधियाँः आलू स्याह और तमर हिन्दी प्रत्येक 420 ग्राम,उन्नाब 50 की संख्या में।

निर्माण-विधिः सब को 2520 मिलीलीटर पानी इतना पकाएँ कि 840 मिलीलीटर शेष रह जाए। आब-ए-अनारैन, आब-ए-सेब और आब-ए-लीमूं प्रत्येक 315 मिलीलीटर सम्मिलित कर के क़न्द 420 ग्राम के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें।

- **शरबत का अन्य नुस्ख़ाः**

ऐसे शराबी व्यक्तियों के लिए बहुत अनुकूल है जो दर्द में रहता हों और उस के आमाशय के मुँह में कमज़ोरी हो गई हो।

औषधियाँः आब-ए-बिही, आब-ए-सेब, आब-ए-अनारैन प्रत्येक 420 ग्राम, आब-ए-लीमूं और आब-ए-नारन्ज प्रत्येक 210 ग्राम, अर्क़-ए-गुलाब 420 मिलीलीटर।

निर्माण-विधिः सब को साफ़ कर के पकाए। क़न्द 420 ग्राम के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें। अंत में ऊद हिन्दी 3.5 ग्राम, सुक्क 3.5 ग्राम, पोस्त-ए-बेरून-ए-पिस्ता 7 ग्राम, मस्तगी 17.5 ग्राम को सूक्ष्म चूर्ण कर के उस में सम्मिलित करें।

सेवन-मात्राः 35 ग्राम, ठंडे पानी में मिला कर घूँटें।

- **शरबत का अन्य नुस्ख़ाः**

ज़बरदसत शक्तिवर्धक है। पाचक है। मुँह की बदबू को दूर करता है। उन बूढ़े और कमज़ोर व्यक्तियों के लिए लाभदायक है जिन की पाचन क्रिया कमज़ोर होती है।

औषधियाँः पोस्त-ए-तुरन्ज 35 गग्रम,ज़न्जबील 35 ग्राम, साज़ज, क़ाक़ला, फ़न्जमुश्क, दार-ए-फ़िलफ़िल प्रत्येक 9 ग्राम, क़रन्फ़ुल, मस्तगी, सुंबुलुत्तीब, जौज़बोवा प्रत्येक 7 ग्राम, ऊद हिन्दी 24.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर एक बड़ी सी पोटली में रखें फिर अर्क़-ए-गुलाब 2430 ग्राम में डाल कर पकाएँ और साफ़ कर लें। शहद 1620 ग्राम, क़न्द 810 ग्राम मिला कर क़िवाम तैयार करें। अंत में मुश्क 4.5 ग्राम, ज़ाफ़रान 4.5 ग्राम को सूक्ष्म चूर्ण कर के उस में सम्मिलित कर के अच्छी तरह मिलाएँ।

सेवन-मात्राः10.5 ग्राम से 17.5 ग्राम तक है।

- **शरबत का अन्य नुस्ख़ाः**

यह दिल और दिमाग़ की कमज़ोरी में लाभदायक है। साधारण स्वभाव के

व्यक्तियों के लिए लाभदायक है।

औषधियाँ: गावज़बान, बादरन्जबोया, उस्तोखुद्दूस, गुल-ए-गुलाब, सन्दल सफ़ेद प्रत्येक 7 ग्राम, ऊद हिन्दी 3.5 ग्राम, क़रन्फुल, पोस्त-ए-हलीला काबुला, आमला प्रत्येक 10.5 ग्राम, आब्रेशम ख़ाम 17.5 ग्राम, सुंबुलुत्तीब 7 ग्राम, मवीज़ मुनक़्क़ा 210 ग्राम, क़न्द सफ़ेद 420 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को कूट कर के 1680 मिलीलीटर पानी में भिगो कर साफ़ कर लें और क़न्द मिला कर क़िवाम तैयार करें।

सेवन-मात्रा: 17.5 ग्राम से 35 ग्राम तक है।

- **शरबत का अन्य नुस्ख़ा:**

यह मूत्रकृच्छ में लाभदायक है। मूत्र में ख़ून आने को रोकता है।

औषधियाँ: बर्ग-ए-मूरद ख़ुश्क, बर्ग-ए-सेब, बर्ग-ए-ख़्यार, मुर, कुन्दुर, गुलनार, बलूत।

निर्माण-विधि: सब को शराब-ए-अंगूरी के साथ पकाएँ। साफ़ कर के सुरक्षित कर लें।

सेवन-मात्रा: 35 ग्राम।

सेवन-समय: प्रतिदिन सुबह।

- **शरबत-ए-सअद:**

यह भारतीय हकीमों द्वारा प्रयोग किया जाता है। बवासीर में लाभदायक, आमाशयवर्धक और मुँह की बदबू दूर करता है।

औषधियाँ: सअद 70 ग्राम, आमला 35 ग्राम, पुरानी क़न्द 122 ग्राम।

निर्माण-विधि: सअद और आमला को अर्धकुटा कर के 810 मिलीलीटर पानी और 122 ग्राम क़न्द के साथ चीनी के पात्र में रखें और एक हफ़्ता के लिए ज़मीन के अन्दर दफ़न कर दें। तत्पश्चात निकाल कर साफ़ करें। नियमानुसार क़िवाम तैयार करें।

सेवन-मात्रा: 35 ग्राम।

- **शरबत-ए-नानख़्वाह :**

यह भारतीय हकीमों द्वारा प्रयोग किया जाने वाला नुस्खा है। यह ठंडक की अधिकता, पेट फूलने, पेट में गुड़गुड़ाहट और पाचन में लाभदायक है।

औषधियाँ: नानख़्वाह 175 ग्राम, साफ़ पानी 1620 मिलीलीटर।

निर्माण-विधि: नानख़्वाह व साफ़ पानी को एक पात्र में रख कर किसी गर्म कमरे में एक हफ़्ते के लिए रख छोड़ें। तत्पश्चात उस को पका कर साफ़ कर लें और क़िवाम तैयार करें।

सेवन-मात्रा: रोगी की स्थिति देखते हुए 10.5 से 35 ग्राम तक की मात्रा में दें।

- **शरबत-ए-सुरूरः**

यह "इरशाद" पुस्तक से लिया गया नुस्खा है। यह स्वभाव में हर्षोल्लास उत्पन्न करता है। ग़म दूर करता है। Vital Organs को सशक्त बनाता है। आमाशयवर्धक है। इन के अतिरिक्त इस से और भी बहुत से लाभों की प्राप्ति होती है।

औषधियाँ : हब्बुलआस ताज़ा, तुख़्म-ए-रैहान, तुख़्म-ए-बादरन्जबोया, बर्ग-ए-बादरन्जबोया, हाशा, पोस्त-ए-बेरून-ए-पिस्ता, क़िशर-ए-सफ़रजल, क़िशर-ए-तुरन्ज, तुख़्म-ए-बादरूज, नम्माम, मरज़न्जोश, पार्सियाउशां, हियूफ़ारिक़ून, लिसानुलअसाफ़ीर, गुल-ए-सुर्ख़, सन्दलैन, राज़ियाना, ज़रावन्द मुरहरज, फ़ुक़ाह-ए-इज़्ख़िर, नानख़्वाह, सलीख़ा, आब्रेशम ख़ाम, जअदहअ गावज़बान, असारून, फ़ूदनज, सअतर और क़न्तूरियून प्रत्येक 9 ग्राम, क़ुस्त हिन्दी, सुंबुलुत्तीब, साज़ज, ज़न्जबील, ख़ूलन्जान, जौज़बोवा, बिस्बासा, क़ाक़ला, क़रन्फ़ुल, दार-ए-चीनी, फ़िलफ़िल, दार-ए-फ़िलफ़िल और ज़ाफ़रान प्रत्येक 4.5 ग्राम, पोस्त-ए-बीख़-ए-बादियान 13.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को अर्धकुटा कर के रात भर ख़मीर में भिगोएँ फिर पका कर साफ़ कर लें। उपर्युक्त औषधियों के तलछट को अर्क़-ए-गुलाब में मल छान कर साफ़ कर लें फिर सभी औषधियों को साफ़ शहद और क़न्द 840 ग्राम में मिलाएँ और पका कर क़िवाम तैयार करें।

अंत में मस्तगी, ज़ाफ़रान, दरूनज, बहमन, क़रन्फ़ुल, सुक्क, अंबर, मुश्क, क़ाक़ला, सन्दल सफ़ेद और ऊद क़िमारी प्रत्येक 3.5 ग्राम को कूट छान कर शरबत के क़िवाम में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 17.5 ग्राम।

अनुपानः अर्क़-ए-गुलाब के साथ प्रयोग करें।

❑❑❑

### द्वितीय खण्ड
# द्वितीया अध्याय

## लऊक़ के नुस्खे

- **लऊक़–ए–सपिस्ताँः**

यह हलक़ के खुरदुरेपन, खाँसी Pleurisy, Bronchitis, दमा में लाभदायक है।

औषधियाँः सपिस्ताँ 22 दाना,मवीज़ तायफ़ी 140 ग्राम, फ़ुलूस ख़्यार शंबर 45 ग्राम, बेद मुश्क मुक़श्शर 140 ग्राम।

नर्माण-विधिः सब को 1260 मिलीलीटर वर्षा के पानी में रात भर भिगोने के बाद पकाएँ। शकर के साथ क़िवाम तैयार करें।

- **लऊक़–ए–ज़ूफ़ाः**

यह श्वास की तंगी, पुरानी खाँसी, दमा में लाभदायक और गाढ़े द्रव्यों को सीने अथवा फेफड़ों से बाहर निकालता है।

औषधियाँः ज़ूफ़ा ख़ुश्क, बीख़-ए-सोसन प्रत्येक 70 ग्राम।

नर्माण-विधिः बीख़-ए-सोसन सेहराई को कूट ज़ूफ़ा के साथ 1260 मिलीलीटर पानी में एक रात भिगोने के बाद पकाएँफिर शकर 420 ग्राम के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें।

- **लऊक़–ए–हब्बुर्रशादः**

यह बलग़मी खाँसी में लाभदायक और सीने को गाढ़े देहद्रव्यों से पाक करता है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-तुरह तेज़क 35 ग्राम, असलुस्सूस मुक़श्शर 14 ग्राम, अनीसून और राज़ियाना प्रत्येक 10.5 ग्राम।

नर्माण-विधिः सब को अर्धकुटा कर के पकाएँ और साफ़ कर लें। शहद 210 ग्राम के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें।

- **लऊक़–ए–बज़्र–ए–कताँः**

यह दमा और पुरानी खाँसी में लाभदायक है। यह सीने को द्रव्यों से पाक करता

है और साँस लेने में आसानी पैदा करता है।

औषधियाँ: बज़्र-ए-कताँ बिरयाँ 105, क़िर्दमाना 35 ग्राम।

नर्माण-विधि: सब को अर्धकुटा कर लें। शहद के क़िवाम में मिला कर लऊक़ तैयार करें।

- **लऊक़-ए-तबाशीर:**

यह फेफड़ों के Ulcers और गर्मी के कारण होने वाली खाँसी में लाभदायक है।

औषधियाँ: बिस्बासा, कतीरा, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-कदू, मग़ज़-ए-चिलग़ोज़ा और समग़-ए-अरबी प्रत्येक 24.5 ग्राम।

नर्माण-विधि: सब को कूट छान कर रोग़न-ए-बादाम और शहद के साथ मिलाएँ।

सेवन-मात्रा: 9 ग्राम।

- **लऊक़-ए-बादाम:**

यह खाँसी, हलक़ के खुरदुरेपन और श्वास नली के खुरदुरेपन में लाभदायक है।

औषधियाँ: समग़-ए-अरबी, कतीरा, निशास्ता और रुब्बुस्सूस प्रत्येक 24.5 ग्राम, शकर 270 ग्राम।

नर्माण-विधि: सब को कूट छान कर रोग़न-ए-बादाम और शहद के साथ मिलाएँ।

सेवन-मात्रा: 9 ग्राम।

- **लऊक़-ए-बादाम:**

यह खाँसी, हलक़ के खुरदुरेपन और श्वास नली के खुरदुरेपन में लाभदायक है।

औषधियाँ: समग़-ए-अरबी, कतीरा, निशास्ता और रुब्बुस्सूस प्रत्येक 35 ग्राम।

नर्माण-विधि: सभी औषधियों को रोग़न-ए-बादाम में चर्ब कर के जुल्लाब के क़िवाम में मिलाएँ और लऊक़ करें।

सेवन-मात्रा: 10.5 ग्राम लऊक़ करें।

- **लऊक़-ए-रुब्बुस्सूस:**

यह पुरानी खाँसी में लाभदायक है, सीने और फ़ेफड़ों से चिपचिपे द्रव्य बाहर निकालता और श्वास रोगों में लाभदायक है।

औषधियाँ: रुब्बुस्सूस, कतीरा, बारज़द, मग़ज़-ए-बादाम, राज़ियाना सभी समभाग में।

नर्माण-विधि: सब को शहद में मिलाकर क़िवाम तैयार करें।

- **लऊक़-ए-इश्क़ील:**

तरल पदार्थ से होने वाली पुरानी खाँसी में लाभदायक है।

औषधियाँः इश्क़ील मुशव्वा 10.5 ग्राम, ईर्सा 7 ग्राम, फ़रासियून और ज़ूफ़ा-ए-ख़ुश्क प्रत्येक 3.5 ग्राम।

नर्माण-विधिः सब को शहद में मिलाकर क़िवाम तैयार करें।

- **लऊक़-ए-ख़्यार शंबरः**

यह Laxative है। यह सीने और फेफड़ों से देहद्रव्यों को बाहर निकालता है। यह Pleurisy और दमा में लाभदायक है।

औषधियाँः बनफ़्शा 17.5 ग्राम, उन्नाब 20 दाना, सपिस्ताँ 50 दाना, मवीज़ तायफ़ी मुनक़्क़ा 30 दाना, बेद मुश्क मुक़श्शर 35 ग्राम, तुख़्म-ए-ख़शख़ाश कूटा हुआ 90 ग्राम, ज़ूफ़ा, कतीरा, राज़ियाना और ईर्सा प्रत्येक 14 ग्राम, समग़-ए-आलू स्याह 7 ग्राम, पर्सियाउशाँ 22.5 ग्राम, अन्जीर सफ़ेद 20 की संख्या में ।

नर्माण-विधिः उपर्युक्त औषधियों को अर्धकुटा कर के रात भर पानी में भिगोएँ फिर पकाने के बाद मल छान कर साफ़ कर लें। फिर फ़ुलूस ख़्यार शंबर 90 ग्राम मिलाएँ और 405 ग्राम शकर डाल कर दोबारा साफ़ करें और क़िवाम तैयार करें। अंत में मग़ज़-ए-बादाम मुक़श्शर और मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यारैन प्रत्येक 17.5 ग्राम, मग़ज़-ए-दाना-ए-आबी 10.5 ग्राम, बालाई सफ़ेद की हुई 45 ग्राम, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-कद्दू, तुख़्म-ए-ख़त्मी सफ़ेद और हुल्बा प्रत्येक 10.5 ग्राम को हल्का कूट छान कर उस में सम्मिलित करें और रोग़न-ए-बादाम 90 ग्राम डाल कर लऊक़ तैयार करें।

- **लऊक़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Pharyngitis बुख़ार और प्यास में लाभदायक है। यह ज़ुबान के खुरदुरेपन को दूर करता है। यह खाँसी और सीने के रोगों में लाभदायक है।

औषधियाँः उन्नाब 50 दाना, तुख़्म-ए-ख़त्मी 35 ग्राम, कतीरा 21 ग्राम, मवीज़ मुनक़्क़ा 87.5 ग्राम, बनफ़्शा और असलुस्सूस मुक़श्शर व नीम कोब प्रत्येक 38.5 ग्राम, बज्र-ए-क़तूना 70 ग्राम।

नर्माण-विधिः सभी औषधियों को 2940 मिलीलीटर पानी में इतना पकाएँ कि एक तिहाई शेष रह जाए। उस को साफ़ कर के और फ़ानीज़ 420 ग्राम सम्मिलित कर के क़िवाम तैयार करें। अंत में रोग़न-ए-बनफ़्शा और रोग़न-ए-बादाम 1260 ग्राम सम्मिलित कर के लऊक़ तैयार करें और आवश्यकता के समय प्रयोग करें।

- **लऊक़-ए-ख़शख़ाशः**

यह गर्मी के कारण होने वाले नज़ला में लाभदायक है, गाढ़े नज़ला को पतला करता है।

औषधियाँ: तुख़्म-ए-ख़शख़ाश सफ़ेद 35 ग्राम, पोस्त-ए-ख़शख़ाश 17.5 ग्राम।

नर्माण-विधि: सभी औषधियों को अर्धकुटा कर के रात भर पानी में भिगोएँ और पका कर साफ़ कर लें फिर शकर मिला कर क़िवाम तैयार करें। अंत में निशास्ता, कतीरा और समग़-ए-अरबी प्रत्येक 10.5 ग्राम सम्मिलित कर के लऊक़ तैयार करें।

- **लऊक़-ए-हब्बुलकुत्न:**

यह सीने को देहद्रव्यों से पाक करता है। यह पुरानी खाँसी और सीने की सूजन में लाभदायक है ।

औषधियाँ: मग़्ज़-ए-बादाम मुक़श्शर 35 ग्राम, मग़्ज़-ए-पंबादाना 7 ग्राम, पका हुआ बाक़ला सफ़ेद 17.5 ग्राम, कर्सनह और फ़रासियून प्रत्येक 10.5 ग्राम।

नर्माण-विधि: सब को हल्के हाथ से कूटने छानने के बाद फ़ानीज़ के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें और लऊक़ बनाएँ।

- **लऊक़-ए-किब्रीत:**

यह सीने को गाढ़े देहद्रव्यों से पाक करता है।

औषधियाँ: पका कर साफ़ किया हुआ आब-ए-किब्रीत 1215 ग्राम, साफ़ शहद 810 ग्राम।

नर्माण-विधि: आब-ए-किब्रीत और शहद पका कर क़िवाम तैयार कर लें।अंत में मग़्ज़-ए-चिलग़ोज़ा, मग़्ज़-ए-पंबादाना और आरद-ए-बाक़ला प्रत्येक 7 ग्राम, बुज़ुर्ग बिरयां और हुल्बा प्रत्येक 17.5 ग्राम, मग़्ज़-ए-पिस्ता 52.5 ग्राम की मात्रा में नियमानुसार फ़ानीज़ के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें।

- **लऊक़-ए-ख़्यार शंबर:**

यह बूढ़े और ठंडे स्वभाव के व्यक्तियों के लिए लाभदायक है। सीने को गाढ़े देहद्रव्यों से पाक करता है।

औषधियाँ: पाक साफ़ किया हुआ ख़्यार शंबर 810 ग्राम, पानी 405 मिलीलीटर और रोग़न-ए-गाव 405 ग्राम।

नर्माण-विधि: ख़्यार शंबर को पानी और घी में अच्छी तरह पकाएँ। मल छान कर शहद 810 ग्राम के साथ क़िवाम तैयार करें।

- **लऊक़ बरा-ए-अतफ़ाल:**

यह बच्चों के लिए बहुत अनुकूल है। इस को माँ के दूध में मिला कर या आरद-ए-गिलो के साथ पका कर देने से लाभ पहुँचता है।

औषधियाँः समग़-ए-अरबी, कतीरा, रुब्ब-ए-सोसन और फ़ानीज़ प्रत्येक 14 ग्राम, मग़ज़-ए-बिही दाना 3.5 ग्राम।

नर्माण-विधिः सभी औषधियों का हल्का कूट छान कर क़िवाम तैयार करें और नियमानुसार लऊक़ बनाएँ।

- **लऊक़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह श्वास की तंगी, दमा और खाँसी में लाभदायक है।

औषधियाँः मग़ज़-ए-चिलग़ोज़ा और मग़ज़-ए-बादाम मुक़श्शर प्रत्येक 140 ग्राम, रुब्बुस्सूस 70 ग्राम, शहद में निकाला हुआ रोग़न-ए-बादाम 17.5 ग्राम।

नर्माण-विधिः नियमानुसार लऊक़ तैयार करें।

- **लऊक़-हब्बुस्सनोबरः**

यह दमा, श्वास की तंगी और पुरानी खाँसी में लाभदायक है। सीने को गाढ़े बलग़म से पाक करता है।

औषधियाँः शहद 405 ग्राम और गाय का घी।

निर्माण-विधिः खर्मा को शहद 405 ग्राम और गाय के घी में इतना पकाएँ कि नर्म हो जाए फिर सभी औषधियों को उस में सम्मिलित करें। कुछ नुस्खों के अनुसार इस में ज़रावन्द मुदहरज 7 ग्राम की मात्रा में सम्मिलित किया जाता है।

- **लऊक़-ए-रुम्मानः**

यह दिमाग़ से गिरने वाले नज़लावी पदार्थों और ऐसी खाँसी में लाभदायक है जो गर्मी के कारण होती है।

औषधियाँः अनार शीरीं।

नर्माण-विधिः अनार शीरीं इच्छानुसार लें और निचोड़ कर उस का उसारा प्राप्त कर लें फिर पत्थर की देग में इतना पकाएँ कि आधा शेष रह जाए फिर उस के आधा शकर तबरज़द मिलाकर कर के हल्की आँच पर इतना पकाएँ कि लऊक़ तैयार हो जाए।

- **लऊक़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह सीने को नर्म करता है और खाँसी में लाभदायक है।

औषधियाँः बाक़ला मुक़श्शर 175 ग्राम, निशास्ता, कतीरा, समग़-ए-अरबी प्रत्येक 175 ग्राम, तुख़्म-ए-ख़त्मी 175 ग्राम, रुब्बुस्सूस 35 ग्राम, तुख़्म-ए-ख़शख़ाश 35 ग्राम, मग़ज़-ए-बादाम मुक़श्शर 70 ग्राम,मवीज़ मुनक़्क़ा 70 ग्राम, मग़ज़-ए-बिही दाना मुक़श्शर, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-कदू, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यारैन, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-खरपज़ह

प्रत्येक 17.5 ग्राम।

नर्माण-विधिः मवीज़ को हल्का कूट कर रोग़न-ए-बनफ़्शा और रोग़न-ए-बादाम में पकाएँ। मग़्ज़ियात को हल्का कूट लें और अन्य औषधियों को भी कूट कर सब को एक साथ मैफ़ुख़्तज में मिलाएँ और हावन में सुरक्षित कर लें। यह उस व्यक्ति के लिए बहुत लाभदायक है जिस के दिमाग़ में तकलीफ़ हो।

- **लऊक़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह यक्ष्मा व टीबी रोगियों के लिए लाभदायक है। गर्मी से होने वाले नज़ला में भी लाभ पहुँचाता है।

औषधियाँः मग़्ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यारैन, बिही दाना, कतीरा, निशास्ता और समग़-ए-अरबी प्रत्येक 21 ग्राम, ख़शख़ाश और तुख़्म-ए-कताँ प्रत्येक 10.5 ग्राम, मग़्ज़-ए-पंबादाना और मग़्ज़-ए-बादाम शीरीं प्रत्येक 5.25 ग्राम, मग़्ज़-ए-बादाम तल्ख़ और ज़ाफ़रान प्रत्येक 10.5 ग्राम।

नर्माण-विधिः फ़ानीज़ 420 ग्राम से क़िवाम तैयार करें।

- **लऊक़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Pthysis और सूखी खाँसी में लाभदायक है।

औषधियाँः बाक़ला मुक़श्शर 52.5 ग्राम, निशास्ता, कतीरा, मग़्ज़-ए-तुख़्म-ए-कदू मग़्ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यारैन, समग़-ए-अरबी प्रत्येक 17.5 ग्राम, तुख़्म-ए-ख़त्मी, ख़शख़ाश सफ़ेद, मग़्ज़-ए-बिहीदाना, मग़्ज़-ए-तुख़्म-ए-खरपज़ह प्रत्येक 35 ग्राम, रुब्बुस्सूस, मग़्ज़-ए-बादाम मुक़श्शर, मवीज़ मुनक़्क़ा प्रत्येक 70 ग्राम, रोग़न-ए-बादाम 52.5 ग्राम।

नर्माण-विधिः सब को कूट छान कर शकर और शहद के साथ मिलाएँ।

- **लऊक़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह सीने और Larynx को द्रव्यों से पाक करता है। उस के प्रयोग से श्वास लेने में आसानी होती है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-अस्पन्द और कुन्जद मुक़श्शर प्रत्येक 10.5 ग्राम, ज़ूफ़ा ख़ुश्क 24.5 ग्राम, रुब्बुस्सूस 35 ग्राम।

नर्माण-विधिः सब को कूट कर शहद के क़िवाम में मिलाएँ।

- **लऊक़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह उस सूखी खाँसी में लाभदायक है जो सू-ए-मिज़ाज हार के कारण होती है।

यह यक्ष्मा व टीबी रोगियों के लिए लाभदायक है।

औषधियाँः लुआब-ए-बज़्र-ए-क़तूना, लुआब-ए-बिही दाना शीरीं, लुआब-ए-तुख़्म-ए-ख़त्मी, आब-ए-अनार शीरीं, आब-ए-कदू, आब-ए-ख़्यार, आब-ए-बर्ग-ए-ख़ुर्फ़ह और आब-ए-नैशकर प्रत्येक 70 ग्राम, समग़-ए-अरबी, कतीरा, मग़ज़-ए-बादाम शीरीं और क़न्द सफ़ेद प्रत्येक 100 ग्राम, तुख़्म-ए-ख़शख़ाश 7 ग्राम और शकर तबरज़द 405 ग्राम।

नर्माण-विधिः कूटने योग्य औषधियों को कूट लें और फिर सब को लुआबों के साथ इतना पकाएँ कि वह गाढ़ा हो जाए फिर लगातार थोड़ा थोड़ा कर के उस के मुँह में रखें और उस का पानी निगलते रहें।

- **लऊक़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह उस सूखी खाँसी में लाभदायक है जो सू-ए-मिज़ाज बारिद के कारण होती है।

औषधियाँः लुआब-ए-हब्बुर्रशाद, लुआब-ए-तुख़्म-ए-कताँ प्रत्येक 175 ग्राम, साफ़ शहद 350 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को मिला कर क़िवाम तैयार करें। अगर मुर मक्की 1.75 ग्राम और मीअह सायला 7 ग्राम को इस में सम्मिलित किया जाए तो यह अधिक प्रभावशाली होगा।

- **लऊक़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह उस खाँसी और श्वास की तंगी में लाभदायक है जो सू-ए-मिज़ाज बारिद रतब के कारण होती है।

औषधियाँः जावशीर, मग़ज़-ए-बादाम तल्ख़, फ़िलफ़िल प्रत्येक 1-1 भाग, शहद।

निर्माण-विधिः जावशीर, मग़ज़-ए-बादाम तल्ख़ और फ़िलफ़िल प्रत्येक एक एक भाग को कूट छान लें और शहद बस्तह के क़िवाम में मिलाएँ फिर उनकी गोलियाँ बना कर किसी उचित पात्र में सुरक्षित कर लें।

- **लऊक़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह खाँसी, बलग़म और श्वास की तंगी में अत्याधिक लाभदायक है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-कताँ बूदादा, चिलग़ोज़ा, कतीरा और समग़-ए-अरबी प्रत्येक 14 ग्राम, ख़ुर्मा पका हुआ 10 दाना, रोग़न-ए-बादाम 17.5 ग्राम, शहद बस्तह 70 ग्राम।

निर्माण-विधिः नियमानुसार लऊक़ तैयार करें।

- **लऊक़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गर्मी के कारण होने वाले खाँसी, नज़ला और Pthysis रोग में लाभदायक है।

औषधियाँः लुआब-ए-बज्र-ए-क़तूना, लुआब-ए-बिही दाना और लुआब-ए-तुख़्म-ए-मर्व प्रत्येक 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को मिला कर क़िवाम तैयार करें।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम।

- **लऊक़-ए-बनफ़्शाः**

यह सीने को नर्म करता है। गर्मी के कारण होने वाले खाँसी और Inflammatory Colic रोग में लाभदायक है।

औषधियाँः बनफ़्शा ख़ुश्क 35 ग्राम, फ़ुलूस ख़्यार शंबर 17.5 ग्राम, पोस्त और दाना से पाक की हुई मवीज़ सुर्ख़ 35 ग्राम, उन्नाब 10 दाना और सपिस्ताँ 30 दाना।

नर्माण-विधिः सभी औषधियों को साफ़ पानी में पकाएँ और साफ़ कर लें फिर क़न्द सफ़ेद 420 ग्राम और रोग़न-ए-बादाम 210 के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें।

- **लऊक़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह खाँसी में लाभदायक है और सीना अथवा श्वास के अंगों को नर्म करता है।

औषधियाँः कतीरा,समग़-ए-अरबी और बिही दाना मुक़श्शर प्रत्येक 3.5 ग्राम,रुब्बुस्सूस 17.5 ग्राम, निशास्ता और तुख़्म-ए-ख़शख़ाश प्रत्येक 832 मिलीग्राम।

नर्माण-विधिः सब को कूट छान कर रोग़न-ए-बादाम 3.5 ग्राम और शकर 70 ग्राम के क़िवाम में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम है।

सेवन-विधिः मुँह में रखें और उस का पानी निगलते रहें।

❑❑❑

द्वितीय खण्ड

# तृतीय अध्याय

## मुरब्बा के नुस्ख़े

- **गुलक़न्द आफ़्ताबी:**

यह आमाशयवर्धक है। बलग़म बाहर निकालता है। पाचक और Laxative है।

औषधियाँ: ज़ीरा और डन्ठल से पाक की हुई गुलाब की पंखुड़ियाँ 810 ग्राम, क़न्द सफ़ेद 810 ग्राम।

निर्माण-विधि: ज़ीरा और डन्ठल से पाक की हुई गुलाब की पंखुड़ियाँ 810 ग्राम लेकर हाथ से मल लें या क़ैंची से कतर लें और उन की तरलता सूख जाने के लिए एक दिन छोड़ दें फिर क़न्द सफ़ेद 810 ग्राम को कूट छान कर उपर्युक्त पंखुड़ियों के साथ अच्छी तरह मिला लें और शीशा या चीनी के पात्र में भर कर धूप में रख दें। कुछ दिनों के बाद उस को और घोटें। अगर शीरा कम हो तो आवश्यकतानुसार क़न्द का क़िवाम बना कर दोबारा मिलाएँ और अच्छी तरह मिला कर प्रयोग करें।

- **गुल अंगबीन:**

यह आमाशय और जिगर की ठंडक में लाभदायक है। यह उस जलोदर रोग, Anaemia और बदहज़्मी में लाभ पहुँचाता है जो ठंडक के कारण होता है।

औषधियाँ: गुलाब की पंखुड़िया, साफ़ शहद।

निर्माण-विधि: गुलाब की पंखुड़ियों को लेकर उपर्युक्त विधि से से मल लें या क़ैंची से कतर लें लेकिन उन को क़न्द की बजाए साफ़ शहद के साथ मिला कर धूप में रखें और चार दिन बीतने के बाद प्रयोग करें।

- **मुरब्बा-ए-बनफ़्शा:**

यह सीने को नर्म करता है। गर्मी के कारण होने वाली खाँसी में लाभदायक है। Hoarseness of Pharynx में लाभदायक और Laxative है।

औषधियाँ: गुल-ए-बनफ़्शा ताज़ा और शीरा-ए-क़न्द।

निर्माण-विधि: आवश्यकतानुसार गर्द व ग़ुबार से पाक साफ़ गुल-ए-बनफ़्शा ताज़ा ले कर नियमानुसार गुलक़न्द तैयार करें। ऊपर से शीरा-ए-क़न्द डाल कर

चालीस दिनों तक धूप में रखें और उस के पश्चात प्रयोग करें।

- **गुल अंगबीन-ए-गावज़बान:**

यह हृदयवर्धक है। Palpitation, Syncope, दिल की कमज़ोरी और ठंडे स्वभाव व्यक्तियों के लिए लाभदायक है।

औषधियाँ: गुल-ए-गावज़बान ताज़ा और क़न्द सफ़ेद।

निर्माण-विधि: आवश्यकतानुसार गुल-ए-गावज़बान ताज़ा लेकर क़न्द सफ़ेद के साथ मिलाएँ और अच्छी तरह मलने के बाद धूप में रख दें। चालीस दिन बीतने के बाद प्रयोग करें।

- **गुल अंगबीन-ए-सफ़रजली:**

चूंकि यह एक मुफ़र्रेह औषधि है इसलिए यह आमाशयवर्धक, हृदयवर्धक और मस्तिष्कवर्धक है।

औषधियाँ: शगूफ़ा-ए-सफ़रजल की पंखुड़ियाँ, क़न्द सफ़ेद।

निर्माण-विधि: शगूफ़ा-ए-सफ़रजल की पंखुड़ियों को क़न्द सफ़ेद के साथ मिलाएँ और अच्छी तरह मलने के बाद धूप में रख दें। चालीस दिन के बाद प्रयोग करें।

- **मुरब्बा-ए-हलीला:**

यह आमाशयवर्धक और Laxative है। भूलने के रोग को दूर करता है। बवासीर रोगियों को लाभ पहुँचाता है। दृष्टि-शक्ति और बालों के कालेपन की सुरक्षा करता है। अगर थोड़े से किश्नीज़ ख़ुश्क बिरयां के साथ प्रयोग किया जाए तो आमाशय के Vapours के कारण होने वाले सर दर्द में लाभ पहुँचाता है।

औषधियाँ: हलीला काबुली और क़न्द सफ़ेद।

निर्माण-विधि: आवश्यकतानुसार मोटा और पका हुआ हलीला काबुली लेकर किसी पात्र में भर लें और उस के ऊपर पानी और ज़र्द चौब की राख डाल कर बारह दिनों तक रख छोड़ें। उस के बाद धो कर राख निकाल दें और पत्थर की देग में पकाएँ। इस बीच थोड़ी सी नीम की लकड़ी को अर्धकुटा कर के देग में डालें जो हलीला के साथ उबले और पक जाए। फिर देग से निकाल कर ताज़ा पानी से धोएँ। दूसरी बार फिर पकाएँ ताकि झड़ना कम हो जाए। अब सूई से छेद करें और देग में रखें फिर साफ़ शहद या साफ़ शकर के साथ पका कर क़िवाम तैयार करें।

- **मुरब्बा-ए-ज़न्जबील:**

औषधियाँ: ज़न्जबील ताज़ा या ख़ुश्क ।

निर्माण-विधिः अगर ज़न्जबील ताज़ा उपस्थितना हो तो ज़न्जबील ख़ुश्क को ही आवश्यकतानुसार ले कर 21 दिनों के लिए रेत के नीचे दबा दें और प्रतिदिन उस रेत के ऊपर पानी बहाते रहें फिर निकाल कर उसे धो लें और साफ़ पानी में पकाएँ। अब सूई से छेद करें और देग में रखें फिर साफ़ शहद या साफ़ शकर के साथ पका कर क़िवाम तैयार करें।

- **मुरब्बा-ए-शक़ाक़ुलः**

यह कामोद्दीपक है। लिंग में जोश एवं तनाव उत्पन्न करता है। मूत्राशय के लिए लाभदायक है।

औषधियाँः शक़ाक़ुल, जुल्लाब और शकर।

निर्माण-विधिः शक़ाक़ुल ताज़ा को रात भर पानी में भिगोने के बाद उस के पोस्त को छील कर अलग कर दें फिर उसे जुल्लाब और शकर के क़िवाम में सुरक्षित कर लें और जब इच्छा हो प्रयोग करें।

- **मुरब्बा-ए-सेबः**

हृदयवर्धक व आमाशयवर्धक है। दिल की कमज़ोरी में अत्याधिक लाभदायक है।

औषधियाँः सेब असफ़हानी, शकर या शहद।

निर्माण-विधिः छिलका, तुख़्म और रेशों से पाक किया हुआ सेब असफ़हानी आवश्यकतानुसार ले कर पत्थर की देग में इतना पकाएँ कि सेब के रंग की भाँति हो जाए फिर शकर या शहद के साथ इतना पकाएँ कि क़िवाम तैयार हो जाए । पूरी तरह से पक जाने के बाद ठंडा कर लें। अंत में थोड़ी मात्रा में मुश्क और अर्क़-ए-गुलाब सम्मिलित कर के चीनी के पात्र में सरक्षित कर लें। जब इच्छा हो तो वरक़-ए-नुक़रह के साथ मिला कर प्रयोग करें। यह अत्याधिक प्रभावशाली है।

- **मुरब्बा-ए-बिहीः**

आमाशय को सशक्त बनाने के संदर्भ में यह मुरब्बा-ए-सेब की तुलना में बढ़िया और प्रभावशाली है।

औषधियाँः बिही असफ़हानी शीरीं, जुल्लाब।

निर्माण-विधिः पकी हुई और पास्त एवं तुख़्म से पाक बिही असफ़हानी शीरीं को ले कर पत्थर की देग में पकाएँ फिर आवश्यकतानुसार जुल्लाब सम्मिलित कर के दोबारा इतना पकाएँ कि जुल्लाब का क़िवाम तैयार हो जाए और बिही पक जाए। ठंडा हो जाने के बाद सुरक्षित कर लें और इच्छानुसार प्रयोग करें।

- **मुरब्बा-ए-कुम्मस्सराः**

यह बहुत ही बढ़िया और Delicate होता है।

औषधियाँः अमरूद और क़न्द।

निर्माण-विधिः आवश्यकतानुसार अमरूद लें और पोस्त, तुख़्म और रेशों से पाक कर के पकाएँ और क़न्द के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें।

- **मुरब्बा-ए-कदूः**

यह सीने, फेफड़े और मूत्राशय के लिए लाभदायक है।

औषधियाँः कदू, पानी और शकर या शहद।

निर्माण-विधिः पका हुआ और पोस्त एवं तुख़्म से पाक कदू ताज़ा को छोटे छोटे टुकड़े कर के चूने के पानी में एक घड़ी के लिए रख दें फिर साफ़ पानी से धो लें और इतना उबालें कि नर्म हो जाए। तत्पश्चात पानी से निकाल कर निचोड़ लें और शकर या शहद के साथ मिला कर नियमानुसार क़िवाम तैयार करें फिर ठंडा होने के बाद उतार कर सुरक्षित कर लें।

- **मुरब्बा-ए-हिन्दुवानाः**

यह मुरब्बा-ए-कदू की तुलना में हल्का और बढ़िया होता है। यह प्यास बुझाता है।

औषधियाँः हिन्दुवाना, पानी और शकर।

निर्माण-विधिः हिन्दुवाना को कदू की भाँति पोस्त से पाक कर के दो घड़ी के लिए चूने के पानी में रख दें फिर साफ़ पानी  में दोबारा पकाएँ और धो कर साफ़ कर लें और शकर के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें। अंत में मुश्क और अर्क़-ए-गुलाब मिला कर खुशबूदार बना लें और प्रयोग करें।

- **मुरब्बा-ए-गज़रः**

यह कामोद्दीपक है। गुर्दा व कमर को मज़बूत करता है।

औषधियाँ : गाजर, शहद।

निर्माण-विधिः बड़ी गाजर को छील कर छोटे छोटे टुकड़े कर लें और उस के बीच के सख़्त भाग को निकाल कर शहद में इतना पकाएँ कि वह नमर हो जाए फिर आग से उतार कर ठंडा कर लें। अंत में ज़न्जबील, जौज़बोवा, दार-ए-चीनी और क़ाक़ला प्रत्येक 7 ग्राम, मुश्क 832 मिलीग्राम और ज़ाफ़रान 3.5 ग्राम कूट छान कर थोड़े से अर्क़-ए-गुलाब के साथ सम्मिलित करें।

सेवन-मात्राः प्रतिदिन सुबह में 17.5 ग्राम की मात्रा में।

- **मुरब्बा-ए-बालंगोः**

यह बदन को मोटा करता है। मुफ़र्रेह और लज़ीज़ है।

औषधियाँः पोस्त-ए-तुरन्ज, पानी और शहद या शकर।

निर्माण-विधिः पोस्त-ए-तुरन्ज के गूदे को देग में रख कर दो तीन बार पकाएँ फिर देग से निकाल कर धोएँ और साफ़ कर के एक रात और एक दिन के लिए ताज़ा पानी में भिगो दें फिर निकाल कर दोबारा ताज़ा पानी में उबालें। तत्पश्चात फिर से दो तीन बार ताज़ा पानी में इतना पकाएँ कि उस का कड़वापन दूर हो जाए और अच्छी तरह पक जाए फिर उसे धो कर साफ़ कर लें और हल्के अन्दाज़ में निचोड़ कर शहद या शकर के साथ पकाएँ। ठंडा होने के बाद चीनी के पात्र में सुरक्षित कर लें।

- **मुरब्बा-ए-आलूचहः**

यह सफ़रा का वर्चस्व समाप्त करता और प्यास बुझाता है।

औषधियाँः आलूचह सुल्तानी, पानी और शहद या क़न्द।

निर्माण-विधिः आलूचह सुल्तानी को इच्छानुसार ले कर पत्थर की देग में दो तीन बार पकाएँ और ठंडा कर लें फिर दोबारा शहद या क़न्द के साथ पकाएँ।

- **मुरब्बा-ए-शाह आलूः**

यह Laxative है। सफ़रा के वर्चस्व को समाप्त करता है और गर्म स्वभाव के व्यक्तियों के लिए बहुत लाभदायक है।

औषधियाँः आलू बुख़ारा, पानी और शहद या क़न्द।

निर्माण-विधिः आलू बुख़ारा को इच्छानुसार ले कर पानी में एक रात के लिए भिगो दें फिर क़न्द या शहद के साथ पकाएँ।

- **मुरब्बा-ए-जौज़ः**

यह सफ़रा की तेज़ी को तोड़ता है। मुरब्बा-ए-आलूचह की भाँति ही इस को भी तैयार करें।

- **मुरब्बा-ए-जौज़ः**

यह कामोद्दीपक है। यह कमर को मज़बूत और सीने को नर्म करता है।

औषधियाँः गर्दगान ताज़ा, पानी और शहद।

निर्माण-विधिः गर्दगान ताज़ा ले कर दस दिनों तक चूने के पानी में भिगोने के बाद मीठे पानी में पकाएँ फिर दस दिनों तक ताज़ा पानी में रखें लेकिन प्रतिदिन पानी बदल दिया करें ताकि उस की कड़वाहट पूरी तरह से समाप्त हो जाए। उस को सूई

से गोद कर छेद कर लें शीरा उस में चला जाए फिर शहद में इतना पकाएँ कि अच्छी तरह पक जाए। तत्पश्चात ठंडा होने पर किसी पात्र में सुरक्षित कर लें।

- **मुरब्बा–ए–वजः**

यह Gaseous Colic, पक्षघात और मिर्गी में लाभदायक है । यह पेट के फूलने और गुड़गुड़ाहट में भी लाभदायक है।

औषधियाँः मोटी वज तुर्की, पानी और शहद।

निर्माण-विधिः वज तुर्की को ले कर तीन चार दिनों तक पानी में रखें फिर साफ़ और ताज़ा पानी में पकाएँ। दो तीन बार साफ़ पानी में पकाने के बाद शहद के साथ पकाएँ और चालीस दिनों के बाद प्रयोग करें।

- **मुरब्बा–ए–लीमू व नारन्जः**

यह दोनों ही मुरब्बे सफ़रा की अधिकता में लाभ पहुँचाते हैं और गर्म स्वभाव के व्यक्तियों के लिए लाभदायक है।

औषधियाँः नारन्ज या लीमू, पानी और शहद।

निर्माण-विधिः नारन्ज या लीमू जो भी चाहें उसे ले कर पन्द्रह दिनों तक पानी और नमक में भिगो कर रखें लेकिन प्रतिदिन पानी और नमक को बदल दिया करें। तत्पश्चात कई बार मीठे पानी से धो कर साफ़ करें। दो तीन बार आब-ए-ख़ालिस में पकाने के बाद जब उस की कड़वाहट दूर हो जाए तो शीरा-ए-क़न्द या शहद के साथ पकाएँ।

- **मुरब्बा–ए–बादाम व पिस्ता व चिलग़ोज़ाः**

इन सभी के मुरब्बे कामोद्दीपक और स्वादिष्ट हैं।

औषधियाँः बादाम यापिस्ता या चिलग़ोज़ा।

निर्माण-विधिः बादाम यापिस्ता या चिलग़ोज़ा में से जो भी चाहें उसे ताज़ा ले कर शीरा-ए-क़न्द या शहद के साथ पकाएँ।

❑❑❑

## द्वितीय खण्ड
# चतुर्थ अध्याय

# रूब्ब के नुस्ख़े

- **रूब्ब-ए-बिहीः**

यह आमाशयवर्धक है। उल्टी और दस्त को रोकता है।

औषधियाँः पोस्त एवं तुख़्म से पाक किया हुआ बिही असफ़हानी का पका फल।

नर्माण-विधिः बिही असफ़हानी का पका फल पोस्त एवं तुख़्म से पाक कर के देग में रख कर इतना पकाएँ कि क़िवाम अच्छी तरह तैयार हो जाए फिर उसे शीशा या चीनी के पात्र में सुरक्षित कर लें और जब इच्छा हो प्रयोग करें।

- **रूब्ब-ए-ग़ौरहः**

यह सफ़रा की तेज़ी को तोड़ता है। प्यास बुझाता और क़ब्ज़ पैदा करता है।

औषधियाँ एवं नर्माण-विधिः इच्छानुसार ग़ौरह का फल लें और हाथों से तोड़ कर उस के बीज निकाल दें। फिर पत्थर के हावन में कूट कर उस का रस प्राप्त कर लें और बिही की भाँति उसे पत्थर की देग में हल्की आँच पर इतना पकाएँ कि क़िवाम तैयार हो जाए। उसे शीशा या चीनी के पात्र में सुरक्षित कर लें।

- **रूब्ब-ए-तुरन्ज व नारन्ज व लीमूः**

इन सभी रुब्बों के प्रभाव एक दूसरे के क़रीब हैं। ये सफ़रा की तेज़ी को तोड़ते हैं। प्यास बुझाते और शरीर से ज़हरों के दुष्प्रभाव को दूर करते हैं।

औषधियाँः आब-ए-तुरन्ज, आब-ए-नारन्ज, आब-ए-लीमू।

नर्माण-विधिः आब-ए-तुरन्ज या आब-ए-नारन्ज या आब-ए-लीमू को पत्थर की देग में हल्की आँच पर इतना पकाएँ कि क़िवाम तैयार हो जाए।

- **रूब्ब-ए-मूरदः**

यह आमाशयवर्धक है। आँतों की ख़राश, ख़ूनी दस्त, Haemoptysis और खाँसी में लाभदायक है।

औषधियाँः मूरद के पके बीज।

नर्माण-विधिः इच्छानुसार मूरद के पके बीज लें और कूट कर निचोड़ लें फिर साफ़ करें और पका कर क़िवाम तैयार करें।

- **रूब्ब का अन्य नुस्ख़ाः**

यह सफ़रावी बुख़ारों में लाभदायक और Laxative है।

औषधियाँः पके हुए आलू स्याह के फल।

नर्माण-विधिः पके हुए आलू स्याह को अच्छी तरह मलें और उस के रस को साफ़ कर के नियमानुसार क़िवाम तैयार करें।

- **रूब्ब-ए-अनारः**

यह आमाशयवर्धक और भूक बढ़ाने वाला है। जिगर के लिए लाभदायक है। ख़ूनी एवं सफ़रावी बुख़ारों में लाभदायक है।

औषधियाँः अनार अमलसी के पके फल।

नर्माण-विधिः अनार अमलसी के पके फल को हाथों से निचोड़ कर उस का रस प्राप्त कर लें और साफ़ कर के पत्थर की देग में हल्की आँच पर नियमानुसार पकाएँ और क़िवाम तैयार करें।

- **रूब्ब-ए-रीबासः**

यह सफ़रा की तेज़ी को तोड़ता है और भूक बढ़ाता है।

औषधियाँः रीबास के पके फल।

नर्माण-विधिः रीबास के पके फल को इच्छानुसार लेकर पत्थर या लकड़ी के हावन में अच्छी तरह कूट लें और उस का रस प्राप्त कर लें फिर साफ़ कर के पत्थर की देग में हल्की आँच पर इतना पकाएँ कि क़िवाम तैयार हो जाए।

- **रूब्ब-ए-ज़रिश्कः**

यह आमाशय और जिगर के लिए लाभदायक है। उल्टी को रोकता है। सफ़रा की तेज़ी को तोड़ता है। प्यास बुझाता है। आँतों की ख़राश में लाभदायक और क़ब्ज़ पैदा करता है।

औषधियाँः ज़रिश्क के ताज़ा और पके फल।

नर्माण-विधिः ज़रिशक के ताज़ा और पके फल को लेकर उस का रस प्राप्त कर लें और अन्य एब्बों की भाँति पत्थर की देग में इतना पकाएँ कि क़िवाम तैयार हो जाए।

- **रूब्ब-ए-शहतूतः**

यह हलक़ के दर्दों और ख़ुनाक़-ए-दमवी (Diphtheria) में लाभदायक है।

औषधियाँः तूत स्याह पके फल।

नर्माण-विधिः तूत स्याह के पके फल को निचोड़ कर उस का रस प्राप्त कर लें फिर साफ़ कर के हल्की आँच पर इतना पकाएँ कि क़िवाम तैयार हो जाए।

- **रूब्ब-ए-शहतूत का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Diphtheria में लाभदायक है।

औषधियाँः तूत शामी और शराब-ए-मुसल्लस।

निर्माण-विधिः तूत शामी का उसारा प्राप्त कर के हल्की आँच पर धीरे धीरे इतना पकाएँ आधा शेष रह जाए फिर उस उसारा को 2100 मिलीलीटर की मात्रा में ले कर 1260 मिलीलीटर शराब-ए-मुसल्लस के साथ इतना पकाएँ कि एक तिहाई भाग शेष रह जाए। तत्पश्चात शिब-ए-यमानी, मर्व और ज़ाफ़रान प्रत्येक 3.5 ग्राम कूट छान उस में सम्मिलित करें।

- **रूब्ब-ए-सेरः**

यह उल्टी व दस्त को रोकता है और कमज़ोर आमाशय के लिए लाभदायक है।

औषधियाँः अधपका खुर्मा।

निर्माण-विधिः अधपका खुर्मा ले कर उस के ऊपरी भाग और गुठली को निकाल दें। फिर कूट कर निचोड़ लें और साफ़ कर के हल्की आँच पर इतना पकाएँ कि एक तिहाई भाग शेष रह जाए फिर उस को प्रयोग में लाएँ।

❑❑❑

## द्वितीय खण्ड
# पञ्चम अध्याय

# विभिन्न प्रकार की सिकञ्जबीन के नुस्ख़े

- **सिकञ्जबीन-ए-सादाः**

यह गर्मी के कारण होने वाले बुख़ारों में लाभदायक है। प्यास बुझाती है। सुद्दों (Obstructions) को खोलती है। सफ़रा और बलग़म को काटती और निकालती है। जिगर के लिए अत्याधिक लाभदायक लेकिन सेक्स के लिए हानिकारक है।

औषधियाँः क़न्द और सिर्का।

निर्माण-विधिः क़न्द को साफ़ कर के ऐसे सिर्का-ए-अंगूरी में मिलाएँ जिस का स्वाद खट्टा मीठा हो। उस को पत्थर की देग में हल्की आँच पर इतना पकाएँ कि क़िवाम तैयार हो जाए अगर सिर्का कच्चा हो तो पहले उस को पकाएँ। क़िवाम तैयार होने के बाद आग से उतार लें और किसी उचित पात्र में सुरक्षित कर लें।

- **सिकञ्जबीन-ए-बुज़ूरीः**

यह जिगर एवं आमाशय के सुद्दोंको खोलती है। आमाशय के बेकार पदार्थ साफ़ करती है। यह जलोदर रोग और रक्तक्षय में लाभदायक है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-कासनी, राज़ियाना, करफ़्स, अनीसून, तुख़्म-ए-कसूस प्रत्येक 17.5 ग्राम, पोस्त-ए-बीख़-ए-कबर, पोस्त-ए-बीख़-ए-राज़ियाना, पोस्त-ए-बीख़-ए-करफ़्स प्रत्येक 24.5 ग्राम, उसारा-ए-ग़ाफ़िस और रेवन्द चीनी प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर 1260 मिलीलीटर पानी, 420 ग्राम सिर्का में एक रात भिगोने के बाद पकाएँ फिर 810 क़न्द के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें।

- **सिकञ्जबीन-ए-बुज़ूरी का अन्य नुस्ख़ाः**

यह जिगर के सुद्दों को खोलती है। मूत्रविरेचक है। यह उस जलोदर रोग के प्रारंभिक दिनों में लाभदायक है जो मुँह की गर्मी के कारण होता है। प्यास बुझाती है और गरमी के कारण होने वाले बुख़ारों में लाभदायक है।

औषधियाँः पोस्त-ए-कासनी, तुख़्म-ए-खरपज़ह और तुख़्म-ए-ख़्यारैन प्रत्येक 17.5

ग्राम, पोस्त-ए-बीख़-ए-बादियान 10.5 ग्राम, तुख़्म-ए-कासनी 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को अर्धकुटा कर के 1260 मिलीलीटर पानी और 120 ग्राम सिर्का में एक रात एक दिन भिगोने के बाद पकाएँ। मल छान कर साफ़ कर लें फिर 810 क़न्द के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें। शीशा या चीनी के पात्र में सुरक्षित करें।

- **सिकन्जबीन-ए-बुज़ूरी रेवन्दः**

यह जिगर के दर्दों में लाभदायक है। सुद्दों को खोलती है और मृदु विरेचक है।

औषधियाँः रेवन्द चीनी 10.5 ग्राम, तुर्बुद सफ़ेद मुक़श्शर, बिस्फ़ाइज फ़िस्तक़ी और तुख़्म-ए-कासनी प्रत्येक 70 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान कर के 1260 मिलीलीटर पानी और 120 ग्राम सिर्का में एक रात और एक दिन भिगोने के बाद पकाएँ और हाथों से मल छान कर साफ़ कर लें फिर 810 ग्राम क़न्द के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें। अंत में ग़ारीक़ून जिसे छलनी के पीछे रगड़ा गया हो 17.5 ग्राम और ज़न्जबील 17.5 ग्राम कूट छान कर उस में मिलाएँ।

- **सिकन्जबीन-ए-बुज़ूरी मोअतदिलः**

यह जिगर और तिल्ली के सुद्दों को खोलती है। मूत्रविरेचक है। यह Compound Fevers में भी लाभदायक है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-कासनी, राज़ियाना, तुख़्म-ए-खरपज़ह, तुख़्म-ए-ख़्यारैन प्रत्येक 17.5 ग्राम, पोस्त-ए-बीख़-ए-राज़ियाना, बीख़-ए-कासनी, पोस्त-ए-बीख़-ए-करफ़्स प्रत्येक 24.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को अर्धकुटा कर के 1260 मिलीलीटर पानी और 120 ग्राम सिर्का में एक रात भिगोने के बाद पकाएँ और हाथों से मल छान कर साफ़ कर लें फिर 810 क़न्द के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें।

- **सिकन्जबीन का अन्य नुस्ख़ाः**

यह सुद्दों को खोलती, क़ब्ज़ पैदा करती है। मोअतदिल है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-कासनी, तुख़्म-ए-खुर्फ़ह, राज़ियाना, तुख़्म-ए-हुम्माज़, तुख़्म-ए-ख़्यारैन, तुख़्म-ए-करफ़्स प्रत्येक 10.5 ग्राम, बीख़-ए-राज़ियाना, बीख़-ए-कासनी, तुख़्म-ए-कसूस प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर 90 ग्राम सिर्का, 275 ग्राम अर्क़-ए-गुलाब में एक रात भिगोने के बाद पकाएँ। 210 ग्राम क़न्द मिला कर क़िवाम तैयार करें।

- **सिकन्जबीन का अन्य नुस्ख़ा:**

यह सुद्दों (Obstructions) को खोलती है। साथ ही उस पीलिया में लाभदायक है जो गर्मी के कारण होता है।

औषधियाँ: तुख़्म-ए-कासनी और बीख़-ए-कासनी प्रत्येक 35 ग्राम, अफ़्सन्तीन रूमी और गुल-ए-ग़ाफ़िस प्रत्येक 24.5 ग्राम, रेवन्द चीनी 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: सभी औषधियों को नियमानुसार350 ग्राम सिर्का और 810 ग्राम क़न्द के साथ पकाएँ।

- **सिकन्जबीन का अन्य नुस्ख़ा:**

यह उस पीलिया स्याह में लाभदायक है जो तिल्ली के सुद्दों (Obstructions) के कारण होता है।

औषधियाँ: बीख़-ए-करफ़्स, राज़ियाना, बीख़-ए-इज़्ख़िर प्रत्येक 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: सभी औषधियों को सिर्का में भिगो कर पकाएँ और क़न्द के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें।

- **सिकन्जबीन-ए-रुम्मानी:**

यह पुराने और तपने वाले बुख़ारों में लाभदायक है। जिगर और आमाशय की गर्मी में भी लाभदायक है। प्यास बुझाती है।

औषधियाँ: आब-ए-अनार तुर्श, आब-ए-अनार शीरीं प्रत्येक 405 मिलीलीटर, सिर्का 122 ग्राम और क़न्द 405 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को पका कर क़िवाम तैयार करें। अगर आब-ए-अनार के स्थान पर आब-ए-तमर हिन्दी का प्रयोग करें तो अधिक उचित है।

- **सिकन्जबीन-ए-सफ़रजली:**

यहआमाशयवर्धक है। भूक बढ़ाती है। यह जिगर के सुद्दों (Obstructions) को खोलती है। कमज़ोर व्यक्तियों के लिए लाभदायक है।

औषधियाँ: आब-ए-बिही 810 ग्राम, सिर्का 122 ग्राम और क़न्द 810 ग्राम।

निर्माण-विधि: सभी औषधियों को पत्थर की देग में इतना पकाएँ कि क़िवाम तैयार हो जाए। अगर सिर्का के स्थान पर आब-ए-लीमू प्रयोग करें तो अधिक उचित है।

- **सिकन्जबीन-ए-अफ़्तीमूनी:**

यह मालीख़ोलिया और सौदावी रोगों में लाभदायक है।

औषधियाँ: सूती कपड़े में अफ़्तीमून 105 ग्राम, अलग से कूटने के बाद पिस्ता के

कपड़े में बिस्फ़ाइज फ़िस्तक़ी 105 ग्राम, क़न्द सफ़ेद 810 ग्राम, ख़ल्ल-ए-ख़मरसिर्का 122 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को पत्थर की देग में हल्की आँच पर पकाएँ और समय समय पर अफ़्तीमून और बिस्फ़ाइज के कपड़ों को मलते रहें। जब क़िवाम तैयार होने का समय क़रीब आ जाए तो अफ़्तीमून को देग से निकाल लें और दोबारा पकाएँ और उतार लें फिर पोटली की औषधियों को निचोड़ लें और दोबारा हल्की आँच पर पकाएँ और किसी पात्र में सुरक्षित कर लें।

- **सिकन्जबीन का अन्य नुस्ख़ाः**

यह सौदावी रोगों में लाभदायक और Laxative है।

औषधियाँः अफ़्तीमून , सना मक्की, बिस्फ़ाइज और पोस्त-ए-हलीला काबुली प्रत्येक 35 ग्राम, ख़ल्ल-ए-ख़मर 175 ग्राम, कन्द 810 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर 175 ग्राम ख़ल्ल-ए-ख़मर में भिगोएँ। उस के बाद पका कर साफ़ कर लें और क़न्द 810 ग्राम के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें। जब क़िवाम तैयार होने का समय क़रीब आ जाए तो अफ़्तीमून को सूती कपड़े की पोटली में बाँध कर देग में लटका दें और दो तीन बार पकाएँ। सूती कपड़े की पोटली निकाल लें और सिर्का के साथ मल छान कर साफ़ कर लें और देग में डाल कर क़िवाम तैयार करें और उतार कर सुरक्षित कर लें।

- **सिकन्जबीन-ए-अफ़्तीमूनी का अन्य नुस्ख़ाः**

इस को सौदावी रोगों में प्रयोग करते समय माउलजुब्न में मिला कर दिया जाता है। यह मालीख़ोलिया में लाभदायक है।

औषधियाँः अफ़्तीमून , गावज़बान, फ़्रन्जमुश्क प्रत्येक 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः अफ़्तीमून को पोटली में बाँध लें और सभी औषधियों को रात भर सिर्का में भिगो कर पकाएँ और साफ़ कर लें। तत्पश्चात सिर्का के साथ औषधियों को पकाएँ और आवश्यकता के समय माउलजुब्न में मिला कर प्रयोग करें।

- **सिकन्जबीन-ए-अफ़्तीमूनी का अन्य नुस्ख़ाः**

इस को मीलाखोलिया और सौदावी रोगों में प्रयोग करते समय माउलजुब्न में मिला कर दिया जाता है।

औषधियाँः अफ़्तीमून, बिस्फ़ाइज प्रत्येक 35 ग्राम अर्धकुटा कर के, ख़रबक़ स्याह 4.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को अलग अगल पोटली में बाँध लें। 405 मिलीलीटर सिर्का में

एक रात दिन भिगोने के बाद पकाएँ फिर साफ़ कर के क़न्द के साथ क़िवाम तैयार करें।

सेवन-मात्राः 70 मिलीलीटर है।

अनुपान एवं प्रयोग-विधिः बकरी के दूध को पका कर फाड़ लें फिर 140 मिलीलीटर की मात्रा में ले कर उपर्युक्त सिकन्जबीन के साथ प्रयोग करें।

- **सिकन्जबीन-ए-फ़ूहः**

यह जलोदर रोग और जिगर की सख़्ती में लाभदायक है। जिगर के सुद्दों (Obstructions) को खोलती है। जिन व्यक्तियों की तिल्ली बढ़ी हो उन के लिए लाभदायक है। मूत्रविरेचक और हैज़ (Menstrual bleeding) जारी करता है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-कासनी, राज़ियाना, अनीसून, पोस्त-ए-बीख़-ए-कासनी, पोस्त-ए-बीख़-ए-कबर, ज़ूफ़ा खुश्क, फ़ूह, गुल-ए-ग़ाफ़िस, अफ़सन्तीन प्रत्येक 35 ग्राम, तुख़्म-ए-कसूस, तुख़्म-ए-करफ़्स, जअदह, सुंबुलुत्तीन और असारून प्रत्येक 24.5 ग्राम, ख़ल्ल-ए-ख़मर 350 ग्राम, पानी 1260 मिलीलीटर।

नर्माण-विधिः सभी औषधियों को 350 ग्राम ख़ल्ल-ए-ख़मर और 1260 मिलीलीटर पानी में एक रात और एक दिन भिगोएँ फिर पकाए लें और हाथ से मल छान कर निचोड़ लें और साफ़ कर के क़िवाम तैयार करें। आवश्यकता के समय प्रयोग करें।

- **सिकन्जबीन-ए-उन्सुलीः**

यह श्वास की तंगी, दमा, बलग़मी खाँसी में लाभदायक है।

औषधियाँः सिर्का-ए-उन्सुल अर्थात प्याज़ का सिर्का 122 ग्राम, साफ़ शहद 405 ग्राम।

नर्माण-विधिः सब को पका कर क़िवाम तैयार करें। आग से उतार कर सुरक्षित कर लें और आवश्यकता के समय प्रयोग करें।

- **सिकन्जबीन-ए-उन्सुली का अन्य नुस्ख़ाः**

यह श्वास की तंगी, दमा, बलग़मी खाँसी और जलोदर रोग में लाभदायक है। मुर्दा बच्चे को माँ के पेट से बाहर निकालती है।

औषधियाँः ज़न्जबील, राज़ियाना, अनीसून, हिल्तीत, आक़रक़हा और पोदीना दशती प्रत्येक 35 ग्राम, तुख़्म-ए-करफ़्स, ज़ीरा किर्मानी और क़िर्दमाना प्रत्येक 17.5 ग्राम।

नर्माण-विधिः सब को कूट कर सिर्का-ए-उन्सुल 122 ग्राम में पकाएँ और एक हफ़्ता धूप में रखें और क़न्द एवं शहद मिला कर क़िवाम तैयार करें।

- **सिकन्जबीन-ए-सन्दलीः**

यह गर्मी के कारण होने वाले Palpitation, बुख़ार और उल्टी में लाभदायक

है। गर्मी से होने वाली दिल की कमज़ोरी में लाभदायक है। क़ब्ज़ भी पैदा करती है।

औषधियाँ: रेती से बुरादा किया हुआ सन्दल सफ़ेद मुक़ासरी 135 गाम, किशनीज़ ख़ुश्क 22.5 ग्राम, आब-ए-ग़ौरह 675 ग्राम, अच्छे स्वाद वाला सिर्का 112.5 ग्राम।

नर्माण-विधिः सन्दल और किशनीज़ को आब-ए-ग़ौरह और सिर्का के साथ चीनी के पात्र में तीन दिनों तक भिगोएँ। फिर हल्की आँच पर इतना पकाएँ कि एक तिहाई भाग शेष रह जाए।उस को आग से उतारें और मल छान कर साफ़ कर लें। सन्दल के तलछट को थोड़े से अर्क़-ए-गुलाब से इस प्रकार धोएँ कि उस का स्वाद अर्क़ में आ जाए इसी प्रकार दोबारा धोएँ और साफ़ कर लें फिर प्राप्त अर्क़ को क़न्द सफ़ेद 960 ग्राम के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें। ज़ाफ़रान 2.25 ग्राम को सूती कपड़े में बाँध कर देग में डालें और पकने के बाद अंत में देग से निकाल लें। फिर उस पोटली को थोड़े से अर्क़-ए-गुलाब में मलें और फिर उस अर्क़ को देग में डाल कर दोबारा पकाएँ और क़िवाम तैयार कर के भट्टी से उतार लें। अब उस में सफ़ूफ़-ए-सन्दल और तबाशीर प्रत्येक 4.5 ग्राम, काफ़ूर क़ैसूरी 1.75 ग्राम मिला कर सुरक्षित कर लें और आवश्यकता के समय प्रयोग में लाएँ।

- **सिकन्जबीन का अन्य नुस्ख़ा:**

यह आमाशयवर्धक, गर्मी से आराम देने वाली और जिगर के सुद्दों (Obstructions) को खोलने वाली औषधि है। यह बेहोशी Palpitation और डर को दूर करती है।

औषधियाँ: अनार दान और ज़रिशक प्रत्येक 175 ग्राम, तमर हिन्दी 105 ग्राम, आलू बुख़ारा 20 की संख्या में, बुरादा-ए-सन्दल मुक़ासरी 52.5 ग्राम, रेवन्द चीनी 3.5 ग्राम, तुख़्म-ए-कासनी और राज़ियाना प्रत्येक 10.5 ग्राम।

नर्माण-विधिः सब को अर्धकुटा कर के 2430 मिलीलीटर पानी में भिगोएँ और इतना पकाएँ कि आधा भाग शेष रह जाए। उस को मल छान कर साफ़ कर लें फिर आब-ए-ग़ौरह 175 ग्राम,आब-ए-सेब 105 ग्राम,आब-ए-बिही 70 ग्राम,आब-ए-लीमू 24.5 ग्राम, अच्छे स्वाद का सिर्का 175 ग्राम,क़न्द सफ़ेद 810 ग्राम के साथ मिला कर पत्थर की देग में इतना पकाएँ कि क़िवाम तैयार हो जाए फिर उस को चीनी या शीशे के पात्र में सुरक्षित कर लें।

- **सिकन्जबीन का अन्य नुस्ख़ा:**

यह सौदा की अधिकता से होने वाले डर में और मिर्गी के रोगियों में लाभदायक है। यह कामोद्दीपक व हल्का विरेचक है।

औषधियाँ: अफ़्तीमून 35 ग्राम, बिस्फ़ाइज 21 ग्राम, गावज़बान 17.5 ग्राम, तुर्बुद

सफ़ेद मुक़श्शर 21 ग्राम, तुख़्म-ए-बादरन्जबोया, तुख़्म-ए-बादरूज, तुख़्म-ए-फ़न्जमुश्क, राज़ियाना, दरूनज, बहमन सफ़ेद, बहमन सुर्ख़, साज़ज हिन्दी, सुंबुलुत्तीब और क़ाक़ला प्रत्येक 12.25 ग्राम, हाशा और कमाफ़ीतूस प्रत्येक 14 ग्राम, पर्सियाउशान 17.5 ग्राम, तुख़्म-ए-कसूस और तुख़्म-ए-कासनी प्रत्येक 14 ग्राम, गुलक़न्द सभी के समभाग।

नर्माण-विधिः सब को पुराने सिर्का में रात भर भिगो कर रखें फिर 2940 मिलीलीटर पानी में हल्की आँच पर इतना पकाएँ कि आधा भाग रह जाए। उस को साफ़ कर के क़िवाम तैयार करें।

सेवन-मात्राः 17.5 मिलीलीटर से 35 मिलीलीटर तक है।

- **सिकन्जबीन का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गुर्दा और मूत्राशय की पथरी को तोड़ती है।

औषधियाँः पोस्त-ए-बीख़-ए-कबर, बर्ग-ए-तुर्ब, समग़-ए-दरख़्त-ए-बादाम प्रत्येक 35 ग्राम,रासन, वज, प्याज़-ए-उन्सुल, दोक़ू और फ़ुत्रासालियून प्रत्येक 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को 210 ग्राम पुराने सिर्का में तीन दिन तक भिगो कर रखें फिरहल्की आँच पर इतना पकाएँ कि आधा रह जाए।420 ग्राम क़न्द के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

अनुपानः माउस्सर्व के साथ प्रयोग करें।

- **सिकन्जबीन का अन्य नुस्ख़ाः**

यह आमाशय और आँतों के दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँः क़न्तुरियून 210 ग्राम, पुराना सिर्का 105 ग्राम, शहद या क़न्द 420 ग्राम।

निर्माण-विधिः क़न्तुरियून 210 ग्राम को पुराना सिर्का 105 ग्राम में भिगोएँ। मल छान कर साफ़ करने के बाद शहद या क़न्द 420 ग्राम मिला कर क़िवाम तैयार करें।

- **सिकन्जबीन का अन्य नुस्ख़ाः**

यह आमाशय की गर्मी को बुझाती है, सुद्दों को खोलती है और पुराने बुख़ारों में भी लाभदायक है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-कासनी, बर्ग-ए-गुल-ए-सुर्ख़, तुख़्म-ए-कसूस और तुख़्म-ए-शाहतरह प्रत्येक 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को अर्धकुटा कर के 35 ग्राम पानी में भिगोएँ। साफ़ कर के क़न्द के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें।

- **सिकन्जबीन का अन्य नुस्खा:**

यह तिल्ली की सूजन (Splenitis) में लाभदायक है।

औषधियाँ: पोस्त बीख़-ए-कबर, सेर सेहराई, कज़माज़ज, असारून, रूनास, अगर तुर्की।

निर्माण-विधि: सब को अर्धकुटा कर लें और सिर्का में भिगोने के बाद पका कर साफ़ लें फिर क़न्द के साथ मिला कर नियमानुसार क़िवाम तैयार करें।

- **सिकन्जबीन का अन्य नुस्खा:**

यह बलग़म का विरेचक है।

औषधियाँ: ऐसी शहद जिस की झाग को उतार कर साफ़ किया गया हो और पुराना सिर्का प्रत्येक 4800 ग्राम।

निर्माण-विधि: दोनों को देग में पका कर क़िवाम तैयार करें। अंत में मग्ज़-ए-हब्बुलक़ुर्तुम 35 ग्राम को अर्धकुटा कर के उस में सम्मिलित करें और अच्छी तरह मिलाएँ।

सेवन-मात्रा: उचित मात्रा में प्रयोग करें।

- **सिकन्जबीन का अन्य नुस्खा:**

यह जिगर और तिल्ली के सुद्दों (Obstructions) को खोलती है। जलोदर के रोगियों के लिए लाभदायक है।

औषधियाँ: तुख़्म-ए-करफ़्स, पोस्त बीख़-ए-राज़ियाना प्रत्येक 35 ग्राम, बीख़-ए-कबर, फ़ूह प्रत्येक 17.5 ग्राम, गुल-ए-सुर्ख़, सुंबुलुत्तीब प्रत्येक 10.5 ग्राम, रेवन्द चीनी 7 ग्राम।

नर्माण-विधि: सब को कूट छान कर 70 ग्राम पुराने सिर्का और 420 मिलीलीटर पानी में भिगोएँ और पका कर साफ़ लें फिर क़न्द के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें।

- **सिकन्जबीन का अन्य नुस्खा:**

यह ऐसा विरेचक है जो शरीर से तरल पदार्थों को बाहर निकालता है और जलोदर रोग में लाभदायक है।

औषधियाँ: ख़ल्ल-ए-ख़मर 105 लीटर, साफ़ पानी 210 मिलीलीटर, बर्ग-ए-माज़रयून 35 ग्राम।

नर्माण-विधि: बर्ग-ए-माज़रयून को सिर्का और पानी में एक हफ़्ता भिगोएँ फिर पका कर साफ़ कर लें और सिर्का तबरज़द 420 ग्राम के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें और झाग उतार लें। अगर पानी के स्थान पर अर्क़-ए-गुलाब का प्रयोग करें और आब-ए-बिही 420 सम्मिलित करें तो और बढ़िया नुस्खा होगा।

- **सिकन्जबीन का अन्य नुस्ख़ाः**

यह सफ़रा का विरेचक है।

औषधियाँ एवं निर्माण-विधिः पुराना सिर्का और क़न्द दोनों इतनी मात्रा में लें कि उन के घुलने से घोल का मीठापन और खट्टापन बीच का रहे। उस को पका कर झाग साफ़ करें और क़िवाम तैयार करें। इस सिकन्जबीन को 420 मिलीलीटर लें और उस में सक़मूनिया और उसारा-ए-ग़ाफ़िस प्रत्येक 7 ग्राम, क़िस्साउललहिमार, बीख़-ए-बादियान और बीख़-ए-करफ़्स प्रत्येक 10.5 ग्राम को पोटली में बाँध कर डालें और अर्क़-ए-गुलाब 210 मिलीलीटर डाल करे पकाएँ। फिर पोटली को निकाल लें और थोड़ी मात्रा में अर्क़-ए-गुलाब में मल कर छान लें। अब इस घोल को उपर्युक्त सिकन्जबीन में डाल कर दोबारा पकाएँ और क़िवाम तैयार करें। अंत में मग्ज़-ए-हब्बुलक़ुर्तुम 35 ग्राम को अर्धकुटा कर के उस में अच्छी तरह मिलाएँ और उचित मात्रा में प्रयोग करें।

सेवन-मात्राः 35 मिलीलीटर।

अनुपानः अर्क़-ए-गुलाब के साथ प्रयोग करें।

- **सिकन्जबीन का अन्य नुस्ख़ाः**

यह जिगर और तिल्ली के सुद्दों को खोलती है।

औषधियाँः रेवन्द चीनी 35 ग्राम, मामीरान 3.5 ग्राम, सिर्का 70 ग्राम, पोस्त-ए-बीख़-ए-करफ़्स, पोस्त-ए-बीख़-ए-कबर, पोस्त-ए-बीख़-ए-राज़ियाना प्रत्येक 17.5 ग्राम, ज़ाफ़रान 10.5 ग्राम और पानी 420 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को सिर्का 70 ग्राम और पानी 420 ग्राम में इतना भिगोएँ कि आधा शेष रह जाए फिर साफ़ कर के क़न्द के साथ मिला कर क़िवाम तैयार करें। मामीरान और ज़ाफ़रान में से प्रत्येक को अलग अलग पोटली में रख कर देग में रखें और नियमानुसार क़िवाम तैयार करें।

- **सिकन्जबीन का अन्य नुस्ख़ाः**

यह सफ़रावी रोगों और गर्मी के कारण होने वाले बुख़ारों में लाभदायक है। सफ़रा के निकलने को रोकता है। अगर आबला बनने से पहले इस को प्रयोग किया जाए तो लाभ पहुँचता है।

औषधियाँः पुराना सिर्का और अर्क़-ए-गुलाब प्रत्येक 122 ग्राम, गुल-ए-सुर्ख़ 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः गुल-ए-सुर्ख़ को तीन दिनों तक सिर्का, अर्क़-ए-गुलाब में भिगोएँ फिर पका कर साफ़ कर लें। तत्पश्चात 810 ग्राम क़न्द मिला कर क़िवाम तैयार करें।

- **सिकन्जबीन का अन्य नुस्ख़ाः**

यह आबला का साइज़ बढ़ने से रोकता है।

औषधियाँः ख़ल्ल-ए-ख़मर 350 ग्राम, अर्क़-ए-गुलाब और अर्क़-ए-बेद प्रत्येक 77 मिलीलीटर, बड़े गुल-ए-सुर्ख़ 17.5 ग्राम, गुलनार और रफ़ह-ए-मुक़श्शर प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को तीन दिनों तक सिर्का और अर्क़-ए-गुलाब में भिगोएँ और फिर पका कर साफ़ कर लें। तत्पश्चात 105 ग्राम क़न्द सफ़ेद के साथ क़िवाम तैयार करें।

- **सिकन्जबीन का अन्य नुस्ख़ाः**

यह आमाशयवर्धक है और भूक बढ़ाती है।

औषधियाँः सअतर, नानख़्वाह और ज़ीरा किर्मानी प्रत्येक 35 ग्राम, आब-ए-बिही, अर्क़-ए-गुलाब और सिर्का प्रत्येक 105 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को सिर्का और अर्क़-ए-गुलाब में भिगोएँ और फिर पका कर नियमानुसार क़िवाम तैयार करें।

❑❑❑

द्वितीय खण्ड

# शष्टम अध्याय

## हलवा और मुसम्मिन के नुस्ख़े

- **हलवा-ए-अहमदख़ानीः**

यह शरीर को मोटा करता है। कामोद्दीपक है। शुक्राणुओं को बढ़ाता है।

औषधियाँ और निर्माण-विधिः पाक साफ़ और मग़सूल तुरन्ज सफ़ेद को 420 मिलीलीटर पानी में अच्छी तरह पकाएँ। अर्धकुटा मग़ज़-ए-बादाम मुक़श्शर 420द ग्राम को क़न्द 840 ग्राम, रोग़न-ए-गाव 420 ग्राम, सफ़ूफ़-ए-ज़ाफ़रान 4.5 ग्राम, मुश्क 416 मिलीग्राम, अर्क़-ए-गुलाब एक प्याला के साथ मिला कर हल्की आँच पर इतनी देर तक पकाएँ कि पूर्ण रूप से पक जाए।

- **हलवा का अन्य नुस्ख़ाः**

यह शरीर को मोटा करता है। कामोद्दीपक है। शुक्राणुओं को बढ़ाता है।

औषधियाँ और निर्माण-विधिः गाजर छील कर साफ़ की हुई 810 ग्राम को पाक कर लकड़ी के हावन में कूछ लें। मग़ज़-ए-पिस्ता, मग़ज़-ए-गर्दगान, मग़ज़-ए-नारजील, कुन्जद मुक़श्शर, मग़ज़-ए-फ़ुन्दुक़, मग़ज़-ए-पंबादाना, ख़शख़ाश सफ़ेद, मग़ज़-ए-हब्बुलक़िलक़िल, मग़ज़-ए-हब्बुज्ज़लम प्रत्येक 960 ग्राम, कबाबा चीनी, ज़न्जबील, दार-ए-फ़िलफ़िल, दार-ए-चीनी, ख़ुस्यतुस्सअलब मिश्री, बिस्बासा और ज़रन्बाद प्रत्येक 10.5 ग्राम लें और सभी औषधियों को हल्का कूट छान कर शहद 405 ग्राम, फ़ानीज़ 405 ग्राम, रोग़न-ए-गाव 122 ग्रामऔर ज़र्दी-ए-बैज़ा-ए-मुर्ग़ के साथ मिला कर हल्की आँच पर इतना पकाएँ कि इच्छानुसार पक जाए।

- **सफ़ूफ़-ए-मुसम्मिनः**

यह शरीर को मोटा करता है और कामोद्दीपक है।

औषधियाँ और निर्माण-विधिः मग़ज़-ए-फ़ुन्दुक़, कुन्जद मुक़श्शर, मग़ज़-ए-बादाम, तुख़्म-ए-शाहतरह, नखूद बिरयां प्रत्येक 960 ग्राम, चिलग़ोज़ह 480 ग्राम, ख़ुरमा-ए-क़सब

1920 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 24 ग्राम की मात्रा में।

सेवन-समयः प्रत्येक दिन सुबह।

- **सफ़ूफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह मिट्टी खाने से होने वाली कमज़ोरी में लाभदायक है। शरीर को मोटा करता है।

औषधियाँः बहमन सुर्ख़, ज़रन्बाद, कतीरा, ख़शख़ाश, मुग़ास प्रत्येक 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर पकाएँ और गाए के दूध एवं शकर के साथ मिला कर हस्व तैयार करें। इस दवा के प्रयोग के बाद हम्माम में जाएँ और नारमल पानी का उपयोग करें।

- **मक़ीदहः**

यह शरीर को मोटा करता है और कामोद्दीपक है।

औषधियाँः दाना निकाला हुआ मोटा ख़ुरमा 1620 ग्राम, पानी 1620 मिलीलीटर, शहद, क़न्द प्रत्येक 420 ग्राम, ज़ाफ़रान 7 ग्राम, कअक ख़ुश्क कूटा पीसा हुआ 405 ग्राम, मग़ज़-ए-बादाम, मग़ज़-ए-गर्दगान और मग़ज़-ए-फ़िस्तक़ प्रत्येक 70 ग्राम ।

निर्माण-विधिः ख़ुरमा को पानी में इतना पकाएँ कि शीरा तैयार हो जाए। फिर शेष को शीरा-ए-ख़ुरमा में पकाएँ फिर 810 ग्राम रोग़न के साथ नियमानुसार पकाएँ।

- **जवारिश-ए-मुसम्मिनः**

यह शरीर को मोटा करता है। पाचक है। कामोद्दीपक है और बवासीर को समाप्त करता है।

औषधियाँः ज़न्जबील 35 ग्राम, दार-ए-फ़िलफ़िल 10.5 ग्राम, फ़िलफ़िल, शीतरज हिन्दी प्रत्येक 7 ग्राम, शक़ाक़ुल 17.5 ग्राम, मग़ज़-ए-गर्दगान, कुन्जद मुक़श्शर प्रत्येक 70 ग्राम, बलादुर 5 की संख्या में।

निर्माण-विधिः बलादुर को कूट रक रोग़न-ए-कुन्जद 35 ग्राम में मिला कर मलें और साफ़ कर लें फिर शेष सभी औषधियों को कूट छान कर उसी रोग़न में चर्ब करें और सभी को एक साथ उन के तीन गुना फ़ानीज़ के साथ मिलाएँ।

- **हलवा-ए-मुसम्मिनः**

यह शरीर को मोटा करता है। साथ ही कमज़ोर व्याक्तियों के लिए लाभदायक है।

औषधियाँः रोग़न-ए-गाव में बिरयाँ किया हुआ कअक ख़ुश्क 810 ग्राम, शहद

1260 ग्राम, अर्क़-ए-गुलाब 960 ग्राम, ज़ाफ़रान 3.5 ग्राम, शीर-ए-गाव अर्थात गाय का दूध 810 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को एक पतीले में पकाएँ। ख़शख़ाश सफ़ेद, मग़ज़-ए-बादाम, मग़ज़-ए-पिस्ता और मग़ज़-ए-फ़ुन्दुक़ प्रत्येक 960 ग्राम को कूट कर सम्मिलित करें और नियमानुसार रोग़न में पका कर भूनें।

- **सफ़ूफ़-ए-मुसम्मिनः**

औषधियाँः सफ़ेद चने, कअक ख़ुश्क प्रत्येक 70 ग्राम, कअबुलग़िज़ाल 350 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 70 ग्राम।

सेवन-समयः प्रतिदिन सुबह में।

अनुपानः एक प्याला पानी के साथ प्रयोग करें।

- **हलवा का अन्य नुस्ख़ाः**

यह शरीर को मोटा करता है। वाजीकर है और यौन क्रिया में सहायक है।

औषधियाँः छान कर साफ़ किए गए आरद-ए-नख़ूद और आदर-ए-गन्दुम प्रत्येक 35 ग्राम, उचित मात्रा में रोग़न-ए-गाव, जुल्लाब-ए-क़न्द सफ़ेद 405 ग्राम, पानी 405 मिलीलीटर, अर्धकुटा मग़ज़-ए-बादाम मुक़श्शर 122 ग्राम, ज़ाफ़रान 4.5 ग्राम, मुश्क 416 मिलीग्राम और अर्क़-ए-गुलाब 24 मिलीलीटर।

निर्माण-विधिः छान कर साफ़ किए गए आरद-ए-नख़ूद और आदर-ए-गन्दुम प्रत्येक 35 ग्राम को उचित मात्रा में रोग़न-ए-गाव में बिरयां करें। फिर देग में जुल्लाब-ए-क़न्द सफ़ेद 405 ग्राम और पानी 405 मिलीलीटर डाल कर उस का मुँह में बन्द कर दें और हल्की आँच पर पकाएँ।

अंत में अर्धकुटा मग़ज़-ए-बादाम मुक़श्शर 122 ग्राम, ज़ाफ़रान 4.5 ग्राम, मुश्क 416 मिलीग्राम और अर्क़-ए-गुलाब 24 मिलीलीटर सम्मिलित करें।

सेवन-मात्राः 240 मिलीलीटर।

सेवन-समयः प्रतिदिन सुबह में।

- **हलवा का अन्य नुस्ख़ाः**

यह शरीर को मोटा करता है। शुक्राणुओं को बढ़ाता और वाजीकर है।

औषधियाँः मग़ज़-ए-बादाम मुक़श्शर, मग़ज़-ए-गर्दगान, मग़ज़-ए-फ़ुन्दुक़, मग़ज़-ए-पिस्ता, कुन्जद मुक़श्शर, शाहदाना, मग़ज़-ए-हब्बतुलख़ज़रा, मग़ज़-ए-नारजील और चिलग़ोज़ा प्रत्येक 2880 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर नर्म कर लें, आरद-ए-मैदा 420 ग्राम, रोग़न-ए-गाव 420 ग्राम और क़न्द 810 ग्राम के साथ मिला कर नियमानुसार पकाएँ। अंत में मुश्क 416 मिलीग्राम, ज़ाफ़रान 4.5 ग्राम और अर्क़-ए-गुला एक प्याला सम्मिलित कर के ध ीरे धीरे हल्की आँच पर पकाएँ ताकि रोग़न में हलवा मिल जाए और फिर प्रयोग करें।

- **हलवा का अन्य नुस्ख़ाः**

यह शरीर को मोटा और सुडोल करता है।

औषधियाँः तन्दुरुस्त मुर्ग़े के सीने का गोश्त, शहद, क़न्द, रोग़न-ए-गाव।

निर्माण-विधिः तन्दुरुस्त मुर्ग़े के सीने का गोश्त लेकर धीरे धीरे इस प्रकार कूट लें कि वह मरहम की भाँति हो जाए। फिर उस को क़न्द और शहद के साथ पकाएँ और रोग़न-ए-गाव सम्मिलित कर के धीरे धीरे करछुल से चलाते रहें ताकि वह अच्छी तरह पक जाए। अंत में मग़ज़-ए-बादाम हल्का सा कूट कर उस में सम्मिलित करें और मुश्क एवं ज़ाफ़रान का छिड़काव करें।

सेवन-मात्राः 35 ग्राम।

सेवन-समयः प्रतिदिन सुबह में प्रयोग करें।

- **हलवा का अन्य नुस्ख़ाः**

यह इस से पहले नुस्खे की तुलना में अधिक प्रभावशाली और वाजीकर है।

औषधियाँः मग़ज़-ए-हब्बतुलख़ज़रा, मग़ज़-ए-नारजील, कुन्जद मुक़श्शर, मग़ज़-ए-पिस्ता, मग़ज़-ए-बादाम, पंबादाना, मग़ज़-ए-हब्बुज्ज़लम, मग़ज़-ए-हब्बुलक़िलक़िल, चिलग़ोज़ा, कतीरा औरमग़ज़-ए-अन्जोलकप्रत्येक 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर क़न्द व शहद 420 ग्राम के साथ मिला कर इतना पकाएँ कि गाढ़ा हो जाए। अंत में मुश्क, ज़ाफ़रान, अर्क़-ए-गुला सम्मिलित करें।

सेवन-मात्राः 35 ग्राम।

आहार एवं परहेज़ः मोटे रेशे वाले गोश्त से तैयार किए गए कबाब और शोरबों को प्रयोग करें। खट्टी चीज़ों से परहेज़ करें। शरीर के अन्दरूनी भागों पर रोग़न-ए-बनफ़्शा और रोग़न-ए-बादाम की मालिश करें।

नोटः साधारण हम्माम करना, नर्म कपड़े पहनना, अधिक सोच विचार से दूर रहना, इतना हल्का व्यायाम करना जिस से कि शरीर में बहुत थोड़ा ही तहलील की प्रक्रिया हो सके, सैर सपाटा करना, मस्ती करना, किसी प्रकार की क़ैद से आज़ाद रहना, ख़ुशी व मस्ती और खेल कूद में व्यस्त रहना आदि भी शरीर के मोटापे का कारण हैं।

❑❑❑

# तृतीय खण्ड

**हब्ब, कुर्स, सफूफ़, सनून, ज़रूर, बखूर, नकूअ, शमूम के नुस्खे़**

**यह सात अध्यायों पर आधारित है**

तृतीय खण्ड

# प्रथम अध्याय

## हब्ब के नुस्खे

**यह अध्याय दो वर्गों पर आधारित है**

## प्रथम वर्गः तीक्ष्ण एवं मृदु विरेचक हब्ब के नुस्खे

- **हब्ब-ए-अयारिजः**

यह मस्तिष्क, तांत्रिका से व्यर्थ पदार्थ साफ़ करता है।

औषधियाँः अयारिज फ़ीक़रा, रोग़न-ए-बादाम में चर्ब तुर्बुद प्रत्येक 1.75 ग्राम, नमक हिन्दी, शहम हन्ज़ल प्रत्येक 6.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-राज़ियाना के साथ मिलाएँ और हब्ब तैयार करें। प्रत्येक हब्ब चने के बराबर हो।

- **हब्ब-ए-अयारिजः**

यह "कामिलुस्सनाअह" पुस्तक से लिया गया नुस्खा है। यह बलग़म की अधिकता से होने वाले सर दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँः तुर्बुद सफेद 5.25 ग्राम, अयारिज फ़ीक़रा 3.5 ग्राम, शहम-ए-हन्ज़ल 1.75 ग्राम, सक़मूनिया मुशव्वा, अनीसून और ऊद प्रत्येक 416 मिली ग्राम, नमक हिन्दी 832 मिली ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-राज़ियाना के साथ मिलाएँ और हब्ब तैयार करें। प्रत्येक हब्ब चने के बराबर हो।

सेवन-मात्राः यह पूर्णतः एक बार की खूराक है।

- **हब्ब-ए-अयारिज का अन्य नुस्ख़ाः**

यह भी "कामिलुस्सनाअह" पुस्तक से लिया गया नुस्ख़ा है। इस से भी वही लाभ प्राप्त होते हैं।

औषधियाँः तुर्बुद सफेद मुक़श्शर 7 ग्राम, अयारिज फ़ीक़रा 10.5 ग्राम,

पोस्त-ए-हलीला काबुली और नमक-ए-हिन्दी प्रत्येक 7 ग्राम, शहम-ए-हन्ज़ल 3.5 ग्राम और तुख़्म-ए-करफ़्स 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **हब्ब का अन्य नुस्खाः**

यह चक्कर आने में लाभदायक एवं मुजर्रब है।

औषधियाँः अयारिज फ़ीक़रा, उस्तुखुद्दूस प्रत्येक 3.5 ग्राम, ग़ारीक़ून 1.75 ग्राम, नमक-ए-हिन्दी, शहम-ए-हन्ज़ल प्रत्येक 832 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर साफ़ पानी में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः यह पूर्णतः एक बार की खूराक है।

- **हब्ब-ए-सिब्रः**

यह जोड़ों के दर्द, पक्षघात, लक़वा और गठिया रोग में लाभदायक है।

औषधियाँः सिब्र सक़ूतरी 4.5 ग्राम, तुर्बुद सफेद मुक़श्शर जिसे रोग़न-ए-बादाम से चर्ब किया गया हो 3.5 ग्राम, हब्बुस्सुंबुल, ग़ारीक़ून, अनीसून प्रत्येक 1.75 ग्राम, शहम-ए-हन्ज़ल, नमक-ए-हिन्दी प्रत्येक 750 मिलीग्राम, मुक़िल और कतीरा प्रत्येक 500 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-करफ़्स के साथ मिलाएँ।

सेवन-मात्राः यह पूर्णतः एक बार की खूराक है।

- **हब्ब-ए-सूरन्जानः**

यह जोड़ों के दर्द, गृध्रसी और गठिया में लाभदायक है।

औषधियाँः सिब्र सक़ूतरी, तुर्बुद सफेद और सूरन्जान मिश्री प्रत्येक 4.5 ग्राम, माहीज़हरज 3.5 ग्राम, हब्बुस्सुंबुल और ग़ारीक़ून प्रत्येक 1.75 ग्राम, कतीरा और नमक-ए-हिन्दी प्रत्येक 500 मिलीग्राम और शहम-ए-हन्ज़ल 250 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः कूट कर आब-ए-करफ़्स में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः यह पूर्णतः एक बार की खूराक है।

- **हब्ब-ए-सूरन्जान का अन्य नुस्खाः**

औषधियाँः सूरन्जान, अयारिज फ़ीक़रा, तुर्बुद सफ़ेद और माहीज़हरज प्रत्येक 3.5 ग्राम, सूरन्जान मिश्री, पोस्त-ए-हलीला ज़र्द, ग़ारीक़ून और अनीसून प्रत्येक 17.5 ग्राम, सक़मूनिया, कतीरा और शहम-ए-हन्ज़ल प्रत्येक 500 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर हब्ब तैयार करें।

- **हब्ब-ए-शबयार:**

यह दृष्टि शक्ति को बढ़ाता है, सर और पेट दर्द में लाभदायक है, तांत्रिकाओं व मस्तिष्क को द्रव्यों से पाक करता है।

औषधियाँ: सिब्र सक़ूतरी 10.5 ग्राम, पोस्त-ए-हलीला ज़र्द, गुल-ए-सुर्ख़, मस्तगी, तुबुद सफ़ेद प्रत्येक 3.5 ग्राम, सक़मूनिया मुशव्वा 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर चने के समान हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्रा: 4.5 ग्राम से 9 ग्राम तक।

सेवन-समय: सोते समय प्रयोग करें।

- **हब्ब-ए-शबयार का अन्य नुस्ख़ा:**

इस से भी वही लाभ प्राप्त होते हैं।

औषधियाँ: पोस्त-ए-हलीला काबुली, तुर्बुद सफ़ेद प्रत्यक 17.5 ग्राम, गुल-ए-सुर्ख़ 14 ग्राम, सिब्र ज़र्द सभी के समभाग।

निर्माण-विधि: सब को कूट कर पानी में मिलाएँ।

सेवन-मात्रा: 4.5 ग्राम।

अनुपान: गर्म पानी के साथ प्रयोग करें।

सेवन-समय: सोते समय प्रयोग करें।

- **हब्ब-ए-क़ौक़ाया:**

यह जालीनूस द्वारा तैयार किया गया नुस्खा है। यह सर दर्द और आँख दर्द में लाभदायक है। शरीर के सभी भागों को अखलात और व्यर्थ पदार्थों से पाक करता है। इस के प्रयोग से आँखों की रोशनी बढ़ती है।

औषधियाँ: सिब्र सक़ूतरी, उसारा-ए-ग़ाफ़िस, अफ़्सन्तीन रूमी सभी एक एक भाग, सक़मूनिया मुशव्वा और शहम-एहन्ज़ल प्रत्येक अर्ध-अर्ध भाग।

निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर आब-ए-करफ़्स के साथ मिलाएँ।

सेवन-मात्रा: 4.5 ग्राम।

- **हब्ब-ए-क़ौक़ाया का अन्य नुस्ख़ा:**

यह "ग़िना मुना" पुस्तक से लिया गया नुस्ख़ा है। यह माइग्रेन और ठंड के कारण होने वाले सर दर्द में लाभदायक है। यह मस्तिष्क से गंदे तरल और व्यर्थ पदार्थों को बाहर निकालता है। इस के प्रयोग से आँखों की रोशनी बढ़ती है।

औषधियाँ: अयारिज फ़ीक़रा 35 ग्राम, शहम हन्ज़ल 11.5 ग्राम, सक़मूनिया, उस्तुखुद्दूस, उसारा-ए-अफ़्सन्तीन प्रत्येक 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को मिला कर हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्राः 8.75 ग्राम।

- **हब्ब-ए-अफ़ावियहः**

यह "मिन्हाज" पुस्तक से लिया गया नुस्खा है। यह आमाशय से जले हुए सफ़रा, सौदा और गाढ़े बलग़म को बाहर निकालता है साथ ही आमाशय में जमा व्यर्थ पदार्थों और उत्पादों को बाहर निकालता है।

औषधियाँः दार-ए-चीनी, क़सबुज़्ज़रीरा, बलसाँ, सलीख़ा, फ़ुक़ाह-ए-इज़्ख़िर, क़िर्फ़ह प्रत्येक 26.25 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान कर 124 ग्राम बारिश के पानी में इतना पकाएँ कि आधा बाक़ी बचे। फिर उस में 35 ग्राम सिब्र सक़ूतरी डाल कर दोबारा इतना पकाएँ कि सिब्र पूर्णतः जल समान हो जाए। अब उस को इस प्रकार साफ़ कर लें कि सिब्र के अवशेष उस में बिल्कुल बाक़ी ना बचें। अब उस को धूप में रख कर सुखा लें और ज़ाफ़रान, मस्तगी एवं मुर मक्की प्रत्येक 3.5 ग्राम कूट छान कर सिब्र के साथ मिलाएँ और हब्ब तैयार करें। प्रत्येक हब्ब चने के बराबर बना कर छाँव में सुखा लें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

अनुपानः हल्के गर्म पानी के साथ प्रयोग करें।

- **हब्ब-ए-अफ़ावियह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बदरुद्दीन क़लान्सी की पुस्तक से लिया गया नुस्खा है। यह ठंडे आमाशय के लिए लाभदायक है।

औषधियाँः हब्ब-ए-बलसाँ, सलीख़ा, ऊद-ए-बलसाँ, सुंबुलुत्तीब, दार-ए-चीनी, असारून, ज़ाफ़रान, बिस्बासा, क़रन्फ़ुल और जौज़बोवा प्रत्येक 1.75 ग्राम, ग़ारीक़ून सफ़ेद, सक़मूनिया मुशव्वा प्रत्येक 10.5 ग्राम, तुर्बुद सफ़ेद 35 ग्राम, ज़न्जबील 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-करफ़्स के साथ मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **हब्ब-ए-अफ़ावियह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह वायुनाशी एवं मृदु विरेचक है। आमाशय में जमा गैस को दूर करता है। स्वभाव में काफ़ी नर्मी पैदा करता है।

औषधियाँः ज़न्जबील, फ़िलफ़िल, क़रन्फ़ुल, दार-ए-चीनी, नारमुश्क और मस्तगी प्रत्येक 4.5 ग्राम, सक़मूनिया मुशव्वा 31.5 ग्राम, क़न्द सफ़ेद 36 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर चने के समान हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्राः यह पूर्णतः एक बार की खूराक है।

- **हब्ब-ए-मुन्तिनः**

यह पक्षघात, गठिया, जोड़ों के दर्द में लाभदायक है। गाढ़ी गैस, तांत्रिकाओं के ढीलेपन और पीठ दर्द में भी लाभदायक है। Diuretic एवं Emmenagogue है।

औषधियाँः सकबीनज, उशक, जावशीर, मुक़िल, ज़रन्बाद, तुख़्म-ए-करफ़्स, खरदल, शहम-ए-हन्ज़ल, सिब्र सक़ूतरी, तुर्बुद सफ़ेद मुक़श्शर, पोस्त-ए-हलीला ज़र्द।

निर्माण-विधिः कूटने योग्य औषधियों को कूट छान लें और Exudates को आब-ए-क़न्द में भिगोएँ। फिर सब को एक साथ मिला कर हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम से 9 ग्राम तक।

- **हब्ब-ए-मुन्तिन का अन्य नुस्ख़ाः**

यह पक्षघात, लक़वा, अंगों के दर्द और बलग़मी रोगों में लाभदायक है।

औषधियाँः अयारिज फ़ीक़रा 35 ग्राम, शहम-ए-हन्ज़ल, क़न्तूरियून दक़ीक़ और उसारा-ए-ग़ाफ़िस प्रत्येक 17.5 ग्राम, अफ़्तीमून 8.75 ग्राम, जुन्द बेद स्तर, फ़िलफ़िल, हिल्तीत, सकबीनज, जावशीर, शीतरज और खरदल प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सर्वप्रथम Exudates को आब-ए-करफ़्स में अच्छी तरह मिलाएँ फिर शेष को उस में डाल कर हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **हब्ब का अन्य नुस्ख़ाः**

यह पक्षघात, लक़वा, कंपन्न और रुतूबी रोगों में लाभदायक है। यह सर, Nerves और आँतों से गाढ़े देहद्रव्यों को बाहर निकालता है।

औषधियाँः सिब्र, तुर्बुद सफ़ेद प्रत्येक 1.75 ग्राम, जुन्द बेद स्तर, फ़र्फ़ियून प्रत्येक 416 मिलीग्राम, मुक़िल, उशक़, जावशीर, सकबीनज, हज़ार स्पन्द प्रत्येक 832 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः आब-ए-गन्दना मिला कर हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्राःयह पूर्णतः एक बार की खूराक है।

- **हब्ब का अन्य हब्बः**

पुराने हकीमों ने इस को Nerves के सशक्तीकरण के लिए तैयार किया था और उन के अनुसार इस संदर्भ में यह अद्वितीय औषधि है।

औषधियाँः सिब्र ज़र्द और शहम-ए-हन्ज़ल प्रत्येक 35 ग्राम, फ़र्फ़ियून 17.5 ग्राम, और मुक़िल 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः नियमानुसार हब्ब तैयार करें।

- **हब्ब-ए-शीतरजः**

यह पट्ठों के दर्द और गृध्रसी में लाभदायक है। साथ ही चिपचिपे अखलात को भी शरीर से बाहर निकालता है।

औषधियाँः सकबीनज, उशक़, जावशीर और फ़र्फ़ियून प्रत्येक 5.25 ग्राम, ज़रावन्द तवील, क़न्तूरियून दक़ीक़ और जुन्द बेद स्तर प्रत्येक 8.75 ग्राम, दार-ए-फ़िलफ़िल, ज़ीरा किर्मानी, नानख़्वाह , तुख़्म-ए-करफ़्स, मुर मक्की और ज़ाफ़रान प्रत्येक 2 ग्राम, हलीला ज़र्द, सूरन्जान और माहीज़हरज प्रत्येक 14 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-काकनज के साथ मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **हब्ब-ए-शीतरज का अन्य नुस्ख़ाः**

यह जोड़ों के दर्द, तांत्रिकाओं के दर्द, पक्षघात, लक़वा और Amenorrhoea में लाभदायक है।

औषधियाँः सिब्र सक़ूतरी 70 ग्राम, खरदल सफ़ेद, ज़न्जबील, नमक-ए-हिन्दी, वज तुर्की और शीतरज हिन्दी प्रत्येक 3.5 ग्राम, फ़ानीज़ 14 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-करफ़्सके साथ मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 8.75 ग्राम।

- **हब्ब-ए-शीतरज का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बलग़म की अधिकता के कारण होने वाले पक्षघात, लक़वा और मस्तिष्क रोगों में लाभदायक है।

औषधियाँः सिब्र सक़ूतरी 70 ग्राम, पोस्त-ए-हलीला ज़र्द 35 ग्राम, खरदल सफ़ेद और ज़न्जबील प्रत्येक 3.5 ग्राम, शीतरज हिन्दी 7 ग्राम, फ़ानीज़ 14 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-कुर्रास के साथ मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 8.75 ग्राम।

- **हब्ब-ए-सकबीनजः**

यह पक्षघात, लक़वा और जोड़ों के दर्द जैसे गलग़मी रोगों में लाभदायक है।

औषधियाँः सकबीनज, मुक़िल, उशक़, शहम-ए-हन्ज़ल, जावशीर प्रत्येक 35 ग्राम, ज़न्जबील, फ़िलफ़िल, दार-ए-फ़िलफ़िल, शीतरज, नानख़्वाह, जुन्द बेद स्तर, ज़ाफ़रान प्रत्येक 7 ग्राम, हलीला, बलीला, आमला, सूरन्जान प्रत्येक 10.5 ग्राम, तुर्बुद सफ़ेद एवं

सक़मूनिया मुक़श्शर प्रत्येक 17.5 ग्राम, सिब्र ज़र्द 70 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-गन्दना के साथ मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम से 10.5 ग्राम तक।

- **हब्ब-ए-सकबीनज का अन्य नुस्ख़ाः**

यह क़ूलन्ज खोलता है। आँतों के दर्द, मरोड़, बवासीर में लाभदायक है।

औषधियाँः सकबीनज, तुख़्म-ए-करफ़्स, अन्ज़रूत और पोस्तए-हलीला ज़र्द प्रत्येक 17.5 ग्राम, रोग़न-ए-बादाम में चर्ब किया हुआ तुर्बुद सफ़ेद मुजव्वफ़ 70 ग्राम, शहम-ए-हन्ज़ल 10.5 ग्राम, मुक़िल अज़रक़ 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-गन्दना के साथ मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम से 10.5 ग्राम तक।

- **हब्ब-ए-सकबीनज का अन्य नुस्ख़ाः**

यह पक्षघात, लक़वा, क़ूलन्ज, आँतों में मरोड़ और बलग़मी रोगों में लाभदायक है। साथ ही तांत्रिकाओं और आँतों से गाढ़े बलग़म को बाहर निकालता है।

औषधियाँः सकबीनज 1.75 ग्राम, उशक़, मुक़िल, जावशीर, हज़ार स्पन्द प्रत्येक 1 ग्राम, सिब्र ज़र्द 5.25 ग्राम, तुर्बुद 14 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को मिला कर हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम ।

- **हब्बुज़्ज़हबः**

यह आँख दर्द व सर दर्द में लाभदायक है। यह देखने की शक्ति बढ़ाता है।

औषधियाँः सिब्र सक़ूतरी 70 ग्राम, पोस्त-ए-हलीला ज़र्द 35 ग्राम, कतीरा, मस्तगी, ज़ाफ़रान और सक़मूनिया मुशव्वा प्रत्येक 10.5 ग्राम, गुल-ए-सुर्ख़ 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को मिला कर अर्क़-ए-गुलाब के साथ मिलाएँ और चने के समान हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम ।

- **हब्बुज़्ज़हब का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः सिब्र 35 ग्राम, तुर्बुद सफ़ेद 24.5 ग्राम, मस्तगी, गुल-ए-सुर्ख़ 8.75 ग्राम, ज़ाफ़रान 5.25 ग्राम, पोस्त-ए-हलीला ज़र्द 17.5 ग्राम, सक़मूनिया 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को हल्का कूट कर हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम ।

- **हब्बुज़्ज़हब का अन्य नुसख़ाः**

यह नुस्खा ''कामिलुस्सनाअह'' पुस्तक से लिया गया है। यह सर दर्द, आँख दर्द, रतौंधी में लाभदायक और मस्तिष्क के बेकार उत्पादों को बाहर निकालता है। यह आँख की रोशनी बढ़ाता है।

औषधियाँः मस्तगी रूमी, उसारा-ए-अफ़्सन्तीन, सिब्र सक़ूतरी, शहम-ए-हन्ज़ल, पोस्त-ए-हलीला ज़र्द, सक़मूनिया मुशव्वा 1-1 भाग, गुल-ए-सुर्ख़ अर्धभाग, ज़ाफ़रान चतुर्थ भाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर अर्क़-ए-गुलाब के साथ मिलाएँ?।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम से 4.5 ग्राम तक दें।

- **हब्ब का अन्य नुस्ख़ाः**

शरीर से सौदा को बाहर निकालता है साथ ही गाढ़े एवं चिपचिपे बलग़म को भी बाहर निकालता है।

औषधियाँः हब्ब-ए-बलसाँ, सलीख़ा, सुंबुल, असारून, दार-ए-चीनी, ज़ाफ़रान, मस्तगी, बीख़-ए-इज़्ख़िर, उसारा-ए-अफ़्सन्तीन, ज़रावन्द मुदहरज और नमक-ए-हिन्दी प्रत्येक 3.5 ग्राम, सिब्र सक़ूतरी 52.5 ग्राम, सक़मूनिया मुशव्वा, ग़ारीक़ून, शहम-ए-हन्ज़ल प्रत्येक 10.5 ग्राम, अफ़्तीमून  इक्रीती और बिस्फ़ाइज फ़िस्तक़ी प्रत्येक 21 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-करफ़्स के साथ मिलाएँ और 170 मिलीग्राम के वज़न के समान हब्ब तैयार करें। साए में सुखा कर शीशे के पात्र में सुरक्षित कर लें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम से 10.5 ग्राम तक दें।

अनुपानः हल्के गर्म पानी के साथ दें।

- **हब्ब का अन्य नुस्ख़ाः**

यह सौदा अर्थात black bile का विरेचक है।

औषधियाँः अयारिज फ़ीक़रा और हब्बुस्सुंबुल प्रत्येक 35 ग्राम,पोस्त-ए-हलीला ज़र्द, अफ़्तीमून  इक्रीती और बिस्फ़ाइज फ़िस्तक़ी प्रत्येक 17.5 ग्राम, शहम-ए-हन्ज़ल 10.5 ग्राम, सना मक्की और मुक़िल 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः मुक़िल को आब-ए-बादियान में घोलें और शेष को  कूट छान कर उस के साथ मिला कर हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम से 14 ग्राम तक दें।

अनुपानः मतबूख़-ए-अनीसून के साथ दें।

- **हब्बुस्सकबीनजः**

यह नुस्खा "कामिलुस्सनाअह" पुस्तक से लिया गया है जो शरीर से निकलने वाले बेकार उत्पादों और सौदा को बाहर निकालता है।

औषधियाँः अफ़्तीमून इक़ीती और शहम-ए-हन्ज़ल 52.5 ग्राम, ग़ारीक़ून सफ़ेद 35 ग्राम, सिब्र सक़ूतरी 98 ग्राम, सुंबुलुत्तीब, क़ुस्त तल्ख़, हब्ब-ए-बलसाँ, ज़ाफ़रान और बीख़-ए-इज़्ख़िर प्रत्येक 12.25 ग्राम, सलीख़ा 22.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-करफ़्स और किब्रीत अर्थात गन्धक के साथ मिलाएँ और हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम है।

- **हब्बुस्सलामहः**

यह जलोदर रोग में लाभदायक है, क़ूलन्ज खोलता है, गाढ़े तरल पदार्थों एवं शरीर से निकलने वाले बेकार उत्पादों अथवा बलग़म को बाहर निकालता है।

औषधियाँः तुर्बुद सफ़ेद 35 ग्राम, हब्बुस्सुंबुल 10.5 ग्राम, शिबरम, माज़रयून और कतीरा प्रत्येक 8.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट छान कर 7 ग्राम मुक़िल के नक़ूअ में मिलाएँ व हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम से 5.25 ग्राम तक।

- **हब्ब-ए-ग़ाफ़िसः**

यह बलग़मी बुख़ारों में लाभदायक है।

औषधियाँः सिब्र सक़ूतरी, पोस्त-ए-हलीला ज़र्द, उसारा-ए-ग़ाफ़िस प्रत्येक एक भाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान लें और पानी मिला कर हब्ब तैयार करें।

- **हब्बुन्निफ़्तः**

यह पक्षघात, लक़वा, जोड़ो के दर्द, गठिया, तांत्रिकाओं के ढीलेपन, क़ूलन्ज, गाढ़ी हवा या भारी गैस के साथ तरल एवं ठंडे प्रकार के रोगों में लाभदायक है।

औषधियाँः पोस्त-ए-हलीला ज़र्द, सिब्र सक़ूतरी, उशक़, शहम-ए-हन्ज़ल, माहीज़हरज, जुन्द बेद स्तर, अन्ज़रूत, मुक़िल अज़रक़, सकबीनज, जावशीर, समग़ुस्सुद्दाब और निफ़्त सफ़ेद प्रत्येक 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूटने योग्य को कूट लें और Exudates को पानी में घोल लें फिर सब को मिला कर 170 ग्राम के हब्ब तैयार करें। फिर उन को छाँव में सुखा लें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम ।

सेवन-समयः सोते समय प्रयोग करें।

- **हब्ब का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गुर्दा एवं मूत्राशय की पथरी को पारा पारा करता है और बाहर भी निकालता है।

औषधियाँ: उशक़ और कुन्नन प्रत्येक 3.5 ग्राम, हब्ब-ए-बलसाँ 7 ग्राम, मुर मक्की 14 ग्राम, तुख़्म-ए-करफ़्स और अनीसून प्रत्येक 3.5 ग्राम, शीरा-ए-फ़ुलूस-ए-खयार शंबर सभी औषधियों के समभाग, रोग़न-ए-बादाम 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को एक साथ मिला कर हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्रा: 3.5 ग्राम।

- **हब्ब-ए-मुर मक्कीः**

यह गंदे तरल पदार्थों एवं बेकार उत्पादों को मस्तिष्क से बाहर निकालता है। यह सफरा एवं बलगम का विरेचक भी है।

औषधियाँ: सिब्र सक़ूतरी और शहम-ए-हन्ज़ल प्रत्येक 31.5 ग्राम, ज़ाफ़रान, सुंबुलुत्तीब, दार-ए-चीनी, हब्ब-ए-बलसाँ, असारून, मस्तगी, अफ़्सन्तीन, सक़मूनिया मुशव्वा और तुर्बुद प्रत्येक 4.5 ग्राम, सलीख़ा 2.25 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को कूट छान लें और पानी मिला कर हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्रा: रोगी के स्वभाव में तरलता एवं सूखेपन के अनुसार दें।

- **हब्ब-ए-इब्नुलहारिसः**

यह बलग़मी बुख़ारों एवं बलग़मी रोगों में लाभदायक है। यह गठिया, श्वेतरक्त और बहक़ रोग में लाभदायक है साथ ही यह बालों के कालेपन को बनाए रखता है।

औषधियाँ: पोस्त-ए-हलीला ज़र्द, सिब्र सक़ूतरी, तुर्बुद मुक़श्शर, मुक़िल, मुर मक्की, सकबीनज और शहम-ए-हन्ज़ल प्रत्येक 17.5 ग्राम, खरदल सफ़ेदब  सअतर फ़ारसी, शोनीज़, ज़ीरा किर्मानी, नमक-ए-तबरज़द और इल्क-ए-रूमी प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: Exudates को आब-ए-गन्दना में अच्छी तरह से घोल लें और शेष को कूट छान कर उस के साथ अच्छी तरह मिलाएँ और फ़िलफ़िल के बराबर के हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्रा: 4.5 ग्राम।

आहार: आहार के रूप में ज़ीरबाज का प्रयोग करें।

- **हब्ब-ए-अयारिजः**

यह सौदावी स्वभाव के व्यक्तियों के लिए लाभदायक है और जले हुए सौदा को भी बाहर निकालता है।

औषधियाँ: लाजवर्द मग़सूल 10.5 ग्राम, क़रन्फ़ुल, अनीसून प्रत्येक 7 ग्राम,

सक़मूनिया 3.5 ग्राम, ग़ारीक़ून 17.5 ग्राम, अफ़्तीमून, बिस्फ़ाइज प्रत्येक 14 ग्राम, अयारिज फ़ीक़रा 21 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-करफ़्स के साथ मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम।

- **हब्ब-ए-नारमुश्कः**

यह क़ूलन्ज खोलता और जोड़ों के दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँः हब्ब-ए-बलसाँ, ज़न्जबील, दार-ए-चीनी प्रत्येक 5.25 ग्राम, पोस्त-ए-हलीलाज़र्द 10.5 ग्राम, सिब्र सक़ूतरी 70 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-इनबुस्सअलब के साथ मिलाएँ और हब्ब तैयार कर के छाँव में सुखा लें।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम से 8.75 ग्राम तक।

- **हब्ब का अन्य नुस्ख़ाः**

यह नुस्खा "कामिलुस्सनाअह" से लिया गया है जो क़ूलन्ज, जोड़ों के दर्द और Gout में लाभदायक है।

औषधियाँः फ़िलफ़िलमोया, साज़ज हिन्दी, सअतर फ़ारसी, फ़िलफ़िल, दार-ए-फ़िलफ़िल, नमक-ए-हिन्दी, हब्ब-ए-बलसाँ, ज़न्जबील, दार-ए-चीनी और नारमुश्क प्रत्येक 5.25 ग्राम, हलीला स्याह 10.5 ग्राम, सिब्र सक़ूतरी 70 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-इनबुस्सअलब के साथ मिलाएँ और हब्ब तैयार कर के छाँव में सुखा लें।

सेवन-मात्राः 8.75 ग्राम।

- **हब्ब-ए-मुब्तरानीः**

यह नुस्खा चौथिया बुख़ार, सौदावी, बलग़मी रोगों, क़ूलन्ज, पेट दर्द, जिगर दर्द, Gout और जोड़ो के दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँः उसारा-ए-अफ़्सन्तीन, मस्तगी, पोस्त-ए-हलीला ज़र्द, पोस्त-ए-हलीला स्याह, हब्बुस्सुंबुल, ग़ारीक़ून, शाहतरह, शहम-ए-हन्ज़ल प्रत्येक 9 ग्राम, सक़मूनिया 17.5 ग्राम, सिब्र सक़ूतरी 70 ग्राम। "कामिलुस्सनाअह" के लेखक ने शाहतरह के स्थान पर माहीज़हरज का वर्णन किया है।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-इनबुस्सअलब के साथ मिलाएँ और हब्ब तैयार कर के छाँव में सुखा लें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

- **हब्बुस्सिब्र:**

  यह Anasarca में लाभदायक है।

  औषधियाँ: सिब्र ज़र्द 42 ग्राम, अफ़्तीमून 21 ग्राम, सक़मूनिया 14 ग्राम, सुंबुलुत्तीब, सलीख़ा, तुर्बुद सफ़ेद, मस्तगी रूमी प्रत्येक 7 ग्राम, ज़ाफ़रान 5.25 ग्राम, ग़ारीक़ून 10.5 ग्राम, हमामा 1.75 ग्राम।

  निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर हब्ब तैयार करें।

  सेवन-मात्रा: 7ग्राम से 10.5 ग्राम।

- **हब्ब का अन्य नुस्ख़ा:**

  इस नुस्खे से भी उपर्युक्त लाभ प्राप्त होते हैं।

  औषधियाँ: अयारिज फ़ीक़रा 2.25 ग्राम, लाजवर्द मग़सूल, सुंबुलुत्तीब, अनीसून, शहम-ए-हन्ज़ल, कतीरा और सक़मूनिया प्रत्येक 500 मिलीग्राम।

  निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर आब-ए-करफ़्स के साथ मिलाएँ।

  सेवन-मात्रा: उपर्युक्त पूरी दवा एक बार की ख़ुराक है।

- **हब्ब-ए-माज़रयून:**

  यह जलोदर रोग में लाभदायक है।

  औषधियाँ: रेवन्द चीनी, उसारा-ए-ग़ाफ़िस और तुख़्म-ए-करफ़्स प्रत्येक 10.5 ग्राम, ग़ारीक़ून और माज़रयून मुदब्बर प्रत्येक 10.5 ग्राम,

  कुछ नुस्खों में ग़ारीक़ून 17.5 ग्राम वर्णित है। अगर रोगी को गर्मी लगी हो और उल्टी हो रही हो तो तुख़्म-ए-करफ़्स के स्थान पर तुख़्म-ए-कासनी का प्रयोग करें।

  निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर हब्ब तैयार करें।

  सेवन-मात्रा: 4.5 ग्राम।

- **हब्ब का अन्य नुस्ख़ा:**

  इस नुस्खे से भी उपर्युक्त लाभ प्राप्त होते हैं।

  औषधियाँ: माज़रयून मुदब्बर 1.75 ग्राम, रूसख़्तज 832 मिलीग्राम, फ़र्फ़ियून 624 मिलीग्राम, नमक-ए-हिन्दी और सरगीन-ए-कबूतर प्रत्येक 416 मिलीग्राम।

  निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर हब्ब तैयार करें।

  सेवन-मात्रा: कमज़ोर को दो भाग में और मज़बूत व्यक्तियों को एक बार में दी जाए।

- **हब्ब का अन्य नुस्ख़ा:**

  यह जलोदर रोग के रोगियों के लिए लाभदायक है।

औषधियाँ: तुर्बुद सफ़ेद और रेवन्द चीनी प्रत्येक 624 मिलीग्राम, मुक़िल और तुख़्म-ए-अन्जोरह प्रत्येक 832 मिलीग्राम, रोग़न-ए-गाव में चर्ब किया हुआ फ़र्फ़ियून 416 मिलीग्राम,

निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर आब-ए-बादियान के साथ मिलाएँ।

सेवन-मात्रा: उपर्युक्त पूरी दवा रोगी के स्वभाव के अनुसार दो बार में या एक बार की ख़ुराक में दी जाए।

- **हब्ब का अन्य नुस्ख़ा:**

इस को मोहम्मद बिन ज़करिया राज़ी ने तैयार किया है।

औषधियाँ: रेवन्द चीनी, उसारा-ए-ग़ाफ़िस, तुख़्म-ए-कासनी प्रत्येक 10.5 ग्राम, ग़ारीक़ून 17.5 ग्राम, माज़रयून मुदब्बर 14 ग्राम, मग़्ज़-ए-बादाम 3.5 ग्राम, कतीरा 1 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्रा: 7 ग्राम।

- **हब्ब का अन्य नुस्ख़ा:**

यह मिर्गी रोग से ग्रस्त व्यक्तियों के लिए लाभदायक है।

औषधियाँ: सिब्र सक़ूतरी और ग़ारीक़ून प्रत्येक 1.75 ग्राम, शहम-ए-हन्ज़ल 1 ग्राम, सक़मूनिया मुशव्वा 500 मिलीग्राम।

निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर अर्क़-ए-बादियान के साथ मिलाएँ।

सेवन-मात्रा: यह पूरी दवा एक ख़ूराक की मात्रा है।

- **हब्ब का अन्य नुस्ख़ा:**

यह नुस्खा मिर्गी रोग से ग्रस्त व्यक्तियों के लिए लाभदायक है साथ ही मस्तिष्क से गाढ़े पदार्थों को बाहर भी निकालता है।

औषधियाँ: अयारिज फ़ीक़रा 1.75 ग्राम, अफ़्तीमून, उस्तुख़ुद्दूस, बिस्फ़ाइज, नमक-ए-हिन्दी, ग़ारीक़ून प्रत्येक 500 मिलीग्राम, तुर्बुद सफ़ेद मुक़श्शर, पोस्त-ए-हलीला ज़र्द, शहम-ए-हन्ज़ल, कतीरा और सक़मूनिया प्रत्येक 500 मिलीग्राम।

निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्रा: यह पूरी दवा दो ख़ूराक की मात्रा है।

- **हब्ब का अन्य नुस्ख़ा:**

यह नुस्खा "ग़िना मुना" पुस्तक से लिया गया है। यह मिर्गी रोग से ग्रस्त व्यक्तियों के लिए लाभदायक है।

औषधियाँः शहम-ए-हन्ज़ल, उस्तोखुद्दूस, जुन्द बेद स्तर, मुर मक्की, ग़ारीक़ून प्रत्येक 3.5 ग्राम,अयारिज फ़ीक़रा 14 ग्राम, तुर्बुद सफ़ेद 24.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम से 10.5 ग्राम तक।

- **हब्ब-ए-मुक़िलः**

यह नुस्खा बवासीर में लाभदायक है।

औषधियाँः पोस्त-ए-हलीला ज़र्द, हलीला स्याह, पोस्त-ए-हलीला काबुली प्रत्येक 17.5 ग्राम, तुर्बुद सफ़ेद 35 ग्राम, सकबीनज, ख़रदल प्रत्येक 7 ग्राम, मुक़िलुलयहूद 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः मुक़िल को पानी में घोल लें। शेष औषधियों को कूट छान उस में अच्छी तरह मिलाएँ और हब्ब तैयार करें।

- **हब्ब-ए-मुक़िल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह नुस्खा Anal Fissure और बवासीर में लाभदायक है साथ ही गर्म स्वभाव के व्यक्तियों के लिए भी लाभदायक है।

औषधियाँः पोस्त-ए-हलीला ज़र्द एवं काबुली, मुक़िल प्रत्येक 35 ग्राम, कतीरा 17.5 ग्राम, अन्जीर सफ़ेद 3 की संख्या में।

निर्माण-विधिः अन्जीर को पानी में पकाएँ और फिर उसी पानी में मल कर मिला लें। तत्पश्चात उसी पानी में मुक़िल एवं कतीरा को अच्छी तरह घोल लें साथ हलीलाजात के पोस्त को भी उस पानी में घोल लें फिर शेष को कूट छान उस में अच्छी तरह मिलाएँ और हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम से 10.5 ग्राम तक।

- **हब्ब का अन्य नुस्ख़ाः**

यह आँतों के दर्द, पेट दर्द एवं बवासीर में लाभदायक है।

औषधियाँः हलीला स्याह, पोस्त-ए-हलीला काबुली और आमला मुनक़्क़ा प्रत्येक 1-1 भाग, मुक़िल 3 भाग, तुर्बुद डेढ़ भाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान रोग़न-ए-बादाम में चर्ब करें और आब-ए-गन्दना के साथ मिला कर हब्ब तैयार करें।

- **हब्ब का अन्य नुस्ख़ाः**

इस नुस्खे को लगातार तीन रात प्रयोग करने से बवासीर के दर्द में आराम मिलता है और यह बहुत लाभदायक है।

औषधियाँः हलीला स्याह, पोस्त-ए-हलीला, आमला मुनक़्क़ा और मुक़िल प्रत्येक 14 ग्राम, तुर्बुद सफ़ेद 3.5 ग्राम, नमक-ए-हिन्दी 1.75 ग्राम, सुंबुलुत्तीब, ज़ाफ़रान, दार-ए-चीनी और सलीख़ा प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः मुक़िल को आब-ए-गन्दना में अच्छी तरह घोलें और शेष को कूट छान कर आब-ए-गन्दना और मुक़िल में मिलाएँ और हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्राः 9 ग्राम।

- **हब्ब-ए-शाहतरहः**

यह नुस्खा सौदा एवं सफ़रा के लिए विरेचक है और खुजली में भी लाभदायक है।

औषधियाँः पोस्त-ए-हलीला ज़र्द, बलीला स्याह प्रत्येक 17.5 ग्राम, सिब्र सक़ूतरी 10.5 ग्राम, सक़मूनिया 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-शाहतरह के साथ मिलाएँ।

- **हब्ब का अन्य नुस्खाः**

यह स्वित्र, Ptyriasis Nigra और सौदावी रोगी में लाभदायक है।

औषधियाँः अयारिज फ़ीक़रा 3.5 ग्राम, अफ़्तीमून 35 ग्राम, लाजवर्द मग़सूल 24.5 ग्राम, सक़मूनिया मुशव्वा, ख़रबक़ स्याह, शहम हन्ज़ल प्रत्येक 7 ग्राम, सुंबुलुत्तीब, अनीसून प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-करफ़्स के साथ मिलाएँ तैयार करें।

सेवन-मात्राः रोगी के स्वभाव अनुसार प्रयोग कराएँ।

- **हब्ब का अन्य नुस्खाः**

यह खालित्य में लाभदायक है। यह सौदा, सफरा और बलग़म के विरेचक भी है।

औषधियाँः अफ़्तीमून, शहम-ए-हन्ज़ल, सक़मूनिया, अफ़्सन्तीन, नमक-ए-हिन्दी प्रत्येक 9 ग्राम, सिब्र ज़र्द 45 ग्राम, अन्ज़रूत और बिस्फ़ाइज प्रत्येक 13.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर मिलाएँ।

- **हब्ब-ए-ग़ारीक़ूनः**

यह सुद्दों को खोलता है। जलोदर रोग एवं जिगर के रोगों में भी लाभदायक है।

औषधियाँः अफ़्तीमून, सिब्र सक़ूतरी प्रत्येक 21 ग्राम, ग़ारीक़ून का बुरादा जिसे उल्टी छलनी पर रगड़ कर प्राप्त किया गया हो 18 ग्राम, फ़ुत्रासालियून, तुख़्म-ए-करफ़्स और दोक़ू प्रत्येक 7 ग्राम, सक़मूनिया 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर पानी के साथ मिलाएँ।

- **हब्ब-ए-ग़ारीकून का अन्य नुस्ख़ा:**

इस से भी उपर्युक्त लाभ प्राप्त होते हैं। लगातार हर रात प्रयोग करने पर यह हल्का विरेचक है। साथ ही यह सफरा एवं बलग़म को शरीर से बाहर निकालता है।

औषधियाँ: ग़ारीक़ून 35 ग्राम, उसारा-ए-ग़ाफ़िस और रेवन्द चीनी प्रत्येक 7 ग्राम, क़न्द सफ़ेद 52.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को कूट कर पानी के साथ मिलाएँ।

- **हब्ब-ए-ग़ारीकून का अन्य नुस्ख़ा:**

यह श्वास की तंगी एवं दमा में लाभदायक है। साथ ही सीना एवं फेफड़े से गन्दे पदार्थों को बाहर निकालता है।

औषधियाँ: ग़ारीक़ून 10.5 ग्राम, आब-ए-सोसन, फ़रासियून प्रत्येक 3.5 ग्राम, तुर्बुद सफ़ेद 17.5 ग्राम, अयारिज फ़ीक़रा, शहम-ए-हन्ज़ल, अन्ज़रूत और मुर मक्की प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को कूट कर मैफुख़्तज में मिलाएँ।

सेवन-मात्रा: 7 ग्राम।

अनुपान: गर्म पानी के साथ प्रयोग करें।

- **हब्ब-ए-ग़ारीकून का अन्य नुस्ख़ा:**

इस नुस्खे से भी उपर्युक्त लाभ प्राप्त होते हैं। साथ ही सीना एवं फेफड़ों को साफ़ करता है।

औषधियाँ: ग़ारीक़ून 2 ग्राम, शहम-ए-हन्ज़ल 1 ग्राम, रुब्ब-ए-सोसन 2.25 ग्राम, अन्जोरह और ईर्सा प्रत्येक 5.25 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को कूट कर हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्रा: यह सभी औषधियाँ एक ख़ूराक की मात्रा हैं।

- **हब्ब-ए-ग़ारीकून का अन्य नुस्ख़ा:**

यह उस व्यक्ति के लिए लाभदायक है जिस की तबीयत, सीने और फेफड़े में हरारत हो और वह हुम्मा-ए-हार से ग्रस्त हो। इस से Pleurisy और Pneumonia में लाभ पहुँचता है।

औषधियाँ: ग़ारीक़ून 750 मिलीग्राम, कतीरा 250 मिलीग्राम, बनफ़्शा और रुब्ब-ए-सोसन प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्रा: यह सभी औषधियाँ एक ख़ूराक की मात्रा हैं।

- **हब्ब-ए-खेज़रानः**

यह कन्ठमाला, scalling, हाथी पाँव में लाभदायक है।

औषधियाँः अयारिज फ़ीक़रा 10.5 ग्राम, ग़ारीक़ून 8.75 ग्राम, शहम-ए-हन्ज़ल 5.25 ग्राम, अन्ज़रूत 14 ग्राम, जावशीर 4.5 ग्राम, नौशादर 7 ग्राम, सक़मूनिया 4.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-गन्दना के साथ मिलाएँ ।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम।

- **हब्ब-ए-वासिलीः**

इस नुस्खे से भी उपर्युक्त लाभ प्राप्त होते हैं।

औषधियाँः सुंबुलुत्तीब, सलीख़ा, हब्ब-ए-बलसाँ, असारून, ऊद-ए-बलसाँ, मस्तगी रूमी, दार-ए-चीनी और ज़ाफ़रान प्रत्येक 3.5 ग्राम, सिब्र ज़र्द 56 ग्राम, अफ़्तीमून 35 ग्राम, उस्तुखुद्दूस और शहम-ए-हन्ज़ल प्रत्येक 17.5 ग्राम, तुर्बुद सफ़ेद 24.5 ग्राम, नमक-ए-हिन्दी 7 ग्राम, सक़मूनिया 14 ग्राम।

निर्माण-विधिः विधि अनुसार हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम से 7 ग्राम तक।

- **हब्ब-ए-उस्तोखुद्दूसः**

इस नुस्खे का वर्णन "कामिलुस्सनाअह" के लेखक ने किया है। सौदावी सर दर्द के रोगी के लिए लाभदायह है।

औषधियाँः पोस्त-ए-हलीला काबुली, पोस्त-ए-हलीला ज़र्द, पोस्त-ए-हलीला स्याह, सिब्र सक़ूतरी और बिस्फ़ाइज प्रत्येक 17.5 ग्राम, शहम-ए-हन्ज़ल 8.75 ग्राम, ख़रबक़ स्याह 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-बादरन्जबोया के साथ मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम से 10.5 ग्राम तक।

- **हब्ब-ए-बनफ़्शाः**

यह बवासीर, सर दर्द, आँख दर्द, अधकपारी में लाभदायक है। दिमाग़ को द्रव्यों से पाक करता है।

औषधियाँः बनफ़्शा खुश्क 7 ग्राम, रोग़न-ए-बादाम में चर्ब किया हुआ तुर्बुद सफ़ेद मुक़श्शर 3.5 ग्राम, रुब्ब-ए-सोसन, पोस्त-ए-हलीला ज़र्द, अनीसून प्रत्येक 1.75 ग्राम, बर्ग-ए-गुल-ए-सुर्ख़, सक़मूनिया मुशव्वा प्रत्येक 500 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर पानी के साथ मिलाएँ।

सेवन-मात्राः यह सम्पूर्णतः एक खुराक की मात्रा है।

- **हब्ब-ए-बनफ़्शा का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गर्म स्वभाव के व्यक्तियों के लिए लाभदायक है।

औषधियाँः बनफ़्शा, पोस्त-ए-हलीला ज़र्द और नीलोफ़र प्रत्येक 7 ग्राम,सिब्र सक़ूतरी 10.5 ग्राम, गुल-ए-सुर्ख़ 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-तुरन्जबीन के साथ मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 9 ग्राम है।

- **हब्ब-ए-कोतवालीः**

यह दिमाग़ एवं अन्य अंगों को द्रव्यों से पाक करता है। साथ ही पक्षघात, लक़वा एवं खालित्य (Alopaecia) रोग में लाभदायक है। अगर इस को 3.5 ग्राम की मात्रा में 3.5 ग्राम अयारिज फीक़रा के साथ मिला कर खाया जाए तो आँख की रोशनी में बढ़ोत्तरी होती है। मोतियाबिंद को रोकता है। सम्पूर्ण शरीर को गंदे द्रव्यों से पाक करता है।

औषधियाँः सिब्र ज़र्द, सक़मूनिया मुशव्वा, शहम-ए-हन्ज़ल, उसारा-ए-अफ़्सन्तीन और मस्तगी रूमी प्रत्येक 750 ग्राम, मुक़िलुलयहूद 500 मिलीग्राम, कतीरा 250 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्राः यह सम्पूर्णतः एक खुराक की मात्रा है।

- **हब्ब-ए-कोतवाली का अन्य नुस्ख़ाः**

यह पुरानी खाँसी, दमा, श्वास की तंगी में लाभदायक है।

औषधियाँः ग़ारीक़ून, तुर्बुद सफ़ेद मुक़श्शर प्रत्येक 10.5 ग्राम, रुब्ब-ए-सोसन, शहम-ए-हन्ज़ल, अयारिज फ़ीक़रा, अन्ज़रूत प्रत्येक 7 ग्राम, अन्जीर सफ़ेद 10, बनफ़्शा 3.5 ग्राम, ज़रावन्द मुदहरज 1.75 ग्राम, राज़ियाना, ज़ूफ़ा खुश्क प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान लें और अन्जीर को पका कर उन के साथ मिलाएँ और हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम है।

- **हब्बुलमुलूकः**

यह बड़े लोगों, ज़ायक़ा पसन्द करने वाले लोगों के साथ उन लोगों के लिए बढ़िया वस्तु है जो विरेचक औषधियों के सेवन को नापसन्द करते हैं।

औषधियाँः तुर्बुद सफ़ेद 2 ग्राम, पोस्त-ए-हलीला ज़र्द, मस्तगी और हलीला स्याह प्रत्येक 250 मिलीग्राम, अफ़्तीमून इक़्लीती 250 मिलीग्राम, गावज़बान, फ़रन्जमुश्क, बादरन्जबोया, महमूदा, तबाशीर, ज़ाफ़रान और गुल-ए-सुर्ख़ प्रत्येक 500 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर अर्क़-ए-गुलाब के साथ मिलाएँ।

- **हब्ब का अन्य नुस्ख़ा:**

यह आँतों के लंबे कीड़ों को बाहर निकालता है।

औषधियाँः ब्रंग काबुली मुक़श्शर, हलीला ज़र्द और नमक-ए-हिन्दी प्रत्येक 9 ग्राम, रोग़न-ए-बादाम में चर्ब किया हुआ तुर्बुद सफ़ेद 17.5 ग्राम, फ़ानीज़ सभी औषधियों के समभाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर पानी के साथ मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 9 ग्राम है।

अनुपानः गर्म पानी के साथ प्रयोग करें।

- **हब्ब का अन्य नुस्ख़ा:**

यह छोटे, गोल एवं लंबे कीड़ों को बाहर निकालता है। साथ ही आँतों एवं पेट को इन कीड़ों से पाक करता है।

औषधियाँः क़िन्बील, पोदीना ख़ुश्क, ब्रंग काबुली मुक़श्शर, नमक-ए-हिन्दी प्रत्येक 17.5 ग्राम, क़िर्दमाना 21 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम।

अनुपानः दरेमना तुर्की एवं दूध के क्वाथ के साथ।

- **हब्ब का अन्य नुस्ख़ा:**

इस नुस्खे से भी उपर्युक्त लाभ प्राप्त होते हैं क्योंकि यह कीड़ों को मारता है।

औषधियाँः तुर्बुद सफ़ेद 1 ग्राम, ब्रंग काबुली, शीह-ए-अरमनी, तुर्मुस और क़िन्बील प्रत्येक 500 मिलीग्राम, सिब्र ज़र्द 1.5 ग्राम, सक़मूनिया मुशव्वा 250 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्राः यह सम्पूर्णतः एक खुराक की मात्रा है।

अनुपानः गर्म पानी के साथ प्रयोग करें।

- **हब्ब-ए-इस्राईलः**

जलोदर रोग एवं ठंडे रोगों के रोगियों को लाभ पहुँचाता है और साथ ही चिपचिपे बलग़म को बाहर निकालता है।

औषधियाँः शिबरम मुदब्बर, सकबीनज 1-1 भाग, अन्ज़रूत अर्धभाग, सक़मूनिया मुशव्वा एक तिहाई भाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर साफ़ शहद में मिलाएँ और 170 मिलीग्राम

वज़न के हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्राः कुल 5 ख़ुराकों का प्रयोग करें। एक ख़ुराक में 5 हब्ब प्रयोग करे।

- **हब्ब-ए-मुत्फ़ी-ए-हरारतः**

यह गर्मी से होने वाले गठिया में लाभदायक है। दर्दों में तुरंत आराम देता है।

औषधियाँः अनीसून, ज़ीरा किमानी, फ़िलफ़िल सफ़ेद, दार-ए-फ़िलफ़िल और मग़ज़-ए-हब्बुलक़ुर्तुम प्रत्येक 14 ग्राम, मस्तगी 21 ग्राम, सूरन्जान 70 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट कर आब-ए-राज़ियाना में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

अनुपानः आब-ए-ज़ीरा के साथ प्रयोग कराएँ।

- **हब्ब का अन्य नुस्ख़ाः**

यह सौदा का विरेचक है।

औषधियाँः अफ़्तीमून, हजर-ए-अरमनी प्रत्येक 10.5 ग्राम, नमक-ए-निफ़्ती 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट कर आब-ए-हिन्दियाना में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 9 ग्राम।

अनुपानः पानी के साथ प्रयोग करें।

- **हब्ब-ए-मुस्हिल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह शुद्ध सफ़रा को बाहर निकालता है।

औषधियाँः हलीला ज़र्द 7 ग्राम, सक़मूनिया 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट कर आब-ए-लबलाब में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 9 ग्राम। 7 ग्राम से 10.5 ग्राम तक।

- **हब्ब का अन्य नुस्ख़ाः**

यह शुद्ध सौदा को बाहर निकालता है।

औषधियाँः अफ़्तीमून, बिस्फ़ाइज प्रत्येक 10.5 ग्राम, ख़रबक़ स्याह, हजर-ए-अरमनी मग़सूल प्रत्येक 3.5 ग्राम, तुर्बुद1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **हब्ब का अन्य नुस्ख़ाः**

यह शुद्ध बलग़म को बाहर निकालता है।

औषधियाँः तुर्बुद सफ़ेद और अयारिज फ़ीक़रा प्रत्येक 7 ग्राम, शहम-ए-हन्ज़ल

1.75 ग्राम, ग़ारीक़ून 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट कर आब-ए-राज़ियाना में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम से 10.5 ग्राम तक।

- **हब्ब का अन्य नुस्ख़ाः**

यह मिर्गी, पक्षघात, लक़वा, झटके और बलग़मी बुख़ारों में लाभदायक है। शरीर से चिपचिपे द्रव्यों को भी बाहर निकालता है।

औषधियाँः शहम-ए-हन्ज़ल, सक़मूनिया, ख़रबक़ स्याह और मुक़िल सभी एक एक भाग, फ़र्फ़ियून अर्धभाग, क़ुत्रान अर्धभाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर उसार-ए-किब्रीत के साथ मिलाएँ ।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम।

- **हब्ब का अन्य नुस्ख़ाः**

मुस्हिल का यह नुस्खा "इख़्तियारात-ए-हुनैन" पुस्तक से लिया गया है। यह हल्का है और कोई हानि भी नहीं पहुँचती है।

औषधियाँः पोस्त-ए-हलीला, बलीला, आमला और हलीला स्याह प्रत्येक 10.5 ग्राम, ग़ारीक़ून 1.75 ग्राम, सक़मूनिया 750 मिलीग्राम, नमक-ए-हिन्दी 500 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर पानी के साथ मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम।

- **हब्ब का अन्य नुस्ख़ाः**

यह नुस्खा "हावी कबीर" पुस्तक से लिया गया है। यह हल्का विरेचक है।

औषधियाँः पोस्त-ए-हलीला ज़र्द 3.5 ग्राम, तुर्बुद मुक़श्शर 1.75 ग्राम, सक़मूनिया 500 मिलीग्राम, हब्बुस्सुंबुल 1.75 ग्राम, उसारा-ए-अफ़्सन्तीन 250 ग्राम, काफ़ूर 500 मिलीग्राम, गुल-ए-सुर्ख़ 500 मिलीग्राम, ऊद-ए-हिन्दी 250 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-इनबुस्सअलब के साथ मिलाएँ।

सेवन-मात्राः यह सम्पूर्णतः एक खुराक की मात्रा है।

- **हब्ब का अन्य नुस्ख़ाः**

यह झटके, पक्षघात, ठंडे रोगों और में लाभदायक है।

औषधियाँः आक़रक़रहा, जुन्द बेद स्तर और शीतरज हिन्दी प्रत्येक 10.5 ग्राम, सकबीनज 14 ग्राम, शहम-ए-हन्ज़ल 14 ग्राम, अयारिज फ़ीक़रा 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **हब्ब का अन्य नुस्खाः**

बलग़म एवं तरल पदार्थों की अधिकता से कमज़ोर होने वाले आमाशय में और ऐसे आमाशय में लाभदायक है जिस में कमज़ोरी के कारण गैस उत्पन्न हो रही हो।

औषधियाँः हलीला स्याह 7 ग्राम, सिब्र सक़ूतरी 28 ग्राम, पोस्त-ए-हलीला ज़र्द 3.5 ग्राम, ज़न्जबील, सुंबुल प्रत्येक 7 ग्राम, नमक-ए-हिन्दी 3.5 ग्राम, मस्तगी 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट छान कर आब-ए-गन्दना में मिलाएँ।

- **हब्ब का अन्य नुस्खाः**

तेज़ बुख़ारों में और साधारण स्वभाव के व्यक्तियों के लिए लाभदायक है।

औषधियाँः किशनीज़ ख़ुश्क और बर्ग-ए-गुल-ए-सुर्ख़ प्रत्येक 10.5 ग्राम, तबाशीर 3.5 ग्राम, काफ़ूर 32 मिलीग्राम, सक़मूनिया 500 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर साफ़ पानी में मिलाएँ।

- **हब्ब का अन्य नुस्खाः**

यह Laxative है। यह साधारण स्वभाव के लोगों के अनुकूल है।

औषधियाँः पोस्त-ए-हलीला मुक़श्शर, तुर्बुद सफ़ेद, रेवन्द चीनी प्रत्येक 7 ग्राम, सक़मूनिया 1.75 ग्राम, उसारा-ए-सोसन और रुब्ब-ए-सोसन प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर साफ़ पानीमें मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम से 10.5 ग्राम तक।

- **हब्ब का अन्य नुस्खाः**

यह Laxative है। जिगर को मज़बूत करता है और सुद्दों को खोलता है। साथ ही यह पीलिया में भी लाभदायक है।

औषधियाँः रेवन्द चीनी, गुल-ए-सुर्ख़, कासनी, असलुस्सूस और उसारा-ए-ग़ाफ़िस प्रत्येक 10.5 ग्राम, मस्तगी, अनीसून, उसारा-ए-अफ़्सन्तीन और हब्ब-ए-बलसाँ प्रत्येक 5.25 ग्राम, ग़ारीक़ून और सक़मूनिया मुशव्वा प्रत्येक 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-कासनी सब्ज़ या आब-ए-राज़ियाना सब्ज़ के साथ मिलाएँ और हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **हब्ब-ए-बिस्फ़ाइजः**

यह सौदा का विरेचक है। साथ ही मस्तिष्क को द्रव्यों को पाक करता है।

औषधियाँः अयारिज फ़ीक़रा 35 ग्राम, बिस्फ़ाइज 8.75 ग्राम, तुर्बुद सफ़ेद 24.5 ग्राम।
निर्माण-विधिः सब को कूट कर पानी के साथ मिलाएँ।
सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम।

- **हब्बुज़्ज़बलः**

यह तीक्ष्ण प्रकार के क़ूलन्ज में लाभदायक है।

औषधियाँः सर्गीन-ए-गुर्ग 14 ग्राम, रोग़न-ए-बादाम में चर्ब किया हुआ तुर्बुद सफ़ेद मुक़श्शर प्रत्येक 17.5 ग्राम, तुख़्म-ए-करफ़्स और अनीसून प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर पानी के साथ मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम।

- **हब्ब-ए-सलमोयहः**

यह "अलक़ानून" पुस्तक से नक़ल किया गया है। यह जांघ, पहलू और कमर के दर्द, पक्षघात, लक़वा और नसों के ढीलेपन जैसे ठंडे रोगों में लाभदायक है।

औषधियाँः ज़न्जबील, फ़िलफ़िल, दार-ए-फ़िलफ़िल, शीतरज हिन्दी, हलीला ज़र्द, बलीला, आमला, मुर साफ़, तुर्बुद सफ़ेद, सक़मूनिया, ज़ाफ़रान और जुन्द बेद स्तर प्रत्येक 7 ग्राम, जावशीर, सूरनजान, सकबीनज, मुक़िल, उशक़, शहम-ए-हन्ज़ल प्रत्येक 35 ग्राम, सिब्र ज़र्द 70 ग्राम।

निर्माण-विधिः Exudates को आब-ए-किब्रीत में घोल लें और फिर सब को कूट छान कर मिलाएँ और हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **हब्ब-ए-फ़र्फ़्यूनः**

यह पक्षघात और नसों के ढीलेपन में लाभदायक है। साथ नसों से कच्चे द्रव्यों को बाहर निकालता है।

औषधियाँः ग़ारीक़ून, शहम-ए-हन्ज़ल, फ़र्फ़ियून, सकबीनज और मुक़िल प्रत्येक 3.5 ग्राम, सिब्र ज़र्द 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट छान कर आब-ए-किब्रीत में मिलाएँ।

- **हब्ब का अन्य नुस्ख़ाः**

यह जलोदर रोग में लाभदायक है।

औषधियाँः ग़ारीक़ून 1.75 ग्राम, फ़र्फ़ियून 750 मिलीग्राम, सकबीनज 3.5 ग्राम, नमक हिन्दी, सर्गीन-ए-कबूतर प्रत्येक 500 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर अच्छी तरह मिलाएँ।

- **हब्ब-ए-इब्न-ए-हुबैरहः**

यह नुस्खा "अलक़ानून" पुस्तक से नक़ल किया गया है। यह गैस, बवासीर, Ptyriasis Alba, nigra, Vitiligo में लाभदायक है।

औषधियाँः पोस्त-ए-हलीला ज़र्द, हलीला काबुली, हलीला स्याह प्रत्येक 54 ग्राम, शीतरज हिन्दी, दार-ए-फ़िलफ़िल प्रत्येक 22.5 ग्राम, जौज़बोवा और नमक-ए-इन्द्राणी प्रत्येक 4.5 ग्राम, तुर्बुद सफ़ेद और सिब्र ज़र्द प्रत्येक 13.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट छान कर मिलाएँ। मिलाते समय हाथों को रोग़न-ए-बनफ़्शा से चर्ब कर लें।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम।

अनुपानः आधी रात में गर्म पानी के साथ प्रयोग करें।

- **हब्बुलजामेः**

इस नुस्खे को शैख़ अबू अली सीना ने अपनी पुस्तक "अलक़नून" में इब्नुलहैसम से नक़ल किया है। शरीर में पाए जाने वाले बेकार द्रव्यों को गाढ़ा होने से रोकता है। जले हुए सफ़रा, बलग़म और सौदा को बाहर निकालता है। Septic Fever को समाप्त करता है। ख़ून की गर्मी को कम करता है। चोट, ज़ख़्म और फेफड़ा के विभिन्न प्रकारों और खुजली एवं बवासीर में लाभदायक है। दिमाग़ से दोषित द्रव्यों को बाहर निकालता है। पेट एवं जिगर के लिए लाभदायक है।

औषधियाँः अयारिज फ़ीक़रा 90 ग्राम, गुल-ए-सुर्ख़ 18 ग्राम, हलीला 3.5 ग्राम, हलीला ज़र्द, हलीलास्याह प्रत्येक 21 ग्राम, मस्तगी, फ़रासियून, उसारा-ए-ग़ाफ़िस, उसारा-ए-अफ़सन्तीन प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर पानी में मिलाएँ। मिलाते समय हाथों को रोग़न-ए-बनफ़्शा से चर्ब कर लें। 170 मिलीग्राम के हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

अनुपानः सोते समय गर्म पानी के साथ प्रयोग करें।

- **हब्ब का अन्य नुस्ख़ाः**

जिगर के Ill Temperament में लाभदायक है।

औषधियाँः गुल-ए-सुर्ख़ 3.5 ग्राम, रुब्ब-ए-सोसन 1.75 ग्राम, सक़मूनिया मुशव्वा 500 मिलीग्राम, तुर्बुद सफ़ेद 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-कासनी या आब-ए-इनबुस्सअलब

के साथ मिलाए और हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्राः यह सम्पूर्णतः एक ख़ुराक की मात्रा है।

- **हब्ब का अन्य नुस्ख़ाः**

यह नुस्खा जालीनूस की पुस्तक "हीलतुलबर्अ" से लिया गया है। यह विभिन्न प्रकार के द्रव्यों के लिए विरेचक है।

औषधियाँः सिब्र ज़र्द 3.5 ग्राम, ग़ारीक़ून 1.75 ग्राम, शहम हन्ज़ल 875 मिलीग्राम, सक़मूनिया 0.5 ग्राम, मुक़िल 1 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान कर आपस में अच्छी तरह से मिलाएँ और विधि अनुसार हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्राः यह औषधियाँ तन्दुरूस्त व्यक्ति के लिए सम्पूर्णतः एक ख़ुराक और कमज़ोर व्यक्ति के लिए दो ख़ुराक हैं।

- **हब्ब-ए-जासलीक़ः**

यह पीलिया को दूर करता है और तिल्ली के सुद्दों को भी खोलता है।

औषधियाँः सिब्र ज़र्द 3.5 ग्राम, ग़ारीक़ून, उसारा-ए-ग़ाफ़िस और रुब्ब-ए-सोसन प्रत्येक 21 ग्राम, सक़मूनिया, अनीसून और तुख़्म-ए-कासनी प्रत्येक 875 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः कूट कर आब-ए-कासनी में मिलाएँ।

- **हब्ब-ए-जासलीक़ः**

यह पेट को चिपचिपे द्रेव्यों से पाक करता है। बलग़म और सौदा का विरेचक है। बदहज़्मी में लाभदायक है और Carminative है।

औषधियाँः दार-ए-चीनी, ज़ाफ़रान, क़ुस्त, सुंबुलुत्तीब, हमामा, कमाज़रयूस, हब्ब-ए-बलसाँ, मुहल्लब, क़िर्फ़ह और ग़ारीक़ून प्रत्येक 7 ग्राम, मुर साफ़ और क़रन्फ़ुल प्रत्येक 10.5 ग्राम, सिब्र ज़र्द 56 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट लें और गर्मी में उसारह-ए-वर्द और सर्दी में उसारह-ए-किब्रीतमिला कर हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम है।

- **हब्ब-ए-शीतरजः**

यह जोड़ों के दर्द, गठिया, पक्षघात, लक़वा और ठंडे रोगों में लाभदायक है।

औषधियाँः ज़न्जबील, फ़िलफ़िल, दार-ए-फ़िलफ़िल, आमला मुनक़्क़ा, शीतरज हिन्दी, हलीला स्याह, पोस्त-ए-बलीला, नानख़्वाह और सअद प्रत्येक 7 ग्राम, सिब्र सक़ूतरी 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-इनबुस्सअलब के साथ मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 8.75 ग्राम है।

- **हब्ब-ए-आतशकः**

यह तजरबा कार हकीमों का प्रचलित नुस्खा है। Syphilis, Leprosy, Chronic Ulcers, Fistula जैसे रोगों में प्रयोग किया जाता है।

औषधियाँः सीमाब 10.5 ग्राम, मुक़िल, कतीरा, समग़-ए-अरबी, अन्ज़रूत, रेवन्द चीनी और तुर्बुद सफ़ेद प्रत्येक 7 ग्राम, बर्ग-ए-हिना और मग़्ज़-ए-पिस्ता प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः मग़्ज़-ए-पिस्ता को हिना एवं आब-ए-लीमू के साथ घिस लें और शेष सभी औषधियों को कूट छान कर उसी आब-ए-लीमू के साथ अच्छी तरह मिलाएँ ।

एक हब्ब की मात्राः 170 मिली ग्राम के हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्राः 500 मिली ग्राम।

- **हब्ब-ए-आतशकः**

यह Syphilis में लाभदायक है। जोड़ों एवं अंगों के दर्दों में भी लाभ पहुँचाता है।

औषधियाँः अयारिज फ़ीक़रा 4.5 ग्राम, तुर्बुद सफ़ेद मुक़श्शर, ग़ारीक़ून, लाजवर्द मग़सूल, पोस्त-ए-हलीला और सूरन्जान प्रत्येक 1.75 ग्राम, सक़मूनिया 500 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर अर्क़-ए-गुलाब में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम ।

आहारः आहार के तौर पर चने के पानी में तन्दुरूस्त मुर्ग़े के गोश्त को पका कर प्राप्त किया हुआ शोर्बा प्रयोग करने से बहुत लाभ प्राप्त होता है।

❑❑❑

## द्वितीय वर्गः अविरेचक, धारण-शक्ति वाले व अन्य हुबूब के नुस्खे

- **हब्ब का नुस्ख़ाः**

यह सफ़रावी एवं ख़ूनी दस्तों में लाभदायक है।

औषधियाँः सुमाक़ 7 ग्राम, माज़ू सब्ज़ और पोस्त-ए-अनार प्रत्येक 1.75 ग्राम, हब्बुलआस 35 ग्राम, दाना-ए-मवीज़10.5 ग्राम, समग़-ए-अरबी 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-मूरद में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम ।

अनुपानः थोड़े से ठंडे पानी के साथ प्रयोग करें।

- **हब्ब का अन्य नुस्ख़ाः**

यह ख़ूनी दस्तों को रोकता है।

औषधियाँः माज़ू सब्ज़, काज़माज़ज, अफ़ियून, गिल-ए-अरमनी, समग़-ए-अरबी, गिल-ए-मख़्तूम, बुसुद और जुन्द बेद स्तर प्रत्येक 500 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर 170 मिला ग्राम के वज़न के हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्राः एक हब्ब अर्थात 170 मिली ग्राम ।

- **हब्ब का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बलग़मी दस्त को रोकता है।

औषधियाँः जुन्द बेद स्तर, मुर मक्की, अफ़ियून, कुन्दुर, जौज़बोवा, क़िफ़्रह।

निर्माण-विधिः कूट छान कर पानी मिला कर फिलफिल के समान हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्राः एक हब्ब से तीन हब्ब तक प्रयोग करें।

- **हब्बुज़्ज़हीरः**

यह पुराने दस्त एवं पेचिश में लाभदायक है।

औषधियाँः जुन्द बेद स्तर, असारून, मीअह सायला, बज़रुलबन्ज स्याह, कुन्दुर।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान लें और हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्राः 1.75 ग्राम से 3.5 ग्राम तक प्रयोग कराएँ।

- **हब्ब-ए-ख़ुब्सुलहदीदः**

यह पेट की कमज़ोरी, बादी बवासीर, बवासीर से होने वाले ख़ूनी दस्त में लाभदायक है।

औषधियाँः हब्बुर्रशाद 17.5 ग्राम, हब्बुलक़िलक़िल, तुख़्म-ए-गन्दना, तुख़्म-ए-करफ़्स, तुख़्म-ए-तुर्ब, तुख़्म-ए-प्याज़, हुल्बा प्रत्येक 43.75 ग्राम, ख़ुब्सुलहदीद मुदब्बर,

आब-ए-गन्दना 225 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-गन्दना के साथ मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **हब्ब-ए-मुक़िल क़ाबिज़ः**

औषधियाँः रोग़न-ए-बादाम में बिरयां किया हुआ पोस्त-ए-हलीला काबुली, हलीला स्याह और आमला मुक़श्शर प्रत्येक 40 ग्राम, मरजान और कहरुबा प्रत्येक 45 ग्राम।

निर्माण-विधिः औषधियों को हल्का कूट छान लें और मुक़िल को आब-ए-आहनताब में घोल लें फिर सभी औषधियों को उस घोल में डाल कर हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **हब्ब-ए-मुक़िल क़ाबिज़ः**

यह बवासीर से होने वाले दस्त व पेचिश में लाभदायक है।

औषधियाँः पोस्त-ए-हलीला काबुली, रोग़न-ए-बादाम में बिरयां किया हुआ पोस्त-ए-हलीला ज़र्द, हलीला स्याह और आमला मुक़श्शर प्रत्येक 7 ग्राम, बुसुद, कहरुबा और वदअ सोख़्ता प्रत्येक 3.5 ग्राम, मुक़िल सभी औषधियों के समभाग।

निर्माण-विधिः मुक़िल को आब-ए-गन्दना में घोल लें फिर शेष सभी औषधियों को उस घोल में डालें और हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम तक है।

- **हब्ब का अन्य नुस्ख़ाः**

यह डिफ़्थीरिया में लाभदायक है और आराम पहुँचाता है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-करफ़्स, हज़ार स्पन्द, अनीसून, मस्तगी और ज़ाफ़रान प्रत्येक 7 ग्राम, पुदीना सेहराई, फ़ुत्रासालियून, इज़्ख़िर, क़ुस्त, ज़रन्बाद, दरूनज और असारून प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-सुद्दाब ताज़ा के साथ मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम है।

- **हब्ब का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बलग़मी दस्त को रोकता है।

औषधियाँः मुर मक्की, क़िर्फ़ह, जुन्द बेद स्तर, अफ़ियून।

निर्माण-विधिः सब को समभाग में ले कर कूट छान लें और साफ़ पानी के साथ मिला कर माश के वज़न के हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्राः एक हब्ब से लेकर स्वभाव के अनुसार तक।

- **हब्ब का अन्य नुस्ख़ाः**

यह ख़ूनी दस्त को रोकता है।

औषधियाँः अफ़ियून, सन्दरूस, कुन्दुर, मुर मक्की, ज़ाफ़रान और जुन्द बेद स्तर।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान लें और फ़िलफ़िल के वज़न के हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्राः रोगी के स्वभाव एवं सेहत के अनुसार।

- **हब्बुश्शिफ़ाः**

यह प्राकृतिक शक्ति की रक्षा करता है। अफ़ियून के बदल के तौर पर प्रयोग किया जाता है।

औषधियाँः ज़न्जबील, जौज़बोवा प्रत्येक 7 ग्राम, रेवन्द चीनी 10.5 ग्राम, जौज़-ए-मासिल 31.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर उनके दो गुना जमी हुई शहद के साथ मिलाएँ। फ़िलफ़िल के बराबर हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्राः एक हब्ब से लेकर तीन हब्ब तक प्रयोग करें।

- **हब्ब का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गर्भधारण को रोकता है और वीर्य को प्रजनन योग्य होने से रोकता है।

औषधियाँः अनीसून, तुख़्म-ए-करफ़्स, राज़ियाना, फ़ूदनज जबली, मुश्कतरामशीअ प्रत्येक एक एक भाग, सुंबुलुत्तीब, दार-ए-चीनी, सलीख़ा, हब्ब-ए-बलसाँ, जौज़बोवा, अबहल और क़ुस्त प्रत्येक आधा आधा भाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम की मात्रा में प्रयोग करें।

सेवन-समयः जब भी संबंध बनाने का इरादा हो तो पहले 4.5 ग्राम की मात्रा में यह हब्ब प्रयोग करें और फिर संबंध बनाएँ तो गर्भधारण नहीं होगा।

अगर खरगोश का पैर को औरत के बाज़ू पर बाँध दिया जाए या इसी प्रकार थोड़ी मात्रा में तुख़्म-ए-हुम्माज़ को औरत के बाज़ू पर बाँध दिया जाए तो इन प्रक्रियाओं से भी गर्भाधारण नहीं हो पाता है। यह प्रक्रियाएँ इस संदर्भ में मुजर्रब हैं और यह उन का Specific action है।

- **हब्ब का अन्य नुस्ख़ाः**

यह सभी प्रकार के दर्दों में आराम देता है।

औषधियाँः हब्बुलग़ार, मस्तगी, मुर मक्की, ज़ाफ़रान, फ़िलफ़िल, क़रन्फ़ुल, जुन्द बेद स्तर, सुंबुलुत्तीब, आक़रक़रहा प्रत्येक 4.5 ग्राम, मुश्क 500 मिलीग्राम, अफ़ियून 750 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर अर्क़-ए-गुलाब के साथ मिलाएँ और 170 मिली ग्राम के वज़न के हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्राः 170 मिलीग्राम की मात्रा में प्रयोग करें।

- **हब्ब-ए-जावशीरः**

भारतीयों का मानना है कि यह ऐंठन और पेट की कमज़ोरी में लाभदायक है साथ ही फिरंगा रोग में भी लाभदायक है।

औषधियाँः जावशीर, अनीसून, क़रन्फ़ुल, मस्तगी, फ़िलफ़िल, कुन्दुर, दारफ़िलफ़िल, सोंठ, नानख़्वाह, राज़ियाना प्रत्येक 9 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान लें। मवीज़ मुनक़्क़ा 36 ग्राम को आब-ए-लीमूँ, आब-ए-ज़न्जबील ताज़ा में मिला करनर्म कर लें और फिर सब को एक साथ मिला कर हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्राः यह सम्पूर्ण औषधियाँ 21 दिनों की ख़ुराक हैं।

- **हब्ब-ए-किब्रीतः**

यह नुस्ख़ा भारतीयों के यहाँ प्रयोग में रहा है। दीपन एवं पाचन है और साथ ही दाद, खाज, ख़ुजली एवं बलग़मी रोगों में लाभदायक है। पेट में पाए जाने वाले बलग़म एवं अन्य असाधारण द्रव्यों को सोखता है।

औषधियाँः किब्रीत ज़र्द मग़सूल, फ़िलफ़िल 17.5 ग्राम, नमक-ए-हिन्दी 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-लीमूं के साथ मिलाएँ और 170 मिली ग्राम के वज़न के हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्राः दो हब्ब अर्थात 340 मिली ग्राम से लेकर तीन हब्ब अर्थात 510 मिली ग्राम तक प्रयोग करें।

- **हब्ब-ए-सम्मुलफ़ारः**

यह नुस्खा भारती हकीमों के प्रयोग में रहा है। उनका मानना है कि यह फिरंगा रोग के अद्वितीय औषधि है।

औषधियाँः सम्मुलफ़ार, कात-ए-हिन्दी, हील, काफ़ूर, तीन-ए-क़ैमूलिया।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को समभाग में लेकर कूट छान लें और अर्क़-ए-गुलाब के साथ पीस कर 4.5 ग्राम के बड़े बड़े हुबूब तैयार करें और सुखा

कर सुरक्षित कर लें। आवश्यकता पड़ने पर हब्ब को पाउडर कर के थोड़ी मात्रा में अर्क़-ए-गुलाब एवं शहद के साथ खाएँ।

- **हब्ब-ए-सीमाब:**

यह नुस्खा भारती हकीमों के यहाँ प्रयोग में रहा है जिस के संदर्भ में उनका कहना है कि यह अत्याधिक विशेषताओं एवं लाभ वाला है। अगर कोई व्यक्ति लगातार सात दिनों तक सुबह में एक हब्ब का प्रयोग करने के बाद भेड़ के गोश्त का हल्का गर्म शोरबा पिए और साथ ही 21 दिनों तक किसी स्त्री से संबंध ना बनाए और खट्टी चीज़ों को खाने से परहेज़ करे तो यह बलग़म से सीने को पाक करता है, आमाशयवर्धक और कामोद्दीपक है। इन सब के अतिरिक्त यह और भी अनेकों लाभ वाला है।

औषधियाँ: सीमाब, किब्रीत ज़र्द, कात-ए-हिन्दी सुर्ख़, क़रन्फ़ुल एक एक भाग।

निर्माण-विधि: सर्वप्रथम सीमाब को किब्रीत ज़र्द के साथ बारीक पीस लें और शेष सभी औषधियों को कूट छान कर ज़र्दी-ए-बैज़ह-ए-मुर्ग़ के साथ मिला कर सब को आपस में अच्छी तरह मिलाएँ और फ़िलफ़िल के बराबर हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्रा: प्रतिदिन एक हब्ब उपर्युक्त विधि से।

- **हब्ब-ए-सीमाब का अन्य नुस्ख़ा:**

यह नुस्ख़ा बवासीर एवं फिरंगा रोग में बहुत लाभदायक है।

औषधियाँ: सीमाब 11.25 ग्राम, मस्तगी 13.5 ग्राम, कुन्दुर 22.5 ग्राम, सन्जरफ़ मग़सूल 9 ग्राम, शकर सुर्ख़ 13.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को अलग अलग कूट छान लें। सीमाब को पानी में मिला कर हावन में किसी बरतन के बीच में रख कर उँगली से इतना मलें कि सीमाब के सभी कण अलग अलग हो जाएँ। फिर उस में उपर्युक्त वर्णित शकर सुर्ख़ में से आधी शकर सम्मिलित कर के अच्छी तरह मलें ताकि सीमाब शकर में अच्छी तरह मिल जाए। इस प्रक्रिया में जब तरलता कम हो जाए तो दोबारा हावन में थोड़ा पानी डालें और फिर शेष बची आधी शकर डालें। तत्पश्चात शेष औषधियों को डाल कर अच्छी तरह मिलाएँ ताकि सब एक हो जाएँ। अब चने के बराबर हुबूब तैयार करें।

सेवन-मात्रा: प्रतिदिन एक हब्ब सात दिनों तक खिलाएँ।

- **हब्ब-ए-सुलैमानी:**

यह फिरंगा के मरीज़ों के लिए बेहतर व लाभदायक है।

औषधियाँ: सीमाब 3.5 ग्राम, सम्मुलफ़ार 3.5 ग्राम, कुन्दुर 21 ग्राम, रेवन्द चीनी और समग़-ए-अरबी प्रत्येक 10.5 ग्राम, ज़हरा-ए-गोस्फ़न्द 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को अलग अलग कूट लें और सीमाब को आब-ए-लीमूं में घिस लें फिर सभी को ज़हरा-ए-गोस्फन्द के साथ मिलाएँ और फ़िलफ़िल के बराबर वज़न के हुबूब तैयार करें।

सेवन-मात्राः एक हब्ब प्रयोग करें।

परहेज़ः खट्टी वस्तुओं से परहेज़ करें।

- **हब्ब का अन्य नुस्ख़ाः**

यह यक्ष्म एवं राजयक्ष्म के रोगियों के लिए लाभदायक है। यह नज़ला हार के कारण होने वाली खाँसी में भी लाभदायक है।

औषधियाँः समग़-ए-अरबी, कतीरा, मग़ज़-ए-बिही दाना और तुख़्म-ए-ख़त्मी मुनक्क़ा प्रत्येक 10.5 ग्राम, मग़ज़-ए-बादाम शीरीं, तुख़्म-ए-कदू और मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यारैन प्रत्येक 17.5 ग्राम, रुब्बुस्सूस, निशास्ता, तुख़्म-ए-काहू और तुख़्म-ए-खुर्फ़ह प्रत्येक 10.5 ग्राम, शकर तबरज़द 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट कर लुआब-ए-अस्पग़ोल में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

- **हब्बुस्सुआलः**

यह हरारत एवं प्यास को बुझाता है और यक्ष्म एवं राजयक्ष्म के रोगियों के लिए और गर्मी से वाली खाँसी में लाभदायक है।

औषधियाँः रुब्बुस्सूस, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यारैन प्रत्येक 17.5 ग्राम, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-खरपज़ह, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-कदू प्रत्येक 10.5 ग्राम, तुख़्म-ए-खुर्फ़ह मुक़श्शर, तुख़्म-ए-काहू,तुख़्म-ए-ख़शख़ाश सफ़ेद प्रत्येक 7 ग्राम,समग़-ए-अरबी, कतीरा, मग़ज़ दाना-ए-आबी प्रत्येक 24.5 ग्राम, शकर तबरज़द 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट कर लुआब-ए-बज़र्क़तूना में मिलाएँ।

- **हब्ब का अन्य नुस्ख़ाः**

यह सीने को पाक करता है और खाँसी में आराम देता है।

औषधियाँः बनफ़शा, रुब्बुस्सूस, कतीरा, मग़ज़-ए-बादाम मुक़श्शर, समग़-ए-अरबी, निशास्ता, राज़ियाना, आरद-ए-बाक़ला, तुख़्म-ए-ख़शख़ाश प्रत्येक 10.5 ग्राम, ज़ाफ़रान 1.75 ग्राम, मवीज़ मुनक्क़ा 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट कर लुआब-ए-बज़र्क़तूना में मिलाएँ।

सेवन-विधिः मुँह में रखें।

- **हब्ब का अन्य नुस्ख़ाः**

यह उस खाँसी में आराम पहुँचाता है जिस से रोगी रात में बेचैन रहता है।

औषधियाँः मुर मक्की, मीअह सायला और कुन्दुर प्रत्येक 7 ग्राम, रुब्बुस्सूस 3.5 ग्राम, अफ़ियून 416 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर पानी के साथ मिलाएँ और विधि अनुसार 170 मिलीग्राम के हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्राः दो हब्ब।

सेवन-समयः रात को सोते समय।

सेवन-विधिः मुँह में रखें।

- **हब्ब का अन्य नुस्ख़ाः**

यह उस तेज़ खाँसी में आराम पहुँचाता है जिस से रोगी रात में बेचैन रहता है।

औषधियाँः रुब्बुस्सूस 17.5 ग्राम, मुरमक्की, मग़ज़-ए-बादाम तल्ख़, क़िर्दमाना, फ़िलफ़िल, मीअह प्रत्येक 7 ग्राम, हींग 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट कर माउलअस्ल में मिलाएँ।

- **हब्ब का अन्य नुस्ख़ाः**

यह उन बच्चों के लिए लाभदायक है जिन को अधिक खाँसी के कारण उल्टी हो जाती है। साथ ही ऐसी सूखी खाँसी में भी लाभदायक है जिस से नींद ग़ायब हो जाती है। सीने पर गर्म नज़्ले गिरना बन्द हो जाते हैं।

औषधियाँः निशास्ता, समग़-ए-अरबी, रुब्बुस्सूस, ख़शख़ाश सफ़ेद, अफ़ियून।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर लुआब-ए-बिही दाना के साथ 170 मिलीग्राम वज़न के या उस से छोटे हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्रा एवं समयः एक हब्ब रात को सोते समय।

सेवन-विधिः मुँह में रखें।

- **हब्ब का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः मग़ज़-ए-बादाम, तुख़्म-ए-ख़्यारैन, समग़-एअरबी, निशास्ता और ख़शख़ाश सफ़ेद प्रत्येक 3.5 ग्राम, रुब्बुस्सूस 7 ग्राम, क़ाक़ला 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट कर लुआब-ए-बज़र्क़तूना में मिलाएँ।

- **हब्ब का अन्य नुस्ख़ाः**

यह ऐसी खाँसी में लाभदायक है जो कि Cold Ill temperament से होती है।

औषधियाँ: पोस्त-ए-बादियान, पर्सियाउशान, तुख़्म-ए-करफ़्स, रुब्बुस्सूस, मग़्ज़-ए- बादाम।
निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर हब्ब तैयार करें।

- **हब्ब का अन्य नुस्ख़ा:**

यह सूखी खाँसी में लाभदायक है।
औषधियाँ: निशास्ता, समग़-ए-अरबी, रुब्बुस्सूस, कतीरा, मग़्ज़-ए-बादाम।
निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर लुआब-ए-बिही दाना के साथ मिलाएँ।

- **हब्ब का अन्य नुस्ख़ा:**

यह सूखी खाँसी में लाभदायक है ।
औषधियाँ: कतीरा, समग़-ए-अरबी, मग़्ज़-ए-बादाम शीरीं मुक़श्शर, तुख़्म-ए-ख़्यारैन और मग़्ज़-ए-तुख़्म-ए-कदू।
निर्माण-विधि: विधि अनुसार कूट छान कर लुआब-ए-बिही दाना के साथ मिलाएँ ।

- **हब्ब का अन्य नुस्ख़ा:**

यह विभिन्न प्रकार की खाँसी में लाभदायक है। सीने में नर्मी पैदा करता है और खाँसी में आसानी भी पैदा करता है।
औषधियाँ: कतीरा, समग़-ए-अरबी,मग़्ज़-ए-बादाम, रुब्बुस्सूस, ख़शख़ाश सफ़ेद, मग़्ज़-ए-बिही दाना, तुख़्म-ए-काहू प्रत्येक 7 ग्राम, ज़ाफ़रान, बज़रुलबन्ज प्रत्येक 1.75 ग्राम।
निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर अर्क़-ए-बादियान के साथ मिलाएँ।
सेवन-समय: रात को सोते समय।
सेवन-विधि: मुँह में रख कर सोएँ।

- **हब्ब का अन्य नुस्ख़ा:**

यह यक्ष्म एवं राजयक्ष्म रोगमें लाभदायक है। साथ ही यह गर्मी एवं शुष्कता के कारण होने वाली खाँसी में भी लाभदायक है।
औषधियाँ: मग़्ज़-ए-बादाम शीरीं, समग़-ए-अरबी, कतीरा, मग़्ज़-ए-बिही दाना, तुख़्म-ए-ख़त्मी, रुब्बुस्सूस, ख़शख़ाश सफ़ेद और तुख़्म-ए-ख़ुर्फ़ह प्रत्येक 10.5 ग्राम, मग़्ज़-ए-तुख़्म-ए-कदू और बाक़ला-ए-मुक़श्शर प्रत्येक 17.5 ग्राम।
निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर लुआब-ए-बज़र्क़तूना के साथ मिलाएँ।

- **हब्ब का अन्य नुस्ख़ा:**

यह यक्ष्म एवं राजयक्ष्म रोग में लाभदायक है। साथ ही यह गर्मी के कारण होने वाले बुख़ारों में भी लाभदायक है।

औषधियाँः ख़शख़ाश सफ़ेद, मग़्ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यारैन और तबाशीर सफ़ेद प्रत्येक 10.5 ग्राम, मग़्ज़-ए-तुख़्म-ए-कदू, मग़्ज़-ए-दाना-ए-आबी, गुल-ए-नीलोफ़र, किशनीज़ ख़ुश्क, समग़-ए-अरबी और तुख़्म-ए-ख़ुर्फ़ह प्रत्येक 7 ग्राम, बज़रुलबन्ज सफ़ेद, काफ़ूर और ज़ाफ़रान प्रत्येक 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर लुआब-ए-बज़र्क़तूना के साथ मिलाएँ और 170 मिलीग्राम के हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्राः एक हब्ब।

अनुपानः शर्बत-ए-ख़शखाश के साथ दें।

- **हब्ब का अन्य नुस्ख़ाः**

यह सीने के रोगों एवं पुरानी खाँसी में लाभदायक है।

औषधियाँः मोटा मग़्ज़-ए-बादाम शीरीं,मोटा मग़्ज़-ए-बादाम तल्ख़ बिरयाँ और मग़्ज़-ए-चिलग़ोज़ा प्रत्येक 7 ग्राम, कतीरा, अनीसून, समग़-ए-अरबी और रुब्बुस्सूस प्रत्येक 1.75 ग्राम, फ़ानीज़ और क़न्द प्रत्येक 14 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-राज़ियाना के साथ मिलाएँ।

- **हब्ब का अन्य नुस्ख़ाः**

यह नज़ला, ज़ुकाम, अनिद्रा, खाँसी में बहुत लाभदायक है।

औषधियाँः बज़रुलबन्ज सफ़ेद, ज़ाफ़रान, अफ़ियून, मुर मक्की, तुख़्म-ए-काहू, समग़-ए-अरबी, कतीरा, रुब्बुस्सूस, मग़्ज़-ए-बिही दाना।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान कर मिलाएँ और फ़िलफ़िल के वज़न के बराबर के हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्राः दो हब्ब।

सेवन-समयः रात को सोते समय निगलें।

- **हब्बुलमुश्कः**

यह मुँह को सुगंधित करता और दुर्गंध को दूर करता है।

औषधियाँः जौज़बोवा, क़ाक़ला, क़रन्फ़ुल, दारचीनी,काफ़ूर, ख़ूलन्जान प्रत्येक 3.5 ग्राम, क़िशर-ए-उतरुज, कबाबा चीनी, बिस्बासा प्रत्येक 4.5 ग्राम, सअद कूफ़ी 7 ग्राम, मुश्क 832 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः कूट कर अर्क़-ए-गुलाब में मिलाएँ। चने के बराबर के हब्ब तैयार करें।

सेवन-विधिः मुँह में रखें।

- **हब्ब का अन्य नुस्ख़ाः**

यह आमाशयवर्धक है। मुँह को सुगंधित और दाँतों को मज़बूती प्रदान करता है।

औषधियाँः हीलबोवा, क़रन्फ़ुल, फ़ोफ़ल, क़िर्फ़ह, किशनीज़ ख़ुश्क और सअद कूफ़ी प्रत्येक 7 ग्राम, मुश्क तुर्की 250 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः कूट कर आब-ए-समग़-ए-अरबी में मिलाएँ और हब्ब तैयार करें।

- **हब्बुलमुश्कः**

यह मुँह को सुगंधित करता है। दाँतों को मज़बूती प्रदान करता है और स्वभाव में हर्ष उत्पन्न करता है।

औषधियाँः क़रन्फ़ुल, ख़ूलन्जान और आक़रक़रहा प्रत्येक 3.5 ग्राम, गुल-ए-सुर्ख़, सन्दल सफ़ेद और ऊद ख़ाम प्रत्येक 1.75 ग्राम, दाना-ए-अबहल, मस्तगी और दार-ए-चीनी प्रत्येक 1 ग्राम, तबाशीर सफ़ेद, काफ़ूर और मुश्क प्रत्येक 750 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर अर्क़-ए-गुलाब में मिलाएँ।

- **हब्ब-ए-मुम्सिकः**

यह वीर्यधारक, वाजीकर एवं शक्तिवर्धक है। साथ ही यक आमाशयवर्धक भी है।

औषधियाँः सुक्क, क़रन्फ़ुल, क़िर्फ़ह, जौज़बोवा, सअद, सुंबुल, क़िशर-ए-तुरन्ज, ऊद ख़ाम, मुश्क प्रत्येक 500 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-ज़र्द आलू में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः एक हब्ब अर्थात 170 मिली ग्राम।

सेवन-समयः सुबह एवं शाम।

सेवन-विधिः मुँह में रखें।

- **हब्ब का अन्य नुस्ख़ाः**

यह आमाशयवर्धक है। मुँह को सुगंधित करता है। दाँतों को मज़बूती प्रदान करता और शराब की बदबू को दूर करता है।

औषधियाँः कबाबा चीनी, हील, क़िशर-ए-तुरन्ज, ज़न्जबील और सअद प्रत्येक 17.5 ग्राम, मुश्क और तबाशीर प्रत्येक 1.75 ग्राम, अंबर अशहब 3.5 ग्राम, अर्क़-ए-गुलाब में घिसा हुआ सन्दल,ऊद ख़ाम और समग़-ए-अरबी प्रत्येक 500 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर अर्क़-ए-गुलाब में मिलाएँ।

- **हब्ब का अन्य नुस्ख़ाः**

यह जोश एवं तनाव उत्पन्न करने वाला है।

औषधियाँः ऊद ख़ाम, क़रन्फ़ुल, कबाबा चीनी, फ़िलफ़िल प्रत्येक 10.5 ग्राम, दार-ए-फ़िलफ़िल, गुल-ए-बाबूना, मरवारीद नासुफ़्ता प्रत्येक 3.5 ग्राम, ज़ाफ़रान 1.75 ग्राम, बालंगो 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान लें और बताशे एवं अर्क़-ए-गुलाब मिलाकर क़िवाम तैयार करें फिर सब को एक साथ मिला कर चने के बराबर के हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्राः दो हब्ब अर्थात 340 मिली ग्राम।

सेवन-समयः आवश्यकता के समय।

सेवन-विधिः मुँह में रखें।

- **हब्ब-ए-मुश्कियातः**

यह मुँह को सुगंधित करता है। वीर्यधारक है। हर्षोल्लास उत्पन्न करता है और खुशहाली लाता है।

औषधियाँः क़रन्फ़ुल,दार-ए-चीनी, जौज़बोवा, तुख़्म-ए-करफ़्स, तुख़्म-ए-फ़्रन्जमुश्क, गुल-ए-गावज़बान और बादरन्जबोया प्रत्येक 3.5 ग्राम, कबाबा चीनी और बिस्बासा प्रत्येक 7 ग्राम, सन्दल सफ़ेद, बहमनैन, साज़ज हिन्दी, उश्ना, ज़रन्बाद और ख़ूलन्जान प्रत्येक 10.5 ग्राम, बज़रुलबन्ज 17.5 ग्राम, फ़िलफ़िल, फ़र्फ़ियून, लअल, मरवारीद और याक़ूत प्रत्येक 3.45 ग्रमा, मोमिया-ए-कानी 3.5 ग्राम,जदवार 10.5 ग्राम, मुश्क 1.75 ग्राम, अंबर अशहब 3.5 ग्राम, ज़ाफ़रान 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर अर्क़-ए-मुखल्लसह या अर्क़-ए-दारचीनी के साथ मिलाएँ और हब्ब तैयार करें।

- **हब्ब-ए-जदवारः**

यह वाजीकरण एवं वीर्यधारण के संदर्भ में बहुत लाभदायक है। इस के अतिरिक्त और भी अनेक लाभ हैं। स्वभाव में हर्षोल्लास उत्पन्न करता है। आमाशयवर्धक है साथ ही मुँह की दुर्गंध को दूर करके उस को सुगंधित करने के संदर्भ में यह बहुत आज़माया हुआ नुस्खा है।

औषधियाँः जदवार खताई, फ़िलफ़िल स्याह, फ़िलफ़िल सफ़ेद, सुंबुलुत्तीब और गुल-ए-सुर्ख़ प्रत्येक 17.5 ग्राम, कहरुबा, मरवारीद नासुफ़्ता, याक़ूत, तुख़्म-ए-करफ़्स, साज़ज हिन्दी, सलीख़ा, हब्ब-ए-बलसाँ, ऊद-ए-बलसाँ, ज़न्जबील, दार-ए-चीनी, कबाबा चीनी, ज़रावन्द मुदहरज, असारून शामी, ज़रनब, ऊद-ए-क़िमारी, पोस्त-ए-बेरून-ए-पिस्ता, समग़-ए-अरबी, दार-ए-फ़िलफ़िल, अक़ीक़, बुसुद, यशब सब्ज़ प्रत्येक 10.5 ग्राम, ज़ाफ़रान, जौज़बोवा, बिस्बासा, हब्बुज़्ज़लम, शक़ाक़ुल मिश्री,

रेवन्द चीनी और ख़ुस्यतुस्सअलब प्रत्येक 21 ग्राम, आक़रक़रहा और दरूनज अक़रबी प्रत्येक 18 ग्राम, बज़रुलबन्ज और ज़रन्बाद प्रत्येक 7 ग्राम, अंबर अशहब 3.5 ग्राम, वरक़-ए-नुक़रा 100 की संख्या में, वरक़-ए-तिला 50 की संख्या में, मुश्क 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट छान कर रोग़न-ए-पिस्ता में चर्ब करें और आब-ए-समग़-ए-अरबी के साथ मिला कर चने के बराबर अर्थात 170 मिली ग्राम के हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्राः दो हब्ब अर्थात 340 मिली ग्राम।

सेवन-समयः आवश्यकता के समय खाएँ।

- **हब्ब-ए-जदवार का अन्य नुस्ख़ाः**

यह नुस्ख़ा "हावी कबीर" में इब्न-ए-हाजिब से लिया गया है। जो बहुत ही शक्तिवर्धक, वाजीकरण एवं स्वभाव में हर्षोल्लास उत्पन्न करता है। मुँह की दुर्गंध को दूर करके उस को सुगंधित करता है। आमाशयवर्धक है। इन के अतिरिक्त इस से और भी लाभ प्राप्त होते हैं।

औषधियाँः जदवार खताई, दरूनज, कबाबा चीनी, बज़रुलबन्ज, तुख़्म-ए-करफ़्स, समग़-ए-अरबी, क़रन्फ़ुल, ख़ूलन्जान, बिस्बासा, नअनाअ ख़ुश्क, गावज़बान, सअद कूफ़ी, तुख़्म-ए-जिर्जीर, तुख़्म-ए-शलग़म, तुख़्म-ए-ख़्यारैन, लिसानुलअसाफ़ीर, किशनीज़ ख़ुश्क, राज़ियाना और आक़रक़रहा प्रत्येक 10.5 ग्राम, ज़ाफ़रान, ज़न्जबील, रासन, असारून, मुक़िल, ऊद-ए-हिन्दी और बहमनैन प्रत्येक 14 ग्राम, क़ाक़ला, फ़र्फ़ियून, रेवन्द चीनी, मस्तगी रूमी, सलीख़ा, आमला मुनक़्क़ा, शीतरज हिन्दी, सन्दल सफ़ेद, जावशीर, दुवाला, मरज़न्जोश और मुर मक्की प्रत्येक 3.5 ग्राम, जुन्द बेद स्तर 1.75 ग्राम, अनीसून, पोस्त-ए-हलीला ज़र्द और अस्फ़न्द प्रत्येक 14 ग्राम, मुश्क 1.75 ग्राम, मुक़िल, हब्बुलआस और गुल-ए-सुर्ख़ प्रत्येक 10.5 ग्राम, अफ़ियून 87.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट छान कर आब-ए-समग़-ए-अरबी में मिलाएँ और हब्ब तैयार करें।

- **हब्ब-ए-जदवार का अन्य नुस्ख़ाः**

यह शरीर के सभी अंगों को शक्ति प्रदान करता है। शक्तिवर्धक एवं वीर्यधारक है साथ ही स्वभाव में हर्षोल्लास उत्पन्न करता है।

औषधियाँः बाद-ए-ज़हर मुदब्बर, क़रन्फ़ुल, फ़र्फ़ियून, क़ुस्त बहरी, याक़ूत और कहरुबा प्रत्येक 4.5 ग्राम, जदवार खताई 13.5 ग्राम, फ़िलफ़िल, ख़ुस्यतुस्सअलब, यशब नासुफ़्ता, ज़ाफ़रान, मस्तगी और क़ुर्स-ए-अफ़आ प्रत्येक 9 ग्राम, अफ़ियून 22.5 ग्राम, अंबर 2.25 ग्राम, मुश्क 1 ग्राम, वरक़-ए-तिला और वरक़-ए-नुक़रा।

निर्माण-विधिः कूट छान कर रोग़न-ए-बलसाँ में चर्ब करें और आब-ए-समग़-ए-अरबी

मिला कर फ़िलफ़िल के बराबर के हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्राः दो हब्ब का प्रयोग करें।

- **हब्ब-ए-जदवार का अन्य नुस्ख़ाः**

इस नुस्खे से भी पहले नुस्खे की भाँति लाभ प्राप्त होते है।

औषधियांः बाद-ए-ज़हर 9 ग्राम, जदवार 22.5 ग्राम, मस्तगी 13.5 ग्राम, याक़ूत और मरवारीद प्रत्येक 4.5 ग्राम, जौज़बोवा, ज़ाफ़रान, अगर तुर्की, लिसानुलअसाफ़ीर, तिर्याक़-ए-फ़ारूक़ प्रत्येक 13.5 ग्राम, कुचला 31.5 ग्राम, राज़ियाना और नानख़्वाह प्रत्येक 9 ग्राम, अंबर अशहब 4.5 ग्राम, वरक़-ए-नुक़रह 2.25 ग्राम, मुश्क 1 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्राः दो हब्ब का प्रयोग करें।

- **हब्ब-ए-जदवार का अन्य नुस्ख़ाः**

यह वाजीकर एवं शक्तिवर्धक है। हर्षोल्लास उत्पन्न करता और वीर्यधारक है।

औषधियांः जदवार खताई, ख़ुस्यतुस्सअलब, बिस्बासा प्रत्येक 22.5 ग्राम, क़ाक़ला किबार, ख़ूलन्जान, जौज़बोवा, ऊद-ए-क़िमारी, सुंबुलुत्तीब, सअद कूफ़ी, नारमुश्क, माया-ए-शुत्र-ए-आराबी, अनीसून, तुख़्म-ए-करफ़्स, तुख़्म-ए-हल्यून, समग़-ए-अरबी, लअल, याक़ूत, यशब, मरवारीद और कहरुबा प्रत्येक 4.5 ग्राम, जुन्द बेद स्तर, कतीरा और अफ़ियून प्रत्येक 4.5 ग्राम, ज़ाफ़रान, क़रन्फ़ुल प्रत्येक 18 ग्राम, वरक़-ए-नुक़रह, वरक़-ए-तिला और अंबर अशहब प्रत्येक 4.5 ग्राम, बाद-ए-ज़हर 9 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर आब-समग़-ए-अरबी और अर्क़-ए-दारचीनी के साथ मिलाएँ और हब्ब तैयार करें।

- **हब्ब-ए-जदवार का अन्य नुस्ख़ाः**

यह वीर्यधारण के संदर्भ में आज़माया हुआ नुस्खा है।

औषधियाँ और निर्माण-विधिः इच्छानुसार जौज़ लें और उस के बीच का भाग ख़ाली कर दें। थोड़ी मात्रा में सीमाब और अफ़ियून को लेकर आपस में मिला दें। फिर उस कों उपर्युक्त जौज़ में भर दें और उस का मुँह मज़बूती से बाँध दें। फिर उस जौज़ को ऐसे पोस्तए-तातोरा के बीच में रखें जिस में उस के कुछ तुख़्म शेष रह गए हों। फिर उस को चिमटे से पकड़ कर रोग़न-ए-गाव में इतना बिरयां करें कि जलने ना पाएँ रोग़न से निकालने के बाद उस का ख़मीर और पोस्त-ए-तातोरा अलग कर दें। क़रन्फ़ुल, कबाबा चीनी, दार-ए-चीनी, ज़न्जबील, आक़रक़रहा, हील, जदवार, ज़ाफ़रान, बूज़ीदान, ख़ुस्यतुस्सलब मिश्री प्रत्येक एक एक भाग, मुश्क थोड़ी मात्रा में लें और सब

को कूट छान कर आब-ए-समग़-ए-अरबी में हब्ब तैयार करें जो चने के बराबर हों।

सेवन-मात्राः आवश्यकता के समय एक हब्ब निगल लें और एक हब्ब मुँह में रखे रहें। इस से अत्याधिक धारण शक्ति पैदा होती है। अगर धारण शक्ति और इस हब्ब की क्रिया को निष्क्रिय करना हो तो थोड़ी मात्रा में आब-ए-लीमू पिएँ।

- **हब्ब-ए-बदल-ए-अफ़ियूनः**

औषधियाँः सुंबुलुत्तबी 9 ग्राम, फ़र्फ़ियून और आक़रक़रहा प्रत्येक 4.5 ग्राम, तुख़्म-ए-करफ़्स, दार-ए-चीनी और ऊद-ए-हिन्दी प्रत्येक 4.5 ग्राम, फ़िलफ़िल, बज़रुलबन्ज, नानख़्वाह, तुख़्म-ए-अस्पन्द, समग़-ए-अरबी और ज़ाफ़रान प्रत्येक 22.5 ग्राम, जदवार खताई 9 ग्राम, अफ़ियून 67.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान लें और Exudates को अफ़ियून के साथ अर्क़-ए-गुलाब के साथ घोल कर साफ़ कर लें फिर शेष को मिला कर हब्ब तैयार करें।

- **हब्ब-ए-बदल-ए-अफ़ियून का अन्य नुस्ख़ाः**

यह अफ़ियून का बदल है, चेतना शक्ति को बढ़ाता है व बुद्धिवर्धक एवं वाजीकर है।

औषधियाँः जदवार खताई, ज़रन्बाद, सुंबुलुत्तबी, मस्तगी, जौज़बोवा, ऊद-ए-हिन्दी, तुख़्म-ए-करफ़्स प्रत्येक 7 ग्राम, ज़न्जबील, फ़र्फ़ियून, आक़रक़रहा, रेवन्द चीनी प्रत्येक 4.5 ग्राम, ज़ाफ़रान, बज़रुलबन्ज मुदब्बर प्रत्येक 22.5 ग्राम, दार-ए-चीनी 13.5 ग्रमा, फ़िलफ़िल 90 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट छान लें और शकर एवं अर्क़-ए-गुलाब मिला कर क़िवाम तैयार करें। फिर सब को मिला कर चने के बराबर अर्थात 170 मिली ग्राम के हब्ब तैयार करें।

- **हब्ब-ए-जदवार का अन्य नुस्ख़ाः**

यह अत्याधिक शक्तिवर्धक एवं हर्षवर्धक है। स्वभाव में नर्मी पैदा करता है।

औषधियाँः ज़रन्बाद, अगर तुर्की प्रत्येक 10.5 ग्राम, मरवारीद, मरजान, याक़ूत, लअल प्रत्येक 4.5 ग्राम, सुंबुलुत्तीब, मस्तगी रूमी, बिस्बासा, जौज़बोवा प्रत्येक 9 ग्राम, दार-ए-चीनी, क़रन्फ़ुल, कबाबा चीनी, ऊद-ए-हिन्दी प्रत्येक 13.5 ग्राम, अफ़ियून, मोमियाई, अंबर अशहब, ज़ाफ़रान, क़ुर्स-ए-अफ़आ प्रत्येक 4.5 ग्राम, मुश्क 1 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर रोग़न-ए-बलसाँ में चर्ब करें और आब-ए-समग़-ए-अरबी में मिला कर फिलफिल के बराबर के हब्ब तैयार करें।

सेवन-मात्राः एक हब्ब से दो हब्ब तक प्रयोग करें।

❑❑❑

तृतीय खण्ड

# द्वितीय अध्याय

# तीक्ष्ण-विरेचक, धारण-शक्ति वाले एवं मृदु-विरेचक क़ुर्स के नुस्ख़े

- **क़ुर्स-ए-अफ़आः**

ज्ञात रहे कि अफ़आ विभिन्न प्रकार के होते हैं। क़ुर्स-ए-अफ़आ के निर्माण में हकीम जिस अफ़आ का प्रयोग करते हैं वह ना काले रंग का होना चाहिए और ना सफ़ेद रंग का, क्योंकि काले रंग का अफ़आ अत्याधिक विषैला होता है जो इस कार्य के लिए उचित नहीं है और सफ़ेद रंग के अफ़आ का विष बढ़िया होता है लेकिन वह अत्याधिक कमज़ोर होता है।

अशक़र रंग का वह अफ़आ बेहतरीन होता है जिस का रंग काले और सफ़ेद रंग के बीच होता है क्योंकि उस का विष Neutral होता है। अशक़र रंग का वह अफ़आ जवान, तन्दुरुस्त और स्त्रीलिंग का होना चाहिए, बूढ़ा, कमज़ोर और सुस्त नहीं होना चाहिए। अफ़आ की जवानी की निशानी यह है किवह बहुत तेज़ हरकत करता है और उस की तन्दुरुस्ती की निशानी यह है किवह हरकत करते समय अपने सिर को उठाए रखता है और उस की आँखें लाल होती हैं।

स्त्रीलिंग एवं पुल्लिंग अफ़आ के बीच अन्तर यह है कि स्त्रीलिंग के चार और पुल्लिंग के दो डंक होते हैं। यह डंक उस के दाँत नहीं होते हैं जिन से वह डसता है और जिन में विष होता है।

उस का सर चौड़ा हो, पूँछ लंबी ना हो, शरमगाह चौड़ी हो और पूँछ के समीप हो, उस के रहने का स्थान टीलों, पानी वाली जगहों और बहुत ज़्यादा पेड़ पौधे वाली जगहों के बीच नहीं होना चाहिए क्योंकि इन जगहों पर पाए जाने वाले अफ़आ कमज़ोर होते हैं। वीरानों, कम पानी वाली जगहों और नमकीन ज़मीनों में रहने वालें अफ़आ का ज़हर बहुत शक्तिशाली होता है लेकिन ज़्यादा बेहतर यह है कि उन को उन को ऐसे पहाड़ी इलाक़ों और ज़मीन से शिकार किया जाए जहाँ बहुत ज़्यादा पेड़

पौधे ना हों और वह इलाक़े वीरानों और नमकीन ज़मीनों से दूर स्थित हों। कुल मिला कर यह कि अशक़र, जवान, स्त्री, चौड़े सर वाली और उपर्युक्त विशेषताओं वाली अफ़आ को साफ़ पहाड़ी और जंगली स्थानों से बहार के मौसम के बीच के दिनों में शिकार किया जाए। बेहतर यह है कि उस को शिकार करते ही तुरंत ना मार डाला जाए बल्कि उस के बेचौन होने और उस की आँखें लाल होने तक इन्तेज़ार किया जाए। लेकिन इतनी देर ना किया जाए कि वह बीमार, कमज़ोर और सुस्त पड़ जाए।

- **अफ़आ को मारने की विधिः**

उस के सर और पूँछ की ओर से चार चार अंगुल काट दिया जाए। काटते समय उस को लकड़ी के तख़्ते पर रख कर किसी तेज़ शीशा या धार दार हथियार से एक बार में ही अलग कर दिया जाए। उस के बाद देखा जाए कि अगर ख़ून बहुत .ज्यादा बह रहा हो और अफ़आ बहुत .ज्यादा हरकत कर रहा हो तो यह उस की जवानी, शक्ति और बढ़िया होने की निशानी है और इस कार्य के लिए इसी की आवश्यकता है और यही प्रयोग के लायक़ है। अगर काटने के बाद अफ़आ जल्दी से हरकतर करना बन्द कर दे और ख़ून कम बहे तो यह उस के कमज़ोर होने की निशानी है और यह प्रयोग के लायक़ नहीं है।

जो अफ़आ प्रयोग के लायक़ हो उस की खाल उतार ली जाए, उस के पेट को चीर कर साफ़ कर लिया जाए, चौब ज़र्द और नमक के ख़ाकिस्तर से धोया जाए और उस के बाद साफ़ पानी से धो कर सुरक्षित कर लिया जाए। आवश्यकता के समय साफ़ पानी, थोड़े से नमक और ताज़ा शिब्त की कुछ टहनियों के साथ हल्की आँच पर इतना पकाया जाए कि अच्छी तरह गल जाए और गोश्ता हड्डियों से अलग हो जाएँउस को पकाने की इस प्रक्रिया में देगची के सर को ढक कर रखा जाए यहाँ तक कि वह ठंडा हो जाए। फिर उस को देगची से निकाल लिया जाए और इतना सुखाया जाए कि पानी और नमी बिलकुल ना रह जाए। अब उस के गोश्त और हड्डियों को अलग कर लिया जाए। अब इस गोश्त में उस के एक चौथाई भाग मैदा की साफ़ रोटी (जिस का ख़मीर ख़ूब अच्छा हो और उस को अच्छी तरह पकाया गया हो) सम्मिलित कर के पत्थर के हावन में इतना कूटा जाए कि दोनों अच्छी तरह मिल जाएँ ताकि वह मरहम की भाँति हो जाए और गोश्त एवं रोटी की पहचान बाक़ी ना रहे। अब इस गोश्त एवं रोटी के Mixture में थोड़ी मात्रा में पानी मिला लें और हाथ पर रोग़न-ए-बलसाँ लगा कर क़ुर्स तैयार किया जाए जिस का वज़न 4.5 ग्राम हो। उस को छलनी के पीछे वाले भाग पर फैला कर छाँव में सुखा लिया जाए और इस बीच उस को धूल मिट्टी से सुरक्षित रखा जाए, दिन में एक बार उलट पुलट दिया करें। सूख जाने के बाद शीशा

या चीनी के पात्र में सुरक्षित कर लें और आवश्यकता के समय प्रयोग करें।

- **क़ुर्स-ए-इश्क़ील:**

यह तिर्याक़-फारूक़ में प्रयोग किया जाता है।

औषधियाँ: प्याज़-ए-उन्सुल, आरद-ए-करसना (मटर का आटा), शराब-ए-इनबी।

निर्माण-विधि: इच्छानुसार प्याज़-ए-उन्सुल लेकर उनमें लकड़ी से चीरा लगाकर उन्हें बिर्यां (भून) कर लें। उनके ऊपरी छिलको को उतार कर पत्थर के हावन में हल्का कूट लें। अब उनके साथ आरद-ए-करसना (मटर का आटा) डाल कर शराब-ए-इनबी (अंगूर की शराब) के साथ मिलाएँ और दोबारा इस हद तक कूटें कि वो मरहम की भाँति हो जाए। तत्पश्चात अपने हाथों को रोग़न-ए-गुल से चर्ब कर लें और उपर्युक्त मिश्रण से क़ुर्स तैयार करें। इस क़ुर्स को तैयार होने के दो महीने बाद प्रयोग करें।

- **क़ुर्स-ए-अंदरूख़ोरून:**

यह तिर्याक़-ए-फारूक़ में प्रयोग किया जाता है। इस के द्रव्यय योगों में बहुत विभिन्नता पाई जाती है।

**(क) नुस्ख़ा हुनैन इब्न-ए-इस्हाक़:**

औषधियाँ: दार-ए-शीशआन, मस्तगी, क़सबुज़्ज़रीरा, ऊद-ए-बलसाँ, असारून और फ़ूह प्रत्येक 27 ग्राम, उक़्होवान सफ़ेद 90 ग्राम, हमामा और दारचीनी 14 ग्राम, ज़ाफ़रान और फ़ुक़ाह-ए-इज़्ख़िर प्रत्येक 54 ग्राम।

- **(ख) अन्य नुस्ख़ा:**

औषधियाँ: दार-ए-शीशआन, क़सबुज़्ज़रीरा, क़ुस्त,हमामा, ऊद-ए-बलसाँ, फ़ूह, मूरद, उक़्हुवान सफ़ेद प्रत्येक 81 ग्राम, केसर, सुंबुलुत्तीब, साज़ज हिन्दी प्रत्येक 54 ग्राम, मुरमक्की 108 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर शराब-ए-रैहानी में मिलाएँ। अपने हाथों को रोग़न-ए-बलसाँ से चर्ब कर के क़ुर्स तैयार करें। क़ुर्स-ए-अफ़आ, क़ुर्स-ए-इशक़ील की भाँति छाँव में सुखा लें।

- **(ग) अन्य नुस्ख़ा:**

औषधियाँ: दार-ए-शीशआन 27 ग्राम, क़सबुज़्ज़रीरा, क़ुस्त, ऊद-ए-बलसाँ, असारून, मूरद, हमामा, और जअदह प्रत्येक 108 ग्राम, मस्तगी, उक़्होवान सफ़ेद और फ़ूह प्रत्येक 27 ग्राम, दार-ए-चीनी 108 ग्राम, सुंबुलुत्तीब 72 ग्राम, साज़ज और मुर मक्की प्रत्येक 108 ग्राम, ज़ाफ़रान 54 ग्राम।

"कामिलुस्सनाअह" के लेखक, "मिनहाज" के लेखक और अधिकतर हकीमों ने इस नुस्ख़े को ऐसे ही वर्णित किया है।

- **क़ुर्स-ए-अंदरूख़ोरून का अन्य नुस्ख़ाः**

यह तिर्याक़-ए-अर्बअह में प्रयोग किया जाता है।

औषधियां: बाबूना सुर्ख़, बाबूना सफ़ेद, सुमाक़, मुर, अनीसून, क़सबुज़्ज़रीरा, ऊद-ए-बलसाँ, उशनह प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूटने के बाद शराब-ए-मुसल्लस के साथ मिला कर क़ुर्स तैयार करें। छाँव में सुखा कर सुरक्षित कर लें।

- **क़ुर्स-ए-फ़र्फ़ियूनः**

यह नुस्खा मसरूदीतूस में प्रयोग किया जाता है।

औषधियाँ: मवीज़ मुनक़्क़ा 14 ग्राम, मुर मक्की, इज़्ख़िर प्रत्येक 54 ग्राम, दार-ए-चीनी, मुक़िल, अज़फ़ारुत्तीब, सुंबुल रूमी, इक्लीलुलमलिक, सअद कूफ़ी, हब्बुलग़ार प्रत्येक 10.5 ग्राम, क़सबुज़्ज़रीरा 31.5 ग्राम, केसर 3.5 ग्राम, क़फ़रुलयहूद 8.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान शराब-ए-इनबी के साथ मिलाएँ।

- **क़ुर्स-ए-कर्कूमग़माः**

यह "मुखल्लसह अकबर" में प्रयोग किया जाता है।

औषधियाँ: हमामा, क़ुस्त तल्ख़, दार-ए-शीशआन, क़सबुज़्ज़रीरा, फ़िलफ़िल सफ़ेद, नानख़्वाह और क़रन्फ़ुल प्रत्येक 10.5 ग्राम, सुंबुलुत्तीब और साज़ज हिन्दी प्रत्येक 31.5 ग्राम, दार-ए-चीनी, मस्तगी, और ज़ाफ़रान प्रत्येक 27 ग्राम, और कुछ नुस्खों के अनुसार फ़ूह 4.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर शराब-ए-मुसल्लस के साथ मिलाएँ और क़ुर्स तैयार करें। फिर छाँव में सुखा कर शीशे के पात्र में सुरक्षित कर लें। अगर शराब हराम होने के कारण प्रयोग करना संभव ना हो तो उस के स्थान पर इन औषधियों को माउलअस्ल या अर्क़-ए-दार-ए-चीनी में मिलाएँ।

- **क़ुर्स-ए-कर्कूमग़माः**

यह "दवाउलखतातीफ़" में प्रयोग किया जाता है।

औषधियाँ: ज़ाफ़रान, दार-ए-चीनी, बीख़-ए-सोसन आसमान्जोनी और साज़ज हिन्दी प्रत्येक 8.75 ग्राम, गुल-ए-सुर्ख़, हमामा और क़ुस्त प्रत्येक 3.5 ग्राम, मुर मक्की 14 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट छान कर पकाएँ और शराब-ए-अंगूरी मिला कर क़ुर्स तैयार करें।

- **क़ुर्स–ए–कौकबुलअर्ज़ः**

यह पेट की कमज़ोरी में लाभदायक है।

अगर माथे पर तिला करें तो यह नज़लावी द्रव्यों को रोकता है साथ ही सर दर्द में आराम देता है। नाक से ख़ून बहने के साथ किसी भी स्थान से ख़ून बहने को रोकता है।

आब-ए-मरज़न्जोश के साथ प्रयोग करने से पुरानी खाँसी और बारी से आने वाले बुख़ारों में लाभदायक है।

अगर आब-ए-सुद्दाब के साथ प्रयोग किया जाए तो यह आँतों एवं मूत्राशय के अधिकतर फोड़ों में लाभदायक है।

औषधियाँः जुन्द बेद स्तर, सुंबुलुत्तीब, मुर मक्की, सलीख़ा, गिले मख़्तूम, पोस्त-ए-बीख़-ए-लुफ़्फ़ाह प्रत्येक 18 ग्राम, अफ़ियून, ज़ाफ़रान, क़ुस्त तल्ख़ और तलक़ जिसको कौकबुलअर्ज़ भी कहते हैं प्रत्येक 22.5 ग्राम, दोक़ू, सीसालियूस, बज़रुलबन्ज, मीअह साइला, तुख़्म-ए-करफ़्स, ख़शख़ाश सफ़ेद, अनीसून प्रत्येक 36 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूटने छानने और Exudates को शराब-ए-रैहानी में घोलने के बाद एक साथ मिलाएँ और 2.25 ग्राम के क़ुर्स तैयार करें। फिर छाँव में सुखा कर सुरक्षित कर लें।

प्रयोग-समयः छः महीने के पश्चात प्रयोग में लाएँ।

इस क़ुर्स का प्रभाव दो साल तक बाक़ी रहता है।

- **क़ुर्स–ए–माज़र्यून:**

यह प्समने, पेट की कमज़ोरी और उल्टी में लाभदायक है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-करफ़्स, अनीसून और दार-ए-चीनी प्रत्येक 21 ग्राम, अफ़्सन्तीन और मस्तगी रूमी प्रत्येक 18 ग्राम, फ़िलफ़िल, मुर साफ़,अफ़ियून और जुन्द बेद स्तर प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर पानी में मिलाएँ। 4.5 ग्राम के क़ुर्स तैयार करें। यह दो साल तक प्रभावशीलता रहता है।

- **क़ुर्स–ए–ज़रिश्कः**

यह पेट की सूजन, जिगर की सूजन, बलग़मी बुख़ार और जलोदर रोग में लाभदायक है।

औषधियाँः उसारा-ए-ज़रिशक, मग़्ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यारैन प्रत्येक 10.5 ग्राम,

वर्क-ए-गुल-ए- सुर्ख़, तुरन्जबीन प्रत्येक 21 ग्राम, तुख़्म-ए-कसूस, रुब्बुस्सूस, तबाशीर, तुख़्म-ए-कासनी, मस्तगी, सुंबुलुत्तीब, उसारा-ए-ग़ाफ़िस लुक मुनक़्क़ा मग़सूल, फ़ूह और रेवन्द चीनी प्रत्येक 7 ग्राम, ज़ाफ़रान 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर लुआब-ए-बज़र्क़तूना के साथ मिलाएँ।

- **क़ुर्स-ए-ज़रिश्क का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से भी पहले नुस्खे की भाँतिलाभों की प्राप्ति होती है।

औषधियाँः उसारा-ए-ज़रिशक, तुख़्म-ए-कासनी, मग़ज ख़र्पज़ह, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यारैन प्रत्येक 10.5 ग्राम, गुल-ए-सुर्ख़, रेवन्द-ए- चीनी, सुंबुलुत्तीब प्रत्येक 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर लुआब-ए-बज़र्क़तूना के साथ मिलाएँ।

- **क़ुर्स-ए-ज़रिश्क का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गर्मी से होने वाले बुख़ारों व प्यास में आराम देता है।

औषधियाँः ज़रिशक मुनक़्क़ा, रुबुस्सूस और तबाशीर सफ़ेद प्रत्येक 10.5 ग्राम, गुल-ए-सुर्ख़ 21 ग्राम, तुख़्म-ए-ख़ुर्फ़ह, ज़ाफ़रान, निशास्ता और कतीरा प्रत्येक 7 ग्राम, काफ़ूर 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर क़ुर्स तैयार करें।

- **क़ुर्स-ए-ज़रिश्क का अन्य नुस्ख़ाः**

यह जिगर की सूजन, जिगर के सुद्दों और गर्मी के कारण होने वाले बुख़ारों में लाभदायक है। साथ ही यह जलोदर रोग के रोगियों के लिए भी लाभदायक है।

औषधियाँः ज़रिशक मुनक़्क़ा, रुब्बुस्सूस, गुल-ए-सुर्ख़, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यारैन, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-खर्पज़ह प्रत्येक 10.5 ग्राम, मस्तगी, सुंबुलुत्तीब, उसारा-ए-ग़ाफ़िस प्रत्येक 7 ग्राम, रेवन्द चीनी, केसर प्रत्येक 3.5 ग्राम, तुख़्म-ए-कसूस, तुख़्म-ए-कासनी प्रत्येक 10.5 ग्राम, तबाशीर 8.75 ग्राम, तुरन्जबीन 21 ग्राम।

निर्माण-विधिः तुरनजबीन को आब-ए-कासनी में घोलें और शेष को कूट छान कर उस के साथ मिलाएँ और क़ुर्स तैयार करें।

- **क़ुर्स-ए-ज़रिश्क (नुस्ख़-ए-शैख़ अबू अली सीना)ः**

यह जिगर के सुद्दों को खोलता है और ठोस सूजन को दूर करता है।

औषधियाँः उसारा-ए-ज़रिशक 17.5 ग्राम, ग़ाफ़िस, तबाशीर 3.5 ग्राम, उसारा-ए-ग़ाफ़िस 14 ग्राम, लुक-ए-मग़सूल, ज़ाफ़रान प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर मैफख़्तज के साथ मिलाएँ।

- **क़ुर्स-ए-वर्दः**

यह पेट दर्द एवं बलग़मी बुख़ारों में लाभदायक है।

औषधियाँः वर्क-ए-गुल-ए-सुर्ख़ 21 ग्राम,रुब्बुस्सूस 14 ग्राम, सुंबुलुत्तीब 3.5 ग्राम, तबाशीर सफ़ेद 7 ग्राम, उसारा-ए-ग़ाफ़िस 14 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान कर मैफ़ख़्तज के साथ मिलाएँ।

- **क़ुर्स-ए-वर्द का अन्य नुस्ख़ाः**

इस नुस्खे को अधिकतर हकीमों नें ग्रहण किया है। इस को "अलक़ानून" पुस्तक से लिया गया है। पेट दर्द में लाभदायक है। पेट में पाए जाने वाले द्रव्यों को अवशोषित करता है और बलग़मी बुख़ारों को समाप्त करता हैं।

औषधियाँः गुल-ए-सुर्ख़ 70 ग्राम, सुंबुलुत्तीब और अस्लुस्सूस प्रतयेक 35 ग्राम, कुछ हकीमों ने अस्लुस्सूस के स्थान पर रुब्बुस्सूस लिखा है।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर शराब-ए-मुसल्लस के साथ मिलाएँ।

सेवन-मात्राः आवश्यकतानुसार प्रयोग करें।

- **क़ुर्स-ए-वर्द का अन्य नुस्ख़ाः**

इस को "अलक़ानून" पुस्तक से लिया गया है। यह उन पुराने बुख़ारों में लाभदायक जो बलग़म एवं सफ़रा से होते हैं।

औषधियाँः गुल-ए-सुर्ख़ 17.5 ग्राम, सुंबुलुत्तीब 3.5 ग्राम, उसारा-ए-ग़ाफ़िस 28 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर क़ुर्स तैयार करें।

- **क़ुर्स-ए-वर्द का अन्य नुस्ख़ाः**

यह जिगर के दर्द में लाभदायक और सुद्दों को खोलता है।

औषधियाँः सुंबुलत्तीब, लुक-ए-मग़सूल और अस्लुस्सूस प्रत्येक 14 ग्राम, अफ़्सन्तीन, ज़ाफ़रान, उसारा-ए-ग़ाफ़िस और रेवन्द चीनी प्रत्येक 10.5 ग्राम, गुल-ए-सुर्ख़ 24.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः विधि अनुसार सभी औषधियों को कूट छान कर मैफ़ख़्तज के साथ मिलाएँ और क़ुर्स तैयार करें।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम।

- **क़ुर्स-ए-रेवन्दः**

यह जिगर की सूजन, Hepatic sclerosis, तिल्ली की सूजन एवं Splenic sclerosis में लाभदायक है। सुद्दों को खोलता है और तेज़ बुख़ारों में लाभदायक है।

औषधियाँः रेवन्द चीनी, फ़ूह, लुक-ए-मग़सूल प्रत्येक 10.5 ग्राम, तुख़्म-ए-करफ़्स,

अनीसून, उसारा ग़ाफ़िस प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर अर्क़-ए-कासनी या ताज़ा पानी के साथ मिलाएँ और क़ुर्स तैयार करके सुखा लें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

- **क़ुर्स का अन्य नुस्ख़ाः**

इस नुस्खाको "मिनहाज" पुस्तक के लेखक ने तैयार किया है। यह पुराने बुख़ारों और Hepatic sclerosis में लाभदायक है।

औषधियाँः रेवन्द चीनी 21 ग्राम, फ़ूह, लुर्क-ए-मुनक्क़ा प्रत्येक 10.5 ग्राम, तुख़्म-ए-करफ़्स, अनीसून और उसारा-ए-ग़ाफ़िस प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान कर पानी के साथ मिलाएँ और क़ुर्स तैयार करें।

- **क़ुर्स-ए-रेवन्द का अन्य नुस्ख़ाः**

यह ठंडे जिगर के व्यक्तियों के लिए लाभदायक है।

औषधियाँः रेवन्द चीनी 10.5 ग्राम, सुंबुलुत्तीब, मस्तगी, ग़ाफ़िस, अफ़्सन्तीन और तुख़्म-ए-राज़ियाना प्रत्येक 8.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-राज़ियाना के साथ मिलाएँ और क़ुर्स तैयार करके सुखा लें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

- **क़ुर्स-ए-रेवन्द का अन्य नुस्ख़ाः**

यह जिगर की सूजन में लाभदायक, ख़ूनी दस्त रोकता है।

औषधियाँः रेवन्द चीनी, ज़रिशक मुनक्क़ा, तुख़्म-ए-कासनी और समग़-ए-अरबी बूदादा सभी समभाग में।

निर्माण-विधिः सब को समभाग लेकर कूट छान लें और आब-ए-लिसानुलहम्ल के साथ मिलाएँ और क़ुर्स तैयार करें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

- **क़ुर्स-ए-रेवन्द का अन्य नुस्ख़ाः**

यह ज़ूसंतारिया कबिदी अर्थात जिगर में अनियमितता के कारण होने वाले दस्त में लाभदायक है।

औषधियाँः रेवन्द चीनी, ज़रिशक मुनक्क़ा, तुख़्म-ए-कासनी, गिल-ए-अरमनी, समग़-ए-अरबी, तबाशीर सफ़ेद, गिल-ए-मख़्तूम प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-लिसानुलहम्ल के साथ क़ुर्स तैयार करें।
सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।
अनुपानः आब-ए-लिसानुलहम्ल के साथ प्रयोग करें।

- **क़ुर्स-ए-बनफ़्शाः**

यह बुख़ार एवं खाँसी में लाभदायक है। साथ ही यह हल्का विरेचक भी है।

औषधियाँः मग़ज़-ए-बादाम शीरीं, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-कदू, बनफ़्शा प्रत्येक 17.5 ग्राम, रुब्बुस्सूस, गिल-ए-अरमनी और निशास्ता प्रत्येक 10.5 ग्राम, मस्तगी रूमी और सुंबुलुत्तीब प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर क़ुर्स तैयार करें।

- **क़ुर्स-ए-बनफ़्शा का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से भी उन्हीं लाभों की प्राप्ति होती है। साथ ही यह हल्का विरेचक भी है।

औषधियाँः बनफ़्शा और तुर्बुद सफ़ेद प्रत्येक 35 ग्राम, रुब्बुस्सूस, अफ़्सन्तीन रूमी और गिल-ए-सुर्ख़ प्रत्येक 17.5 ग्राम, सक़मूनिया 3.5 ग्राम, मस्तगी 5.25 ग्राम, कतीरा 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर क़ुर्स तैयार करें।

- **क़ुर्स-ए-बनफ़्शा का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बुख़ार एवं Pleurisy में लाभदायक है।

औषधियाँः बनफ़्शा, मग़ज़-ए-बादाम शीरीं, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यारैन, तुख़्म-ए-ख़त्मी और तुख़्म-ए-ख़ुब्बाज़ी प्रत्येक 17.5 ग्राम, रुब्बुस्सूस, कतीरा, गिल-ए-अरमनी, निशास्ता और गुल-ए-सुर्ख़ प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर क़ुर्स तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

अनुपानः कशकाब के साथ प्रयोग करें।

- **क़ुर्स-ए-ग़ाफ़िसः**

यह पीलिया, जिगर की सूजन एवं तिल्ली की सूजन में लाभदायक है। पुराने बुख़ारों को समाप्त करता और सुद्दे खोलता है।

औषधियाँः उसारा-ए-ग़ाफ़िस 70 ग्राम, सुंबुलुत्तीब 35 ग्राम, तबाशीर 14 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-जबादियान के साथ मिलाएँ और क़ुर्स तैयार करें।

- **क़ुर्स-ए-ग़ाफ़िस का अन्य नुस्ख़ाः**

यह जिगर एवं तिल्ली के रोगियों के लिए लाभदायक है। साथ ही यह पुराने बुख़ारों में भी लाभदायक है।

औषधियाँः उसारा-ए-ग़ाफ़िस और अफ़्सन्तीन प्रत्येक 17.5 ग्राम, इज़्ख़िर, ज़ाफ़रान, सुंबुलुत्तीब और बीख़-ए-कबर प्रत्येक 10.5 ग्राम, मस्तगी, अनीसून और गुल-ए-सुर्ख़ प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान कर पानी के साथ मिलाएँ।

- **क़ुर्स-ए-ग़ाफ़िस का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बलग़मी बुख़ारों में लाभदायक है।

औषधियाँः उसारा-ए-ग़ाफ़िस 21 ग्राम, गुल-ए-सुर्ख़ और उसारा-ए- अफ़्सन्तीन प्रत्येक 10.5 ग्राम, मस्तगी, असारून, इज़्ख़िर और ऊद हिन्दी प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान कर पानी के साथ मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

अनुपानः माउलउसूल के साथ प्रयोग करें।

- **क़ुर्स-ए-लुकः**

यह जलोदर रोग एवं Anasarca में लाभदायक है। सुद्दों को खोलता है।

औषधियाँः लुक मुनक़्क़ा मग़सूल, फ़ूह, अनीसून, तुख़्म-ए-करफ़्स, अफ़्सन्तीन रूमी, असारून, मग़ज़-ए-बादाम तल्ख़, क़ुस्त, दार-ए-चीनी, ज़रावन्द तवील, उसारा-ए-ग़ाफ़िस 1-1 भाग।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को समभाग में लेकर कूट छान लें और अर्क़-ए-राज़ियाना के साथ मिलाकर क़ुर्स तैयार करें।

- **क़ुर्स-ए-लुक का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से भी उन्हीं लाभों की प्राप्ति होती है।

औषधियाँः लुक मग़सूल 17.5 ग्राम, रेवन्द चीनी, गुल-ए-सुर्ख़ और गिल-ए-अरमनी प्रत्येक 10.5 ग्राम, असारून, ज़रावन्द, जुन्तियाना, सुंबुलुत्तीब, मस्तगी, अनीसून, तुख़्म-ए-करफ़्स, नानख़्वाह , इज़्ख़िर, अबहल, मग़ज़-ए-बादाम तल्ख, फ़ूह, उसारा-ए-अफ़्सन्तीन और उसारा-ए-ग़ाफ़िस प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट कर पानी के साथ क़ुर्स तैयार करें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

- **क़ुर्स-ए-लुक का अन्य नुस्ख़ाः**

यह सुद्दे खोलता है और जलोदर रोग के विभिन्न प्रकारों में भी लाभदायक है।

औषधियाँः लुक मग़सूल और रेवन्द चीनी प्रत्येक 10.5 ग्राम, असारून, ज़रावन्द तवील, जुन्तियाना, मस्तगी, सुंबुलुत्तीब, तुख़्म-ए-करफ़्स, अनीसून, नानख़्वाह , इज़्ख़िर, अबहल, क़ुस्त और मग़ज़-ए-बादाम तल्ख़ प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर अर्क़-ए-राज़ियाना के साथ मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

- **क़ुर्स-ए-अनीसूनः**

शैख़ ने इस नुस्खे का उल्लेख अपनी पुस्तक "अलक़ानून" में किया है। यह जिगर, तिल्ली और पेट के दर्दों के साथ बलग़मी बुख़ारों में भी लाभदायक है।

औषधियाँः अनीसून 9 ग्राम, असारून, अफ़्सन्तीन रूमी, करफ़्स, मग़ज़-ए-बादाम तल्ख़ मुक़श्शर, मस्तगी, सुंबुलुत्तीबप्रत्येक 4.5 ग्राम, सिब्र सक़ूतरी और साज़ज हिन्दी प्रत्येक 2.25 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर क़ुर्स तैयार करें।

- **क़ुर्स-ए-अफ़्सन्तीनः**

यह खाना खाने के बाद उत्पन्न होने वाले पेट दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँः अफ़्सन्तीन रूमी, तुख़्म-ए-करफ़्स और अनीसून प्रत्येक 17.5 ग्राम, सलीख़ा 7 ग्राम, फ़िलफ़िल, जुन्द बेद स्तर, मुर मक्की और अफ़ियून प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट छान कर साफ़ पानी के साथ मिलाएँ और क़ुर्स तैयार करें।

- **क़ुर्स-ए-अफ़्सन्तीन का अन्य नुस्ख़ाः**

यह नुस्खा "मिनहाज" पुस्तक के लेखक से नक़ल किया गया है। यह बलग़मी बुख़ारों को दूर करता है। तिल्ली के सुद्दों को खोलता है। यह मूत्रकृच्छता, पेट की ठंडक और जिगर की ठंडक में लाभदायक है।

औषधियाँः अफ़्सन्तीन रूमी, तुख़्म-ए-करफ़्स, अनीसून, असारून और मग़ज़-ए-बादाम तल्ख़।

निर्माण-विधिः कूट छान लें और पानी के साथ मिलाकर क़ुर्स तैयार करें।

- **क़ुर्स-ए-बीख़-ए-कबरः**

यह तिल्ली के दर्दों में लाभदायक है।

औषधियाँः पोस्त बीख़-ए-कबर, ज़रावन्द तवील प्रत्येक 7 ग्राम, तुख़्म पन्जन्कशत,

फ़िलफ़िल प्रत्येक 21 ग्राम, उशक़ 14 ग्राम।

निर्माण-विधिः उशक़ को सिर्का में भिगो कर अच्छी तरह मिला लें और फिर शेष को कूट छान कर उसी घोल में एक साथ मिलाएँ और क़ुर्स तैयार करें। छाँव में सुखा कर सुरक्षित कर लें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

- **क़ुर्स-ए-असारून:**

औषधियाँ: असारून, ईर्सा प्रत्येक 7 ग्राम, केसर 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः इन सब को उपर्युक्त नुस्खे में सम्मिलित कर के सिकन्जबीन के साथ मिलाएँ और क़ुर्स तैयार करें।

- **क़ुर्स-ए-फ़ूह:**

यह तिल्ली के रोगों में लाभदायक है।

औषधियाँ: फ़ूह, पोस्त-ए-बीख़-ए-कबर और ज़रावन्द तवील प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधि:सिकन्जबीन मे मिला कर क़ुर्स तैयार करें।

- **क़ुर्स-ए-पन्पन्कशत:**

यह तिल्ली के लिए लाभदायक है।

औषधियाँ: तुख़्म-ए-पन्जन्कशत, तुख़्म-ए-कासनी, तुख़्म-ए-ख़ुर्फ़ा और मग़्ज़-ए-कदू सभी समभाग में।

निर्माण-विधिः सिकन्जबीन मिलाकर क़ुर्स तैयार करें।

- **क़ुर्स-ए-ईर्सा:**

यह तिल्ली में सूजन को ठीक करता है।

औषधियाँ: ईर्सा 14 ग्राम, फ़िलफ़िल सफ़ेद, सुंबुलुत्तीब और उशक़ प्रतयेक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः उशक़ को सिर्का में भिगो कर अच्छी तरह मिला लें और फिर शेष सभी औषधियों को कूट छान कर उसी घोल में मिलाएँ और क़ुर्स तैयार करें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

अनुपानः सिकन्जबीन बज़ूरी के साथ प्रयोग करें।

- **क़ुर्स-ए-पन्जनकशत:**

यह तिल्ली की सूजन एवं तिल्ली के सुद्दों में लाभदायक है।

औषधियाँ: बीख़-ए-पन्जनकशत, कदू ख़ुश्क, तुख़्म-ए-ख़ुर्फ़ा, तुख़्म-ए-कासनी

और ईर्सा प्रत्येक 10.5 ग्राम, बीख़-ए-कबर, ज़रावन्द तवील और फ़ूह प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर अर्क़-ए-राज़ियाना के साथ मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

अनुपानः सिकन्जबीन के साथ प्रयोग करें।

- **क़ुर्स-ए-उस्कूलक़न्द्रयून:**

यह 'मिनहाज" पुस्तक से लिया गया है। यह जिगर एवं तिल्ली की सूजन में लाभदायक है और सुद्दों को भी खोलता है।

औषधियाँः उस्क़ूलूक़न्द्रयून 14 ग्राम, जअदह, कज़माज़ज, हब्बुलबान मुक़श्शर, हब्ब-ए-काकनज, जावशीर, बलूत और क़ुस्त तल्ख़ प्रत्येक 7 ग्राम, अफ़्सन्तीन रूमी प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट कर पानी के साथ क़ुर्स तैयार करें।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम।

- **क़ुर्स-ए-उस्कूलक़न्द्रयून का अन्य नुस्ख़ाः**

यह तिल्ली की सूजन और ठोसपन में लाभदायक है ।

औषधियाँः तुख़्म-ए-पन्जनकशत, पोस्त बीख़-ए-कबर प्रत्येक 35 ग्राम, ज़रावन्द बर्ग-ए-सुद्दाब, तुख़्म-ए-इस्पन्दान, उशक़, मुदहरज प्रत्येक 10.5 ग्राम, उस्क़ूलूक़न्द्रयून 24.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः उशक़ को सिर्का में भिगो कर अच्छी तरह मिला लें फिर शेष को कूट छान कर उसी घोल में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

अनुपानः सिकन्जबीन या माउलउसूल के साथ मिलाकर।

- **क़ुर्स-ए-ग़ारीकून:**

यह अत्याधिक ठोस एवं गाढ़े तिल्ली के सूजन (Splenitis) को समाप्त करता है। साथ ही जिगर के सुद्दों को खोलता है और हल्का विरेचक भी है।

औषधियाँः ग़ारीक़ून और गुल-ए-सुर्ख़ 35 ग्राम, तबाशीर और ज़रिशक प्रत्येक 7 ग्राम, उसारा-ए-ग़ाफ़िस, सुंबुलुत्तीब, लुक मग़सूल, रेवन्द चीनी और पोस्त-ए-बीख़-ए-कबर प्रत्येक 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सिर्का में भिगोएँ और छलनी के पीछे वाले भाग से रगड़ कर सब को सिकन्जबीन के साथ मिलाएँ और क़ुर्स तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **कुर्स-ए-मुक़िलः**

औषधियाँ: वरक़-ए-गुल-ए-सुख 35 ग्राम, ज़ाफ़रान, मुर मक्की प्रत्येक 3.5 ग्राम, क़ुस्त तल्ख़, मग़्ज़-ए-बादाम तल्ख़ प्रत्येक 5.25 ग्राम, मस्तगी 8.75 ग्राम, मुक़िल 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः मुक़िल को शराब में घोल लें और शेष को कूट छान कर मुक़िल के घोल में मिलाएँ और क़ुर्स तैयार करें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

अनुपानः माउलउसूल के साथ प्रयोग करें।

- **कुर्स-ए-अनीसूनः**

यह बलग़मी बुख़ार व जिगर की कमज़ोरी में लाभदायक है।

औषधियाँ: अनीसून, अफ़सन्तीन रूमी, मग़्ज़-ए-बादाम तल्ख़, सुंबुलुत्तीब और सिब्र प्रतयेक 14 ग्राम, उसारा-ए-ग़ाफ़िस, साज़ज हिन्दी और असारून प्रत्येक 10.5 ग्राम, मस्तगी और तुख़्म-ए-करफ़्स प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सिकन्जबीन के साथ मिलाएँ।

- **कुर्स-ए-अनीसून का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बलग़मी बुख़ारों में लाभदायक है और गाढ़े द्रव्यों को पतला एवं हल्का करता है।

औषधियाँ: अनीसून, तुख़्म-ए-करफ़्स, राज़ियाना प्रत्येक 10.5 ग्राम, नअनाअ ख़ुश्क, क़ाकला, हील, फ़ुत्रासालियून, मस्तगी, ज़ाफ़रान, सुंबुलुत्तीब, गुल-ए-सुर्ख़ प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर विधि अनुसार क़ुर्स तैयार करें। प्रत्येक क़ुर्स 1664 मिली ग्राम का हो।

सेवन-मात्राः एक क़ुर्स।

अनुपानः माउलउसूल के साथ प्रयोग करें।

- **कुर्स-ए-ऊदः**

यह उल्टी एवं हैज़ा में लाभदायक है।

औषधियाँ: ऊद हिन्दी 14 ग्राम, कबाब चीनी, मस्तगी रूमी, क़रन्फ़ुल और सुंबुलुत्तीब प्रत्येक 7 ग्राम, क़न्द सफ़ेद 72 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान अर्क़-ए-गुलाब के साथ मिलाएँ।

- **कुर्स-ए-ऊद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह आमाशयवर्धक है और उल्टी के पश्चात प्रयोग करने से लाभ पहुँचाता है।

औषधियाँ: क़रन्फ़ुल और कबाब चीनी प्रत्येक 3.5 ग्राम, मस्तगी और सुंबुलुत्तीब

प्रत्येक 1.75 ग्राम, ऊद हिन्दी 14 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान अर्क़-ए-गुलाब के साथ मिलाए।

- **क़ुर्स-ए-ऊद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह आमाशयवर्धक, दीपक, पाचक और मुँह को सुगंधित करने वाला है।

औषधियाँः क़रन्फ़ुल और मस्तगी रूमी प्रत्येक 10.5 ग्राम, क़ाक़ला, सुंबुलुत्तीब और बिस्बासा प्रत्येक 7 ग्राम, ऊद हिन्दी, क़िर्फ़ह और क़िशर-ए-उतरूज प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान अर्क़-ए-गुलाब के साथ मिलाएँ।

- **क़ुर्स-ए-मुश्कः**

इस नुस्खे को मुहम्मद इब्न-ए-ज़करिया राज़ी ने नक़ल किया है। आमाशयवर्धक, हृदयवर्धक एवं जिगरवर्धक है। यह बेहोशी, घबराहट, पेट के दर्द-ए-उल्टी एवं मतली में लाभदायक है।

औषधियाँः मस्तगी रूमी, क़रन्फ़ुल, ऊद हिन्दी, दार-ए-चीन, सुंबुलुत्तीब, मुश्क, जौज़बोवा, कबाबा चीन, हील, पिस्ता का बाहर पोस्त, तुरन्ज और क़ाक़ला प्रत्येक 4.5 ग्राम

निर्माण-विधिः कूट कर अर्क़-ए-गुलाब में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 9 ग्राम।

- **क़ुर्स-ए-अंबरः**

हृदयवर्धक एवं बुद्धिवर्धक है।

औषधियाँः अंबर अशहब 3.5 ग्राम, क़न्द सफ़ेद 3.5 ग्राम, अर्क़-ए-गुलाब 175 ग्राम, ज़ाफ़रान और काफ़ूर प्रत्येक 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः विधि अनुसार क़ुर्स तैयार करें।

- **क़ुर्स-ए-कुन्दुरः**

यह गैस के कारण पेट की ऐंठन, हिचकी में लाभदायक है।

औषधियाँः कुन्दुर 17.5 ग्राम, रासन, फ़ूदनह और नम्माम प्रत्येक 7 ग्राम, नानख़्वाह और सअद कूफ़ी प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को अधकुटा कर के अर्क़-ए-गुलाब में मिलाएँ और क़ुर्स तैयार करें।

- **क़ुर्स-ए-कुन्दुर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह उस पेट की ऐंठन में लाभदायक है जिस के साथ गैस और गुड़गुड़ाहट तो हो लेकिन गर्मी ना पाई जाती हो।

औषधियाँः कुन्दुर, शिब्त और राज़ियाना प्रत्येक 17.5 ग्राम, नानख़्वाह 8.75

ग्राम, तुख़्म-ए-करफ़्स 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर क़ुर्स तैयार करें।

- **क़ुर्स-ए-कुन्दुर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह उल्टी एवं हैज़ा में लाभदायक है।

औषधियाँः कुन्दुर 10.5 ग्राम, क़िर्फ़ह 17.5 ग्राम, फ़ोफ़ल, कबाब चीनी और सुक पत्येक 7 ग्राम, मुश्क और काफ़ूर प्रत्येक 416 मिलीग्राम, क़रन्फ़ुल 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर क़ुर्स तैयार करें।

- **क़ुर्स-ए-कुन्दुर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बलग़म सेहोने वाली मतली में लाभदायक है।

औषधियाँः कुन्दुर 3.5 ग्राम, रासन, नम्माम, पोदीना नहरी और बर्ग-ए-सुद्दाब प्रत्येक 7 ग्राम, नानख़्वाह 5.25 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर क़ुर्स तैयार करें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

अनुपानः मतबूख़-ए-ज़हर के साथ प्रयोग करें।

- **क़ुर्स-ए-कुन्दुर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह उल्टी, मतली और अंतरांगों के फूलन में लाभदायक है।

औषधियाँः कुन्दुर, ज़ीरा, फ़ूदनह, पिस्ता का बाहरी पोस्त, नानख़्वाह, सअद, मस्तगी।

निर्माण-विधिः विधि अनुसार क़ुर्स तैयार करें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

- **क़ुर्स-ए-क़रन्फ़ुलः**

यह उल्टी एवं हैज़ा को रोकता है और नींद लाता है।

औषधियाँः क़रन्फ़ुल 35 ग्राम, सुक,रासन प्रत्येक 7 ग्राम, मस्तगी, अफ़ियून, पोस्त-ए-बीख़-ए-लुफ़्फ़ाह प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर क़ुर्स तैयार करें।

सेवन-मात्राः 416 मिली ग्राम।

अनुपानः आब-ए-ज़ीरह के साथ प्रयोग करें।

- **क़ुर्सुलआसः**

यह पेट की अनियमितता से होने वाले दस्त को रोकता है।

औषधियाँः सुमाक़, हब्बुलआस, कज़माज़ज, गिल-ए-अरमनी, निशास्ता भूना हुआ

और बलूत सभी समभाग में।

निर्माण-विधिः विधि अनुसार क़ुर्स तैयार करें।

सेवन-मात्राः 416 मिली ग्राम।

अनुपानः आब-ए-बिही के साथ प्रयोग करें।

- **क़ुर्स-ए-हब्बुलआसः**

यह खाँसी के साथ होने वाले दस्त में लाभदायक है।

औषधियाँः हब्बुलआस 35 ग्राम, मग़ज़ तुख़्म-ए-खरपज़ह, पर्सियाउशान प्रत्येक 17.5 ग्राम, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यारैन, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-कदू प्रत्येक 21 ग्राम,रुब्बुस्सूस, समग़-ए-अरबी प्रत्येक 8.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर क़ुर्स तैयार करें।

- **क़ुर्स-ए-हब्बुलआस का अन्य नुस्ख़ाः**

यह पेट और आँतों की अनियमितता के कारण होने वाले दस्त, उल्टी और अमीबिक पेचिश में लाभदायक है। साथ ही यह बवासीर के ख़ून को रोकता है।

औषधियाँः हब्बुलआस, सुमाक़, कज़माज़ज, गिल-ए-अरमनी, बलूत, निशास्ता भूना हुआ प्रत्येक 35 ग्राम, मुक़िल 7 ग्राम, माज़ू सब्ज, पोस्त-ए-अनार प्रत्येक 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर क़ुर्स तैयार करें।

- **क़ुर्स-ए-कहरूबाः**

औषधियाँः कहरुबा, बुसुद, मरवारीद नासुफ़्ता, तुख़्म-ए-खुर्फ़ह प्रत्येक 17.5 ग्राम, शाख-ए-गौज़न सोख़्ता, क़िशूर-ए-बैज़ा सोख़्ता, कतीरा, समग़-ए-अरबी प्रत्येक 10.5 ग्राम, किशनीज़ खुश्क, ख़शख़ाश सफ़ेद, ख़शख़ाश स्याह अधभुना प्रत्येक 21 ग्राम, वदअ सोख़्ता, बज़रुल बन्ज प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर लुआब-ए-बज़रक़तूना के साथ मिलाएँ।

- **क़ुर्स-ए-कहरूबा का अन्य नुस्ख़ाः**

यह ख़ूनी दस्त एवं रक्तमेह में लाभदायक है।

औषधियाँः कहरुबा, समग़-ए-अरबी, निशास्ता भूना हुआ, कतीरा और मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-कदू प्रत्येक 10.5 ग्राम, गुलनार और अक़ाक़िया प्रत्येक 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर लुआब-ए-बज़रक़तूना के साथ मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 35 ग्राम।

अनुपानः शीरह-ए-तुख़्म-ए-खर्फ़ह बूदादह के साथ।

- **क़ुर्स-ए-कहरुबा का अन्य नुस्ख़ाः**

यह ख़ूनी दस्त अथवा माहवारी एवं बवासीर में अधिक ख़ून बहने में लाभदायक है।

औषधियाँः कहरुबा, ख़शख़ाश सफ़ेद, मस्तगी प्रत्येक 7 ग्राम, ज़ाफ़रान 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर लुआब-ए-बज़रक़तूना के साथ मिलाएँ।

- **क़ुर्स-ए-कहरुबा का अन्य नुस्ख़ाः**

यह ख़ूनी दस्त, ख़ूनी उल्टी, ख़ूनी बवासीर अथवा किसी भी अंग से ख़ून बहने में लाभदायक है।

औषधियाँः कहरुबा, बुसुद, मरवारीद,शाख-ए-गौज़न सोख़्ता, वदअ सोख़्ता, शाख-ए-गौज़न सोख़्ता, शादनज मग़सूल प्रत्येक 10.5 ग्राम, गुल-ए-सुर्ख़, तुख़्म-ए-खुर्फ़ह, किशनीज़ ख़ुश्क, निशास्ता, समग़-ए-अरबी (अघुभुने) प्रत्येक 10.5 ग्राम, सुमाक़, गुलनार प्रत्येक 17.5 ग्राम, बक़ाक़िया, उसारा-ए-लेहयतुत्तीस, तबाशीर प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः आब-ए-लिसानुलहम्ल, नक़ू-ए-गुलनार या लुआब-ए-बज़रक़तूना मिला कर क़ुर्स तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **क़ुर्स-ए-कहरुबा का अन्य नुस्ख़ाः**

यह रक्तमेह, अंतरांगों की सूजन, गुर्दा एवं मूत्राशय की सूजन अथवा गुर्दा एवं मूत्राशय के Ulcer में लाभदायक है।

औषधियाँः कहरुबा 17.5 ग्राम,उसारा लेहयतुत्तीस, गुलनार, समग़ बादाम प्रत्येक 10.5 ग्राम, तुख़्म-ए-करफ़्स, अफ़ियून, समग़ अरबी, गिल-ए-अरमनी, दमुलअख़वैन, तबाशीर प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर क़ुर्स तैयार करें।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम।

अनुपानः पानी के साथ प्रयोग करें।

- **क़ुर्स-ए-बुसुदः**

यह ख़ूनी उल्टी एवं ख़ूनी दस्त में लाभदायक है।

औषधियाँः बुसुद मग़सूमल 35 ग्राम, कुन्दुर, अक़ाक़िया, गुलनार, समग़-ए-अरबी प्रत्येक 14 ग्राम, कतीरा और गिल-ए-मख़्तूम प्रत्येक 10.5 ग्राम, दारचीनी 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर क़ुर्स तैयार करें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम, शराब-ए-अन्जबार के साथ।

- **क़ुर्स-ए-तबाशीर लुलुवी:**

यह ख़ूनी दस्त, जिगर की अनियमितत से होने वाले दस्त, आँतों में अनियमितता से होने वाले दस्त, Sprue, Amoebic dysentery, Haemoptysis में लाभदायक है।

औषधियाँ: मरवारीद बिक्र और तबाशीर सफ़ेद प्रत्येक 7 ग्राम, ख़शख़ाश सफ़ेद अधभुना 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: अर्क़-ए-गुलाब मिला कर क़ुर्स तैयार करें।

- **क़ुर्स-ए-तबाशीर काफ़ूरी:**

यह Hyperpyrexia और गर्मी के कारण होने वाली खाँसी में लाभदायक है। साथ ही यह प्यास को भी बुझाता है।

औषधियाँ: तबाशीर सफ़ेद, गुल-ए-सुर्ख़, सन्दल सफ़ेद, मग़्ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यारैन, तुख़्म-ए-कासनी, तुख़्म-ए-काहू, ख़ुर्फ़ह पत्येक 4.5 ग्राम, काफ़ूर क़ैसूरी 416 मिलीग्राम।

निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर लुआब-ए-बज़रक़तूना के साथ मिलाएँ।

- **क़ुर्स-ए-तबाशीर मुलय्यन:**

यह गर्मी से होने वाली खाँसी, सीने में जकड़न और Hyperpyrexia में लाभदायक है। यह हल्का विरेचक भी है।

औषधियाँ: तबाशीर सफ़ेद 18 ग्राम, तुरन्जबीन 13.5 ग्राम, मग़्ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यारैन, मग़्ज़-ए-तुख़्म-ए-कद्दू, निशास्ता, समग़-ए-अरबी, ख़शख़ाश, कतीरी प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: तुरन्जबीन को लुआब-ए-बज़रक़तूना में साफ़ कर लें। सब को कूटने के बाद मिला कर क़ुर्स तैयार करें।

- **क़ुर्स-ए-तबाशीर मुलय्यन का अन्य नुस्ख़ा:**

इस नुस्खे को "मिनहाज" पुस्तक के लेखक ने नक़ल किया है। यह Hyperpyrexia और दमवी बुख़ारों में लाभदायक है। यह प्यास को बुझाने वाला और पेट के लिए हल्का विरेचक भी है।

औषधियाँ: गुल-ए-सुर्ख़ और तुरन्जबीन प्रत्येक 17.5 ग्राम, निशास्ता 7 ग्राम, ज़ाफ़रान 3.5 ग्राम, कतीरा, समग़-ए-अरबी और तबाशीर सफ़ेद प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को तुरन्जबीन में घोल लें और मिला कर क़ुर्स तैयार करें।

- **क़ुर्स-ए-तबाशीर मुलय्यन का अन्य नुस्ख़ा:**

यह Septic Fevers में लाभदायक है। आमाशयवर्धक है, प्यास को बुझाने वाला और गर्मी को समाप्त करने वाला भी है।

औषधियाँः तबाशीर, उसारा ज़रिशक मुनक़्क़ा, सक़मूनिया, कतीरा, गुल-ए-सुर्ख़ प्रत्येक 416 मिलीग्राम, क़न्द सफ़ेद 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-कासनी या आब-ए-इनबुस्सअलब के साथ मिलाएँ और क़ुर्स तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **क़ुर्स-ए-तबाशीर मुम्सिकः**

यह सफ़रावी बुख़ारों में लाभदायक है। क़ब्ज़ पैदा करने वाला है। रक्तस्त्राव में लाभदायक और प्यास बुझाने वाला है।

औषधियाँः वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़ 17.5 ग्राम, तबाशीर सफ़ेद, सुमाक और ज़रिशक मुनक़्क़ा प्रत्येक 24.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर अर्क़-ए-गुलाब के साथ मिलाएँ।

- **क़ुर्स-ए-तबाशीर मुम्सिक का अन्य नुस्ख़ाः**

इस नुस्खे को अबुलबरकात ने नक़ल किया है। यह तेज़ बुख़ारों में लाभदायक है। पेट में क़ब्ज़ पैदा करने वाला और प्यास बुझाने वाला है।

औषधियाँः तबाशीर सफ़ेद, ज़रिशक मुनक़्क़ा और गुल-ए-सुर्ख़ प्रत्येक 3.5 ग्राम, काफ़ूर 416 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर लुआब-ए-बालंगो के साथ मिलाएँ ।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

- **क़ुर्स-ए-तबाशीर मुम्सिक का अन्य नुस्ख़ाः**

इस नुस्खे को "कामिलुस्सनाअह" के लेखक ने नक़ल किया है। यह दस्त एवं सफरावी बुख़ारों में लाभदायक है।

औषधियाँः तबाशीर सफ़ेद, गुल-ए-सुर्ख़ प्रत्येक 24.5 ग्राम, तुख़्म-ए-हुम्माज़, समग़-ए-अरबी, गिल-ए-अरमनी प्रत्येक 1664 मिलीग्राम, निशास्ता भूना हुआ 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर क़ुर्स तैयार करें।

- **क़ुर्स-ए-तबाशीर मुम्सिक का अन्य नुस्ख़ाः**

यह तेज़ बुख़ारों व टाइफाइड बुख़ार में लाभदायक है और प्यास बुझाने वाला है।

औषधियाँः तबाशीर सफ़ेद 17.5 ग्राम, वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़ 10.5 ग्राम, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यारैन, तुख़्म-ए-खुर्फ़ह, गिल-ए-अरमनी, तुख़्म-ए-कासनी और तुख़्म-ए-हुम्माज़ प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर लआब-ए-बज़रक़तूना के साथ मिलाएँ।
सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

- **कुर्स-ए-काफूरः**

यह पीलिया व गर्मी से होने वाले बुख़ारों में लाभदायक है।

औषधियाँः ज़रिशक मुनक़्क़ा, तबाशीर सफ़ेद, गुल-ए-सुर्ख़ प्रत्येक 24.5 ग्राम, तुख़्म-ए-काहू, तुख़्म-ए-खुर्फ़ह, कतीरा, तुख़्म-ए-कासनी प्रत्येक 10.5 ग्राम, मग़्ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़रपज़ह, मग़्ज़ तुख़्म-ए-कदू प्रत्येक 17.5 ग्राम, सन्दल सफ़ेद,रुब्बुस्सूस प्रत्येक 10.5 ग्राम, काफ़ूर और दाना-ए-जौ प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट कर लआब-ए-बालंगो में मिलाएँ।
सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

- **कुर्स-ए-काफूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह टीबी के तेज़ बुख़ार व टाइफाइड बुख़ार में लाभदायक और प्यास बुझाने वाला है।

औषधियाँः तबाशीर, तुख़्म-ए-खुर्फ़ह और तुख़्म-ए-काहू प्रत्येक 17.5 ग्राम, तुख़्म-ए-कासनी, रुब्बुस्सूस और सन्दल सफ़ेद प्रत्येक 10.5 ग्राम, काफ़ूर 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट कर लआब-ए-बज़रक़तूना में मिलाएँ।
सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

- **कुर्स-ए-काफूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह पित्ताशय में अनियमितता के कारण होने वाले दस्त को रोकता है। प्यास बुझाने वाला है और गर्मी के कारण होन वाले बुख़ारों में लाभदायक है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-हुम्माज़ भूना हुआ, गिल-ए-मख़्तूम, समग़-ए-अरबी, मूरदाना, तबाशीर, गुल-ए-सुर्ख़ प्रत्येक 70 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट छान कर अर्क़-ए-गुलाब में मिलाएँ और क़ुर्स तैयार करें।
सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

- **कुर्स-ए-तबाशीर का अन्य नुस्ख़ाः**

इस नुस्खे को "मिनहाज" के लेखक ने नक़ल किया है। यह अत्याधिक तेज़ बुख़ारों, सूजन, प्यास, टीबी बुख़ार,पेट की सूजन, उल्टी, Haemorrhage, Haemoptysis में लाभदायक है।

औषधियाँः तबाशीर सफ़ेद 14 ग्राम, वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़ 24.5 ग्राम, ऊद-ए-हिन्दी 7 ग्राम, मग़्ज़-ए-तुख़्म-ए-कदू, मग़्ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यारैन और तुख़्म-ए-खुर्फ़ह प्रत्येक 14

ग्राम, अस्लुस्सूस, सन्दल सफ़ेद, तुरन्जबीन मुनक़्क़ा, निशास्ता, शकर तबरज़द प्रत्येक 10.5 ग्राम, कतीरा और समग़-ए-अरबी प्रत्येक 7 ग्राम, काफ़ूर क़ैसूरी और ज़ाफ़रान प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर अर्क़-ए-गुलाब के साथ मिलाएँ।

- **क़ुर्स का अन्य नुस्खा:**

इस नुस्खे को शैख़ अबू अली सीना ने नक़ल किया है। यह अत्याधिक तेज़ बुख़ारो और ख़ूनी दस्तों में लाभदायक है। क्षय रोग एवं यक्षमा के रोगियों के लिए भी लाभदायक है।

औषधियाँः मग़ज़ तुख़्म-ए-कदू, मग़ज़ तुख़्म-ए-ख़्यारैन प्रत्येक 7.832 ग्राम, तुख़्म-ए-कासनी, तुख़्म-ए-काहू, तुख़्म-ए-खुर्फ़ह प्रत्येक 7 ग्राम, सरतान मुहर्रक़, केसर, रुब्बुस्सूस, काफ़ूर प्रत्येक 3.5 ग्राम, गुल-ए-सुर्ख़ 14 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर क़ुर्स तैयार करें।

- **क़ुर्स-ए-अन्जबारः**

यह ख़ूनी दस्त, माहवारी में अधिक ख़ून बहने और ख़ूनी उल्टी में लाभदायक है।

औषधियाँः बीख़-ए-अन्जबार 14 ग्राम,समग़-ए-अरबी, वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़, कहरुबा और तुख़्म-ए-खुर्फ़ह प्रत्येक 10.5 ग्राम, गुलनार, निशास्ता, गिल-ए-अरमनी, बुसुद, तबाशीर और रुब्बुस्सूस प्रत्येक 7 ग्राम, अक़ाक़िया 5.25 ग्राम।

निर्माण-विधिःआब-ए-मूरद मिला कर क़ुर्स तैयार करें।

- **क़ुर्स-ए-मुबारकः**

यह बुख़ार एवं पीलिया में लाभदायक है और प्यास को बुझाने वाला भी है।

औषधियाँः वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़ और तुरन्जबीन प्रत्येक 17.5 ग्राम, तबाशीर और मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यारैन प्रत्येक 8.75 ग्राम, तुख़्म-ए-काहू 11.75 ग्राम, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-कदू 7 ग्राम, रुब्बुस्सूस 4.5 ग्राम, काफ़ूर 208 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर लुआब-ए-बालंगो के साथ मिलाएँ।

- **क़ुर्स-ए-सरतानः**

यह क्षय रोग, यक्षमा और रक्तनिष्ठवान में लाभदायक है।

औषधियाँः गिल-ए-मख़्तूम, गिल-ए-अरमनी, निशास्ता और वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़ प्रत्येक 21 ग्राम, सरतान मुहर्रक़ 35 ग्राम, कतीरा, शादनज मग़सूल प्रत्येक 17.5 ग्राम, रुब्बुस्सूस 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-लिसानुलहम्ल के साथ मिलाएँ और विधि अनुसार क़ुर्स तैयार करें।

- **क़ुर्स-ए-मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यारैनः**

इस नुस्खे को क़ुर्स-ए-मसलूल भी कहा जाता है।

औषधियाँः मग़ज़-ए-ख़्यारैन 14 ग्राम, तबाशीर और सरतान मुहर्रक़ प्रत्येक 7 ग्राम, निशास्ता 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर लुआब-ए-बज़रक़तूना के साथ मिलाएँ।

- **क़ुर्स-ए-ख़शख़ाशः**

यह सीना, फेफड़ा और मूत्राशय के फोड़ों में लाभदायक है।

औषधियाँः वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़ और समग़-ए-अरबी प्रत्येक 14 ग्राम, निशास्ता, कतीरा और रुब्बुस्सूस प्रत्येक 35 ग्राम, तबाशीर 17.5 ग्राम, ज़ाफ़रान 416 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः कूटने के बाद पानी मिला कर क़ुर्स बनाएँ।

- **क़ुर्स-ए-गुलनारः**

यह दस्त और ख़ून के बहने में लाभदायक है।

औषधियाँः सलीख़ा, गिल-ए-मख़्तूम, मुर मक्की और समग़-ए-अरबी प्रत्येक 28 ग्राम, कतीरा 4.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-गुलनार ताज़ा में मिलाएँ और अगर गुलनार ताज़ा प्रयाप्त ना हो ऐसे पानी में मिलाएँ जिस में गुलनार को पकाया गया हो।

- **क़ुर्स-ए-सलीख़ाः**

यह सीना, फेफड़ा और मूत्राशय के फोड़ों में लाभदायक है।

औषधियाँः सलीख़ा, गिल-ए-अरमनी, समग़-एअरबी प्रत्येक 14 ग्राम, वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़, गुलनार फ़ार्सी, अक़ाक़िया प्रत्येक 10.5 ग्राम, कतीरा 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः आब-ए-गुलनार मिला कर क़ुर्स तैयार करें।

- **क़ुर्स-ए-कज़माज़जः**

इस नुस्खे को जालीनूस ने तैयार किया है। Splenic sclerosis, तिल्ली के ठेस सुद्दों एवं सूजन को दूर करता है।

औषधियाँः कज़माज़ज 18 ग्राम, फ़िलफ़िल सफ़ेद, सुंबुलुत्तीब, उशक़, असारून प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः उशक़ को सिर्का-ए-उन्सुल में से मिलाएँ। शेष को कूट छान कर

उशक़ के साथ मिला कर क़ुर्स तैयार करें।

- **क़ुर्स का अन्य नुस्ख़ा:**

इस नुस्खे को "अलक़ानून" से नकक़ल किया गया है। यह गुर्दा और मूत्राशय के फोड़ों और रक्तमेह में लाभदायक है।

औषधियाँ: कुन्दुर, समग़-ए-अरबी, दमुलअखवैन प्रत्येक 7 ग्राम, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-खरपज़ह, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यारैन और मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-कदू प्रत्येक 70 ग्राम, अफ़्तीमून 10.5 ग्राम, तुख़्म-ए-करफ़्स 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर लुआब-ए-ख़त्मी के साथ मिलाएँ।

सेवन-मात्रा: 7 ग्राम।

अनुपान: शराब-ए-ख़शख़ाश के साथ प्रयोग करें।

- **क़ुर्स-ए-ख़रनूब:**

यह ख़ूनी दस्त और बिना ख़ूनी दस्त में लाभदायक है।

औषधियाँ: माज़ू सब्ज़, ख़रनूब, कज़माज़ज, गुलनार, जुन्द बेद स्तर 1-1 भाग, अफ़ियून, समग़-ए-अरबी आधा आधा भाग।

निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर क़ुर्स तैयार करें।

सेवन-मात्रा: 1.75 ग्राम।

अनुपान: आब-ए-बिही के साथ प्रयोग करें।

- **क़ुर्स-ए-यशब:**

यह रक्तमेह और किसी भी अंग से ख़ून बहने में लाभदायक है।

औषधियाँ: शिब-ए-यमानी, शाख-ए-गौज़न मुहर्रक़, कतीरा, गिल-ए-अरमनी और तुख़्म-ए-ख़ुर्फ़ह।

निर्माण-विधि: सभी औषधियों को सम भाग में लें और कूट छान कर आब-ए-ख़ुर्फ़ा के साथ मिलाएँ और क़ुर्स तैयार करें।

अनुपान: शराब-ए-हब्बुलआस के साथ प्रयोग में लाएँ।

- **क़ुर्स-ए-तीन:**

यह रक्तमेह रोकता और मूत्राशय के फोड़ों में लाभकारी है।

औषधियाँ: गिल-ए-मख़्तूम, समग़-ए-अरबी, तबाशीर, कतीरा, तुख़्म-ए-ख़ुर्फ़ह और मग़ज़-ए-ख़्यारैन प्रत्येक 35 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर मैफुख़्तज में मिलाएँ और अगर रोगी पर

गर्मी का प्रभाव हो तो लुआब-ए-बालंगो के साथ मिलाएँ और क़ुर्स तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

अनुपानः कशकाब के साथ प्रयोग करें।

- **क़ुर्स-ए-सुंबुलुत्तीबः**

यह पेट, जिगर, तिल्ली में ठंडक से होने वाली अनियमितता में लाभदायक है।

औषधियाँः सुंबुलुत्तीब, रेवन्द चीनी और मस्तगी रूमी प्रत्येक 5.25 ग्राम, अनीसून, तुख़्म-ए-करफ़्स, नानख़्वाह और अफ़्सन्तीन रूमी प्रत्येक 10.5 ग्राम, फ़ूह और लुक-ए-मग़सूल प्रत्येक 7 ग्राम, उसारा-ए-ग़ाफ़िस और ज़ाफ़रान प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर पुरानी नबीज़ जैसी किसी वस्तु के साथ मिलाएँ और क़ुर्स तैयार करें।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम से 4.5 ग्राम तक।

अनुपानः माउलउसूल या मतबूख-ए-अफ़्सन्तीन के साथ।

- **क़ुर्स का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गर्मी के कारण होने वाली तिल्ली की अनियमितता में लाभदायक है।

औषधियाँः मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-खरपज़ह, तुख़्म-ए-ख़्यारैन, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-कदू प्रत्येक 24.5 ग्राम, अफ़्तीमून 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर क़ुर्स तैयार करें।

सेवन-मात्राः 416 मिलीग्राम से 832 मिलीग्राम तक।

अनुपानः शराब-ए-ख़शख़ाश के साथ प्रयोग करें।

- **क़ुर्स-ए-काकनजः**

यह मूत्राशय के फोड़ों, रक्तमेह और गुर्दा एवं मूत्राशय में पैदा होने वाले खुजलाहट भरे दानों के लिए लाभदायक है।

औषधियाँः मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यारैन, हब्ब-ए-काकनज, मग़ज़-ए-बादाम मुक़श्शर, रुब्बुस्सूस, निशास्ता, समग़-ए-अरबी, दमुलअखवैन, कतीरा और कुन्दुर प्रत्येक 35 ग्राम, तुख़्म-ए-करफ़्स 7 ग्राम, अफ़्तीमून 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर पानी के साथ मिलाएँ और क़ुर्स तैयार करें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम से 9 ग्राम तक।

- **क़ुर्स-ए-काकनज का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः तुख़्म-ए-करफ़्स और बज़रुलबन्ज प्रत्येक 21 ग्राम, मग़ज़-ए-हब्बुस्सनोबर,

तुख़्म-ए-हुम्माज़, मग़ज़-ए-बादाम तल्ख मुक़श्शर और अफ़्तीमून मिश्री प्रत्येक 10.5 ग्राम, हब्ब-ए-काकनज 20 की संख्या में, मग़ज़-ए-ख़्यारैन 42 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-राज़ियाना के साथ मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

- **क़ुर्स-ए-काकनज का अन्य नुस्ख़ाः**

यह नुस्खा "शरह असबाब व अलामात" से नक़ल किया गया है। यह गुर्दा एवं मूत्राशय के फोड़ों में लाभदायक है।

औषधियाँः हब्ब-ए-काकनज 10.5 ग्राम, तुख़्म-ए-करफ़्स, शहदाना, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यारैन 35 ग्राम, गिल-ए-अरमनी, समग़-ए-अरबी प्रत्येक 7 ग्राम, अफ़्तीमून 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर शराब-ए-ख़शख़ाश के साथ क़ुर्स तैयार करें। ।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम।

- **क़ुर्स-ए-काकनज का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गुर्दा एवं मूत्राशय के फोड़ों में लाभदायक है।

औषधियाँः समग़-ए-अरबी, समग़-ए-आलू, कतीरा, निशास्ता, तुख़्म-ए-ख़ुर्फ़ह, तबाशीर, गिल-ए-मख़्तूम और मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यारैन सभी समभाग में।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर क़ुर्स तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम से 10.5 ग्राम तक।

अनुपानः मैफ़ुख़्तज के साथ प्रयोग करें।

- **क़ुर्स-ए-काकनज का अन्य नुस्ख़ाः**

इस के भी वही लाभ हैं।

औषधियाँः सफ़ेदाब मग़सूल 7 ग्राम, सदफ़ मुहर्रक़ एवं मग़सूल, काग़ज़ मुहर्रक़, दमुलअख़वैन और हब्बुलआस प्रत्येक 5.25 ग्राम, समग़-ए-अरबी, कतीरा और निशास्ता प्रत्येक 3.5 ग्राम, समग़ुलबुत्म 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर क़ुर्स तैयार करें।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम।

अनुपानः शराब-ए-मूरद के साथ प्रयोग करें।

- **क़ुर्स-ए-ज़याबीतसः**

यह नुस्खा साबित इब्न-ए-क़ुर्रह का तैयार किया हुआ है।

औषधियाँः हब्बुलआस और तुख़्म-ए-हुम्माज़ प्रत्येक 7 ग्राम, समग़-ए-अरबी और निशास्ता प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर लुआब-ए-बज़रक़तूना के साथ मिलाएँ।

- **कुर्स-ए-ज़याबीतस का अन्य नुस्ख़ाः**

यह मधुमेह में लाभदायक है।

औषधियाँः तबाशीर और रुब्बुस्सूस प्रत्येक 35 ग्राम, तुख़्म-ए-काहू 7 ग्राम, तुख़्मू ख़ुर्फ़ह 52.5 ग्राम, गुल-ए-सुर्ख़ और कतीरा ख़ुश्क प्रत्येक 17.5 ग्राम, अक़ाक़िया, सन्दल सफ़ेद और गुलनार फ़ारसी प्रत्येक 10.5 ग्राम, कहरुबा 17.5 ग्राम, शादनज मग़सूल और गिल-ए-मख़्तूम प्रत्येक 35 ग्राम, शिब-ए-यमानी 8.75 ग्राम, अफ़्तीमून और दारचीनी प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर क़ुर्स तैयार करें।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम।

अनुपानः शराब-ए-मूरद के साथ प्रयोग करें।

- **कुर्स का अन्य नुस्ख़ाः**

यह रक्तनिष्ठवण में लाभदायक है और दिल एवं दिमाग़ को भी लाभ पहुँचाता है।

औषधियाँः गुल-ए-सुर्ख़ 7 ग्राम, तबाशीर सफ़ेद, मरवारीद नासुफ़्ता प्रत्येक 3.5 ग्राम, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यारैन, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-कदू प्रत्येक 17.5 ग्राम, तुख़्म-ए-ख़ुर्फ़ह 10.5 ग्राम, ज़ाफ़रान 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर लुआब-ए-बज़रक़तूना के साथ मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

अनुपानः सिकन्जबीन के साथ प्रयोग करें।

- **कुर्स का अन्य नुस्ख़ाः**

क़ुर्स जो कि बुख़ार, सर दर्द Meningitis में लाभदायक है, प्यास बुझाता, नींद लाता और Delerium को दूर करता है।

औषधियाँः रुब्बुस्सूस, निशास्ता, कतीरा, अफ़्तीमून प्रत्येक 10.5 ग्राम, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यारैन मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-कदू प्रत्येक 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर लुआब-ए-बज़रक़तूना के साथ मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 416 मिलीग्राम से 1.75 ग्राम तक।

- **कुर्स का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Pleurisy में लाभदायक है।

औषधियाँः रुब्बुस्सूस 35 ग्राम, निशास्ता, बनफ़्शा, कतीरा, तुख़्म-ए-ख़त्मी और राज़ियाना प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर लुआब-ए-बज़रक़तूना के साथ मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

अनुपानः लुआब-ए-बिही दाना या शरबत-ए-बनफ़्शा।

- **कुर्स-ए-मुनव्विम हारः**

यह बुद्धिवर्धक और नींद लाने वाला है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-शिब्त 7 ग्राम, ज़ाफ़रान, बज़रुलबन्ज, मुर, मीअह प्रत्येक 416 मिलीग्राम, अफ़्तीमून 10.5 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर लुआब-ए-हुल्बा के साथ मिलाएँ।

अनुपानः शरबत-ए-ख़शख़ाश के साथ प्रयोग करें।

- **कुर्स-ए-मुनव्विम बारिदः**

यह दिमाग़ की गर्मी नार्मल करता और नींद लाने वाला है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-काहू, तुख़्म-ए-ख़शख़ाश, बाक़ला मुक़श्शर, तुख़्म-ए-ख़ुर्फ़ह और हब्ब-ए-काकनज प्रत्येक 3.5 ग्राम, अफ़्तीमून 10.5 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर लुआब-ए-बज़रक़तूना के साथ मिलाएँ।

सेवन-समय व अनुपानः सोते समय शरबत-ए-ख़शख़ाश के साथ प्रयोग करें।

- **कुर्स-ए-मुनव्विम का अन्य नुस्ख़ाः**

यह नुस्खा "अलक़ानून" से नक़ल किया गया है।

औषधियाँः ज़ाफ़रान, अफ़ियून, मुर साफ़, बज़रुलबन्ज, पोस्त-ए-बीख़-ए- लुफ़्फ़ाह।

निर्माण-विधिः सब को समभाग में लें और कूटने छानने के बाद उसारह-ए-काहू के साथ मिलाकर क़ुर्स तैयार करें। आवश्यकता पड़ने पर कनपटियों पर तिला करें।

- **कुर्स-ए-कहरुबा व मर्जानः**

यह बवासीर में अधिक मात्रा में ख़ून आने को रोकता है।

औषधियाँः मरजान, कहरुबा, वदअ मुहर्रक़, गिल-ए-अरमनी प्रत्येक 35 ग्राम, रोग़न-ए-ज़ैतून में भूना हलीला स्याह, बलीला प्रत्येक 17.5 ग्राम, तुख़्म-ए-गन्दना 10.5 ग्राम, मुक़िल 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः मुक़िल को आब-ए-गन्दना में मिलाकर घोल लें और शेष को कूट उसी घोल में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम।

अनुपानः आब-ए-आहंगरां के साथ प्रयोग करें।

- **क़ुर्स-ए-सुंबुलुत्तीबः**

यह पेट एवं जिगर की Sclerotitis (ठोस सूजनों) में लाभदायक है।

औषधियाँः सुंबुलुत्तीब, फ़ुक़ाह-ए-इज़्ख़िर, सलीख़ा, गुल-ए-सुर्ख़, रेवन्द चीनी, क़सबुज़्ज़रीरा प्रत्येक 10.5 ग्राम,उशक़ 1.75 ग्राम, अनीसून, क़ुस्त तल्ख़ प्रत्येक 3.5 ग्राम,मुक़िल, मस्तगी प्रत्येक 7 ग्राम, ज़ाफ़रान, उशक़ प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः उशक़ को शराब-ए-मुसल्लस में घोल लें और शेष को कूट कर उसी घोल में मिलाएँ और क़ुर्स तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

अनुपानः शराब-ए-मुसल्लस के साथ प्रयोग करें।

- **क़ुर्स-ए-क़रज़ः**

यह बुख़ारों के समय होने वाले सफ़रावी दस्त में लाभदायक है।

औषधियाँः क़रज़, तरासीस, बज्रुलहुम्माज़ भुना हुआ, हब्बुलआस और बलूत।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर क़ुर्स तैयार करें।

अनुपानः शरबत-ए-सेब या शरबत-ए-मूरद के साथ।

- **क़ुर्स का अन्य नुस्ख़ाः**

यह यक्षमा और रक्तनिष्ठवण में लाभदायक है।

औषधियाँः समग़-ए-अरबी, गिल-ए-अरमनी, हब्बुलआस प्रत्येक 7 ग्राम, ख़रनूब शामी, पर्सियाउशाँ, शाह-ए-बलूत, निशास्ता भूना हुआ प्रत्येक 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः विधि अनुसार क़ुर्स तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

अनुपानः शराब-ए-हब्बुलआस के साथ प्रयोग करें।

- **क़ुर्स का अन्य नुस्ख़ाः**

यह पेट की कमज़ोरी, दमा, उल्टी और मतली में लाभदायक है। पेट के तरल पदार्थों को सोखता और हैज़ा में लाभदायक है।

औषधियाँः गुल-ए-सुर्ख़, मस्तगी रूमी, सुंबुलुत्तीब, पोस्त-ए- बेरून-ए-पिस्ता, ऊद हिन्दी, नअनाअ ख़ुश्क प्रत्येक 10.5 ग्राम, कबाब चीनी, क़ाक़ला प्रत्येक 5.25 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब कूट छान कर क़ुर्स तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

अनुपानः रुब्ब-ए-बिही के साथ प्रयोग करें।

- **क़ुर्स का अन्य नुस्ख़ाः**

इस के भी लाभ वही हैं।

औषधियाँः ऊद हिन्दी, सुंबुलुत्तीब, कुन्दुर, सुक, क़रन्फ़ुल, कबाबा चीनी, क़ाक़ला किबार प्रत्येक 7 ग्राम, तीन-ए-खुरासानी 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर अर्क़-ए-गुलाब के साथ मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

अनुपानः करोया, अनारदाना एवं नअनाअ के मतबूख़ के साथ।

- **क़ुर्स का अन्य नुस्ख़ाः**

यह पेचिश और पेट से किसी भी प्रकार के ख़ून बहने में लाभदायक हैः

औषधियाँः गिल-ए-मख़्तूम, तबाशीर, तरासीस, बलूत, पिस्त-ए-कनार, हब्बुलआस प्रत्येक 7 ग्राम, तुख़्म-ए-हुम्माज़ बर्री, समग़-ए-अरबी, गलनार फ़ारसी प्रत्येक 3.5 ग्राम, माज़ू सब्ज़, ज़ीरा किर्मानी जिसे सिर्का में भिगो कर भूना गया हो प्रत्येक 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान कर शीरा या लुआब-ए-बज़रक़तूना के साथ मिलाएँ और क़ुर्स तैयार करें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

अनुपानः शीरा-ए-खुर्फा के साथ प्रयोग करें।

- **क़ुर्स का अन्य नुस्ख़ाः**

यह ऐसी पेचिश में लाभदायक है जिस के साथ पेट में गुड़गुड़ाहट और गैस तो होती है लेकिन गर्मी नहीं होती है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-शिब्त, बज़रुलबन्ज, राज़ियाना, नानख़्वाह , तुख़्म-ए-करफ़्स प्रत्येक 7 ग्राम, ज़ीरा किर्मानी अधभुना हुआ 10.5 ग्राम, कुन्दुर 14 ग्राम।

निर्माण-विधिः विधि अनुसार क़ुर्स तैयार करें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

- **क़ुर्स-ए-इब्न-ए-मासवयहः**

यह उल्टी एवं हैज़ा में लाभदायक है इस के साथ आमाशयवर्धक भी है।

औषधियाँः सअद कूफ़ी, ऊद हिन्दी, मस्तगी समभाग में।

निर्माण-विधिः सब कूट छान कर क़ुर्स तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

अनुपानः रुब्ब-ए-बिही के साथ प्रयोग करें।

- **क़ुर्स-ए-हिल्तीतः**

यह चौथिया बुख़ार में लाभदायक है। यह गैस बाहर करने वाला भी है। पेट और आँतों की गैस को बाहर करता है।

औषधियाँः मुर साफ़, हिल्तीत, फ़िलफ़िल, सुद्दाब ख़ुश्क।

निर्माण-विधिः विधि अनुसार क़ुर्स तैयार करें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

- **क़ुर्स-ए-सुर्माः**

यह ख़ूनी उल्टी में लाभदायक है।

औषधियाँः सुर्मा अस्फ़हानी, शादनज मग़सूल, दमुलअखवैन प्रत्येक 10.5 ग्राम, गुलनार, माज़ू सब्ज़ प्रत्येक 7 ग्राम, शाख-ए-गौज़न मुहर्रक़, अक़ाक़िया प्रत्येक 35 ग्राम, लाज़न, ज़ाफ़रान प्रत्येक 1.75 ग्राम,पर्सियाउशाँ 5.25 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-लिसानुलहम्ल के साथ मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **क़ुर्स-ए-माज़र्यूनः**

यह उल्टी, मतली, उबकाई, पेट की कमज़ोरी और पेट के मरोड़ में लाभदायक है।

औषधियाँः अनीसून, तुख़्म-ए-करफ़्स, फ़ूदनज बुस्तानी, नअनाअ ख़ुश्क, फ़ुत्रासालियून, नानख़्वाह प्रत्येक 21 ग्राम, अफ़्तीमून, जुन्द बेद स्तर, फ़िलफ़िल सफ़ेद, दार-ए-फ़िलफ़िल, नम्माम, मुर मक्की, अफ़्सन्तीन प्रत्येक 14 ग्राम, सलीख़ा 42 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर शराब-ए-मुसल्लस के साथ मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **क़ुर्स-ए-लौज़ः**

इसे साबित इब्न-ए-क़ुर्रह ने तैयार किया है। यह सू-ए-मिज़ाज बारिद में लाभदायक है।

औषधियाँः अनीसून, राज़ियाना, मग़ज़-ए-बादाम तल्ख़, अफ़्सन्तीन प्रत्येक 14.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर क़ुर्स तैयार करें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

अनुपानः सिकन्जबीन-ए-अस्ली या सिकन्जबीन-ए-उन्सुली।

- **क़ुर्स-ए-बुज़ूरः**

यह गुर्दा एवं मूत्राशय के खुजलाहट भरे दानों एवं फोड़ों में लाभदायक है।

औषधियाँः मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-कद्दू, कतीरा, तुख़्म-ए-ख़त्मी, निशास्ता, मग़ज़-ए-बादाम

शीरीं मुक़श्शर, रुब्बुस्सूस, गिल-ए-अरमनी, तुख़्म-ए-करफ़्स प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट छान कर पानी मिला कर क़ुर्स बनाएँ।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

अनुपानः शराब-ए-बनफ़्शा के साथ प्रयोग करें।

- **क़ुर्स-ए-बुज़ूर का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से भी उपर्युक्त लाभों की प्राप्ति होती है।

औषधियाँः मग़्ज़-ए-तुख़्म-ए-खरपज़ह, मग़्ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यारैन और मग़्ज़-ए-तुख़्म-ए-कदू शीरीं प्रत्येक 17.5 ग्राम, गिल-ए-अरमनी, समग़-ए-अरबी और दमुलअखवैन प्रत्येक 10.5 ग्राम, अफ़ियून 7 ग्राम, तुख़्म-ए-करफ़्स 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः विधि अनुसार क़ुर्स तैयार करें।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम।

अनुपानः शराब-ए-ख़शख़ाश के साथ प्रयोग करें।

- **क़ुर्स-ए-बुज़ूर का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः असारून और फ़ुत्रासालियून प्रत्येक 14 ग्राम, फ़ूह और मूरद प्रत्येक 21 ग्राम, दोक़ू 24.5 ग्राम, तुख़्म-ए-अनीसून और हब्ब-ए-बलसान प्रत्येक 14 ग्राम, तुख़्म-ए-ख़्यारैन 17.5 ग्राम, मग़्ज़-ए-तुख़्म-ए-खरपज़ह 7 ग्राम, कतीरा 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः विधि अनुसार क़ुर्स तैयार कर के सुखा लें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

अनुपानः आब-ए-करफ़्स के साथ प्रयोग करें।

- **क़ुर्स जो रक्तमेह में लाभदायक हैः**

औषधियाँ : मग़्ज़-ए-तुख़्म-ए-खरपज़ह, कतीरा, तुख़्म-ए-करफ़्स, ख़शख़ाश, अन्जबार, गुलनार, दमुलअखवैन, गिल-ए-अरमनी और शिब-ए-यमानी सभी समभाग में।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर लुआब-ए-अस्पग़ोल में क़ुर्स तैयार करें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

- **क़ुर्स-ए-तीन का अन्य नुस्ख़ाः**

यह रक्तमेह, खुजली, फुंसी, फेफड़ा, गुर्दा एवं मूत्राशय की कमज़ोरी में लाभदायक है।

औषधियाँः गिल-ए-अरमनी, गिल-ए-मख़्तूम,हब्बुलआस, गिल-ए-क़ब्रसी, समग़-ए-अरबी भुना हुआ, निशास्ता भुना हुआ, बलूत भुना हुआ प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सबको कूट कर उसारह-ए-लिसानुलहम्ल के साथ मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

अनुपानः शीरा तुख़्म-ए-ख़शख़ाश या तुख़्म-ए-ख़्यारैन।

- **क़ुर्स-ए-समूग़ः**

यह प्रसव के समय होने वाली कठिनाई के लिए लाभदायक है। यह मुर्दा और ज़िन्दा बच्चे को जल्दी ही बाहर निकालता है।

औषधियाँः मुर साफ़, जावशीर, हिल्तीत और सकबीनज सभी एक एक भाग, सुद्दाब ख़ुश्क, मुश्कतरामशीअ, इज़्ख़िर, अबहल और मीअह सभी दो दो भाग।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को लेकर क़ुर्स तैयार करें।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम।

अनुपानः आवश्यकता के समय मतबूख़-ए-हुल्बा के साथ।

- **क़ुर्स-ए-लबूबः**

यह गुर्दा एवं मूत्राशय के फफड़ों को दूषित पदार्थों से पाक करता है।

औषधियाँः मग़ज़-ए-बादाम शीरीं, मग़ज़-ए-फ़ुन्दुक़, मग़ज़-ए-पिस्ता, मग़ज़-ए-दाना-ए-आबी, मुहल्लब, निशास्ता, दोक़ू, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-खरपज़ह, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यारैन, रुब्बुस्सूस, तुख़्म-ए-ख़त्मी, तुख़्म-ए-खुब्बाज़ी, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-कदू, चिलग़ोज़ा, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-हिन्दोवाना, तुख़्म-ए-ख़शख़ाश, गिल-ए-अरमनी, राज़ियाना और तुख़्म-ए-करफ़्स प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर लुआब-ए-तुख़्म-ए-कतान के साथ मिलाएँ और क़ुर्स बना कर सुखा लें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

अनुपानः रोगी के स्वभाव के अनुरूप किसी जुल्लाब में मिला कर प्रतिदिन प्रयोग करें।

- **क़ुर्स-ए-लबूब का अन्य नुस्ख़ाः**

यह मूत्रा में जलन, रक्तमेह, गुर्दा एवं मूत्राशय के फोड़ों, Haemoptysis, ख़ूनी दस्त, खाँसी और बुख़ार में लाभदायक है।

औषधियाँः वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़ और समग़-ए-अरबी प्रत्येक 14 ग्राम, निशास्ता और कतीरा प्रत्येक 7 ग्राम, तुख़्म-ए-ख़शख़ाश सफ़ेद और तुख़्म-ए-ख़शख़ाश स्याह प्रत्येक 10.5 ग्राम, तबाशीर और रुब्बुस्सूस प्रत्येक 7 ग्राम, ज़ाफ़रान 832 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-लिसानुलहम्ल या लुआब-ए-बिहीदाना या लुआब-ए-बज़रक़तूना में मिलाएँ और क़ुर्स तैयार करें। कुछ नुस्खों में हब्बुलआस 10.5 ग्राम की वृद्धि की गई है।

अनुपान एवं प्रयोग-विधिः खाँसी के रोगियों को शराब-ए-ख़शख़ाश और शराब-ए-ज़ूफा के साथ प्रयोग करें। सीना एवं फेफड़ों से दूषित पदार्थों को बाहर निकालने के लिए शराब-ए-ख़शख़ाश के साथ प्रयोग करें।

बुख़ार में शराब-ए-बनफशा के साथ प्रयोग करें।

ख़ूनी दस्तों में शीरा-ए-खुर्फ़ा बूदादा के साथ प्रयोग करें।

रक्तमेह में शरबत-ए-अन्जबार के साथ प्रयोग कराएँ।

- **क़ुर्स-ए-ख़शख़ाशः**

यह फोड़ों, मूत्राशय के खुजलीदार दानों, मूत्र में जलन और रक्तमेह में लाभदायक है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-ख़शख़ाश सफ़ेद एवं स्याह प्रत्येक 18 ग्राम,निशास्ता, समग़-ए-अरबी प्रत्येक 4.5 ग्राम, बज़रुलबन्ज 22.5 ग्राम, रेवन्द चीनी 2.25 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट कर आब-ए-लिसानुलहम्ल में मिलाएँ।

सेवन-मात्रा व अनुपानः 7 ग्राम, सिकन्जबीन-ए-सफ़रजली के साथ प्रयोग करें।

- **क़ुर्स-ए-ख़शख़ाश का अन्य नुस्ख़ाः**

यह फोड़ों, मूत्राशय के खुजलीदार दानों, मूत्र में जलन, रक्तमेह में लाभदायक है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-जिर्जीर बर्री, तुख़्म-ए-करफ़्स बुस्तानी, सलीख़ा, दार-ए-चीनी और सुंबुलुत्तीब सभी एक एक भाग।

निर्माण-विधिः विधि अनुसार क़ुर्स तैयार करें।

सेवन-मात्रा व अनुपानः 7 ग्राम, आब-ए-ख़सक के साथ प्रयोग करें।

- **क़ुर्स-ए-मरज़न्जोशः**

यह Dribbling of Urine में लाभदायक है।

औषधियाँः मरज़न्जोश, सालिब, बज़रुलबन्ज, अनीसून प्रत्येक 3.5 ग्राम, जुन्द बेद स्तर 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर क़ुर्स तैयार करें और छाँव में सुख लें।

सेवन-मात्राः आवश्यकता के समय 4.5 ग्राम प्रयोग करें।

- **क़ुर्स-ए-अफ़ियूनः**

यह सर दर्द और Migraine में लाभदायक है।

औषधियाँः अफ़ियून मिश्री, मुर मक्की, बज़रुलबन्ज, बीख़-ए-लुफ़्फ़ाह, ज़ाफ़रान, लाज़न ज़ाफ़रान प्रत्येक 17.5 ग्राम, कुन्दुर, अन्ज़रूत, आमला, गिल-ए-अरमनी प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर अर्क़-ए-गुलाब में मिलाएँ। ऐसे तिकोने क़ुर्स

तैयार करें जिनको क़ुर्स-ए-मुसल्लस कहा जा सके, और छाँव में सुख लें।

प्रयोग-विधिः आब-ए-काहू, आब-ए-कोकनार या आब-ए-लीमू मिला कर पेशानी एवं कनपटियों पर तिला करें।

- **क़ुर्स-ए-सअफ़हः**

  यह बच्चों के शरीर की रूसी व गंजेपन में लाभदायक है।

  औषधियाँः ज़र्द चौबा और मग़्ज़-ए-बादाम।

  निर्माण-विधिः दोनो को मिला कर क़ुर्स तैयार करें।

  प्रयोग-विधिः आब-ए-कासनी मिलाकर मलें।

- **क़ुर्स-ए-ज़र्नीख़ः**

  यह मुँह और मसूढ़ों के शोथ में लाभदायक है। मुँह की बदबू को दूर करता है।

  औषधियाँः ज़र्नीख़ ज़र्द, ज़र्नीख़ सुर्ख़, आहक सरिशता, माज़ू 35 ग्राम, ज़ंगार, क़लक़तार प्रत्येक 17.5 ग्राम, शिब-ए- यमानी, अक़ाक़िया, गुलनार प्रत्येक 10.5 ग्राम।

  निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सिर्का में सात दिनों तक भिगोएँ फिर क़ुर्स तैयार करें। छाँव में सुखा लें।

  प्रयोग-विधिः आवश्यकता के समय एक क़ुर्स ले कर कूट पीस लें और दाँतों की जड़ों पर मलें या थोड़े से रोग़न-ए-गुल में चर्ब कर के दाँतों की जड़ों में लगाएँ।

- **क़ुर्स-ए-ज़र्नीख़ का अन्य नुस्ख़ाः**

  इस से भी उपर्युक्त लाभों की प्राप्ति होती है।

  औषधियाँः ज़र्नीख़ ज़र्द, नान-ए-मैदा, काग़ज़ सोख़्ता प्रत्येक 52.5 ग्राम, ज़र्नीख़ 80.5 ग्राम, उसारा-ए-लेहयतुत्तीस, मुरदारसंग प्रत्येक 10.5 ग्राम, रुब्ब-ए-ग़ौरह सफ़ेद, आब-ए-अर्ज़ीज़ प्रत्येक 17.5 ग्राम।

  निर्माण-विधिः विधि अनुसार क़ुर्स तैयार करें।

- **क़ुर्स-ए-ज़र्नीख़ का अन्य नुस्ख़ाः**

  इस से भी उपर्युक्त लाभों की प्राप्ति होती है।

  औषधियाँः ज़र्नीख़ ज़र्द, ज़र्नीख़ सुर्ख़, आहक जिसे पानी में बुझाया गया हो, माज़ू, शिब-ए-यमानी, क़िर्तास सोख़्ता 1-1 भाग।

  निर्माण-विधिः विधि अनुसार क़ुर्स तैयार करें।

- **क़ुर्स-ए-आहकः**

  यह नासूर और दाँतों की जड़ की विक्षति में लाभदायक है। साथ ही आँतों के

फोड़ों में भी लाभदायक है।

औषधियाँः पानी में बुझाया आहक, शिब-ए-यमानी, अक़ाक़िया प्रत्येक 7 ग्राम, ज़र्नीख़ सुर्ख़, ज़र्नीख ज़र्द प्रत्येक 3.5 ग्राम, नौशादर 1.75 ग्राम, सिब्र ज़र्द 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सिर्का में मिलाएँ और छाँव में सुखाएँ।

- **क़ुर्स-ए-आहक का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से भी उपर्युक्त लाभों की प्राप्ति होती है।

औषधियांः ज़र्नीख़ ज़र्द, आहक जिसे पानी में बुझाया ना गया हो, माज़ू, शिब-ए-यमानी,अक़ाक़िया प्रत्येक एक एक भाग।

निर्माण-विधिः विधि अुनसार क़ुर्स तैयार करें।

सेवन-मात्राः आवश्यकता के समय आँतों के ज़ख़्मों में 17.5 ग्राम की मात्रा।

- **क़ुर्स-ए-आहक का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से भी उपर्युक्त लाभों की प्राप्ति होती है।

औषधियाँः ज़र्नीख़ सुर्ख़, ज़र्नीख़ ज़र्द,पानी में बुझाया गया आहक, माज़ू, शिब-ए-यमानी, अक़ाक़िया प्रत्येक एक एक भाग।

निर्माण-विधिः सिर्का में भिगोने के बाद कूट छान लें और सूरज की रोशनी में रखें और हर बार सिर्का में भिगोएँ और 40 दिनों के बाद क़ुर्स बना कर सुखा लें।

सेवन-मात्राः सिर्का में भिगो कर गोश्ताखोरा ओर नासूर पर तिला करें।

- **क़ुर्स-ए-आहक का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से भी उपर्युक्त लाभों की प्राप्ति होती है।

औषधियाँः अक़ाक़िया सफ़ेद, आब-ए-अर्ज़ीज़, क़िर्तास सोख़्ता, उसारा-ए-लेहयतुत्तीस प्रत्येक 35 ग्राम, शिब-ए-यमानी, ज़र्नीख ज़र्द प्रत्येक 17.5 ग्राम, नौशादर, माज़ू प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः विधि अुनसार क़ुर्स तैयार करें।

सेवन-मात्राः आँतों के ज़ख़्मों में 17.5 ग्राम की मात्रा में प्रयोग करें।

❑❑❑

## तृतीय खण्ड
# तृतीय अध्याय

# तीक्ष्ण-विरेचक व धारण-शक्ति वाले बुन्दुक़ के नुस्ख़े

- **बनादिक़ुलबुज़ूरः**

यह मूत्र में जलन, मूत्र में कठिनाई और गुर्दा एवं मूत्राशय के फोड़ों में लाभदायक है।

औषधियाँः मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-खरपज़ह, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए- ख़्यारैन, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-कदू और मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-हिन्दुवाना प्रत्येक 17.5 ग्राम, बज़रूलबन्ज, तुख़्म-ए-खुर्फ़ह, तुख़्म-ए-ख़त्मी, मग़ज़-ए-बादाम मुक़श्शर, कतीरा, निशास्ता, रुब्बुस्सूस, ख़शख़ाश सफ़ेद, गिल-ए-अरमनी और तुख़्म-ए-करफ़्स प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर लुआब-ए-बज़रक़तूना में मिलाएँ और 10.5 ग्राम के बनादिक़ तैयार करें।

सेवन-समय व मात्राः प्रत्येक सुबह एक गाली।

अनुपानः शराब-ए-ख़शख़ाश के साथ प्रयोग करें।

- **बनादिक़ुलबुज़ूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह मूत्र में जलन, मूत्र में कठिनाई, गुर्दा एवं मूत्राशय के फोड़ों में लाभदायक है।

औषधियाँः मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-खरपज़ह, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यारैन, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-कदू प्रत्येक 70 ग्राम, कुन्दुर, समग़-ए-अरबी और दमुलअखवैन प्रत्येक 35 ग्राम, अफ़ियून 10.5 ग्राम, तुख़्म-ए-करफ़्स 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः विधि अनुसार 7 ग्राम के बनादिक़ बनाएँ।

सेवन-मात्राः रोगी के स्वभाव अनुसार 3.5 से 7 ग्राम तक।

- **बनादिक़ुलबुज़ूर का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से भी उपर्युक्त लाभों की प्राप्ति होती है।

औषधियाँः मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-खरपज़ह व ख़्यारैन व तुख़्म-ए-ख़शख़ाश सफ़ेद व तुख़्म-ए-कदू, कतीरा, निशास्ता, रुब्बुस्सूस, मग़ज़-ए-बादाम शीरीं, गिल-ए-अरमनी।

निर्माण-विधिः कूट कर शीरा-ए-खुर्फ़ा में मिला कर 10.5 ग्राम के बनादिक़ बनाएँ।

- **बनादिकुलबुज़ूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गर्मी से होने वाली गुर्दे की सूजन, गुर्दा वमूत्राशय के ज़ख़्म, फोड़ों, रक्तमेह, मूत्र में कठिनाई, खाँसी में लाभदायक है।

औषधियाँः मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-खरपज़ह 35 ग्राम, निशास्ता, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-कदू, रुब्बुस्सूस, तुख़्म-ए-ख़त्मी मुक़श्शर, मग़ज़-ए-बादाम, तुख़्म-ए-ख़शख़ाश सफ़ेद, गिल-ए-अरमनी, तुख़्म-ए-करफ़्स, कतीरा, बज़रुलबन्ज सभी 3.5 ग्राम, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यारैन 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर लुआब-ए-बज़रक़तूना के साथ मिलाएँ और 10.5 ग्राम के बनादिक़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः एक गोली अर्थात 10.5 ग्राम।

अनुपानः शराब-ए-बनफ़्शा के साथ प्रयोग करें।

- **बनादिक़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह कामोद्दीपक है। शरीर का मोटापा बढ़ाता है। साथ ही गुर्दा एवं मूत्राशय के फ़ोड़ो में लाभदायक है।

औषधियाँः मग़ज़-ए-हब्बुलक़िलक़िल, चिलग़ोज़ा, फ़ुन्दुक़ मुक़श्शर, मग़ज़-ए-बादाम मुक़श्शर, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-खरपज़ह, प्रत्येक 70 ग्राम, ख़शख़ाश सफ़ेद 35 ग्राम, तुख़्म-ए-करफ़्स 7 ग्राम, तुख़्म-ए-हल्यून, ख़ुस्यतुस्सअलब और हब्ब-ए-काकनज प्रत्येक 10.5 ग्राम, फ़ानीज़ 70 ग्राम।

निर्माण-विधिः विधि अनुसार 17.5 ग्राम के बनादिक़ बनाएँ।

सेवन-समयः प्रत्येक सुबह एक गोली।

अनुपानः गाय के दूध या आब-ए-ख़सक के साथ।

- **बनादिक़ का एक अन्य नुस्ख़ाः**

इस से भी उपर्युक्त लाभों की प्राप्ति होती है।

औषधियाँः कतीरा, निशास्ता, तुख़्म-ए-अन्जोरह प्रत्येक 7 ग्राम, मग़ज़-ए-बादाम, ख़शख़ाश सफ़ेद, मग़ज़-ए-खरपज़ह प्रत्येक 35 ग्राम, हब्ब काकनज 17.5 ग्राम, तुख़्म-ए-करफ़्स 7 ग्राम, मग़ज़ हब्ब-ए-मुहल्लब, हब्बुस्सनोबर प्रत्येक 105 ग्राम, फ़ानीज़ 70 ग्राम।

निर्माण-विधिः विधि अनुसार 140 ग्राम के बनादिक़ बनाएँ।

सेवन-मात्राः 17.5 ग्राम।

अनुपानः दूध के साथ मिलाकर प्रयोग करें।

❑❑❑

## तृतीय खण्ड
# चतुर्थ अध्याय

# सफ़ूफ़ के नुस्ख़े
### यह अध्याय दो वर्गों पर आधारित है

## प्रथम वर्गः तीक्ष्ण एवं मृदु विरेचक सफ़ूफ़ के नुस्ख़े

- **सफ़ूफ़-ए-सूरन्जानः**

  यह गठिया, जोड़ों के दर्द और गृध्रसी में लाभदायक है।

  औषधियाँः सूरन्जान मिश्री 35 ग्राम, सना मक्की 24.5 ग्राम, पोस्त-ए-हलीला ज़र्द, मग़ज़-ए-बादाम मुक़श्शर प्रत्येक 10.5 ग्राम, ज़ाफ़रान, सक़मूनिया प्रत्येक 1.75 ग्राम, क़न्द सफ़ेद सब के बराबर।

  निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

  सेवन-मात्राः 9 ग्राम।

  अनुपानः गर्म पानी के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़-ए-सूरन्जान का अन्य नुस्ख़ाः**

  यह जोड़ों के दर्द में लाभदायक है।

  औषधियाँः सूरन्जान मिश्री 24.5 ग्राम, ज़ीरा किर्मानी मुदब्बर और फ़ूदना प्रत्येक 7 ग्राम, फ़िलफ़िल 3.5 ग्राम, तुर्बुद सफ़ेद 7 ग्राम, सना मक्की 17.5 ग्राम।

  निर्माण-विधिः सभी को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

  सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम।

  अनुपानः गर्म पानी के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़-ए-सूरन्जान का अन्य नुस्ख़ाः**

  यह जोड़ों के दर्द, गठिया, तांत्रिकाओं के लिए लाभदायक है। साथ ही गाढ़े दूषित पदार्थों का विरेचक भी है।

  औषधियाँः सूरन्जान 24.5 ग्राम, सना मक्की 17.5 ग्राम, रोग़न-ए-बादाम में चर्ब

तुर्बुद प्रत्येक 10.5 ग्राम, बोज़ीदान, पोस्त हलीला ज़र्द प्रत्येक 7 ग्राम, मग़ज़-ए-बादाम मुक़श्शर 17.5 ग्राम, पोस्त-ए-बीख़-ए-कबर, बिस्फ़ाइज, उस्तुखुद्दूस, ग़ारीक़ून प्रत्येक 10.5 ग्राम, शहम हन्ज़ल 3.5 ग्राम, सक़मूनिया मुशव्वा 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

अनुपानः गर्म पानी के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़-ए-सूरन्जान का अन्य नुस्ख़ाः**

यह पेट को बलग़म एवं तरल पदार्थों से पाक साफ़ करता है और जोड़ों के दर्द के लिए लाभदायक है।

औषधियाँः नमक 105 ग्राम, फ़िलफ़िल सफ़ेद 70 ग्राम, ज़न्जबील 52.5 ग्राम, अनीसून 24.5 ग्राम, नानख़्वाह, फ़िलफ़िल स्याह, नौशादर, तुख़्म-ए-करफ़्स, तुख़्म-ए-जिर्जीर, फ़ूदनह दशती प्रत्येक 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम।

अनुपानः गर्म पानी के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़-ए-हलीला व तुर्बुदः**

यह पेट साफ़ करता और पुराने बुख़ार में लाभदायक है।

औषधियाँः पोस्त-ए-हलीला ज़र्द, तुर्बुद सफ़ेद तराशीदा, पोस्त-ए-हलीला 1-1 भाग, नमक-ए-हिन्दी, नमक-ए-निफ़्ती और नमक-ए-तबरज़द सभी एक चौथाई भाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 9 ग्राम।

अनुपानः गर्म पानी के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़-ए-हलीलाः**

यह पेट साफ़ करता और चिपचिपे द्रव्य बाहर निकालता है।

औषधियाँः तुर्बुद सफ़ेद तराशीदा 3.5 ग्राम, ज़न्जबील, मस्तगी प्रत्येक 832 मिलीग्राम, मग़ज़-ए-बादाम मुक़श्शर 3 की संख्या में, क़न्द सब औषधियों के समभाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः यह पूर्णतः एक खुराक की मात्रा है।

अनुपानः गर्म पानी के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़-ए-हलीला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह पेट साफ़ करता है।

औषधियाँः पोस्त-ए-हलीला काबुली 7 ग्राम, नमक-ए-हिन्दी और दार-ए-फ़िलफ़िल प्रत्येक 832 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः यह पूर्णतः एक खुराक की मात्रा है।

अनुपानः गर्म पानी के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़-ए-हलीला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह पेट को पाक करता है और बहुत हल्का विरेचक है जिस से कोई नुक़सान नहीं होता है।

औषधियाँः पोस्त-ए-हलीला काबुली, पोस्त-ए-हलीला ज़र्द प्रत्येक 3.5 ग्राम, तुर्बुद सफ़ेद 1.75 ग्राम, दार-ए-फ़िलफ़िल, ज़न्जबील, नमक-ए-हिन्दी प्रत्येक 416 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः यह पूर्णतः एक खुराक की मात्रा है।

अनुपानः गर्म पानी के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़-ए-हलीला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह जिगर की सूजन में लाभदायक है। पेट साफ़ करता है।

औषधियाँः पोस्त हलीला काबुली, हलीला स्याह प्रत्येक 14 ग्राम, तुख़्म-ए-करफ़्स, अनीसून, राज़ियाना प्रत्येक 17.5 ग्राम, रेवन्द चीनी 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम, ऊँटनी के दूध के साथ।

- **सुफ़ूफ़-ए-नानख़्वाहः**

यह पेट को पाक करता है। गाढ़े दूषित द्रव्यों को शरीर से बाहर निकालता है और गैस बाहर करता है।

औषधियाँः नानख़्वाह, तुख़्म-ए-करफ़्स, कुन्दुर प्रत्येक 14 ग्राम, फ़ुक़ाह-ए-इज़्ख़िर, क़ुस्त, मस्तगी रूमी, पोस्त-ए-हलीला काबुली, अफ़्सन्तीन प्रत्येक 10.5 ग्राम, फ़ानीज़ सभी के समभाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 17.5 ग्राम।

अनुपानः गर्म पानी के साथ प्रयोग करें।

- **सफूफ़-ए-तुर्बुदः**

यह शरीर से बलग़म व दूषित द्रव्यों को निकालता है।

औषधियाँः तुर्बुद सफ़ेद 70 ग्राम, ज़न्जबील और मस्तगी प्रत्येक 35 ग्राम, बादियान 10.5 ग्राम, शकर तबरज़द 140 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 14 ग्राम।

अनुपानः गर्म पानी के साथ प्रयोग करें।

- **सफूफ़-ए-तुर्बुद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह हर्षोल्लास उत्पन्न करता और पेट व सीने को दूषित द्रव्यों से पाक करता है।

औषधियाँः तुर्बुद सफ़ेद और ग़ारीक़ून प्रत्येक 1.75 ग्राम, नमक-ए-हिन्दी और रेवन्द चीनी प्रत्येक 832 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः यह पूर्णतः एक खुराक की मात्रा है।

अनुपानः गर्मपानी के साथ प्रयोग करें।

- **सफूफ़-ए-गुल-ए-सुर्ख़ः**

यह जिगर के रोगों, चेहरे की भुरभुराहट और जलोदर रोग के प्रारंभ में लाभदायक है। आमाशयवर्धक एवं हल्का विरेचक है।

औषधियाँः गुल-ए-सुर्ख़ 28 ग्राम, ज़रिशक 17.5 ग्राम, सुंबुलुत्तीब, मस्तगी रूमी, उसारा-ए-ग़ाफ़िस, अफ़्सन्तीन रूमी, रेवन्द चीनी पत्येक 3.5 ग्राम, इज़्ख़र, रुब्बुस्सूस प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

अनुपानः सिकन्जबीन के साथ प्रयोग करें।

- **सफूफ़-ए-मस्तगीः**

यह स्वभाव में हर्षोल्लास उत्पन्न करता है और पेट के दूषित द्रव्यों को बाहर निकालता है। आमाशयवर्धक है।

औषधियाँः मस्तगी रूमी 3.5 ग्राम और क़न्द 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सुफूफ़ तैयार करें।

अनुपानः गर्म पानी के साथ प्रयोग करें।

**● सफ़ूफ़-ए-मस्तगी का अन्य नुस्ख़ाः**

यह जिगर की सूजन एवं गर्मी में लाभदायक है।

औषधियाँः पोस्त-ए-हलीला ज़र्द 35 ग्राम, तुख़्म-ए-कासनी, तुख़्म-ए-कसूस, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यारैन प्रत्येक 7 ग्राम, लुक मग़सूल, रेवन्द चीनी प्रत्येक 3.5 ग्राम, सक़मूनिया 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः यह पूर्णतः एक खुराक की मात्रा है।

अनुपानः माउलजुब्न के साथ प्रयोग करें।

**● सफ़ूफ़-ए-ग़ारीक़ूनः**

यह मिर्गी वाले मरीज़ के लिए लाभदायक है और मिर्गी का कारण बनने वाले पदार्थ को दिमाग़ से बाहर निकालता है।

औषधियाँः ग़ारीक़ून 4.5 ग्राम, ज़रावन्द मुदहरज 125 मिलीग्राम, सीसालियूस 2.25 ग्राम, शकर तबरज़द सब के समभाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः यह पूर्णतः एक खुराक की मात्रा है।

**● सफ़ूफ़-ए-हलीला काबुलीः**

यह पेट के लिए लाभदायक है और उस को गर्म रखता है। साथ ही यह पेट के कीड़ों को भी बाहर निकालता है।

औषधियाँः पोस्त-ए-हलीला काबुली, आमला मुनक़्क़ा, ब्रंग काबुली प्रत्येक 35 ग्राम, रोग़न-ए-बादाम से चर्ब किया हुआतुर्बुद सफ़ेद 10.5 ग्राम, फ़ानीज़ सब के समभाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम, गर्म पानी के साथ प्रयोग करें।

**● सफ़ूफ़-ए-हलीला काबुली का अन्य नुस्ख़ाः**

यह पेट के लंबे कीड़ों को बाहर निकालता है।

औषधियाँः शीह-ए-अरमनी, तुर्मुस, ब्रंग काबुली, क़िन्बील और तुर्बुद सफ़ेद प्रत्येक 3.5 ग्राम, नमक-ए-हिन्दी, अफ़्सन्तीन रूमी और हब्बुन्नील प्रत्येक 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः यह पूर्णतः एक खुराक की मात्रा है।

सेवन-विधि एवं अनुपानः लगातार तीन दिन सुबह में एक प्याला दूध में शकर

डाल कर पिएँ और चौथे दिन इस सफ़ूफ़ को शकर के स्थान पर दूध के साथ मिलाकर एक ही बार में पी जाएँ ताकि इस दवा की महक दिमाग़ तक ना पहुँच पाए।

आहारः चने का पानी शीरा-ए-हब्बुलक़ुर्तुम के साथ प्रयोग करें। यह कीड़ों को बाहर निकालने के संदर्भ में बहुत मुजर्रब है।

- **सफ़ूफ़-ए-हलीला काबुली का अन्य नुस्ख़ाः**

यह पेट व जिगर के लिए लाभदायक है। यह कच्चे पदार्थों को बाहर निकालता है।

औषधियाँः सना मक्की 7 ग्राम, पोस्त-ए-हलीला ज़र्द 3.5 ग्राम, तुर्बुद 1.75 ग्राम, ज़न्जबील, नमक हिन्दी प्रत्येक 416 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः यह पूर्णतः एक ख़ुराक की मात्रा है।

- **सफ़ूफ़-ए-हिन्दः**

यह दमा और पुरानी खाँसी में लाभदायक है।

औषधियाँः शहमुलहन्ज़ल, भंगरा, दार-ए-फ़िलफ़िल, गोगर्द मग़सूल, ज़न्जबील।

निर्माण-विधिः सब को समभाग में कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम।

अनुपानः माउलअस्ल के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़-ए-हिन्द का अन्य नुस्ख़ाः**

यह भारतीय हकीमों द्वारा तैयार किया गया नुस्ख़ा है। यह बारी वाले बुख़ारों एवं पुराने बुख़ारों में लाभदायक है।

औषधियाँः ज़न्जबील और सिब्र ज़र्द प्रत्येक 35 ग्राम, हिना और समग़-ए-अरबी प्रत्येक 17.5 ग्राम, अफ़ियून 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम से 7 ग्राम तक।

अनुपानः गर्म पानी के साथ प्रयोग करें।

आहारः चने का पानी प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़-ए-हिन्द का अन्य नुस्ख़ाः**

यह एक हफ़्ते में एक बार प्रयोग करने से ऐसे चौथिया बुख़ार में लाभदायक है जिसका प्रभाव सुबह में प्रतीत होता हो।

औषधियाँः हलीला काबुली, हलीला स्याह प्रत्येक 24.5 ग्राम, बिस्फ़ाइज, अफ़्तीमून

प्रत्येक 10.5 ग्राम, क़न्द सफ़ेद 28 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम।

अनुपानः गर्म पानी के साथ प्रयोग करें।

- **सफूफ़-ए-हलीला का अन्य नुस्खाः**

यह जिगर के सुद्दे खोलता और उन से होने वाले पीलिया को समाप्त करता है।

औषधियाँः पोस्त-ए-हलीला ज़र्द 35 ग्राम, सिब्र ज़र्द 1.75 ग्राम, तबाशीर सफ़ेद 3.5 ग्राम, सक़मूनिया मुशव्वा 624 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 14 ग्राम।

अनुपानः आब-ए-कासनी एवं सिकन्जबीन के साथ।

- **सफूफ़-ए-हलीला का अन्य नुस्खाः**

यह जिगर व तिल्ली में अनियमितता से होने वाले काले पीलिया को समाप्त करता है।

औषधियाँः पोस्त-ए-हलीला ज़र्द 10.5 ग्राम, अफ़्तीमून 3.5 ग्राम, पोस्त-ए-हलीला काबुली 7 ग्राम, अयारिज फ़ीक़रा 1.75 ग्राम, नमक-ए-हिन्दी 416 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम से 17.5 ग्राम तक।

अनुपानः सिकन्जबीन-ए-बुज़ूरी के साथ प्रयोग करें।

- **सफूफ़-ए-हलीला का अन्य नुस्खाः**

यह सौदावी रोगों में लाभदायक है। हल्का विरेचक व बवासीर में लाभदायक है।

औषधियाँः हलीला स्याह, हलीला काबुली प्रत्येक 35 ग्राम, अफ़्तीमून 10.5 ग्राम, हजर-ए-अरमनी 3.5 ग्राम, बिस्फ़ाइज फ़िस्तक़ी 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

अनुपानः माउलजुब्न के साथ प्रयोग करें।

❑❑❑

## द्वितीय वर्गः शक्तिवर्धक, धारक एवं अन्य सफ़ूफ़ के नुस्ख़े

- **सफ़ूफ़-ए-तबाशीरः**

यह गर्मी के कारण दिल के स्वभाव में आई अनियमितता में लाभदायक है।

औषधियाँः तबाशीर सफ़ेद, वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़ प्रत्येक 10.5 ग्राम, किश्नीज़ ख़ुश्क 35 ग्राम, सन्दल सफ़ेद, मरवारीद नासुफ़्ता कहरुबा प्रत्येक 1.75 ग्राम, काफ़ूर 416 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

अनुपानः शर्बत-ए-सेब के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़-ए-तबाशीर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह पेट गर्म रखता और अंत्राशय के लिए लाभदायक है।

औषधियाँः गुल-ए-सुर्ख़ और तबाशीर सफ़ेद प्रत्येक 35 ग्राम, सुमाक़ 10.5 ग्राम, किशनीज़ ख़ुश्क बूदादा 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम।

अनुपानः आब-ए-अनार तुर्श के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गर्मी से होने वाली दिल की घबराहट में लाभदायक है।

औषधियाँः गिल-ए-अरमनी, किशनीज़ ख़ुश्क प्रत्येक 3.5 ग्राम, तबाशीर, कहरुबा प्रत्येक 1.75 ग्राम, काफ़ूर 416 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

अनुपानः गाय के छाछ के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़-ए-लूलुवीः**

यह जिगर में अनियमितता से होने वाले दस्त में लाभदायक है। पेट, जिगर, दिल को शक्ति प्रदान करता है। प्यास बुझाता है।

औषधियाँः मरवारीद नासुफ़्ता 14 ग्राम, बुसुद सोख़्ता, गुलनार, तबाशीर, ख़रनूब शामी, गिल-ए-अरमनी, गिल-ए-क़ब्रसी, तुख़्म-ए-मूरद, पिस्त-ए-कनार, शिब्त, सलीख़ा, पिस्त-ए-कुन्जद, किश्नीज़ ख़ुश्क, बज़रक़तूना भूना प्रत्येक 10.5 ग्राम,मस्तगी रूमी,

गिल-ए-मख़्तूम प्रत्येक 3.5 ग्राम, अनारदाना 17.5 ग्राम, कहरुबा, अक़ाक़िया मग़सूल प्रत्येक 7 ग्राम, बारतंग 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः बज़रक़तूना और बारतंग के अतिरिक्त सब को कूट छान लें। उन को भी मिला कर के सुफूफ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **सफूफ़-ए-दरूनजः**

यह ठंडक से होने वाली घबराहट में लाभदायक है।

औषधियाँः दरूनज अक़रबी, गावज़बान प्रत्येक 21 ग्राम, ज़रन्बाद 7 ग्राम, गुल-ए-सुर्ख़, फ़न्जमुश्क प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्रा व अनुपानः 4.5 ग्राम, माउलअस्ल के साथ प्रयोग करें।

- **सफूफ़-ए-अरस्तातालीसः**

इस नुस्खे को सिकन्दर के लिए तैयार किया गया था। यह पाचक है। मुँह की दुर्गंध को दूर करके उस को सुगंधित करता है। हृदयवर्धक है। पेट के हानिकारक द्रव्यों को ठीक करता है। त्वचा के पीलेपन को भी दूर करता है।

औषधियाँः क़िफ़्रेह, साज़ज हिन्दी, ऊद ख़ाम, असारून, मस्तगी रूमी, पोस्त-ए-हलीला काबुली, फ़न्जमुश्क, क़रन्फ़ुल, नारमुश्क, दारचीनी, उश्ना, फ़िलफ़िल, दार-ए-फ़िलफ़िल, क़ाक़ला, जौज़बोवा, ज़ीरा किर्मानी, हील, ज़न्जबील और अनारदाना प्रत्येक 7 ग्राम, नबात 21 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम से 10.5 ग्राम तक।

- **सफूफ़-ए-कबिदीः**

यह जिगर की अनियमितता के लिए लाभदायक है।

औषधियाँः वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़, ज़रिशक मुनक़्क़ा और लुक-ए-मग़सूल प्रत्येक 5.25 ग्राम, फ़ूह, जुन्द बेद स्तर, सन्दल सफ़ेद, बिस्बासा और समग़-ए-अरबी प्रत्येक 3.5 ग्राम, रेवन्द चीनी 2.25 ग्राम, तुख़्म-ए-हुम्माज़ 4.5 ग्राम, ज़ाफ़रान 832 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

- **सफूफ़ का अन्य नुस्खाः**

यह जिगर की गर्मी को ठंडा करता है और सफ़रावी दस्तों को रोकता है।

औषधियाँः वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़ 35 ग्राम, तबाशीर 70 ग्राम, सुमाक़, तुख़्म-ए-हुम्माज़, अदस मुक़श्शर, ज़रिशक मुनक़्क़ा, तुख़्म-ए-ख़ुर्फ़ह, काहू और ख़शख़ाश सफ़ेद प्रत्येक 17.5 ग्राम, सन्दल सफ़ेद 8.75 ग्राम, काफ़ूर 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

अनुपानः शराब-ए-ग़ौरह के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़-ए-कहरूबाः**

यह ख़ूनी दस्त और किसी भी प्रकार के रक्तस्राव में लाभदायक है।

औषधियाँः गिल अरमनी, कहरुबा, गुलनार, दमुलअखवैन।

निर्माण-विधिः कूट छान कर 10.5 ग्राम सफ़ूफ़ तैयार करें।

- **सफ़ूफ़-ए-इब्न-ए-इबादः**

ठंडे आमाशय के लिए लाभदायक है और जिगर को शक्ति प्रदान करता है।

औषधियाँः लुक-ए-मग़सूल, हब्बुलआस, बलूत, मस्तगी, माज़ू, ऊद-ए-बलसाँ, पोस्त-ए-अनार प्रत्येक 14 ग्राम, ज़न्जबील, कुन्दुर प्रत्येक 3.5 ग्राम, नबात 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम।

सेवन-अवधिः प्रतिदिन।

- **सफ़ूफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बलग़मी हिचकी में लाभदायक है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-करफ़्स, फ़ुत्रासालियून, सअद प्रत्येक 8.75 ग्राम, दोक़ू, पिस्ता का बाहरी पोस्त, अनीसून, फ़ूदना, असारून, क़ुस्त,ज़ीरा किर्मानी प्रत्येक 10.5 ग्राम, वज 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

अनुपानः शराब-ए-अनार मुनक़्क़ा।

- **सफ़ूफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह पेट की ठंडक, फूलन और गुड़बुड़ाहट को दूर करता है और पाचन क्रिया में सहायक भी हैः

औषधियाँः फ़िलफ़िल, नानख़्वाह, क़ाक़ला समभाग में, क़न्द सभी के समभाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 9 ग्राम।

- **सफ़ूफ़-ए-सुमाक़ः**

प्यास बुझाता है, पेट की अनियमितता के कारण दस्त में लाभदायक है।

औषधियाँः सुमाक 35 ग्राम, हब्बुलआस, अनारदाना मुशव्वा प्रत्येक 17.5 ग्राम, ख़रनूब 52.5 ग्राम, समग़-ए-अरबी, गुलनार प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **सफ़ूफ़-ए-अनारदानाः**

पेट और आँतों की कमज़ोरी में लाभदायक है। प्यास को बुझाता है। उल्टी और पित्ताशय की अनियमितता के कारण होने वाले दस्त में लाभदायक है।

औषधियाँः अनारदाना, ज़ीरा किर्मानी सिर्का में भिगोने के बाद भूना हुआ, कतीरा बूदादा, सुमाक़, ख़रनूब शामी, सिर्का में भिगो कर भूना बलूत, पिस्त-ए-कनार, पिस्त-ए-कुन्जद, हब्बुलआस प्रत्येक 17.5 ग्राम, ऊद, सुक, रामिक प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम।

अनुपानः पानी के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़-ए-अनारदाना का अन्य नुस्ख़ाः**

पेट और आँतों की कमज़ोरी में लाभदायक है। प्यास को बुझाता है। उल्टी और पित्ताशय की अनियमितता के कारण होने वाले दस्त में लाभदायक है।

औषधियाँः अनारदाना भूना हुआ 45 ग्राम, ज़ीरा किर्मानी और बलूत दोनों सिर्का में भिगोने के बाद भूने हुए और किशनीज़ ख़ुश्क बूदादा प्रत्येक 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम।

अनुपानः आब-ए-मूरद के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़-ए-ज़रिश्कः**

पेट की कमज़ोरी एवं ठंडक में लाभदायक है साथ ही उस की अनियमितता के कारण होने वाले दस्त में भी लाभदायक है।

औषधियाँः नानख़्वाह , सुमाक़, ज़न्जबील, अनारदाना तुर्श भूना हुआ, ज़रिशक

भूना हुआ और पिस्त-ए-कनार प्रत्येक 7 ग्राम, क़न्द सफ़ेद 70 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान सुफूफ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम।

- **सफ़ूफ़-ए-शाह बलूतः**

यह क़ब्ज़ पैदा करता और पेट की अनियमितता से होने वाले दस्त में लाभदायक है।

औषधियाँः शाह बलूत मुशव्वा, दाना-ए-मवीज़ 1-1 भाग।

निर्माण-विधिः सब कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

अनुपानः पानी के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़-ए-शाह बलूतः**

यह फौरी तैर पर पेट चलना बन्द कर देता है और दस्त को रोकता है।

औषधियाँः शाह बलूत 10.5 ग्राम, माज़ू, पोस्त-ए-ख़शख़ाश मुशव्वा प्रत्येक 14 ग्राम, कबर, सुमाक़, हब्बुलआस प्रत्येक 21 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम से 7 ग्राम तक।

अनुपानः ठंडे पानी के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़-ए-इस्हाल-ए-मरारीः**

यह ख़ूनी एवं पित्त वाले दस्त में लाभदायक है। तबीयत में नर्मी पैदा करता है।

औषधियाँः गुलनार एवं बलूत जिन को रात भर सिर्का में भिगोने के बाद भूना गया हो, सुमाक़, हब्बुलआस, क़रज़ और तरासीस प्रत्येक 7 ग्राम, माज़ू सब्ज़ जिसे सिर्का में भिगोने के बाद भूना गया हो, पोस्त-ए-अनार, कज़माज़ज और रामिक प्रत्येक 3.5 ग्राम, तुख़्म-ए-हुम्माज़, समग़-ए-अरबी, उसारा-ए-लेहयतुत्तीस, दाना-ए-मवीज़ बूदादा और ख़रनूब शामी प्रत्येक 5.25 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

- **सफ़ूफ़का अन्य नुस्ख़ाः**

यह पेट की अनियमितता के कारण दस्त में लाभदायक है।

औषधियाँः अनार दाना भूना हुआ, ख़रनूब शामी, ख़रनूब नब्ती और बलूत जिन्हें सिर्का में भिगोया गया हो प्रत्येक 17.5 ग्राम, सुमाक़ 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **सफ़ूफ़–ए–ज़रबः**

यह गृहणी में लाभदायक है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-हुम्माज़, ज़रिशक बेदाना, बलूत, तबाशीर, दाना-ए-मवीज़, किशनीज़ ख़ुश्क बूदादा, गुल-ए-सुर्ख़, ख़रनूब शामी प्रत्येक 3.5 ग्राम, सुमाक़ और हब्बुलआस प्रत्येक 7 ग्राम, अनार दाना 14 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम से 7 ग्राम तक।

- **सफ़ूफ़–ए–ख़रनूबः**

यह ख़ूनी दस्त और Gastroptosis में लाभदायक है।

औषधियाँः ख़रनूब नब्ती बेदाना, ज़ीरा किर्मानी, सुमाक़, पिस्त-ए-कनार, हब्बुलआस, मस्तगी रूमी, बलूत, किशनीज़ ख़ुश्क, गुलनार फ़ारसी सभी समभाग में।

निर्माण-विधिः सब को समभाग में लेकर कूट छान लें और सफ़ूफ़ तैयार करें।

- **सुफ़ूफ़–ए–निशास्ताः**

यह दस्त और आँतों में ज़ख़्म के लिए लाभदायक है।

औषधियाँः समग़-ए-अरबी, तुख़्म-ए-मर्व, ज़रिशक बेदाना, निशास्ता सभी मुशव्वा, तुख़्म-ए-रैहान, गिल अरमनी प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम से 17.5 ग्राम तक।

अनुपानः अर्क़-ए-गुलाब के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़–ए–हब्बुलइनबः**

यह दस्त को रोकता और पेट को शक्ति प्रदान करता है।

औषधियाँः अंगूरदाना, समग़ अरबी प्रत्येक 14 ग्राम, सुमाक़, हब्बुलआस, प्रत्येक 7 ग्राम, गुलनार, मस्तगी प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

- **सफ़ूफ़–ए–हब्बुलइनब का अन्य नुस्ख़ाः**

यह खाँसी के साथ होने वाले दस्त में लाभदायक है।

औषधियाँः हब्बुलआस, शाह-ए-बलूत, ख़शख़ाश बूदादा और ख़रनूब प्रत्येक 7 ग्राम, समग़-ए-अरबी 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

- **सफ़ूफ़-ए-समग़-ए-अरबीः**

यह दस्त को रोकता है। बवासीर के ख़ून को रोकता है और खाँसी के साथ होने वाले दस्त में लाभदायक है।

औषधियाँः समग़-ए-अरबी, तबाशीर, गिल-ए-अरमनी, हब्बुलआस प्रत्येक 14 ग्राम, पर्सियाउशान, कुन्दुर प्रत्येक 3.5 ग्राम, ख़रनूब शामी, मुक़िल प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

अनुपानः खाँसी के रोगी को शराब-ए-ख़शख़ाश के साथ और बवासीर के रोगी को शराब अन्जबार के साथ दें।

- **सफ़ूफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह पेट चलने को रोकता है और प्यास के साथ होने वाले दस्त में लाभदायक है।

औषधियाँः किशनीज़ ख़ुश्क जिसे सिर्का में रात भर भिगोने के बाद भूना गया हो और ख़रनूब शामी प्रत्येक 10.5 ग्राम, शाहतूत ख़ुश्क और तुख़्म-ए-ख़ुर्फ़ह बूदादा प्रत्येक 14 ग्राम, तबाशीर 10.5 ग्राम, अनारदाना, ज़रिशक प्रत्येक 24.5 ग्राम, सुमाक़ 7 ग्राम, पिस्त-ए-सेब 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम से 24.5 ग्राम तक।

अनुपानः रुब्ब-ए-बिही या अर्क़-ए-गुलाब के साथ दें।

- **सुफ़ूफ़-ए-जौज़बोवाः**

यह बलग़मी दस्तों में लाभदायक है।

औषधियाँः जौज़बोवा भूना हुआ 10.5 ग्राम, नानख़्वाह और कुन्दुर प्रत्येक 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम।

अनुपानः गर्म पानी के साथ दें।

- **सफ़ूफ़-ए-तीन-ए-अरमनीः**

यह ख़ूनी एवं पित्त वाले दस्तों में लाभदायक है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-रैहान, तुख़्म-ए-बज़रक़तूना, तुख़्म-ए-मर्व, निशास्ता, तुख़्म-ए-हुम्माज़, समग़-ए-अरबी सभी भूने हुए, गिल-ए-अरमनी, तबाशीर सभी समभाग में।

निर्माण-विधिः तुख़्म-ए-बज़रक़तूना, तुख़्म-ए-मर्व, तुख़्म-ए-रैहान के अतिरिक्त सब को कूट छान लें, फिर एक साथ मिलाएँ। रोग़न-ए-गुल-ए-बादाम से चर्ब कर के सफ़ूफ़ बनाएँ।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

अनुपानः अर्क़-ए-गुलाब के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़-ए-ऊदः**

यह पेट के तरल पदार्थ सोखता है। पाचक है। मुँह की दुर्गंध को दूर कर सुगंधित करता, ठंडे पेट के लिए लाभदायक है।

औषधियाँः ऊद हिन्दी 70 ग्राम, क़रन्फ़ुल, कबाबा प्रत्येक 22.5 ग्राम, मस्तगी, सुक्क प्रत्येक 13.5 ग्राम, क़न्द सफ़ेद समभाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

- **सफ़ूफ़-ए-क़ाक़लाः**

ठंडे पेट के लिए लाभदायक है।

औषधियाँः क़ाक़ला 35 ग्राम, क़रन्फ़ुल, कबाबा चीनी प्रत्येक 10.5 ग्राम, ऊद ख़ाम 7 ग्राम, शकर तबरज़द सभी के समभाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

अनुपानः जुलंजबीन के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़-ए-ज़न्जबीलः**

यह पेट के तरल पदार्थों के लिए लाभदायक है। भूख बढ़ाता है। मुँह से राल बहने को रोकता है।

औषधियाँः ज़न्जबील 35 ग्राम, राज़ियाना 17.5 ग्राम, मस्तगी 10.5 ग्राम, नबात सफ़ेद सभी औषधियों के समभाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम।

- **सफ़ूफ़-ए-असपन्दः**

यह पेट और आँतों में जमा होने वाली गैस बाहर निकालता है। पेट के गाढ़े एवं

तरल पदार्थों को भी बाहर निकालता है।

औषधियाँः अनीसून, तुख़्म करफ्स, नानख़्वाह प्रत्येक 17.5 ग्राम, कुन्दुर 14 ग्राम, फ़ुक़ाह इज़्ख़िर, क़ुस्त, मस्तगी रूमी प्रत्येक 10.5 ग्राम, तुख़्म अस्पन्द 105 ग्राम, फ़ानीज़।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

अनुपानः अर्क़-ए-बादियान के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़-ए-ख़शख़ाशः**

यह खाँसी, दमा और Pleurisy में लाभदायक है।

औषधियाँः ख़शख़ाश सफ़ेद एवं स्याह प्रत्येक 17.5 ग्राम, रुब्बुस्सूस, खुब्बाज़ी, समग़-ए-अरबी, मग़ज़-ए-दाना-ए-आबी, शकर तेग़ाल प्रत्येक 7 ग्राम, हुल्बा 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

अनुपानः शराब-ए-बनफ़्शा के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़-ए-सरतानः**

यह यक्ष्मा रोगियों के लिए अत्याधिक लाभदायक है।

औषधियाँः सरतान नहरी मुहर्रक़ 7 ग्राम, तीन-ए-क़ब्रसी, समग़-ए-अरबी, ख़शख़ाश सफ़ेद व स्याह, मग़ज़-ए-खरपज़ह प्रत्येक 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

अनुपानः शराब-ए-ख़शख़ाश के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह टीबी एवं यक्ष्मा, फेफड़ों के फोड़ों और Haemoptysis में लाभदायक है।

औषधियाँः समग़-ए-अरबी, मग़ज़-ए-बिही दाना, ख़शख़ाश सफ़ेद व स्याह, तुख़्म-ए-काहू, तुख़्म-ए-ख़त्मी प्रत्येक 21 ग्राम, सन्दल सफ़ेद, शकर तेग़ाल, तबाशीर प्रत्येक 10.5 ग्राम, वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-कदू, गिल-ए-मख़्तूम, तुख़्म-ए-खुब्बाज़ी, उसारा-ए-लिसानुलहम्ल, गिल-ए-अरमनी, गिल-ए-क़ब्रसी प्रत्येक 14 ग्राम, ज़ाफ़रान 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

अनुपानः शराब-ए-ख़शख़ाश या शीरा-ए-तुख़्म-ए-खुर्फ़ा।

- **सफ़ूफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह जिगर की गर्मी, पीलिया और Haemoptysis में लाभदायक है। जिगर के सुद्दों को खोलता है।

औषधियाँः बिही दाना मुक़श्शर, निशास्ता भूना हुआ और मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यारैन प्रत्येक 14 ग्राम, गिल-ए-अरमनी, लुक-ए-मग़सूल, गुल-ए-सुर्ख़, संबुलुत्तीब और अस्लुस्सूस प्रत्येक 3.5 ग्राम, तबाशीर 1.75 ग्राम, मस्तगी 832 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम।

अनुपानः पानी के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह पीलिया, जिगर के रोगों और सफ़रावी उल्टी में लाभदायक है।

औषधियाँः लुक मग़सूल 4.5 ग्राम, तबाशीर सफ़ेद 7 ग्राम, ज़ाफ़रान 3.5 ग्राम, रेवन्द चीनी 624 और काफ़ूर 416 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

अनुपानः शराब-ए-तमर हिन्दी या शराब-ए-आलू।

- **सफ़ूफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह तिल्ली के लिए लाभकारी है और सुद्दों को खोलता है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-कासनी, कज़माज़ज प्रत्येक 17.5 ग्राम, हब्बुलक़िलक़िल 5.25 ग्राम, सुद्दाब 3.5 ग्राम, तुख़्म-ए-फ़न्जमुश्क 7 ग्राम, अनीसून 10.5 ग्राम, पोस्त-ए-बीख़-ए-कबर 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

अनुपानः सिकन्जबीन के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह जिगर के सुद्दों को खोलता है और तिल्ली के लिए लाभकारी है।

औषधियाँः तबाशीर सफ़ेद, पोस्त-ए-बीख़-ए-कबर, रेवन्दचीनी 7 ग्राम, उसारा-ए-ग़ाफ़िस 3.5 ग्राम, ज़रिशक बेदाना 10.5 ग्राम, बीख़-ए-सोसन आसमान्जोनी 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

अनुपानः सिकन्जबीन-ए-बज़ूरी के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह आमाशयवर्धक है और आमाशय में पाए जाने वाले सफ़रा के प्रभाव को कम करता है।

औषधियाँः वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़ 35 ग्राम, तबाशीर सफ़ेद 17.5 ग्राम, सुमाक़ और पोस्त-ए-हलीला ज़र्द प्रत्येक 10.5 ग्राम, मस्तगी 5.25 ग्राम, क़न्द सफ़ेद सभी औषधियों के समभाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 9 ग्राम।

अनुपानः ठंडे पानी के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बलग़मी उल्टी के लिए लाभदायक है।

औषधियाँः कुन्दुर, मस्तगी प्रत्येक 17.5 ग्राम, ऊद हिन्दी 24.5 ग्राम, हब्बुर्रम्मान, क़रन्फ़ुल 14 ग्राम, पोस्त-ए-तुरन्ज, तुख़्म-ए-मरज़न्जोश प्रत्येक 35 ग्राम, क़ाक़ला, जौज़बोवा, सअद और बिस्बासा प्रत्येक 14 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्रा व अनुपानः 10.5 ग्राम, अर्क़-ए-गुलाब के साथ।

- **सफ़ूफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बलग़मी उल्टी के लिए लाभदायक है।

औषधियाँः कुन्दुर, मस्तगी, सुंबुलुत्तीब और सुक्क प्रत्येक 17.5 ग्राम, क़रन्फ़ुल, क़ाक़ला, जौज़बोवा, नअनाअ प्रत्येक 14 ग्राम, पोस्त-ए-तुरन्ज, फ़न्जमुश्क और गुल-ए-सुर्ख़ प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान लें। उन के वज़न के बराबर क़न्द मिला कर एक साथ मिलाएँ और सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 14 ग्राम।

- **सफ़ूफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह सफ़रावी उल्टी के लिए लाभदायक है।

औषधियाँः गुल-ए-सुर्ख़ और तबाशीर प्रत्येक 7 ग्राम, रेवन्द चीनी, कहरुबा, ऊद हिन्दी और पोस्त-ए-बेरून-ए-पिस्ता प्रत्येक 5.25 ग्राम, सुमाक़, ज़रिशक बेदाना, अनारदाना प्रत्येक 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्रा व अनुपानः 24.5 ग्राम, शराब-ए-सेब या शराब-ए-बिही ।

- **सफ़ूफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह पेट भरे होने की स्थिति में आने वाली हिचकी के लिए लाभदायक है।

औषधियाँः गुल-ए-सुर्ख़ और कहरुबा प्रत्येक 7 ग्राम, ऊद हिन्दी 7 ग्राम, ज़रिशक बेदाना 35 ग्राम, आमला मुनक़्क़ा, सन्दल सफ़ेद, तबाशीर और सुंबुलुत्तीब प्रत्येक 7 ग्राम, ज़ाफ़रान और काफ़ूर प्रत्येक 832 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

अनुपानः शराब-ए-अनार मुनक़्क़ा के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गर्मी के कारण जलोदर में लाभदायक और मुजर्रब है।

औषधियाँः ऊद ख़ाम, क़रन्फ़ुल, आमला, मस्तगी, वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़ प्रत्येक 5.25 ग्राम, रेवन्द चीनी 7 ग्राम, किशनीज़ ख़ुश्क, तबाशीर सफ़ेद प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्रा एवं समयः 7 ग्राम, सोते समय।

अनुपानः अर्क़-ए-बादियान के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गैस बाहर करता और Ascites Succatous में लाभदायक है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-करफ़्स, राज़ियाना, अनीसून, असारून, क़ुस्त, रेवन्द चीनी प्रत्येक 7 ग्राम, ज़ीरा किर्मानी 10.5 ग्राम, सुंबुलुत्तीब, सअद कूफ़ी प्रत्येक 5.25 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान सुफूफ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **सफ़ूफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह ख़ूनी उल्टी में लाभदायक है।

औषधियाँः गिल-ए-अरमनी, समग़-ए-अरबी, गुलनार, दमुलअखवैन, कुन्दुर प्रत्येक 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

अनुपानः पानी के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़-ए-किब्रीतः**

मस्ती को समाप्त करता है। अगर खाने से पहले प्रयोग किया जाए तो आदमी मस्त हो जाता है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-किब्रीत, मग़ज़-ए-बादाम शीरीं बूदादा।

निर्माण-विधिः समभाग में कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम।

अनुपानः 250 मिलीग्राम काफूर को आब-ए-अनार में घोलें और उस के साथ इस सफ़ूफ़ का प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह मस्ती को समाप्त करता और उन्माद को दूर करता है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-कासनी, तुख़्म-ए-किब्रीत, ज़रिशक मुनक़्क़ा, अदस मुक़श्शर, सुमाक़, गुल-ए-सुर्ख़ और तबाशीर।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम।

अनुपानः 250 मिलीग्राम काफ़ूर को आब-ए-अनार में घोलें और उस के साथ इस सफ़ूफ़ का प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़-ए-मुनव्विमः**

इस से अच्छे ख़्वाब आते हैं।

औषधियाँः कुन्दुर, ऊद ख़ाम प्रत्येक 3.5 ग्राम, ख़शख़ाश सफ़ेद बूदादा 35 ग्राम, तुख़्म-ए-काहू 17.5 ग्राम, ज़ाफ़रान 416 मिलीग्राम, नबात 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम।

- **सफ़ूफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह चेहरे का रंग लाल करता है।

औषधियाँः ज़ूफ़ा ख़ुश्क 35 ग्राम, ज़ाफ़रान 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।
सेवन-मात्राः 7 ग्राम।
सेवन-समयः सुबह के समय।

- **सफ़ूफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह शरीर को कमज़ोर करता है।

औषधियाँः लुक मग़सूल 7 ग्राम, नानख़्वाह ,ज़ीरा किर्मानी, सुद्दाब प्रत्येक 14 ग्राम, मरज़न्जोश, बूरा अरमनी प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।
सेवन-मात्राः 3.5 ग्रामप्रतिदिन।
अनुपानः गुलक़न्द के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह शरीर को कमज़ोर करता है।

औषधियाँः मरज़न्जोश 1.75 ग्राम, ज़रावन्द मुदहरज, जुन्तियाना प्रत्येक 416 मिलीग्राम, लुक, सन्दरूस प्रत्येक 14 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।
सेवन-मात्राः 832 मिली ग्राम।

- **सफ़ूफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Urinary Incontinence में लाभदायक हैः
औषधियाँः कुन्दुर, हब्बुलआस, सअद, ख़ूलन्जान, ज़ीरा किर्मानी, शाह-ए-बलूत।
निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।
सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **सफ़ूफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गुर्दा एवं मूत्राशय के फोड़ों में लाभदायक हैः

औषधियाँः गिल-ए-मख़्तूम, दमुलअखवैन, निशास्ता, कुन्दुर, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-कद्दू, रुब्बुस्सूस, रेवन्द चीनी, मग़ज़-ए-हब्बुस्सनोबर, ख़शख़ाश, बज़रुलबन्ज समभाग में।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।
सेवन-मात्राः 7 ग्राम, मैफुख़्तज के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गुर्दा के दर्द में आराम देता है।

औषधियाँः बज़रुलबन्ज 416 मिलीग्राम, खुर्फ़ह मुक़श्शर, मग़्ज़-ए-तुख़्म-ए-कदू, प्रत्येक 3.5 ग्राम,अफ़ियून 250 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

अनुपानः शराब-ए-ख़शख़ाश के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह मूत्रविरेचक, और गुर्दा एवं मूत्राशय के फोड़ों में लाभदायक है।

औषधियाँः मग़्ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यारैन, खुर्फ़ह मुक़श्शर, मग़्ज़-ए-तुख़्म-ए-कदू, ख़शख़ाश सफ़ेद, निशास्ता, कतीरा, रुब्बुस्सूस, बज़रुलबन्ज प्रत्येक 7 ग्राम, क़न्द सफ़ेद समभाग में।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम, शराब-ए-ख़शख़ाश के साथ।

- **सफ़ूफ़-ए-हजरुलयहूदः**

यह गुर्दा एवं मूत्राशय की पथरी को तोड़ता है और उन्हे पाक करता है।

औषधियाँः हजरुलयहूद, क़िल्त प्रत्येक 10.5 ग्राम, मग़्ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यारैन, मग़्ज़-ए- तुख़्म-ए-खरपज़ह और मग़्ज़-ए-तुख़्म-ए-कदू, प्रत्येक 17.5 ग्राम, ख़सक मुदब्बर 14 ग्राम, तुख़्म-ए-सीसालियूस और फ़ुत्रासालियून प्रत्येक 3.5 ग्राम, समग़-ए-अरबी और कतीरा प्रत्येक 4.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

अनुपानः माउलख़सक के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़-ए-हजरुलयहूद का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से भी उन्हीं लाभों की प्राप्ति होती है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-क़िल्त 17.5 ग्राम, हजरुलयहूद 21 ग्राम,मग़्ज़-ए-तुख़्म-ए-खरपज़ह, मग़्ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यारैन और मग़्ज़-ए-तुख़्म-ए-कदू प्रत्येक 10.5 ग्रामक़न्द सफ़ेद सभी औषधियों के समभाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्रा व अनुपानः 7 ग्राम, एक प्याला आब-ए-नख़ूद स्याह।

- **सफ़ूफ़-ए-हजरुलयहूद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बच्चों के गुर्दा एवं मूत्राशय की पथरी के लिए लाभदायक है।

औषधियाँः मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यारैन, तुख़्म-ए-ख़त्मी, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-कदू, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-खरपज़ह और राज़ियाना प्रत्येक 3.5 ग्राम, हब्बुलक़िल्त, समग़-ए-अरबी और समग़-ए-आलू पत्येक 7 ग्राम, हजरुलयहूद 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

अनुपानः मतबूख़-ए-ख़सक के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़-ए-हजरूलयहूद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह मूत्राशय की पथरी के लिए लाभदायक है। यह विशेष रूप से बच्चों के लिए लाभदायक है क्योंकि बच्चों के गुर्दा एवं मूत्राशय शीघ्र ही पथरी एवं रेग से साफ़ हो जाते हैं।

औषधियाँः मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-खरपज़ह, समग़-ए-अरबी, समग़-ए-आलू, क़िल्त।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः बच्चों के लिए 1.75, अन्य के लिए 7 ग्राम।

अनुपानः सिकन्जबीन या माउलख़सक के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह मूत्रविरेचक है। गुर्दा एवं मूत्राशय के फोड़ों व मूत्रदाह के लिए लाभदायक है।

औषधियाँः मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यारैन, निशास्ता, कतीरा, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-कदू, तुख़्म-ए-खुर्फ़ह मुक़श्शर, ख़शख़ाश सफ़ेद, रुब्बुस्सूस प्रत्येक 10.5 ग्राम, बज़रुलबन्ज 7 ग्राम, क़न्द सफ़ेद सभी औषधियों के समभाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्रा व अनुपानः 7 ग्राम, शराब-ए-ख़शख़ाश के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह मधुमेह में लाभदायक है।

औषधियाँः समग़-ए-अरबी, गिल-ए-अरमनी, गुलनार, सुमाक़, बलूत प्रत्येक 17.5 ग्राम, निशास्ता, कतीरा, तुख़्म-ए-काहू, तुख़्म-ए-खुर्फ़ह प्रत्येक 10.5 ग्राम, सन्दल सफ़ेद 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम।

अनुपानः आब-ए-अनार तुर्श के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह मधुमेह, असंयमित मूत्र और बूँद बूँद मूत्र आने में लाभदायक है।

औषधियाँः खुब्सुलहदीद जिसे सिर्का में मुदब्बर करने के बाद नर्मकिया गया हो 70 ग्राम, क़ुशूर-ए-कुन्दुर जिसे रात भर सिर्का में भिगोने के बाद छाँव में सुखाया हो 17.5 ग्राम, तबाशीर सफ़ेद 14 ग्राम, कतीरा ख़ुश्क 10.5 ग्राम, शूकरान 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को खुब्सुलहदीद और क़ुशूर-ए-कुन्दुर के साथ कूट छान लें। दोबारा अच्छी तरह मिलाकर सफ़ूफ़ बनाएँ।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

अनुपानः सादा ठंडे पानी के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह अज्ञात अवस्था में शुक्रपात को रोकता और शीघ्रपतन में लाभदायक है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-सुद्दाब, पन्जन्कशत, बीख़-ए-सोसन प्रत्येक 7 ग्राम, गुलनार, वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़ प्रत्येक 5.25 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

अनुपानः ठंडी छाछ के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से भी वही लाभ प्राप्त होते हैं।

औषधियाँः बीख़-ए-नै सूखा किया हुआ, पोदीना कोही और मरज़न्जोश प्रत्येक 7 ग्राम, तुख़्म-ए-सुद्दाब और पन्जन्कशत प्रत्येक 3.5 ग्राम, फ़र्फ़ियून 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

अनुपानः उचित जुल्लाब या ठंडा आब-ए-बिही।

- **सफ़ूफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गर्मी से होने वाले स्वप्नमेह, शुक्रपात और शीघ्रपतन में लाभदायक है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-काहू, तुख़्म-ए-सुद्दाब, किशनीज़ ख़ुश्क, गुलनार, नीलोफ़र, गुल-ए-सुर्ख़, शहदानज प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

अनुपानः आब-ए-अनार तुर्श के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Pro-conceptive है।

औषधियाँः निशारा-ए-आज और नबात प्रत्येक 4.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-समयः माहवारी के बाद।

सेवन-अवधिः लगातार तीन रात प्रयोग करें और उस के बाद मर्द के साथ सोएँ।

अनुपानः आब-ए-अनार तुर्श के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Pro-conceptive है। पेट और जिगर को सशक्त बनाता है।

औषधियाँः मरवारीद नासुफ़्ता और आक़रक़रहा प्रत्येक 3.5 ग्राम, ज़न्जबील और इल्क रूमी प्रत्येक 14 ग्राम, ज़रंबाद, दरूनज, तुख़्म-ए-करफ़्स, वज, हीलबोवा, जौज़बोवा, फ़िलफ़िल और दारचीनी प्रत्येक 9 ग्राम, लोवारूस और राज़ियाना प्रत्येक 4.5 ग्राम, क़न्द सफ़ेद सभी औषधियों के समभाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

अनुपानः अर्क़-ए-गुलाब के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गर्भवती महिलाओं की मिट्टी आदि खाने की इच्छा को दूर करता है।

औषधियाँः अनीसून, तुख़्म-ए-करफ़्स, ज़ीरा किर्मानी और नानख़्वाह प्रत्येक 35 ग्राम, फ़िलफ़िल सफ़ेद 22.75 ग्राम, क़रन्फ़ुल 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 4.5 ग्राम।

सेवन-समयः सुबह शाम।

- **सफ़ूफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह पेट की मरोड़, दर्द और फूलन में लाभदायक है। पेट के तरल पदार्थों को सोखता है और पाचक है।

औषधियाँः राज़ियाना, अनीसून प्रत्येक 10.5 ग्राम, नानख़्वाह, करोया प्रत्येक 3.5 ग्राम, क़न्द सफ़ेद सभी औषधियों के समभाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 3.5 ग्राम।

- **सफ़ूफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह पेट व आँतों के भीतरी भाग में ज़ख़्म, मरोड़ और बवासीर में लाभदायेक है।

औषधियाँः सपिन्दान सफ़ेद मुशव्वा 105 ग्राम, ज़ीरा मुदब्बर, तुख़्म-ए-कतान मुशव्वा, तुख़्म-ए-गन्दना प्रत्येक 35 ग्राम, मस्तगी 10.5 ग्राम, हलीला काबुली रोग़ने-ए-गाव में मुशव्व 24.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम।

- **सफ़ूफ़-ए-मुक़्लियासाः**

यह पेचिश और बवासीर में लाभदायक है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-तेरह तेज़क 90 ग्राम, बज़रुलकतान, तुख़्म-ए-गन्दना, हलीला स्याह रोग़न-ए-ज़ैतून में भूना हुआ प्रत्येक 7 ग्राम, ज़ीरा किर्मानी मुदब्बर भूना हुआ 22.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः तुख़्म-ए-तेरह तज़क के अतिरिक्त सब को कूट छान लें। फिर सब को मिला कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

अनुपानः ठंडे पानी के साथ प्रयोग करें।

- **सुफ़ूफ़-ए-मुक़्लियासा का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः बज़रुलकतान भूना हुआ 10.5 ग्राम, हब्बुर्रशाद मुशव्वा 10.5 ग्राम, बज़रक़तूना बूदादा 10.5 ग्राम, तुख़्म-ए-करफ़्स 7 ग्राम, गिल अरमनी 10.5 ग्राम, समगअरबी बूदादा 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम।

अनुपानः पानी के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़-ए-मुक़्लियासा कर अन्य नुस्ख़ाः**

यह पेट एवं आँतों की भीतरी भाग में ज़ख़्म, पेचिश और बवासीर में लाभदायक है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-तेरह तेज़क मुशव्वा 17.5 ग्राम, हलीला काबुली,बलीला, आमला प्रत्येक 33.75 ग्राम को उसारा-ए-बिही में रात भर भिगोने के बाद सुखा लें और रोग़न-ए-गाव में भून लें, तुख़्म-ए-कतान मुशव्वा, मस्तगी प्रत्येक 17.5 ग्राम, गिल-ए-अरमनी 24.5 ग्राम, समग़-ए-अरबी 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः तुख़्म-ए-तेरह तज़क के अतिरिक्त सब को कूट छान लें और एक साथ मिला कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम।

अनुपानः रुब्ब-ए-बिही के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़-ए-मुक़िलयासा का अन्य नुस्ख़ाः**

यह पेट एवं आँतों की भीतरी भाग में ज़ख़्म, पेचिश और बवासीर में बहुत ही लाभदायक है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-मर्व, तुख़्म-ए-ख़ुर्फ़ह, तुख़्म-ए-रैहान, तुख़्म-ए-बारतंग, तुख़्म-ए-हुम्माज़, तुख़्म-ए-ख़त्मी, बज़रक़तूना प्रत्येक 35 ग्राम सभी मुशव्व, तबाशीर, तीन-ए-क़ैमूलिया, निशास्ता मुशव्वा, समग़-ए-अरबी मुशव्वा प्रत्येक 17.5 ग्राम, गिल-ए-अरमनी 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः बज़र्क़तूना के अतिरिक्त सब को कूट छान लें फिर एक साथ मिला कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम।

अनुपानः शराब-ए-मूरद के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़-ए-मुक़िलयासा का अन्य नुस्ख़ाः**

इस का उल्लेख "अस्बाब व अलामात" पुस्तक के लेखक ने अपनी क़राबादीन में किया है। यह पेट एवं आँतों की भीतरी भाग में ज़ख़्म, पेचिश और बवासीर में बहुत ही लाभदायक है।

औषधियाँः बज़रक़तूना 70 ग्राम, तुख़्म-ए-रैहान, तुख़्म-ए-मर्व, तुख़्म-ए-बारतंग और तुख़्म-ए-ख़शख़ाश प्रत्येक 35 ग्राम, तुख़्म-ए-हुम्माज़, तुख़्म-ए-ख़ुर्फ़ह मुक़श्शर और निशास्ता सभी बूदादा प्रत्येक 24.5 ग्राम, गिल-ए-अरमनी 52.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः चारों तुख़्मों के अतिरिक्त औषधियों को कूट छान लें और फिर सब को एक साथ मिला कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम।

अनुपानः ठंडे पानी के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़-ए-यहूदीः**

इस से वही लाभ प्राप्त होते हैं। यह विशेषतः पेचिश के लिए बहुत लाभदायक है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-तेरह तेज़क भूना हुआ और अबहल भूना हुआ प्रत्येक 7 ग्राम, ज़ीरा किर्मानी, तुख़्म-ए-सब, ख़शख़ाश और बज़रुलबन्ज प्रत्येक 7 ग्राम, अफ़ियून 416 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः तुख़्म-ए-तेरह तज़क व तुख़्म-ए-बज़र्क़तूना के अतिरिक्त सभी औषधियों को कूट छान लें और फिर सब को एक साथ मिला कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

- **सफ़ूफ़-ए-इब्न-ए-मासवोयहः**

यह पेचिश, मरोड़ और पेट एवं आँतों की भीतरी भाग में ज़ख़्म को ठीक करता है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-ख़त्मी मुक़श्शर और तुख़्म-ए-ख़्यारैन प्रत्येक 7 ग्राम, निशास्ता भूना हुआ 10.5 ग्राम, समग़-ए-अरबी और गिल-ए-अरमनी प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम।

सेवन-समयः सुबह शाम।

अनुपानः ऐसे पानी के साथ प्रयोग करें जिस में तबाशीर, गिल-ए-अरमनी और समग़-ए-अरबी मिलाया गया हो।

- **सफ़ूफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह जिगर की गर्मी को शाँत करता, सुद्दे खोलता और मूत्रविरेचक है।

औषधियाँः मग़्ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़रपज़ह और मग़्ज़-ए-तुख़्म-ए-ख़्यारैन प्रत्येक 17.5 ग्राम, तुख़्म-ए-कासनी, तुख़्म-ए-कसूस और तबाशीर प्रत्येक 10.5 ग्राम, तुख़्म-ए-करफ़्स, अनीसून और बादियान प्रत्येक 7 ग्राम, ज़रिशक बेदाना 14 ग्राम, रेवन्दचीनी 4.5 ग्राम,रुब्बुस्सूस 7 ग्राम, काफ़ूर 832 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्रा व अनुपानः 7 ग्राम, आब-ए-कासनी के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह जिगर में सूजन एवं सख़्ती के लिए लाभदायक है।

औषधियाँः पास्त-ए-हलीला काबुली और हलीला स्याह 7 ग्राम, तुख़्म-ए-करफ़्स, अनीसून,बादियान, क़ुस्त, मस्तगी और गुल-ए-सुर्ख़ प्रत्येक 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्रा व अनुपानः 7 ग्राम, ऊँटनी के दूध के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गर्मी से होने वाली दिल की कमज़ोरी एवं घबराहट के लिए लाभदायक है।

औषधियाँः कहरुबा, बुसुद और मरवारीद प्रत्येक 10.5 ग्राम, तबाशीर और सन्दल सफ़ेद प्रत्येक 3.5 ग्राम, किशनीज़ ख़ुश्क और गिल-ए-अरमनी प्रत्येक 1.75 ग्राम, गावज़बान 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्रा व अनुपानः 7 ग्राम, शराब-ए-सेब शीरीं के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

दिल, दिमाग़, पेट, जिगर की कमज़ोरी में लाभदायक है।

औषधियाँः वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़, तबाशीर, उस्तोखुद्दूस, पोस्त-ए-हलीला काबुली, फ़न्जमुश्क प्रत्येक 10.5 ग्राम, मरवारीद, याक़ूत, सन्दल सफ़ेद, बहमन, सुंबुलुत्तीब, ऊद हिन्दी, मस्तगी, रेवन्द चीनी प्रत्येक 7 ग्राम, क़ाक़ला सिग़ार, दरूनज, ज़ाफ़रान प्रत्येक 3.5 ग्राम, काफ़ूर 1.75 ग्राम, मुश्क 832 मिलीग्राम, क़न्द सफ़ेद सभी औषधियों के आधा भाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

अनुपानः अर्क़-ए-गुलाब के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह पक्षघात के रोगियों के लिए लाभदायक है।

औषधियाँः जुन्द बेद स्तर, क़न्तूरियून बारीक, आक़रक़रहा प्रत्येक 1.75 ग्राम, क़िर्दमाना 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम।

अनुपानः आब-ए-सुद्दाब के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गुर्दा एवं मूत्राशय में जमा मवाद अथवा मैल को पाक साफ़ करता है।

औषधियाँः फ़ुत्रासालियून 10.5 ग्राम, रासन 5.25, हल्यून और अनीसून प्रत्येक 7 ग्राम, मग़ज़-ए-हब्बुज़्ज़लम 5.25 ग्राम, तुख़्म-ए-करफ़्स और बादियान प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम, सुबह शाम।

अनुपानः शराब-ए-अन्जीर के साथ प्रयोग करें।

- **सफ़ूफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह आमाशयवर्धक है। धारण शक्ति की कमज़ोरी के कारण होने वाले दस्त में लाभदायक है। ख़ूनी उल्टी में लाभदायक है। गुर्दा एवं मूत्राशय के ज़ख़्म और फोड़ों

को ठीक करता है। मूत्र की जलन में आराम देता है और बवासीर में लाभदायक है।

औषधियाँः वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़, पिस्त-ए-उस्र, अदस मुक़श्शर, हब्ब-ए-काकनज, पिस्त-ए-कनार, पिस्त-ए-सेब, पिस्त-ए-बिही, बूज़ीदान, तूदरीयैन, तुख़्म-ए-ख़शख़ाश सफ़ेद,तुख़्म-ए-ख़शख़ाश स्याह, बज़रुलबन्ज, पोस्त बीख़-ए-तुफ्फ़ाह प्रत्येक 5.25 ग्राम, बुसुद, कहरुबा, रेवन्द चीनी, गिल-ए-अरमनी, गिल-ए-क़ब्रसी, क़ैमूलिया, हब्बुलक़िल्त, तुख़्म-ए-ख़ुर्फ़ह मुक़श्शर, चिलग़ोज़ा, तुख़्म-ए-पन्जन्कशत प्रत्येक 7 ग्राम, दाना-ए-मवीज़ और ख़रनूब शामी प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम।

अनुपानः किसी उचित शर्बत के साथ प्रयोग करें।

❑❑❑

तृतीय खण्ड

# पन्चम अध्याय

## सनून के नुस्खे

### जो कि दाँतों और मसूढ़ों की स्वास्थ्य के रक्षक हैं

- **सनून का नुस्ख़ाः**

यह दाँतों को स्थिरता प्रदान करता है।

औषधियाँः शाख़-ए-गौज़न मुहर्रक़, कज़माज़ज, सअद कूफ़ी और सुंबुलुत्तीब प्रत्येक 14 ग्राम, नमक-ए-इन्द्रानी 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सनून तैयार करें।

- **सनून-ए-सूरन्जानः**

यह दाँतों की कमज़ोरी में लाभदायक है।

औषधियाँः सूरन्जान मिश्री, क़रन्फुल, सअद कूफ़ी, कज़माज़ज, पोस्त-ए-हलीला ज़र्द, सन्दल सफ़ेद, गुल-ए-सुर्ख़।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सनून तैयार करें।

- **सनून का अन्य नुस्ख़ाः**

यह दाँतों में चमकदार व मज़बूत करता है। दाढ़ों के गोश्त बढ़ाता है।

औषधियाँः हलीला ज़र्द और नमक-ए-हिन्दी भुना हुआ प्रत्येक 17.5 ग्राम, क़िर्फ़ह 52.5 ग्राम, दारचीनी और सअद प्रत्येक 7 ग्राम, आक़रक़रहा 24.5 ग्राम, नौशादर, दार-ए-फ़िलफ़िल, आमला और ज़ाफ़रान प्रत्येक 3.5 ग्राम, कज़माज़ज, क़ाक़ला और गुलनार फ़ारसी प्रत्येक 14 ग्राम, ज़रंबाद 21 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सनून तैयार करें।

- **सनून का अन्य नुस्ख़ाः**

यह दाँतों से मैल हटाता है और साफ़ करता है।

औषधियाँः नमक-ए-इन्द्रानी मुहर्रक़, ज़ुबदुलबहर, सुमाक़, मरजान सफ़ेद,

शक़ाक़ुल चीनी, माज़ू मुहर्रक़, कज़मामाज़ज, काक़ला, दार फ़िलफ़िल, ऊद मुहर्रक़, गुलनार फ़ारसी, क़रन्फ़ुल और आक़रक़रहा सभी समभाग में।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सनून तैयार करें।

प्रयोग-विधिः उंगलियों से दाँतों पर मलें और मन्जन करें।

- **सनून का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से भी उपरोक्त लाभों की ही प्राप्ति होती है।

औषधियाँः ज़ुबदुलबहर, नमक मुशव्वा, ऊद मुहर्रक़, सअद, शक़ाक़ुल चीनी, साज़ज हिन्दी, आक़रक़रहा, क़रन्फ़ुल, सुमाक़, गुल-ए-सुर्ख़, ज़रावन्द तवील, हब्बुलआस प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सनून तैयार करें।

प्रयोग-विधिः मिसवाक या उंगलियों से दाँतों पर मलें।

- **सनून का अन्य नुस्ख़ाः**

यह दाँतों में चमक पैदा करता है। मसूढ़ों को मज़बूत करता है और मुँह की दुर्गंध को दूर करके उस सुगंधित करता है।

औषधियाँः शिब-ए-यमानी, शीह सोख़्ता और चौब नाज़ुक सोख़्ता प्रत्येक 35 ग्राम, आक़रक़रहा 14 ग्राम, गुल-ए-सुर्ख़, क़रन्फ़ुल और सअद प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सनून तैयार करें।

- **सनून का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से दाँत साफ़ व चमकदार होते हैं।

औषधियाँः ऊद सोख़्ता, नमक-ए-हिन्दी मुशव्वा, फ़ोफ़ल, सअद, पोस्त-ए-हलीला सोख़्ता, शक़ाक़ुल चीनी एक एक भाग।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को इतना कूटें कि नियमित सिनून से थोड़ा खुरदुरा सनून तैयार हो।

प्रयोग-विधिः उंगलियों से दाँतों पर मलें व मिसवाक करें।

- **सनून का अन्य नुस्ख़ाः**

यह दाँतों की जड़ों से ख़ून आने को रोकता है। मुँह की दुर्गंध दूर कर सुगंधित करता है और मसूढ़ों को मज़बूत करता है।

औषधियाँः शिब-ए-यमानी, पोदीनी कोही, गिल-ए-गर्द, आमला मुनक़्क़ा प्रत्येक 10.5 ग्राम, उसारा-ए-लेहयतुत्तीस, अबहल, गिल-ए-मख़्तूम प्रत्येक 3.5 ग्राम, दारचीनी

1.75 ग्राम, गुलनार, गुल-ए-सुर्ख़, सअद कूफ़ी, सुमाक़ और मरजान प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सनून तैयार करें।

- **सनून का अन्य नुस्ख़ाः**

यह दाँतों के दर्द को दूर करता है।

औषधियाँः आक़रक़रहा, बज़रूलबन्ज और मवीज़ज प्रत्येक 1.75 ग्राम, ज़ाफ़रान, तुख़्म-ए-मर्व और किशनीज़ ख़ुश्क प्रत्येक 3.5 ग्राम, काते हिन्दी 500 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सनून तैयार करें।

- **सनून का अन्य नुस्ख़ाः**

यह मुँह की दुर्गंध को दूर करके उस को सुगंधित करता है और दाँतों को मज़बूती प्रदान करता है।

औषधियाँः सन्दलैन, गुलनार, गुल-ए-सुर्ख़ सअद, कज़माज़ज, रामिक, मस्तगी, फ़ोफ़ल, ऊद, मुश्क, क़रन्फ़ुल, हलीला ज़र्द प्रत्येक 17.5 ग्राम, मुश्क और काफ़ूर प्रत्येक 500 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सनून तैयार करें।

- **सनून का अन्य नुस्ख़ाः**

यह मुँह के छालों में लाभदायक है। मुँह की दुर्गंध दूर कर सुगंधित करता, दाँतों की जड़ों को मज़बूती प्रदान करता है।

औषधियाँः शयाफ़-ए-मामीसा, तुख़्म-ए-गुल अनार, गुलनार, लिसानुलहम्ल, तबाशीर, पोस्त-ए-हलीला ज़र्द, बर्ग-ए-अनीसून, कज़माज़ज और शिब-ए-यमानी।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सनून तैयार करें।

- **सनून का अन्य नुस्ख़ाः**

यह दाँतों की जड़ों के गोश्त खोरा और नासूर में लाभदायक है । साथ ही यह मसूढ़ों से ख़ून आने को रोता है।

औषधियाँः मुर्र, नौशादर, बीख़-ए-सोसन और आक़रक़रहा।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सनून तैयार करें।

- **सनून का अन्य नुस्ख़ाः**

यह दाँतों को मज़बूती प्रदान करता है। दाँतों की जड़ों में गोश्त उगाता है। मुँह की दुर्गंध दूर कर सुगंधित करता है।

औषधियाँः तूतिया-ए-हिन्दी 7 ग्राम, कात-ए-हिन्दी 14 ग्राम, फ़िलफ़िल, दार-ए-

फ़िलफ़िल, ज़न्जबील, नमक-ए-हिन्दी प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सनून तैयार करें।

प्रयोग-विधिः उँगली से दाँतों की जड़ों पर मलें।

- **सनून का अन्य नुस्खा:**

यह मुँह के गोश्त खोरा में लाभदायक है।

औषधियाँ: पोस्त-ए-अनारैन, माज़ू, गुलनार, काग़ज़ गिरफ्ता शिब-ए-यमानी, आक़रक़रहा प्रत्येक 35 ग्राम, सुमाक़ 52.5 ग्राम, नमक-ए-हिन्दी, नौशादर प्रत्येक 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सनून तैयार करें।

- **सनून का अन्य नुस्खा:**

यह मुँह के गोश्त खोरा में लाभदायक है।

औषधियाँ: ज़रावन्द मुदहरज, बर्ग-ए-मूरद, कुन्दुर, गुलनार, सअद, बीख़-ए-सोसन, दमुलअखवैन, माज़ू, तुख़्म-ए-खुर्फ़ह और तुख़्म-ए-मर्व।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सनून तैयार करें।

सेवन-विधिः दाँतों पर मलें।

- **सनून का अन्य नुस्खा:**

यह दाँतों की जड़ों और मुँह से आने वाली बदबू को दूर करता है। मसूढ़ों को गोश्त से भरता है और दाँतों को मज़बूती प्रदान करता है।

औषधियाँ: हलीला ज़र्द, कज़माज़ज और पोस्त-ए-अनार शीरीं प्रत्येक 17.5 ग्राम, नमक, सअद और उश्नान नब्ती प्रत्येक 10.5 ग्राम, ऊद हिन्दी सोख़्ता, क़िर्फ़ह, गुल-ए-सुर्ख़ और सक़र सोख़्ता प्रत्येक 7 ग्राम, रामिक 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट छान कर सनून तैयार करें और दाँतों की जड़ों में लगाएँ।

- **सनून का अन्य नुस्खा:**

यह मसूढ़ों के ढीलेपन को दूर करने के लिए मुजर्रब है।

औषधियाँ: गुलनार, शिब-ए-यमानी प्रत्येक 7 ग्राम, ऊद हिन्दी सोख़्ता 3.5 ग्राम, तुख़्म-ए-गुल-ए-सुर्ख़ 7 ग्राम, कज़माज़ज 10.5 ग्राम, तबाशीर सफ़ेद, गर्द-ए-सुमाक़, सअद कूफ़ी, हलीला सोख़्ता, नमक, लअल सरिश्ता और सोख़्ता प्रत्येक 7 ग्राम, क़रन्फ़ुल, तुख़्म-ए-खुर्फ़ह प्रत्येक 10.5 ग्राम, शक़ाक़ुल चीनी और कफ़-ए-दरिया प्रत्येक 3.5 ग्राम, गुल-ए-सुर्ख़ 14 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सनून तैयार करें।

- **सनून का अन्य नुस्ख़ा:**

यह दाँतों को मज़बूती प्रदान करता है और जड़ों से ख़ून आने को रोकता है।

औषधियाँ: पोस्त अनार तुर्श, उस्तुख़्वान हलीला ज़र्द, सुक्क, गुल-ए-सुर्ख़, गुलनार, कज़माज़ज, शिब-ए-यमानी, सुमाक़।

निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर सनून तैयार करें।

प्रयोग-विधि: दाँतों की जड़ों पर छिड़कें।

- **सनून का अन्य नुस्ख़ा:**

यह दाँतों को साफ़ करता है। उन में चमक पैदा करता है। साथ ही दाँतों की जड़ों में मज़बूती प्रदान करता है और मुँह की दुर्गंध दूर कर उसे सुगंधित करता है।

औषधियाँ: सअद हिन्दी 17.5 ग्राम, सुंबुल, कफ़-ए-दरिया, कफ़-ए-आबगीना साईदा, अशखार और नमक-ए-हिन्दी प्रत्येक 7 ग्राम,बलीला, ज़रावन्द मुदहरज और क़ुस्त प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर सनून तैयार करें।

प्रयोग-विधि: उँगली और मिसवाक से दाँतों पर मलें।

- **सनून का अन्य नुस्ख़ा:**

यह मुँह की दुर्गंध को दूर करके उस को सुगंधित करता है। दाँतों को मज़बूती प्रदान करता है। उन में चमक पैदा करता है। दाँतों की जड़ों में गोश्त भरता है।

औषधियाँ: शक़ाक़ुल चीनी, कफ़-ए-दरिया, अशखार और नमक-ए-इन्द्रानी प्रत्येक 10.5 ग्राम, जौ सोख़्ता, ऊद सोख़्ता, सुंबुल, कज़माज़ज, हब्बुलआस और शिब-ए-यमानी सोख़्ता प्रत्येक 7 ग्राम, क़रन्फ़ुल और कबाब चीनी प्रत्येक 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर सनून तैयार करें।

- **सनून का अन्य नुस्ख़ा:**

यह दाँतों की जड़ों में गोश्त भरता है और दाँतों को मज़बूती प्रदान करता है।

औषधियाँ: सुमाक़, पोस्त-ए-अनार तुर्श, हलीला ज़र्द, गुल-ए-सुर्ख़, सुक्क, गुलनार, माज़ू, कज़माज़ज, शिब-ए-यमानी और तुख़्म-ए-गुल सभी एक एक भाग।

निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर सनून तैयार करें।

प्रयोग-विधि: दाँतों की जड़ों पर छिड़कें।

- **सनून का अन्य नुस्ख़ा:**

यह दाँतों के दर्द में आराम देता है। साथ ही उनकी जड़ों में पाई जाने वाली

गाढ़ी हवा को भी समाप्त करता है। दाँतों को सड़ने से बचाता है।

औषधियाँः मवीज़ज, फ़िलफ़िल और आक़रक़रहा प्रत्येक 7 ग्राम, बूरह अरमनी 10.5 ग्राम, ज़रावन्द तवील 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सनून तैयार करें।

प्रयोग-विधिः नियमानुसार प्रयोग में लाएँ।

- ***सनून का अन्य नुस्ख़ाः***

यह दाँतों के दर्द में आराम देता है। कीड़ों को मारता है। साथ ही दाँतों को सड़ने से बचाता है।

औषधियाँः आक़रक़रहा, मवीज़ज, क़िन्बील, ज़रावन्द तवील प्रत्येक 3.5 ग्राम, ज़ाफ़रान 7 ग्राम, अफ़ियून 1 ग्राम, बूरह अरमनी 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सनून तैयार करें।

प्रयोग-विधिः नियमानुसार प्रयोग में लाएँ।

- ***सनून का अन्य नुस्ख़ाः***

यह दाँतों में चमक पैदा करता है और उन को मज़बूती प्रदान करता है। मुँह की दुर्गंध को दूर करके उस को सुगंधित करता है। दाँतों के कालेपन व गोश्त ख़ोरा को समाप्त करता है।

औषधियाँः फ़िलफ़िल, हमामा, क़िन्बील, साज़ज हिन्दी प्रत्येक 10.5 ग्राम, माज़ू सोख़्ता, सअद, बुसुद, नौशादर प्रत्येक 7 ग्राम, शिब-ए-यमानी सोख़्ता, नमक-ए-सोख़्ता, हलीला ज़र्द, गुलनार, पोस्त-ए-अनार और गुल-ए-सुर्ख़ प्रत्येक 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सनून तैयार करें।

❑❑❑

## तृतीय खण्ड
# अष्टम अध्याय

## ज़रूर के नुस्ख़े
### जो पुराने ज़ख़्मों में प्रयोग किए जाते हैं

- **ज़रूर का नुस्ख़ाः**
  यह ज़ख़्म से ख़ून आने को रोकता और गोश्ता उगाता है।
  औषधियाँः अन्ज़रूत, दमुलअखवैन, निशारा-ए-आबनूस, कुन्दुर, कात-ए-हिन्दी।
  निर्माण-विधिः सब हल्का पीस कर ज़रूर तैयार करें।
  प्रयोग-विधिः घाव के स्थान पर छिड़कें।

- **ज़रूर का अन्य नुस्ख़ाः**
  यह गन्द-ए-गोश्ता को गला देता है। नया गोश्ता उगाता है। घाव को भरता है।

औषधियाँः अन्ज़रूत मुर्र, दमुलअखवैन, मुरदारसंग मग़सूल, कुन्दुर सभी एक एक भाग, गिल-ए-अरमनी, शयाफ़-ए-मामीसा, सिब्र ज़र्द और ज़रावन्द मुदहरज सभी आधा आधा भाग।

निर्माण-विधिः सब हल्का पीस कर ज़रूर तैयार करें।

- **ज़रूर का अन्य नुस्ख़ाः**
  आग से जलने और उस जैसे अन्य रोगों में लाभदायक है।
  औषधियाँः मुरदारसंग, आहक मग़सूल, हिना एक एक भाग।
  निर्माण-विधिः सब को हल्का पीस कर ज़रूर तैयार करें।
  प्रयोग-विधिः घाव को रोगन-ए-कदू से चर्ब करने के बाद इस ज़रूर को छिड़कें।

- **ज़रूर का अन्य नुस्ख़ाः**
  यह गुदा के ज़ख़्म और घाव और नासूर में लाभदायक है।
  औषधियाँः सफ़ेदाब अर्ज़ीज, गुलनार, शिब-ए-यमानी, माज़ू।
  निर्माण-विधिः समभाग में कूट कर ज़रूर तैयार करें।
  प्रयोग-विधिः गुदा को रोगन-ए-गुल से चर्ब करने के बाद इस ज़रूर को छिड़कें।

- **ज़रूर का अन्य नुस्ख़ा:**

यह कान से मैल कुचैल और मवाद आने को रोकता है।

औषधियाँ: सिब्र ज़र्द, अन्ज़रूत, दमुलअख़्वैन, ज़न्जार, ख़ुब्सुलहदीद एक एक भाग।

निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर ज़रूर तैयार करें।

प्रयोग-विधि: इसे सिर्का में घोलें। मधु से लथेड़े हुए बाती को उस में डाल कर अच्छी प्रकार से मिलाएँ और कान में डालें।

- **ज़रूर का अन्य नुस्ख़ा:**

यह कान और नाक के ज़ख़्मों को ठीक करता है।

औषधियाँ: अन्ज़रूत, दमुलअख़्वैन, ज़ुबदुलबहर, बूरह अरमनी, मुर मक्की और शयाफ़-ए-मामीसा सभी एक एक भाग।

निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर ज़रूर तैयार करें।

प्रयोग-विधि: मधु से लथेड़े हुई बाती में को लगाकर कान में रखें।

- **ज़रूर का अन्य नुस्ख़ा:**

यह Paralysis of Anus में लाभदायक है।

औषधियाँ: ज़ुफ़्त बलूत, माज़ू, क़िशूर-ए-कुन्दुर, शन्ज सोख़्ता,गुलनार, शाख-ए-गौज़न सोख़्ता, मुरदारसंग, सदफ़ सोख़्ता और अक़लीमिया-ए-फ़िज़्ज़ा सोख़्ता।

निर्माण-विधि: सब हल्का पीस कर ज़रूर तैयार करें।

- **ज़रूर का अन्य नुस्ख़ा:**

इस से भी उपरोक्त लाभ की प्राप्ति होती है।

औषधियाँ: शाख-ए-गौज़न, शाख-ए-गोस्फ़न्द, शाख-ए-गर्ग, सुम-ए-गोस्फ़न्द सोख़्ता 1-1 भाग, बर्ग-ए-मूरद, माज़ू, जौज़ुस्सर्व, गुलनार, कज़माज़ज, पोस्त-ए-बौज़ा-ए-मुर्ग़ सोख़्ता, मुरदारसंग मग़सूल सभी आधा आधा भाग।

निर्माण-विधि: सब अच्छी तरह पीस कर ज़रूर तैयार करें।

प्रयोग-विधि: रोग़न-ए-गुलमग़्ज़-ए-साक़-ए-गाव से गुदा को चर्ब करने के बाद इस ज़रूर को उस पर छिड़कें।

- **ज़रूर का अन्य नुस्ख़ा:**

असाधारण गोश्त को गला देता है।

औषधियाँ: आहक आब नदीदा, ज़र्नीख़ सुर्ख़, ज़र्नीख़ ज़र्द, क़लक़तार प्रत्येक 7 ग्राम, कुन्दुर, अक़लीमिया-ए-फ़िज़्ज़, ख़रबक़ सफ़ेद प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट पीस कर ज़रूर तैयार करें।

- **ज़रूर का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से भी उपरोक्त लाभ की प्राप्ति होती है।

औषधियाँः सिब्र ज़र्द, अन्ज़रूत, दमुलअखवैन, ज़न्जार, ज़र्नीख, उशक।

निर्माण-विधिः सब को समभाग में हल्का पीस कर ज़रूर तैयार करें।

- **ज़रूर का अन्य नुस्ख़ाः**

ज़ख़्म और घाव के मुर्दा गोश्त को दूर करता है। नया गोश्त उगाता है और घाव को भरता है।

औषधियाँः सफ़ेदाब, मुरदारसंग प्रत्येक 7 ग्राम, खुब्सुर्रसास, माज़ू, मुर्र प्रत्येक 1.75 ग्राम, क़लक़दीस 3.5 ग्राम, सदफ़ सोख़्ता, अक़लीमिया, ज़र्नीख़, अन्ज़रूत प्रत्येक 10.5 ग्राम, दमुलअखवैन 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब हल्का पीस कर ज़रूर तैयार करें।

- **ज़रूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह फोड़ों के घाव भरता है।

औषधियाँः सिब्र, गुलनार,अक़लीमिया सभी एक एक भाग।

निर्माण-विधिः अक़लीमिया को मग़सूल करने के बाद शेष सभी औषधियों के साथ पीस कर ज़रूर तैयार करें।

- **ज़रूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह छुरी एवं तलवार के ज़ख़्मों में लाभदायक है।

औषधियाँः दमुलअखवैन, अन्ज़रूत, गुलनार और सिब्र।

निर्माण-विधिः सब को पीस कर ज़रूर तैयार करें।

- **ज़रूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह हलक़ और मुँह की सूजन में लाभदायक है।

औषधियाँः फ़ोफ़ल, अक़ाक़िया, गर्द-ए-सुमाक़, तबाशीर और गुल-ए-सुर्ख़।

निर्माण-विधिः सब को पीस कर ज़रूर तैयार करें।

प्रयोग-विधिः हलक़ और मुँह में छिड़कें।

- **ज़रूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह मुँह के छालों और सूजन में लाभदायक है।

औषधियाँः किशनीज़ खुश्क, सुमाक़, गुलनार फ़ारसी, अदस मुक़श्शर, फ़ोफ़ल,

तबाशीर, तुख़्म-ए-ख़ुर्फ़ह, माज़ू सभी सभी एक एक भाग।

निर्माण-विधिः सब पीस कर ज़रूर तैयार करें।

प्रयोग-विधिः मुँह में छिड़कें।

- **ज़रूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह पहले वाले नुस्खे की तुलना में अधिक प्रभावशाली है।

औषधियाँः गुलनार, गुल-ए-सुर्ख़, सुमाक़, निशास्ता, तुख़्म-ए-ख़ुर्फ़ह, तुख़्म-ए-काहू, सन्दल सफ़ेद और फ़ोफ़ल सभी सभी एक एक भाग।

निर्माण-विधिः सब को पीस कर ज़रूर तैयार करें।

प्रयोग-विधिः मुँह को अर्क़-ए-गुलाब और सिर्का से धोने के बाद ज़रूर करें।

- **ज़रूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह पहले वाले नुस्खे की तुलना में अधिक प्रभावशाली है।

औषधियाँः दमुलअखवैन, सुमे गोस्फ़न्द सोख़्ता, ज़ाज सोख़्ता, अन्ज़रूत और खुब्सुर्रसास सभी एक एक भाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर ज़रूर तैयार करें।

प्रयोग-विधिः ज़ख़्म में भर दें।

❑❑❑

## तृतीय खण्ड
# सप्तम अध्याय

# नफ़ूख़ के नुस्ख़े

- **नफ़ूख़ का नुस्ख़ाः**

यह नाक से ख़ून आने को रोकता है।

औषधियाँः पोस्त-ए-तुख़्म-ए-मुर्ग़ सोख़्ता, गुलनार, माज़ू और गर्द-ए-आसिया।

निर्माण-विधिः सब को थोड़ी मात्रा में लेकर कूट छान लें।

प्रयोग-विधिः नाक में सुड़कें।

- **नफ़ूख़ का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से भी वही लाभ प्राप्त होते हैं।

औषधियाँः गुलनार, समग़ अरबी, गर्द-ए-कुन्दुर, अन्ज़रूत।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर नफ़ूख तैयार करें।

प्रयोग-विधिः नाक में सुड़कें।

- **नफ़ूख़ का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः माज़ू सब्ज़ सूराख़दार, शिब-ए-यमानी, निशास्ता, समग़-ए-अरबी, गर्द-ए-कुन्दुर और अन्ज़रूत।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर नफ़ूख तैयार करें।

प्रयोग-विधिः नाक में सुड़कें।

- **नफ़ूख़ का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः कहरुबा, बुसुद सोख़्ता, माज़ू सब्ज़, गिल-ए-गर्द, निशास्ता, गुलनार, ख़राशा-ए-बुलग़ार, पोस्त-ए-तुख़्म-ए-मुर्ग़ सोख़्ता, समग़-ए-अरबी, शिब-ए-यमानी, गर्द-ए-आसिया, दमुलअख़वैन और क़िशूर-ए-कुन्दुर।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर नफ़ूख तैयार करें।

प्रयोग-विधिः नाक में सुड़कें।

- **नफ़ूख़ का अन्य नुस्ख़ाः**

इस के भी वही लाभ हैं। इस से नकसीर रुक जाती है।

औषधियाँः पोस्त-ए-तुख़्म-ए-मुर्ग़ सोख़्ता, काग़ज़ सोख़्ता, शाख़-ए-गौज़न सोख़्ता एक एक भाग, गुलनार, दमुलअखवैन, ख़राशा-ए-बुलग़ार, रामिक आधा आधा भाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर नफ़ूख तैयार करें।

प्रयोग-विधिः नाक में सुड़कें।

- **नफ़ूख़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह नकसीर को रोकने में लाभदायक और मुजर्रब है।

औषधियाँः शिब-ए-यमानी, क़लक़तार, क़लक़दीस, शाख़-ए-गौज़न सोख़्ता मग़सूल, वदअ सोख़्ता, माज़ू सोख़्ता, काग़ज़ सोख़्ता, काफ़ूर सभी थोड़ी थोड़ी मात्रा में।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर नफ़ूख तैयार करें।

प्रयोग-विधिः नाक में सुड़कें।

- **नफ़ूख़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह नकसीर फूटने को रोकने में मुजर्रब है।

औषधियाँः ज़ाफ़रान और अफ़ियून प्रत्येक 64 मिलीग्राम, काफ़ूर, रामिक, काग़ज़ सोख़्ता, अक़ाक़िया, माज़ू सोख़्ता, गुलनार और ज़ाज सभी थोड़ी थोड़ी मात्रा में।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर नफ़ूख तैयार करें।

प्रयोग-विधिः 1.75 ग्राम नफ़ूख को अफियून व केसर मिला कर नाक में सुड़कें।

- **नफ़ूख़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह नाक की गन्दगी को समाप्त करता है।

औषधियाँः ज़ाज, सुक्क और क़रन्फ़ुल।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर नफ़ूख तैयार करें।

प्रयोग-विधिः नाक में सुड़कें।

- **नफ़ूख़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह नाक की बदबू को दूर करता है।

औषधियाँः क़सबुज़्ज़रीरा, गुल-ए-नसरीन प्रत्येक 3.5 ग्राम, सअद और सुंबुलुत्तीब प्रत्येक 14 ग्राम, बर्ग-ए-मूरद 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर नफ़ूख तैयार करें।

प्रयोग-विधिः नाक में सुड़कें।

- **नफ़ूख़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह मिर्गी के रोगी को होश में लाता है और उन के लिए लाभदायक है।

औषधियाँः क़िस्साउलहिमार, शहमुलहन्ज़ल, नौशादर, कुन्दुश, फ़िलफ़िल और उस्तोखुद्दूस सभी थोड़ी थोड़ी मात्रा में।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर नफ़ूख तैयार करें।

प्रयोग-विधिः आवश्यकतानुसार नाक में सुड़कें।

- **नफ़ूख़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह पुराने सर दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँः उसारा-ए-बखूर-ए-मरियम, क़ुत्रान, मरज़न्जोश।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर नफ़ूख तैयार करें।

प्रयोग-विधिः नाक में सुड़कें।

- **नफ़ूख़ का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः मुर मक्की, क़लक़तार, सुक्क, पोस्त-ए-अनार, क़सबुज़्ज़रीरा, क़रन्फ़ुल और गुल-ए-नसरीन सभी एक एक भाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर नफ़ूख तैयार करें।

प्रयोग-विधिः सर्वप्रथम नाक को शराब से धोएँ फिर नफ़ूख को किसी नली के सिरे पर रख कर नाक में सुड़कें।

- **नफ़ूख़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह छींक लाता है। मिर्गी, सकता, लक़वा, पक्षघात, अधकपारी के दर्द और मूत्राच्छ में लाभदायक है। मुर्दा भ्रुण को बाहर निकालता है।

औषधियाँः कुन्दुश, शोनीज़, फ़र्फ़्रियून, फ़िलफ़िल, जुन्द बेद स्तर, ज़रावन्द तवील, हब्ब-ए-बलसाँ, आक़रक़रहा, मुश्क और बूरह अरमनी प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर नफ़ूख तैयार करें।

प्रयोग-विधिः सर्वप्रथम नाक को शराब से धोएँ फिर नफ़ूख को किसी नली के सिरे पर रख कर नाक में सुड़कें।

- **नफ़ूख़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह छींक लाता है। Apoplexy में लाभदायक है और दिमाग़ को तरल पदार्थों से पाक करता है।

औषधियाँः जुन्द बेद स्तर, कुन्दुश और फ़िलफ़िल।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर नाक में सुड़कें।

- **नफ़ूख़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह नाक से ज़ुकाम और बदबू को समाप्त करता है और दिमाग़ से नज़लावी तरल पदार्थों को बाहर निकालता है। सर हल्का करता है और दिमाग़ को साफ़ और स्वच्छ करता है।

औषधियाँः शोनीज़ अधभुना और गर्द-ए-शाको।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को थोड़ी थोड़ी मात्रा में लें और हल्का कूट छान कर नफ़ूख तैयार करें।

प्रयोग-विधिः नाक में सुड़कें।

- **नफ़ूख़ का अन्य नुस्ख़ाः**

इस का भी वही लाभ है।

औषधियाँः शाको 10.5 ग्राम, मुश्क 250 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को अर्क़-ए-गुलाब में भिगोएँ फिर सुखा कर कूट छान लें और नफ़ूख तैयार करें।

प्रयोग-विधिः नाक में सुड़कें।

- **नफ़ूख़ का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से बेहोशी पैदा होती है।

औषधियाँः जौज़-ए-मासिल, अफ़ियून, उसारा-ए-काहू, ज़ाफ़रान 1-1 भाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर नफ़ूख तैयार करें।

प्रयोग-विधिः नाक में सुड़कें।

❑❑❑

### तृतीय खण्ड
# अष्टम अध्याय

## बखूर के नुस्खे

- **बखूर का नुस्ख़ाः**

यह बुद्धिवर्धक है और बेहोशी एवं दिल की कमज़ोरी में लाभदायक है।

औषधियाँः ऊद हिन्दी, क़ुस्त शीरीं और सन्दल सफ़ेद प्रत्येक 3.5 ग्राम, मुश्क और काफ़ूर प्रत्येक 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर अर्क़-ए-गुलाब मिला कर गोलियाँ बनाएँ।

प्रयोग-विधिः गोलियों को अग्निपात्र में रख कर बखूर करें।

- **बखूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह दिमाग़ और दिल की कमज़ोरी में लाभदायक है। रूह-ए-हैवानी व रूह-ए-नफ़सानी को सशक्त बनाता है। कमज़ोर रोगियों एवं गर्म स्वभाव के व्यक्तियों के लिए लाभदायक है।

औषधियाँः सेब असफ़हानी, गुलाब, सन्दल, काफ़ूर, मुश्क।

निर्माण-विधिः असफहानी सेब को बीच से ख़ाली करके उस में गुलाब, सन्दल, काफ़ूर और मुश्क भर दें।

प्रयोग-विधिः उपर्युक्त सेब को किसी आग के पात्र में रख दें ताकि उस का धुवाँ सूँघने से संबंधित अंगों तक पहुँच जाए।

- **बखूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह हृदयवर्धक और बुद्धिवर्धक है।

औषधियाँः सन्दल सफ़ेद, ऊद हिन्दी, मीअह ख़ुश्क, नबात सफ़ेद 1-1 भाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर अर्क़-ए-गुलाब के साथ ख़मीर तैयार करें। अच्छी तरह मिलाकर क़ुर्स बनाएँ।

- **बखूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बुद्धिवर्धक है और दिल की कमज़ोरी को दर करता है। यह मूत्राशय के लिए

विशेष औषधि है। साथ ही यह हृदय में स्फूर्ति पैदा करने वाला है।

औषधियाँः सन्दल सफ़ेद, ऊद हिन्दी, बीख़-ए-बनफ़्शा प्रत्येक 7 ग्राम, गुल-ए-नारन्ज, सुंबुलुत्तीब प्रत्येक 17.5 ग्राम, गुलाब, अर्क़-ए-गुलनार, तुरन्ज प्रत्येक 70 ग्राम, पानी एक प्याला।

निर्माण-विधिः सब को पत्थर की देग में डालें। उसे अपने सामने किसी अग्नि के पात्र पर रख कर गर्म करें ताकि उस का धुआँ दिमाग़ तक पहुँचे।

- **बख़ूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह दिमाग़ी सुद्दे खोलता और ज़ुकाम में लाभदायक है।

औषधियाँः बाक़ला, सबूस-ए-गन्दुम और सिर्का।

निर्माण-विधिः बाक़ला और सबूस-ए-गन्दुम को थोड़ी थोड़ी मात्रा में लेकर सिर्का में डालें फिर सुखा लें।

प्रयोग-विधिः बख़ूर करें और सर को धुएँ के सामने रखें।

- **बख़ूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह नज़ला और ज़ुकाम को रोकता है साथ ही दोनों नथुनों से तरल पदार्थ के अधिक बहाव को भी रोकता है।

औषधियाँः कुन्दुर, मीअह, कबाबा, क़ुस्त, सन्दरूस 1-1भाग।

निर्माण-विधिः सब को समभाग में कूट कर गोलियाँ बनाएँ।

प्रयोग-विधिः गोलियों को आग पर रख कर बख़ूर करें और सर को उस के धुएँ के सामने रखें।

- **बख़ूर का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः सबूस-ए-गन्दुम, आरद-ए-जौ,बनफ़्शा, आरद-ए-बाक़ला, सन्दल सफ़ेद, गुल-ए-सुर्ख़ और गुल-ए-कबर प्रत्येक 1.75 ग्राम, काफ़ूर 500 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सिर्का में भिगोएँ और सुखा लें फिर अर्क़-ए-गुलाब के साथ मिला कर हब्ब तैयार करें।

प्रयोग-विधिः आवश्यकता के सामय उन गोलियों को आग पर रख कर बख़ूर करें अर्थात धोनी लें और दिमाग़ अर्थात सर को उस के धुएँ के सामने रखें।

- **बख़ूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह दमा और श्वास की तंगी में लाभदायक है।

औषधियाँः मुर्र साफ़, सलीख़ा, क़ुस्त और ज़ाफ़रान।

निर्माण-विधिः सब कूट कर शराब में भिगोएँ व सुखा लें।

प्रयोग-विधिः आवश्यकता के सामय उन गोलियों को आग पर रख कर बख़ूर करें अर्थात धोनी लें और दिमाग़ अर्थात सर को उस के धुएँ के सामने रखें।

- **बख़ूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गर्भधारण के लिए लाभदायक है।

औषधियाँः मीअह सायला, माज़ू और हब्बुलग़ार।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर मधु में मिलाएँ और माहवारी के बाद तीन दिन लगातार 3.5 ग्राम की मात्रा में लेकर दामन के सामने बख़ूर करें अर्थात धोनी लें और फिर संभोग करें।

प्रयोग-विधिः दामन में रख कर बख़ूर करें।

प्रयोग-समयः माहवारी के बाद।

प्रयोग-अवधिः लगातार तीन दिन।

- **बख़ूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बताता है कि स्त्री गर्भधारण करना चाहती है कि नहीं।

औषधियाँः कुन्दुर और हब्ब-ए-बलसाँ प्रत्येक 7 ग्राम, मुर मक्की 5.25 ग्राम, क़रन्फ़ुल, मीअह और दार-ए-चीनी प्रत्येक 3.5 ग्राम, सुंबुलुत्तीब 14 ग्राम, साज़ज हिन्दी 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर शहद में मिलाएँ और माहवारी के बाद तीन दिन लगातार 3.5 ग्राम की मात्रा में लेकर दामन के सामने बख़ूर करें अर्थात धोनी लें और फिर संभोग करें।

प्रयोग-विधिः दामन में रख कर बख़ूर करें।

प्रयोग-समयः माहवारी के बाद।

प्रयोग-अवधिः लगातार तीन दिन।

- **बख़ूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गर्भधारण के लिए लाभदायक है।

औषधियाँः सुद्दाब, दार-ए-शीशआन 1-1 भाग, रोग़न-ए-गाव।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर घी के साथ मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः आग पर रख कर बख़ूर करें अर्थात धोनी लें।

- **बख़ूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह मुर्दा बच्चे और नाल को बाहर निकालता है।

औषधियाँ: मुर मक्की, क़िन्नह, जावशीर और गोगर्द।

निर्माण-विधि: सभी औषधियों को समभाग में कूटने छानने के बाद गाय के दूध में मिलाकर गोलियाँ बनाएँ।

प्रयोग-विधि: नीचे के भाग पर बख़ूर करें अर्थात धोनी दें।

- **बख़ूर का अन्य नुस्ख़ा:**

यह बवासीर में लाभदायक है।

औषधियाँ: बीख़-ए-कबर, शीह, करफ़्स, चौब-ए-खरज़हरा, खार तर, बीख़-ए-सोसन आसमान्जोनी।

निर्माण-विधि: सब को कूटने छानने के बाद शहद के साथ मिलाकर 4.5 ग्राम के क़ुर्स बनाएँ और सुखा कर सुरक्षित कर लें।

प्रयोग-विधि: नीचे के भाग पर बख़ूर करें अर्थात धोनी दें।

प्रयोग-विधि: दामन में रख कर बख़ूर करें।

प्रयोग-समय: माहवारी के बाद।

प्रयोग-अवधि: लगातार तीन दिन।

- **बख़ूर का अन्य नुस्ख़ा:**

यह भी उपरोक्त लाभ प्रदान करता है क्योंकि यह बवासीर को सुखाता है।

औषधियाँ: सपिन्दान सफ़ेद, बीख़-ए-हन्ज़ल, हज़ार स्पन्द, उश्नान, मुर मक्की, सुद्दाब और अन्ज़रूत।

निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर क़ुर्स तैयार करें।

प्रयोग-विधि: नीचे के भाग पर बख़ूर करें अर्थात धोनी दें।

प्रयोग-विधि: दामन में रख कर बख़ूर करें।

प्रयोग-समय: माहवारी के बाद।

प्रयोग-अवधि: लगातार तीन दिन।

- **बख़ूर का अन्य नुस्ख़ा:**

यह ख़ूनी बवासीर में लाभदायक है और साथ ही किसी भी प्रकार के ख़ून बहने को रोकता है।

औषधियाँ: मुक़िल, सन्दरूस, शाख़-ए-गौज़न सोख़्ता, शाखे-ए-गर्दगान सोख़्ता सभी एक एक भाग।

निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर आब-ए-किशनीज़ सब्ज़ में मिलाकर क़ुर्स तैयार करें। सुखा कर सुरक्षित कर लें।

प्रयोग-विधिः आवश्यकता पड़ने पर लकड़ी की आग पर रख कर बखूर करें अर्थात धोनी लें।

- **बखूर का अन्य नुस्खाः**

  यह बवासीर में लाभदायक है।

  औषधियाँः मुक़िल अज़रक़, तुख़्म-ए-गन्दना, गुल-ए-बाज़िन्जान 1-1 भाग।

  निर्माण-विधिः सभी औषधियों को मिलाकर प्रयोग में लाएँ।

  प्रयोग-विधिः बखूर करें अर्थात धोनी लें।

- **बखूर का अन्य नुस्खाः**

  इस का भी वही लाभ है।

  औषधियाँः कबर, मुक़िल अज़रक़, तुख़्म-ए-गन्दना, शाख़-ए-गौज़न 1-1 भाग।

  निर्माण-विधिः सब को लेकर विधि अनुसार प्रयोग में लाएँ।

  प्रयोग-विधिः बखूर करें अर्थात धोनी लें।

- **बखूर का अन्य नुस्खाः**

  औषधियाँः पोस्त-ए-माज़ू, शाख़-ए-गौज़न, शाख़-ए-गुर्ग।

  निर्माण-विधिः सभी औषधियों लेकर प्रयोग में लाएँ।

  प्रयोग-विधिः बखूर करें अर्थात धोनी लें।

❑❑❑

तृतीय खण्ड

# नवम अध्याय

# शमूम के नुस्खे

- **शमूम का नुस्ख़ाः**

यह Antiseptic है और गर्मी के कारण होने वाले सर दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँः सन्दल सफ़ेद और किश्नीज़ ख़ुश्क।

निर्माण-विधिः दोनों को हल्का पीस लें। अर्क़-ए-गुलाब व सिर्का के साथ मिला कर शमूम तैयार करके पत्थर के किसी पात्र में सुरक्षित कर लें और प्रयोग में लाएँ।

- **शमूम का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गरमी से होने वाले मस्तिष्कावरण में लाभदायक है।

औषधियाँः आब-ए-सेब, आब-ए-अमरूद, गुलाब, सन्दल, काफ़ूर।

निर्माण-विधिः सब को थोड़ी थोड़ी मात्रा में लें और अर्क़-ए-गुलाब में मिला कर शमूम तैयार करें और प्रयोग में लाएँ।

- **शमूम का अन्य नुस्ख़ाः**

इस को लखलखा की भाँति प्रयोग करने से बुद्धिवर्धक है। यह सर दर्द एवं गर्मी से होने वाले मस्तिष्कावरण में लाभदायक है।

औषधियाँः सिर्का, गुलाब, काफ़ूर, सन्दल व किशनीज़ सब्ज़।

निर्माण-विधिः सब को लेकर मिलाएँ फिर शमूम तैयार कर के शीशे के पात्र में सुरक्षित कर लें और प्रयोग में लाएँ।

- **शमूम का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गर्मी से होने वाले मस्तिष्कावरण, सर दर्द, Septic fevers में लाभदायक है। गैस, दिमाग़ तक पहुँचने से रोकता है।

औषधियाँः आब-ए-मूरद ताज़ा, आब-ए-किशनीज़ सब्ज़, आब-ए-सेब, गुलाब, सन्दल, काफ़ूर।

निर्माण-विधिः सब को लेकर आपस में मिलाएँ फिर शमूम तैयार कर के शीशे के पात्र में सुरक्षित कर लें।

- **शमूम का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से दिमाग़ में शुष्कता उत्पन्न होती है और यह गर्मी के कारण होने वाले सर दर्द में भी लाभदायक है।

औषधियाँ: आब-ए-बर्ग काहू, आब-ए-बर्ग ख़्यार, आब-ए-बर्ग-ए-बादरंग, गुलाब, सन्दल।

निर्माण-विधिः सब को लेकर आपस में मिलाएँ फिर शमूम तैयार कर के शीशे के पात्र में सुरक्षित कर लें।

- **शमूम का अन्य नुस्ख़ाः**

यह नींद लाता है।

औषधियाँ: तुख़्म-ए-गुल और बीख़-ए-तुफ़्फ़ाह प्रत्येक 4.5 ग्राम, अफ़ियून और ज़ाफ़रान प्रत्येक 1 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूटने छानने के बाद आब-ए-काहू के साथ मिला कर शमूम तैयार करें और प्रयोग में लाएँ।

- **शमूम का अन्य नुस्ख़ाः**

यह ठंडक के कारण होने वाले सरदर्द और Amnesia में लाभदायक है।

औषधियाँ: जौज़बोवा, दरेमना तुर्की, मरज़न्जोश, क़रन्फ़ुल प्रत्येक 3.5 ग्राम, बिस्बासा और फ़ूदना जबली प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूटने छानने के बाद आब-ए-सेब के साथ मिला कर शमूम तैयार करें और प्रयोग में लाएँ।

- **शमूम का अन्य नुस्ख़ाः**

यह ठंडक से होने वाले सर दर्द में लाभदायक है। दिमाग़ को गर्म रखता है और अप्राकृतिक सपनों को दूर करता है।

औषधियाँ: लादन, क़ैसूम, मरज़न्जोश प्रत्येक 3.5 ग्राम, ज़ाफ़रान 1.75 ग्राम, अंबर 1 ग्राम, फ़ुक़ाह-ए-इज़्ख़िर 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर पोटली में बाँधें और सूँघें।

- **शमूम का अन्य नुस्ख़ाः**

यह मिर्गी वाले व्यक्तियों के लिए लाभदायक है।

औषधियाँ: सुद्दाब, मरज़न्जोश, यशब, फ़ूदना जबली।

निर्माण-विधिः सब मिला कर शमूम तैयार करें।

- **शमूम का अन्य नुस्ख़ाः**

यह मिर्गी और Infantile Convulsions में लाभदायक है।

औषधियाँः ऊद फ़ावानिया व जुन्द बेद स्तर प्रत्येक 1 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को आब-ए-मर्ज़न्जोश में घोल कर शमूम तैयार करें।

- **शमूम का अन्य नुस्ख़ाः**

यह नींद लाता है और बुद्धिवर्धक है।

औषधियाँः गुल-ए-शाहस्फ़म, बीख़-ए-तुफ्फ़ाह, ज़ाफ़रान और शिब्त प्रत्येक 3.5 ग्राम, अफ़ियून 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूटने के बाद आब-ए-मर्ज़न्जोश के साथ मिलाकर शमूम तैयार करें और प्रयोग में लाएँ।

- **शमूम का अन्य नुस्ख़ाः**

यह दिमाग़ की शुष्कता में लाभदायक है क्योंकि यह शक्तिवर्धक और दिमाग़ में तरलता पैदा करने वाला है।

औषधियाँः आब-ए-ख़्यार बादरंग, आब-ए-किशनीज़ सब्ज़, रुब्ब-ए-सेब, गुलाब, आब-ए-काहू, गुल-ए-नीलोफ़र, गुल-ए-ख़ुब्बाज़ी और बीख़-ए-तुफ्फ़ाह।

निर्माण-विधिः सब को थोड़ी थोड़ी मात्रा में मिला कर शमूम तैयार करें।

- **शमूम का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बुद्धिवर्धक है और नींद लाता है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-ख़शख़ाश, तुख़्म-ए-काहू, किशनीज़ ख़ुश्क और तुख़्म-ए-सेब।

निर्माण-विधिः सब को हल्का भूनें। कूट छान कर शमूम तैयार करें और पोटली में बाँध कर सुरक्षित कर लें।

- **शमूम का अन्य नुस्ख़ाः**

यह दिमाग़ के सुद्दों को खोलता है और बन्द ज़ुकाम को भी खोलता है।

औषधियाँः शोनीज़ मुशव्वा, ऊद-ए-फ़ावानिया, जुन्द बेद स्तर ऊद-ए-हिन्दी।

निर्माण-विधिः सब को मिलाकर सूँघने से लाभ होता है।

❑❑❑

# चतुर्थ खण्ड

## तरल पदार्थों अथवा उन की भाँति क़िवाम रखने वाली औषधियों के नुस्ख़े

**यह खण्ड आठ अध्यायों पर आधारित है**

## चतुर्थ खण्ड
# प्रथम अध्याय

# माउलअस्ल, माउलजुब्न, माउलउसूल, ख़ल्ल-ए-उन्सुल और आबकामा के नुस्ख़े

- **माउलअस्ल का नुस्ख़ाः**

यह आमाशयवर्धक है। पक्षघात, लक़वा, जोड़ों के दर्द और बलग़मी रोगों में लाभदायक है। दीपन है। पाचन में सहायक है। मूत्रविरेचक है। आमाशय के तरल पदार्थों में बढ़ोत्तरी करता है।

औषधियाँः साफ़ शहद एक भाग और साफ़ पानी दो भाग।

निर्माण-विधिः इन को देग में रख कर हल्की आँच पर इतना पकाएँ कि दो भाग रह जाए। अगर इस को और अधिक प्रभावशाली बनान हो तो दार-ए-चीनी, ख़ूलन्जान, ज़न्जबील, मस्तगी, ज़ाफ़रान, क़ाक़ला, जौज़बोवा, बिस्बासा को उचित मात्रा में लें और सब को कूट छान कर इस में सम्मिलित करें।

सेवन-विधिः आवश्यकता के समय घूँट घूँट कर पिएँ।

- **माउलजुब्न का नुस्ख़ाः**

यह मालीख़ोलिया, पीलिया, Scabies, Ptyriasis और सौदावी रोगों में लाभदायक है। अगर इस को आब-ए-अफ़्तीमून के साथ पिया जाए तो यह जले हुए सौदा का विरेचक है और मिर्रह सफ़रा को बाहर निकालता है।

औषधियाँ एवं निर्माण-विधिः लाल रंग की जवान और तन्दुरुस्त बकरी जिस को बच्चा जने हुए चालीस दिन बीजत गए हों, को कुछ दिन किशनीज़ सब्ज़, बर्ग-ए-काहू या ख़ुर्फ़ह या कासनी, राज़ियाना, जौ और शाहतरह खिलाया जाए। ऐसी बकरी जिसने इन वस्तुओं को खाया हो उस से 840 मिलीलीटर दूध दूह कर पत्थर की देग में हल्की आँच पर पाकया जाए फिर उस में अच्छे स्वाद वाली सिकन्जबीन-ए-क़न्दी 140 मिलीलीटर और सिर्का 3.5 ग्राम सम्मिलित किया जाए। तत्पश्चात अन्जीर की लकड़ी (जिस के बाहरी छिलके को उतार दिया गया हो) से दूध को मिलाएँ ताकि वह

फट जाए। अब उस को आग से उतार करसाफ़ कर लें और देग में डाल कर पकाएँ और उस की झाग उतारते रहें।

सेवन-मात्राः प्रत्येक दिन 420 मिलीलीटर की मात्रा में तीन बार इस प्रकार से प्रयोग कराएँ कि प्रत्येक ख़ूराक के बीच दो घंटे बीत चुके हों। इस को पिलाने के पश्चात कुछ दूर चलाया करें।

- **माउलजुब्न का नुस्ख़ाः**

औषधियाँ एवं निर्माण-विधिः एक बकरी जिस के बाल लाल हों, आँखें नीलीं हों,उस को बच्चा जने हुए चालीस दिन बीजत गए हों और उस को काहू, शाहतरह और किशनीज़ आदि खने की आदत हो जिस से कि उस का दूध अच्छा हो जाता है। ऐसी बकरी से 675 मिलीलीटर दूध लेकर देग-ए-संगीं में हल्की आँच पर इतना पकाया जाए कि वो अच्छी तरह पक जाए। तत्पश्चात उस में पुराना सिर्का डालें ताकि दूध फट जाए। अब उस को आग से उतार कर साफ़ कर लें। इस में दूध को अलग कर के किसी ऐसी वस्तु में मिला दें जो रोगकी के स्वभाव के अनुकूल हो।

- **माउश्शईर का नुस्ख़ाः**

यह Frigorific और Humectant है। देहद्रव्यों की तेज़ी को तोड़ता है। मूत्रविरेचक है। Hyperpyrexia में लाभदायक है। अगर इस को करफ़्स और राज़ियाना के साथ प्रयोग करें तो बुख़ार में लाभ होता है। गरमी के कारण होने वाले जिगर के सू-ए-मिज़ाज में लाभदायक है और इस से Moderate Blood पैदा होता है।

औषधियाँ एवं निर्माण-विधिः सफ़ेद और मोटे दाने के पके हुए जौ को साफ़ कर के पानी से धोएँ और उस को मुक़श्शर कर लें। तत्पश्चात एक भाग जौ लेकर उस के दस गुना साफ़ मीठे पानी में हल्की आँच पर पकाएँ और उस की झाग उतारते रहें। उस को आग से उतारने के बाद सूती कपड़े से छान लें और उस अवशेष को निकाल दें।

सेवन-मात्राः आवश्यकतानुसार प्रयोग कराएँ।

- **माउश्शईर का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँ एवं निर्माण-विधिः पके हुए जौ के साथ क़िर्फ़ह को कूट कर मुक़श्शर (Dehusked) कर लें। तत्पश्चात एक भाग जौ लेकर उस के बीस गुना पानी में इतना पकाएँ कि छः भाग जल जाए और एक भाग शेष रह जाए। अब उस को साफ़ कर के उस के अवशेष निकाल दें और उस का लुआब पिएँ। यह बहुत हल्की और नारमल

आहार है और नौजवानों एवं गरम स्वभाव के व्यक्तियों के स्वभाव के अनुकूल है।

- **माउल्लहम का नुस्ख़ा:**

यह हृदय, आमाशय और शरीर की कमज़ोरी के लिए बहुत लाभदाय औषधि है।

औषधियाँ एवं निर्माण-विधि: खच्चर, दुर्राज और मुर्ग़े के गोश्त में से जो भी चालें ले लें और क़रअ-ए-अंबीक़ में डाल का उस का अर्क़ निकालें और आवश्यकतानुसार प्रयोग करें।

कुछ हकीम इन के अतिरिक्त अन्य जानवरों एवं परिन्दों को गोश्त डालते है और कुछ हकीम इस के अतिरिक्त कुछ अन्य बेंदहमे भी करते है।

- **माउल्लहम का अन्य नुस्ख़ा:**

यह भी उसी श्रेणी का नुस्खा है। यह काम शक्ति को बढ़ाता और काम में सहायक है। शरीर को मोटा करता है। गालों का रंग लाल करता है और पूर्णकालिक आहार पूरक है।

औषधियाँ: मोटे एवं तन्दुरुस्त मुर्ग़े का गोश्त, खच्चर का गोश्त, मस्त शेर का गोश्त और आहू का गोश्त प्रत्येक 1620 ग्राम, कबूतर का गोश्त 405 ग्राम, 100 की संख्या में घरेलू गौरैया का गोश्त, ख़ुरमा-ए-क़ज़ीब 810 ग्राम, दार-ए-चीनी, शक़ाक़ुल, ख़ुस्यतुस्सअलब प्रत्येक 405 ग्राम, बहमन सुर्ख़, बहमन सफ़ेद, जौज़बोवा, बिस्बासा प्रत्येक 1920 ग्राम, मुश्क 3.5 ग्राम, अंबर अशहब 7 ग्राम, सेब शीरीं 50 की संख्या में आब-ए-गज़र (गाजर को छील कर साफ़ करने के बाद कूट कर प्राप्त किया हुआ उस का रस) 4100 मिलीलीटर।

निर्माण-विधि: सभी औषधियों को एक रात और एक दिन आब-ए-गज़र में भिगो कर रखें। गोश्त को देग में डाल कर अर्क़-ए-गुलाब की भाँति उस का अर्क़ निकालें। मुश्क और अंबर को अलग अलग पोटली में बाँध कर उस पात्र में रखें जिस में अर्क़ टपक रहा हो या अर्क़ निकालते-समय इस प्रकार से निकालें कि वह अंबर उस अर्क़ के बीच में रहे जो ऊपर से टपक रहा है जिस से कि वह अंबर पानी की भाँति हो जाए और मुश्क अर्क़ में घुल जाए। अब इस अर्क़ को ख़ाली पेट आवश्यकतानुसार पिएँ।

- **माउल्लहम का अन्य नुस्ख़ा:**

यह शरीर को सशक्त बनाता है। कमज़ोर व्यक्तियों और उन व्यक्तियों को इस से निष्क्रमण करने पर बहुत लाभ प्राप्ता होता है जिन का आमाशय खाने को अच्छी तरह पचा नहीं पाता।

औषधियाँ: भेड़ (स्त्रीलिंग) जिस को अभी ज़बह किया गया हो, का ताज़ा गोश्त

लेकर कबाब बना लें और चर्बी आदि को हटा दें। उस गोश्त को पतीला-ए-संगीन में थोड़े से अर्क़-ए-गुलाब, आब-ए-सेब, आब-ए-बिही तुर्श के साथ पकाएँ और देग का मुँह बन्द रखें ताकि उस की भाग बाहर ना निकल सके। अच्छी तरह पक जाए तो उस के पानी को गोश्त से अलग कर के निकाल कर सुरक्षित कर लें। दूसरी बार उतनी ही मात्रा में अर्क़-ए-गुलाब, उपर्युक्त आब-ए-मेवाजात को उस गोश्त में डाल कर उसी प्रकार से पकाएँ। जब थोड़ा पक जाए तो उस के पानी को निकाल लें और थोड़े से अर्क़-ए-गुलाब व आब-ए-सेब को उसी गोश्त में डाल कर पकाएँ। गोश्त से पानी को अलग कर के निकाल लें। यह प्रक्रिया इतनी बार करें कि गोश्त सफ़ेद हो जाए और उस में उस का प्रभाव ना रह जाए। अब गोश्त को निकाल दें और प्राप्त पानी को पतीले में रख कर अच्छी तरह पकाएँ। अगर रोगी बहुत कमज़ोर हो तो आब-ए-मेवाजात के स्थान पर शराब सम्मिलित करने की अनुमति है। साथ ही इस में कोई अन्य बदलाव करना पूर्णरूप से हकीम की इच्छा पर निर्भर करता है।

- **माउलउसूल का नुस्ख़ाः**

यह Gout अथवा बलग़म व सौदा से होने वाले जोड़ों के दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँः उन्नाब और सपिस्ताँ प्रत्येक 30 की संख्या में, पोस्त-ए-बीख़-ए-कासनी और पोस्त-ए-बीख़-ए-बादियान प्रत्येक प्रतयेक 35 ग्राम, तुख़्म-ए-कासनी और राज़ियाना प्रत्येक 17.5 ग्राम, सूरन्जान 10.5 ग्राम

निर्माण-विधिः कूटने योग्य औषधियों को अर्धकुटा कर लें और 810 मिलीलीटर पानी में पका कर साफ़ कर लें।

सेवन-मात्रः प्रत्येक सुबह 70 मिलीलीटर की मात्रा में ।

अनुपानः गुलक़न्द 35 के ग्राम के साथ पिएँ।

- **माउलउसूल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह लक़वा, पक्षघात, मिर्गी और सभी प्रकार बलग़मी और सौदावी रोगों में लाभदायक है। गुर्दा और मूत्राशय की पथरी को तोड़ता है। जिगर एवं तिल्ली के सुद्दों को खोलता है। जलोदर रोग और जोड़ों के दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँः पोस्त-ए-करफ़्स, पोस्त-ए-बीख़-ए-राज़ियाना और बीख़-ए-इज़्ख़िर प्रत्येक 14 ग्राम, हब्ब-ए-बलसाँ और असारून प्रत्येक 7 ग्राम, सलीख़ा, जुन्तियाना, बूज़ीदान और हज़ारस्पन्द प्रत्येक 10.5 ग्राम, मवीज़ मुनक़्क़ा 70 ग्राम।

निर्माण-विधिः इन सब को 1620 मिलीलीटर पानी में इतना पकाएँ कि आधा शेष रह जाए और फिर उस को छान लें।

सेवन-मात्रः 135 मिलीलीटर की मात्रा में ।

अनुपानः रोग़न-ए-बेद इन्जीर 7 ग्राम के साथ पिएँ।

- **माउलउसूल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह जिगर एवं तिल्ली के सुद्दों को खोलता है और आमाशय की ठंडक में लाभदायक है।

औषधियाँः पोस्त-ए-बीख़-ए-करफ़्स, पोस्त बीख़-ए-राज़ियाना प्रत्येक 24.5 ग्राम, सुंबुलुत्तबी, मस्तगी प्रत्येक 5.25 ग्राम, बीख़-ए-इज़्ख़िर, फ़ुक़ाह-ए-इज़्ख़िर प्रत्येक 17.5 ग्राम, लुक, फ़ूह, ऊद-ए-बलसाँ प्रत्येक 7 ग्राम, गुल-ए-ग़ाफ़िस, अफ़्सन्तीन, गुल-ए-सुर्ख़, पोस्त बीख़-ए-कबर, शुकाई प्रत्येक 10.5 ग्राम, अन्जीर 10 दाना, मवीज़ मुनक़्क़ा 70 ग्राम।

निर्माण-विधिः इन सब को 1260 मिलीलीटर पानी में इतना पकाएँ कि आधा रह जाए।उस को मल छान कर साफ़ करलें।

सेवन-मात्रः प्रत्येक सुबह 135 मिलीलीटर की मात्रा में ।

अनुपानः रोग़न-ए-बादाम तल्ख़ 3.5 ग्राम और रोग़न-ए-बादाम शीरीं 3.5 ग्राम के साथ प्रयोग कराएँ।

- **माउलउसूल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह सौदावी और बलग़मी रोगों में लाभदायक है। बुख़ारात से होने वाली मिर्गी में लाभदायक है। यह रेचक है और द्रव्यों को सर और सीने से बाहर निकालता है।

औषधियाँः पोस्त-ए-बीख़-ए-बादियान और पोस्त-ए- बीख़-ए-करफ़्स प्रत्येक 35 ग्राम,बीख़-ए-इज़्ख़िर, अनीसून, सलीख़ा और ग़ारीक़ून प्रत्येक 17.5 ग्राम, मस्तगी, नानख़्वाह, क़िर्दमाना और पोदीना कोही प्रत्येक 10.5 ग्राम, अफ़्तीमून और उस्तुख़ुद्दूस प्रत्येक 24.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः नियमानुसार पानी में पका कर साफ़ कर लें।

सेवन-मात्रः 105 मिलीलीटर की मात्रा में ।

अनुपानः रोग़न-ए-बादाम तल्ख़ 3.5 ग्राम के साथ।

- **माउलउसूल काअन्य नुस्ख़ाः**

यह जिगर के रोगों और ठंडक के कारण होने वाले उस के सुद्दों में लाभदायक है।

औषधियाँः पोस्त-ए-बीख़-ए-राज़ियाना, बीख़-ए-करफ़्स प्रत्येक 24.5 ग्राम, ज़ीरा किर्मानी और नानख़्वाह प्रत्येक 14 ग्राम, तुख़्म-ए-राज़ियाना और तुख़्म-ए-करफ़्स प्रत्येक 24.5 ग्राम, शुकाई, बादआवरद, गुल-ए-ग़ाफ़िस, बीख़-ए-इज़्ख़िर, अस्लुस्सूस

तराशीदा, गुल-ए-सुर्ख़, सुंबुलुत्तबी प्रत्येक 10.5 ग्राम, असारून, मस्तगी, फ़ूह, जअदह प्रत्येक 7 ग्राम, मवीज़ मुनक्क़ा 175 ग्राम, हुल्बा 35 ग्राम, उन्नाब 30 की संख्या में।

निर्माण-विधिः कूटने योग्य को अर्धकुटा कर के 10500 मिलीलीटर पानी में इतना पकाएँ कि 2052 मिलीलीटर शेष रह जाए और फिर उस को साफ़ कर लें।

सेवन-मात्रः प्रतिदिन 175 मिलीलीटर की मात्रा में पिलाएँ।

अनुपानः सिकन्जबीन-ए-बज़ूरी 17.5 मिलीलीटर के साथ।

- **माउलउसूल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह जिगर व तिल्ली के सुद्दे खोलता है। जलोदर और बलग़मी बुख़ीरों में लाभदायक है।

औषधियाँः पोस्त-ए-बीख़-ए-करफ़्स और पोस्त-ए-बीख़-ए-बादियान प्रत्येक 24.5 ग्राम, बीख़-ए-इज़्ख़िर और फ़ुक़ाह-ए-इज़्ख़िर प्रत्येक 17.5 ग्राम, मस्तगी और सुंबुलुत्तीब प्रत्येक 35 ग्राम, शुकाई, बादआवरद, गुल-ए-ग़ाफ़िस, गुल-ए-सुर्ख़ और अफ़्सन्तीन रूमी प्रत्येक 10.5 ग्राम, ज़रिशक बेदाना 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को 1620 मिलीलीटर पानी में इतना पकाएँ कि 1215 मिलीलीटर शेष रह जाए।

सेवन-मात्रः प्रतिदिन 140 मिलीलीटर की मात्रा में ।

अनुपानः रोग़न-ए-बादाम 3.5 ग्राम के साथ पिलाएँ।

- **माउलउसूल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह आर्तवजनक है। यह बच्चेदानी में अनियमितता के कारण होने वाली मिर्गी में लाभदायक है।

औषधियाँः पोस्त-ए-बीख़-ए-राज़ियाना, मवीज़ मुनक्क़ा, पोस्त-ए-बीख़-ए- करफ़्स प्रत्येक 35 ग्राम, तुख़्म-ए-हज़ार स्पन्द, अनीसून, तुख़्म-ए-करफ़्स, तुख़्म-ए- राज़ियाना, ज़रावन्द मुदहरज, क़न्तूरियून दक़ीक़, ऊद-ए-फ़ावानिया प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को 1620 मिलीलीटर पानी में इतना पकाएँ कि 1215 मिलीलीटर शेष रह जाए।

सेवन-मात्रः प्रतिदिन 140 मिलीलीटर की मात्रा में ।

अनुपानः रोग़न-ए-बादाम शीरीं 3.5 ग्राम के साथ पिलाएँ।

- **माउलउसूल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गुर्दा और मूत्राशय की पथरी को बाहर निकालता है।

औषधियाँः पोस्त-ए-बीख़-ए-राज़ियानाऔर पोस्त-ए-बीख़-ए-करफ़्सप्रत्येक 17.5 ग्राम, पर्सियाउशान, हब्बुलक़िल्त और उस्क़ूर्दियून प्रत्येक 10.5 ग्राम, तुख़्म-ए-खरपज़ह 24.5 ग्राम, मवीज़ मुनक़्क़ा 35 ग्राम, अन्जीर ख़ुश्क 10।

निर्माण-विधिः इन में से जो औषधियाँ कूटने योग्य हों उन को अर्धकुटा कर के 1620 मिलीलीटर पानी में इतना पकाएँ कि 1080 मिलीलीटर शेष रह जाए फिर उस को साफ़ कर लें।

सेवन-मात्रः प्रतिदिन सुबह में 70 मिलीलीटर की मात्रा में ।

अनुपानः माजून हजरुलयहूद 3.5 ग्राम के साथ पिलाएँ।

- **माउलउसूल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बलग़मी पदार्थों को पकाता है। जोड़ों के दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-राज़ियाना और तुख़्म-ए-करफ़्स प्रत्येक 17.5 ग्राम, अस्लुस्सूस 21 ग्राम, नखूद मुक़श्शर 24.5 ग्राम, पर्सियाउशान 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूटने योग्य को अर्धकुटा कर के 3360 मिलीलीटर आब-ए-बिही में इतना पकाएँ कि 840 मिलीलीटर शेष रह जाए फिर उसे साफ़ कर लें।

सेवन-मात्रः 140 मिलीलीटर की मात्रा में ।

अनुपानः माजून-ए-गुल 35 ग्राम के साथ पिलाएँ।

- **माउलउसूल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह जोड़ों के दर्द, Gout और कमर दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँः पोस्त बीख़-ए-कासनी, पोस्त-ए-राज़ियाना, बीख़-ए-करफ़्स, पोस्त-ए-बीख़-ए-कबर, मवीज़ मुनक़्क़ा प्रत्येक 35 ग्राम, फ़ूह, सूरन्जान, बूज़ीदान प्रत्येक 10.5 ग्राम, सपिस्ताँ, उन्नाब, अन्जीर सफ़ेद प्रत्येक 15, अस्लुस्सूस नीमकोब 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को 840 मिलीलीटर पानी में इतना पकाएँ कि 420 मिलीलीटर शेष रह जाए फिर उस को साफ़ कर लें और दिन में दो बार प्रयोग करें।

- **माउलउसूल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह मिर्गी, बलग़म की अधिकता से होने वाले सर दर्द व सुद्दे को समाप्त करता है।

औषधियाँः पोस्त-ए-बीख़-ए-करफ़्स और पोस्त-ए-बीख़-ए-राज़ियाना प्रत्येक 35 ग्राम, बीख़-ए-इज़्ख़िर, पोदीना कोही, सुंबुलुत्तीब और ज़रावन्द गर्द प्रत्येक 28 ग्राम, अफ़्तीमून 14 ग्राम, शाहतरह 24.5 ग्राम, पोस्त-ए-हलीला ज़र्द 28 ग्राम, मस्तगी 10.5 ग्राम, जअदह 14 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को 1680 मिलीलीटर पानी में इतना पकाएँ कि 420 मिलीलीटर शेष रह जाए फिर उस को साफ़ कर लें और 14 ग्राम अयारिज फ़ीक़रा मिला कर प्रयोग करें।

सेवन-मात्रः प्रतिदिन सुबह में 140 मिलीलीटर।

अनुपानः रोग़न-ए-बेद अन्जीर 3.5 ग्राम के साथ पिलाएँ।

- **माउलउसूल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Cold Ill Temperament और जिगर में लाभदायक है। यह ठंडे रोगों में भी लाभदायक है।

औषधियाँः पोस्त-ए-राज़ियाना, करफ़्स, कबर और इज़्ख़िर प्रत्येक 24.5 ग्राम, तुख़्म-ए-राज़ियाना और अनीसून प्रत्येक 12.25 ग्राम, क़न्तूरियून दक़ीक, आक़रक़रहा और ज़न्जबील प्रत्येक 10.5 ग्राम, नानख़्वाह , क़ुस्त और ज़रावन्द तवील प्रत्येक 7 ग्राम, शोनीज़, तुख़्म-ए-सुद्दाब, क़िर्दमाना और शीतरज प्रत्येक 8.75 ग्राम, जुन्द बेद स्तर 1.75 ग्राम, रासन और मस्तगी प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को 1260 मिलीलीटर पानी में पकाएँ ताकि 630 या 420 मिलीलीटर रह जाए। उस को साफ़ कर लें।

सेवन-मात्रः 135 मिलीलीटर।

अनुपानः रोग़न-ए-बादाम तल्ख़ 3.5 ग्राम के साथ पिलाएँ।

- **माउलउसूल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बलग़मी और Compound Fever में लाभदायक है।

औषधियाँः पोस्त-ए-बीख़-ए-राज़ियाना और ईर्सा प्रत्येक 24.5 ग्राम, बीख़-ए-इज़्ख़िर 17.5 ग्राम, गुल-ए-ग़ाफ़िस और अफ़्सन्तीन प्रत्येक 17.5 ग्राम, पोस्त-ए-हलीला ज़र्द 24.5 ग्राम, हलीला स्याह 21 ग्राम, बादआवरद और शुकाई प्रत्येक 14 ग्राम, मस्तगी 5.25 ग्राम, मवीज़ मुनक़्क़ा 52.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः पका कर साफ़ करें। 3 दिन प्रयोग करें।

- **माउलउसूल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह शुद्ध बलग़मी बुख़ारों में लाभदायक है।

औषधियाँः पोस्त राज़ियाना व बीख़-ए-करफ़्स, अस्लुस्सूस प्रत्येक 35 ग्राम, अनीसून, तुख़्म-ए-करफ़्स प्रत्येक 17.5 ग्राम, ग़ाफ़िस, अफ़्सन्तीन, बादआवरद प्रत्येक 14 ग्राम, क़न्तूरियून 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः 1620 मिलीलीटर पानी में पकाएँ कि आधा रह जाए।

सेवन-मात्रः 105 मिलीलीटर, गुलक़न्द 24.5 ग्राम के साथ।

- **माउलउसूल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Colic और Ascites Succatous में लाभदायक है। शरीर से चिपचिपे द्रव्यों को बाहर निकालता है। आमाशय व आँतों के अन्दर पाई जाने वाली गैस तोड़ता और बाहर निकालता है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-राज़ियाना, तुख़्म-ए-करफ़्स, नानख़्वाह, ज़ीरा किर्मानी, करोया, शईर, काशिम, शोनीज़ प्रत्येक 24 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को 1260 मिलीलीटर पानी में इतना पकाएँ कि 420 मिलीलीटर शेष रह जाए।उस को साफ़ कर लें।

सेवन-मात्रः रोज़ सुबह शाम 70 मिलीलीटर की मात्रा में।

अनुपानः रोग़न-ए-बेद अन्जीर10.5 ग्राम के साथ पिलाएँ।

- **माउलबुकूल का नुस्ख़ाः**

यह जिगर की गरमी और पीलिया आदि को समाप्त करता है। यह सुद्दों को खोलता है और मूत्रविरेचक है।

औषधियाँः बर्ग-ए-कसूस,बर्ग-ए-कासनी सब्ज़, काकनज ताज़ा, इनबुस्सअलब ताज़ा, लबलाब सब्ज़, राज़ियाना सब्ज़।

निर्माण-विधिः सब को थोड़ी थोड़ी मात्रा में लें। कूटने के बाद निचोड़ कर साफ़ कर लें फिर रात में आसमान के नीचे रखें।

सेवन-मात्रः सुबह में 70 से 210 मिलीलीटर की मात्रा में।

- **माउलबुकूल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Hepatitis, Spleenitis, Liver abscess, Jaundice में लाभदायक है। यह सुद्दों को खोलता है। यह जिगर और पित्त के सुद्दों के कारण होने वाले त्वचा के पीलेपन को दूर करता है।

औषधियाँः बर्ग-ए-कासनी सब्ज़, राज़ियाना सब्ज़, इनबुस्सअलब, किशनीज़ सब्ज़, लबलाब, कसूस, बर्ग-ए-हैयुलआम और बक़लतुलहुमक़ा।

निर्माण-विधिः सब को थोड़ी थोड़ी मात्रा में लें और कूटने के बाद निचोड़ कर साफ़ कर लें।

सेवन-मात्रः 105 से 175 मिलीलीटर की मात्रा में।

अनुपानः माउश्शईर या सिकन्जबीन के साथ पिलाएँ।

- **माउलबुकूल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बुख़ार के साथ होने वाले क़ूलन्ज वरमी हार में लाभदायक है।

औषधियाँः आब-ए-कासनी, आब-ए-काकनज, आब-ए-इनबुस्सअलब, आब-ए-ख़त्मी सफ़ेद प्रत्येक 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को पका कर साफ़ कर लें और उस में फ़ुलूस ख़्यार शंबर 35 ग्राम और रोग़न-ए-बनफ़्शा व रोग़न-ए-बादाम मिला कर प्रयोग कराएँ।

- **माउलहिन्दबा या आब-ए-कासनी ताज़ाः**

यह जिगर के सुद्दों को खोलता है। यह जलोदर रोग, पीलिया और पुराने बुख़ारों में लाभदायक है।

औषधियाँ और निर्माण-विधिः कासनी सब्ज़ के बर्ग और शाख़ को कूट कर निचोड़ लें और उस के साफ़ रस को पकाएँ और इस बीच उस की झाग उतारते रहें।

सेवन-मात्रः 105 मिलीलीटर की मात्रा में।

अनुपानः सिकन्जबीन 17.5 मिलीलीटर के साथ पिलाएँ।

- **माउश्शाहतरज या आब-ए-शाहतरहः**

यह Scabies और Itching में लाभदायक है। यह मूत्रविरेचक है। यह जिगर और तिल्ली के सुद्दों को खोलता है। यह पुराने बुख़ारों को समाप्त करता है। यह जले हुए द्रव्य, बलग़म, सफ़रा, ख़ून के लिए लाभदायक है।

औषधियाँ और निर्माण-विधिः शाहतरह सब्ज़ को कूट कर निचोड़ कर साफ़ रस प्राप्त कर लें। हलीला ज़र्द 10.5 ग्राम को आब-ए-शाहतरह 70 मिलीलीटर में रात भर भिगो कर रखें और सुबह दोबारा साफ़ कर लें। 35 ग्राम क़न्द डाल कर प्रयोग करें।

- **माउलक़रअ या आब-ए-कद्दू का नुस्ख़ाः**

यह जिगर की गरमी और पीलिया आदि में लाभदायक है। तेज़ बुख़ारों और प्यास को दूर करता है और रेचक है।

औषधियाँ और निर्माण-विधिः ताज़ा कद्दू लें जिस के बीज ठोस ना हुए हों। उस को पूरा ही आरद-ए-जौ के ख़मीर से लेप कर दें और किसी लकड़ी के ऊपर रख कर रात में ऐसे तन्दूर में रखें जिस की गरमी Moderate हो फिर उस को सुबह में निकाल लें और ख़मीर को दूर कर के उस का साफ़ पानी प्राप्त कर लें।

सेवन-मात्रः 210 मिलीलीटर की मात्रा में।

अनुपानः सुफ़ुफ़-ए-रेवन्द 7 ग्राम के साथ प्रयोग करें।

अगर यह चाहते हैं कि ज़्यादा हल्की तबरीद करनी है तो पिस्त-ए-जौ या क़न्द

सफ़ेद के साथ भी प्रयोग करा सकते हैं।

- **माउस्सवीक़ का नुस्ख़ाः**

यह Billious diarrhoea, Fever (Billious Remittant) Hyperpyrexia और प्यास को दूर करता है।

औषधियाँ और निर्माण-विधिः पिस्त-ए-जौ बिरयाँ 35 ग्राम को 135 मिलीलीटर साफ़ पानी में मिलाएँ और साफ़ कर लें।

सेवन-मात्रः आवश्यकतानुसार मात्रा में प्रयोग करें।

अनुपानः सुफ़ुफ़-ए-तबाशीर और समग़-ए-अरबी 7 ग्राम के साथ प्रयोग करें।

- **मरक़ुद्दीक का नुस्ख़ाः**

यह Tremor, दमा और जोड़ो के दर्द में लाभदायक है। थोड़ी मात्रा में बिस्फ़ाइज फ़िस्तक़ी के साथ प्रयोग करने से मिर्रा सौदा को बाहर निकालता है, करफ़्स और शिब्त के साथ प्रयोग करने से क़ूलन्ज को खोलता है और Tremor अथवा जोड़ो के दर्द में लाभ पहुँचाता है और ख़सक के साथ पका कर पिलाने से यह पेशाब लाता है।

औषधियाँ और निर्माण-विधिः एक बहुत अधिक बूढ़ा मुर्ग़ा ज़बह कर के उस के परों को निकाल दें और पेट से अंतड़ियों को निकाल कर साफ़ कर दें। फिर उस के पेट में बिस्फ़ाइज अर्धकुटा कर के, शिब्त और करफ़्स भर कर सिल दें और सिफ़ाल की देग में रख कर हल्की आँच पर इतना पकाएँ कि वह अच्छी तरह गल जाए। तत्पश्चात उस को साफ़ कर लें और उस का शोरबा पिएँ। अगर उस के पेट में ख़ार-ए-ख़सक भर कर पकाएँ और प्राप्त शोरबा पिएँ तो Anuria, Nephralgia में लाभ पहुँचता है।

- **नजूज-ए-तुफ़्फ़ाह अर्थात अर्क़-ए-सेब का नुस्ख़ाः**

यह सू-ए-मिज़ाज बारिद से होने वाली दिल की कमज़ोरी में लाभदायक है। यह Stomachic, Tonic और Exhilarant है।

औषधियाँः सेब शीरीं 330 की संख्या में, गुल-ए-सुर्ख़, नअनाअ, ऊद हिन्दी ताज़ा, बर्ग-ए-मूरद प्रत्येक 70 ग्राम, दार-ए-चीनी, क़रन्फ़ुल, ऊद हिन्दी प्रत्येक 35 ग्राम, बहमन सुर्ख़, बहमन सफ़ेद प्रत्येक 17.5 ग्राम, गावज़बान, बादरन्जबोया, सुंबुलुत्तबी प्रत्येक 24.5 ग्राम, मस्तगी, ज़ाफ़रान प्रत्येक 10.5 ग्राम, अंबर 3.5 ग्राम, मुश्क 7 ग्राम, गुलाब ख़ालिस 810 मिलीलीटर।

निर्माण-विधिः सेब शीरीं को पोस्त और तुख़्म से पाक कर लें और अन्य सभी

औषधियासें को अर्धकुटा कर लें फिरसभी औषधियों को 1620 मिलीलीटर पानी और 810 मिलीलीटर अर्क़-ए-गुलाब में एक रात और दिन भिगो कर रखें। तत्पश्चात अर्क़-ए-गुलाब की भाँति अर्क़ निकालें और जिस पात्र में अर्क़ टपक रहा हो उस में नियमानुसार मुश्क, अंबर, ज़ाफ़रान और मस्तगी को लटकाएँ।

- **नजूज-ए-तुफ़्फ़ाह (अर्क़-ए-सेब) का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गरम स्वभाव के व्यक्तियों के लिए अनुकूल है। यह दिल, दिमाग़ और जिगर की कमज़ोरी में लाभदायक है।

औषधियाँः पोस्त और तुख़्म से पाक किया हुआ सेब शीरीं 300 की संख्या में, बहमन सुर्ख़, बहमन सफ़ेद, ऊद ख़ाम, गुल-ए-सुयूती, गुल-ए-गावज़बान, गुल-ए-नीलोफ़र प्रत्येक 24.5 ग्राम, ज़ाफ़रान 10.5 ग्राम, मुश्क और अंबर अशहब प्रत्येक 3.5 ग्राम, अर्क़-ए-गुलाब, अर्क़-ए-बेद, अर्क़-ए-बेदमुश्क प्रत्येक 810 मिलीलीटर, आब-ए-ख़ालिस 1620 मिलीलीटर।

निर्माण-विधिः अर्क़-ए-गुलाब की भाँति अर्क़ निकालें और उचित मात्रा में पिएँ।

- **ख़ल्लुलउन्सुल का नुस्ख़ाः**

यह वो सिर्का है जिस में उन्सुल डाला हुआ रहता है और उस उन्सुल को सिर्का में डाल कर पकाया जात है। यह बहुत ज़्यादा लाभदायक है। इस का अर्क़ दमा और बवासीर में लाभदायक है, त्वचा के रंग को साफ़ करता है, पेट दर्द और मिर्गी में लाभदायक है, आवाज़ को साफ़ करता है, सीने और फेफड़े के क़स्बात को गाढ़े बलग़म से पाक करता है। अगर इस से मज़मज़ह किया जाए तो यह दाँतों को मज़बूत करता है और मुँह की गंध को सुगंधित करता है। अगर इस को कान में क़तूर किया जाए तो उस की गरमी को दूर करता है।

औषधियाँ और निर्माण-विधिः सफ़ेद रंग की ख़ाम उन्सुल जो कि ना तो बहुत बड़ी हो औन ना छोटी ले कर लकड़ी के चाकू से टुकड़े टुकड़े कर लें। सूती कपड़े में रख कर इस प्रकार मलें कि वो अलग अलग हो जाए। उस को चालीसी दिनों तक धूप में लटका दें। तत्पश्चात उस में उन्सुल 810 ग्राम लेकर पुराने सिर्का-ए-अंगूरी 6480 मिलीलीटर में डालें और सरतान के प्रारंभ से असद के अंत तक दो महीन धूप में रखें और आवश्यकता के समय 7 ग्राम की मात्रा से प्रयोग करना प्रारंभ करें। प्रतिदिन थोड़ी मात्रा में बढ़ाते रहें यहाँ तक कि 70 ग्राम तक पहुँच जाए।

- **मुर्री का नुस्ख़ाः**

इस को फ़ारसी में आबकामह और अरबी में मुर्री कहते हैं। जो मुर्री, जौ की

ख़मीर से तैयार की जाती है वह बेहतर होती है। यह आमाशयवर्धक है, पाचक है और मुँह की गंध को सुगंधित करती है। यह बलग़म और आमाशय के तरल पदार्थों को सोखती है। यह **Coxalgia, Sciatica** और जोड़ों के दर्द में लाभदायक है। पागल कुत्ते के काटे में लाभदायक है। यह **Remover** और **Demulscent** है। यह कृमिनाशक है। इस को क़ूलन्ज के लिए प्रयोग किए जाने वाले हुक़नों में सम्मिलित किया जाता है।

औषधियाँ और निर्माण-विधिः आरद-ए-जौ से पकाई गई ताज़ा रोटी लेकर बिना पानी में बुझाए ताज़ा खम में रखें और उस के सर को ढक दें यहाँ तक कि रोटी ठंडी हो जाए। अब उस को कूट कर पुराने सिर्का-ए-अंगूरी में डाल कर ख़मीर तैयार करें। उस ख़मीर को दस दिनों तक धूप में रखें और गरम औषधियों को कूट छान कर उस में सम्मिलित करें और प्रतिदिन थोड़ी मात्रा में सिर्का डालते रहें ताकि वह सूखने ना पाएँ फिर दूसरे दिन पानी निकाल कर ख़मीर को ताज़ा कर लें और धूप में रख कर सुखा लें। तत्पश्चात क़ुर्स तैयार कर के सुरक्षित कर लें। जब इच्छा हो तो इस ख़मीर में से 420 ग्राम लेकर पुराने तेज़ सिर्का 420 मिलीलीटर में मिलाएँ और फ़िलफ़िल, क़रन्फ़ुल, ज़न्जबील, दार-ए-चीनी, ज़ीरा किर्मानी और करोया जैसी को एक साथ कूट कर एक पोटली में बाँधें और उस का मुँह बन्द कर के सिर्का के पात्र में डाल दें फिर सरतान के प्रारंभ से असद के अंत तक दो महीने धूप में रखें और उस के बाद प्रयोग करें।

❑❑❑

## चतुर्थ खण्ड
# द्वितीय अध्याय

# विरेचक मतबूख़ के नुस्ख़े

- **मतबूख़-ए-हलीला का नुस्ख़ाः**

यह सफ़रा का विरेचक है। यह Scabies और Itching में लाभदायक है। यह जिगर और पीलिया के लिए भी लाभकारी है।

औषधियाँः पोस्त-ए-हलीला ज़र्द 28 ग्राम, आलू स्याह 20 की संख्या में, सपिस्ताँ 30 दाना, शाहतरह और सना मक्की प्रत्येक 17.5 ग्राम, गुल-ए-सुर्ख़ 14 ग्राम, उन्नाब 10 की संख्या में, राज़ियाना, तुख़्म-ए-कसूस और तुख़्म-ए-कासनी प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः इन में से कूटने योग्य औषधियों को अर्धकुटा कर लें फिर सब को एक साथ 1260 मिलीलीटर पानी में इतना पकाएँ कि वह आधा शेष रह जाए।उस को साफ़ कर लें।

तत्पश्चात शीर-ए-खिशत, तुरन्जबीन और फ़ुलूस-ए-ख़्यार शंबर प्रत्येक 35 ग्राम मिलाएँ और मल छान कर साफ़ कर लें।

अनुपानः रोग़न-ए-बनफ़्शा और रोग़न-ए-बादाम 3.5 ग्राम की मात्रा में मिला कर पिलाएँ।

- **मतबूख़-ए-हलीला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Scabies और Itching के रोगियों के लिए लाभदायक है। यह आमाशयवर्धक है और सफ़रा एवं सौदा का विरेचक है।

औषधियाँः पोस्त-ए-हलीला ज़र्द 52.5 ग्राम, सना मक्की, शाहतरह प्रत्येक 17.5 ग्राम, अफ़्सन्तीन 10.5 ग्राम, गुल-ए-सुर्ख़, बिस्फ़ाइज प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को नियमानुसार पकाएँ और तुरन्जबीन 52.5 ग्राम सम्मिलित करें फिर साफ़ कर के पिएँ।

- **मतबूख़-ए-हलीला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह चौथिया बुख़ार के रोगियों के लिए लाभदायक है। यह सौदा और गाढ़े

बलग़म का विरेचक है।

औषधियाँः हलीला काबुल और हलीला ज़र्द प्रत्येक 17.5 ग्राम, अफ़्तीमून 24.5 ग्राम, आलू स्याह 20 की संख्या में, अफ़्सन्तीन रूमी 14 ग्राम, उस्तुखुद्दूस 10.5 ग्राम, सना मक्की 17.5 ग्राम, मवीज़ मुनक़्क़ा 70 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को पका कर साफ़ कर लें। ग़ारीक़ून, मिल्ह-ए-निफ़्ती प्रत्येक 1.75 ग्राम, सिब्र ज़र्द 416 मिलीग्राम, ख़रबक़ स्याह 416 मिलीग्राम कूट छान लें और हब्ब तैयार करें।

सेवन-विधिः पहले उपर्युक्त हब्ब खाएँ फिर मतबूख पिएँ।

- **मतबूख़-ए-फ़वाकेह का नुस्ख़ाः**

यह Hyperpyrexia में लाभदायक और Antibillious है।

औषधियाँः सना मक्की 24.5 ग्राम, बनफ़्शा, इनबुस्सअलब, नीलोफ़र प्रत्येक 10.5 ग्राम, उन्नाब, सपिस्ताँ, आलू स्याह प्रत्येक 20 की संख्या में, गुल-ए-सुर्ख़ 14 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को 1260 मिलीलीटर पानी में इतना पकाएँ कि वह आधा रह जाए। ठंडा कर के अच्छी तरह मिला लें।

तत्पश्चात तमर हिन्दी और शीर-ए-खिशत प्रत्येक 35 ग्राम, तुरन्जबीन 70 ग्राम उस में मिलाएँ और मल छान कर दोबारा साफ़ करने के बाद पिलाएँ।

- **मतबूख़-ए-फ़वाकेह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह सफ़रा का विरेचक है। गरम स्वभाव और सफ़रावी बुख़ारों में लाभदायक है।

औषधियाँः सना मक्की 17.5 ग्राम, गुल-ए-नीलोफ़र, बनफ़्शा, गुल-ए-सुर्ख़ और पोस्त-ए-हलीला ज़र्द प्रत्येक 14 ग्राम, अफ़्सन्तीन रूमी, तुख़्म-ए-ख़्यारैन, तुख़्म-ए-कासनी और पोस्त-ए-राज़ियाना प्रत्येक 10.5 ग्राम, उन्नाब 20 दाना, सपिस्ताँ 30 दाना, आलू बुख़ारा, आलू स्याह और मिशमिश प्रत्येक 10 दाना, तमर-ए-हिन्दी, ज़रिश्क और मवीज़ तायफ़ी प्रत्येक 45 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को पका कर साफ़ कर लें फिर तुरन्जबीन 52.5 ग्राम, शीर-ए-खिशत और फ़ुलूस-ए-ख़्यार शंबर प्रत्येक 35 ग्राम उस में मिला कर पिलाएँ। अगर इस को अधिक प्रभावशाली बनाना चाहें तो इस में रेवन्द चीनी 832 मिलीग्राम और तुर्बुद 1.75 ग्राम सम्मिलित करें।

- **मतबूख़-ए-फ़वाकेह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Billious fevers, Typhoid fever, Headache और गरम स्वभाव के व्यक्तियों के लिए लाभदायक है।

औषधियाँः बनफ़्शा, नीलोफ़र और पोस्त-ए-हलीला ज़र्द प्रत्येक 10.5 ग्राम, उन्नाब 15 दाना, तमर-ए-हिन्दी 17.5 ग्राम, तुख़्म-ए-कासनी और सना मक्की प्रत्येक 14 ग्राम, तुरन्जबीन 52.5 ग्राम, शीर-ए-खिशत 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को पका कर साफ़ कर लें फिर तुरन्जबीन 52.5 ग्राम, शीर-ए-खिशत और फ़ुलूस-ए-ख़्यार शंबर प्रत्येक 35 ग्राम उस में मिला कर पिलाएँ। अगर इस को अधिक प्रभावशाली बनाना चाहते हों तो इस में रेवन्द चीनी 832 मिलीग्राम और तुर्बुद 1.75 ग्राम सम्मिलित करें।

- **मतबूख़-ए-फ़वाकेह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Billious fevers, Typhoid fever, Headache और गरम स्वभाव के व्यक्तियों के लिए लाभदायक है।

औषधियाँः बनफ़्शा, नीलोफ़र और पोस्त-ए-हलीला ज़र्द प्रत्येक 10.5 ग्राम, उन्नाब 15 दाना, सपिस्ताँ 20 दाना, आलू स्याह और आलू बुख़ारा प्रत्येक 10 दाना, तमर-ए-हिन्दी 17.5 ग्राम, तुख़्म-ए-कासनी और सना मक्की प्रत्येक 14 ग्राम, तुरन्जबीन 52.5 ग्राम, शीर-ए-खिशत 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को पका कर साफ़ कर लें। तुरन्जबीन, शीर-ए-खिशत सम्मिलित करें और दोबारा साफ़ कर के पिलाएँ।

- **मतबूख़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Pleurisy, रक्तनिष्ठिवान, तेज़ बुख़ार में लाभदायक है।

औषधियाँः सना मक्की 17.5 ग्राम, बनफ़्शा, नीलोफ़र प्रत्येक 14 ग्राम, उन्नाब और सपिस्ताँ प्रत्येक 20 दाना, तुख़्म-ए-कासनी और ख़ुब्बाज़ी प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को पका कर साफ़ करें। शीर-ए-खिशत, तुरन्जबीन प्रत्येक 52.5 ग्राम मिला कर दोबारा साफ़ कर के पिलाएँ।

- **मतबूख़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गर्मी से होने वाले मस्तिष्कावरण, Headache और Typhoid fever में लाभदायक है।

औषधियाँः सना मक्की 17.5 ग्राम, बनफ़्शा और नीलोफ़र प्रत्येक 14 ग्राम, तुख़्म-ए-कासनी 10.5 ग्राम, आलू, उन्नाब और सपिस्ताँ प्रत्येक 20 दाना, फ़ुलूस-ए-ख़्यार शंबर और तुरन्जबीन प्रत्येक 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः नियमानुसार सभी औषधियों को पका कर साफ़ कर लें और आवश्यकतानुसार पिलाएँ।

- **मतबूख़ का अन्य नुस्ख़ा:**

यह Pleurisy, Pneumonia, Cough में लाभदायक है।

औषधियाँ: बनफ़्शा, नीलोफ़र, ख़ुब्बाज़ी और अस्लुस्सूस मुक़श्शर प्रत्येक 10.5 ग्राम, पर्सियाउशा और ज़ूफ़ा प्रत्येक 7 ग्राम, उन्नाब और सपिस्ताँ प्रत्येक 20 दाना, तुख़्म-ए-ख़त्मी 3 दाना, मवीज़ मुनक़्क़ा 35 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को पका कर साफ़ कर लें। तुरन्जबीन और फ़ुलूस-ए-ख़्यार शंबर प्रत्येक 35 ग्राम मिला कर पिलाएँ।

- **मतबूख़-ए-अफ़्सन्तीन का नुस्ख़ा:**

यह आमाशय की कमज़ोरी में लाभदायक है।

औषधियाँ: अफ़्सन्तीन 17.5 ग्राम, गुल-ए-सुर्ख़ 14 ग्राम, सुंबुलुत्तबी 7 ग्राम।

निर्माण-विधि: सभी औषधियों को पका कर साफ़ कर लें फिर तुरन्जबीन 35 ग्राम सम्मिलित करके पिलाएँ।

- **मतबूख़ का अन्य नुस्ख़ा:**

यह सफ़रा मुहर्रक़, बलग़म मुहर्रक़ और सौदा मुहर्रक़ का विरेचक है। यह सौदावी रोगों में भी लाभदायक है।

औषधियाँ: सना मक्की 24.5 ग्राम, गुल-ए-सुर्ख़ 14 ग्राम, पोस्त-ए-हलीला ज़र्द, पोस्त-ए-हलीला स्याह प्रत्येक 17.5 ग्राम, बिस्फ़ाइज फ़िस्तक़ी, अस्लुस्सूस मुक़श्शर, राज़ियाना प्रत्येक 7 ग्राम, उस्तुख़ुद्दूस, पर्सियाउशाँ, शाहतरह, गावज़बान, बनफ़्शा, अफ़्तीमून, नीलोफ़र प्रत्येक 10.5 ग्राम मवीज़ मुनक़्क़ा और सपिस्ताँ प्रत्येक 30 दाना।

निर्माण-विधि: सब को 1260 मिलीलीटर पानी में इतना पकाएँ कि आधा रह जाए। अंत में अफ़्तीमून को सूती कपड़े की पोटली में रख कर उस में डालें, आग से उतार कर अच्छी तरह मलें फिर गुलक़न्द आफ़्ताबी 35 ग्राम, रोग़न-ए-बादाम में चर्ब किया हुआ फ़ुलूस-ए-ख़्यार शंबर व तुरन्जबीन प्रत्येक 17.5 ग्राम उस में सम्मिलित कर के दोबारा मलें और साफ़ कर के पिलाएँ।

- **मतबूख़-ए-सूरन्जान का नुस्ख़ा:**

यह जोड़ों के दर्द और Gout में लाभदायक है।

औषधियाँ: सना मक्की 24.5 ग्राम, राज़ियाना, अनीसून और क़न्तूरियून दक़ीक़ प्रत्येक 7 ग्राम, गुल-ए-सुर्ख़ और पोस्त-ए-हलीला काबुली प्रत्येक 14 ग्राम, सूरन्जान मिश्री 17.5 ग्राम, पर्सियाउशाँ, गावज़बान, बादरन्जबोया प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को पकाएँ और साफ़ करने के बाद गुलक़न्द 35 ग्राम व

तुरन्जबीन 70 ग्राम सम्मिलित कर के पिलाएँ।

- **मतबूख़-ए-सूरन्जान का अन्य नुस्ख़ाः**

यह जले हुए देहद्रव्यों और चिपचिपे बलग़म को बाहर निकालता है। यह गरम स्वभाव के व्यक्तियों को लाभ पहुँचाता है। यह जोड़ों के दर्द और Gout में लाभदायक है। गरमी के मौसम में लाभदायक है।

औषधियाँः सना मक्की 24.5 ग्राम, अस्लुस्सूस मुक़श्शर, सूरन्जान मिश्री, इनबुस्सअलब प्रत्येक 17.5 ग्राम, तुर्बुद मुक़श्शर, राज़ियाना प्रत्येक 3.5 ग्राम, ज़न्जबील 1.75 ग्राम, तुख़्म-ए-कासनी, बनफ़्शा प्रत्येक 10.5 ग्राम, अन्जीर, उन्नाब प्रत्येक 10 और सपिस्ताँ 20 दाना, गुलक़न्द, तुरन्जबीन, ख़्यार शंबर प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को पकाएँ और तुरन्जबीन आदि मिला कर पिलाएँ।

- **मतबूख़-ए-अफ़्तीमून का नुस्ख़ाः**

यह Scabies, Ring worm, Leucoderma, Ptyriasis Nigra और Melancholia जैसे सौदावी रोगों में लाभदायक है।

औषधियाँः हलीला स्याह 35 ग्प्रम, बिस्फ़ाइज नीमकोब 17.5 ग्राम, अफ़्तीमून 35 ग्राम, सना मक्की और उस्तुख़ुद्दूस प्रत्येक 33.5 ग्राम, अनीसून और बादियान प्रत्येक 7 ग्राम, ख़रबक़ स्याह 832 मिलीग्राम, तुर्बुद तराशीदा 4.332 ग्राम, ज़न्जबील 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को पका कर साफ़ कर लें। ग़ारीक़ून, हजर-ए-अरमनी, लाजवर्द, मिल्ह-ए-निफ़्ती प्रत्येक 832 मिलीग्राम को हल्का कूट छान कर उपर्युक्त मतबूख में सम्मिलित करें और पिलाएँ। अगर इस को और अधिक प्रभावशाली बनाना चाहें तो थोड़ी मात्रा में शहम-ए-हन्ज़ल और सिब्र सक़ूतरी सम्मिलित करें।

- **मतबूख़-ए-अफ़्तीमून का अन्य नुस्ख़ाः**

यह सफ़रा का विरेचक है, जले हुए सौदा का विरेचक है और बलग़म का विरेचक है। यह Leprosy, Psychosis/Mania, Hallucinations और अन्य सभी सौदावी रोगों में लाभदायक है।

औषधियाँः सना मक्की 24.5 ग्राम, बनफ़्शा, नीलोफ़र और तुख़्म-ए-कासनी प्रत्येक 14 ग्राम, बादरन्जबोया, गावज़बान, पोस्त-ए-हलीला, आमला मुनक़्क़ा, उस्तुख़ुद्दूस, बिस्फ़ाइज, पोस्त-ए-हलीला ज़र्द और पोस्त-ए-हलीला काबुली प्रत्येक 10.5 ग्राम, वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़ 24.5 ग्राम, मवीज़ मुनक़्क़ा 35 ग्राम, अस्लुस्सूस तराशीदा, तुख़्म-ए-शाहतरह और कसूस प्रत्येक 10.5 ग्राम, वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़ और अफ़्तीमून

प्रत्येक 24.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को 2520 मिलीलीटर पानी में इतना पकाएँ कि आधा रह जाए। अंत में अफ़्तीमून को सूती कपड़े की पोटली में बाँध कर उस में डालें और दो तीन बार पकाएँ।आग से उतार कर साफ़ कर लें। फ़ुलूस-ए-ख़्यार शंबर, तुरन्जबीन प्रत्येक 35 ग्राम मिलाएँ और दोबारा साफ़ कर के पिलाएँ।

- **मतबूख़-ए-अफ़्तीमून का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Melancholia, Ptyriasis Nigra, Leucoderma, Scabies, Ring worm और सभी सौदावी रोगों में लाभदायक है।

औषधियाँः हलीला स्याह 35 ग्राम, अफ़्तीमून 10.5 ग्राम, बिस्फ़ाइज 17.5 ग्राम, सना मक्की 24.5 ग्राम, उस्तुखुद्दूस 35 ग्राम, तुर्बुद तराशीदा 7 ग्राम, ग़ारीक़ून 1664 मिलीग्राम, ख़रबक़ स्याह 1040 मिलीग्राम, सिब्र 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को पका कर मतबूख़ तैयार करें।

- **मतबूख़-ए-अफ़्तीमून का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Melancholia और सौदावी रोगों में लाभदायक है।

औषधियाँः सूती कपड़े में बाँधा हुआ अफ़्तीमून, पोस्त-ए-हलीला काबुली, उस्तुखुद्दूस, मवीज़ मुनक़्क़ा प्रत्येक 14 ग्राम, बिस्फ़ाइज फ़िस्तक़ी 10.5 ग्राम, तुर्बुद सफ़ेद तराशीदा 17.5 ग्राम, ज़न्जबील 416 मिलीग्राम, सना मक्की 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को 840 मिलीलीटर पानी में इतना पकाएँ कि आधा रह जाए फिर उसे साफ़ कर के पिलाएँ।

- **मतबूख़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह सौदावी और सफ़रावी रोगों में लाभदायक है।

औषधियाँः पोस्त-ए-हलीला ज़र्द, पोस्त-ए-हलीला काबुली प्रत्येक 7 ग्राम, अफ़सन्तीन रूमी, अफ़्तीमून प्रत्येक 8.75 ग्राम, तुर्बुद सफ़ेद 17.5 ग्राम, आलू स्याह 15 की संख्या में, तमर-ए-हिन्दी 35 ग्राम, फ़ुलूस-ए-ख़्यार शंबर 35 ग्राम, तुरन्जबीन 70 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को पकाएँ और साफ़ करने के बाद उस में ख़्यार शंबर और तुरन्जबीन सम्मिलित करें। दोबारा साफ़ कर के हल्का गरम पिलाएँ।

- **मतबूख़-ए-ख़्यार शंबर का नुस्ख़ाः**

यह जले हुए देहद्रव्यों को शरीर से बाहर निकालता है।

औषधियाँ: पोस्त-ए-हलीला ज़र्द, तमर-ए-हिन्दी प्रत्येक 52.5 ग्राम, उन्नाब और आलू बुख़ारा प्रत्येक 20 दाना, मवीज़ मुनक़्क़ा 70 ग्राम, गुल-ए-सुर्ख़ 17.5 ग्राम, बनफ़्शा 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को 1215 मिलीलीटर पानी में इतना पकाएँ कि वह आधा शेष रह जाए। उस को साफ़ कर लें और रोग़न-ए-बादाम में चर्ब किया हुआ फ़ुलूस-ए-ख़्यार शंबर 70 ग्राम की मात्रा में सम्मिलित करें और दोबारा साफ़ कर के पिलाएँ।

- **मतबूख़-ए-तुर्बुद का नुस्ख़ा:**

यह बलग़म का विरेचक है। यह सर से थोड़ी मात्रा में सौदा को भी निकालता है। यह Gastritis और आमाशय की ठंडक में लाभदायक है।

औषधियाँ: सना मक्की, गुल-ए-सुर्ख़, पोस्त-ए-हलीला, बनफ़्शा, पोस्त-ए-हलीला काबुली, हलीला स्याह प्रत्येक 17.5 ग्राम, तुर्बुद सफ़ेद, समग़-ए-अरबी प्रत्येक 3.5 ग्राम, ज़न्जबील 1.75 ग्राम, बिस्फ़ासइज फ़िस्तक़ी, क़न्तूरियू नदक़ीक़, अफ़्तीमून, अफ़्सन्तीन रूमीप्रत्येक 14 ग्राम, गावज़बान, बादरन्जबोया, जअदह, बीख़-ए-राज़ियाना, बीख़-ए-करफ़्स, तुख़्म-ए-कसूस प्रत्येक 10.5 ग्राम, जरन्बाद, सुंबुलुत्तीब प्रत्येक 3.5 ग्राम, ज़बीब मुनक़्क़ा 7 ग्राम, सपिस्ताँ 30 दाना, अन्जीर 10 दाना, मिशमिश गर्द 10 दाना।

निर्माण-विधि: सभी औषधियों को नियमानुसार पका कर साफ़ कर लें। तत्पश्चात शीर-ए-खिशत 45 ग्राम, तुरन्जबीन, गुलक़नद, मुरब्बा बनफ़्शा और शरबत-ए-दीनार प्रत्येक 17.5 ग्राम सम्मिलित करें और दोबारा साफ़ कर के पिलाएँ।

- **मतबूख़-ए-ग़ारीक़ूनका नुस्ख़ा:**

यह बलग़म का विरेचक है। यह सर से थोड़ी मात्रा में सौदा को भी निकालता है। यह Gastritis और आमाशय की ठंडक में लाभदायक है।

औषधियाँ: पोस्त-ए-हलीला ज़र्द 35 ग्राम, पोस्त-ए-हलीला काबुली और हलीला स्याह प्रत्येक 24.5 ग्राम, पोस्त-ए-बलीला और आमला मुनक़्क़ा प्रत्येक 14 ग्राम, मवीज़ तायफ़ी मुनक़्क़ा 35 ग्राम, आलू स्याह 2 दाना, गावज़बान, बादरन्जबोया, गुल-ए-ग़ाफ़िस और उस्तुख़ुद्दूस प्रत्येक 10.5 ग्राम, बिस्फ़ासइज नीमकोब 35 ग्राम, ग़ारीक़ून 3.5 ग्राम, अफ़्तीमून 35 ग्राम, राज़ियाना, क़रन्फ़ुल, अनीसून और साज़ज हिन्दी प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: सभी औषधियों को नियमानुसार पका कर साफ़ कर लें। तत्पश्चात ग़ारीक़ून और सिब्र सक़ूतरी प्रत्येक 3.5 ग्राम, मिल्ह-ए-निफ़्ती और हजर-ए-लाजवर्द प्रत्येक 832 मिलीग्राम, शहम-ए-हन्ज़ल 416 मिलीग्राम, शकर सुर्ख़ 35 ग्राम सम्मिलित

करें और जुल्लाब के साथ मिला कर पिलाएँ।

- **मतबूख़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह सौदावी और बलग़मी रोगों में लाभदायक है।

औषधियाँः हलीला स्याह और तमर-ए-हिन्दी प्रत्येक 35 ग्राम, गावज़बान और बालंगो प्रत्येक 14 ग्राम, आलू स्याह 20 दाना, मवीज़ तायफ़ी 70 ग्राम, उस्तुखुद्दूस और बिस्फ़ासइज प्रत्येक 10.5 ग्राम, राज़ियाना, अनीसून और शाहतरह प्रत्येक 7 ग्राम, अफ़्तीमून 24.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को पका कर साफ़ कर लें। तत्पश्चात ग़ारीक़ून और सिब्र सक़ूतरी प्रत्येक 3.5 ग्राम, मिल्ह-ए-निफ़्ती और हजर-ए-लाजवर्द प्रत्येक 832 मिलीग्राम, शहम-ए-हन्ज़ल 624 मिलीग्राम, शकर सुर्ख़ 35 ग्राम सम्मिलित करें और सब को अच्छी तरह मिलाने के बाद दोबारा साफ़ कर के पिलाएँ।

- **मतबूख़-ए-ज़ूफ़ा का नुस्ख़ाः**

यह Pleurisy, सीने के दर्द और खाँसी में लाभदायक है।

औषधियाँः सना मक्की 17.5 ग्राम, उन्नाब 10 दाना, सपिस्ताँ 20 दाना, अन्जीर सफ़ेद 10 दाना, मवीज़ तायफ़ी 15 दाना, अस्लुस्सूस तराशीदा 10.5 ग्राम, पर्सियाउशाँ और तुख़्म-ए-खत्मी प्रत्येक 3.5 ग्राम, जौ मुक़श्शर नीमकोब 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को 420 मिलीलीटर पानी में पकाएँ और अंत में नियमानुसार 35 ग्राम शकर सुर्ख़ सम्मिलित कर के पिलाएँ।

- **मतबूख़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बलग़मी बुख़ारों में लाभदायक है।

औषधियाँः पोस्त-ए-हलीला काबुली 35 ग्राम, अफ़्तीमून 24.5 ग्राम, शुकाई, बादआवरद और गुल-ए-ग़ाफ़िस प्रत्येक 21 ग्राम, क़न्तूरियून दक़ीक़ 17.5 ग्राम, बीख़-ए-इज़्ख़िर 14 ग्राम, मवीज़ मुनक़्क़ा 70 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूटने योग्य को अर्धकुटा कर के 2100 मिलीलीटर पानी में भिगोएँ और इतना पकाएँ कि 420 मिलीलीटर रह जाए फिर उसे साफ़ कर लें।

सेवन-मात्रा व अनुपानः प्रतिदिन 105 मिलीलीटर, सिकन्जबीन के साथ पिलाएँ।

- **मतबूख़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह दमा और पुरानी बलग़मी खाँसी में लाभदायक है अथवा शरीर से गाढ़े

देहद्रव्यों को बाहर निकालता है।

औषधियाँ: सना मक्की 17.5 ग्राम, अस्लुस्सूस तराशीदा नीमकोब 10.5 ग्राम, अन्जीर ख़ुश्क 10 दाना, मवीज़ मुनक़्क़ा 52.5 ग्राम, तुख़्म-ए-राज़ियाना नीमकोब, ख़ुब्बाज़ी, पर्सियाउशाँ, बनफ़्शा ख़ुश्क, नीलोफ़र और ज़ूफ़ा प्रत्येक 10.5 ग्राम, उन्नाब और सपिस्ताँ प्रत्येक 20 दाना।

निर्माण-विधि: सभी औषधियों को 1260 मिलीलीटर पानी मेंइतना पकाएँ कि 420 मिलीलीटर शेष रह जाए फिर उसे साफ़ कर लें। तत्पश्चात उस में तुरन्जबीन और गुलक़न्द प्रत्येक 35 ग्राम सम्मिलित कर के मल छान लें और दोबारा साफ़ कर के 3.5 ग्राम रोग़न-ए-बादाम सम्मिलित करे और मतबूख़ तैयार करें।

सेवन-मात्रा: 175 मिलीलीटर की मात्रा में पिएँ।

- **मतबूख़ का अन्य नुस्ख़ा:**

यह Scabies and itching में लाभदायक है।

औषधियाँ: पोस्त-ए-हलीला ज़र्द 35 ग्राम, सना मक्की और शाहतरह प्रत्येक 17.5 ग्राम, तुख़्म-ए-कासनी 10.5 ग्राम, उन्नाब और सपिस्ताँ प्रत्येक 20 दाना, गुल-ए-सुर्ख़, अफ़्तीमून और बिस्फ़ाइज प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधि: सभी औषधियों को नियमानुसार पका कर साफ़ कर लें फिर तुरन्जबीन 52.5 ग्राम सम्मिलित कर के पिलाएँ।

- **मतबूख़ का अन्य नुस्ख़ा:**

यह मूत्रवर्धक और आर्तवजनक है।

औषधियाँ: मुश्कतरामशीअ, क़ैसूम और फ़रासियून प्रत्येक 17.5 ग्राम, आक़रक़हा, इज़्ख़िर, ऊद-ए-बलसाँ, क़ुस्त, कमाज़रयूस, अनीसून और नानख़्वाह प्रत्येक 10.5 ग्राम, फ़ूह 24.5 ग्राम, जअदह, सुद्दाब, तुख़्म-ए-करफ़्स और तुख़्म-ए-राज़ियाना प्रत्येक 14 ग्राम, तूतिया-ए-सुर्ख़ 35 ग्राम, वज 12.25 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को 2430 मिलीलीटर पानी में इतना पकाएँ कि 810 मिलीलीटर शेष रह जाए। उस को साफ़ कर लें।

सेवन-मात्रा:140 लीलीटर की मात्रा में पिलाएँ।

- **मतबूख़ का अन्य नुस्ख़ा:**

यह आर्तवजनक है।

औषधियाँ: असारून और सुद्दाब प्रत्येक 1.75 ग्राम, राज़ियाना, तूतिया-ए-सुर्ख़, दरमना तुर्की और तुख़्म-ए-करफ़्स प्रत्येक 7 ग्राम, अन्जीर 10 दाना।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को पका कर साफ़ कर लें और गुलक़न्द 35 ग्राम सम्मिलित कर के पिलाएँ।

- **मतबूख़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह आर्तवजनक है।

औषधियाँः तूतिया-ए-सुर्ख़, हुल्बा, अनीसून प्रत्येक 14 ग्राम, सुद्दाब 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को 1260 मिलीलीटर पानी में इतना पकाएँ कि 420 मिलीलीटर शेष रह जाए फिर साफ़ कर लें और थोड़ी मात्रा में शकर सम्मिलित करें।

सेवन-मात्राः प्रातिदिन सुबह में 24 मिलीलीटर की मात्रा में।

- **मतबूख़ का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः तूतिया-ए-सुर्ख़ 10.5 ग्राम, फ़रासियून और फ़ूह प्रत्येक 14 ग्राम, पोदीना 35 ग्राम, मुश्कतरामशीअ 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को 2100 मिलीलीटर पानी में इतना पकाएँ कि आधा रह जाए। उस को साफ़ कर लें और थोड़ी मात्रा में मैफ़ुख़्तज सम्मिलित करें और लगातार तीन दिनों तक पिलाएँ।

- **मतबूख़-ए-ग़ाफ़िस का नुस्ख़ाः**

यह पुराने बलग़मी बुख़ारों और बलग़मी चौथिया बुख़ार में लाभदायक है।

औषधियाँः पोस्त-ए-हलीला काबुली 35 ग्राम, अफ़्तीमून 24.5 ग्राम, बादआवरद और गुल-ए-ग़ाफ़िस प्रत्येक 21 ग्राम, क़न्तूरियून दक़ीक़ और बीख़-ए-इज़्ख़िर प्रत्येक 17.5 ग्राम, शाहतरह 14 ग्राम, मवीज़ मुनक़्क़ा 70 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को 2100 मिलीलीटर पानी में इतना पकाएँ कि आधा शेष रह जाए फिर उस को साफ़ कर लें।

सेवन-मात्राः प्रतिदिन 135 मिलीलीटर की मात्रा में।

अनुपानः 22.5 मिलीलीटर सिकन्जबीन के साथ पिएँ।

- **मतबूख़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह जिगर, तिल्ली के सू-ए-मिज़ाज हार में लाभदायक है।

औषधियाँः पोस्त-ए-हलीला ज़र्द 35 ग्राम, गुलक़न्द 3.5 ग्राम, हलीला स्याह, बीख़-ए-राज़ियाना, बीख़-ए-बादियान प्रत्येक 17.5 ग्राम, बीख़-ए-कासनी, तुख़्म-ए-कासनी प्रतयेक 14 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को पका कर मतबूख तैयार करें।

- **मतबूख़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह जिगर और तिल्ली के Ill Temperment में लाभदायक है। सुद्दों को खोलता है पीलिया में लाभदायक है।

औषधियाँः पोस्त-ए-हलीला ज़र्द, तुख़्म-ए-कासनी, शाहतरह, बीख़-ए-कासनी, सना मक्की प्रत्येक 17.5 ग्राम, गुल-ए-सुर्ख़ 3.5 ग्राम, इनबुस्सअलब 17.5 ग्राम, आलू-ए-बुख़ारा 52.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को नियमानुसार 420 मिलीलीटर पानी में इतना पकाएँ कि वह आधा शेष रह जाए। उस को साफ़ कर लें और उस में तुरन्जबीन सम्मिलित कर के पिलाएँ।

❑❑❑

## चतुर्थ खण्ड
# तृतीय अध्याय

# नकूअ के नुस्ख़े

- **नकूअ-ए-सपिस्ताँ का नुस्ख़ा:**

यह सफ़रा का विरेचक और सर दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँ: सपिस्ताँ 30 दाना, तमर-ए-हिन्दी 70 ग्राम, तुख़्म-ए-कासनी, तुख़्म-ए-काहू प्रत्येक 10.5 ग्राम, फ़ुलूस-ए-ख़्यार शंबर, तुरन्जबीन प्रत्येक 35 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को 1260 मिलीलीटर पानी में रात भर भिगोएँ और सुबह हाथों से मल छान कर साफ़ कर लें और पिएँ।

- **नकूअ-ए-हलीला का नुस्ख़ा:**

यह गर्मी से होने वाले सर दर्द में लाभदायक है। यह गरम स्वभाव के व्यक्तियों अथवा गरम हवा के लिए अनुकूल है।

औषधियाँ: पोस्त हलीला ज़र्द 52.5 ग्राम, आलू स्याह 100।

निर्माण-विधि: आलू को रात भर पानी में भिगोएँ और उस का रस प्राप्त कर के साफ़ कर लें। तत्पश्चात हलीला को उसी रस के साथ पत्थर के हावन में इतना घोटें कि हलीला का प्रभाव उस रस में आ जाए। अब उस को साफ़ कर लें और तुरन्जबीन 52.5 ग्राम सम्मिलित कर के दोबारा साफ़ करें और पिलाएँ।

- **नकूअ का अन्य नुस्ख़ा:**

यह वायुनाशी है, शरीर से गाढ़े द्रव्य निकालता है। यह ऐसे सर दर्द में लाभदायक है जो गाढ़ी गैस के कारण होता है।

औषधियाँ: सअद, सुंबुलुत्तबी, अफ़्सन्तीन, राज़ियाना,ज़ीरा किर्मानी, फ़ुक़ाह इज़्ख़िर, तुख़्म-ए-करफ़्स, नानख़्वाह प्रत्येक 24 ग्राम।

निर्माण-विधि: 1215 मिलीलीटर पानी में भिगो कर निकाल लें। सिब्र 35 ग्राम मिलाकर शीशा के पात्र में रख कर तीन दिन तक धूप में रखें। इस बीच रात के समय उस को किसी गरम कमरे में रख दिया करें। तीन दिन बाद प्रयोग करें।

*सेवन-मात्रा: 35 मिलीलीटर।*

अनुपानः रोग़न-ए-बेद अन्जीर 7 मिलीलीटर।

- **नक़ूअ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गर्मी से होने वाले सर दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँः आब-ए-कासनी 105 मिलीलीटर, सिब्र सक़ूतरी 1664 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को तीन दिन धूप में रखें और इस बीच रात को घर में रख लिया करें। फिर उस को साफ़ कर पिएँ।

- **नक़ूअ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह आमाशयवर्धक है। दिमाग़ से बुख़ारात को समाप्त करता है और दिमाग़ से देहद्रव्यों को बाहर निकालता है।

औषधियाँः अफ़्सन्तीन रूमी 35 ग्राम, असारून 17.5 ग्राम, क़न्तूरियून दक़ीक़ और मस्तगी प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को 1215 मिलीलीटर पानी में भिगोएँ फिर शीशा के पात्र में रख कर तीन दिन धूप में रखें। रात को गरम कमरे में रख लिया करें। साफ़ कर पिएँ।

सेवन-मात्राः चार दिनों तक 70 मिलीलीटर की मात्रा में।

अनुपानः रोग़न-ए-बादाम 3.5 ग्राम के साथ पिएँ।

- **नक़ूअ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह ऐसे सर दर्द में लाभदायक है जो तरल पदार्थों की अधिकता के कारण होता है और यह Brain cleanser है।

औषधियाँः अनीसून, तुख़्म-ए-करफ़्स, राज़ियाना प्रतयेक 7 ग्राम, मस्तगी, सुंबुलुत्तबी प्रेत्यक 5.25 ग्राम, उस्तुख़ुद्दूस, ग़ाफ़िस, कमाज़रयूस, अफ़्सन्तीन प्रत्येक 10.5 ग्राम, गुल-ए-सुर्ख़ 8.75 ग्राम, क़न्तूरियून दक़ीक़, असारून प्रत्येक 7 ग्राम, तुर्बुद 10.5 ग्राम, पोस्त बीख़-ए-करफ़्स, पोस्त बीख़-ए-राज़ियाना प्रत्येक 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को 1620 मिलीलीटर पानी में भिगोएँ फिर सिब्र 84 ग्राम की मात्रा में डाल कर नक़ूअ तैयार करें।

सेवन-मात्राः प्रतिदिन 70 मिलीलीटर की मात्रा में।

अनुपानः रोग़न-ए-बादाम 3.5 ग्राम के साथ पिएँ।

- **नक़ूअ-ए-बुज़ूर का नुस्ख़ाः**

औषधियाँः तुख़्म-ए-ख़रपज़ह, करफ़्स, अनीसून, राज़ियाना प्रत्येक 10.5 ग्राम की मात्रा में लें और सभी को नीमकोब कर लें, दोक़ू और मुश्क तरामशीअ प्रत्येक 7 ग्राम,

सुंबुल और अफ़सन्तीन प्रत्येक 14 ग्राम, हज़ार स्पन्द और अबहल प्रत्येक 5.25 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को 1215 मिलीलीटर पानी के साथ शीशे के पात्र में रख कर तीन दिन तक धूप में रखें और रात में घर में रख लिया करें। चौथे दिन हाथों से मल कर साफ़ करें।

सेवन-मात्राः 35 मिलीलीटर की मात्रा में।

अनुपानः रोग़न-ए-बादाम 3.5 ग्राम के साथ पिएँ।

- **नक़ूअ-ए-हुल्व का नुस्ख़ाः**

यह गरमी के करण होने वाले बुख़ारों में लाभदायक है।

औषधियाँः मिशमिश, उन्नाब, आलू स्याह प्रत्येक 15 दाना, बनफ़्शा, नीलोफ़र प्रत्येक 10.5 ग्राम, किशनीज़ ख़ुश्क और अदस मुक़श्शर प्रत्येक 10.5 ग्राम, तुख़्म-ए-कासनी 4.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः रात भर भिगोने के बाद मल कर साफ़ करें।

- **नक़ूअ-ए-हामिज़ का नुस्ख़ाः**

यह सफ़रा और गरमी की तेज़ी में आराम देता है।

औषधियाँः उन्नाब, मिशमिश प्रत्येक 15 दाना, आलू स्याह 7 दाना, तमर-ए-हिन्दी 17.5 ग्राम, नीलोफ़र, बनफ़्शा प्रत्येक 10.5 ग्राम, ज़रिश्क मुनक़्क़ा 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को रात भर भिगोएँ और आसमान के नीचे रखें फिर सुबुह साफ़ कर के पिएँ।

- **नक़ूअ-ए-फ़वाकेह का नुस्ख़ाः**

यह सफ़रा का विरेचक व सफ़रावी बुख़ार में लाभदायक है।

औषधियाँः आलू स्याह, आलू बअलबक्की प्रत्येक 20 की संख्या में, उन्नाब 30 की संख्या में, तमर-ए-हिन्दी 52.5 ग्राम, सपिस्ताँ 50 दाना, बनफ़्शा, तुख़्म-ए-ग़ाफ़िस प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को रात भर गरम पानी में भिगोएँ और आसमान के नीचे रखें फिर तुरन्जबीन 70 ग्राम, शकर 35 ग्राम, फ़ुलूस-ए-ख़्यार शंबर 24.5 ग्राम को एक साथ मिला कर गरम पानी में रात भर भिगोएँ और सुबुह साफ़ कर के पिलाएँ।

- **नक़ूअ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह सफ़रा का विरेचक और रेचक है। यह गरम स्वभाव के व्यक्तियों के लिए लाभदायक है और सफ़रा के कारण होने वाले सर दर्द को दूर करता है।

औषधियाँ: मिशमिश, उन्नाब प्रत्येक 10 दाना, आलू स्याह 7 दाना, तमर-ए-हिन्दी 35 ग्राम, नीलोफ़र, बनफ़्शा प्रत्येक 10.5 ग्राम, अनार दाना, ज़रिशक प्रत्येक 24 ग्राम।

निर्माण-विधि: रात भर पानी में भिगोएँ। सुबह मल छान कर साफ़ कर लें।

- **नकूअ का अन्य नुस्ख़ा:**

यह जिगर, तिल्ली के रोगियों के लिए लाभदायक है। पीलिया को समाप्त करता है, रेचक है और सफ़रा की तेज़ी को तोड़ता है।

औषधियाँ: मिशमिश, उन्नाब प्रत्येक 10 दाना, आलू स्याह 15 दाना, बनफ़्शा, नीलोफ़र प्रत्येक 10.5 ग्राम, तमर-ए-हिन्दी 35 ग्राम, सना मक्की, पोस्त-ए-हलीला ज़र्द प्रत्येक 17.5 ग्राम, किश्नीज़ ख़ुश्क, तुख़्म-ए-कासनी, तुख़्म-ए-कसूस, ग़ाफ़िस प्रत्येक 10.5 ग्राम, फ़ुलूस-ए-ख़्यार शंबर 52.5 ग्राम, शकर 70 ग्राम, बनफ़्शा 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को रात गरम पानी में भिगो कर सुबह हाथों से मल कर साफ़ कर लें। सफ़ूफ़-ए-रेवन्द चीनी 1.75 ग्राम, रोग़न-ए-बादाम 3.5 ग्राम, तुरन्जबीन 52.5 ग्राम मिला कर पिलाएँ।

- **नकूअ का अन्य नुस्ख़ा:**

यह सफ़रा का विरेचक और ख़ून की तेज़ी और जोश को ठंडा करता है। यह बिना किसी हानि के विरेचक है।

औषधियाँ: आलू बुख़ारा 15 दाना, तमर-ए-हिन्दी, शीर-ए-खिशत, तुरन्जबीन प्रत्येक 35 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को रात भर पानी में भिगोएँ और सुबह मल छान कर पिएँ।

- **नकूअ का अन्य नुस्ख़ा:**

यह गरमी के कारण बुख़ार और जिगर के सू-ए-मिज़ाज में भी लाभदायक है।

औषधियाँ: आलू स्याह 30 दाना, मवीज़ मुनक़्क़ा 70 ग्राम, तुख़्म-ए-कासनी, तुख़्म-ए-कसूस प्रत्येक 14 ग्राम, किशनीज़ ख़ुश्क 10.5 ग्राम, उन्नाब 20, सपिस्ताँ 30 दाना, तमर-ए-हिन्दी 35 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को तीन दिन धूप में रखें और रात में किसी गरम कमरे में रखें। तीन दिन बाद साफ़ कर के पिएँ।

सेवन-मात्रा: 210 मिलीलीटर की मात्रा में।

अनुपान: तुरन्जबीन 35 ग्राम के साथ पिएँ।

❑❑❑

चतुर्थ खण्ड

# चतुर्थ अध्याय

## नतूल के नुस्खे

- **नतूल का नुस्ख़ाः**

यह नींद लाता है और मस्तिष्कावरण में लाभदायक है।

औषधियाँः बनफ़्शा और तुख़्म-ए-कासनी प्रत्येक 17.5 ग्राम, पोस्त-ए-ख़शख़ाश, गुल-ए-सुर्ख़, तराशा-ए-कदू और बाबूना प्रत्येक 35 ग्राम, कशक-ए-जौ 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः 2100 मिलीलीटर पानी में इतना पकाएँ कि आधा शेष रह जाए।

प्रयोग-विधिः उस की भाप को सर तक पहुँचाएँ। गरम पानी को सर पर नतूल करें।

- **नतूल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह ठंडक के कारण होने वाले सर दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँः बाबूना, इकलीलुलमलिक, नम्माम, मरज़न्जोश, सअतर, वरक़-ए-ग़ार और ब्रन्जासिफ़ प्रत्येक 24 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को पकाएँ।

प्रयोग-विधिः उस की भाप को सर तक पहुँचाएँ। गरम पानी को सर पर नतूल करें।

- **नतूल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गैस के कारण होने वाले सर दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँः बाबूना, इकलीलुलमलिक, बर्ग-ए-करफ़्स, राज़ियाना, ज़ीरा किर्मानी, मरज़न्जोश, सअतर और शिब्त।

निर्माण-विधिः सब को थोड़ी थोड़ी मात्रा में लेकर पकाएँ।

प्रयोग-विधिः उस की भाप को सर तक पहुँचाएँ। गरम पानी को सर पर नतूल करें।

- **नतूल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह सौदा के कारण होने वाले सर दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँः बनफ़्शा, नीलोफ़र, इकलीलुलमलिक, बाबूना, गुल-ए-सोसन ख़ुश्क, साज़ज हिन्दी और क़रन्फ़ुल।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को समभाग में लेकर पकाएँ।

- **नतूल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गरमी से होने वाले मस्तिष्कावरण में लाभदायक है।

औषधियाँः बनफ़्शा, नीलोफ़र प्रत्येक 7 ग्राम, बाबूना 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को एक पतीले में पकाएँ और उस का मुँह बन्द रखें ताकि उस की भाप निकल ना जाए। जब वह पक जाए तो थोड़ी देर के लिए रख छोड़ें ताकि उस की गरमी और भाप में कमी आ जाए। तत्पश्चात प्रयोग करें।

प्रयोग-विधिः पतीले को रोगी के सामने रखें ताकि भाप रोगी के दिमाग़ तक पहुँच सके। उस को थोड़े से रोग़न-ए-गुल के साथ मिला कर थोड़ा थोड़ा कर के सर पर नतूल करते रहें।

- **नतूल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह नींद लाता है, दिमाग़ की शुष्कता और सफ़रा के कारण होने वाले सर दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँः गुल-ए-बनफ़्शा, गुल-ए-नीलोफ़र, किशनीज़ सब्ज़, बर्ग-ए-काहू, जौ मुक़श्शर, पोस्त-ए-ख़शख़ाश, बाबूना, बर्ग-ए-मूरद सभी एक एक भाग।

निर्माण-विधिः भेड़ के कल्ला के मतबूख़ में पकाएँ।

प्रयोग-विधिः इस को साफ़ कर के हल्का गरम ही कल्ले और सर पर नतूल करें।

- **नतूल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गरमी के कारण होने वाली मस्तिष्कावरण में लाभदायक है और सभी प्रकार के Mania में लाभदायक है।

औषधियाँः बनफ़्शा, नीलोफ़र, गु-ए-ख़त्मी, शाहस्फ्रम, कशक-ए-जौ, बर्ग-ए-बेद, गुल-ए-सुर्ख़, बर्ग-ए-काहू, बाबूना और बर्ग-ए-इनबुस्सअलब प्रत्येक 24 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को पकाएँ और साफ़ कर लें।

प्रयोग-विधिः इस की भाप को दिमाग़ तक पहुँचाएँ और उस के पानी को थोड़ा थोड़ा कर के सर पर नतूल करें।

- **नतूल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गरमी के कारण होने वाले सर दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँः बनफ़्शा, जौ मुक़श्शर नीमकोब, तुख़्म-ए-कदू, बज़्र-ए-क़तूना, तुख़्म-ए-ख़रपज़ह, पोस्त-ए-ख़शख़ाश, बीख़-ए-लुफ़्फ़ाह, तुख़्म-ए-ख़त्मी, काहू, बर्ग-ए-बेद सुर्ख़।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को समभाग में लेकर पकाएँ।

प्रयोग-विधिः इस की भाप को दिमाग़ तक पहुँचाएँ और उस के पानी को गरम दूध के साथ सर पर नतूल करें।

- **नतूल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बेवक़ूफ़ी और Amnesia में लाभदायक है।

औषधियाँः बकरी का कल्ला व पाइचा, बाबूना, इक्लीलुलमलिक, हुल्बा, शिब्त प्रत्येक 24 ग्राम।

निर्माण-विधिः देग में पकाएँ जिस का मुँह बन्द किया हो।

प्रयोग-विधिः इस की भाप को दिमाग़ तक पहुँचाएँ और उस के पानी को हल्का गरम ही सर पर नतूल करें।

- **नतूल का अन्य नुस्ख़ाः**

अगर Apoplexy के रोगी के सर और पीठ की हड्डियों पर इस का नतूल किया जाए तो लाभदायक की प्राप्ति होती है।

औषधियाँः शीह-ए-जबली, मुर मक्की, शिब्त, मरज़न्जोश, बर्ग-ए-तुरन्जत, सअतर, इक्लीलुलमलिक, बाबूना, सुद्दाब, हाशा।

निर्माण-विधिः सब को लेकर नियमानुसार पकाएँ।

प्रयोग-विधिः इस की भाप को रोगी केदिमाग़ तक पहुँचाएँ और उस के गरम पानी को पीठ की हड्डियों पर नतूल करें।

- **नतूल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह ठंडक के कारण होने वाले सर दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँः पोदीना दशती, शीह-ए-जबली, इक्लीलुलमलिक, बाबूना, सअतर, मरज़न्जोश, क़ैसूम, शिब्त, बर्ग-ए-दरख़्त-ए-ग़ार।

निर्माण-विधिः सब को लेकर नियमानुसार पकाएँ।

प्रयोग-विधिः इस की भाप को रोगी के दिमाग़ तक पहुँचाएँ और इस के पानी को धीरे धीरे सर पर टपकाएँ।

- **नतूल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह कान के भारी पन में लाभदायक है जो विरेचक के प्रयोग के बाद होता है और उस का कारण बुख़ारात होते हैं।

औषधियाँः बाबूना, इक्लीलुलमलिक, क़ैसूम प्रत्येक 35 ग्राम, नम्माम, इज़्ख़िर,

मरज़न्जोश, राज़ियाना, पोस्त-ए-बीख़-ए-कबर और गुल-ए-सुर्ख़ प्रत्येक 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को 1620 मिलीलीटर पानी में पकाएँ।

प्रयोग-विधिः इस की भाप को रोगी के कान तक पहुँचाएँ।

- **नतूल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह शरीर के आबले का निशान समाप्त करता है।

औषधियाँः गुल-ए-सुर्ख़ 24.5 ग्राम, बनफ़्शा, नीलोफ़र, सन्दलैन, तुख़्म-ए-कासनी और तुख़्म-ए-काहू प्रत्येक 14 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को 5670 मिलीलीटर पानी में इतना पकाएँ कि 2430 मिलीलीटर शेष रह जाए।

प्रयोग-विधिः इस घोल को शरीर के अंगों पर नतूल करें और पूरे शरीर को धोएँ।

- **नतूल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गुर्दा और मूत्राशय की पथरी को बाहर निकालता है और मूत्रविरेचक है।

औषधियाँः बाबूना, गुल-ए-सुर्ख़, इक्लीलुलमलिक, ख़त्मी और ख़सक प्रत्येक 35 ग्राम, पोस्त-ए-खरपज़ह ख़ुश्क, पर्सियाउशाँ और तुख़्म-ए-क़िल्त प्रत्येक 24.5 ग्राम, उश्नान, अस्लुस्सूस और राज़ियाना प्रत्येक 17.5 ग्राम, काकनज और हुल्बा प्रत्येक 14 ग्राम, ब्रन्जासिफ़ और बनफ़्शा ख़ुश्क प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को 1620 मिलीलीटर पानी में पकाएँ।

प्रयोग-विधिः इस को बड़े से पात्र में रख कर हम्माम के अन्दर आबज़न करें।

- **नतूल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गुर्दा और मूत्राशय की पथरी को तोड़ता है और मूत्र के साथ बाहर निकालता है।

औषधियाँः बाबूना, इक्लीलुलमलिक, ख़त्मी, ख़सक, गुल सुर्ख़ प्रत्येक 35 ग्राम, हुल्बा, राज़ियाना, नम्माम, सुद्दाब प्रत्येक 10.5 ग्राम, शिब्त, मरज़न्जोश, ख़ुब्बाज़ी, पर्सियाउशाँ प्रत्येक 14 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को नियमानुसार पकाएँ।

प्रयोग-विधिः इस को नियमानुसार प्रयोग करें।

- **नतूल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गुर्दा और मूत्राशय की पथरी में लाभदायक है।

औषधियाँः बाबूना, दरमना तुर्की, नम्माम, मरज़न्जोश, बर्ग-ए-कबर, कबूतर के बच्चे का सर्गीन।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को नियमानुसार पकाएँ।

प्रयोग-विधिः इस घोल से आबज़न करें। तलछट को जघन क्षेत्र, नाभि क्षेत्र और उस के चारों ओर लगाएँ।

- **नतूल का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से भी वही लाभ प्राप्त होते हैं।

औषधियाँः दरमना तुर्की, बर्ग-ए-कबर, अस्पस्त, सुद्दाब, फ़ूदना, ब्रन्जासिफ़, सुंबुल, मरज़न्जोश, नम्माम, ख़त्मी, शलग़म, बाबूना, शिब्त, तुर्ब थोड़ी थोड़ी मात्रा में।

निर्माण-विधिः सब को इतना पकाएँ कि वो नर्म हो जाएँ।

प्रयोग-विधिः आबज़न करें। इस के तलछट को जघन क्षेत्र पर ज़िमाद करें।

- **नतूल का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से भी वही लाभ प्राप्त होते हैं।

औषधियाँः पर्सियाउशाँ, ख़त्मी, ख़सक, बर्ग-ए-तुर्ब, क़िल्त, कबर, ख़ुब्बाज़ी, बर्ग-ए-शलग़म और ब्रन्जासिफ़।

निर्माण-विधिः सब को नियमानुसार पका कर साफ़ कर लें।

प्रयोग-विधिः इस घोल से आबज़न करें।

- **नतूल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह आर्तवजनक है।

औषधियाँः पर्सियाउशाँ, मुश्कतरामशीअ, नम्माम, सुद्दाब, ब्रन्जासिफ़, क़न्तूरियून, पोदीना दशती प्रत्येक थोड़ी थोड़ी मात्रा में।

निर्माण-विधिः सब को नियमानुसार पका कर साफ़ कर लें।

प्रयोग-विधिः इस घोल से आबज़न करें।

- **नतूल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह अत्यार्तव और रक्तप्रदर को दूर करता है।

औषधियाँः गुल-ए-सुर्ख़, बर्ग-ए-मूरद प्रत्येक 35 ग्राम, शिब यमानी, माज़ू, गुलनार प्रत्येक 17.5 ग्राम, पोस्त-ए-अनार, कज़माज़ज प्रत्येक 10.5 ग्राम, अक़ाक़िया 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को अर्धकुटा कर के पकाएँ।

प्रयोग-विधिः इस घोल से आबज़न करें और इसी परिस्थिति में कुर्स-ए-कहरुबा को रुब्ब-ए-मूरद के साथ खाएँ।

- **नतूल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह माँ के पेट में बच्चे की रक्षा करता है।

औषधियाँः गुल-ए-सुर्ख़ 24.5 ग्राम, गुलनार और कज़माज़ज प्रत्येक 17.5 ग्राम, मूरद 14 ग्राम, शिब-ए-यमानी, पोस्त-ए-अनार और माज़ू प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः अर्धकुटा कर के पकाएँ और साफ़ कर लें।

प्रयोग-विधिः इस घोल से आबज़न करें।

❑❑❑

चतुर्थ खण्ड

# पञ्चम अध्याय

## ग़रग़रह के नुस्ख़े

- **ग़रग़रह का नुस्ख़ाः**

यह गलकोष के फोड़ों में लाभदायक है।

औषधियाँः ज़ाज सफ़ेद, ज़ाज स्याह, काग़ज़ सोख़्ता, माज़ू सब्ज़, कुन्दुर, हिना और ज़ाफ़रान प्रत्येक 1.75 ग्राम।

निर्माण एवं प्रयोग-विधिः सभी औषधियों को थोड़ी थोड़ी मात्रा में लेकर सिर्का के साथ मिलाएँ और ग़रग़रह करें।

- **ग़रग़रह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गलकोष के फोड़ों और Tonsils में लाभदायक है।

औषधियाँः अस्लुस्सूस, ख़रनूब, माज़ू सब्ज़, काग़ज़ सोख़्ता।

निर्माण-विधिः सब को थोड़ी मात्रा में लेकर सिर्का के साथ मिलाएँ और ग़रग़रह करें।

- **ग़रग़रह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गरमी से डिफ्थीरिया व जिहवाशोथ में लाभदायक है।

औषधियाँः आब-ए-इनबुस्सअलब, अदस मुक़श्शर, आब-ए-काहू, आब-ए- ख़ुर्फ़ह।

निर्माणव प्रयोग-विधिः रुब्ब-ए-शाहतूत में मिलाएँ।

- **ग़रग़रह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बलग़म से होने वाले Diphtheria को नुज़्ज देता है।

औषधियाँः हुल्बा, हब्बुर्रशाद, तुख़्म-ए-कतान, शीरा-ए-दरख़्त-ए-अन्जीर, ख़मीर तुर्श।

निर्माण-विधिः सब को आवश्यकतानुसार शहद व घी के साथ पकाएँ।।

- **ग़रग़रह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह सफ़रा, बलग़म और ख़ून से होने वाले Diphtheria के अतिरिक्त सभी प्रकार के पदार्थों को नुज़्ज देता है।

औषधियाँः हुल्बा, हब्बुर्रशाद, तुख़्म-ए-कतान प्रत्येक 17.5 ग्राम, उन्नाब, सपिस्ताँ,

मवीज़ मुनक़्क़ा, अदस मुक़श्शर, बीख़-ए-सोसन, बीख़-ए-बादियान प्रत्येक 35 ग्राम, गुल-ए-सुर्ख़, बनफ़्शा प्रत्येक 24.5 ग्राम, मरज़न्जोश, पोदीना, सअतर प्रत्येक 7 ग्राम, इनबुस्सअलब 35 ग्राम।

निर्माण एवं प्रयोग-विधिः पका लें और फ़ुलूस-ए-ख़्यार शंबर 52.5 ग्राम, रुब्ब-ए-शाहतूत 70 ग्राम मिला करग़रग़रह करें।

- **ग़रग़रह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गरमी से होने वाले Diphtheria में लाभदायक है।

औषधियाँः आब-ए-लिसानुलहम्ल, आब-ए-इनबुस्सअलब, आब-ए-असर्राई प्रत्येक 35 ग्राम, रुब्ब-ए-शाहतूत, फ़ुलूस ख़्यार शंबर प्रत्येक 21 ग्राम, सुमाक़, ख़मीर तुर्श, अदस मुक़श्शर, आब-ए-अनार तुर्श प्रत्येक 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को रोग़न-ए-गुल में मिलाएँ।

- **ग़रग़रह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Diphtheria के कारण को दूर करता है।

औषधियाँः मुर मक्की, शिब-ए-यमानी, ज़ाफ़रान, गुलनार, आक़रक़रहा, गुल-ए-सुर्ख़, मामीरान, माज़ू, नौशादर, ईर्सा, शयाफ़-ए-मामीसा, उसारा-ए-लिहयतुत्तीस, सुमाक़, दार-ए-फ़िलफ़िल, क़सबुज़्ज़रीरा और अक़ाक़िया।

निर्माण एवं प्रयोग-विधिः सब को पका कर साफ़ कर लें। आब-ए-तूत या रुब्ब-ए-ग़ौरह के साथ मिलाकर ग़रग़रह करें।

- **ग़रग़रह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बलग़म से होने वाले Diphtheria में लाभदायक है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-हज़ार स्पन्द, आक़रक़रहा, खरदल सफ़ेद, तुख़्म-ए-तुर्ब, मुर मक्की, नतरून, नौशादर, फिलफ़िल, पोदीना और रमादुलखतातीफ़।

निर्माण एवं प्रयोग-विधिः सब को समभाग में लेकर कूट छान लें और अर्क़-ए-गुलाब के साथ मिला कर ग़रग़रह करें।

- **ग़रग़रह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह डिप्थीरिया और सफ़रा एवं ख़ून से हेने वाले Angina में लाभदायक है। यह Uvulitis की तेज़ी को भी ठंडा करता है।

औषधियाँः गुल-ए-सुर्ख़, तबाशीर, निशास्ता, तुख़्म-ए-गुल और ज़ाफ़रान प्रत्येक 7 ग्राम, तुख़्म-ए-करफ़्स 10.5 ग्राम, माज़ू और सुमाक़ प्रत्येक 1.75 ग्राम।

निर्माण एवं प्रयोग-विधिः सभी औषधियों को कूट छान कर सिकन्जबीन और

गरम पानी के साथ मिलाएँ और ग़रग़रह करें।

- **ग़रग़रह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह ख़ून और सफ़रा के कारण होने वाले Diphtheria में लाभदायक है।

औषधियाँः फ़ोफ़ल, सन्दल, गुल-ए-सुर्ख़, अदस मुक़श्शर, उसारा-ए- पोस्त-ए-जौज़ तर।

निर्माण एवं प्रयोग-विधिःसब को थोड़ी थोड़ी मात्रा में लेकर सिकन्जबीन या शराब के साथ मिलाएँ और ग़रग़रह करें।

- **ग़रग़रह का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से भी वही लाभ प्राप्त होते हैं।

औषधियाँः उसारा-ए-पोस्त-ए-जौज़ तर, आब-ए-किशनीज़ सब्ज़, सुमाक़, उसारा-ए- इनबुस्सअलब, रुब्ब-ए-शाहतूत।

निर्माण एवं प्रयोग-विधिःसब को लेकर ग़रग़रह करें।

- **ग़रग़रह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह पक्षघात, लक़वा और मिर्गी में लाभदायक है। यह दिमाग़ को देहद्रव्यों से पाक करता है और चिपचिपे देहद्रव्यों को बाहर निकालता है।

औषधियाँः अयारिज फ़ीक़रा, दार-ए-फ़िलफ़िल, खरदल सफ़ेद, ईर्सा, तुख़्म-ए-हज़ार स्पन्द, तुख़्म-ए-तुर्ब, आक़रक़रहा, वज, ज़न्जबील, पोदीना, सअतर, अस्लुस्सूस, पोस्त बीख़-ए-कबर।

निर्माण एवं प्रयोग-विधिःसब को समभाग में कूट छान लें और शहद के साथ पका कर साफ़ कर लें और ग़रग़रह करें।

- **ग़रग़रह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह पक्षघात, लक़वा और मिर्गी में लाभदायक है। यह दिमाग़ को देहद्रव्यों से पाक करता है और चिपचिपे देहद्रव्यों को बाहर निकालता है।

औषधियाँः अयारिज फ़ीक़रा, दार-ए-फ़िलफ़िल, खरदल सफ़ेद, तुख़्म-ए-हज़ार स्पन्द, तुख़्म-ए-तुर्ब, वज, आक़रक़रहा, ज़न्जबील, ईर्सा, पोदीना, सअतर, अस्लुस्सूस, पोस्त बीख़-ए-कबर।

निर्माण एवं प्रयोग-विधिः सब को समभाग में कूट छान लें और शहद के साथ पका कर साफ़ कर लें और ग़रग़रह करें।

- **ग़रग़रह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह ज़बान के भरीपन, पक्षघात, लक़वा और Apoplexy में लाभदायक है।

औषधियाँः मवीज़ज, खरदल, ज़न्जबील, आक़रक़रहा, फ़िलफ़िल, बूरह अरमनी, ईर्सा और मरज़न्जोश।

निर्माण एवं प्रयोग-विधिः सब को कूट छान लें और गरम पानी में पका कर साफ़ कर लें फिर थोड़ी मात्रा में सिकन्जबीन सम्मिलित कर के ग़रग़रह करें।

- **ग़रग़रह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह दिमाग़ को व्यर्थ पदार्थों से पाक करता है।

औषधियाँः मवीज़ 624 मिलीग्राम, आक़रक़रहा और खरदल प्रत्येक 1.75 ग्राम।

निर्माण, प्रयोग-विधिः सिकन्जबीन मिला कर ग़रग़रह करें।

- **ग़रग़रह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह ऐसे Uvulvuloptosis में लाभदायक है जो तरल पदार्थों की अधिकता और नज़ला के कारण हाता है।

औषधियाँः पगुलनार, शिब-ए-यमानी, नमक-ए-इन्द्राणी एक एक भाग, अक़मा-ए-रुम्मान, तुख़्म-ए-गुल एक एक भाग।

निर्माण एवं प्रयोग-विधिः सब को थोड़े से गरम पानी और रुब्ब-ए-शाहतूत के साथ मिला कर ग़रग़रह करें।

- **ग़रग़रह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बलग़म से होने वाले Diphtheria में लाभदायक है।

औषधियाँः खरदल, आब-ए-बर्ग-ए-तुर्ब, तबीख़-ए-तीन, बूरह अरमनी।

निर्माण एवं प्रयोग-विधिः सब को माउलअस्ल और आब-ए-क़ुशूर-ए-जौज़ के साथ मिला कर ग़रग़रह करें।

- **ग़रग़रह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बलग़म से होने वाले Diphtheria में लाभदायक है।

औषधियाँः खरदल, नौशादर, आक़रक़रहा, हिल्तीत, नत्रून, फ़िलफ़िल और पोदीना सभी एक एक भाग।

निर्माण एवं प्रयोग-विधिः माउलअस्ल के साथ ग़रग़रह करें।

- **ग़रग़रह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Pharyngitis, Laryngitis, Glossitis, Uvulitis में लाभदायक है।

औषधियाँः आब-ए-किशनीज़, आब-ए-सुमाक़, आब-ए-शाहतूत एक एक भाग।

निर्माण एवं प्रयोग-विधिः विधि अनुसार ग़रग़रह करें।

- **ग़रग़रह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Oral Thrush में लाभदायक है।

औषधियाँः सुमाक़, गुल-ए-सुर्ख़, गुलनार और ख़रनूब।

निर्माण एवं प्रयोग-विधिः सब को कूट छान कर पकाएँ और साफ़ कर के ग़रग़रह करें।

- **ग़रग़रह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह ऐसे गरम पदार्थों को समाप्त करता है जो दिमाग़ से गिरने वाले नज़लों के कारण सीने में जमा होते हैं।

औषधियाँः आक़रक़रहा, दार-ए-फ़िलफ़िल, सअतर, खरदल, ज़ूफ़ा ख़ुश्क, अयारिज फ़ीक़रा और मवीज़ज।

निर्माण एवं प्रयोग-विधिः कूट छान कर सिर्का-ए-उन्सुल में भिगोएँ फिर शहद मिलाएँ। 7 ग्राम ले कर आब-ए-कासनी या सिकन्जबीन-ए-उन्सुली में मिला कर ग़रग़रह करें।

- **ग़रग़रह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Paralysis, Apoplexy, Amnesia, Bell's palsy में लाभदायक है। यह दिमाग़ और सीने से पदार्थों को बाहर निकालता है।

औषधियाँः आक़रक़रहा, मवीज़, खरदल सफ़ेद, मरज़न्जोश, पोस्त-ए-बीख़-ए-कबर एक एक भाग, ज़न्जबील और दार-ए-फ़िलफ़िल प्रत्येक अर्धभाग, हब्बुर्रुम्मान दो भाग।

निर्माण एवं प्रयोग-विधिः सब को कूट छान कर पकाएँ। साफ़ करें और सिकन्जबीन उन्सुली मिला कर ग़रग़रह करें।

- **ग़रग़रह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह अलक़ को बाहर निकालता है जिस को ज़ल्व और ज़लूचा भी कहा जाता है।

औषधियाँः नमक, खरदल और शोनीज़ प्रत्येक एक एक भाग, नौशादर, नत्रून और हिल्तीत प्रत्येक अर्धभाग,

निर्माण एवं प्रयोग-विधिः सिर्का मिला कर ग़रग़रह करें।

- **ग़रग़रह का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से भी वही लाभ प्राप्त होते हैं। यह ज़ल्व (जोंक) को बाहर निकालता है।

औषधियाँः शोनीज़, तुरमुस, शहम-ए-हन्ज़ल, गुल-ए-सुर्ख़ थोड़ी थोड़ी मात्रा में।

निर्माण एवं प्रयोग-विधिः सिर्का मिला कर ग़रग़रह करें।

- **ग़रग़रह का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से भी वही लाभ प्राप्त होते हैं। यह उस में मुजर्रब है।

औषधियाँ: उसारा-ए-बर्ग-ए-ग़र्ब, बूरह अरमनी प्रत्येक 17.5 ग्राम, सेर दो दाना।

निर्माण एवं प्रयोग-विधि: सेर को सफ़ूफ़ कर उसारा में सम्मिलित करें और ग़रग़रह करें।

- **ग़रग़रह का अन्य नुस्ख़ा:**

यह दिमाग़ से सीने पर गिरने वाले पदार्थ को बाहर करता है और उस को सीनी में जामा होने से रोकता है।

औषधियाँ: हब्बुलआस, गुल-ए-सुर्ख़, गुलनार, पोस्त-ए-ख़शख़ाश प्रत्येक एक भाग, किशनीज़ ख़ुश्क अर्धभाग।

निर्माण एवं प्रयोग-विधि:सब को अर्क़-ए-गुलाब के साथ पका कर ग़रग़रह करें।

❑❑❑

चतुर्थ खण्ड

# शष्टम अध्याय

## मज़मज़ह के नुस्खे

- **मज़मज़ह का नुस्ख़ाः**

  यह Stomatitis और Oral Thrush में लाभदायक है।

  औषधियाँः किश्नीज़ ख़ुश्क अदस मुक़श्शर प्रत्येक 7 ग्राम, तबाशीर 3.5 ग्राम।

  निर्माण-विधिः सब को कूट पीस कर आब-ए-किश्नीज़ सब्ज़ के साथ मिलाएँ।

- **मज़मज़ह का अन्य नुस्ख़ाः**

  यह Stomatitis और Oral Thrush में लाभदायक है।

  औषधियाँः फ़िलफ़िल, सुमाक़, गुलनार, मामीरान और माज़ू।

  निर्माण एवं प्रयोग-विधिः सब को सिर्का में पका और साफ़ कर अर्क़-ए-गुलाब सम्मिलित करें। मज़मज़ह के लिए प्रयोग करें।

- **मज़मज़ह का अन्य नुस्ख़ाः**

  यह बलग़म की अधिकता से होने वाले मुँह के छालों में लाभदायक है।

  औषधियाँः आक़रक़रहा, मामीरान, तुख़्म-ए-तुर्ब, क़ैसूम, मरज़न्जोश, वरक़-ए-ज़ैतून।

  निर्माण एवं प्रयोग-विधिः सब को सिर्का-ए-ममज़ूज में पका लें फिर साफ़ करके मज़मज़ह के लिए प्रयोग करें।

- **मज़मज़ह का अन्य नुस्ख़ाः**

  यह गरमी से होने वाले Glossitis में लाभदायक है।

  औषधियाँः उन्नाब 10 की संख्या में, अदस 17.5 ग्राम, इनबुस्सअलब 17.5 ग्राम।

  निर्माण एवं प्रयोग-विधिः विधि अनुसार पकाकर साफ़कर लें। आब-ए-किशनीज़, रुब्ब-ए-तूत मिला कर मज़मज़ह करें।

- **मज़मज़ह का अन्य नुस्ख़ाः**

  यह बलग़म से होने वाली Glossitis में लाभदायक है।

औषधियाँ: तुख़्म-ए-शिब्त, बाबूना, हुल्बा, बर्ग-ए-मूरद और इक्लीलुलमलिक।

निर्माण एवं प्रयोग-विधिः सब को समभाग लेकर माउलअस्ल में पका लें फिर साफ़ करके मज़मज़ह के लिए प्रयोग करें।

- **मज़मज़ह का अन्य नुस्ख़ा:**

यह गरमी से होने वाले Toothache में लाभदायक है।

औषधियाँ: आब-ए-बर्ग-ए-काहू व ख़ुर्फ़ह,, आब-ए-किश्नीज़ तर, सिर्का, गुलाब।

निर्माण एवं प्रयोग-विधिः सब को मिलाकर काफ़ूर या अफ़ियून 32 मिलीग्राम सम्मिलित करें और मज़मज़ह करें।

- **मज़मज़ह का अन्य नुस्ख़ा:**

यह ठंडक और तरल पदार्थों की अधिकता से होने वाले सबमैक्सिलरी ग्रंथियों के सूजन में लाभदायक है।

औषधियाँ: फ़ूदना दशती, आक़रक़रा, बीख़-ए-कबर, ज़ूफ़ा।

निर्माण एवं प्रयोग-विधिः सब को समभाग में लेकर सिर्का पका लें फिर साफ़ कर के मज़मज़ह के लिए प्रयोग करें।

- **मज़मज़ह का अन्य नुस्ख़ा:**

यह दिमाग़ से गिरने वाले तरल पदार्थों और ज़ुकाम के कारण होने वाली मसूढ़ों की सूजन में लाभदायक है।

औषधियाँ: पोस्त रीशा-ए-दरख़्त कबर, पोस्त-ए-ख़शख़ाश।

निर्माण एवं प्रयोग-विधिः इन औषधियों को एक देग में रख कर उस का मुँह बन्द कर दें और पकाएँ ताकि उस की भाप बाहर ना निकले। पकाने के बाद उस की भाप दाँतों और मुँह पर पहुँचाएँ और उस के पानी को साफ़ कर के मज़मज़ह करें।

- **मज़मज़ह का अन्य नुस्ख़ा:**

इस से भी उपरोक्त लाभों की प्राप्ति होती है।

औषधियाँ: पोस्त-ए-ख़शख़ाश, कज़माज़ज, गुलनार, रीशा-ए-दरख़्त-ए-कबर, बनफ़्शा और गुल-ए-सुर्ख़।

निर्माण एवं प्रयोग-विधिः सभी औषधियों को समभाग में लेकर पका लें फिर साफ़ करके मज़मज़ह के लिए प्रयोग करें।

- **मज़मज़ह का अन्य नुस्ख़ा:**

यह मुँह व मसूढ़ों की सूजन में लाभदायक है। मसूढ़ों से ख़ून आने को रोकता है।

औषधियाँः क़रज़, तरासीस, माज़ू, पोस्त-ए-अनार, कज़माज़ज, गुलनार, जौज़ुस्सर्व।

निर्माण एवं प्रयोग-विधिः सभी औषधियों को समभाग में लेकर पका लें फिर साफ़ करके मज़मज़ह के लिए प्रयोग करें।

- **मज़मज़ह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह मुँह के छाले, Stomatitis, Glossitis, Gingivitis में लाभदायक है। यह मसूढ़ों से ख़ून आने को भी रोकता है।

औषधियाँः बर्ग-ए-ज़ैतून, बर्ग-ए-हुम्माज़, सुमाक़, आब-ए- ख़ुर्फ़ह सब्ज़, किशनीज़ सब्ज़ और असर्राई।

निर्माण एवं प्रयोग-विधिः सब को समभाग में मिलाएँ। 250 मिली ग्राम काफूर सम्मिलित करके मज़मज़ह के लिए प्रयोग करें।

- **मज़मज़ह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह दाँतों के दर्द में आराम देता है साथ ही सूजन के मवाद को दूर करता है।

औषधियाँः ख़रबक़ सफ़ेद, आक़रक़रहा और शीतरज हिन्दी।

निर्माण एवं प्रयोग-विधिः सब को थोड़ा सा पका कर साफ़ करें और अर्धकुटा करके मज़मज़ह के लिए प्रयोग करें।

- **मज़मज़ह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Gingivitis के गाढ़े मवाद को दूर करता है और दर्द में आराम देता है।

औषधियाँः शहम-ए-हन्ज़ल, आक़रक़रहा, मवीज़,गुलनार।

निर्माण एवं प्रयोग-विधिः सब को समभाग में लेकर सिर्का और शराब में पका लें और मज़मज़ह के लिए प्रयोग करें।

- **मज़मज़ह का नुस्ख़ा (मोहम्मद इब्न-ए-ज़करिया राज़ी):**

यह दाँतों के दर्द में आराम देता है। यह मुजर्रब है।

औषधियाँः दाना-ए-सीर साफ़ 10 दाना, कुन्दुर 22.5 ग्राम, बर्ग-ए-मूरद 24.5 ग्राम।

निर्माण एवं प्रयोग-विधिः सब को लेकर सिर्का में पकाएँ और सनोबर की लकड़ी द्वारा अच्छी तरह मिलाते रहें और साफ़ कर के मज़मज़ह के लिए प्रयोग करें।

- **मज़मज़ह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बलग़म और तरल पदार्थों की अधिकता के कारण होने वाली मसूढ़ों की सूजन में लाभदायक है।

औषधियाँः पोस्त-ए-बीख़-ए-कबर, ज़रावन्द मुदहरज, आक़रक़रहा प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण एवं प्रयोग-विधिः सभी औषधियों को लेकर सिर्का और शराब में पकाएँ और मज़मज़ह के लिए प्रयोग करें।

- **मज़मज़ह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह ज़बान की ऐंठन में लाभदायक है।

औषधियाँः आब-ए-इनबुस्सअलब, लुआब-ए-ख़त्मी, रोग़न-ए-बाबूना, लुआब-ए- हुल्बा।

निर्माण एवं प्रयोग-विधिः सब को मिलाकर मज़मज़ह करें।

- **मज़मज़ह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Hyperpyrexia और गरम रोगों के बाद होने वाली ज़बान की ऐंठन में लाभदायक है।

औषधियाँः लुआब-ए-ख़त्मी, आब-ए-इनबुस्सअलब, असारांई उचित मात्रा में, रोग़न-ए-बनफ़शा, रोग़न-ए-बादाम, रोग़न-ए-कद्दू, रोग़न-ए-नीलोफ़र, गधी का दूध।

निर्माण एवं प्रयोग-विधिः सब को मिलाकर मज़मज़ह करें।

- **मज़मज़ह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह मुँह को सुगंधित और दाँतों को मज़बूत करता है।

औषधियाँः सअद, सुंबुलुत्तीब, जौज़ुस्सर्व, गुल-ए-सुर्ख़, गुल-ए-नसरीन,गुलनार और क़सबुज़्ज़रीरा प्रत्येक समभाग में।

निर्माण एवं प्रयोग-विधिः सब को समभाग में लेकर पकाएँ और फिर थोड़ा सिर्का एवं अर्क़-ए-गुलाब मिलाकर मज़मज़ह करें।

- **मज़मज़ह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह मुँह को सुगंधित करता है और मसूढ़ों, मुँह और ज़बान की sepsis और तरलता को दूर करता है।

औषधियाँः आक़रक़रहा, क़रन्फ़ुल, बर्ग-ए-तुरन्ज, कबाबा चीनी, सअद, गुल एक एक भाग, सिर्का-ए-उन्सुल और गुलाब।

निर्माण एवं प्रयोग-विधिः सब को सिर्का-ए-उन्सुल एवं अर्क़-ए-गुलाब में मिलाकर पकाएँ और मज़मजह करें।

- **मज़मज़ह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह मुँह के बुरे स्वाद को दूर करता है।

औषधियाँः आक़रक़रहा, सिर्का और अर्क़-ए-गुलाब।

निर्माण एवं प्रयोग-विधिः आक़रक़रहा को उचित भाग में लेकर सिर्का एवं

अर्क़-ए-गुलाब में पकाएँ और मज़मज़ह करें।

- **मज़मज़ह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह मसूढ़ों से ख़ून आने को रोकता है। दाँतों को मज़बूत करता है। मुँह को सुगंधित करता है और दर्द में आराम देता है।

औषधियाँः फ़ोफ़ल, गुल-ए-सुर्ख़, आक़रक़रहा, सअद, सुंबुलुत्तीब, बर्ग-ए-मूरद, जौज़ुस्सर्व, कज़मामाज़ज सभी 1-1 भाग।

निर्माण एवं प्रयोग-विधिः सब को एक एक भाग लेकर विधि अनुसार पकाएँ और साफ़ करके थोड़ा सा सिर्का-ए-उन्सुल एवं अर्क़-ए-गुलाब मिलाकर मज़मज़ह करें।

❑❑❑

### चतुर्थ खण्ड
# सप्तम अध्याय

## क़तूर के नुस्ख़े

- **क़तूर का नुस्ख़ा:**

  यह गरमी से होने वाले कान के दर्द में लाभदायक है।

  औषधियाँ: रोग़न गुल 21 ग्राम, रोग़न बादाम शीरीं 10.5 ग्राम, ख़ल्ल-ए-ख़म्र 35 ग्राम।

  निर्माण-विधि: सब को हलकी आँच पर इतना एक पकाएँ कि सिर्का उड़ जाए।

  प्रयोग-विधि: थोड़ी मात्रा में कान में टपकाएँ।

- **क़तूर का अन्य नुस्ख़ा:**

  यह कान बजने और कान में भारीपन के आभास होने को समाप्त करता है।

  औषधियाँ: ज़ाफ़रान, फ़र्फ़ियून, जुन्द बेद स्तर, ख़रबक़ सफ़ेद और मुर मक्की 10.5 ग्राम, नतरून 3.5 ग्राम।

  निर्माण एवं प्रयोग-विधि: सब को सिर्का के साथ अच्छी तरह मिला कर dilute करें और कान में टपकाएँ।

- **क़तूर का अन्य नुस्ख़ा:**

  यह कान के फोड़ों और उस की गरमी में लाभदायक है। साथ ही यह कान के मैल को बाहर निकालता है।

  औषधियाँ: अन्ज़रूत, सिब्र ज़र्द, ज़ुबदुलबहर, बूरह अरमनी, दमुलअख़वैन, कुन्दुर, मुर मक्की, ज़ंगार और ख़ुब्सुलहदीद।

  निर्माण-विधि: कूट छान कर रोग़न-ए-गुल और सिर्का-ए-ममज़ूज में साथ मिलाएँ।

  प्रयोग-विधि: थोड़ी मात्रा में कान में टपकाएँ। फ़तीला में लपेट कर कान में रखें।

- **क़तूर का अन्य नुस्ख़ा:**

  यह कान की खुजली को दूर करता है और साथ ही कान में भारीपन के के आभास को भी समाप्त करता है।

  औषधियाँ: अफ़्सन्तीन और रोग़न-ए-बादाम तल्ख़।

निर्माण-विधिः अफ़्सन्तीन को पका कर रोग़न-ए-बादाम तल्ख़ में मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः कान में टपकाएँ।

- **क़ुतूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह कान की मैल और उस के विभिन्न प्रकार के कीड़ों को बाहर निकालने में लाभदायक है।

औषधियाँः मुर मक्की 4.5 ग्राम, मग़ज़-ए-बादाम तल्ख़ मुक़श्शर 20 दाना, कुन्दुर 13.5 ग्राम, ज़ाफ़रान 4.5 ग्राम, उसारा-ए-ख़शख़ाश 9 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को हल्का पीस कर सिर्का के साथ मिलाएँ और क़ुर्स की शकल में बनाकर सुरक्षित कर लें।

प्रयोग-मात्रा और विधिः रोग़न-ए-गुल में मिलाएँ और कान में टपकाएँ।

- **क़ुतूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गर्मी से कान के दर्द और भारीपन में लाभदायक है।

औषधियाँः रोग़न-ए-गुल 21 ग्राम, रोग़न-ए-बादाम तल्ख़ 17.5 ग्राम,सिर्का-ए-खम्र 35 ग्राम, अफ़ियून 24 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को हल्का पीस कर सुरक्षित कर लें।

प्रयोग-मात्रा और विधिः हब्ब-ए-अफ़ियून में मिलाएँ और कान में टपकाएँ।

- **क़ुतूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह कान बजने और कान में भारीपन में लाभदायक है।

औषधियाँः ज़ाफ़रान 500 मिलीग्राम, नत्रून, ख़रबक़ सफ़ेद, अफ़ियून और जहरा-ए-गोस्फ़न्द प्रत्येक 750 मिलीग्राम।

निर्माण एवं प्रयोग-विधिः सभी औषधियों को सिर्का के साथ ख़ूब अच्छी तरह मिला कर dilute करें और कान में टपकाएँ।

- **क़ुतूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह कान से ख़ून आने को रोकता है।

औषधियाँः शयाफ़-ए-मामीसा और अफ़ियून।

निर्माण एवं प्रयोग-विधिः सब को आब-ए-असर्राई और आब-ए-लिसानुलहमल के साथ मिलाएँ और कान में टपकाएँ।

- **क़ुतूर का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से भी वही लाभ प्राप्त होते हैं।

औषधियाँः तबख-ए-औसज और उसारा-ए-बादरूज।

निर्माण-विधिः तबख-ए-औसज और उसारा-ए-बादरूज को उचित भाग में लेकर सिर्का और रोग़न-ए-बादाम शीरीं या रोग़न-ए-गुल में मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः कान में टपकाएँ।

- **क़तूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह कान की गाढ़ी मैल को साफ़ करता है साथ ही यह उस की बनावट को भी ठीक करता है।

औषधियाँः ज़हरा-ए-गाव मीश, बूरह अरमनी, पुराना सिर्का और रोग़न-ए-गुल सभी एक उचित मात्रा में।

निर्माण एवं प्रयोग-विधिः सब को मिलाकान में टपकाएँ।

- **क़तूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह कान में भारीपन में लाभदायक है।

औषधियाँः रोग़न-ए-नारदीन, जुन्द बेद स्तर, उसारा-ए-सुद्दाब, उसारा-ए-अफ़्सन्तीन और ज़हरा-ए-गाव।

निर्माण-विधिः सब को आब-ए-बर्ग-ए-तुर्ब में मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः कान में टपकाएँ।

- **क़तूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह कान बजने और कान में भारीपन में लाभदायक है।

औषधियाँः रोग़न-ए-बादाम तल्ख़, रोग़न-ए-अफ़्सन्तीन, जुन्द बेद स्तर, रोग़न-ए-सोसन और पुराना सिर्का।

निर्माण-विधिः सब को अच्छी तरह मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः कान में डालें।

- **क़तूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गरम सूजन के कारण होने वाले कान के दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँः अफ़ियून 3.5 ग्राम, शयाफ़-ए-अबयज़ 10.5 ग्राम, शयाफ़-ए-मामीसा 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को लड़की को जन्म देने वाली औरत के दूध में मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः कान में टपकाएँ।

- **क़तूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह ठंडक के कारण होने वाले कान के भारीपन और दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँः गाय का ताज़ा पित्ता 9 ग्राम, गाय की घी और गाय की चर्बी 45 ग्राम।

निर्माण-विधिः गाय के ताज़ा पित्ते को गाय की घी, चर्बी में इतना पकाएँ कि पित्ता ग़ायब हो जाए और घी शेष रह जाए फिर उस में 3.5 ग्राम लहसुन के दाने पीस कर डालें।

प्रयोग-विधिः क़तरा क़तरा कान में टपकाएँ।

- **क़तूर का अन्य नुस्ख़ाः**

कान में पानी चला जाए तो इस का प्रयोग लाभ देता है।

औषधियाँः आब-ए-पियाज़, आब-ए-तुर्ब, रोग़न-ए-बादाम।

निर्माण-विधिः सब को अच्छी तरह मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः कान में टपकाएँ।

- **क़तूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह कान के भारीपन को दूर करता है।

औषधियाँः शहम-ए-हन्ज़ल 10.5 ग्राम, बूरह अरमनी 3.5 ग्राम, जुन्द बेद स्तर, ज़रावन्द मुदहरज, क़ुस्त, फ़र्फ़ियून और अफ़्सन्तीन प्रत्येक 4.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सबको पीस कर भेड़ के पित्ते में मिलाएँ और टिकिया बनाएँ।

प्रयोग-विधिः आवश्यकता पड़ने पर टिकिया को रोग़न-ए-बादाम तल्ख़ में घिसें और कान में टपकाएँ।

- **क़तूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह कान के भारीपन को दूर करता है।

औषधियाँः आब-ए-बर्ग-ए-शफ़्तालू, आब-ए-बर्ग-ए-तुर्ब प्रत्येक 17.5 ग्राम, ख़रबक़ सफ़ेद, बूरह, सक़मूनिया, अफ़्सन्तीन, ज़रावन्द मुदहरज प्रत्येक 3.5 ग्राम, दरमना तुर्की 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट पीस कर उपर्युक्त रसों के साथ मिलाएँ और धूप में रख कर सुखा लें और उस के बाद सिर्का और आब-ए-बर्ग-ए-शफ़्तालू में रखें।

प्रयोग-विधिः कान में टपकाएँ।

- **क़तूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह ठंडक के कारण होने वाले कान के भारीपन और दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँः जुन्द बेद स्तर और फ़र्फ़ियून प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान कर इतना पकाएँ कि क़िवाम तैयार

हो जाए फिर थोड़ी मात्रा में रोग़न-ए-गुल या रोग़न-ए-सोसन मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः कान में टपकाएँ।

- **क़तूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह कान में चले जाने वाले कीड़े मकोड़ों को मारता है।

औषधियाँः आब-ए-अफ़्सन्तीन, सिब्र ज़र्द, ज़रावन्द तवील, आब-ए-दरमना तुर्की, आब-ए-पोदीना दशती, बूरह 24 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को आपस में अच्छी तरह मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः कान में टपकाएँ।

- **क़तूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह कान दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँः मीअह सायला 2 ग्राम, इल्कुलबुत्म 17.5 ग्राम, रोग़न-ए-बादाम तल्ख़ 105 ग्राम, शयाफ़-ए-मामीसा और अफ़ियून प्रत्येक 500 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को अच्छी तरह मिलाएँ। आवश्यकता के समय थोड़ी मात्रा में रोग़न-ए-गुल और सिर्का के साथ मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः कान में टपकाएँ।

- **क़तूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गर्मी या सूजन से होने वाले कान दर्द में लाभदायक है। यह गरम स्वभाव के और शराब पीने वाले व्यक्तियों के कान में होने वाले दर्द में भी लाभकारी है।

औषधियाँः अफ़ियून 3.5 ग्राम, शयाफ-ए-अबयज़ 10.5 ग्राम, रोग़न-ए-गुल 14 ग्राम और खल्ल-ए-खम्र 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः शयाफ़ और अफ़ियून को रोग़न-ए-गुल में अच्छी तरह मिलाएँ और तत्पश्चात सिर्का में मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः कान में टपकाएँ।

## क़तूर के नुस्ख़े

## जो मूत्रमार्ग के फोड़ों एवं जलन के लिए लाभदायक हैं

- **क़तूर का नुस्ख़ाः**

यह मूत्र मार्ग के फोड़ों और उस में जलन में लाभदायक है।

औषधियाँः सफ़ेदाब, कुन्दुर, अन्ज़रूत, समग़-ए-अरबी, निशास्ता, दमुलअखवैन।

निर्माण व प्रयोग-विधिः सब को समभाग में लेकर कूटें छानें। थोड़ी मात्रा में लड़की को जन्म देने औरत के दूध में मिलाएँ और मूत्रमार्ग में टपकाएँ।

- **क़तूर का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से भी उपरोक्त लाभ की प्राप्ति होती है।

औषधियाँः मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-हिन्दुवाना, शीर-ए-दुख़्तर, मग़ज़ दाना-ए-कदू।

निर्माण-विधि और प्रयोग-विधिः मग़ज़ दाना-ए-कदू और मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-हिन्दुवाना को लड़की को जन्म देने औरत के दूध में मिलाएँ और मूत्रमार्ग में टपकाएँ।

- **क़तूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह मूत्रमार्ग में पैदा होने वाली गुर्दा एवं मूत्राशय की पथरी बाहर निकालता है।

औषधियाँः रोग़न-ए-ख़सक, रोग़न-ए-तुर्ब प्रत्येक 35 ग्राम, रोग़न-ए-अक़रब 10.5 ग्राम, हजरुलयहूद, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-कदू, हब्ब-ए-काकनज प्रत्येक 17.5 ग्राम, क़िल्त 7 ग्राम, आब-ए-ख़सक ताज़ा 52.5 ग्राम, आब-ए-पर्सियाउशान 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को पका कर साफ़ कर लें। रसों को तैलों के साथ इतना पकाएँ कि रस जल जाए और तैल शेष रह जाए फिर हजरुलयहूद को तैल में पीसें।

प्रयोग-विधिः मूत्रमार्ग में टपकाएँ।

- **क़तूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह मूत्रमार्ग के ज़ख्म व फोड़ों और पेशाब में जलन में लाभदायक है।

औषधियाँः शयाफ़-ए-अबयज़, मग़ज़-ए-दाना-ए-बिही, मग़ज़-ए-दाना-ए-ख़्यार, मग़ज़-ए-दाना-ए-कदू, दमुलअख़वैन और शादनज मग़सूल।

निर्माण-विधिः सब को थोड़ी थोड़ी मात्रा में लेकर एक बार हल्का पीस लें फिर औरत के दूध में दोबारा सख़्ती से पीसें।

प्रयोग-विधिः मूत्र मार्ग में टपकाएँ।

- **क़तूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह मूत्रमार्ग के ज़ख्म व फोड़ों और उस की गरमी में लाभदायक है।

औषधियाँः लुआब-ए-बज़रक़तूना, सफ़ेदी-ए-बैज़ा-ए-मुर्ग, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए- हिन्दुवाना।

निर्माण-विधिः सब को रोग़न-ए-कदू के साथ मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः मूत्रमार्ग में टपकाएँ।

❑❑❑

चतुर्थ खण्ड

## अष्टम अध्याय

# सऊत के नुस्खे़

- **सऊत का नुस्ख़ा:**

यह गर्मी से होने वाले सर दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँ: आब-ए-बर्ग-ए-काहू, रोग़न-ए-नीलोफ़र।

निर्माण-विधि: सब को एक एक भाग लेकर लड़की को जन्म देने वाली औरत के दूध में अच्छी तरह मिलाएँ।

प्रयोग-विधि: नाक में टपकाएँ और साँस ऊपर खींचें।

- **सऊत का अन्य नुस्ख़ा:**

यह गर्मी के कारण होने वाले सर दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँ: तबाशीर 7 ग्राम, निशास्ता और काफ़ूर प्रत्येक 1.75 ग्राम, ज़ाफ़रान 750 मिलीग्राम।

निर्माण-विधि: सब को हल्का पीस लें, रोग़न-ए-नीलोफर में अच्छी तरह मिलाएँ और नाक में सुड़कें।

- **सऊत का अन्य नुस्ख़ा:**

यह सूरज की गर्मी या शराब से पैदा होने वाली गैस स होने वाले सर दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँ: आब-ए-कदू, रोग़न-ए-कदू, आब-ए-कासनी, आब-ए-बर्ग-ए-काहू, रोग़न-ए-बनफ़्शा, रोग़न-ए-बादाम और

निर्माण-विधि: सब को थोड़ी थोड़ी मात्रा में औरत के दूध के साथ मिला कर नाक में टपकाएँ और साँस ऊपर खींचें।

- **सऊत का अन्य नुस्ख़ा:**

यह बलग़म से होने वाले सर दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँ: सिब्र ज़र्द, मुर साफ़, कुन्दुर, हुज़ुज़, जुन्द बेद स्तर, ज़ाफ़रान, सअतर

और फ़िलफ़िल प्रत्येक 3.5 ग्राम, कुन्दुश 1.75 ग्राम, मुश्क 500 मिलीग्राम।

निर्माण व प्रयोग-विधिः सब को हल्का पीस लें और आब-ए-मरज़न्जोश के साथ अच्छी तरह मिला कर नाक में सुड़कें।

- **सऊत का अन्य नुस्ख़ाः**

यह ठंडक से होने वाले सर दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँः मोमियाई, जुन्द बेद स्तर और फ़र्फ़ियून।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को थोड़ी थोड़ी मात्रा में लेकर उन सभी के समभाग रोग़न-ए-उशक़ में अच्छी तरह घोलें।

प्रयोग-विधिः 2, 3 बूँद नाक में डाल कर साँस ऊपर खींचें।

- **सऊत का अन्य नुस्ख़ाः**

यह दिमाग़ को द्रव्यों और व्यर्थ पदार्थों से पाक करता है।

औषधियाँः नौशादर, उसारा-ए-क़िस्साउलहिमार, शोनीज़ प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर रोग़न-ए-सोसन के साथ मिलाएँ और अच्छी तरह सख़्ती से पीस कर सऊत तैयार करें।

प्रयोग-विधिः नाक में टपकाएँ और साँस ऊपर खींचें।

- **सऊत का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से ठंडक से होने वाले सर दर्द में आराम मिलता है।

औषधियाँः बखूर-ए-मरियम और अस्लुस्सूस प्रत्येक 7 ग्राम, बूरह सुर्ख़ 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर औरत के दूध में मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः नाक में डाल कर साँस ऊपर खींचें।

- **सऊत का अन्य नुस्ख़ाः**

यह पक्षघात, लक़वा, नसों के ढीलेपन में लाभदायक है।

औषधियाँः शोनीज़ और तुख़्म-ए-हुरमुल प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर आब-ए-चुक़ुन्दुर में अच्छी तरह पीस कर सुखा लें। उस में से 3.5 ग्राम लेकर लड़की को जन्म देने वाली औरत के दूध में अच्छी तरह घोलें।

प्रयोग-विधिः नाक में सुड़कें।

- **सऊत का अन्य नुस्ख़ाः**

यह दिमाग़ और दोनों नथुनों के सुद्दे खोलता है और बलग़म की अधिकता से

होने वाले सर दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँ: शोनीज़ 14 ग्राम, नौशादर, तुर्बुद प्रत्येक 3.5 ग्राम, मरज़न्जोश 7 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को कूट कर आब-ए-मरज़न्जोश, रोग़न-ए-सोसन और रोग़न-ए-बादाम तल्ख़ में मिलाएँ।

## सऊत के नुस्खे जो नकसीर फूटने को रोकते हैं

- **सऊत का नुस्ख़ा:**

यह नकसीर फूटने को रोकता है।

औषधियाँ: काग़ज़ मुहर्रक़, पोस्त-ए-बैज़ा-ए-मुर्ग़,काफ़ूर, खाकस्तर, अक़ाक़िया, कुन्दुर, मरज़न्जोश, शादनज मग़सूल।

निर्माण-विधि: कूट कर उसारा-ए-बादरूज में मिला कर अंच्छी तरह पीस लें।

प्रयोग-विधि: नाक में डाल कर साँस ऊपर खींचें।

- **सऊत का अन्य नुस्ख़ा:**

इस से उपरोक्त लाभ प्राप्त होते हैं और रक्तस्राव को रोकता है।

औषधियाँ: गुलनार, शिब-ए-यमानी, उसारा-ए-लेहयतुत्तीस प्रत्येक 3.5 ग्राम, गिल-ए-मखतूम 1.75 ग्राम, काफ़ूर और अफ़ियून प्रत्येक 32 मिलीग्राम।

निर्माण-विधि: सभी औषधियों को आब-ए-असराई और लिसानुलहम्ल के साथ मिला कर ख़ूब अच्छी तरही पीसें।

प्रयोग-विधि: बूँद बूँद नाक में डाल कर सुड़कें।

- **सऊत का अन्य नुस्ख़ा:**

इस से भी वही लाभ प्राप्त होते हैं।

औषधियाँ: उसारा-ए-मिल्ह, अक़ाक़िया प्रत्येक 10.5 ग्राम, काफ़ूर 32 मिलीग्राम।

निर्माण-विधि: उसारा-ए-मिल्ह, अक़ाक़िया में काफ़ूर को मिलाएँ।

प्रयोग-विधि: नाक में डाल कर सुड़कें।

- **सऊत का अन्य नुस्ख़ा:**

यह गरमी के कारण होने वाले सर दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँ: आब-ए-काहू, आब-ए-कदू, रोग़न-ए-बादाम, रोग़न-ए-बनफ़्शा, रोगन-ए-नीलोफ़र और रोग़न-ए-कदू।

निर्माण-विधि: सब को मिलाकर औरत के दूध में मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः नाक में टपकाएँ।

- **सऊत का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गरमी के से होने वाले मस्तिष्कावरण में लाभदायक है।

औषधियाँः आब-ए-बर्ग-ए-काहू, अर्क़-ए-बेद, काफ़ूर, अर्क़-ए-सन्दल सफ़ेद सभी थोड़ी थोड़ी मात्रा में।

निर्माण-विधिः सब को एक साथ मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः नाक में डाल करसाँस ऊपर खींचें।

- **सऊत का अन्य नुस्ख़ाः**

यह सर दर्द पैदा होने को रोकता है और Amnesia में लाभदायक है।

औषधियाँः जौज़बोवा, दरमना तुर्की, क़रन्फ़ुल और मरज़न्जोश प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को हल्का कूटने छानने के बाद आब-ए-मरज़न्जोश के साथ मिला कर सूक्ष्म पीस लें।

प्रयोग-विधिः नाक में डाल कर साँस ऊपर खींचें।

- **सऊत का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Paralysis and Bell's palsy में लाभदायक है।

औषधियाँः सकबीनज, हज़ारस्पन्द, फ़िलफ़िल, दार-ए-फ़िलफ़िल, बारज़द, उशक़, जुन्द बेद स्तर और फ़र्फ़ियून।

निर्माण-विधिः सब को कूटने छानने के बाद छाछ या दूध या सिर्का-ए-अंगूरी में एक रात पकाएँ और साफ़ कर लें।

प्रयोग-विधिः नाक में डाल कर साँस ऊपर खींचें।

- **सऊत का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Apoplexy, Epilepsy, Paralysis, Bell's palsy में लाभदायक है।

औषधियाँः ज़हरा-ए-कलंग, जुन्द बेद स्तर, कुन्दुश, फ़र्फ़ियून, सकबीनज।

निर्माण-विधिः लड़की को जन्म देने वाली औरत के दूध या आब-ए-मरज़न्जोश या आब-ए-सुद्दाब में मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः एक दो बूँद नाक में टपकाएँ और साँस ऊपर की ओर खींचें।

- **सऊत का अन्य नुस्ख़ाः**

यह भी उपरोक्त प्रदान करता और दिमाग़ के ठंडे रोगों में लाभदायक है।

औषधियाँः ज़हरा-ए-उशक़, ज़हरा-ए-कलंग, ज़हरा-ए-शबूत।

निर्माण-विधिः सब को औरत के दूध और आब-ए- मरज़न्जोश के साथ मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः एक दो बूँद नाक में डाल कर साँस ऊपर की ओर खींचें।

- **सऊत का अन्य नुस्ख़ाः**

यह ऐसे सर दर्द में लाभदायक है जो गाढ़े पदार्थों के कारण पैदा होता है।

औषधियाँः अयारिज फ़ीक़रा, औजा-ए-शीर, जुन्द बेद स्तर और फ़र्फ़ियून प्रत्येक 500 मिलीग्राम, मुश्क 32 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर औरत के दूध में मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः नाक में डाल कर साँस ऊपर की ओर खींचें।

- **सऊत का अन्य नुस्ख़ाः**

यह नाक दर्द व बच्चों के आँख दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँः कुन्दुश, हुज़ुज़ मक्की और कुन्दुर प्रत्येक 3.5 ग्राम, सअतर और ज़ाफ़रान प्रत्येक 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर टिकिया तैयार कर लें। आवश्यकता के समय थोड़ा सा लड़की को जन्म देने वाली औरत के दूध या रोग़न-ए-बनफ़्शा या रोग़न-ए-बादाम में घिसें।

प्रयोग-विधिः नाक में टपकाएँ।

- **सऊत का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Scrofula में लाभदायक है।

औषधियाँः बिस्बासा और गावज़बान प्रत्येक 3.5 ग्राम, गाए का पित्ता, खारपुशत और काफ़ूर प्रत्येक 750 मिलीग्राम, ज़ाफ़रान 1.75 ग्राम, कुन्दुश 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान कर सिर्का में मिला कर टिकिया बना कर सुखा लें और आवश्यकता पड़ने पर उस में से थोड़ा सा लेकर रोग़न-ए-गुल में घोल कर लड़की को जन्म देने वाली औरत के दूध में मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः नाक में डाल कर साँस ऊपर की ओर खींचें।

- **सऊत का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Paralysis, Bell's palsy, Atony of nerves के अतिरिक्त सर के भिंच जाने और Nerves की ठंडक में लाभदायक है।

औषधियाँः शोनीज़, तुख़्म-ए-हुरमुल प्रत्येक 7 ग्राम, उसारा बीख़-ए-हन्ज़ल ताज़ा, उसारा-ए-चुक़न्दर प्रत्येक 4.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर उपर्युक्त उसारों के साथ सूक्ष्म पीस लें और आवश्यकता पड़ने पर 500 मिलीग्राम लेकर औरत के दूध के साथ मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः नाक में टपकाएँ और साँस ऊपर की ओर खींचें।

- **सऊत का अन्य नुस्ख़ाः**

यह ऐसे सर दर्द में लाभदायक है जो हवा में पाई जाने वाली गन्दगी और बदबू के कारण होता है।

औषधियाँः मोमियाई, जौज़बोवा, अंबर अशहब और मुश्क प्रत्येक 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को हल्का पीस लें और थोड़ी मात्रा में लेकर अर्क़-ए-गुलाब के साथ मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः नाक में डालें और साँस ऊपर खींचें।

- **सऊत का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Phlegmatic Headache, Vertigo में लाभदायक है।

औषधियाँः सिब्र ज़र्द, कुन्दुर, हुज़ुज़, जुन्द बेद स्तर, ज़ाफ़रान, सअतर और फ़िलफ़िल सफ़ेद प्रत्येक 3.5 ग्राम, कुन्दुश 5.25 ग्राम, मुश्क 48 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-मरज़न्जोश में घिसें और आवश्यकता के समय लड़कीको जन्म देने वाली औरत के दूध में मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः नाक में डालें और साँस ऊपर खींचें।

- **सऊत का अन्य नुस्ख़ाः**

यह नज़ला में लाभदायक है, दिमाग़ में पाए जाने वाले तरल पदार्थों को बाहर करता ह।

औषधियाँः सन्दुस्सुंबुल 48 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सन्दुस्सुंबुल को लड़की को जन्म देने वाली औरत के दूध में घिसें।

प्रयोग-विधिः नाक में डालें।

- **सऊत का अन्य नुस्ख़ाः**

यह दिमाग़ में पाए जाने वाले तरल पदार्थों को बाहर करता है और दिमाग़ को तरल पदार्थों से पाक करता है।

औषधियाँः शोनीज़, फ़िलफ़िल और कुन्दुश।

निर्माण-विधिः सब को कूटने छानने के बाद सिर्का और रोग़न-ए-गुल में मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः नाक में डालें और विधि अनुसार साँस ऊपर की ओर खींचें फिर

सर नीचे कर लें ताकि वह पदार्थ बाहर निकल जाए। तत्पश्चात उस के मुँह को बाँध दें ताकि वह तरल पदार्थ बाहर ना निकल सके।

- **सऊत का अन्य नुस्ख़ाः**

  यह उस सर दर्द में लाभदायक है जो सूरज की गरमी के कारण होता है।

  औषधियाँः काफूर 24 मिलीग्राम, आब-ए-काहू, सिर्का और रोग़न-ए-कदू।

  निर्माण-विधिः काफूर को आब-ए-काहू, सिर्का और रोग़न-ए-कदू में मिलाएँ।

  प्रयोग-विधिः नाक में डालें और साँस ऊपर खींचें।

- **सऊत का अन्य नुस्ख़ाः**

  इस से भी वही लाभ प्राप्त होते हैं।

  औषधियाँः आब-ए-काहू, आब-ए-किशनीज़ सब्ज़, काफ़ूर, सन्दल सफ़ेद, सिर्का, आब-ए-कदू, रोग़न-ए-बनफ़्शा, रोग़न-ए-बादाम, रोग़न-ए-नीलोफ़र।

  निर्माण-विधिः सब को थोड़ी थोड़ी मात्रा में लेकर अच्छी तरह मिला लें।

  प्रयोग-विधिः नाक में डालें और विधि अनुसार साँस ऊपर की ओर खींचें जिस से उस का प्रभाव दिमाग़ तक पहुँचेगा और लाभ मिलेगा।

❑❑❑

# पन्चम खण्ड

## विभिन्न प्रकार के ज़िमाद, तिला, ग़सूल, ख़िज़ाब, सबूग़, तैल और कैरूती के नुस्ख़े

### यह खण्ड सात अध्यायों पर आधारित है

पन्चम खण्ड

# प्रथम अध्याय

## ज़िमाद के नुस्खे

- **ज़िमाद-ए-क़न्तूरियून:**

यह लक़वा, पक्षघात, सर दर्द, आँख के दर्द, अधकपारी के दर्द, गर्दन के दर्द और दाँत के दर्द में लाभदायक है। आँख से दिमाग़ से गिरने वाले पदार्थों को बहने को रोकता है। अगर दोनों कनपटियों पर ज़िमाद किया जाए तो ठंडक एवं तरलता की अधिकता के कारण होने वाले दिमाग़ी रोगों में लाभदायक है। अगर मूत्राशय पर ज़िमाद किया जाए तो यह मूत्रविरेचक है। बिच्छू के काटे के स्थान पर ज़िमाद करने से दर्द में आराम मिलता है। पेट पर ज़िमाद करने से यह आंतरिक सूजनों में लाभ पहुँचाता है। अफ़ाई आदि में रअशा-उल-हमाम लिखा हुआ है और यह स्पष्ट नहीं है कि लेखक ने इस से सर्गीन-ए-कबूतर ही समझा है। हाँ यह अवशय है कि इस को ग़लत समझ लिया गया है।

औषधियाँः सर्गीन-ए-कबूतर 7 ग्राम, रातीनज 10.5 ग्राम, रोग़ेन-ए-ज़ैतून 140 ग्राम, शमअ अर्थात मोम 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः मोम एवं रातीनज को रोग़न-ए-ज़ैतून में डालें। उनके साथ कबूतर की बीट भी सम्मिलित करें। तत्पश्चात सब को हावन में रखकर अच्छी तरह से कूटें।

प्रयोग-विधिः प्रभावित स्थान पर ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ा:**

यह ठंडक के कारण होने वाले सर दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँः बाबूना, इक्लीलुलमलिक, दरमना तुर्की, शिब्त, वरक़-ए-दरख़्त-ए-ग़ार और मरज़न्जोश सभी समभाग में।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान करज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ा:**

यह ऐसे सर दर्द में लाभदायक है जो किसी घाव या चोट लगने के कारण होता है।

औषधियाँ: बर्ग-ए-मूरद तर, बर्ग-ए-सर्व तर, रोग़न-ए-गुल-ए-सोसन, लाज़न, इक्लीलुलमलिक, क़सबुज़्ज़रीरा, बूरह अरमनी और शिब-ए-यमानी।

निर्माण-विधि: सब को समभाग में लें। जो सूखी हों उनको कूट छान कर पका लें और जो हरी हों उनको बारीक पीस लें और फिर सब को एक साथ मिला कर ज़िमाद तैयार करें।

प्रयोग-विधि: सर पर ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ा:**

यह ऐसे सर दर्द में लाभदायक है जो किसी खरोंच या चोट लगने से होता है।

औषधियाँ: बनफ़्शा, गुल-ए-सफ़ेद और बाबूना प्रत्येक 7 ग्राम, इक्लीलुलमलिक 3.5 ग्राम, आरद-ए-जौ 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर थोड़ी थोड़ी मात्रा में रोग़न-ए-बनफ़्शा, रोग़न-ए-बादाम और साफ़ पानी में पकाएँ यहाँ तक कि क़िवाम तैयार हो जाए।

प्रयोग-विधि: सर पर ज़िमाद करें। नर्म कपड़े से बाँध दें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ा:**

यह कण्ठमाला समाप्त करता है और उस में लाभदायक है।

औषधियाँ: ज़ाफ़रान, मुर मककी, ज़ंगार एक एक भाग।

निर्माण-विधि: सभी औषधियों को हल्का कूट छान लें।

प्रयोग-विधि: कण्ठमाला के स्थान पर ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ा:**

यह सफ़रा और गरमी की अधिकता से होने वाले सर दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँ: बर्ग-ए-ख़ुर्फ़ह, शयाफ़-ए-मामीसा, सन्दलैन (सन्दल सुर्ख़ और सन्दल सफ़ेद), गुल-ए-सफ़ेद और फ़ोफ़ल सभी एक एक भाग, अफ़ियून 48.8 मिलीग्राम।

निर्माण-विधि: सभी औषधियों को सिर्का के साथ मिलाएँ।

प्रयोग-विधि: सर पर ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ा:**

यह Pleurisy और Pneumonia में लाभदायक है।

औषधियाँ: बनफ़्शा, बाबूना, शिब्त, सबूस-ए-गन्दुम, तुख़्म-ए-ख़त्मी, कतान और आरद-ए-जौ सभी एक एक भाग।

निर्माण-विधि: सभी औषधियों को कूट छान कर थोड़े से पानी में पका लें और

रोग़न-ए-बनफ़्शा एवं रोग़न-ए-बादाम मिला कर ज़िमाद तैयार करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

  यह Pleurisy, Pleurodynia, Intercostal neuralgia में लाभदायक है।

  औषधियाँः आरद-ए-जौ, बाक़ला, बनफ़्शा, हुल्बा,खुब्बाज़ी, गुल-ए-नीलोफ़र, ख़त्मी, वरक़ गुल-ए-सुर्ख़, सबूस-ए-गन्दुम।

  निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर थोड़े से पानी में पका लें फिर मोम सफेद और रोग़न-ए-बनफ़्शा सम्मिलित कर के सब को अच्छी तरह मिलाएँ और ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

  यह ठंडे आमाशय को गरम करता और सशक्त बनाता है।

  औषधियाँः सअद, मस्तगी, सुंबुलुत्तीब, क़ुस्त और अफ़्सन्तीन प्रत्येक 7 ग्राम।

  निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-बिही में मिलाएँ और ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

  यह आमाशय के पुराने आवरणशोथ को गलाता है।

  औषधियाँः मुक़िल, हब्ब-ए-बलसान, तुख़्म-ए-किब्रीत प्रत्येक 21 ग्राम, सुंबुलुत्तीब, उशक़, मस्तगी प्रत्येक 14 ग्राम, मोम सफ़ेद और रोग़न-ए-नारदीन प्रत्येक 52.5 ग्राम।

  निर्माण-विधिः मुक़िल और उशक़ को रात भर के लिए शराब में भिगो दें और शेष सब को कूट छान कर पानी में थोड़ा सा पका लें और फिर सब को एक साथ मिला कर मोम और रोग़न सम्मिलित करें और ज़िमाद तैयार करें।

  प्रयोग-विधिः ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

  यह ठंडे आमाशय को सशक्त बनाता है और उस को गरम करता है

  औषधियाँः सअद, अफ़्सन्तीन, क़ुस्त, सुंबुलुततीब प्रत्येक 10.5 ग्राम, कुन्दुर 14 ग्राम, मस्तगी 17.5 ग्राम, क़सबुज़्ज़रीरा, इज़्ख़िर, मुश्क, क़रन्फ़ुल, दार-ए-चीनी प्रत्येक 7 ग्राम।

  निर्माण-विधिः सबको पुरानी शराब के साथ मिलाएँ और ज़िमाद तैयार करें।

  प्रयोग-विधिः पेट पर ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

  यह पेट के ठोस सूजनों को गलाता है।

  औषधियाँः हुल्बा, शिब-ए-यमानी, सफ़ेद और बड़े गुल-ए-ख़त्मी, बाबूना और मस्तगी प्रत्येक 17.5 ग्राम, सुंबुलुत्तीब, सअद कूफ़ी, क़सबुज़्ज़रीरा और इज़्ख़िर प्रत्येक

7 ग्राम, मोम सफ़ेद 10.5 ग्राम, रोग़न-ए-बाबूना 52.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को पका कर ज़िमाद तैयार करें।

प्रयोग-विधिः ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह पेट के ठोस सूजनों को गलाता है।

औषधियाँः सन्दलैन, वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़, शयाफ़-ए-मामीसा, आब-ए- इनबुस्सअलब।

निर्माण-विधिः सब को सिर्का एवं अर्क़-ए-गुलाब में मिला कर ज़िमाद तैयार करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गरमी से होने वाली पेट की कमज़ोरी में लाभदायक है।

औषधियाँः हब्बुलआस, आमला, ऊद हिन्दी, गुलनार, बर्ग-ए-मूरद, पोस्त-ए-शिब्त-ए-आबी, वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़, क़सबुज़्ज़रीरा और सन्दलैन (सन्दल सुर्ख़ और सन्दल सफ़ेद)।

निर्माण-विधिः सब को कूट छार कर अर्क़-ए-गुलाब और आब-ए-सेब के साथ मिलाएँ और ज़िमाद तैयार करें।

प्रयोग-विधिः ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बलग़म की अधिकता के कारण उत्पन्न होने वाली सूजन में लाभदायक है।

औषधियाँः जअदह 17.5 ग्राम, अफ़्सन्तीन, सुंबुलुततीब प्रत्येक 12.25 ग्राम, कुन्दुर 10.5 ग्राम, बीख़-ए-ख़त्मी 24.5 ग्राम, पीह-ए-बत्त 21 व पीह-ए-मुर्ग़ 35 ग्राम, मोम सफ़ेद 52.5 ग्राम।

निर्माण व प्रयोग-विधिः विधि अनुसार ज़िमाद तैयार करें और प्रयोग में लाएँ।

- **ज़िमाद-ए-इस्तमख़ीकूनः**

यह पेट, जिगर और तिल्ली की ठंडक में लाभदायक है।

औषधियाँः अफ़्सन्तीन और नारदीन 52.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर पानी, मोम, तैल में थोड़ा सा पका कर विधि अनुसार ज़िमाद तैयार करें और प्रयोग में लाएँ।

- **ज़िमाद-ए-हैयुलआलमः**

यह दिल, जिगर और पेट की गर्मी में आराम देता है।

औषधियाँः मोम सफ़ेद 105 ग्राम, रोग़न-ए-गुल, रोग़न-ए-बनफ़्शा,रोग़न-ए-बादाम प्रत्येक 70 ग्राम, आब-ए-किश्नीज़ तर, आब-ए-कासनी सब्ज़, आब-ए-बर्ग-ए-ख़ुर्फ़ह,

आब-ए-हैयुलआलम प्रत्येक 105 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को पतीले में हल्की आँच पर इतना पकाएँ कि उस का क़िवाम क़ैरूती की भाँति हो जाए। उस के बाद बनफ़्शा, हैयुलआलम, गुल-ए-सुर्ख़, सन्दल सफ़ेद प्रत्येक 14 ग्राम, क़सबुज़्ज़रीरा 7 ग्राम, काफ़ूर 3.5 ग्राम की मात्रा में लें और सभी औषधियों को कूट छान कर एक साथ मिलाएँ फिर हावन-ए-संगी में अर्क़-ए-गुलाब और उपर्युक्त रसों के साथ इतना पीसे कि मरहम की भाँति हो जाए।

प्रयोग-विधिः अलसी के बने कपड़े के टुकड़े पर लगा कर आमाशय, दिल और जिगर जहां भी आवश्यकता हो ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह उल्टी और हैज़ा में लाभदायक है।

औषधियाँः सन्दल सफ़ेद, गुल-ए-सुर्ख़ और बर्ग-ए-मूरद प्रत्येक 24.5 ग्राम, सुक्क, अक़ाक़िया, सअद, कुन्दुर और कअक बग़दादी प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-मूरद में मिलाएँ और ज़िमाद तैयार करें।

प्रयोग-विधिः आमाशय पर ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह उल्टी को रोकता है और हैज़ा में लाभदायक है।

औषधियाँः गुल-ए-सुर्ख़ और सुक्क प्रत्येक 17.5 ग्राम, सन्दल सफ़ेद और रामिक प्रत्येक 14 ग्राम, ऊद 10.5 ग्राम, ज़ाफ़रान 3.5 ग्राम, काफ़ूर 500 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-बर्ग-ए-मूरद के साथ मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः आमाशय पर ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह पेट में अनियमितता से होने वाले दस्त में और पेट की पाचन शक्ति व धारण शक्ति में कमज़ोरी के लिए लाभदायक है।

औषधियाँः मुर्र, कुन्दुर, मस्तगी, हब्बुलआस, गुल-ए-सुर्ख़, पोस्त-ए-अनार,माज़ू, किरम, सुमाक़ प्रत्येक 7 ग्राम, सअद 3.5 ग्राम, ज़ाफ़रान 500 मिलीग्राम, गुलनार फ़ारसी, लाज़न और सन्दलैन (सन्दल सुर्ख़ और सन्दल सफ़ेद) प्रत्येक 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आ-ए-बिही और आब-ए-बर्ग-ए-मूरद के साथ मिलाएँ और ज़िमाद तैयार करें।

प्रयोग-विधिः आमाशय पर ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ा:**

यह सफ़रा की अधिकता से होने वाले दस्त को रोकता है।

औषधियाँ: अक़ाक़िया, हुज़ुज़ मक्की, कुन्दुर, सुमाक़, कज़माज़ज, हब्बुलआस, गुलनार, गुल-ए-सुर्ख़ सभी एक एक भाग।

निर्माण-विधि: सब को कूट छान लें और उस में थोड़ी मात्रा में रोग़न-ए-मसतगी सम्मिलित करें और फिर आब-ए-बर्ग-ए-मूरद के साथ मिलाकर ज़िमाद तैयार करें।

प्रयोग-विधि: आमाशय पर ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ा:**

यह ऐसे दस्त को रोकता है जो पेट की पाचन शक्ति की कमज़ोरी और जिगर की ठंडक के कारण होता है।

औषधियाँ: सुंबुलुततीब, अफ़्सन्तीन, लाज़न, क़सबुज़्ज़रीरा, क़िशूर-ए-कुन्दुर, मस्तगी, बर्ग-ए-मूरद, गुलनार, गुल-ए-सुर्ख़, सन्दल प्रत्येक 17.5 ग्राम, सुक्क, पोस्त अनार प्रत्येक 26.25 ग्राम।

निर्माण-विधि: कूट कर पुरानी शराब के साथमिलाएँ।

प्रयोग-विधि: आमाशय पर ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ा:**

यह पेट पर लगाने से उल्टी में, नाभि पर लगाने से दस्त में लाभदायक और जघन क्षेत्र पर लगाने से आर्तवजनक है।

औषधियाँ: ब्रंग काबुली और उसारा-ए-क़िस्साउलहिमार प्रत्येक 10.5 ग्राम, ख़रबक़ सफ़ेद, मुरदार संग प्रत्येक 14 ग्राम।

निर्माण-विधि: कूट कर रोग़न-ए-ज़ैतून के साथ मिलाएँ।

प्रयोग-विधि: आमाशय, नाभि या जघन क्षेत्र पर जहाँ भी प्रयोग करना चाहें, ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ा:**

अगर इस को पेट पर लगाएँ तो सौदा का विरेचक है, बग़ल के निचले भाग पर ज़िमाद करें तो सफ़रा का विरेचक है, अगर कूल्हों पर मालिश करें तो बलग़म को बाहर निकालता है। यह ज़िमाद हकीमों के बहुत विचित्र नुस्ख़ों में से एक है। यह बूढ़ों, बच्चों और जिन व्यक्तियों को विरेचक औषधि लेने की ताक़त नहीं रहती है उन के लिए लाभदायक है और उन के लिए प्रयोग की जाती है।

औषधियाँ और निर्माण-विधि: तुर्मुस मुक़श्शर 24 ग्राम को कूट कर पकाएँ

और एक देग में रख लें फिर उस में इतनी मात्रा में दूध डालें जो उस को ढक ले। तत्पश्चात उस को इतना पकाएँ कि तुर्मुस दूध को सोख ले फिर तुर्मुस के समभाग रोग़न-ए-गाव मिला कर के इतना पकाएँ कि वह रोग़न में अच्छी तरह पक जाए।

प्रयोग-विधिः सूती कपड़े पर चुपड़ कर प्रभावित स्थान पर ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Colic में आराम देता है। Motion साफ़ होता है। जिस व्यक्ति को विरेचक औषधियाँः ना दी जा सकती हों उस के लिए यह ज़िमाद लाभदायक है।

औषधियाँः शहम-ए-हन्ज़ल, शिब्रम, हब्बुन्नील, सक़मूनिया, सिब्र सक़ूतरी, मीअह सायला, मुर मक्की, बीख़-ए-इज़्ख़िर प्रत्येक 5.25 ग्राम, तुर्बुद, मुक़िल, बीख़-ए-सोसन आसमान्जोनी, गाय का गोबर, गाय का पित्ता, क़िस्साउलहिमार, मवीज़ज, समग़-ए-सनोबर और पोस्त-ए-बीख़-ए-कबर प्रत्येक 7 ग्राम, क़िर्दमाना, फ़र्फ़ियून, बूरह सुर्ख़ और नमक-ए-इन्द्रानी प्रत्येक 17.5 ग्राम, पीह-ए-मुर्ग़ और पीह-ए-बत्त प्रत्येक 35 ग्राम, मोम सफ़ेद 105 ग्राम, रोग़न-ए-कुन्जद 70 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूटने योग्य औषधियों को कूट छान लें और Exudates को पानी में घोल लें और फिर विधि अनुसार सब को मिलाकर ज़िमाद तैयार करें।

प्रयोग-विधिः आमाशय पर ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह पेट और जिगर की कमज़ोरी में लाभदायक है।

औषधियाँः कअक बग़दादी 14 ग्राम, मस्तगी, अफ़्सन्तीन और कुन्दुर प्रत्येक 7 ग्राम, क़सबुज़्ज़रीरा, सिब्र, ऊद हिन्दी और अक़ाक़िया प्रत्येक 3.5 ग्राम, लोबान 7 ग्राम, बिही मुनक़्क़ा पुख़्ता 21 ग्राम, ख़ुर्मा-ए-क़सब 175 ग्राम, मोम सफ़ेद और रोग़न-ए-नारदीन प्रत्येक 52.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः कअक, ख़ुर्मा-ए-क़सब को शराब में भिगोएँ फिर बिही को उसी शराब में डाल कर पकाएँ। शेष को कूट छान लें और मोम व रोग़न-ए-नारदीन को गरम कर के बाद सब को एक साथ मिलाएँ और विधि अनुसार ज़िमाद तैयार करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह जिगर की सूजन व ठोसपन कोनर्म करता है।

औषधियाँः बर्ग-ए-इनबुस्सअलब, बनफ़्शा प्रत्येक 14 ग्राम, गुल-ए-सुर्ख़, तुहलब, असर्राई, बर्ग-ए-लिसानुलहम्ल 1-1 भाग।

निर्माण-विधिः सब को हल्का कूट कर ज़िमाद तैयार करें।

प्रयोग-विधिः जिगर पर ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्खा:**

यह जिगर की ठंडक, जिगर की कमज़ोरी, जिगर की सूजन और जिगर की फूलन में लाभदायक है।

औषधियाँ: सुंबुलुततीब, अफ़्सन्तीन, मस्तगी, असारून, हमामा, सिब्र, क़सबुज़्ज़रीरा, सअद, इज़्ख़िर, मुर्र प्रत्येक 7 ग्राम, ज़ाफ़रान 10.5 ग्राम, इक्लीलुलमलिक 24.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट छान कर पुरानी शराब में मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः जिगर पर ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्खा:**

यह पेट व जिगर की ठंडक से उत्पन्न होने वाले जलोदर रोग में लाभदायक है।

औषधियाँ: हमामा, सुंबुल, क़िर्दमाना प्रत्येक 35 ग्राम, मुक़िल, उशक़ प्रत्येक 28 ग्राम, सअद 17.5 ग्राम, सिब्र, मुर मक्की, कुन्दुर, हब्ब-ए-बलसान प्रत्येक 24.5 ग्राम, लाज़न 21 ग्राम, सलीख़ा, पीह-ए-बत्त, आक़रक़रहा, मीअह ख़ुश्क, गुल-ए-सुर्ख़, सीसालियूस, ज़रावन्द, इक्लीलुलमलिक, क़रन्फ़ुल, मस्तगी प्रत्येक 52.5 ग्राम, उसारा-ए-क़िस्साउलहिमार, शहम-ए-हन्ज़ल प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः Exudates को शराब में घोल लें और शेष औषधियों को कूट छान कर विधि अनुसार ज़िमाद तैयार करें।

प्रयोग-विधिः आमाशय एवं पेट पर ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्खा:**

यह जलोदर रोग में लाभदायक है।

औषधियाँ: भेड़ की सूखी मेंगनी, बूरह अरमनी, ज़ीरा किर्मानी और सअद।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर अर्क़-ए-राज़ियाना के साथ ज़िमाद तैयार करें।

प्रयोग-विधिः पेट पर ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्खा:**

इस से भी वही लाभ प्राप्त होते हैं।

औषधियाँ: बूरह अरमनी, बीख़-ए-सोसन, क़िर्दमाना, मवीज़ज प्रत्येक 10.5 ग्राम, गाय का गोबर, बकरी की मेंगनी प्रत्येक 175 ग्राम।

निर्माण-विधिः नमक का पानी मिलाकर ज़िमाद तैयार करें।

प्रयोग-विधिः पेट पर ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह नुस्खा जलोदर के विभिन्न प्रकारों में लाभदायक है।

औषधियाँः नौशादर, इक्लीलुलमलिक, उश्ना, हमामा, वरक़-ए-दरख़्त-ए-ग़ार, मरज़न्जोश, तुख़्म-ए-करफ़्स, अनीसून, राज़ियाना, इर्सा, सअद, सलीख़ा, कुन्दुर, मीअह और मुर प्रत्येक 35 ग्राम, जावशीर 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूटने योग्य को कूट छान लें। Exudates को रोग़न-ए-सुद्दाब में घोल लें फिर सब को हावन में इतना पीसें कि वो मरहम की भाँति हो जाए।

प्रयोग-विधिः पेट पर ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह तिल्ली के ठोसपन में लाभदायक है।

औषधियाँः मुक़िल अज़रक 35 ग्राम, उशक़ 17.5 ग्राम, कर्सना, आरद-ए-बाक़ला, इक्लीलुलमलिक, हुल्बा, तुख़्म-ए-कतान,बाबूना और आरद-ए-तुर्मुस प्रत्येक 8.75 ग्राम, अन्जीर स्याह 50 की संख्या में।

निर्माण-विधिः मुक़िल, उशक़, अन्जीर को पुराने सिर्का में भिगो कर नर्म कर लें। शेष को कूट छान कर मिलाएँ फिर थोड़ी मात्रा में रोग़न-ए-सुद्दाब मिला कर ज़िमाद तैयार करें।

प्रयोग-विधिः तिल्ली के स्थान पर ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह तिल्ली की सूजन कम और ठोसपन नरम करता है।

औषधियाँः मुर मक्की, मुक़िल अज़रक, उशक़ और कुन्दुर।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को समभाग में लेकर सिर्का में भिगो कर नर्म कर लें और विधि अनुसार ज़िमाद तैयार करें।

प्रयोग-विधिः तिल्ली के स्थान पर ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह तिल्ली के लिए लाभदायक है।

औषधियाँः बर्ग-ए-सुद्दाब ख़ुश्क 35 ग्राम, पोदीना 10.5 ग्राम, बूरह अरमनी 17.5 ग्राम, उशक़ 24.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः बूरह और उशक़ को पुराने सिर्का में घोल लें साथ ही सुद्दाब और पुदीना को कूट छान लें फिर सब को आपस में अच्छी तरह मिला कर ज़िमाद तैयार करें।

प्रयोग विधिः तिल्ली के स्थान पर ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ा:**

यह आमाशय, जिगर, तिल्ली के ठोसपन में लाभदायक है।

औषधियाँ: मुक़िल अज़रक, इक्लीलुलमलिक, सुंबुलुत्तीब प्रत्येक 10.5 ग्राम, अफ़्सन्तीन 14 ग्राम, सिब्र सक़ूतरी, गुल-ए-सुर्ख़ प्रत्येक 7 ग्राम, बाबूना 5.25 ग्राम, क़सबुज़्ज़रीरा 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर आब-ए-इनबुस्सअलब के साथ मिला कर ज़िमाद तैयार करें।

प्रयोग-विधि: ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ा:**

यह बच्चों की तिल्ली की सूजन, ठोसपन में लाभदायक है।

औषधियाँ: अन्जीर स्याह 175 ग्राम, क़ुस्त बहरी 14 ग्राम, मग़ज़-ए-बादाम तल्ख़ मुक़श्शर 35 ग्राम, पोस्त-ए-बीख़-ए-कबर 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: अन्जीर को पुराने सिर्का में भिगो कर नर्म कर लें और शेष औषधियों को कूट छान लें फिर सब को मोम सफेद और रोग़न-ए-खैरी के साथ मिला कर ज़िमाद तैयार करें।

प्रयोग-विधि: इस ज़िमाद को काग़ज़ पर लगाएँ और आमाशय ख़ाली हो तो काग़ज़ को तिल्ली के स्थान पर रखें और फिर दो घंटे बाद उतार लें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ा:**

यह तिल्ली की सूजन को कम करता है।

औषधियाँ: हुल्बा, तुख़्म-ए-कतान, सबूस-ए-जौ और आरद-ए-बाक़ला प्रत्येक 17.5 ग्राम, कर्सना, गुल-ए-मर्व और ईर्सा प्रत्येक 7 ग्राम, बूरह अरमनी और पोस्त-ए-बीख़-ए-कबर प्रत्येक 14 ग्राम, मुक़िल 10.5 ग्राम, अन्जीर 10 की संख्या में।

निर्माण-विधि: अन्जीर को सिर्का में भिगो कर नर्म कर लें और शेष सब को कूट छान कर सब को एक साथ मिलाएँ और विधि अनुसार ज़िमाद तैयार करें।

प्रयोग-विधि: तिल्ली के स्थान पर ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ा:**

यह सभी प्रकार के ठोस सूजन, फोड़ों (Furuncle/Boil) और कण्ठमाला को गलाता और कम करता है।

औषधियाँ: इल्कुलबुत्म, उशक़, मीअह सायला, मुक़िल, मग़ज़-ए-क़लम-ए-गाव, पीह-ए-बत्त, मोम सफ़ेद, हुल्बा, तुख़्म-ए-कतान और रोग़न-ए-सोसन।

निर्माण-विधिः सब को मिला कर ज़िमाद तैयार करें।
प्रयोग-विधिः ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह सभी प्रकार के सूजन को गलाता और कम करता है।

औषधियाँः सबूस-ए-आरद-ए-गन्दुम, ख़त्मी सफ़ेद, बाबूना, हुल्ब, तुख़्म-ए-कनार।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को थोड़ी मात्रा में मोम और रोग़न-ए-बाबूना के साथ मिला कर ज़िमाद तैयार करें।

प्रयोग-विधिः ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह फोड़ों को नरम करता है और सभी प्रकार के सूजन को पकाता है।

औषधियाँः खरदल सफ़ेद, तुख़्म-ए-कतान, हुल्बा, अन्जीर एक एक भाग।

निर्माण-विधिः सब को थोड़ी मात्रा में रोग़न-ए-कताँ और मोम के साथ मिलाएँ और सब को कूट छान कर इतना मिलाएँ कि वो मरहम की भाँति हो जाए।

प्रयोग-विधिः फोड़ों (Furuncle/Boil) पर ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह सभी प्रकार के सूजन को पकाता है। यह फोड़ों को भी पकाता है।

औषधियाँः बाबूना, तुख़्म-ए-मर्व, तुख़्म-ए-कतान, हुल्ब, ख़त्मी एक एक भाग।

निर्माण-विधिः सब को लेकर कूट छान लें फिर रोग़न-ए-कताँ और मोम सफ़ेद के साथ मिलाकर इतना पकाएँ कि वो मरहम की भाँति हो जाए।

प्रयोग-विधिः फोड़ों और सूजन पर ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह फोड़ों को पकाता है और उनका मुँह खोलता है।

औषधियाँः ख़मीर तुर्श तीन भाग, बूरह अरमनी, कबूतर की बीट, मुर्ग़े की बीट।

निर्माण-विधिः सब को एक एक भाग लेकर उन सब के समभाग रोग़न-ए-ज़ैतून में डाल कर सब को एक साथ मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः फोड़ों (Furuncle/Boil) पर ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह तांत्रिकाओं की ऐंठन में नर्मी पैदा करता है।

औषधियाँः उशक़, लुक्क, इल्कुलबुत्म, जावशीर, क़िन्नह, मीअह सायला, रोग़न-ए-बलसान, फ़िलफ़िल, ज़ूफ़ा खुश्क, ज़ाफ़रान, जुन्द बेद स्तर प्रत्येक 7 ग्राम, मोम ज़र्द, मग़ज़-ए-साक़-ए-गाव, पीह-ए-मुर्ग़, रोग़न-ए-बाबूना,पीह-ए-बत्त, रोग़न-ए-यासमीन प्रत्येक 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः Exudate को मैफुख़्तज में घोल लें। चर्बी, मोम और तैल जो भी उपस्थित हो उस को पका लें। शेष सभी औषधियों को कूट छान लें फिर सब को एक साथ मिला लें और हावन में अच्छी तरह मल छान कर पीस लें।

प्रयोग-विधिः प्रभावित अंगों पर ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह छाती के सूजन (Mastitis) में लाभदायक है।

औषधियाँः नान-ए-गन्दुम खुश्क, आरद-ए-बाक़ला, हुल्बा, ख़त्मी, ज़ाफ़रान।

निर्माण-विधिः सब को एक एक भाग लेकर कूट छान लें फिर ज़र्दी-ए-बैज़ा-ए-मुर्ग़ और अर्क़-ए-गुलाब के साथ मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः छाती पर ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह छाती के सूजन को पकाता और उस के दर्द में आराम देता है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-कतान,हुल्बा, कुन्जद, बीख़-ए-सोसन, मीअह सायला, कबूतर की बीट, पुशक-ए-बुज़ अर्थात बकरी की मेंगनी, नत्रून और रातीनज।

निर्माण-विधिः सब को एक एक भाग लेकर कूट थोड़ी मात्रा में मोम और रोग़न-ए-गुल के साथ विधि अनुसार मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः छाती पर ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह औरत की छाती में दूध को बढ़ाता है।

औषधियाँः आरद-ए-बाक़ला 35 ग्राम, तुख़्म-ए-बादरूज 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट आब-ए-बादरूज में मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः छाती पर ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह औरत के दूध को कम करता है।

औषधियाँः दुर्दी-ए-सिर्का-ए-कुहना, इक्लीलुलमलिक, आरद-ए-बाक़ला

निर्माण-विधिः सब को एक एक भाग लेकर पकाएँ।
प्रयोग-विधिः छाती पर ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से भी वही लाभ प्राप्त होते हैं।
औषधियाँः नअनाअ, पोदीना दश्ती और सुद्दाब दश्ती।
निर्माण-विधिः सब को दुर्दी-ए-सिर्का के साथ पकाएँ।
प्रयोग-विधिः छाती पर ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

इस को लगाने से छाती बड़ी होती है।
औषधियाँः कुन्दुर और वदअ मुहर्रक़ एक एक भाग, आरद-ए-जौ आधा भाग।
निर्माण-विधिः सभी औषधियों को सिर्का के साथ मिलाएँ।
प्रयोग-विधिः छाती पर कई बार ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से भी वही लाभ प्राप्त होते हैं।
औषधियाँः तीन-ए-क़ैमूलिया, माज़ू सब्ज़, इस्फ़ीदबाज, अक़ाक़िया प्रत्येक 7 ग्राम।
निर्माण-विधिः सब को रोग़न-ए-मसतगी और आब-ए-बर्ग-ए-मको में मिलाएँ।
प्रयोग-विधिः छाती पर ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह औरत की नाभि को बाहर नहीं निकलने देता है।
औषधियाँः शिब-ए-यमानी 10.5 ग्राम, दुर्दी-ए-सिर्का 21 ग्राम, माज़ू सब्ज 3।
निर्माण-विधिः कूट कर दुर्दी-ए-सिर्का के साथ पकाएँ।
प्रयोग-विधिः ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से भी वही लाभ प्राप्त होते हैं।

औषधियाँः आरद-ए-बाक़ला, माज़ू, पोस्त-ए-अनार, गुलनार, जौज़ुस्सर्व, कज़माज़ज और पोस्त-ए-तुख़्म-ए-मुर्ग़।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर पानी में अच्छी तरह पकाएँ और अंत में पोस्त बैज़ा-ए-मुर्ग़ को सम्मिलित करें।

प्रयोग-विधिः नाभि पर ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ा:**

यह हिस्टीरिया में लाभदायक है।

औषधियाँ: इक्लुलअन्बात, मस्तगी और सुंबुलुत्तीब प्रत्येक 35 ग्राम, रोग़न-ए-सोसन और रोग़न-ए-शिब्त प्रत्येक 70 ग्राम, शहदाना 24.5 ग्राम, आक़रक़रहा, फ़िलफ़िल, सलीख़ा, शोनीज़ और पोदीना कोही प्रत्येक 17.5 ग्राम, इक्लीलुलमलिक 28 ग्राम।

निर्माण-विधि: सभी औषधियों को कूट छान लें। इल्क और मस्तगी को तैलों में डालें फिर सब को अच्छी तरह मिलाएँ।

प्रयोग-विधि: यौनि के साथ चूतड़ और कमर की हड्डियों पर ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ा:**

यह अधिक माहवारी आने को रोकता है।

औषधियाँ: अदस मुक़श्शर, पोस्त-ए-अनार तुर्श और बर्ग-ए-मूरद ख़ुश्क।

निर्माण-विधि: सब को एक एक भाग लेकर कूट छान लें।

प्रयोग-विधि: पीठ पर ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ा:**

इस से भी वही लाभ प्राप्त होते हैं।

औषधियाँ: सअद कूफ़ी, गुल-ए-सुर्ख़, अफ़्सन्तीन, गुलनार और लाज़न प्रत्येक 3.5 ग्राम, सिब्र और शिब-ए-यमानी प्रत्येक 17.5 ग्राम, अदस मुक़श्शर, पोस्त-ए-अनार तुर्श और माज़ू प्रत्येक 35 ग्राम, ख़ुर्मा खरक 105 ग्राम।

निर्माण-विधि: ख़ुर्मा को शराब में पका कर नर्म कर लें और लादन को भी उस में डाल कर नर्म कर लें फिर शेष सब को कूट छान कर सब को एक साथ मिलाएँ।

प्रयोग-विधि: पीठ, नाभि, जघन क्षेत्र पर ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ा:**

यह आर्तवजनक है।

औषधियाँ: सुद्दाब, क़न्तूरियून, तुख़्म-ए-करफ़्स, ब्रन्जासिफ़, मरज़न्जोश, पोदीना दशती, मुश्कतरामशीअ और अनीसून सभी एक एक भाग, रोग़न-ए-सुद्दाब, रोग़न-ए-बाबूना और रोग़न-ए-शिब्त थोड़ी थोड़ी मात्रा में।

निर्माण-विधि: सभी औषधियों को कूट छान कर थोड़े से पानी में पका लें और तैलों को सम्मिलित कर के सभी को एक साथ अच्छी तरह मिलाएँ।

प्रयोग-विधि: जघन क्षेत्र और यौनि पर ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह ऐसी लिंग और अण्डाशय की सूजन (Penitis and Oopheritis) में लाभदायक है जो ठंडक के कारण होती है।

औषधियाँः बर्ग-ए-कबर 405 ग्राम, अन्जीर 10 की संख्या में, आरद-ए-हुल्बा, बाबूना और मवीज़ मुनक़्क़ा प्रत्येक 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को थोड़े से पानी में पकाएँ और 17.5 ग्राम रोग़न-ए-कुन्जद सम्मिलित कर के ज़िमाद तैयार करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह अंडकोश एवं लिंग की ठोस सूजन में लाभदायक है।

औषधियाँः मवीज़ मुनक़्क़ा, पीह-ए-गुर्दा-ए-बुज़, मग़्ज़-ए-क़लम-ए-गाव, पीह-ए-बत्त, रोग़न-ए-गुल, मोम सफ़ेद, पीह-ए-मुर्ग़ प्रत्येक 17.5 ग्राम, मस्तगी 10.5 ग्राम, मुक़िल, हुल्बा, तुख़्म-ए-फ़न्जमुश्क प्रत्येक 14 ग्राम, मवीज़, बाक़ला प्रत्येक 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः बाक़ला और मवीज़ को इतना पकाएँ कि वो नर्म और अच्छी तरह गल जाएँ फिर उन को अच्छी तरह मिलाएँ ताकि वो और नर्म हो जाएँ। पीह, मोम और रोग़न को एक साथ घोल कर साफ़ कर लें और शेष औषधियों को कूट छान लें फिर सब को एक साथ मिला कर ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह अंडकोश की सूजन, उस की गरमी, लिंग की सूजन और गर्मी में लाभदायक है।

औषधियाँः बर्ग-ए-इनबुस्सअलब, तुहलब, बर्ग-ए-काकनज, बर्ग-ए- शाहस्फ़्रम ताज़ा, किशनीज़ सब्ज़, बूश दरबन्दी 1-1 भाग।

निर्माण-विधिः सब को बारीक पीस कर ज़िमाद तैयार करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह उस ठोस सूजन (Sclerotitis) में लाभदायक है जो अंडकोश में होता है।

औषधियाँः पुशक-ए-बुज़, हुल्बा, बाबूना, मवीज़ मुनक़्क़ा 1-1 भाग, अन्जीर, बर्ग कबर, रोग़न-ए-कुन्जद थोड़ी मात्रा में।

निर्माण-विधिः सब को पका कर ज़िमाद तैयार करें।

प्रयोग-विधिः अंडकोश पर ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बहुमूत्रता और मूत्रकृच्छ में लाभदायक है।

औषधियाँः कुन्दुर, उसारा-ए-लेहयतुत्तीस, लाज़न प्रत्येक 7 ग्राम, अक़ाक़िया 14 ग्राम, माज़ू 5.25 ग्राम, कज़माज़ज 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-बर्ग-ए-मूरद के साथ मिलाएँ।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह मूत्रकृच्छ (Dysuria) में लाभदायक है। साथ ही यह गुर्दा एवं मूत्राशय की पथरी को तोड़ता और मूत्रविरेचक भी है।

औषधियाँः शिब्त, हब्बुलग़ार, ख़सक और सुद्दाब प्रत्येक 17.5 ग्राम, इक्लीलुलमलिक, बाबूना, आरद-ए-जौ, जिर्जीर दशती, तुख़्म-ए-तुर्ब और तुख़्म-ए-करफ़्स प्रत्येक 10.5 ग्राम, हमामा और फ़ुत्रासालियून प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान लें। रोग़न-ए-बाबूना, रोग़न-ए-सुद्दाब और रोग़न-ए-सोसन को थोड़ी थोड़ी मात्रा में ले। फिर सब को एक प्याला गरम पानी में एक साथ मिलाएँ और इतना पकाएँ कि वो मरहम की भाँति हो जाएँ।

प्रयोग-विधिः जघन क्षेत्र और गुर्दा पर ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह अंडकोश एवं लिंग के दाद, खुजली में लाभदायक है।

औषधियाँः शयाफ़-ए-मामीसा, अक़ाक़िया प्रत्येक 3.5 ग्राम, सिब्र ज़र्द, नौशादर प्रत्येक 7 ग्राम, ज़ाफ़रान 500 मिलीग्राम, उश्नान 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर रोग़न-ए-गुल और सिर्का के साथ मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह अंत्रवृद्धि (Hernia) में लाभदायक है।

औषधियाँः अक़ाक़िया, जौज़ुस्सर्व, मरज़न्जोश, माज़ू, कुन्दुर, हब्बुलग़ार, मुग़ास और समग़-ए-अरबी सभी एक एक भाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सरेशम माही के साथ मिलाएँ। अगर सरेशम के स्थान पर किसी Exudate का प्रयोग करें तो वह भी ठीक है।

प्रयोग-विधिः दो तीन दिन बाद ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह जलवृषण (Hydrocele) में लाभदायक है।

औषधियाँः पुश्क-ए-गोस्फ़न्द, गिल-ए-अरमनी, ज़ीरा किर्मानी, मिस सोख़्ता,

शहम-ए-हन्ज़ल, सिब्र सक़ूतरी और क़िस्साउलहिमार प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सिर्का में मिलाएँ।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Omentum में होने वाली अंत्रवृद्धि और आँत उतरने में लाभदायक है।

औषधियाँ: जौज़ुस्सर्व, सअद, माज़न्जोश, माज़ू, कुन्दुर, अक़ाक़िया, समग़-ए-अरबी।

निर्माण-विधिः समग़-ए-अरबी को शराब में घोलें और शेष को कूट छान कर मिलाएँ और ज़िमाद तैयार करें। इस का प्रयोग तीन दिन तक करें। अगर एक हफ़्ता तक करें तो और अच्छा है।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह अंत्रवृद्धि (Hernia) में लाभदायक है।

औषधियाँ: कुन्दुर, मस्तगी, अन्ज़रूत, सरेशम, ज़र्द, हुज़ुज़, शयाफ़-ए-मामीसा, अक़ाक़िया और गुलनार सभी एक एक भाग।

निर्माण-विधिः विधि अनुसार ज़िमाद तैयार करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह आँतों में पाए जाने वाले विभिन्न प्रकार के कीड़ों (Intestinal worms, Tapeworms and Ascaris lumbricoides) को नष्ट करता है और उन्हें दस्तों द्वारा बाहर भी निकालता है।

औषधियाँ: शहम-ए-हन्ज़ल, ज़हरा-ए-गाव, उसारा-ए-क़िस्साउलहिमार, सिब्र, क़ुत्रान।

निर्माण-विधिः सब को आब-ए-अफ़्सन्तीन के साथ मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः नाभि के चारों ओर ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

इस का भी वही लाभ है।

औषधियाँ: शोनीज़ 35 ग्राम, आब-ए-हन्ज़ल।

निर्माण-विधिः शोनीज को कूट छान कर आब-ए-हन्ज़ल के साथ मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः नाभि पर ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह आँतों के कीड़ों को बाहर निकालता है।

औषधियाँ: गुलक़न्द, तिर्याक़-ए-फ़ारूक़, क़ुस्त तल्ख़, तुर्मुस, मुर्र एक एक भाग।

निर्माण-विधिः सब को आब-ए-शीह के साथ मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह आँतों में पाए जाने वाले विभिन्न प्रकार के कीड़ों (Intestinal worms, Tapeworms and Ascaris lumbricoides) को बाहर निकालता है।

औषधियाँः शीह-ए-अरमनी, तुर्बुद प्रत्येक 7 ग्राम, शहम-ए-हन्ज़ल,उसारा-ए-क़िस्साउलहिमार प्रत्येक 3.5 ग्राम, सिब्र, तुर्मुस, अफ़्सन्तीन रूमी प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट कर आब-ए-शीह अरमनी में मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः पेट पर ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह ऐसी आँत के उतरने में लाभदायक है जो उस की धारण शक्ति में कमज़ोरी के कारण होती है।

औषधियाँः सअद, मस्तगी, मुर्र, अक़ाक़िया, लाज़न, उसारा-ए-लेहयतुत्तीस, माज़ू सब्ज़, मामीसा प्रत्येक 10.5 ग्राम, पिस्त-ए-जौ, सुमाक़, गुलनार प्रत्येक 14 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट कर आब-ए-बर्ग-ए-मूरद में मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः पेट पर ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह सफ़रा की अधिकता से आँत उतरने में लाभदायक है।

औषधियाँः बर्ग-ए-मूरद ख़ुश्क, बर्ग-ए-अस्पन्द, गुल-ए-सुर्ख़, गुलनार, माज़ू सब्ज़, लाज़न और रामिक।

निर्माण-विधिः सब को पानी के साथ मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बलग़म की अधिकता से आँत उतरने में लाभदायक है।

औषधियाँः सअद, मस्तगी, क़सबुज़्ज़रीरा, नम्माम, इज़्ख़िर, मरज़न्जोश प्रत्येक 17.5 ग्राम, ऊद हिन्दी, क़रन्फ़ुल, जौज़बोवा प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट छान कर आब-ए-मूरद में मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बवासीर एवं पेट दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँः मग़ज़-ए-साक़-ए-गाव 35 ग्राम, मोम सफ़ेद 10.5 ग्राम, अक़ाक़िया, दमुलअखवैन और कुन्दुर प्रत्येक 17.5 ग्राम, मुरदारसंग और सफ़ेदाब अर्ज़ीज़ प्रत्येक 3.5 ग्राम, मुक़िल और अफ़ियून प्रत्येक 500 मिलीग्राम, रोग़न-ए-गुल 24.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर एक साथ मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः गुदा पर ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बवासीर के दर्द एवं सूजन में आराम देता है।

औषधियाँः मुक़िल,मग़ज़-ए-उस्तुख़्वान-ए-ज़र्द आलू, मीअह सायला, कोहान-ए-उशतुर और मग़ज़-ए-साक़-ए-गाव।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को एक एक भाग लेकर ऐसे रोग़न-ए-कुन्जद में मिलाएँ जिस में प्याज़ को पकाया गया हो ।

प्रयोग-विधिः गुदा पर ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बवासीर के दर्द एवं सूजन में अत्याधिक लाभदायक है।

औषधियाँः मुक़िल, मग़ज़-ए-उस्तुख़्वान-ए-ज़र्द आलू, मीअह सायला, कोहान-ए-उशतुर और मग़ज़-ए-साक़-ए-गाव।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को एक एक भाग लेकर ऐसे रोग़न-ए-कुन्जद में मिलाएँ जिस में प्याज़ को पकाया गया हो ।

प्रयोग-विधिः गुदा पर ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बवासीर के सूजन और प्रवाहिका में लाभदायक है।

औषधियाँः बर्ग-ए-कबर, रोग़न-ए-गुल, ज़र्दी-ए-बैज़ा-ए-मुर्ग़, अफ़ियून 250 मिली ग्राम।

निर्माण-विधिः बर्ग-ए-कबर को अच्छी तरह पका कर रोग़न-ए-गुल और अंडे की ज़र्दी मिलाएँ और 250 मिली ग्राम अफियून के साथ मिला कर मरहम की भाँति ज़िमाद तैयार करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह ख़ून जमने से होने वीले बवासीर के दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँः आब-ए-पियाज़, बख़ूर-ए-मरियम, मुक़िल, क़िन्नह और ज़हरा-ए-गाव।

निर्माण-विधिः सब को मिला कर ज़िमाद तैयार करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बवासीर के सूजन एवं दर्द में आराम देता है।

औषधियाँः हुल्बा, ख़त्मी, बर्ग-ए-चुक़न्दर, बर्ग-ए-कबर, बाबून, इक्लीलुलमलिक।

निर्माण-विधिः सब को अच्छी तरह पकाने के बाद हावन में इतना पीसें कि वह मरहम की भाँति हो जाएँ। 1.75 ग्राम ज़ाफ़रान, 250 मिलाग्राम अफियून और 3.5 ग्राम मुक़िल को आब-ए-गन्दना में घोल कर अंडे की ज़र्दी के साथ मिलाएँ। फिर सभी औषधियों को एक साथ इतना पीसें कि वो आपस में अच्छी तरह मिला जाएँ।

प्रयोग-विधिः सूती कपड़े पर लगा कर गुदा पर लगाएँ।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बवासीर के सूजन एवं दर्द में बहुत लाभदायक है।

औषधियाँः शहम-ए-कोहान-ए-उशतुर, मग़्ज़-ए-साक़-ए-गाव, रोग़न-ए-उस्तुख़्वान-ए-ज़र्द आलू प्रत्येक 35 ग्राम, मीअह सायला 7 ग्राम, मुक़िल 5.25 ग्राम (मक़िल को थोड़ी थोड़ी मात्रा में आब-ए-तुख़्म-ए-कतान और आब-ए-पियाज़ में घोलें), लुआब-ए-तुख़्म-ए-कतान और लुआब-ए-हुल्बा प्रत्येक 70 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को हल्की आँच पर पका कर क़िवाम तैयार करें फिर उस में ज़ाफ़रान, अफ़ियून 1-1 ग्राम, सन्दरूस 7 ग्राम, ज़िफ्त रूमी 3.5 ग्राम और अंडे की ज़र्दी 10 सम्मिलित करें। फिर हावन में इतना कूटें कि वो मरहम की भाँति हो जाएँ।

प्रयोग-विधिः ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह नासूर और बवासीर को सुखाता है। ख़ून बहने को भी रोकता है।

औषधियाँः पोस्त-ए-अनार, जुफ्त बलूत, जौज़ुस्सर्व, गुलनार, कुन्दुर।

निर्माण-विधिः सब को एक एक भाग लेकर कूट छान लें और आब-ए-बर्ग-ए-मूरद के साथ मिला कर ज़िमाद तैयार करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गृध्रसी, पटठों के दर्द और जोड़ों के दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँः पोस्त-ए-बीख़-ए-कबर, फ़ूदना कोही और आक़रक़रहा प्रत्येक 7 ग्राम, कुस्त और तुख़्म-ए-जिर्जीर प्रत्येक 3.5 ग्राम, ज़िफ़्त 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः ज़िफ़्त को रोग़न-ए-ज़ैतून में रखें और शेष को कूट छान लें फिर सब को मिला कर ज़िमाद तैयार करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह जोड़ों के दर्द (Arthralgia) में लाभदायक है।

औषधियाँः ख़त्मी, इक्लीलुलमलिक प्रत्येक 3.5 ग्राम, उशक़, जावशीर, मुक़िल प्रत्येक 17.5 ग्राम, पीह-ए-गुर्दा-ए-बुज़, मग़ज़-ए-साक़-ए-गाव, रोग़न-ए-सुद्दाब प्रत्येक 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः विधि अनुसार ज़िमाद तैयार करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह थोड़ा छोटा और लाभदायक है।

औषधियाँः मुग़ास, ख़त्मी, तुख़्म मर्व, आरद जौ, सूरन्जान।

निर्माण-विधिः सब को समभाग में लेकर रोग़न-ए-गुल और अंडे की ज़र्दी के साथ मिलाएँ और ज़िमाद तैयार करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह नुस्खा थोड़ा छोटा है। यह वातारक्त, जोड़ों के दर्द, गृध्रसी और पट्ठों के दर्द जैसे सभी दर्दों में लाभदायक है।

औषधियाँः बर्ग-ए-कबर, ज़र्दी बैज़ा-ए-मुर्ग़, दुर्दी-ए-सिर्का।

निर्माण-विधिः कबर की पत्ती को आब-ए-बिही में अच्छी तरह पकाएँ फिर अंडे की ज़र्दी और दुर्दी-ए-सिर्का को सम्मिलित कर के सब को अच्छी तरह मिलाएँ और ज़िमाद तैयार करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से भी वही लाभ प्राप्त होते हैं। यह सभी प्रकार के दर्दों और जोड़ों के दर्द में लाभदायक है। साथ ही यह पीड़ाहार (Analgesic) भी है।

औषधियाँः सूरन्जान, मुग़ास, ख़त्मी, हिना, साबून इराक़ी, दाना-ए-मूरद, आरद-ए-जौ, मुर मक्की, ज़ाफ़रान, बज़रुलबन्ज, सिब्र, ज़िफ़्त, मवीज़ज, समग़-ए-बादाम, वरक़-ए-ग़ार, आक़रक़रहा और क़ुस्त तल्ख़।

निर्माण-विधिः सब को समभाग में कूट छान कर दुर्दी-ए-शराब के साथ मिलाएँ और ज़िमाद तैयार करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह जोड़ों के दर्द और गरमी के कारण होने वाले Gout में लाभदायक है।

औषधियाँः सन्दलैन, वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़, शयाफ़-ए-मामीसा, नौशादर हिन्दी और फ़ोफ़ल सभी एक एक भाग, आरद-ए-जौ डेढ़ भाग, अफ़ियून एक चौथाई भाग।

निर्माण-विधि: कूट कर आब-ए-इनबुस्सअलब में मिलाएँ।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ा:**

यह जोड़ दर्द, कमर दर्द, घुटनों के दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँ: पुराना रोग़न-ए-ज़ैतून और दक़ीक़-ए-हुल्बा प्रत्येक 52.5 ग्राम, नत्रून और इल्कुलबुत्म प्रत्येक 35 ग्राम, फ़र्फ़ियून 7 ग्राम, ईर्सा 14 ग्राम।

निर्माण-विधि: विधि अनुसार मिला कर ज़िमाद तैयार करें।

प्रयोग-विधि: दर्द के स्थान पर ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ा:**

यह गरमी से होने वाले वातारक्त में लाभदायक है।

औषधियाँ: आरद-ए-जौ 70 ग्राम, ख़त्मी 35 ग्राम, अफ़ियून 7 ग्राम।

निर्माण-विधि: कूट कर आब-ए-इनबुस्सअलब में मिलाएँ।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ा:**

यह गरमी से होने वाले वातारक्त और जोड़ों के दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँ: बाबूना, ख़त्मी, इक्लीलुलमलिक प्रत्येक 10.5 ग्राम, उशक़, जाउशीर, मुक़िल प्रत्येक 35 ग्राम, सूरन्जान, मोम, सिर्का और रोग़न-ए-ज़ैतून प्रत्येक 70 ग्राम।

निर्माण-विधि: विधि अनुसार ज़िमाद तैयार करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ा:**

यह फाइलेरिया में लाभदायक है।

औषधियाँ: तुख़्म-ए-कबर, ख़ाकिस्तर ज़र्द चौब, दक़ीक़-ए-तुर्मुस, नत्रून, पुशक-ए-बुज़, दक़ीक़-ए-हुल्बा, सुक्क।

निर्माण-विधि: आब-ए-राज़ियाना में मिलाएँ।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ा:**

यह वातारक्त और गृध्रसी में आराम देता है।

औषधियाँ: सूरन्जा, जुन्द बेद स्तर, हुज़ुज़, सिब्र, मामीसा, ज़ाफ़रान, सन्दल, मुग़ास 1-1 भाग, अफ़ियून एक चौथाई भाग।

निर्माण-विधि: कूट कर आब-ए-इनबुस्सअलब में मिलाएँ।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ा:**

इस से भी वही लाभ प्राप्त होते हैं।

औषधियाँ: बाबूना, इक्लीलुलमलिक, बर्ग-ए-दरख़्त-ए-ग़ार, हुल्बा, कतान, हज़ार अस्पन्द, बर्ग-ए-कबर, मुग़ास, इल्कुलबुत्म।

निर्माण-विधि: सब को कूट छान लें और थोड़ी मात्रा में रोग़न-ए-बलसाँ के साथ मिला कर ज़िमाद तैयार करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ा:**

यह Kyphosis में लाभदायक है।

औषधियाँ: रासन, अबहल और वज सभी एक एक भाग।

निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर शराब में पकाएँ फिर थोड़ी मात्रा में मुक़िल सम्मिलित कर के ज़िमाद तैयार करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ा:**

यह शरीर से तीर, बरछी और कांटे जैसी वस्तुओं को बाहर निकालता है।

औषधियाँ: पियाज़-ए-नर्गिस, उशक़, बीख़-ए-चीनी।

निर्माण-विधि: सब को अंडे की ज़र्दी के साथ मिलाएँ।

प्रयोग-विधि: कोरे सूती कपड़े पर शहद के साथ मिलाकर लगाएँ और प्रभावित अंग पर ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ा:**

यह Fracture और Dislocation में लाभदायक है।

औषधियाँ: आरद-ए-माश, मुग़ास, मूरद, ख़त्मी, गिल-ए-अरमनी, मुर्र, अक़ाक़िया।

निर्माण-विधि: सब कूट छान लें और अंडे की ज़र्दी के साथ मिलाएँ।

प्रयोग-विधि: सूती कपड़े पर लगा कर पर ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ा:**

औषधियाँ: माश, मुग़ास, बर्ग-ए-मूरद, अबहल, पोस्त-ए-अनार, ख़त्मी, सिब्र और गिल-ए-अरमनी एक एक भाग।

निर्माण-विधि: सब को एक एक भाग लेकर कूट छान लें और अंडे की सफ़ेदी के साथ मिला कर ज़िमाद तैयार करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ा:**

यह शरीर के टूटे और अपने स्थान से हटे अंगों की सख़्ती को नर्म करता है।

औषधियाँ: ग़री-उ-स्समक और ताज़ा चर्बी।

निर्माण-विधि: सब को कूटें और रोग़न-ए-कुन्जद डाल कर ज़िमाद तैयार करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ा:**

  औषधियाँ: हब्बुल खरूअ मुक़श्शर, रोग़न-ए-गाव, शहद।

  निर्माण-विधि: हब्बुल खरूअ को एक भाग लेकर हल्का कूटें और आधा भाग रोग़न-ए-गाव और थोड़ी मात्रा में शहद के साथ अच्छी तरह मिला कर ज़िमाद तैयार करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ा:**

  यह नाख़ूनों के स्वित्रा (Leukonychia) को दूर करता है।

  औषधियाँ: मस्तगी, ज़र्नीख़, शिब-ए-यमानी, गोगर्द ज़र्द, ज़िफ़्त एक एक भाग।

  निर्माण-विधि: ज़िफ़्त को सिर्का व शहद में डालें और शेष को कूट छान कर उस में सम्मिलित कर के ज़िमाद तैयार करें।

  प्रयोग-विधि: नाख़ून पर ज़िमाद करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ा:**

  यह सफ़ेद हो चुके नाख़ूनों को बाहर निकालता और नया नाख़ून पैदा करता है।

  औषधियाँ: दुर्दी-ए-शराब मुहर्रक़ 10.5 ग्राम, ज़रारीह 7 ग्राम, मोम 10.5 ग्राम, रोग़न-ए-गुल 17.5 ग्राम।

  निर्माण-विधि: सब को मिला कर ज़िमाद तैयार करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ा:**

  औषधियाँ: जौज़ुस्सर्व, आरद-ए-नखूद, तुर्मुस 1-1 भाग।

  निर्माण-विधि: सब को कूट छान लें और एक साथ मिला कर ज़िमाद तैयार करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ा:**

  यह बिच्छू एवं कीड़े मकोड़ों के काटे में लाभदायक है। शरीर से जानवरों के ज़हर को सोखता है और उस से पहुँचने वाली हानि से बचाता है।

  औषधियाँ: जुनद बेद स्तर, सकबीनज, हिल्तीत, बर्ग-ए-कबर, सर्गीन-ए-कबूतर, पोदीना दशती, मुश्कतरामशीअ सभी समभाग में।

  निर्माण-विधि: सब को पुराने रोग़न-ए-ज़ैतून में मिला कर ज़िमाद तैयार करें।

- **ज़िमाद का अन्य नुस्ख़ा:**

  यह शरीर से अफ़आ और साँपों के ज़हर को सोखता है।

  औषधियाँ: अबहल, हब्बुलग़ार, बाबूना, इशक़ील मुशव्वा और दक़ीक़-ए-कर्सना।

  निर्माण-विधि: सब कूट छान लें और शराब के साथ मिला ज़िमाद तैयार करें।

□□□

पन्चम खण्ड

# द्वितीय अध्याय

# तिला के नुस्ख़े

- **तिला का नुस्ख़ाः**

यह गरमी के कारण होने वाले सर दर्द के रोगी के लिए लाभदायक है।

औषधियाँः सन्दल सफ़ेद और सन्दल सुर्ख़ प्रत्येक 10.5 ग्राम, गुल-ए-सुर्ख़ की पंखड़िया और रोग़न-ए-नीलोफ़र प्रत्येक 14 ग्राम, मामीसा 7 ग्राम, तुख़्म-ए-काहू 10.5 ग्राम, ज़ाफ़रान 3.5 ग्राम, अफ़ियून 17.5 ग्राम, पोस्त-ए-बीख़-ए-लुफ़्फ़ाह 5.25 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-बर्ग-ए-काहू के साथ तिला तैयार करें।

प्रयोग-विधिः आवश्यकत के समय तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गरमी के कारण सर दर्द और सूजन में लाभदायक है।

औषधियाँः तराशा-ए-कद्दू, बर्ग-ए-ख़ुर्फ़ह, बर्ग-ए-बेद, ख़त्मी, हैयुलआलम, बर्ग-ए-काहू, सन्दल, मामीसा, नौशादर हिन्दी।

निर्माण-विधिः कूट छान कर अर्क़-ए-गुलाब के साथ तिला तैयार करें।

प्रयोग-विधिः आवश्यकत के समय तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से उन दर्दों में आराम मिलता है जिन से रोगी कमज़ोर एवं निढाल हो जाए साथ ही उस सर दर्द में भी लाभदायक है जो धूप में रहने के कारण होता है।

औषधियाँः सन्दल सफ़ेद, सन्दल सुर्ख़, अन्ज़रूत प्रत्येक 3.5 ग्राम, अफ़ियून 1 ग्राम, ज़ाफ़रान 0.5 ग्राम, बज़रुलबन्ज 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट छान कर अर्क़-ए-गुलाब में मिलाएँ।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह उस सर दर्द में लाभदायक है जो गैसों के सर की ओर चढ़ने से होता है।

औषधियाँः माज़ू, गुलनार, सुक्क 1-1 भाग, सिब्र ज़र्द, ज़ाफ़रान 0.5 भाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर तिला तैयार करें।
प्रयोग-विधिः पेशानी एवं दोनों कनपटियों पर तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह सर दर्द के विभिन्न प्रकारों एवं अधकपारी (Migraine) में लाभदायक है साथ ही यह दर्द में भी आराम देता है।

औषधियाँः बीख़-ए-लुफ़्फ़ाह, कुन्दुर, ज़ाफ़रान और सिब्र ज़र्द प्रत्येक 3.5 ग्राम, बज़रुलबन्ज 7 ग्राम, गिल-ए-अरमनी 3.5 ग्राम, समग़-ए-अरबी और अन्ज़रूत प्रत्येक 1.75 ग्राम, अफ़ियून 500 मिलीग्राम, काफ़ूर 32 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर पानी के साथ मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः कनपटी, खोपड़ी, दर्द पर तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह ठंडक के कारण होने वाले सर दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँः फ़र्फ़ियून, सिब्र ज़र्द, जुन्द बेद स्तर,ऊद हिन्दी, समग़-ए-अरबी, ज़ाफ़रान प्रत्येक 1 ग्राम, अफ़ियून 0.5 ग्राम,

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-करफ़्स या आब-ए-मरज़न्जोश में मिलाएँ और तिला तैयार करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बलग़म एवं गैस की अधिकता के कारण होने वाले सर दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँः ज़न्जबील, मरज़न्जोश, मुर मक्की, जुन्द बेद स्तर, सिब्र ज़र्द, फ़र्फ़ियून और जौज़बोवा सभी एक एक भाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान लें और आब-ए-करफ़्स के साथ मिलाएँ।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह सीने एवं फेफड़े की ओर दिमाग के तरल पदार्थों को बहने से रोकता है।

औषधियाँः अक़ाक़िया, सिब्र, शयाफ़ मामीसा, हुज़ुज़ मक्की, गिल-ए-अरमनी, समग़-ए-अरबी, ज़ाफ़रान, कोकनार, मुर मक्की।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर अंडे की सफेदी के साथ मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः कनपटी एवं पेशानी पर तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह ठंडक से होने वाले पुराने Migraine में लाभदायक है।

औषधियाँः फ़िलफ़िल सफ़ेद, ज़ाफ़रान प्रत्येक 9 ग्राम, फ़र्फ़ियून, कबूतर की बीट प्रत्येक 2.25 ग्राम, मुर मक्की 4.5 ग्राम, जुन्द बेद स्तर, अफ़ियून प्रत्येक 250 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सिर्का के साथ मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः दोनों कनपटियों पर तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्खा़ः**

यह कान की जड़ में सूजन के लिए लाभदायक है।

औषधियाँः सन्दल सुर्ख़, फ़ोफ़ल, शयाफ़-ए-मामीसा, ज़ाफ़रान, एक एक भाग।

निर्माण-विधिः कूट छान कर ताज़ा किशनीज़ के पानी में घिसकर तिला तैयार करें।

- **तिला का अन्य नुस्खा़ः**

यह गरम सूजन की विभिन्न प्रकारों के प्रारंभिक समय में लाभदायक है।

औषधियाँः सन्दल सुर्ख़, गिल-ए-अरमनी, फ़ोफ़ल, अदस मुक़श्शर, शयाफ़-ए-मामीसा, हुज़ुज़ मक्की।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान लें और ताज़ा किशनीज़ के पानी, आब-ए-बुस्तान में अच्छी तरह घिसकर तिला तैयार करें।

प्रयोग-विधिः सूजन के स्थान पर तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्खा़ः**

इस से नींद आती है और गर्मी से होने वाले सर दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँः नीलोफ़र, तुख़्म-ए-काहू, पोस्त-ए-ख़शख़ाश, बनफ़्शा प्रत्येक 3.5 ग्राम, शयाफ़-ए-मामीसा, बीख़-ए-लुफ़्फ़ाह, सन्दल सुर्ख एवं सफ़ेद, बज़रुलबन्ज, ज़ाफ़रान प्रत्येक 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-काहू में घिस कर तिला तैयार करें।

प्रयोग-विधिः पेशानी पर तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्खा़ः**

यह उस के लिए लाभदायक है जिसे मिर्गी का दौरा पड़ा हो और वह गिर पड़ा हो।

औषधियाँः खरदल, जुन्द बेद स्तर और मुश्क।

निर्माण-विधिः सब को उचित भाग में लेकर पुराने सिर्का में पीस लें।

प्रयोग-विधिः रोगी के शरीर पर तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्खा़ः**

यह कक्ष की बदबू को दूर करता है।

औषधियाँः शिब-ए-यमानी, मुर मक्की, गुल-ए-सुर्ख़, बर्ग-ए-मूरद और मुरदारसंग।

निर्माण-विधिः सब को लेकर गुलाब में मिला लें।

प्रयोग-विधिः सर्वप्रथम कक्ष को आब-ए-उश्नान से धोएँ और फिर तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह कक्ष की बदबू को दूर करता है।

औषधियाँः ज़रावन्द तवील, बर्ग-ए-हिना, ज़ाफ़रान, शीशा ख़ाकिस्तर और काग़ज़ ख़ाकिस्तर सभी एक एक भाग।

निर्माण-विधिः सब को 1-1 भाग में कूट लें। आब-ए-मूरद मिला कर शयाफ़ तैयार करें। सुखा कर सुरक्षित करें।

प्रयोग-विधिः सर्वप्रथम कक्ष को आब-ए-उश्नान से धोएँ और फिर तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह पसीने की बदबू को दूर करता है।

औषधियाँः फ़ाग़िया, सुक्क, बर्ग-ए-गुल-ए-सुर्ख़, सअद, शिब-ए-यमानी, मुर मक्की और बर्ग-ए-मूरद सभी एक एक भाग।

निर्माण-विधिः सब को एक एक भाग में लेकर कूट छान लें फिर अर्क़-ए-गुलाब के साथ मिला कर तिला तैयार करें।

प्रयोग-विधिः शरीर पर तिला करें। दो घंटे बाद धो दें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह कक्ष की बदबू को दूर करता है।

औषधियाँः सन्दल, सअद, पोस्त-ए-बेरून-ए-तुरन्ज, क़सबुज़्ज़रीरा, मुर मक्की, तूतिया, मुरदारसंग, मरज़न्जोश, अज़फ़ारुत्तीब, गुल-ए-सुर्ख़, बर्ग-ए-मूरद।

निर्माण-विधिः सब को एक एक भाग में लेकर कूट छान लें फिर आब-ए-मूरद के साथ मिला कर तिला तैयार करें।

प्रयोग-विधिः कक्ष के स्थान पर तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बदबूदार पसीने को ख़ुशबूदार बनाता है।

औषधियाँः क़ुस्त बहरी, सअद, बर्ग-ए-सन्दल, इज़्ख़िर, बर्ग-ए-हिना, मूरद ख़ुश्क, बर्ग-ए-सिद्र सभी एक एक भाग।

निर्माण-विधिः सब को एक एक भाग में लेकर कूट छान लें फिर अर्क़-ए-गुलाब

के साथ मिला कर तिला तैयार करें।

प्रयोग-विधिः शरीर पर तिला करें। दो घंटे बाद धो दें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह पसीने की अधिकता को दूर करता है।

औषधियाँः बर्ग-ए-मूरद ख़ुश्क, पोस्त-ए-अनार, कज़माज़ज, जौज़ुस्सव।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान लें फिर आब-ए-मूरद के साथ मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह पसीने की अधिकता को दूर करता है।

औषधियाँः आब-ए-बिही, आब-ए-बर्ग-ए-दरख़्त-ए-सर्व, आब-ए-बर्ग-ए-मूरद प्रत्येक 210 ग्राम, गुल-ए-सुर्ख़ 420 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी को पकाएँ फिर साफ़ कर लें।

प्रयोग-विधिः शरीर पर तिला करें। 1-2 घंटे बाद धो लें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह आमाशयवर्धक है और उल्टी को रोकता है।

औषधियाँः गुल-ए-सुर्ख़, अक़ाक़िया, गुलनार फ़ारसी, माज़ू, जौज़ुस्सर्व, बर्ग-ए-मूरद, तबाशीर, सअद, रामिक, सुक्क।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-मूरद के साथ मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः आमाशय के स्थान पर तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह आमाशयवर्धक है।

औषधियाँः सुंबुलुत्तीब, सअद, गुल-ए-सुर्ख़, गुलाब, रामिक, मस्तगी और क़सबुज़्ज़रीरा सभी एक एक भाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-बिही के साथ मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः आमाशय के स्थान पर तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह जिगर की सूजन एवं उस की गर्मी में लाभदायक है।

औषधियाँः सन्दल, गुलाब, आब-ए-बर्ग-ए-हैयुलआलम।

निर्माण-विधिः सभी को मिला कर तिला तैयार करें।

प्रयोग-विधिः जिगर के स्थान पर तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

इस के भी वही लाभ हैं।

औषधियाँः सन्दल सफ़ेद, रेवन्द चीनी और तुख़्म-ए-कसूस।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-इनबुस्सअलब के साथ मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः जिगर के स्थान पर तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गर्मी से होने वाली जिगर के सूजन में लाभदायक है।

औषधियाँः सन्दलैन, आब-ए-इनबुस्सअलब, आब-ए-बर्ग-ए-हैयुलआलम, गुलाब, बनफ़्शा, आरद-ए-जौ।

निर्माण-विधिः सब को मिलाएँ और तिला तैयार करें।

प्रयोग-विधिः जिगर के स्थान पर तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह नाक से ख़ून आने को रोकता है।

औषधियाँः गुलनार, अक़ाक़िया, उसारा-ए-लेहयतुत्तीस, सन्दल सफ़ेद प्रत्येक 10.5 ग्राम, अफ़ियून 1.75 ग्राम, काफ़ूर 500 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर ताज़ा गुलाब के अर्क़ में मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः पेशानी पर तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

इस का भी वही लाभ है।

औषधियाँः अक़ाक़िया, निशास्ता,आब-ए-मूरद, आब-ए-बर्ग-ए-मूरद और आब-ए-लिसानुलहमल।

निर्माण-विधिः सभी को मिला कर तिला तैयार करें।

प्रयोग-विधिः पेशानी पर तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

इस का भी वही लाभ है।

औषधियाँः गिल-ए-अरमनी, अदस मुक़श्शर, गुलनार, सन्दल,समग़-ए-कुन्दुर, हुज़ुज़ मक्की और अक़ाक़िया प्रत्येक 3.5 ग्राम, अफ़ियून 500 मिलीग्राम, काफ़ूर 32 मिलीग्राम,बर्ग-ए-दरख़्त-ए-अंगूर, बर्ग-ए-बादरूज, गिल-ए-मख़्तूम प्रत्येक 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सिर्का के साथ मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः पेशानी पर तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

इस का भी वही लाभ है क्योंकि यह अधिकता से नकसीर फूटने को रोकता है।

औषधियाँः आब-ए-अतराफ़-ए-बर्ग-ए-ज़र्द, आब-ए-बर्ग-ए-दरख़्त-ए-बिही, आब-ए-बर्ग-ए-बेद, आब-ए-बर्ग-ए-मूरद, आब-ए-बर्ग-ए-असर्राई 1-1 भाग, अफ़ियून 1.75 ग्राम, काफ़ूर 500 मिलीग्राम, गुलनार, उसारा-ए-लेहयतुत्तीस, समग़-ए-अरबी, निशास्ता, गर्द-ए-आसिया, गिल-ए-मख़्तूमआब-ए-बर्ग-ए-दरख़्त-ए-बिही, कज़माज़ज प्रत्येक 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर उपर्युक्त विभिन्न प्रकार के रसों के साथ मिलाएँ और तिला तैयार करें।

प्रयोग-विधिः पेशानी पर तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बाल झड़ने को रोकता है।

औषधियाँः पर्सियाउशाँ, लाज़न, अफ़्सन्तीन, हब्बुलग़ार।

निर्माण-विधिः सब को समभाग में लेकर कूट छान लें और रोग़न-ए-मूरद के साथ मिला कर तिला तैयार करें।

प्रयोग-विधिः बालों पर मलें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बालों को फटने एवं झाड़ने से रोकता है।

औषधियाँः बर्ग-ए-चुक़न्दर, लुआब-ए-ख़त्मी, लुआब-ए-बज़रक़तूना।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान लें और एक साथ मिला कर तिला तैयार करें।

प्रयोग विधिः हम्माम में सर व दाढ़ी पर तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बालों को उगाता है और खलित्य में लाभदायक है।

औषधियाँः लाज़न ख़ाकिस्तर, चौब-ए-कतान, गुल-ए-शक़ाइक़, फ़ुक़ाह-ए-इज़्ख़िर, क़रन्फ़ुल, सअद, माज़ू ख़ाकिस्तर।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान लें और रोग़न-ए-मसतगी के साथ मिला कर तिला तैयार करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह खलित्य (Alopecia) में लाभदायक है।

औषधियाँः फ़र्फ़ियून, खरदल सफ़ेद और हब्बुलग़ार प्रत्येक 21 ग्राम, गोगर्द और ख़रबक सफ़ेद प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर रोग़न-ए-ज़ैतून के साथ मिलाएँ।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बलग़म की अधिकता से होने वाले खलित्य (Alopecia) में लाभदायक है।

औषधियाँः फ़फ़ियून, ख़रबक सफ़ेद, ख़रबक स्याह, सुद्दाब।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान लें और मोम ज़र्द एवं रोग़न-ए-बेद अन्जीर के साथ मिला कर तिला तैयार करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह सफ़रा की अधिकता से होने वाले खलित्य (Alopecia) में लाभदायक है।

औषधियाँः कफ़-ए-दरिया ख़ाकिस्तर, नत्रून, चूहे की मेंगनी, हब्बुर्रशाद, आक़रक़रहा और शीह ख़ाकिस्तर।

निर्माण-विधिः सब कूट छान लें और रोग़न-ए-ज़ैतून मिला कर तिला तैयार करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह सौदा और बलग़म की अधिकता से होने वाले खलित्य में लाभदायक है।

औषधियाँः शोनीज़ बिर्यां 10.5 ग्राम, नै ख़ाकिस्तर, बुन्दुक़, चूहे की मेंगनी, भेड़ की रेड़ी, पर्सियाउशान, शीह, आक़रक़रहा और ख़रबक स्याह।

निर्माण-विधिः सब को भून कर रोग़न-ए-बादाम के साथ मिलाएँ।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

इस के भी वही लाभ हैं।

औषधियाँः ज़बदुलबहर, ब्रन्जासिफ़ और ऊंट का खुर।

निर्माण-विधिः सब को जला कर राख को बारीक पीस लें और रोग़न-ए-ज़ैतून के साथ मिलाएँ और तिला तैयार करें।

प्रयोग-विधिः प्रभावित भाग को प्याज़ और उन्सुल से इतना रगड़ें कि वह लाल हो जाए फिर तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बालों को उगाता है और खलित्य में भी लाभदायक है।

औषधियाँः फ़र्फ़ियून, मवीज़ज, बूरह अरमनी, समग़, सुद्दाब।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सिर्का में पकाएँ फिर रोग़न-ए-आमला सम्मिलित कर के इतना मलें कि उस का क़िवाम क़ैरूती की तरह हो जाए।

प्रयोग-विधिः तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बालों को लंबा करता है। बालों के कालेपन को बनाए रखता है और उन को नर्म भी रखता है।

औषधियाँः लाज़न, मग़्ज़-ए-दाना-ए-ज़र्द आलू, बर्ग-ए-आज़ाद दरख़्त, मर्व और पर्सियाउशाँ सभी एक एक भाग लेकर कूट छान लें। रोग़न-ए-हिना, रोग़न-ए-आमला, रोग़न-ए-लाला और रोग़न-ए-सोसन सभी एक उचित मात्रा में, लुआब-ए-ख़त्मी और उसारा-ए-बर्ग-ए-चुक़न्दर एक एक भाग।

निर्माण-विधिः सब को इतना पकाएँ कि ग़ालिया जैसा क़िवाम तैयार हो जाए। अगर चाहें तो इन औषधियों के साथ 1.75 ग्राम मुश्क भी सम्मिलित कर लिया करें।

प्रयोग-विधिः हफ़्ते में 2 या 3 बार बालों पर तिला करें। दो घंटे बाद धो दें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से बाल निकलने बन्द हो जाते हैं और फिर उस स्थान पर बाल कदापि नहीं निकलते।

औषधियाँः छिपकली, गिर्गिट का सूखा ख़ून, आहक, बूरह, मुरदारसंग और सदफ़ ख़ाकिस्तर।

निर्माण-विधिः छिपकली को छाँव में सुखा लें और धीरे से छान लें। इस के अतिरिक्त गिर्गिट का सूखा ख़ून, आहक, बूरह, मुरदारसंग और सदफ़ की राख थोड़ी थोड़ी मात्रा में लेकर पानी के साथ मिला लें।

प्रयोग-विधिः जिस स्थान पर चाहते हों कि बाल ना उगें वहाँ इस का तिला करें। अगर उस स्थान पर पहले से बाल उपस्थित हों तो पहले उन को उखाड़ फेंकें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से भी वही लाभ प्राप्त होते हैं। यह बालों को ना उगने देने में मुजर्रब है।

औषधियाँः शीरा-ए-अन्जीर, खाया-ए-मोर्चा, तुर्शी-ए-तुरन्ज।

निर्माण-विधिः सब को थोड़ी मात्रा में लेकर मिला लें।

प्रयोग-विधिः सर के बालों को उतार कर दो तीन बार लगाएँ ताकि नए बाल ना आने पाएँ। आगर बालों को हटा दें ता उस स्थान पर नमक, शूकरान और अफ़ियून

का कई बार तिला करें ताकि उस स्थान पर नए बाल ना आने पाएँ।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह खाज एवं सूखी खुजली में लाभदायक है।

औषधियाँः मग़ज़ उस्तुख़्वान-ए-ज़र्द आलू, तुख़्म-ए-रीबास 1-1 भाग, नमक, ज़ीबक़ मक़तूल आधा आधा भाग।

निर्माण-विधिः सब को बारीक पीस लें, छाछ में मिलाने के बाद सिर्का में मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः हम्माम में शरीर पर मलें। 1 घंटे बाद धो दें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह सूखी खुजली में लाभदायक है।

औषधियाँः ज़ीबक़ मुर्दा, हिना, शहम-ए-हन्ज़ल, अक़लीमिया-ए-नुक़रा, अदस मुक़श्शर।

निर्माण-विधिः सब को समभाग में ले कर सिर्का और रोग़न-ए-गुल में मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह खुजली (Wet Itching) में लाभदायक है।

औषधियाँः ज़र्द चौब, रोग़न-ए-गुल के साथ मिलाई हुई बकरी की चर्बी और गोगर्द सभी एक एक भाग।

निर्माण-विधिः सब को अच्छी तरह मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः हम्माम में तिला करें और फिर धो दें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से भी वही लाभ प्राप्त होते हैं।

औषधियाँः ज़र्द चौब, बूरह अरमनी, मुर मक्की, क़ुस्त और कुन्दुश प्रत्येक 3.5 ग्राम, मीअह सायला 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर रोग़न-ए-गुल में मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः हम्माम में तिला करें। दो घंटे के बाद धो दें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से भी वही लाभ प्राप्त होते हैं।

औषधियाँः ज़ीबक़ मुर्दा 17.5 ग्राम, कुन्दुश 7 ग्राम, ज़रावन्द तवील 24.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर रोग़न-ए-गुल में मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ा:**

यह खुजली (Scabies, Itching) में लाभदायक है।

औषधियाँ: गोगर्द, हिना प्रत्येक 4.5 ग्राम, पोस्त-ए-हलीला ज़र्द, ज़ीबक़ मुर्दा, शीतरज हिन्दी प्रत्येक 6.75 ग्राम, फ़िलफ़िल 416 मिलीग्राम, रोग़न-ए-दुंबा 9.416 मिलीग्राम।

निर्माण-विधि: इन में कूटने योग्य को कूट लें और रोग़न-ए-गुल के साथ मिलाएँ।

प्रयोग-विधि: रात को शरमगाह पर लगाएँ और सुबह गरम पानी और सोसन से हम्माम में धो लें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ा:**

यह खुजली (Scabies, Itching) में लाभदायक है।

औषधियाँ: मग़ज़-ए-उस्तुख़्वान-ए-ज़र्द आलू तल्ख़ 35 ग्राम, गोगर्द ज़र्द 17.5 ग्राम, खुब्सुलफ़िज़्ज़ह 28 ग्राम, जर्द चैब 5.25 ग्राम, सीमाब कुशता 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: कूट कर सिर्का व रोग़न-ए-गुल में मिलाएँ।

प्रयोग-विधि: हम्माम में तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ा:**

यह खाज एवं खुजली में लाभदायक है।

औषधियाँ: तुख़्म-ए-ख़शख़ाश और तुख़्म-ए-अस्फ़ानाख प्रत्येक 10.5 ग्राम, बूरह अरमनी 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर सिर्का में मिलाएँ।

प्रयोग-विधि: तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ा:**

यह खुजली (Scabies, Itching) में लाभदायक है।

औषधियाँ: सीमाब कुश्ता, खुब्सुलफ़िज़्ज़ह, बर्ग-ए-खरज़हरा, कुन्दुश, ज़न्जार, मुरदारसंग।

निर्माण-विधि: सब को कूट कर रोग़न-ए-गुल में मिलाएँ।

प्रयोग-विधि: रात में तिला करें। सुबह नहा कर धो दें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ा:**

इस से भी वही लाभ प्राप्त होते हैं।

औषधियाँ: ज़र्नीख़ ज़र्द, मुरदारसंग, खुब्सुलफ़िज़्ज़ह, ज़र्द चौब, कुन्दुश, बर्ग-ए-खुर्फ़ह, नौशादर, ज़रावन्द तवील प्रत्येक 10.5 ग्राम, सीमाब कुशता 24.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर सिर्का और रोग़न-ए-गुल के साथ मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः तिला करें। 1-1 घंटे के बाद धो डालें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः रोग़न-ए-गुल, पुराना सिर्का और गुलाब सभी थोड़ी थोड़ी मात्रा में, बूरह अरमनी 3.5 ग्राम।

निर्माण व प्रयोग-विधिः सब को अच्छी तरह मिलाएँ और तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह दद्रु (Ring worm) में लाभदायक है।

औषधियाँः खरदल, तुख़्म-ए-तुर्ब, कुन्दुश, तुख़्म-ए-जिर्जीर प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर आब-ए-किब्रीत में मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह दद्रु (Ring worm) में लाभदायक है।

औषधियाँः गोगर्द ज़र्द 7 ग्राम, इस्फ़ीदबाज 24.5 ग्राम, मवीज़ज, उशक़, तुर्मुस और बूरह अरमनी प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण व प्रयोग-विधिः सब को सिर्का में मिलाएँ और तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह दद्रु और नेत्रसर्व में लाभदायक है।

औषधियाँः शहम-ए-हन्ज़ल, कुन्दुश, गोगर्द और ज़ाज प्रत्येक 10.5 ग्राम, मामीसा 28 ग्राम, मुरदारसंग 14 ग्राम।

निर्माण व प्रयोग-विधिः कूट कर रोग़न-ए-ज़ैतून में मिलाएँ और तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गुदा एवं अंडकोष के दद्रु और खुजली में लाभदायक है।

औषधियाँः उशक़, तुर्मुस और समग़-ए-सुद्दाब प्रत्येक 17.5 ग्राम, इस्फ़ीदबाज 14 ग्राम, गोगर्द ज़र्द और मवीज़ज प्रत्येक 10.5 ग्राम, शिब-ए-यमानी सोख़्ता 17.5 ग्राम।

निर्माण व प्रयोग-विधिः सब को कूट कर रोग़न-ए-गुल में मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह स्वित्र में लाभदायक है।

औषधियाँः शीतरज, आक़रक़रहा, हुज़ुज़, खरदल, शोनीज़, गुल-ए-शक़ाइक़ ज़र्द,

मुर मक्की और फ़ूह।

निर्माण-विधिः सब को समभाग में हल्का कूट छान लें और ख़ून के साथ मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह स्वित्र और झाईं में लाभदायक है।

औषधियाँः कुन्दुश, फ़ूह, शीतरज, खरदल, तुख़्म-ए-तुर्ब, माज़र्यून, हन्ज़ल, ख़रबक़ सफ़ेद, मवीज़ज और सक़मूनिया सभी एक एक भाग, शक़ाइक़ दो भाग।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान कर मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Ptyriasis alba/nigra को समाप्त करता है।

औषधियाँः मरवारीद और पुराना सिर्का-ए-अंगूरी।

निर्माण-विधिः मरवारीद को कण कण कर के पुराने सिर्का-ए-अंगूरी के साथ मिला कर बारीक पीस लें।

प्रयोग-विधिः झाईं के स्थान पर तिला करें। यह बहुत मुजर्रब नुस्खा है।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह स्वित्र में लाभदायक और मुजर्रब है।

औषधियाँः इत्रीलाल, भंगरह, तातूरह, कुन्दुश, बीख-ए-बादियान, बाज़िन्जान।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को एक एक भाग लेकर कूट छान लें और फिर पुराने सिर्का के साथ मिला कर बारीक पीस लें।

प्रयोग-विधिः स्वित्र के स्थान पर मलें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

इस का भी वही लाभ है।

औषधियाँः अस्ल-ए-बलादुर 24.5 ग्राम, आक़रक़रहा, सुद्दाब, फ़र्फ़ियून और शीतरज हिन्दी प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट कर अस्ल-ए-बलादुर में मिलाएँ और तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह स्वित्र में अत्याधिक लाभदायक है।

औषधियाँः किब्रीत सोख़्ता 14 ग्राम, फ़र्फ़ियून सोख़्ता और बलादुर सोख़्ता प्रत्येक

7 ग्राम, ख़रबक़ स्याह, शीतरज हिन्दी और शक़ाइक़ुन्नोअमान प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सिर्का में मिलाएँ और तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः मग़ज़-ए-बादाम, तुर्मुस, तुख़्म-ए-तुर्ब, खरदल,तुख़्म-ए-किब्रीत, ख़रनूब, ज़रावन्द तवील, ख़रबक़ स्याह, शीतरज हिन्दी, जुन्तियाना और फ़र्फ़्रियून।

निर्माण-विधिः कूट कर मतबूख़-ए-माज़ू में मिलाएँ और तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह झाईं और स्वित्र में लाभदायक है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-सुद्दाब, तुख़्म-ए-तुर्ब, मुर मक्की, कतीरा, क़ुस्त तल्ख़, नत्रून, ज़ाज और किब्रीत ज़र्द।

निर्माण-विधिः सब को समभाग में कूट छान कर मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः स्वित्र के स्थान को किसी खुर्दुरे कपड़े से रगड़ कर लाल कर लेने के बाद तिला करें और छः घंटे के बाद उस को गरम पानी से धो कर रोग़न-ए-बैज़ा-ए-मुर्ग़ से चर्ब करें। यह प्रक्रिया चार पाँच बार करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह झाईं (Freckle) को समाप्त करता है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-तुर्ब, तुख़्म-ए-खरपज़ह, आरद-ए-बाक़ला (सिर्का में भिगो कर सुखाया हुआ), मग़ज़-ए-बादाम तल्ख़, क़ुस्त, इक्लील और कतीरा।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर भेड़ के दूध में मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः झाईं के स्थान पर तिला करें फिर हम्माम में पानी से धोएँ।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से भी वही लाभ प्राप्त होता है लेकिन यह अधिक प्रभावशाली है।

औषधियाँः पोस्त-ए-तुख़्म-ए-मुर्ग़, आब-ए-खरपज़ह मुदब्बर, उश्नान, आरद-ए-जौ, बीख़-ए-चीनी, पोस्त-ए-अदस, आरद-ए-बाक़ला, फ़ोफ़ल, कफ़-ए-दरिया, मामीरान चीनी।

निर्माण-विधिः कूट छान कर आब-ए-तुर्ब के साथ मिलाएँ और तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से भी वही लाभ प्राप्त होता है।

औषधियाँः हब्ब-ए-मुहल्लब, मग़ज़-ए-बादाम शीरीं, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-खरपज़ह और सीमाब कुशता।

निर्माण-विधिः सब को समभाग में कूट छान कर सिर्का के साथ मिलाएँ।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह छाले के निशान दूर करता और त्वचा साफ़ करता है।

औषधियाँः मुरदारसंग मुदब्बर, बीख़-ए-चीनी ख़ुश्क, पुराना आरद-ए-नख़ूद, आरद-ए-तुरन्ज, तुख़्म-ए-खरपज़ह, हब्ब-ए-बलसान, मुर्र और क़ुस्त सभी समभाग में।

निर्माण-विधिः सर्वप्रथम मुर्र को लुआब-ए-हुल्बा में घोल लें फिर शेष को समभाग कूटने छानने के बाद उस में मिलाएँ और तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह त्वचा के पीलेपन को दूर करता है।

औषधियाँः ज़रावन्द मुदहरज और शीतरज हिन्दी प्रत्येक 7 ग्राम, आरद-ए-बाक़ला, आरद-ए-नख़ूद, अदस और गुल-ए-सुर्ख़ प्रत्येक 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर अंडे की सफेदी में मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः रात में तिला करें। सुबह ऐसे पानी से धोएँ जिस में तुख़्म-ए-खुर्फ़ह को अधकुटा कर के पकाया गया हो।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह सर और बालों की जड़ों में होने वाली रूसी (Dandruff) दूर करता है।

औषधियाँः रोग़न-ए-गुल, रोग़न-ए-बनफ़्शा, रोग़न-ए-बादाम, लुआब-ए-ख़त्मी, लुआब-ए-अस्पग़ोल, आब-ए-बर्ग-ए-चुक़न्दर, आरद-ए-नख़ूद, आरद-ए-बाक़ला, तुर्मुस और कतीरा सभी थोड़ी थोड़ी मात्रा में।

निर्माण-विधिः सब को आपस में मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः सर व दाढ़ी के बालों में तिला करें। एक घंटे बाद गरम पानी से ध
ो दें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः बादाम तल्ख़ मुक़श्शर और कुन्जद मुक़श्शर का सफ़ूफ़ एक एक भाग, आरद-ए-नख़ूद, आरद-ए-बाक़ला और ख़त्मी सभी आधा आधा भाग।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को सिर्का के साथ मिलाएँ।

प्रयोग विधिः थोड़े से रोग़न-ए-गुल के साथ मिला कर सर व दाढ़ी पर तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह त्वचा को साफ़ करता है। झाईं और रूसी को समाप्त करता है।

औषधियाँः इर्सा, बूरह अरमनी, उशक़, निशास्ता, मग़ज़-ए-बादाम, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-खरपज़ह, उस्तुख़्वान (पुरानी), बीख़-ए-चीनी, तुर्मुस, मग़ज़-ए-हब्बुलबान, आरद-ए-हुल्बा, आरद-ए-बाक़ला, आरद-ए-जौ, तुर्मुस मुक़श्शर 1-1 भाग।

निर्माण-विधिः कूट छान कर अरब-ए-तुरन्ज में मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः तिला करें फिर दो घंटे के बाद धोएँ और रोग़न-ए-बादाम लगाएँ।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह खाज एवं खुजली में लाभदायक है।

औषधियाँः मवीज़ज, ज़र्नीख़, ज़रावन्द तवील, आब-ए-लीमू के साथ कुशता किया हुआ सीमाब और हिना सभी एक एक भाग।

निर्माण-विधिः कूट कर सिर्का व रोग़न-ए-गुल में मिलाएँ और तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह जलने में लाभदायक है।

औषधियाँः बर्ग-ए-ख़त्मी और बर्ग-ए-हिना, मुरदारसंग मुदब्बर, इस्फ़ीदबाज और रोग़न-ए-गुल थोड़ी थोड़ी मात्रा में।

निर्माण-विधिः बर्ग-ए-ख़त्मी और बर्ग-ए-हिना को साफ़ पानी में अच्छी तरह पका कर साफ़ कर लें और इतना पीसें कि वह मरहम की भाँति हो जाए। मुरदारसंग मुदब्बर, इस्फ़ीदबाज और रोग़न-ए-गुल थोड़ी थोड़ी मात्रा में लें कर आब-ए-किशनीज़ और आब-ए-इनबुस्सअलब के साथ मिलाएँ फिर सब को एक साथ मिला कर तिला तैयार करें और प्रयोग में लाएँ।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः आहक मग़सूल खुश्क (जिसे सात बार साफ़ और मीठे आब-ए-मुर्र में धोया गया हो) 35 ग्राम, सफ़ेदाब 17.5 ग्राम और तीन-ए-क़ैमूलिया 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को रोग़न-ए-गुल के साथ मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Burn में लाभदायक है।

औषधियाँः बर्ग-ए-हिना और मुरदारसंग प्रत्येक 17.5 ग्राम, सफ़ेदाब 7 ग्राम और तीन-ए-क़ैमूलिया 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर अंडे की सफ़ेदी और रोग़न-ए-गुल में मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह नुस्खा भी उसी रोग के लिए मुजर्रब है।

औषधियाँः बूरह अरमनी, बर्ग-ए-हिना, मुरदारसंग।

निर्माण-विधिः हल्का कूट कर रोग़न-ए-गुल में मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह ऐसे Burn में लाभदायक है जिस में दर्द व सूजन हो।

औषधियाँः अदस मुक़श्शर, गुल-ए-सुर्ख़ 1-1 भाग, सफ़ेदाब अर्ज़ीज़ और आरद-ए-जौ थोड़ी थोड़ी मात्र में।

निर्माण-विधिः सब को मिलाएँ और रोग़न-ए-गुल के साथ हावन में इतन पीसें कि वो मरहम बन जाएँ।

प्रयोग-विधिः जले हुए अंग पर तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

इस का भी वही लाभ है। गरम पानी से जले (Scald) में भी लाभदायक है।

औषधियाँः सफ़ेदाब अर्ज़ीज़, मग़ज़-ए-बादाम, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-हिन्दुवाना, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-कदू, मुरदारसंग और दमुलअखवैन एक एक भाग।

निर्माण-विधिः सब को रोग़न-ए-गुल के साथ मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह फिरंगा रोग (Syphilis) में बहुत लाभदायक है।

औषधियाँः मामीरान चीनी, मोमियाई, पीह-ए-क़ावन्द, इस्फ़ीदबाज, ज़न्जार, ज़ाज सफ़ेद, सिब्र ज़र्द प्रत्येक 7 ग्राम, सूरन्जान, कुन्दुर, मुरदारसंग, पोस्त-ए-नारन्ज, बीख़-ए-बनफ़्शा, रोग़न-ए-गुल, मोम सफ़ेद प्रत्येक 10.5 ग्राम, तूतिया-ए-किर्मानी, बर्ग-ए-हिना, उशक़, कतीरा, मस्तगी, बूरह अरमनी, ज़न्बक़ कुश्ता प्रत्येक 17.5 ग्राम, पीह-ए-बुज़ स्याह 35 ग्राम, रोग़न-ए-गुल 10.5 ग्राम, मग़ज़-ए-साक़-ए-गाव 70 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को हल्का कूट छान लें। ज़ीबक़ को हिना और आब-ए-लीमू के साथ निचोड़ लें और मोम, तैल और मग़ज़-ए-साक़-ए-गाव को उस में डालें। फिर शेष सभी औषधियों को आपस में मिला कर अच्छी तरह पीसें।

प्रयोग-विधिः शरीर पर तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह फिरंगा रोग (Syphilis) को ज़ख़्म को बहूत जलदी ठीक करता है और इस संदर्भ में अद्वितीय है।

औषधियाँः तूतिया-ए-मग़सूल, सफ़ेदाब मग़सूल, दमुलअखवैन और मुरदारसंग प्रत्येक 10.5 ग्राम, ज़न्गार 3.5 ग्राम, मग़ज़-ए-दाना-ए-शफ़्तालू 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को पीस कर रोग़न-ए-गुल में मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह जोड़ो के दर्द (Arthralgia) में लाभदायक है।

औषधियाँः ज़ीबक़ मक़्तूल, हिना, लाज़न, मस्तगी प्रत्येक 7 ग्राम, तुर्बुद सफ़ेद, बीख़-ए-बनफ़्शा प्रत्येक 10.5 ग्राम, रोग़न-ए-गुल 35 ग्राम, रोग़न-ए-ज़ैतून 70 ग्राम, पीह-ए-बुज़ 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सर्वप्रथम ज़ीबक़ को हिना और आब-ए-लीमू में डाल कर मार लें फिर शेष सब के साथ कूट छान कर रोग़न-ए-गुल, रोग़न-ए-ज़ैतून और पीह-ए-बुज़ (बकरी की चर्बी) में अच्छी तरह मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह कुष्ठ रोग (Leprosy) में लाभदायक है।

औषधियाँः नत्रून, उशक़, फ़र्फ़ियून, गोगर्द ज़र्द, बर्ग-ए-अन्जीर।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सिर्का में मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

इस का भी वही लाभ है।

औषधियाँः किब्रीत ज़र्द और क़ुस्त तल्ख़ प्रत्येक 35 ग्राम, माज़ू सोख़्ता और मवीज़ज प्रत्येक 17.5 ग्राम, बर्ग-ए-सनोबर और हब्बुलग़ार प्रत्येक 70 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सिर्का में मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः शरीर पर मालिश करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह हाथ और पाँव के फटने में लाभदायक है।

औषधियाँ: बर्ग-ए-हिना, सिब्र ज़र्द, मग़्ज़ दाना-ए-खरूअ और निफ़्त स्याह।

निर्माण-विधि: सब को बारीक पीस लें और रोग़न-ए-खरूअ के साथ मिलाएँ।

प्रयोग-विधि: हाथ पाँव को गरम पानी से धोने के बाद इस औषधि की मालिश करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बच्चों के सर और चेहरे पर होने वाले Favus जिस को सअफ़ह कहते हैं, में लाभदायक है।

औषधियाँ: सफ़ेदाब अर्ज़ीज़ 10.5 ग्राम, गुल-ए-सुर्ख़ 7 ग्राम, गुलनार, ज़र्द चौब प्रत्येक 3.5 ग्राम, काफ़ूर 250 मिलीग्राम, मोम सफ़ेद 8.75 ग्राम, रोग़न-ए-गुल 35 ग्राम।

निर्माण-विधि: मोम को 3.5 ग्राम रोग़न-ए-गुल में डालें और शेष सभी औषधियों को कूट छान कर उस में सम्मिलित करें और तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

इस का भी वही लाभ है।

औषधियाँ: उश्नान सब्ज़ और मुरदारसंग प्रत्येक 17.5 ग्राम, गिल-ए-अरमनी, हुज़ुज़-ए-मक्की और पोस्त-ए-अनार प्रत्येक 10.5 ग्राम, हिना और क़िन्बील प्रत्येक 14 ग्राम, अक़ाक़िया, शयाफ़-ए-मामीसा और सन्दल सफ़ेद प्रत्येक 21 ग्राम।

निर्माण-विधि: कूट कर अर्क़-ए-गुलाब में मिलाएँऔर तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँ: बर्ग महक 14 ग्राम, हिना, माज़ू प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर रोग़न-ए-गुल या रोग़न-ए-दुंबह में मिलाएँ।

प्रयोग-विधि: तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

इस का भी वही लाभ है।

औषधियाँ: आब़-ए-बर्ग-ए-चुक़न्दर, रोग़न-ए-दुंबा प्रत्येक 35 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को इतना पकाएँ कि पानी जल जाए और तैल शेष रह जाए फिर बर्ग-ए-महक और हिना प्रत्येक 17.5 ग्राम कूट छान कर उस में सम्मिलित करें।

प्रयोग-विधि: तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बच्चों के शरीर पर होने वाले Favus में लाभदायक है।

औषधियाँ: ज़र्द चौबा, हिना, ज़रावन्द, मुरदारसंग और पोस्त-ए-अनार।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर रोग़न-ए-गुल और सिर्का के साथ मिलाएँ।
प्रयोग-विधिः तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

इस का भी वही लाभ है।

औषधियाँः नमक सोख़्ता, गोगर्द, ज़ीबक़, माज़ू, ज़र्द चौबा, मुरदारसंग, ज़रावन्द।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को समभाग में ले कर कूट छान लें और रोग़न-ए-गुल और सिर्का के साथ मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

इस का भी वही लाभ है।

औषधियाँः नमक, उश्नान, सिर्का, साबुन, अर्क़-ए-गुलाब, बीख़-ए-बनफ़्शा, मोम सफ़ेद, रोग़न-ए-बनफ़्शा, और रोग़न-ए-बादाम थोड़ी थोड़ी मात्रा में।

निर्माण-विधिः नमक, उश्नान को सिर्का में भिगो कर अच्छी तरह मलें और साबुन को अर्क़-ए-गुलाब में मिला कर इस प्रकार मलें कि झाग निकल आए फिर उन के साथ बीख़-ए-बनफ़्शा, मोम सफ़ेद, रोग़न-ए-बनफ़्शा और रोग़न-ए-बादाम थोड़ी थोड़ी मात्रा में सम्मिलित कर के अच्छी तरह मल छान कर मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः तिला करें। 1 घंटा बाद गरम पानी से धोएँ।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह दाग धब्बे और उन पर उत्पन्न होने वाली काली त्वचा को दूर करता है साथ ही यह चेहरे को चमकदार बनाता है।

औषधियाँः ज़र्नीख़ ज़र्द, कुन्दुश, बूरह अरमनी, तुख़्म-ए-कबर और तुख़्म-ए-तुर्ब।

निर्माण-विधिः कूट कर लुआब-ए-हुल्बा में मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः चेहरे पर मालिश करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह घमौरी वाले दानों के लिए लाभदायक है।

औषधियाँः बर्ग, नमक 1-1 भाग, सिर्का, अर्क़-ए-गुलाब।

निर्माण-विधिः बर्ग और नमक कूट छान कर सिर्का व अर्क़-ए-गुलाब में मलाएँ।

प्रयोग-विधिः शरीर पर मालिश करें। एक घंटा बीतने के बाद ठंडे पानी और आब-ए-सोसन से धोएँ।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

  यह घमौरी वाले दानों के लिए लाभदायक है।

  औषधियाँः सन्दल सफ़ेद, माज़ू सब्ज़, ज़र्द चौबा 1-1 भाग।

  निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सिर्का और अर्क़-ए-गुलाब के साथ मलाएँ।

  प्रयोग-विधिः शरीर पर मालिश करें। एक दो घंटा बाद ठंडे पानी से धोएँ।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

  यह घमौरी वाले दानों, पित्ती उछलने में लाभदायक है।

  औषधियाँः सिर्का, अर्क़-ए-गुलाब, रोग़न-ए-गुल,सन्दल।

  निर्माण-विधिः सब को आब-ए-किशनीज़ के साथ मिलाएँ।

  प्रयोग-विधिः तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

  औषधियाँः काकनज और आरद-ए-जौ एक एक भाग।

  निर्माण-विधिः सब आब-ए-इनबुस्सअलब, आब-ए-किश्नीज़ सब्ज़ और सिर्का के साथ अच्छी तरह मिलाएँ।

  प्रयोग-विधिः शरीर पर तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

  यह मस्सों (Wart/Verruca) को समाप्त करता है।

  औषधियाँः उश्नान पारसी, ज़न्गार, मिस्स सोख़्ता, बूरह अरमनी, नौशादर, बज़रुलबन्ज और आहक आब नदीदा (चूना जिसे बुझाया ना गया हो)।

  निर्माण-विधिः सब को थोड़ी मात्रा में लेकर ज़हरा-ए-गाव के साथ मिलाएँ।

  प्रयोग-विधिः मस्सों पर तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

  यह गरमी के कारण होने वाले वातारक्त में लाभदायक है।

  औषधियाँः आरद-ए-जौ 70 ग्राम, अफ़ियून 10.5 ग्राम।

  निर्माण-विधिः कूट कर आब-ए-इनबुस्सअलब में मिलाएँ और तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

  यह गरमी के कारण होने वाले वातारक्त में लाभदायक है।

  औषधियाँः सन्दलैन (सन्दल सफ़ेद और सन्दल सुर्ख), गुल-ए-सुर्ख़, शयाफ़-ए-मामीसा, नौशादर हिन्दी और फ़ोफ़ल सभी एक एक भाग, अफ़ियून एक चौथाई भाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर अच्छी तरह मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः आब-ए-इनबुस्सअलब के साथ मिलाकर तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह वातारक्त के रोग (Gout) में लाभदायक है।

औषधियाँः मुग़ास, ख़त्मी, तुख़्म मूरद, आरद-ए-जौ, रैहान।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर रोग़न-ए-गुल और थोड़ी मात्रा में पानी के साथ एक बड़े पात्र में पकाएँ और तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Polymenorrhoea को रोकता है।

औषधियाँः गुल-ए-सुर्ख़ और अदस मुक़श्शर प्रत्येक 17.5 ग्राम, अक़ाक़िया, गुलनार फ़ारसी और सन्दलैन (सन्दल सफ़ेद और सन्दल सुर्ख) प्रत्येक 10.5 ग्राम, गिल-ए-अरमनी 14 ग्राम, बलूत और तबाशीर प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट छान कर आब-ए-बिही में मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः जघन क्षेत्र पर तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

अगर लिंग पर मालिश करने के पश्चात यौन संबंध बनाया जाए तो गर्भधारण नही हो पाता और अगर गर्भधारण हो भी जाए तो बच्चे का गर्भपात हो जाता है।

औषधियाँः आब-ए-बर्ग-ए-सुद्दाब, आब-ए-बर्ग-ए-तुर्ब, नत्रून थोड़ी थोड़ी मात्रा में।

निर्माण-विधिः विधि अनुसार तिला तैयार करें।

प्रयोग-विधिः लिंग पर मालिश के बाद यौन संबंध बनाएँ।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गर्भधारण के संदर्भ में लाभदायक है।

औषधियाँः रोग़न-ए-कुन्जद और नत्रून।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को अच्छी तरह मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः लिंग पर मालिश के बाद यौन संबंध बनाएँ।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गर्भ-निरोधक है।

औषधियाँः ज़हरा-ए-गुर्ग, माया खरगोश प्रत्येक 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को रोग़न-ए-नारदीन के साथ मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः लिंग पर मालिश के बाद यौन संबंध बनाएँ।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गर्भधारण में सहायक है।

औषधियाँः माया-ए-खरगोश और शहद।

निर्माण-विधिः थोड़ी मात्रा में माया-ए-खरगोश लेकर शहद के साथ मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः लिंग पर मालिश के बाद यौन संबंध बनाएँ।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह लिंग को मज़बूत और सख़्त बनाता है और साथ ही उस में जोश एवं तनाव भी उत्पन्न करता है।

औषधियाँः प्याज़-ए-नरगिस और ज़हरा-ए-गाव।

निर्माण-विधिः 5 प्याज़-ए-नरगिस को हल्का कूट छान लें और ज़हरा-ए-गाव में मिलाएँ। फिर सुखा कर सुरक्षित कर लें।

प्रयोग-विधिः आवश्यकता के समय रोग़न-ए-यासमीन के साथ मिला कर लिंग पर मालिश करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

इस का भी वही लाभ है।

औषधियाँः आक़रक़रहा और दार-ए-चीनी प्रत्येक 1.75 ग्राम, फ़फ़ियून और सक़मूनिया प्रत्येक 500 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः थोड़ी मात्रा में रोग़न-ए-बादाम कोही लेकर पुरानी शराब में इतना पकाएँ कि वह गाढ़ा हो जाए फिर शेष सब को कूट छान कर उस में सम्मिलित करें।

प्रयोग-विधिः लिंग और गुर्दा एवं अंडाशय के आस पास मालिश करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह लिंग में जोश एवं तनाव उत्पन्न करता और उस में सख़्ती भी पैदा करता है।

औषधियाँः बिस्बासा, मग़ज़-ए-बिही दाना, तुख़्म-ए-तुर्ब, सुद्दाब, आक़रक़रहा, जदवार खताई, प्याज़-ए-नरगिस और असारून सभी एक एक भाग।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान कर 21 बार पुरानी शराब या अर्क़-ए-क़न्दी के साथ बारीक पीसें और सुखा कर सुरक्षित कर लें।

प्रयोग-विधिः आवश्यकता के समय पानी या रोग़न के साथ नर्म कर के अंडाशय एवं लिंग के आस पास मालिश करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह यौन सुख को बढ़ाता है।

औषधियाँः आक़रक़रहा, कबाबचीनी, ज़न्जबील।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर शहद में मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः आवश्यकता के समय पानी या तैल के साथ मिला कर नर्म कर लें और लिंग पर मालिश करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह यौन सुख को बढ़ाता है।

औषधियाँः फ़िलफ़िल, ज़न्जबील और सक़मूनिया।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर शहद में मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः लिंग पर मालिश करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह लिंग को बढ़ाता है।

औषधियाँः खरातीन और अलक़।

निर्माण-विधिः खरातीन और अलक़ को सुखा कर हल्का कूट छान लें और रोग़न-ए-कुन्जद के साथ मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः लिंग पर मालिश करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

बच्चों के अंडाशय पर मलने से बहुत जल्दी बड़े होते हैं।

औषधियाँः क़ैमूलिया और सफ़ेदाब अर्ज़ीज़ प्रत्येक 7 ग्राम, शिब-ए-यमानी और माज़ू प्रत्येक 5.25 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर शहद और रोग़न-ए-मूरद के साथ मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः कई बार तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बवासीर को सुखाता है और ख़ून बहने को रोकता है।

औषधियाँः उसारा-ए-लेहयतुत्तीस, जुफ़्त बलूत, अबहल और जौज़ुस्सर्व।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान कर एक रात आब-ए-इनबुस्सअलब में भिगोएँ और नर्म कर के इतना बारीक पीसें कि वह मरहम की भाँति हो जाए।

प्रयोग-विधिः गुदा पर मालिश करने के बाद कुछ देर पीठ के बल लेटें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गुदा की सूजन (Proctitis) में लाभदायक है।
औषधियाँः सफेदाब मग़सूल 7 ग्राम, काफूर 250 मिलाग्राम।
निर्माण-विधिः सब को सफेदी-ए-बैज़ा-ए-मुर्ग़ और रोग़न-ए-गुल के साथ मिलाएँ।
प्रयोग-विधिः गुदा पर मालिश करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह ख़ूनी बवासीर और गुदा की सूजनमें लाभदायक है।
औषधियाँः सफेदाब, काफूर, मग़ज़-ए-क़लम-ए-गाव और मोम सफ़ेद।
निर्माण-विधिः सब को एक साथ अच्छी तरह मिलाएँ।
प्रयोग-विधिः तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गुदा की फटन और सूजन में लाभदायक है।
औषधियाँः सफेदाब, अन्डा, रोग़न-ए-गुल, लुआब-ए-ख़त्मी, आब-ए-इनबुस्सअलब।
निर्माण-विधिः सब को एक साथ अच्छी तरह मिलाएँ।
प्रयोग-विधिः तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह उस बवासीर में लाभदायक है जिस में ख़ून जम जाता एवं दर्द करता है।
औषधियाँः आब-ए-प्याज़, सिब्र ज़र्द और ज़हरा-ए-गाव।
निर्माण-विधिः सब को एक साथ अच्छी तरह मिलाएँ।
प्रयोग-विधिः तिला करें।

❑❑❑

पन्चम खण्ड

# तृतीय अध्याय

## ग़सूल के नुस्खे़

- **ग़सूल का नुस्ख़ा:**

  यह हाथ को चर्बी और बदबू से पाक करता और उस को ख़ुशबूदार बनाता है।

  औषधियाँ: सअद, इज़्ख़िर, ज़रन्बाद, बीख़-ए-सुंबुलुत्तीब 1-1, आरद-ए-नख़ूद 3 भाग।

  निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर एक साथ अच्छी तरह मिलाएँ।

  प्रयोग-विधि: हाथों पर मलें और फिर धो दें।

- **ग़सूल का अन्य नुस्ख़ा:**

  यह हाथ और पाँव में पसीने होने को समाप्त करता है।

  औषधियाँ: बर्ग-ए-मूरद, कज़माज़ज, जौज़ुस्सर्व 1-1 भाग।

  निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर अच्छी तरह मिलाएँ।

  प्रयोग-विधि: हाथों पर मलें और फिर धो दें।

- **ग़सूल का अन्य नुस्ख़ा:**

  यह शरीर से नौरह की बदबू को दूर करता है।

  औषधियाँ: शाहस्फ़्रम, सअद, गुल-ए-सुर्ख़, इज़्ख़िर, बर्ग-ए-हिना, सन्दल 1-1 भाग।

  निर्माण-विधि: सब कूट छान कर अर्क़-ए-गुलाब मिलाएँ।

  प्रयोग-विधि: नौरह को शरीर से हटाने के बाद इस ग़सूल से शरीर को धोएँ।

- **ग़सूल का अन्य नुस्ख़ा:**

  इस से अगर चेहरे को धोया जाए तो वह साफ़ और चमकदार हो जाता है।

  औषधियाँ: निशास्ता, आरद-ए-नख़ूद व बाक़ला, मग़्ज़-ए-तुख़्म-ए-खरपज़ह, कतीरा।

  निर्माण-विधि: सब कों स्त्री के ताज़ा दूध में मिलाएँ।

- **ग़सूल का अन्य नुस्ख़ा:**

  औषधियाँ: सफ़ेदाब और निशास्ता प्रत्येक 7 ग्राम, आरद-ए-नख़ूद 35 ग्राम, सफ़ेदी-ए-बैज़ा-ए-मुर्ग़ 1।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर अच्छी तरह मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः चेहरे पर लगाएँ फिर गरम पानी से धोएँ।

- **ग़सूल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह त्वचा की भूसी और सूखेपन को दूर करता है।

औषधियाँः आब-ए-बर्ग-ए-चुक़न्दर, लुआब-ए-ख़त्मी, लुआब-ए-हुल्बा, रोग़न-ए-बनफ़्शा, रोग़न-ए-बादाम, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-खरपज़ह सभी एक एक भाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर अच्छी तरह मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः सर, बालों पर लगाएँ। कुछ देर बाद गरम पानी से धो दें।

- **ग़सूल का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से शरीर को धोने पसीने की बदबू दूर हो जाती है।

औषधियाँः बर्ग-ए-मूरद, कज़माज़ज, गुल-ए-सुर्ख़, सअद, पोस्त-ए-अनार, इज़्ख़िर 1-1 भाग, आरद-ए-बाक़ला दो भाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर अच्छी तरह मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः शरीर पर लगाएँ फिर गरम पानी से धोएँ।

- **ग़सूल का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः जौज़ुस्सर्व, कज़माज़ज, बर्ग-ए-मूरद, निशास्ता, गुल-ए-सुर्ख़, पोस्त-ए-अनार, सअद, इज़्ख़िर सभी एक एक भाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर ऊँट के ख़ून में मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः शरीर पर लगाएँ फिर गरम पानी से धो दें।

- **ग़सूल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बालों को नर्म, पतला और मुलायम करता है।

औषधियाँः लुआब-ए-ख़त्मी, लुआब-ए-अस्पग़ोल, रोग़न-ए-गुल एवं बादाम 1-1 भाग, बूरह अरमनी चौथाई भाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर अच्छी तरह मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः सर और दाढ़ी के बालों को धोएँ।

- **ग़सूल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बालों को टेढ़ा मेढ़ा करता है।

औषधियाँः माज़ू, कज़माज़ज, बर्ग-ए-सर्व, गुल-ए-खौज़ी, आमला, मुरदारसंग और बर्ग-ए-सुद्दाब सभी एक एक भाग।

निर्माण-विधिः उनके आधा आब-ए-चुक़न्दर में मिलाएँ।
प्रयोग-विधिः बालों पर लगाएँ और कुछ समय बाद धो दें।

- **ग़सूल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बालों को काला करता है।
औषधियाँः आब-ए-बर्ग-ए-मूरद और हिना।
निर्माण-विधिः सभी औषधियों को अच्छी तरह मिलाएँ।
प्रयोग-विधिः बालों को धोएँ फिर रोग़न-ए-मूरद लगाएँ जिस में थोड़ा लाज़न मिला हो।

- **ग़सूल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह चेहरे के रंग को लाल करता है।
औषधियाँः सफ़ेदाब, निशास्ता और फ़ूह प्रत्येक 7 ग्राम।
निर्माण-विधिः सब को कूट कर अंडे की सफ़ेदी में मिलाएँ।
प्रयोग-विधिः चेहरे पर लगाएँ और कुछ समय बाद धो दें।

- **ग़सूल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह चेहरे को गोरा और ताज़ा करता है।
औषधियाँः पुरानी उस्तुख़्वान, निशारा-ए-आज, मग़ज़-ए-बादाम शीरीं एवं तल्ख़ प्रत्येक 7 ग्राम, सफ़ेदाब 3.5 ग्राम, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-खरपज़ह, मग़ज़-ए-तुख़्म-ए-कदू प्रत्येक 10.5 ग्राम, आरद-ए-नखूद, आरद-ए-बाक़ला प्रत्येक 17.5 ग्राम।
निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर अच्छी तरह मिलाएँ।
प्रयोग-विधिः चेहरे पर लगाएँ और कुछ समय बाद धो दें।

- **ग़सूल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह त्वचा के रंग को पीला करता है।
औषधियाँः हुज़ुज़ ज़र्द, दक़ीक़-ए-हुल्बा, मुरदारसंग प्रत्येक 3.5 ग्राम, सफ़ेदाब, सरेशम माही प्रत्येक 10.5 ग्राम, पीह-ए-बुज़ 17.5 ग्राम, गुल-ए-मुअस्फ़र 7 ग्राम।
निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर अच्छी तरह मिलाएँ।
प्रयोग-विधिः त्वचा पर मालिश करें। एक घंटा बाद धो दें।

- **ग़सूल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह त्वचा का साफ़ करता है और उस के दाग़ धब्बों को दूर करता है।
औषधियाँः जौ मुक़श्शर नीमकोब 35 ग्राम, ताज़ा दूध 210 मिलीलीटर,कतीरा, निशास्ता, सफेदाब प्रत्येक 7 ग्राम, तुख़्म-ए-खरपज़ह, जिर्जीर प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः 35 ग्राम जौ मुक़श्शर को 210 मिलीलीटर दूध में इतना पकाएँकि पूरा दूध सूख जाए फिर कतीरा, निशास्ता, सफेदाब प्रत्येक 7 ग्राम, तुख़्म-ए-खरपज़ह और जिर्जीर प्रत्येक 10.5 ग्राम के साथ मिलाएँ। अंत में सभी औषधियों को अंडे की सफ़ेदी के साथ मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः चेहरे, बदन पर लगाएँ। गरम पानी से धो दें।

- **ग़सूल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह झाईं (Freckle) और चेहरे के दाग़ धब्बों के निशान को दूर करता है और चेहरे को साफ़ करता है।

औषधियाँः पोस्त-ए-तुख़्म-ए-मुर्ग़, आब-ए- खरपज़ह में मुदब्बर उश्नान, आरद-ए-जौ, बीख़-ए-चीनी, आरद-ए-बाक़ला, फ़ोफ़ल, ज़बदुलबहर और मामीरान प्रत्येक 7 ग्राम, आरद-ए-नखूद 35 ग्राम, मग़्ज़-ए-बादाम 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट कर शीरा-ए-किशमिश में मिलाएँ।

प्रयोग-समयः सुबह शाम।

प्रयोग-विधिः चेहरे और त्वचा पर लगाएँ फिर गरम पानी से धो दें।

❑❑❑

पन्चम खण्ड

# चतुर्थ अध्याय

## ख़िज़ाब एवं सबूग़ के नुस्ख़े

- **ख़िज़ाब का नुस्ख़ाः**

यह बालों को काला करता है।

औषधियाँः माज़ू सब्ज़, कतीरा, रूसख़्तज, शिब-ए-यमानी प्रत्येक 17.5 ग्राम, नौशादर 14 ग्राम, नमक-ए-इन्द्रानी 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः माज़ू को रोग़न-ए-ज़ैतून में इतना भूनें कि वह फट जाए, फिर शेष सब को कूट छान कर पानी में मिलाएँ और चार घंटे के लिए रख छोड़ें।

प्रयोग-विधिः सर और दाढ़ी के बालों पर मलें और छः घंटे के बाद धो दें।

- **ख़िज़ाब का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः गुल-ए-शक़ाइक़ 35 ग्राम, आमला मुक़श्शर और पोस्त-ए-बाक़ला प्रत्येक 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान कर सिर्का के साथ मिलाएँ फिर 21 दिनों तक धूप में रख कर सुखा लें। आवश्यकता के समय आब-ए-बिही में मिला कर उस का ख़मीर तैयार करें और प्रयोग में लाएँ।

प्रयोग-विधिः बालों में लगाएँ और दो घंटे के बाद धो दें।

- **ख़िज़ाब का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः वस्मा 52.5 ग्राम, हिना 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान कर रोग़न-ए-गर्दगान में चर्ब करें और गरम पानी में मिला कर उस का ख़मीर तैयार करें और प्रयोग में लाएँ।

प्रयोग-विधिः रात में बालों पर मलें, सुबह गरम पानी से धो दें।

- **ख़िज़ाब का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः जौज़ुस्सर्व (सिर्का में पकाया हुआ) 90 ग्राम, माज़ू सब्ज़ 21 ग्राम, रोग़न-ए-ज़ैतून में भूना हुआ मिस्स सोख़्ता 35 ग्राम, पर्सियाउशाँ, शिब-ए-यमानी,

अक़ाक़िया और आमला प्रत्येक 17.5 ग्राम, क़रन्फ़ुल 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर आब-ए-पोस्त-ए-गर्दगान ताज़ा के साथ मिलाएँ और खिज़ाब तैयार करें।

प्रयोग-विधिः खिज़ाब करें और छः घंटे के बाद धो दें।

- **खिज़ाब का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः पोस्त-ए-बेरून-ए-गर्दगान ताज़ा, शिब-ए-यमानी, पोस्त-ए-अनार, मिस्स सोख़्ता और लाज़न।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर आब-ए-पोस्त-ए-गर्दगान के साथ मिलाएँ और खिज़ाब तैयार करें।

- **खिज़ाब का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः हिना और वस्मह प्रत्येक 28 ग्राम, रूसख़्तज, शिब-ए-यमानी, नमक-ए-इन्द्रानी, माज़ू सब्ज़ सोख़्ता और खुब्सुलहदीद प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर गरम पानी में मिलाएँ।

- **खिज़ाब का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँ और निर्माण-विधिः इच्छानुसार माज़ू सब्ज़ लेकर एक देग में बिरयां कर लें, उस में माज़ू 24 ग्राम, नमक-ए-इन्द्राणी, ज़ंगार, शिब-ए-यमानी प्रत्येक 24 ग्राम को हावन-ए-रूई, सुर्ब के दस्ता में आब-ए-आमला के साथ पीसें।

प्रयोग-विधिः बालों में खिज़ाब करें। दो घंटे बाद धो दें।

- **खिज़ाब का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः नीलोफ़र 7 ग्राम, पोस्त-ए-बीख़-ए-अनार 24.5 ग्राम, पोस्त-ए-हलीला ज़र्द 20 की संख्या में, आब-ए-भंगरह इतनी मात्रा में कि जिस में यह सब डूब जाएँ।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को लोहे के पात्र में रख कर ज़मीन के अन्दी दफ़न कर दें और एक महीने के पश्चात निकाल कर प्रयोग करें। थोड़ी मात्रा में ब्रन्ज को हावन में रख दें और जब वह काला हो जाए तो उस से बालों को धोएँ।

प्रयोग-विधिः बालों में खिज़ाब करें। दो घंटे बाद धो दें।

- **खिज़ाब का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बालों को काला और मुलायम करता है। साथ ही उनके कालेपन को सुरक्षित करता है।

औषधियाँः हिना 35 ग्राम, वस्मह 10.5 ग्राम, माज़ू सब्ज़ नासुफ़्ता 5 की संख्या

में, शिब-ए-यमानी, नौशादर और मुरदारसंग प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः माज़ू को रोग़न-ए-ज़ैतून में भूनें और अगर रोग़न-ए-ज़ैतून त ना हो तो बालू के बीच में रख कर भून लें फिर शेष सभी को कूट छान कर आब-ए-पोस्त-ए-गर्दगान सब्ज़ या आब-ए-आमला या आब-ए-हलीला के साथ मिलाएँ और तीन घंटे के बाद बालों में खिज़ाब के रूप में प्रयोग करें।

प्रयोग-विधिः बालों में खिज़ाब करें और फिर दो घंटे के बाद गरम पानी से धो दें।

- **खिज़ाब का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बालों को काला करता है।

औषधियाँः खुब्सुलहदीद और खुब्सुर्रसास एक एक भाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर पुराने सिर्का में इतना पकाएँ कि गाढ़ा हो जाए। इस से बेहतर कोई खिज़ाब नहीं है।

प्रयोग-विधिः बालों में खिज़ाब लगाएँ।

- **खिज़ाब का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः रोग़न-ए-ज़ैतून में भूना हुआ माज़ू सब्ज़ और आमला मुक़श्शर दोनों समभाग में और रूसख़्तज उस के दो गुना।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर गरम पानी में मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः सर व दाढ़ी पर मलें। दो घंटे बाद धो दें।

- **खिज़ाब का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बालों को काला करता है। खुशबू पैदा करता है और ग़ालिया के स्थान पर प्रयोग किया जाता है।

औषधियाँः आमला 175 ग्राम, हिना 175 ग्राम, वस्मह 70 ग्राम, मुश्क, सुक्क, लाज़न और समग़-ए-अरबी प्रत्येक 1.75 ग्राम, माज़ू सब्ज भूना हुआ 2 की संख्या में।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान लें और आब-ए-मूरद के साथ मिलाकर अच्छी तरह से ख़मीर तैयार करें।

प्रयोग-विधिः सर और बालों पर मलें। दो घंटे बाद धो दें।

- **खिज़ाब का अन्य नुस्ख़ाः**

यह ग़ालिया के स्थान पर प्रयोग किया जाता है। बालों को काला करता है और खुशबू पैदा करता है।

औषधियाँः आमला 175 ग्राम, मूरद 630 ग्राम, कअक बग़दादी, ख़त्मी, हिना, वस्मह प्रत्येक 175 ग्राम, माज़ू भूना हुआ 20 की संख्या में, कज़माज़ज 35 ग्राम,

समग़-ए-अरबी 105 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को हल्की आँच पर पकाएँ और हाथों से मल छान कर साफ़ कर लें और दोबारा इतना पकाएँ कि उस का क़िवाम ग़ालिया की भाँति हो जाए। अंत में मुश्क, लाज़न और सुक्क प्रत्येक 3.5 ग्राम को पाउडर कर के उस क़िवाम में सम्मिलित करें और अच्छी तरह मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः आवश्यकता के समय दाढ़ी और सर के बालों पर मलें।

❑❑❑

पन्चम खण्ड

# पन्चम अध्याय

## सबूग़ के नुस्ख़े

### जो सदैव या थोड़े समय के लिए बालों का रंग बदल देते हैं

- **सबूग़ का नुस्ख़ाः**

  यह बालों को लाल और रंगीन बनाता है।

  औषधियाँः शिब-ए-यमानी, इस्फ़रक, ज़ाफ़रान 1-1 भाग।

  निर्माण-विधिः सब को आब-ए-हिना के साथ मिलाएँ।

  प्रयोग-विधिः बालों और दाढ़ी पर तिला करें।

- **सबूग़ का अन्य नुस्ख़ाः**

  इस से भी वही लाभ प्राप्त होता है।

  औषधियाँः हिना और वर्द।

  निर्माण-विधिः हिना, वर्द को शराब में मिलाएँ।

  प्रयोग-विधिः बालों पर मलें फिर एक घंटे बाद धो दें और रोग़न-ए-इज़्ख़िर लगाएँ।

- **सबूग़ का अन्य नुस्ख़ाः**

  यह बालों को लाल करता है।

  औषधियाँः पोस्त-ए-दरख़्त-ए-अलज जंगली 24 ग्राम, कुन्जद स्याह 24 ग्राम, पोस्त-ए-बीख़ 6 ग्राम, सुहागा 12 ग्राम।

  निर्माण-विधिः सब को ताज़ा पानी के साथ बारीक पीस कर हब्ब तैयार करें। उस को पानी के साथ घिस कर ज़िमाद करें।

  प्रयोग-विधिः बालों पर तिला करें। चार घंटे बाद धो दें।

- **सबूग़ का अन्य नुस्ख़ाः**

  यह बालों को सफेद करता है। यह प्रक्रिया जादू के लिए या सूरत को बदलने के उद्देशय से की जाती है।

औषधियाँः सर्गीन-ए-कबूतर, अशोक, रासन, माश, तुख़्म-ए-तुर्ब, गोगर्द ज़र्द और गुल-ए-कबर सभी एक एक भाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर ज़हरा-ए-गाव, पुराने सिर्का में मिलाएँ और बालों पर लगाएँ। बालों में कंघी करें और कुछ देर बाद रंग साफ़ करें। दोबारा कंघी करें। अगर चाहें कि बालों की सफ़ेदी समाप्त हो जाए तो रोग़न-ए-यासमीन चुपड़ दें।

प्रयोग-विधिः बालों पर तिला करें। चार घंटे बाद धो दें।

- **सबूग़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बालों को सफ़ेद करता है।

औषधियाँः गुल-ए-नसरीन, पोस्त-ए-ख़शख़ाश 1-1 भाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान लें और थोड़ा सा काफ़ूर डाल कर अर्क़-ए-गुलाब के साथ मिलाएँ और सबूग़ तैयार करें।

प्रयोग-विधिः तिला करें।

- **सबूग़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह स्वित्र और बहक़ के स्थान पर रंग चढ़ाता है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-तुर्ब, शीतरज हिन्दी, फ़ूह, कुन्दुश, खरदल एक एक भाग।

निर्माण-विधिः सब को लेकर कूट कर पुराने सिर्का के साथ मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः धूप में लगाएँ और दो घंटे के बाद धो दें।

- **सबूग़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह स्वित्र के स्थान पर रंग चढ़ाता है।

औषधियाँः शूरह, मुर्र, शिब-ए-यमानी, फ़ूह समभाग में।

निर्माण-विधिः सब को समभाग में कूट छान कर शराब-ए-दुर्दी के साथ मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः कुछ बार प्रयोग करें।

- **सबूग़ का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः शीतरज हिन्दी, आक़रक़रहा, हुज़ुज़, खरदल, शोनीज़, गुल-ए-शक़ाइक़, मुर्र, ज़र्नीख़ ज़र्द और फ़ूह।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर बकरी के ख़ून के साथ मिलाएँ।

- **सबूग़ का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः शीतरज, फ़ूह, नील, शिब यमानी, तीन अहमर।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर एक रात दिन सिर्का में भिगोएँ और दूसरे

दिन उस को प्रभावित स्थान पर प्रयोग करें।

प्रयोग-विधिः प्रभावित स्थान पर लगाएँ।

- **सबूग़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह स्वित्र और झाईं को शरीर के रंग की भाँति बनाता है।

औषधियाँः नील 7 ग्राम, फ़ूह 3.5 ग्राम, मुर्र और ख़ुब्सुलहदीद प्रत्येक 10.5 ग्राम, दुर्दी-ए-शराब 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को आब-ए-तुर्शी-ए-तुरन्ज में भिगोएँ और तीन दिन धूप में रख कर सबूग़ तैयार करें।

प्रयोग-विधिः स्वित्र (Leucoderma) के स्थान पर लगाएँ।

- **सबूग़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह त्वचा के रंग को लाल करता है।

औषधियाँः ज़ाफ़रान, फ़ूह, कुन्दुश, मुर्र और मस्तगी।

निर्माण-विधिः सब कूट छान कर आब-ए-सबूस के साथ मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः रात में चेहरे पर लगाएँ और सुबह धो दें।

- **सबूग़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह चेहरे के फफोलों, चोट और ज़ख़्मों के निशान को समाप्त करता है और मूल रंग में वापस लाता है।

औषधियाँः मुरदारसंग मग़सूल, बीख़-ए-नै कुहना, आरद-ए-बाक़ला, आरद-ए-नख़ूद, ब्रन्ज, पुरानी और मुहर्रक़ उस्तुख़्वान, मग़्ज़-ए-तुख़्म-ए-खरपज़ह, हब्बुलबान और क़ुस्त।

निर्माण-विधिः कूट छान कर आब-ए-हुल्बा व तुख़्म-ए-कताँ के साथ मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः रात में चेहरे व त्वचा पर मलें। सुबह सबूस व गरम पानी से धो दें।

- **सबूग़ का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः ईर्सा, क़ुस्त, मुरदारसंग मग़सूल, शाख़-ए-गौज़न सोख़्ता, बूरह अरमनी,उशक़।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर माउश्शईर में भिगो कर सबूग़ तैयार करें।

प्रयोग-विधिः बालों पर लगा कर रात भर के लिए छोड़ दें और सुबह धो दें।

❑❑❑

पन्चम खण्ड

# शष्टम अध्याय

## विभिन्न प्रकार के दुह्न के नुस्खे

- **रोग़न-ए-शैख़ असफ़हानः**

यह शैख़ असफ़हान के नाम से प्रसिद्ध भारत के एक सूफी का तैयार किया हुआ नुस्खा है। यह बरछी, तीर और भाले के ज़ख़्म को एक ही दिन में स्वस्थ कर देता है। ज़ख़्म वाले गोश्त को नए सिरे से पैदा करता है और ज़ख़्मों को ठीक करता है।

औषधियाँः ज़र्द चौबा, पोस्त-ए-दरख़्त-ए-खार मुग़ीलान, चौब-ए-सनोबर, चौब-ए-बुक़्म, चौब-ए-आबनूस, अस्लुस्सूस, बर्ग-ए-हिना, बर्ग-ए-दरख़्त-ए-नीम प्रत्येक 180 ग्राम, दूद-ए-उस्क़ुफ़-ए-मतबख, गुलनार फ़ारसी, ज़रावन्द, शीतरज हिन्दी, सुंबुलुत्तीब और जौज़बोवा प्रत्येक 18 ग्राम।

निर्माण-विधिः सर्वप्रथम कूटने योग्य औषधियों को अधकुटा कर लें फिर सब को 8100 मिलीलीटर साफ़ पानी में एक रात दिन के लिए भिगो दें फिर हल्की आँच पर इस हद तक पकाएँ कि आधा शेष बचे। उसे ठंडा कर के ख़ूब मल छान कर साफ़ कर लें। उस साफ़ पानी को 4050 मिलीलीटर रोग़न-ए-कुन्जद के साथ पकाएँ और उशक़, क़िन्नह, कात सफेद, तराशा-ए-बुलग़ार, सफूफ-ए-मुर्दारसंग, सफ़ूफ़-ए-शंजरफ, क़िन्बील, ज़ाज, अन्ज़रूत, कुन्दुर, जुफ्त रूमी, सफेदाब मग़सूल और दमुलअखवैन प्रत्येक एक स्तार, मोमियाई कानी और सफ़ूफ़-ए-जदवार खताई प्रत्येक 22.5 ग्राम को कूटने छानने के पश्चात उसी में सम्मिलित करें और दोबारा पकाएँ। इस बीच एक बड़े चमचे से हिलाते रहें ताकि उस का पानी जल जाए और तैल शेष बचे। अब उसे आग से उतार लें 2880 ग्राम मोम सफेद सम्मिलित करे ताहि वो तरल हो जाए फिर उसे सूती कपड़े से छान लें और शीशे के पात्र में सुरक्षित कर लें।

प्रयोग-विधिः आवश्यकता के समय रूई को इस तैल में तर कर के ज़ख़्म पर कुछ समय तक रखें।

- **रोग़न-ए-राहतः**

यह जालीनूस की तैयार की हुई दवाओं में से एक है।

हालाँकि इस का प्रयोग तिला के रूप में होता है प्रन्तु इस को तैल के वर्ग में ही रखा जाता है। बहुत छोटा होने के बावजूद इस से प्राप्त होने वाले लाभ अनेक हैं। अफ़ज़लुद्दीन हकीम इमादुद्दीन महमूदुल्लाह ने लिखा है कि मैं ने किसी अन्य औषधि में इस से अधिक लाभ और प्रभाव को नहीं देखा है। यह रोग़न Syphlis के विभिन्न प्रकारों, Arthritis की विभिन्न रूपों, Leprosy, विभिन्न प्रकार के Wounds, Fistula, Ring worm, Scabies, Cracked palm and foot, Alopecia के विभिन्न प्रकार, Otalgia और सर्दी से होने वाले सर दर्द में विशेष रूप से लाभदायक है अर्थात साराँश में यह रोग़न ''कीमिया-ए-बदन'' है और उपर्युक्त रोगों में बहुत लाभदायक और मुजर्रब है। यही कारण है कि इस रोग़न का नाम ''रोग़न-ए-राहत'' रखा गया है।

औषधियाँः जदवार ख़ताई, ज़रन्बाद, ज़रावन्द तवील, हब्बुलग़ार, जुन्तियाना, मुर मक्की, सिब्र सक़ूतरी, जावशीर, हिल्तीत, सकबीनज, कुन्दुर, मस्तगी रूमी, तुख़्म-ए-हिना, बर्ग-ए-हिना, जुन्द बेद स्तर, आक़रक़रहा, मुक़िल प्रत्येक 9 ग्राम, सूरन्जान 18 ग्राम, फ़र्फ़ियून 4.5 ग्राम, साबून इराक़ी 45 ग्राम, मोम ज़र्द 45 ग्राम, पीह-ए-बुज़, पीह-ए-गुर्ग, पीह-ए-रोग़न-ए-रूबाह, पीह-ए-खरगोश, पीह-ए-शेग़ाल प्रत्येक 22.5 ग्राम, पुराना रोग़न-ए-ज़ैतून, रोग़न-ए-गुल-ए-सुर्ख़, रोग़न-ए-बाबूना, रोग़न-ए-नरगिस, रोग़न-ए-ख़ैरी, रोग़न-ए-यासमीन, रोग़न-ए-ज़न्बक, रोग़न-ए-अज़राक़ी, रोग़न-ए-हिना, रोग़न-ए-रैहान, रोग़न-ए-सूरन्जान, रोग़न-ए-कुस्त, रोग़न-ए-फ़र्फ़ियून प्रत्येक 960 मिलीलीटर, ज़न्बक 9 ग्राम।

निर्माण-विधिः ज़न्बक़ को सिफ़ाल के पात्र में आब-ए-लीमू और हिना के साथ इतना घिसें कि उस के सभी भाग आपस में अच्छी तरह मिल जाएँफिर शेष को मिला कर रोग़न तैयार करें।

- **रोग़न-ए-राहत का अन्य नुस्ख़ाः**

यह नुस्खा अधिक विश्वसनीय है।

औषधियाँः जदवार ख़ताई आज़ूमदा, ज़रन्बाद, जुन्द बेद स्तर, मस्तगी रूमी, कुन्दुर, ज़रावन्द मुदहरज, हब्बुलग़ार, आक़रक़रहा, मुग़ास, ज़िफ़्त रूमी, रातीनज, जावशीर, क़िन्नह, हिल्तीत, मुक़िल अज़रक़, उशक़, सकबीनज और मुर्र साफ़ प्रत्येक 9 ग्राम, सूरन्जान, क़ुस्त बहरी और बर्ग-ए-हिना प्रत्येक 13.5 ग्राम, सीमाब 18 ग्राम, साबून इराक़ी, रोग़न-ए-बाबूना, रोग़न-ए-गुल-ए-सुर्ख़, पुराना रोग़न-ए-ज़ैतून, रोग़न-ए-ज़न्बक, रोग़न-ए-नरगिस, रोग़न-ए- खैरी, मोम ज़र्द और पीह-ए-गुर्दा-ए-बुज़ प्रत्येक 45 ग्राम।

सीमाब को आब-ए-लीमू और हिना के साथ उपर्युक्त विधि से इतना घिसें कि उस के सभी भाग आपस में अच्छी तरह मिल जाएँ। अगर रोग chronic हो और रोगी के अन्दर शक्ति बाक़ी हो तो उस में 9 ग्राम तक की मात्रा में सीमाब और अन्य औषधियों को सम्मिलित कर सकते हैं जैसे कि Syphilis के ज़ख़्मों में तूतिया, मुरदारसंग और शन्जरफ़ प्रत्येक 7 ग्राम की मात्रा में सम्मिलित करते हैं। इस के अतिरिक्त हिल्तील, आक़रक़रहा, हब्बुलग़ार और जुन्द बेद स्तर को इस नुस्खे से निकाल दें और सिर्फ़ रोग़न-ए-मूरद डालें और उस के साथ लाज़न भी डाल लें। इस नुस्खे में इस प्रकार के बदलाव मिज़ाज़, रोगी की शक्ति, रोग और उस की गम्भीरता को देखते हुए किए जाते हैं। इन बदलावों के अलावा इस नुस्खे में किसी अन्य बदलाव की कोई गुन्जाइश नहीं है।

इस रोग़न की निर्माण-विधिः सीमाब को बड़े ध्यान से कुशता करें जिस को तरीक़ा यह है कि थोड़ी मात्रा में पुराने सिर्का को आब-ए-लीमू के साथ सिफ़ाल के नए पात्र में रखें और फिर उस में सीमाब डाल कर हाथों से इतना मलें कि सीमाब कण कण हो जाए फिर थोड़ी मात्रा में हिना को कूट छान कर उस में सम्मिलित कर दें और सब्बाबा उँगली से मलते रहें। इस प्रकार तीन दिन सीमाब को मलें ताकि वह ख़ूब कुम्हला जाए। तत्पश्चात Exudates को सिर्का में भिगोएँ और हावन में इतना मलें कि वो अच्छी तरह घुल जाएँ। अब शेष कतल औषधियों को हल्का कूट पीस लें और प्रत्येक को कूटने छानने के बाद उपर्युक्त मात्रा में डालें, जदवार को पत्थर पर अर्क़-ए-गुलाब के साथ पीस लें, साबून को चाक़ू से तराश लें, पीह और मोम को पिघला कर साफ़ कर लें और रोग़नों के साथ मिला कर साफ़ कर लें और पकाएँ। फिर सब से पहले उस में मुरदारसंग और शन्जरफ़ डालें, उस के बाद Exudates डालें, ज़िफ़्त को पिघला कर कपड़े से साफ़ कर लें और अंत में डालें। उस के बाद जदवार और सीमाब डालें और सब को मिलाएँ। तत्पश्चात शेष सभी औषधियों को थोड़ा थोड़ा कर के डालें और एक बड़े से हावन में अच्छी तरह पीसें फिर सब को एक साथ मिलाएँ और एक पात्र में सुरक्षित कर लें ताकि वह धूल आदि से सुरक्षित रहे और आवश्यकता के समय प्रयोग करें।

प्रयोग-विधिः इस रोग़न को प्रयोग करने की विधि यह है कि इस रोग़न से तीन बार में तदहीन करें। प्रारंभ में चार उँगली की चौड़ाई में दोनों भवों के बीच से लेकर गरदन के अन्तिम भाग और पीठ के मुहरों तक मालिश करें। इसी प्रकार सीने की हड्डियों पर भी मालिश करें और फिर बाज़ुओं पर बहुत हल्की मालिश करें, नफ़सानी आराज़, तेज़ हरकत और काम वासना से परहेज़ करें और शरीर की इन चीज़ों से

हिफ़ाज़त करें। दूसरी बार पाँचवे दिन इसी प्रकार से मालिश करें। तीसरी बार ग्यारहवे दिन इसी प्रकार से मालिश करें और सोलहवे दिन हम्माम में दाखिल हों। अगर पहली और दूसरी बार तदहीन से स्वास्थ्य के प्रभाव मालूम होने लगें तो कई बार मालिश की आवश्यकता नहीं है। इन दिनों में रोगी को आहार में नखूदआब दें और उचित आहार का ध्यान रखें।

कभी कभी अगर मुँह में छाले हो जाएँ तो तुख़्म-ए-बुस्तान अफ़रोज़, तुख़्म-ए-रैहान और किशनीज़ को कूट छान कर मुँह में ज़रूर करें, लुआब-ए-बज़रक़तूना को मुँह में रखें और ऐसे लुआबात से मुँह को धोएँ जो Oral Thrush को समाप्त करते हैं।

- **रोग़न-ए-रामिश दादः**

यह नुस्खा "अलक़ानून" पुस्तक से नक़ल किया गया है। यह फालिज, लक़वा, तांत्रिकाओं की शिथिलता एवं शक्तिहीनता, जोड़ों के दर्द और सभी प्रकार के ठंडक के कारण होने वाले दर्दों में खाने अथवा लगाने से लाभ पहुँचाता है। साथ ही यह गैस को तोड़ता है, गाढ़े मवाद को घोल कर कम करता है और तांत्रिकाओं को शक्ति प्रदान करता है। अगर 2.25 ग्राम से 4.5 ग्राम तक की मात्रा में खाया जाए तो यह आँतो की मरोड़ में लाभदायक है। गाढ़े बलग़म के लिए विरेचक है।

औषधियाँः ज़न्बक़, सकबीनज, जावशीर, हब्ब-ए-बलसान, अफ़ियून, ख़रबक़ सफ़ेद, ज़रनब, फ़िलन्जह, शीतरज हिन्दी, मग़्ज़-ए-बादाम तल्ख़, चिलग़ोज़ा और सुद्दाब ख़ुश्क प्रत्येक 27 ग्राम, क़रन्फ़ुल, जौज़बोवा, ज़न्जबील, ख़ूलन्जान, दारचीनी, लाज़न, जुन्द बेद स्तर प्रत्येक 13.5 ग्राम, कतीरा, बज़रुलबन्ज, सीसालियूस, कुन्दुर, शोनीज़, तुख़्म-ए-जिर्जीर, तुख़्म-ए-गन्दना, नानख़्वाह प्रत्येक 22.5 ग्राम, तुख़्म-ए-शाहदाना, हब्बुलखरूअ, मरज़न्जोश, उश्ना और फ़र्फ़ियून प्रत्येक 18 ग्राम, सूरन्जान और हब्बुलग़ार प्रत्येक 4.5 ग्राम, पुराना रोग़न-ए-ज़ैतून 405 ग्राम, रोग़न-ए-अज़राक़ी, रोग़न-ए-बेद अन्जीर, रोग़न-ए-जिर्जीर, रोग़न-ए-शाहदाना, रोग़न-ए-गाव, मीअह सायला, निफ़्त सफ़ेद और रोग़न-ए-बलसान प्रत्येक 45 ग्राम, रोग़न-ए-सोसन, रोग़न-ए-हिना, रोग़न-ए-सुद्दाब और रोग़न-ए-तुर्ब प्रत्येक 22.5 ग्राम, अस्ल-ए-बलादुर 13.5 ग्राम, कुन्दुर, साफ़ शहद और माजून सन्जरीनिया प्रत्येक 45 ग्राम।

निर्माण-विधिः सर्वप्रथम कूटने योग्य औषधियों को अधकुटा कर लें फिर सभी को एक साथ 1215 ग्राम आब-ए-कबर में एक रात के लिए भिगो दें फिर अगले दिन उस के तीन गुना पानी में इस हद तक पकाएँ कि आधा शेष बचे। उसे ठंडा कर के ख़ूब मल छान कर साफ़ कर लें। Exudates के अलग से आब-ए-कबर में

भिगोएँ और इसी पानी में सम्मिलित कर लें। फिर उस साफ़ पानी को सूती कपड़े से कई बार छान कर साफ़ कर लें और पके हुए अवशेष को थोड़े से अर्क़-ए-गुलाब के साथ मिला कर कई बार इतना मल छान लें कि औषधि की शक्ति उस में तनिक भी शेष ना रह जाए। अब उस पानी को और नुस्खे में उपस्थित तैलों को एक बड़े से पात्र में रख कर हल्की आँच पर पकाएँ और क्षारों को उसी में सम्मिलित कर के करछुल से चलाते रहें ताकि Exudates उस में अच्छी तरह से घुल जाएँ। अब उस को इतना पकाएँ कि पानी जल जाए और शुद्ध तैल शेष रह जाए। उस को आग से उतार लें और साफ़ कर के शीशे के पात्र में सुरक्षित कर लें। आवश्यकता के समय प्रयोग में लाएँ।

- **रोग़न-ए-नारदीन:**

यह नुस्खा "मिनहाज" पुस्तक से नक़ल किया गया है। इस रोग़न के अनेक लाभ हैं। यह पेट दर्द, जिगर दर्द, क़ूलन्ज, उदरशूल और आँतो की मरोड़ में खाने और लगाने से लाभ पहुँचाता है। कान में क़तूर करने (टपकाने) से कान के दर्द में आराम देता है और नाक में सऊत करने (सुड़कने) से ठंडक के कारण होने सर दर्द, अधकपारी और ज़ुकाम में लाभदायक है। तैल की भाँति मलने से तांत्रिकाओं की शिथिलता एवं शक्तिहीनता में लाभदायक है। अगर इस को खाया जाए तो यह उदरशूल, आँतो की मरोड़ और आँतों में पाई जाने वाली गैस को तोड़ता है। मूत्रमार्ग में क़तूर करने (टपकाने) से मूत्राशय के ढीलेपन में लाभदायक है और अगर गुर्दा एवं लिंग पर तिला किया जाए तो जोश एवं तनाव पैदा करता है। साराँश यह है कि सभी प्रकार के ठंडे रोगों एवं दर्दों में अत्याधिक लाभदायक है।

औषधियाँ: क़सबुज़्ज़रीरा, सअद, बर्ग-ए-दरख़्त-ए-ग़ार, ऊद-ए-बलसान, साज़ज हिन्दी, रासन, इज़्ख़िर, अबहल, बर्ग-ए-मूरद, क़िर्दमाना, मरज़न्जोश प्रत्येक 70 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को अधकुटा कर के शराब-ए-ममज़ूज (जिस में पानी मिलाय गया हो) के साथ एक रात के लिए भिगो दें फिर 3150 मिलीलीटर रोग़न-ए-कुन्जद के साथ हल्की आँच पर पकाएँ और समय समय पर करछुल से चलाते रहें ताकि शुद्ध तैल शेष रह जाए। ठंडा होने के बाद उसे मलें और सूती कपड़े से छान कर साफ़ कर लें। साथ ही गुल-ए-सुर्ख़, सलीख़ा, मुर्र, सुंबुलुत्तीब, क़रन्फुल और मीअह सायला प्रत्येक 35 ग्राम, जौज़बुवा 175 ग्राम, रोग़न-ए-बलसाँ 210 ग्राम में से औषधियों को कूटने छानने के बाद सब को पहली बार की तरह ही शराब-ए-ममज़ूज में भिगोएँ और उन को उसी रोग़न में पकाएँ यहाँ तक कि पानी जल जाए और शुद्ध रोग़न शेष रह

जाए फिर उस को ठंडा कर लें और कपड़े से साफ़ कर लें। तत्पश्चात दूसरी बार पतीले में डाल कर रोग़न-ए-बलसाँ और मीअह के साथ मिलाकर पकाएँ और अच्छी तरह मिलाएँ कि वो सब एक हो जाएँ फिर उस को ठंडा कर के शीशे के पात्र में सुरक्षित कर लें। आवश्यकता के समय प्रयोग में लाएँ।

- **रोग़न-ए-कलकलानजः**

यह नुस्खा "गिना मुना" पुस्तक से नक़ल किया गया है जो भारतीय हकीमों की खोज है। यह फालिज, लक़वा, ऐंठन, तांत्रिकाओं की शिथिलता एवं शक्तिहीनता, उदरशूल, आँतो की मरोड़ और जलोदर रोग में खाने और लगाने से लाभ पहुँचाता है।

औषधियाँः हलीला स्याह, पोस्त-ए-हलीला काबुली, पोस्त-ए-हलीला और आमला मुनक्क़ा प्रत्येक 45 ग्राम, फ़िलफ़िल, दार-ए-फ़िलफ़िल और ज़न्जबील प्रत्येक 27 ग्राम, जावशीर, उशक़ और सकबीनज प्रत्येक 22.5 ग्राम, तुर्बुद सफ़ेद 36 ग्राम, ख़सक ताज़ा, कबर नब्ती और बर्ग-ए-सुद्दाब ताज़ा प्रत्येक 22.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को रात भर भिगोने के बाद अधकुटा कर के 3150 मिलीलीटर साफ़ पानी में हल्की आँच पर इतना पकाएँ कि आधा शेष बचे। उस को साफ़ कर के 3240 ग्राम मग़ज़ दाना-ए-खरूअ के साथ हल्का कूट छान कर दोबारा हल्की आँच पर इतना पकाएँ कि पानी जल जाए और शुद्ध रोग़न शेष रह जाए। उसे साफ़ कर के सुरकक्षत कर लें और खाने एवं लगाने के रूप में प्रयोग करें।

प्रयोग-मात्राः 1.75 ग्राम से 3.5 ग्राम तक है।

- **रोग़न-ए-कुस्तः**

यह फ़ालिज और लक़वा में लाभदायक है, तांत्रिकाओं को सशक्त बनाता है। आमाशय एवं जिगर के लिए लाभदायक है, बालों के कालेपन को बरक़रार रखता है।

औषधियाँः कुस्त 35 ग्राम,फ़िलफ़िल 10.5 ग्राम, दार-ए-फ़िलफ़िल 10.5 ग्राम, आक़रक़रहा 14 ग्राम, फ़र्फ़ियून 10.5 ग्राम, जुन्द बेद स्तर 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को अधकुटा कर के 405 ग्राम शराब-ए-रैहानी में एक रात दिन के लिए भिगो दें फिर हल्की आँच पर इतना पकाएँ कि आधा शेष बचे। अब उसे मल छान कर साफ़ कर लें और 405 ग्राम रोग़न-ए-ज़ैतून के साथ इतना पकाएँ कि पानी जल जाए और शुद्ध रोग़न शेष रह जाए। अब उस रोग़न को प्रयोग में लाएँ।

- **रोग़न-ए-कुस्त का अन्य नुस्ख़ाः**

यह ठंडे रोगों में लाभदायक है। यह गाढ़े मवाद को हल्का और तांत्रिकाओं की शिथिलता को कम करता है।

औषधियाँः क़रन्फ़ुल और सलीख़ा प्रत्येक 35 ग्राम, क़सबुज़्ज़रीरा, सुंबुलुत्तीब, साज़ज, उश्ना, जुन्द बेद स्तर और क़ुस्त प्रत्येक 70 ग्राम, बनफ़्शा 10.5 ग्राम, मुर्र 17.5 ग्राम, बीख़-ए-सोसन और रासन प्रत्येक 10.5 ग्राम, जौज़बोवा 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूटने योग्य औषधियों को कूट कर 1620 मिलीलीटर साफ़ पानी में एक रात दिन के लिए भिगो दें फिर हल्की आँच पर पकाएँ और मल छान कर साफ़ कर लें और 1620 मिलीलीटर रोग़न-ए-कुन्जद डाल कर दोबारा इतना पकाएँ कि पानी जल जाए और शुद्ध रोग़न शेष रह जाए।

- **रोग़न-ए-कुस्त का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः क़ुस्त 350 ग्राम, सलीख़ा, मुरमाहौज़ प्रत्येक 175 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर शराब में भिगाएँ और 210 मिलीलीटर रोग़न-ए-ज़ैतून के साथ विधि अनुसार पकाएँ। ठंडा होने के बाद साफ़ कर के शीशे के पात्र में सुरक्षित कर लें।

- **रोग़न-ए-कुस्त का अन्य नुस्ख़ाः**

यह "अलक़ानून" पुस्तक से लिया गया है। यह पेट, जिगर, जोड़ों के दर्द और तांत्रिकाओं की शिथिलता में लाभदायक है।

औषधियाँः क़ुस्त, उश्ना, क़सबुज़्ज़रीरा, सुंबुलुत्तीब, साज़ज हिन्दी, मीअह सायला, ईर्सा, क़िर्फ़ह प्रत्येक 70 ग्राम, क़रन्फ़ुल, रासन, सलीख़ा प्रत्येक 35 ग्राम, मुर मक्की 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट कर शराब-ए-ममज़ूज में रात भर भिगाएँ फिर 2100 ग्राम रोग़न-ए-कुन्जद मिला कर इतना पकाएँ कि पानी जल जाए।

- **रोग़न-ए-कुस्त का अन्य नुस्ख़ाः**

यह नुस्खा "मिनहाज" पुस्तक से नक़ल किया गया है। मौखिक रूप से प्रयोग करने पर यह जिगर के दर्द और पेट के दर्द में लाभदायक है और बालों पर लगाने से यह उनके कालेपन को बरक़रार रखता है। यह ठंडे रोगों में भी लाभदायक है।

- **रोग़न-ए-फ़िलफ़िलातः**

यह नुस्खा "अलक़ानून" पुस्तक से नक़ल किया गया है जो भारतीय हकीमों की खोज है। यह जोड़ों के दर्द, ऐंठन, लक़वा, उदरशूल, कमर दर्द, गुर्दे के दर्द और उन सभी प्रकार के दर्दों को दूर करता है जो ठंडक के कारण होते हैं।

औषधियाँः शल्ल, बल्ल, फ़ुल्ल, शीतरज, ईर्सा, रासन, दार-ए-फ़िलफ़िल, जौज़ुलक़ै,

जौज़ुस्सर्व, जौज़ुस्सनोबर, क़ुस्त, राज़ियाना, ज़रन्बाद, बूदारू, रातीनज प्रत्येक 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब कूट कर 4200 मिलीलीटर पानी में पकाएँ फिर 2100 मिलीलीटर रोग़न-ए-कुन्जद मिला कर दोबारा पकाएँ और साफ़ कर के शीशे के पात्र में सुरक्षित कर लें।

- **रोग़न-ए-शोनीज़ः**

यह फ़ालिज, लक़वा और ऐंठन में लाभदायक है।

औषधियाँः शोनीज़ 70, मग़ज़-ए-बादाम तल्ख़10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को हल्का कूट कर रोग़न निकालें।

- **रोग़न-ए-अफ़सन्तीनः**

यह आमाशयवर्धक, जिगरवर्धक और शक्तिवर्धक है। साथ ही कान में टपकाने से कान के दर्द में आराम पहुँचाता है।

औषधियाँः अफ़्सन्तीन, रोग़न-ए-ज़ैतून और रोग़न-ए-बादाम या रोग़न-ए-कुन्जद।

निर्माण-विधिः ताज़ा अफ़सन्तीन को इच्छानुसार लेकर शीशे के पात्र में रख लें फिर रोग़न-ए-ज़ैतून और रोग़न-ए-बादाम तल्ख़ या अगर दोनों प्रयाप्त ना हों तो रोग़न-ए-कुन्जद को उस में डाल कर धूप में रखें और 40 दिनों के बाद प्रयोग में लाएँ।

- **रोग़न-ए-क़ुस्तः**

यह उन सभी दर्दों को दूर करता है जो ठंडक के कारण होते हैं। साथ ही यह फ़ालिज, ऐंठन और अंगों की शिथिलता व शक्तिहीनता में भी लाभदायक है।

औषधियाँः क़ुस्त तल्ख़ 35 ग्राम, आक़रक़रहा 24.5 ग्राम, मवीज़ज 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को हल्का कूट कर 140 ग्राम शराब के साथ इतना पकाएँ कि तीन भाग जल जाए और एक भाग शेष बचे फिर 35 ग्राम रोग़न-ए-कुन्जद और 7 ग्राम फ़र्फ़िर्यून सम्मिलित करें और आग से उतार सुरक्षित कर लें।

- **रोग़न-ए-क़ुस्तः**

यह अधिक प्रभावशाली है। यह सभी प्रकार के ठंडक से होने वाले दर्दों, फ़ालिज, जोड़ो के दर्द, ग्रधरसी में लाभदायक है।

औषधियाँः क़ुस्त तल्ख़ 35 ग्राम, जुन्द बेद स्तर 17.5 ग्राम, कुन्दुश 14 ग्राम, मवीज़ज 10.5 ग्राम, आक़रक़रहा 24.5 ग्राम, पोदीना कोही 42 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर 1400 मिलीलीटर पानी में पकाएँ फिर एक रात और एक दिन शराब में भिगोने के बाद हल्की आँच पर इतना पकाएँ दो तिहाई भाग

शराब जल और एक भाग शेष बचे। ठंडा होने के बाद मल छान कर साफ़ कर लें और उस के आधा भाग रोग़न-ए-खैरी या उसी की भाँति किसी गरम रोग़न में इतना पकाएँ कि पानी जल जाए और शुद्ध रोग़न शेष रह जाए।

- **रोग़न-ए-सोसनः**

यह गर्भाशय की ठंडक और वातोन्माद (Hysteria) में लाभदायक है। यह गुर्दा एवं मूत्राशय में गरमी पैदा करता है।

औषधियाँः सलीख़ा, हब्ब-ए-बलसान, मस्तगी, ज़ाफ़रान,क़ुस्त प्रत्येक 35 ग्राम, क़िर्फ़ह और क़रन्फ़ुल प्रत्येक 17.5 ग्राम, 30 गुल-ए-सोसन (जिस का ज़र निकाल दिया गया हो)।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर शीशे के पात्र में रखें और उनके साथ 630 मिलीलीटर रोग़न-ए-कुन्जद डाल कर धूप में या ऐसी छाँव में रखें जो धूप के समीप ही हो। 40 दिनों के बाद साफ़ कर के सुरक्षित कर लें।

- **रोग़न-ए-बेद अन्जीरः**

यह बलग़म का विरेचक है और गर्भाशय की ठंडक और तांत्रिकाओं को तरल पदार्थों से पाक करता है।

औषधियाँः बेद अन्जीर।

निर्माण-विधिः बेद अन्जीर को भून कर उस के छिलके उतार कर कूट छान लें और पानी में पकाएँ। उस के झाग को समय समय पर उतारते रहें यहाँ तक वो झाग से पूर्ण रूप से साफ़ हो जाए फिर दोबारा उसे इतना पकाएँ कि पानी जल जाए और रोग़न शेष बचे। अब उसे साफ़ कर लें और प्रयोग में लाएँ।

- **रोग़न-ए-नानख़्वाह :**

यह फ़ालिज, लक़वा, जिगर और तिल्ली के सुद्दों में लाभदायक है। यह गाढ़े बलग़म का विरेचक है। उदरशूल में भी लाभ पहुँचाता है।

औषधियाँः नानख़्वाह , सअतर, तुख़्म-ए-करफ़्स, पोदीना कोही, बीख़-ए-बादियान, अनीसून, मस्तगी, हुल्बा, असारून प्रत्येक 24.5 ग्राम, बीख़-ए-करफ़्स, बीख़-ए-इज़्ख़िर, बीख़-ए-सोसन, रासन ख़ुश्क प्रत्येक 35 ग्राम, शीतरज हिन्दी, मुक़िल प्रत्येक 17.5 ग्राम, सकबीनज, उशक़, जावशीर, ज़रन्बाद, दरूनज अक़रबी प्रत्येक 10.5 ग्राम, ज़न्जबील, दारचीनी, क़ाक़ला, जौज़बोवा, कबाबा चीनी, दार-ए-फ़िलफ़िल, जौज़बोवा, लाज़न, शोनीज़, क़ुस्त, करोया प्रत्येक 14 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर साफ़ पानी में एक रात दिन भिगो दें। पका

कर उस का झाग साफ़ करें। 630 ग्राम रोग़न-ए-बेद अन्जीर सादा के साथ पकाएँ।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम से 10.5 ग्राम तक प्रयोग करें।

अनुपानः माउलउसूल के साथ प्रयोग करें।

- **रोग़न-ए-सूरन्जानः**

यह जोड़ों के दर्द, गठिया, तांत्रिका दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँः क़सबुज़्ज़रीरा, सूरन्जान मिश्री, आब-ए-करफ़्स ताज़ा प्रत्येक 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः क़सबुज़्ज़रीरा और सूरन्जान को अर्धकुटा कर के के आब-ए-करफ़्स और साफ़ पानी में भिगोएँ फिर रोग़न-ए-कुन्जद 105 मिलीलीटर के साथ मिला कर पकाएँ और सुरक्षित कर लें और प्रयोग करें। इस से तदहीन करने से लाभ पहुँचता है।

- **रोग़न-ए-मीअहः**

यह गुर्दा, मूत्राशय और गर्भाशय को गरम करता है। साथ ही यह जोड़ो के दर्द, ठंडक के कारण होने वाले रोगों और सूजनों में लाभदायक है।

औषधियाँः रोग़न-ए-कुन्जद 810 मिलीलीटर और मीअह ख़ुश्क 3840 ग्राम।

निर्माण-विधिः मीअह को रोग़न-ए-कुन्जद में डाल कर हल्की आँच पर पकाएँ और साफ़ कर के सुरक्षित कर लें।

- **रोग़न-ए-उश्नाः**

यह सभी प्रकार के ठंडक के कारण होने वाले और बलग़म की अधिकता के कारण होने वाले रोगों में लाभदायक है।

औषधियाँः उश्ना 90 ग्राम, क़ुस्त 35 ग्राम, सलीख़ा और क़सबुज़्ज़रीरा प्रत्येक 17.5 ग्राम, हब्ब-ए-बलसान और मस्तगी प्रत्येक 70 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर शराब में भिगोएँ। तीन दिन बाद 630 मिलीलीटर रोग़न-ए-मूरद के साथ इतना पकाएँ कि शराब जल जाए और रोग़न शेष रह जाए।

- **रोग़न-ए-ज़ाफ़रानः**

यह गर्भाशय की सूजन और बलग़म की अधिकता के कारण होने वाले ऐंठन में लाभदायक है। साथ ही यह सभी प्रकार के बलग़मी रोगों में भी लाभदायक है और शरीर की प्राकृतिक ऊष्ण ताप को बढ़ाता है।

औषधियाँः ज़ाफ़रान 21 ग्राम, मुर मक्की 3.5 ग्राम, क़सबुज़्ज़रीरा 17.5 ग्राम, क़िर्दमाना 21 ग्राम।

निर्माण-विधिः मुर मक्की को सिर्का में भिगोएँ। ज़ाफ़रान और चिरायता को अलग से छः दिन तक सिर्का में भिगोएँ फि 9 वें दिन सब को कूट छान कर 90

मिलीलीटर रोग़न-ए-कुन्जद के साथ मिला कर हल्की आँच पर इतना पकाएँ कि सिर्का समाप्त हो जाए और रोग़न शेष रह जाएँ अब उसे शीशे के पात्र में सुरक्षित कर लें।

- **रोग़न-ए-रैहान:**

यह फ़ालिज, घुटने के दर्द और जोड़ों के दर्द में मौखिक रूप से और लगाने से लाभदायक है।

औषधियाँ: रैहान, आब-ए-शाहस्फ्रम, रोग़न-ए-कुन्जद।

निर्माण-विधि: रैहान को इच्छानुसार मात्रा में लें और कूट छान कर उस का रस प्राप्त कर लें फिर उस के आधा वज़न आब-ए-शाहस्फरम, रोग़न-ए-कुन्जद मिला कर हल्की आँच पर इतना पकाएँ कि पानी जल जाए और साफ़ रोग़न शेष रह जाए।

सेवन-मात्रा: 4.5 ग्राम से 17.5 ग्राम।

अनुपान: उस चने के पानी के साथ प्रयोग करें जिस में ज़ीरा और अक़ाक़िया को पकाया गया हो।

आहार: ज़ीरबाज का प्रयोग करें।

प्रयोग-विधि: खाने के साथ अगर इस की मालिश की जाए तो भी उपर्युक्त लाभ प्राप्त होते हैं।

- **रोग़न-ए-आजिर:**

यह पकाया हुआ रोग़न-ए-खिशत है। इसे "दुहनुलमुबारक" भी कहते हैं। यह अनेक विशेषताओं और लाभों वाला है। यह निफत सफेद से अधिक गरम और हल्का है। अफ़ीम की विषाक्तता, बिच्छू के काटे, जोड़ों के दर्द, तांत्रिकाओं के दर्द और अधिकतर ठंडे रोगों में लाभदायक है।

औषधियाँ और निर्माण-विधि: इच्छानुसार पानी में बुझाया हुआ आजिर सुर्ख़ लें और मग़ज़-ए-बादाम एवं मग़ज़-ए-पिस्ता की भाँति कण कण कर लें फिर लोहे के पात्र के साथ आग में रख दें ताकि वह जल जाए। अब उस को निकाल कर रोग़न-ए-ज़ैतून या रोग़न-ए-बेद अन्जीर में रखें फिर रोग़न से निकाल कर लंबी गरदन वाले शीशे के पात्र में रखें और उस पर गिल-ए-हिकमत कर दें। देग-ए-सिफ़ाली के निचले भाग में छेद कर के उस के सामने रख दें और इस देग को तीन पैरों वाले एक स्टैन्ड पर रखें। शीशे के पात्र के ऊपर हल्की आग लगाएँ जो कि अगर गाय के गोबर की हो तो ज़्यादा बेहतर है। शीशे के पात्र के नीचे एक बरतन रख दें ताकि जो भी वस्तु टपके उसी बरतन में जमा होती रहे यहाँ तक कि पूरा रोग़न जमा हो जाए। अब उस को सुरक्षित कर लें।

- **रोग़न-ए-मस्तगी:**

यह आमाशयवर्धक है। यह आमाशय की सूजन और उस के ठोसपन में लाभदायक है क्योंकि यह उन को नर्म करता है।

औषधियाँ: रोग़न-ए-कुन्जद 420 ग्राम, मस्तगी 70 ग्राम।

निर्माण-विधि: 70 ग्राम मस्तगी को 420 मिलीलीटर रोग़न-ए-कुन्जद के साथ हल्की पीस कर एक बड़े पात्र में रखें और हल्की आँच पर इतना पकाएँ कि मस्तगी पूर्ण रूप से तरल पदार्थ की भाँति हो जाए और रोग़न में मिल जाए।

- **रोग़न-ए-मस्तगी का अन्य नुस्ख़ा:**

औषधियाँ: मस्तगी और रोग़न-ए-कुन्जद।

निर्माण-विधि: मस्तगी और रोग़न-ए-कुन्जद को शीशे के एक पात्र में भर दें और एक देग को पानी से भर कर उस पात्र को देग के बीच में रखें। फिर पानी को इतना पकाएँ कि मस्तगी और रोग़न-ए-कुन्जद अच्छी तरह मिल जाएँ।

- **रोग़न-ए-कुन्दुर:**

यह ठंडक से होने वाले कान के दर्द को दूर करता है।

औषधियाँ: कुन्दुर 17.5 ग्राम, सिब्र, मुर्र, मस्तगी, जुन्द बेद स्तर, हुज़ुज़, ज़हरा-ए-गाव प्रत्येक 3.5 ग्राम, रोग़न-ए-बादाम तल्ख़ 70 ग्राम, पुरानी शराब 140 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर उपर्युक्त शराब और रोग़न में पकाएँ।

प्रयोग-विधि: कान में हल्का गरम टपकाएँ।

- **रोग़न-ए-कुन्दुर का अन्य नुस्ख़ा:**

यह कान के रोगों के लिए अद्वितीय औषधि है।

औषधियाँ: कुन्दुर और रोग़न-ए-कुन्जद।

निर्माण-विधि: 90 ग्राम कुन्दुर को 180 मिलीलीटर रोग़न-ए-कुन्जद में डाल कर कूटने छानने के बाद हल्की आँच पर पकाएँ और धीरे धीरे आँच को बढ़ाते रहें यहाँ तक कि कुन्दुर तरल हो कर रोग़न के साथ अच्छी तरह मिल जाए।

- **रोग़न-ए-दार-ए-शीशआँ:**

यह आमाशयक की कमज़ोरी और दस्त में लाभदायक है।

औषधियाँ: दार-ए-शीशआन 210 ग्राम, सलीख़ा 31.5 ग्राम, क़िर्फ़ह और कुस्त प्रत्येक 140 ग्राम।

निर्माण-विधि: सभी औषधियों को अधकुटा कर के एक रात के लिए भिगो

दें और फिर पकाएँ और हथेली से मल छान कर साफ़ कर लें। अंत में 210 ग्राम रोग़न-ए-कुन्जद के साथ दोबारा पकाएँ और आवश्यकता के समय प्रयोग करें।

- **रोग़न-ए-दामूनः**

यह रूमी हकीमों द्वारा तैयार किया गया नुस्खा है। यह ठंडे आमाशयक और तांत्रिकाओं को शक्ति प्रदान करता है। साथ ही ठंडक के कारण होने वाले प्रत्येक प्रकार के दर्द को दूर करता है।

औषधियाँः मस्तगी 420 ग्राम, दार-ए-चीनी 210 ग्राम, मीअह सायला, साज़ज हिन्दी और मुक़िल अज़रक़ प्रत्येक 140 ग्राम, फ़िलफ़िल 35 ग्राम, फ़र्फ़ियून 11.66 ग्राम, रोग़न-ए-बान या रोग़न-ए-ज़ैतून जो भी उपस्थित हो 1680 मिलीलीटर, रोग़न-ए-बलसान और मोम सफ़ेद प्रत्येक 420 ग्राम।

निर्माण-विधिः विधि अनुसार पकाएँ और रोग़न तैयार करें।

- **रोग़न-ए-आबीः**

यह आमाशयवर्धक है और दस्त को रोकता है।

औषधियाँः आब-ए-बिही दो भाग, आब-ए-बर्ग-ए-मूरद और रोग़न-ए-गुल।

निर्माण-विधिः सब को इतना पकाएँ कि पानी जल जाए और रोग़न रह जाए।

- **रोग़न-ए-बिहीः**

यह इस पुस्तक के लेखक द्वारा तैयार किया गया है।यह आमाशयवर्धक है और दस्त को रोकता है।

औषधियाँः आब-ए-बिही तुर्श, आब-ए-बर्ग-ए-मूरद और आब-ए-आमला प्रत्येक 420 ग्राम, गुलनार फ़ारसी, सअद कूफ़ी, नखूद, गुल-ए-सुर्ख़, संुबुलुत्तीब प्रत्येक 35 ग्राम, माज़ू 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान कर पकाएँ और हाथों से मल छान कर साफ़ कर लें। साथ उनके तलछट को अर्क़-ए-गुलाब से धोएँ और मल छान कर साफ़ कर लें। फिर रोग़न-ए-मूरद और रोग़न-ए-अफ़्सन्तीन प्रत्येक 35 ग्राम, रोग़न-ए-क़ुस्त 17.5 ग्राम के साथ सभी औषधियों को मिला कर हल्की आँच पर इतना पकाएँ कि पानी जल जाए और रोग़न शेष रह जाए। अंत में 7 ग्राम मस्तगी और 3.5 ग्राम लादन को कूट छान कर उस में सम्मिलित करें और इतना पकाएँ कि अच्छी तरह मिल जाए। तत्पश्चात ठंडा कर के शीशे के पात्र में सुरक्षित कर लें और आवश्यकता के समय प्रयोग करें।

- **रोग़न-ए-गुल-ए-बाबूनाः**

यह ठंडक के कारण आमाशय के सूजन में लाभदायक है।

औषधियाँः गुल-ए-बाबूना, इक्लीलुलमलिक, बर्ग-ए-लाला और उक़्होवान।

निर्माण-विधिः सब को कूटने छानने के बाद पानी में पका कर अच्छी तरह मिलाएँ और एक भाग रोग़न-ए-बेद अन्जीर मिला कर दोबारा इतना पकाएँ कि पानी जल जाए।

- **रोग़न-ए-मवीज़ः**

यह क्षयरोग (Pthisis) और ऐसी पुरानी खाँसी में लाभदायक है जिस के साथ बुख़ार भी आता हो।

औषधियाँः मवीज़ मुनक़्क़ा 70 ग्राम, उन्नब 30 दाना, सपिस्तान 100 दाना, अन्जीर सफ़ेद 10 दाना, असलुस्सूस मुक़श्शर 35 ग्राम, फ़ुलूस ख़्यार शंबर 70 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को 2100 मिलीलीटर बारिश के पानी में इतना पकाएँ कि एक तिहाई शेष रह जाए। उस को साफ़ करने के बाद रोग़न-ए-बादाम शीरीं, रोग़न-ए-कदू, मस्का-ए-गाव और रोग़न-ए-तुख़्म-ए-ख़शख़ाश प्रत्येक 35 ग्राम की मात्रा में सम्मिलित कर के दोबारा हल्की आँच पर इतना पकाएँ कि पानी जल जाए और रोग़न शेष रह जाए। रोगी की दशा को ध्यान में रखते हुए इस का प्रयोग करें।

- **रोग़न-ए-माज़र्यूनः**

यह जलोदर (Ascites) के रोगियों के लिए लाभदायक है।

औषधियाँः बर्ग-ए-माज़र्यून।

निर्माण-विधिःबर्ग-ए-माज़र्यून 122 ग्राम को पानी 2430 मिलीलीटरमें इतना पकाएँ कि 405 मिलीलीटर रह जाए। उसे साफ़ करने के बाद 105 ग्राम रोग़न-ए-बादाम तल्ख़ डाल कर दोबारा इतना पकाएँ कि पानी जल जाए और रोग़न शेष रह जाए।

सेवन एवं प्रयोग-मात्राः आवश्यकतानुसार प्रयोग करें।

अनुपानः ऊँटनी के दूध के साथ प्रयोग करें।

- **रोग़न-ए-गुल-ए-नीलोफरः**

यह अक्षपक ज्वर और गरमी से होने वाले सर दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँः गुल-ए-नीलोफ़र।

निर्माण-विधिः इच्छानुसार गुल-ए-नीलोफ़र ले लें और शीशे के पात्र में रख कर एक दिन धूप में रख छोड़ें। जब वो कुछ कुम्हला जाएँ तो उन के ऊपर रोग़न-ए-कुन्जद

डाल कर 40 दिनों तक धूप में रखें और फिर प्रयोग में लाएँ।

- **रोग़न-ए-बादाम:**

यह गरम दिमाग़ के सूखेपन और अनिद्रा (Insomnia) में लाभदायक है। जोड़ों की सख़्ती को नर्म करता है। सूखी खुजली में लाभदायक है। शरीर में नर्मी पैदा करता है और नाख़ून पर मलने से स्वास्थ्य बरक़रार रहती है।

औषधियाँ: मग़ज़-ए-बादाम शीरीं, गुल-ए-बनफ़्शा ताज़ा।

निर्माण-विधिः इच्छानुसार मग़ज़े बादाम शीरीं (जो छील कर सफेद करने के बाद दो भाग कर दिए गए हों और कुछ समय के लिए धूप में रखे गए हों ताकि उनकी तरलता समाप्त हो जाए) को लेकर उन के आधा वज़न गुल-ए-बनफ़्शा ताज़ा के साथ मिलाएँ और सूती कपड़े की पोटली में बाँध कर हाथों से मल छान लें और सर या पहलू के नीचे रखें। दूसरे दिन बनफ़्शा को निकाल बादाम के साथ ताज़ा बनफ़्शा रखें और उसी प्रकार पहलू के नीचे रखें और फिर सुबह में पुराने बनफ़्शा को निकाल कर उस के स्थान पर ताज़ा बनफ़्शा सम्मिलित करें। यह प्रक्रिया इतनी बार करें कि बादाम में बनफ़्शा की बू आने लगे। इस प्रकार जितनी बार बनफ़्शा को बदलेंगे उस की खुशबू बादाम में बढ़ती जाएगी। तत्पश्चात उस को धूप में सुखा लें और रोग़न तैयार करें।

- **रोग़न-ए-बादाम का एक अन्य नुस्ख़ा:**

यह गरमी और ठंडक में Neutral है। इस की तदहीन से गरम दिमाग़ शक्ति प्राप्त होती है, सूझबूझ में बढ़ोत्तरी होती है और गरमी के कारण होने वाले सर दर्द में आराम मिलता है। इस को पीने से आँतों के ज़ख्म, पेचिश और आँतों की खुश्की में लाभ प्राप्त होता है।

औषधियाँ: मग़ज़-ए-बादाम शीरीं और बर्ग-ए-गुलाब।

निर्माण-विधिः इच्छानुसार मग़ज़-ए-बादाम शीरीं को छील कर सफ़ेद करें और दो भाग कर लें फिर सुखा कर बर्ग-ए-गुलाब के साथ अच्छी तरह मिलाएँ ताकि उन में गुलाब की खुशबू अच्छी तरह आ जाए। अब उस से रोग़न निकालें।

- **रोग़न-ए-बादाम का अन्य नुस्ख़ा:**

यह ठंडा और तरल है। गरम दिमाग़ के लिए शक्तिवर्धक है। साथ ही गरमी के कारण होने वाले सर दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँ: मग़ज़-ए-बादाम शीरीं, बेद मुश्क

निर्माण-विधिः मग़ज़-ए-बादाम शीरीं को बेद मुश्क के साथ उपर्युक्त तरीके से

मिलाएँ फिर विधि अनुसार रोग़न निकालें जैसा कि रोग़न-ए-बनफ़्शा, रोग़न-ए-बादाम और रोग़न-ए-गुल-ए-बाशाम को प्राप्त किया जाता है।

- **रोग़न-ए-गुल-ए-सुर्ख़:**

इस में गरमी थोड़ी अधिक है। गरमी से होने वाले सर दर्द में लाभदायक है। इस की मालिश से खुजली में लाभ मिलता है। इस को सिर्का के साथ मिला कर सर पर मालिश की जाती है।

औषधियाँ: गुलाब के ताज़ा फूल और रोग़न-ए-कुन्जद।

निर्माण-विधि: गुलाब के ताज़ा फूल शीशे के पात्र में रख कर दिन भर धूप में रख दें। जब वो कुछ मुरझा जाएँ तो उन पर रोग़न-ए-कुन्जद डाल कर चालीस दिनों तक धूप में रखें और फिर प्रयोग में लाएँ।

- **रोग़न-ए-गुल-ए-सफ़ेद:**

इस में ठंडक थोड़ी अधिक है। इस से प्राप्त होने वाले लाभ गुल-ए-सुर्ख़ से प्राप्त होने वाले लाभ जैसे ही हैं और उस के तरीक़े से इस को तैयार भी किया जाता है।

- **रोग़न-ए-गुल-ए-ज़र्द:**

इस में गर्मी थोड़ा अधिक है।

- **रोग़न-ए-यास्मीन:**

इस में सामान्य गर्मी है, यह सुद्दे खोलता है। पदार्थों को और तरल एवं नर्म करता है। यह दाग़ धब्बों को दूर करता है। ठंडक से होने वाले सर दर्द में लाभदायक है।

- **रोग़न-ए-नरगिस:**

यह यासमीन की तुलना में गरम है। यह सुद्दे खोलता है और पदार्थों को और तरल एवं नर्म करता है। गरम स्वभाव के व्यक्तियों को इस के सूँघने से हानि होती है।

- **रोग़न-ए-ज़ंबक़:**

यह रोग़न-ए-यासमीन की भाँति ही है।

- **रोग़न-ए-जौज़ी:**

यह ढाई दर्जे में गरम है। यह विलायक है और तरल एवं नर्म करने वाला है।

- **रोग़न-ए-राज़की:**

यह गरम है। यह तांत्रिकाओं के दर्द एवं उनकी शिथिलता में लाभदायक है।

- **रोग़न-ए-गुल-ए-नसरीनः**

यह सामान्यता के समीप है। यह विलायक और तरल एवं नर्म करने वाला है। नाक के सुद्दों को खोलता और उनकी गन्दगी को दूर करता है। कान में टपकाने से कर्णान्दा को दूर करता है।

इन उपर्युक्त फूलों का रोग़न प्राप्त करने की विधि भी रोग़न-ए-गुल-ए-सुर्ख़ की भाँति ही है। किसी भी ताज़ा फूल से रोग़न प्राप्त करने की विधि यह है कि उसे शीशे के पात्र में रखें और ऊपर से रोग़न-ए-कुन्जद डाल दें फिर चालीस दिनों तक ध ूप में रखें और उस के बाद प्रयोग में लाएँ। बेहतर तरीक़ा यह है कि गुल-ए-बादाम की तरह ही नसरीन, यासमीन, ज़ंबक़ और राज़क़ी का भी रोग़न प्राप्त किया जाए अर्थात कुन्जद सफेद मुक़श्शर को उन फूलों के बीच कई बार रखें जिन का रोग़न प्राप्त करना हो और अंत में उस से रोग़न प्राप्त करें।

- **रोग़न-ए-कदूः**

यह दिमाग़ के सूखेपन, अक्षपक ज्वर, गरमी के कारण होने वाले सर दर्द और विषाद (Melancholia) में लाभदायक है।

औषधियाँः ताज़ा कदू और रोग़न-ए-कुन्जद।

निर्माण-विधिः ताज़ा कदू के बाहरी छिलके को उतार कर उस को बीज और गूदे के साथ कूट छान कर निचोड़ें और उस का साफ़ रस प्राप्त कर लें। उपर्युक्त प्राप्त रस को 122 मिलीलीटर की मात्रा में लेकर उस में रोग़न-ए-कुन्जद डाल कर हल्की आँच पर इतना पकाएँ कि पानी जल जाए और रोग़न शेष रह जाए।

सब से बेहतर तरीक़ा यह है कि मग़ज़-ए-दाना-ए-कदू का रोग़न, रोग़न-ए-बादाम की तरह ही प्राप्त किया जाए।

- **रोग़न-ए-गुल-ए-बाबूनाः**

यह गरमी और सूखेपन में सामान्य है। यह दर्दनिवारक है। यह अंगों के फूलन एवं Tetanus में लाभदायक है। यह त्वचा के नीचे बंद गैस और फूलन को समाप्त करता है।

औषधियाँः गुल-ए-बाबूना ताज़ा (जिसे सुखा लिया गया हो) 420 ग्राम और रोग़न-ए-कुन्जद।

निर्माण-विधिः ताज़ा गुल-ए-बाबूना को सुखा कर 420 ग्राम की मात्रा में शीशे के पात्र में रखें और फिर उस में रोग़न-ए-कुन्जद डाल कर धूप में रखें फिर 20 या 40 दिनों के बाद प्रयोग में लाएँ। कुछ नुस्ख़ों में यह भी है कि 70 ग्राम हुल्बा को

हल्का कूट कर बाबूना में सम्मिलित करें।

- **रोग़न-ए-बाबूना का अन्य नुस्ख़ा:**

यह नुस्खा कफ़ाफ़ा मन्सूरी से नक़ल किया गया है। यह जिगर के दर्दों और गैस में लाभदायक है।

औषधियाँ: बाबूना ताज़ा 420 ग्राम, और रोग़न-ए-कुन्जद 4200 मिलीलीटर।

निर्माण-विधिः ताज़ा बाबूना को धो कर छाँव में सुखा लें। उस सूखे बाबूना को 420 ग्राम की मात्रा में 4200 मिलीलीटर रोग़न-ए-कुन्जद के साथ धूप में रखें। इसी प्रकार रोग़न-ए-अफ़्सन्तीन भी प्राप्त करें।

- **रोग़न-ए-बाबूना का अन्य नुस्ख़ा:**

औषधियाँ: बाबूना तर या ख़ुश्क 810 ग्राम, पानी और रोग़न-ए-कुन्जद।

निर्माण-विधिः ताज़ा या सूखा बाबूना 810 ग्राम की मात्रा में लेकर 3240 मिलीलीटर पानी के साथ इतना पकाएँ कि 810 ग्राम पानी शेष रह जाए फिर 810 मिलीलीटर रोग़न-ए-कुन्जद के साथ दोबारा पकाएँ और रोग़न प्राप्त करें।

- **रोग़न-ए-बाबूना का अन्य नुस्ख़ा:**

औषधियाँ: गुल-ए-बाबूना 122 ग्राम, पानी और रोग़न-ए-कुन्जद।

निर्माण-विधिः इस को प्राप्त करने की विधि यह है कि 122 ग्राम बाबूना को 810 मिलीलीटर पानी के साथ इतना पकाएँ कि एक चौथाई पानी शेष रह जाए फिर उसे साफ़ कर के उसी के समभाग रोग़न-ए-कुन्जद सम्मिलित कर के दोबारा इतना पकाएँ कि शुद्ध रोग़न शेष रह जाए।

- **रोग़न-ए-बाबूना का अन्य नुस्ख़ा:**

यह कम प्रभाव वाला नुस्खा है। यह तांत्रिकाओं की शिथिलता में लाभदायक है। साथ ही यह ठोस सूजनों को गलाता है, मूत्रविरेचक है और आर्तवजनक है।

औषधियाँ: गुल-ए-उक़्होवान और रोग़न-ए-कुन्जद।

निर्माण-विधिः गुल-ए-उक़हूवान को शीशे के पात्र में रख कर ऊपर से रोग़न-ए-कुन्जद डालें और धूप में रखें।

- **रोग़न-ए-मरज़न्जोश:**

यह गरम और लघु है। यह पक्षघात, लक़वा और तांत्रिकाओं की शिथिलता में लाभदायक है। यह दिमाग़ के सुद्दों को खोलता है। अधकपारी, बलग़म और सौदा की अधिकता के कारण होने वाले सर दर्द में लाभ देता है। कान में टपकाने से उस

की गरमी में लाभदायक है और उस को दूर करता है।

औषधियाँ: माज़न्जोश 405 ग्राम, रोग़न-ए-कुन्जद 3240 मिलीलीटर।

निर्माण-विधि: सब को 3240 मिलीलीटर पानी में इतना पकाएँ कि पानी जल जाए, रोग़न शेष रह जाए। उसे साफ़ कर के शीशे के पात्र में सुरक्षित कर लें।

- **रोग़न-ए-मरज़न्जोश:**

यह स्मृति-लोप (Amnesia) और बलग़म की अधिकता के कारण होने वाले सर दर्द में लाभदायक है। साथ ही यह ठोस सूजनों को गलाता है।

औषधियाँ: ख़्यार शंबर ताज़ा और रोग़न-ए-गुल।

निर्माण-विधि: ख़्यार शंबर ताज़ा को कूट छान कर उस का रस प्राप्त कर लें। साफ़ कर के उसी के समभाग रोग़न-ए-गुल सम्मिलित कर के इतना पकाएँ कि शुद्ध रोग़न शेष रह जाए फिर उसे प्रयोग में लाएँ।

- **रोग़न-ए-शिब्त:**

यह अंगों की सुस्ती एवं काहिली में लाभदायक है। साथ ही यह खाज खुजली, दद्रु, स्वित्र, तांत्रिकाओं के दर्द और पक्षघात में लाभदायक है।

औषधियाँ: गुल-ए-इज़्ख़िर और रोग़न-ए-कुन्जद।

निर्माण-विधि: गुल-ए-इज़्ख़िर को शीशे के पात्र में रखें। ऊपर से रोग़न-ए-कुन्जद डाल कर धूप में रखें। अगर चाहें तो इज़्ख़िर और गुल-ए-इज़्ख़िर को रोग़न-ए-कुन्जद और पानी के साथ रोग़न-ए-मरज़न्जोश की भाँति ही पकाएँ।

- **रोग़न-ए-शिब्त:**

यह ठंडक से होने वाली तांत्रिकाओं की सुस्ती में लाभदायक है। गैस को तोड़ता है। ठंडक से होने वाले दर्दों में आराम देता है। सर पर मालिश से नींद आती है।

औषधियाँ: बर्ग-ए-शिब्त और तुख़्म-ए-शिब्त ताज़ा 405 ग्राम और रोग़न-ए-कुन्जद।

निर्माण-विधि: बर्ग-ए-शिब्त और तुख़्म-ए-शिब्त ताज़ा को 405 ग्राम की मात्रा में शीशे के पात्र में रखें और ऊपर से रोग़न-ए-कुन्जद डाल कर धूप में रखें या तुख़्म और गुल समेत अलफ़-ए-शिब्त को पानी में पकाएँ। मल छान कर साफ़ कर लें। उस में एक चौथाई पानी में रोग़न-ए-कुन्जद सम्मिलित कर के दोबारा इतना पकाएँ कि पी जल जाए और रोग़न शेष रह जाए।

- **रोग़न-ए-सुद्दाब का नुस्ख़ा:**

यह गुर्दा, मूत्राशय, गर्भाशय की ठंडक, तांत्रिकाओं की शिथिलता और कमर दर्द

में लाभदायक है। दर्दों में आराम देता है। उदर शूल में आराम देता है। गैस और पेट की फूलन को समाप्त करता है। साथ ही यह गुर्दा एवं मूत्राशय की पथरी को तोड़ता है। मूत्रविरेचक और आर्तवजनक है।

औषधियाँः बर्ग-ए-सुद्दाब ताज़ा और रोग़न-ए-कुन्जद।

निर्माण-विधिः ताज़ा बर्ग-ए-सुद्दाब को कूट छान कर निचोड़ लें और उस का रस प्राप्त कर के साफ़ कर लें। फिर उस रस को 122 मिलीलीटर की मात्रा में लें और रोग़न-ए-कुन्जद डाल कर विधि अनुसार इतना पकाएँ कि पानी जल जाए और और रोग़न शेष रह जाए।

प्रयोग-विधिः कमर और यौनि पर मालिश करें।

- **रोग़न-ए-सुद्दाब का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः बर्ग-ए-सुद्दाब और रोग़न-ए-कुन्जद।

निर्माण-विधिः बर्ग-ए-सुद्दाब को शीशे के पात्र में रखें और ऊपर से रोग़न-ए-कुन्जद डाल कर धूप में रखें या फिर 140 ग्राम सूखे सुद्दाब को 810 मिलीलीटर पानी में इतना पकाएँ कि आधा शेष रह जाए। उस को सुखा कर मल छान कर साफ़ कर लें और 35 मिलीलीटर रोग़न-ए-कुन्जद सम्मिलित कर के विधि अनुसार इतना पकाएँ कि पानी जल जाए और और रोग़न शेष रह जाए।

- **रोग़न-ए-सुद्दाब का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गरमी में पुराने रोग़न-ए-ज़ैतून की भाँति है और रोग़न-ए-बेद अन्जीर की तुलना में यह अधिक गरम और तरल है। कान में टपकाने से उस की गैस और दर्द में आराम मिलता है। गुर्दा एवं कमर के आस पास मालिश करने से यह मूत्रविरेचक है और गुर्दा एवं मूत्राशय की पथरी को तोड़ता है।

औषधियाँः आब-ए-बर्ग-ए-सुद्दाब,रोग़न-ए-कुन्जद।

निर्माण-विधिः आब-ए-बर्ग-ए-सुद्दाब 3, रोग़न-ए-कुन्जद 1 भाग मिला कर इतना पकाएँ कि पानी जल जाए।

- **रोग़न-ए-हिना का नुस्ख़ाः**

यह ठंडे आमाशय में गरमी पैदा करता है। बालों पर मालिश करने से यह बालों को काला करता है। यह ग्रधरसी (Sciatica) और जोड़ो के दर्द लाभदायक है।

औषधियाँः बर्ग-ए-हिना 122 ग्राम, पानी 1620 मिलीलीटर और रोग़न-ए-कुन्जद 420 मिलीलीटर।

निर्माण-विधिः बर्ग-ए-हिना 122 ग्राम को 1620 मिलीलीटर पानी में पकाएँ और

साफ़ कर लें फिर 420 मिलीलीटर रोग़न-ए-कुन्जद सम्मिलित कर के दोबारा इतना पकाएँ कि पानी जल जाए और और रोग़न शेष रह जाए। उसे साफ़ कर के शीशे के पात्र में सुरक्षित कर लें।

- **रोग़न-ए-मूरद का नुस्ख़ा:**

यह दिमाग़ी गरमी में लाभदायक है। बालों को झड़ने से रोकता है। झड़े हुए बालों को दोबारा उगाता है। यह खलित्य में भी लाभदायक है।

औषधियाँ: बर्ग-ए-मूरद ताज़ा और रोग़न-ए-कुन्जद या रोग़न-ए-ज़ैतून।

निर्माण-विधि: बर्ग-ए-मूरद ताज़ा को कूट छान कर उस का साफ़ रस प्राप्त कर लें और फिर उस में उसी के बराबर रोग़न-ए-कुन्जद या रोग़न-ए-ज़ैतून सम्मिलित कर के विधि अुनसार इतना पकाएँ कि शुद्ध रोग़न प्राप्त हो जाए।

प्रयोग-विधि: सर और दाढ़ी के बालों पर मलें।

- **रोग़न-ए-आमला का नुस्ख़ा:**

यह उपर्युक्त रोग़न की तुलना में अधिक प्रभावशाली है।

औषधियाँ: आब-ए-आमला, रोग़न-ए-ज़ैतून।

निर्माण-विधि: आब-ए-आमला तीन और रोग़न-ए-ज़ैतून एक भाग लेकर दोनों को मिलाएँ और इतना पकाएँ कि पानी जल जाए और रोग़न शेष रह जाए या 1680 ग्राम मूरद ख़ुश्क को 4200 मिलीलीटर पानी में भिगोएँ और फिर साफ़ कर के 420 मिलीलीटर रोग़न-ए-ज़ैतून के साथ मिला कर पकाएँ और अंत में थोड़ी मात्रा में लाज़न सम्मिलित कर के इतना पकाएँ कि वो तरल हो जाए। आग से उतार कर ठंडा कर लें।

प्रयोग-विधि: बालों पर लगाएँ।

- **रोग़न का अन्य नुस्ख़ा:**

यह उसी प्रकार बालों को लंबा करता और नए बालों को उगाता है। यह बालों को काला भी करता है।

औषधियाँ: पोस्त-ए-हलीला काबुली, माज़ू सोख़्ता बर्ग-ए-मूरद एक एक भाग।

निर्माण-विधि: कूट कर एक रात दिन शराब-ए-रैहानी में भिगोएँ और फिर पानी से साफ़ कर के पकाएँ और एक भाग रोग़न-ए-कुन्जद के साथ मिला कर इतना पकाएँ कि पानी जल जाए और शुद्ध रोग़न शेष बचे। अगर रेग़न-ए-कुन्जद के स्थान पर रोग़न-ए-लालह या रोग़न-ए-आमला या रोग़न-ए-मूरद या रोग़न-ए-हिना का प्रयोग करें तो ज़्यादा उचित होता है। अंत में एक भाग लाज़न सम्मिलित कर के रोग़न तैयार करें।

प्रयोग-विधिः हर रात बालों पर मलें। सुबह नहाते समय आब-ए-आमला से धो दें।

- **रोग़न-ए-साज़जः**

यह बालों को लंबा, काला करता और झड़ने से रोकता है।

औषधियाँः साज़ज हिन्दी, हमामा, हुज़ुज़ मक्की, लाज़न, मस्तगी, आमला और पर्सियाउशान प्रत्येक 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर 1260 मिलीलीटर पानी में इतना पकाएँ कि 420 मिलीलीटर शेष बचे। उसे साफ़ कर के 420 मिलीलीटर रेगन-ए-कुन्जद के साथ पकाएँ और साफ़ करें। अंत में लाज़न सम्मिलित कर के इतना पकाएँ कि वो तरल हो जाए।

- **रोग़न का अन्य नुस्ख़ाः**

सर और दाढ़ी जिस के बाल झड़ गए हों, उन पर दो हफ़्ते तक मालिश करने से बाल आ जाते हैं और काले हो जाते हैं।

औषधियाँः खरपज़ह एक की संख्या में।

निर्माण-विधिः एक खर्पज़ह लें और उस के ऊपरी भाग में छेद कर के उस के बीज बाहर निकाल दें फिर तेल में भूना हुआ माज़ू, कूटा हुआ बर्ग-ए-मूरद और पिसा हुआ बुरादा-ए-आहन प्रत्येक 35 ग्राम लेकर और कूट छान कर उस खर्पज़ह के बीच में भर कर उस का छेद बन्द कर दें और गिल-ए-हिकमत कर के रात भर गरत तन्नूर में रख छोड़ें और अगले दिन निकाल कर उस से मिट्टी अलग कर दें। तत्पश्चात 840 मिलीलीटर रोग़न-ए-ज़ैतून में मल छान कर पकाएँ और साफ़ कर के सुरक्षित कर लें।

प्रयोग विधिः रात में बालों पर मालिश करें।

- **रोग़न-ए-नार्जील का नुस्ख़ाः**

यह बालों को काला करता है और एक लंबे समय तक उनके कालेपन को बनाए रखता है।

औषधियाँः मग़्ज़-ए-नार्जील, आमला 35 ग्राम, नौशादर 1.75 ग्राम, बुरादा-ए-आहन 70 ग्राम, बूरह अरमनी 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः एक अच्छा सा नार्जील लेकर मग़्ज़ निकाल लें। उस को 35 ग्राम आमला, 70 ग्राम बुरादा-ए-आहन, 1.75 ग्राम बूरह अरमनी, 1.75 ग्राम नौशादर के साथ मिला कर अच्छी तरह पीस लें और उपर्युक्त ख़ाली नार्जील को भर कर उस कामुँह ख़मीर से बन्द कर दें। फिर पूरे नार्जील को गिल-ए-हिकमत कर के रात भर गरम तन्दूर में रखें और सुबह निकाल कर उस का मुँह खोल दें। उस से प्राप्त रोग़न को बालों में लगाएँ।

- **रोग़न-ए-मूरद का नुस्ख़ाः**

यह बालों को लंबा करता है। अगर झड़ रहे हों तो जल्दी ही निकाल देता है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-मूरद, बर्ग-ए-मूरद, तुख़्म-ए-करफ़्स, तुख़्म-ए-चुक़न्दर, गुल-ए-शक़ाइक़, पोस्त-ए-जौज़ तर, लाज़न और पर्सियाउशान प्रत्येक 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को अधकुटा कर के 405 मिलीलीटर आब-ए-आमला के साथ रात भर भिगोएँ फिर पकाएँ और 210 मिलीलीटर रोग़न-ए-मूरद के साथ दोबारा इतना पकाएँ कि पानी जल जाए और रोग़न शेष रह जाए।

प्रयोग-विधिः इच्छानुसार बालों पर लगाएँ और चर्ब करें।

- **रोग़न-ए- शक़ाइक़ का नुस्ख़ाः**

यह बालों काला करता, Resolvent और Concoctive है। आमाशय पर लगाने से ठंडे आमाशय में गरमी पैदा करता है।

औषधियाँः बर्ग-ए-शक़ाइक़ और रोग़न-ए-मूरद।

निर्माण-विधिः इच्छानुसार शक़ाइक़ के पत्तों को शीशे के पात्र में रखें और ऊपर से रोग़न-ए-मूरद डाल कर धूप में रखें।

- **रोग़न-ए-शक़ाइक़ का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः गुल-ए-शक़ाइक 35 ग्राम, रोग़न-ए-मूरद या रोग़न-ए-हिना 210 ग्राम।

निर्माण-विधिः 35 ग्राम शक़ाइक़ के फूलों को सुखा कर कूट लें और उस के ऊपर रोग़न-ए-मूरद या रोग़न-ए-हिना 210 ग्राम की मात्रा में डाल कर धूप में रखें।

- **रोग़न-ए-शक़ाइक़ का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः गुल-ए-शक़ाइक 35 ग्राम, पोस्त-ए-गर्दगान ताज़ा 35 ग्राम, रूसख़्तज 14 ग्राम और रोग़न-ए-मूरद।

निर्माण-विधिः 35 ग्राम शक़ाइक़ के फूल और 35 ग्राम पोस्त-ए-गर्दगान ताज़ा को अच्छी तरह से मलें और 14 ग्राम की मात्रा में रूसख़्तज को हल्का कूट कर उस में मिलाएँ फिर सभी औषधियों को शीशे के पात्र में रखें और उस के ऊपर रोग़न-ए-मूरद डाल कर तीन हफ़्ते तक गोबर में दफ़न कर दें। उस के बाद निकाल कर बालों पर लगाएँ तो बाल नर्म और काले हो जाते हैं।

- **रोग़न-ए-आमला का नुस्ख़ाः**

यह नुस्ख़े को इस पुस्तक के लेखक ने तैयार किया है।

यह बालों को काला करता है साथ उन को झड़ने और सफेद होने से रोकता है।

और अगर झड़ रहे हों तो उन को जल्दी ही निकाल देता है। बालों को नर्म करता है।

औषधियाँः आब-ए-आमला, आब-ए-बर्ग-ए-हिना और आब-ए-बर्ग-ए-वस्मह प्रत्येक 420 ग्राम, आब-ए-भंगरह और आब-ए-पोस्त-ए-गर्दगान प्रत्येक 210 ग्राम, रोग़न-ए-लाला और रोग़न-ए-मूरद प्रत्येक 210 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को लोहे की देग में हल्की आँच पर इतना पकाएँ कि पानी जल जाए और रोग़न शेष रह जाए। उस प्रयाप्त रोग़न में उपर्युक्त रसों को डाल कर दोबारा पहले की तरह ही पकाएँ और प्रयाप्त रोग़न को सुरक्षित कर लें। अंत में बुरादा-ए-आहन 17.5 ग्राम, पोस्त-ए-बीख़-ए-अनार, पोस्त-ए-गर्दगान ताज़ा, जौज़ुस्सर्व, नौशादर, गुल-ए-शक़ाइक़, वस्मह, बर्ग-ए-हिना और लालह प्रत्येक 35 ग्राम, नमक-ए-इंद्रानी 10.5 ग्राम को हल्का कूट छान कर रोग़न में मिलाएँ और लोहे के पात्र में रख कर चालीस दिनों के लिए धूप में रख छोड़ें और फिर साफ़ कर के सुरक्षित कर लें।

प्रयोग-विधिः रात में बालों व दाढ़ी पर लगा कर सो जाएँ।

- **रोग़न-ए-ज़ंबक़ का नुस्ख़ाः**

बिच्छू के काटने के स्थान पर लगाने से यह विचित्र रूप से लाभ पहुँचाता है और दर्द में आराम देता है।

औषधियाँः रोग़न-ए-ज़ंबक ख़ालिस 35 ग्राम, जुन्द बेद स्तर, फ़र्फ़ियून प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर रोग़न-ए-ज़ंबक़ में डाल अच्छी तरह मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः बिच्छू के काटने के स्थान पर लगाएँ।

- **रोग़न-ए-नौशादर का नुस्ख़ाः**

इस को नाक में टपकाने से नींद समाप्त हो जाती है।

औषधियाँः नौशादर, नमक-ए-निफ़्ती, तुख़्म-ए-तुर्ब, तुख़्म-ए-अस्पन्दान, तुख़्म-ए-खरपज़ह, फ़िलफ़िल स्याह, ज़न्जबील और काकनज सभी एक एक भाग।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को समभाग में लें और कूटने छानने के बाद पानी में पका कर साफ़ कर लें। फिर उसी के समभाग रोग़न-ए-बेद अन्जीर मिला कर दोबारा इतना पकाएँ कि पानी जल जाए और शुद्ध रोग़न शेष रह जाए। उस को साफ़ कर के सुरक्षित कर लें। कभी भी उस को नाक में थोड़ी सी मात्रा में टपकाने से नींद समाप्त हो जाती है।

प्रयोग-विधिः नाक में टपकाएँ।

● **रोग़न का अन्य नुस्ख़ा:**

इस रोग़न को सर पर मालिश करने और नाक में थोड़ा सा टपकाने से नींद आती है।

औषधियाँ: जौज़-ए-मासिल, ख़रबक़ स्याह 1-1 भाग, पोस्त-ए-ख़शख़ाश, बज़रुलबन्ज, तुख़्म-ए-काहू प्रत्येक 2 भाग।

निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर पानी में पका लें। फिर उस को साफ़ कर के रोग़न-ए-कदू के साथ दोबारा इतना पकाएँ कि मात्र रोग़न शेष रह जाए।

प्रयोग-समय: सोते समय।

प्रयोग-विधि: खोपड़ी, नाक और तलुओं पर लगाएँ।

● **रोग़न का अन्य नुस्ख़ा:**

इस को सर और तलुओं पर लगाने से नींद आती है।

औषधियाँ: तुख़्म-ए- ख़शख़ाश मुदब्बर 840 ग्राम, तुख़्म-ए-काहू 210 ग्राम।

निर्माण-विधि: सभी औषधियों को अच्छी तरह मिलाएँ और फिर कुन्जद की भाँति रोग़न निकालें।

प्रयोग-समय: सोते समय।

प्रयोग-विधि: सर और तलुओं पर लगाएँ।

● **रोग़न का अन्य नुस्ख़ा:**

यह स्वित्र के रंग को त्वचा के रंग के समान करता है। इस के निरंतर प्रयोग से स्वित्र दूर हो जाता है यह मुजर्रब है।

औषधियाँ: आब-ए-बादिन्जान स्याह 1260 मिलीलीटर, रोग़न-ए-कुन्जद 420 मिलीलीटर, इतरीलाल, भंगरह, शीतरज हिन्दी, बीख़-ए-बादियान, फ़ूह, गुल-ए-शक़ाइक़, तुख़्म-ए-तुर्ब, आक़रक़रहा, खर्दल, बलादुर मुहर्रक़, खर्बक़ स्याह प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधि: आब-ए-बादिन्जान स्याह, रोग़न-ए-कुन्जद को एक साथ इतना पकाएँ कि पानी जल जाए और शुद्ध रोग़न शेष रह जाए फिर इतरीलाल, भंगरह, शीतरज हिन्दी, बीख़-ए-बादियान, फ़ूह, गुल-ए-शक़ाइक़, तुख़्म-ए-तुर्ब, आक़रक़रहा, खर्दल, बलादुर मुहर्रक़, खर्बक़ स्याह प्रत्येक 7 ग्राम को अधकुटा कर के उपर्युक्त रोग़न में सम्मिलित करें। दो महीने तक धूप में रखने के बाद प्रभावित भाग पर लगाएँ।

● **रोग़न-ए-अश्ख़ार का नुस्ख़ा:**

इस को नौरह के स्थान पर बदन पर लगाते हैं। यह नौरह का काम करता है

और बालों को उखाड़ता है।

औषधियाँ: अशखार और ज़र्नीख़ एक एक भाग।

निर्माण-विधि: अशखार और ज़र्नीख़ एक एक भाग कूट छान कर शीशे के पात्र में रखें और उस में इतना पानी भरें कि वह दवा से चार उँगली ऊपर रहे। उस को बीस दिनों तक धूप में रखें और उस के बाद साफ़ कर के रोग़न-ए-कुन्जद के साथ पकाएँ। जब इच्छा हो तो चूने के स्थान पर इस रोग़न को बदन पर मलें।

प्रयोग-विधि: बदन पर मालिश करें।

- **रोग़न-ए-अश्ख़ार का अन्य नुस्ख़ा:**

औषधियाँ: आहक (चूना जिसे पानी में ना बुझाया गया हो), अशखार और ज़र्नीख़ सभी एक एक भाग।

निर्माण-विधि: सभी औषधियों को मिला कर धूप में रखें और तीन दिन के बाद उस का साफ़ पानी प्राप्त करें और उस के एक तिहाई रोग़न-ए-कुन्जद सम्मिलित कर के पकाएँ और उस से प्राप्त होने वाले साफ़ रोग़न को सुरक्षित कर लें। आवश्यकता के समय चूने के स्थानपर इस रोग़न को बदन पर लगाएँ।

प्रयोग-विधि: बदन पर लगाएँ और कुछ समय बाद धो दें।

- **रोग़न-ए-ज़र्नीख़ का नुस्ख़ा:**

कच्छू और दद्रु के स्थान पर लगाने से यह उन में बहुत लाभदायक है।

औषधियाँ: ज़र्नीख़ ज़र्द 1 और रोग़न-ए-कुन्जद 4 भाग।

निर्माण-विधि: रोग़न को देग-ए-सिफ़ाल में रख कर इतना पकाएँ कि लाल हो जाए। ज़र्नीख़ को कूट कर थोड़ा थोड़ा कर के उस में डालते रहें और लकड़ी की करछुल से चलाते और पकाते रहें यहाँ तक कि उस का रंग मोर के रंग की भाँति हो जाए। अब देग के मुँह को ढक्कन से बन्द कर दें यहाँ तक कि आग बुझ जाए। चार पाँच बार यही प्रक्रिया करें और उस का मुँह बन्द कर दिया करें। फिर देग को आग से उतार कर ठंडा कर लें और रोग़न को साफ़ कर के शीशे के पात्र में सुरक्षित कर लें।

प्रयोग-विधि: जब चाहें कच्छू और दद्रु के स्थान पर मलें। कुछ समय बाद अंग को धूप में रखें फिर गरम पानी से धो दें।

- **रोग़न-ए-गोगर्द का नुस्ख़ा:**

यह कच्छू, दद्रु और खुजली में बहुत लाभदायक है।

औषधियाँ: गोगर्द ज़र्द एक भाग, रोग़न-ए-दुंबा चार भाग।

निर्माण-विधि: एक भाग गोगर्द ज़द को कूट छान कर चार भाग रोग़न-ए-दुंबा में

मिलाएँ और सूती कपड़े के एक टुकड़े को उस रोग़न में लथेड़ कर फतीला बनाएँ। उस फतीले को जलाएँ और उस के ऊपर के भाग का ध्यान रखें। उस जलते हुए फतीले से टपकने वाले रोग़न को किसी पात्र में सुरक्षित कर लें।

प्रयोग-विधिः कच्छू, दद्रु के स्थान पर लगाएँ।

- **रोग़न-ए-तुख़्म-ए-मुर्ग़ का नुस्ख़ाः**

यह हाथ पाँव के सूखेपन और फटने में लाभदायक है।

औषधियाँः जर्दी-ए-बैज़ा-ए-मुर्ग़ 16 की संख्या में और नौशादर का सुफूफ़।

निर्माण-विधिः 16 पकी हुई जर्दी-ए-बैज़ा-ए-मुर्ग़ को हाथें से मलें और उस के साथ थोड़ी मात्रा में नौशादर का सफ़ूफ़ मिला कर शीशे के पात्र में रखें और गिल-ए-हिकमत कर के उस का मुँह बन्द कर दें। फिर रोग़न-ए-इज़्ख़िर प्राप्त करने की जो विधि बताई गई है उसी विधि के अनुसार इस का भी रोग़न प्राप्त करें।

- **रोग़न-ए-तुख़्म-ए-मुर्ग़ का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँ और निर्माण-विधिः इच्छानुसार जर्दी-ए-बैज़ा-ए-मुर्ग़ लेकर पतीले में रखें और आग पर रख दें और इतनी आग पहुँचाएँ कि तुख़्म-ए-मुर्ग़ जल जाए और उस का रोग़न बाहर आ जाए। उस को सुरक्षित कर लें और प्रयोग करें।

- **रोग़न-ए-सुलहफ़ात का नुस्ख़ाः**

यह हाथ पाँव के फटने में लाभदायक है।

औषधियाँः कछुए का गोश्त 420 ग्राम और ग्राम रोग़न-ए-कुन्जद 420 ग्राम।

निर्माण-विधिः 420 ग्राम कछुए का गोश्त लेकर 420 ग्राम रोग़न-ए-कुन्जद के साथ अच्छी तरह पकाएँ फिर प्राप्त रोग़न को साफ कर के सुरक्षित कर लें। जब इच्छा हो हाथ व पाँव पर मलें।

- **रोग़न-ए-चिलपासा का नुस्ख़ाः**

चिलपासा को मारंग भी कहते हैं। कण्ठमाला को गलाने में बहुत ही मुजर्रब है। और अगर सर एवं खलित्य के स्थान पर लगाया जाए तो बाल निकल आते हैं।

औषधियाँः साम-ए-अबरस अर्थात छिपकली एक, रोग़न-ए-कुन्जद 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः एक छिपकली को 35 ग्रमम रोग़न-ए-कुन्जद में हल्की आँच पर इतना पकाएँ कि वह मुर्दा जैसी हो जाएँ उस को 10.5 ग्राम गाय की खुर की राख के साथ मिलाएँ और खलित्य (Alopecia) में प्रयोग करने के लिए लादन सम्मिलित कर के शीशे के पात्र में सुरक्षित कर लें। जब इच्छा हो प्रयोग में लाएँ।

- **रोग़न-ए-हैयात का नुस्ख़ाः**

यह तांत्रिकाओं की शिथिलता, जोड़ों के दर्द, खलित्य, कुष्ठ रोग और अंगों के दर्द में लगाने से लाभ पहुँचाता है और खाने से Toxicity पैदा करता है।

औषधियाँः रोग़न-ए-कुन्जद 1680 मिलीलीटर, मार स्याह (अफ़आ-काला साँप) 6 से 10 की संख्या में।

निर्माण-विधिः 1680 मिलीलीटर रोग़न-ए-कुन्जद को तांबे की देग में रखें फिर 6 से 10 काले साँप को उस में डाल कर उस का सर बन्द कर दें ताकि उस की भाप बाहर ना निकले। उस को हल्की आँच पर पकाते रहें कि साँप अच्छी तरह पक जाए। फिर देग को आग से उतार कर ठंडा कर लें। देग का मुँह खोलें और ध्यान रखें कि उस की भाप दिमाग़ तक ना पहुँच जाए। उस के बाद उस को साफ़ कर के शीशे के पात्र में सुरक्षित कर लें और आवश्यकता के समय बदन पर मालिश करें।

- **रोग़न-ए-अक़रब का नुस्ख़ाः**

यह गुर्दा एवं मूत्राशय की पथरी को कण कण कर देता और बाहर निकालता है। इस संदर्भ में यह बहुत ही लाभदायक और मुजर्रब है।

औषधियाँः रेवन्द चीनी, सअद कूफ़ी, जुन्तियाना और पोस्त-ए-बीख़-ए-कबर प्रत्येक 35 ग्राम, रोग़न-ए-बादाम तल्ख़ और ज़िन्दा बिच्छू 10 की संख्या में।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर शीशे के पात्र में रखें और ऊपर से रोग़न-ए-बादाम तल्ख़ डाल कर एक हफ़्ता धूप में रखें फिर साफ़ कर के 10 ज़िन्दा बिच्छू उस रोग़न में डालें और फिर से दो हफ़्ता तक रोग़न के साथ उस पात्र को धूप में रखें।

प्रयोग-विधिः मूत्रमार्ग में टपकाएँ और शरमगाह और कमर पर चुपड़ दें।

- **रोग़न का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गुर्दा एवं मूत्राशय की पथरी को तोड़ता है। कमर दर्द में लाभदायक है। कान में टपकाने से दर्द में आराम मिलता है। अगर बवासीर जो कि ज़ाहिर हो चुका हो, उस पर मालिश किया जाए तो वह सूख जाता है और झड़ जाता है।

औषधियाँः ज़िन्दा एवं तन्दुरूस्त बिच्छू 2 की संख्या में।

निर्माण-विधिः ज़िन्दा एवं तन्दुरूस्त 2 बिच्छू को शीशे के पात्र में रखें और ऊपर से रोग़न-ए-ज़ैतून डाल कर उस का मुँह बन्द कर दें और 40 दिन धूप में रखने के बाद प्रयोग में लाएँ।

- **रोग़न-ए-ख़ुफ़्फ़ाश का नुस्ख़ाः**

यह गृध्रसी, जोड़ों के दर्द, पक्षघात, कंपन्न और घुटने के दर्द में मालिश करने

से बहुत लाभ पहुँचाता है। अगर मूत्रमार्ग में एक बूँद टपकाया जाए तो पेशाब लाता है और Anuria में लाभदायक है।

औषधियाँ: एक बड़ा और तन्दुरूस्त खुफ़्फ़ाश, रोग़न-ए-ज़ंबक़ या रोग़न-ए-खैरी।

निर्माण-विधि: एक बड़ा और तन्दुरुस्त चमगादड़ लेकर रोग़न-ए-ज़ंबक़ या रोग़न-ए-खैरी में अच्छी तरह पकाएँ फिर उसे साफ़ कर के शीशे के पात्र में सुरक्षित कर लें और प्रयोग में लाएँ।

- **रोग़न का अन्य नुस्ख़ा:**

यह Kyphosis और Lordosis, ठंड से होने वाले दर्द, पदार्थों की अधिकता से होने वाले अंगविन्यास या ऐंठन और पक्षघात में लाभदायक है।

औषधियाँ: फ़िलफ़िल, जुन्द बेद स्तर, आक़रक़रहा, शहम-ए-हन्ज़ल और क़िन्नह प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधि: सभी औषधियों को अधकुटा कर के 420 मिलीलीटर रोग़न-ए-सुद्दाब के साथ मिलाएँ और शीशे के पात्र में रख कर दस दिनों तक धूप में रखें और हर दिन उस को हिलाते रहें। दस दिनों के बाद उसे साफ़ कर के दोबारा उतनी ही ताज़ा औषधियों को कूट छान कर उस प्राप्त रोग़न में सम्मिलित करें और फिर से दस दिनों के लिए धूप में रख दें और साफ़ कर के फिर से तीसरी बार वही प्रक्रिया अपनाएँ और उतनी ही ताज़ा औषधियों को मिला कर 10 दिनों के लिए धूप में रख दें फिर उसे साफ़ कर के प्रयोग में लाएँ।

- **रोग़न-ए-उन्सुल का नुस्ख़ा:**

यह पक्षघात, लक़वा, अंगविन्यास में लाभदायक है।

औषधियाँ: प्याज़-ए-उन्सुल 140 ग्राम, रोग़न-ए-ज़ैतून 35 ग्राम।

निर्माण-विधि: 140 ग्राम प्याज़ को हल्का कूटें और निचोड़ कर उस कर उस का रस प्राप्त कर लें। उस रस को 35 ग्राम रोग़न-ए-ज़ैतून में पकाएँ और आक़रक़रहा, जुन्द बेद स्तर, खर्दल और क़ुस्त प्रत्येक 9 ग्राम कूट कर उस रोग़न में डाल कर दोबारा पकाएँ और साफ़ कर लें। अंत में मुश्क और फर्फ़ियून प्रत्येक 1.75 ग्राम को हल्का पीस कर उस में सम्मिलित करें और प्रयोग करें।

- **रोग़न-ए-गन्दना का नुस्ख़ा:**

इस को खाने और स्थानीय तौर पर लगाने से बवासीर में आराम मिलता है।

औषधियाँ: आब-ए-गन्दना, रोग़न-ए-कुन्जद 810 मिलीलीटर, मुक़िल 67.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: मुक़िल को उपर्युक्त आब-ए-गन्दना में मिला कर सभी को एक

साथ इतना पकाएँ कि मात्र रोग़न शेष रह जाए।

- **रोग़न-ए-शफ़्तालू का नुस्ख़ाः**

स्थानीय तौर पर लगाने से बवासीर में लाभ पहुँचाता है साथ ही उस के दर्द में आराम देता है।

औषधियाँः रोग़न-ए-उस्तुख़्वान-ए-ज़र्द आलू और शफ़्तालू प्रत्येक 17.5 ग्राम, मुक़िल 7 ग्राम, मीअह सायला 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को विधि अनुसार मिला कर पकाएँ और साफ़ कर के प्रयोग करें।

प्रयोग-विधिः गुदा पर मालिश करें।

- **रोग़न-ए-बाबूना का नुस्ख़ाः**

पैर के तलवे पर मालिश करने से यह वीर्यधारक है। शीघ्रपतन को रोकता है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-तातूरह स्याह।

निर्माण-विधिः तुख़्म-ए-तातूरह स्याह को अधकुटा कर के लंबी गर्दन वाले शीशे के पात्र में रखें और गिल-ए-हिकमत कर के उस का मुँह मज़बूती से बन्द कर दें और देग-ए-सिफ़ाली के निचले भाग में शीशे के पात्र के सामे एक छेद कर दें और उस छेद तक शीशे की गरदन को मिला दें फिर शीशे के ऊपर आग जलाएँ जो कि अगर गाय के ओपलों की हो तो ज़्यादा बेहतर है। शीशे के पात्र के मुँह के सामने एक बरतन रख दें ताकि जो भी रोग़न गिरे वह उसी बरतन में जमा होता रहे। अब उस को सुरक्षित कर लें और आवश्यकता के समय प्रयोग करें।

- **रोग़न-ए-नर्गिस का नुस्ख़ाः**

यह लिंग में सख़्ती पैदा करता है। उस में जोश एवं तनाव भी उत्पन्न करता है।

औषधियाँः प्याज़-ए-नर्गिस 5 की संख्या में, रोग़न-ए-यासमीन 175 ग्राम।

निर्माण-विधिः 5 प्याज़-ए-नर्गिस को कूट कर 175 ग्राम रोग़न-ए-यासमीन में पकाएँ और मल छान कर साफ़ कर लें फिर जदवार ख़ताई और मुश्क प्रत्येक 3.5 ग्राम को हल्का पीस कर उस में सम्मिलित करें।

प्रयोग-विधिः आवश्यकता के समय लिंग, अण्डकोष, कमर, दोनों रानों के बीच और पैर के तलवों पर लगाएँ।

- **रोग़न का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से भी वही लाभ प्राप्त होते हैं। यह कामोत्तेजना में बढ़ोत्तरी करता है।

औषधियाँः आक़रक़रहा 7 ग्राम, दार चीनी 3.5 ग्राम, फ़र्फ़्यून 1.75 ग्राम, मुश्क तिब्बती 64 मिलीग्राम, रोग़न-ए-जंबक़ या रोग़न-ए-यासमीन 175 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर 175 ग्राम रोग़न-ए-जंबक़ या रोग़न-ए-यासमीन में सम्मिलित करें और शीशे के पात्र में रखकर 21 दिन धूप में रखें।

प्रयोग-विधिः लिंग, अण्डकोष, कमर, दोनों रानों के बीच पैर के तलवों पर लगाएँ।

- **रोग़न का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से भी वही लाभ प्राप्त होते हैं।

औषधियाँः फ़र्फ़ियून, फ़िलफ़िल, बूरह सुर्ख़ और खरदल प्रत्येक 3.5 ग्राम, मुश्क तिब्बती 32 मिलीग्राम, रोग़न-ए-जंबक़ या रोग़न-ए-यासमीन।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर रोग़न-ए-जंबक़ या रोग़न-ए-यासमीन में सम्मिलित करें और शीशे के पात्र में रखकर 21 दिन धूप में रखें।

प्रयोग-विधिः लिंग, अण्डकोष, रानों, तलवों पर लगाएँ।

- **रोग़न-ए-ख़रातीन का नुस्ख़ाः**

यह लिंग को बड़ा व सख़्त करता है। उस में जोश एवं तनाव भी उत्पन्न करता है।

औषधियाँः किरम-ए-खरातीन 10 की संख्या में, रोग़न-ए-कुन्जद और रोग़न-ए-नर्गिस 175 ग्राम।

निर्माण-विधिः 10 केंचुओं को लेकर 175 ग्राम रोग़न-ए-कुन्जद, रोग़न-ए-नर्गिस में पका कर साफ़ कर लें। आक़रक़रहा 3.5 ग्राम, मग़ज़-ए-बिही दाना 10.5 ग्राम, फ़र्फ़ियून 1.75 ग्राम, मुश्क 1 ग्राम को कूट छान कर उपर्यक्त प्राप्त रोग़न में मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः लिंग पर मालिश करें फिर यौन संबंध बनाएँ।

- **रोग़न-ए-ख़सक का नुस्ख़ाः**

यह कामोत्तेजक, मूत्रविरेचक, मूत्र मार्गों को साफ़ करने वाला और गुर्दा एवं मूत्राशय की पथरी को तोड़ने वाला है।

औषधियाँः आब-ए-ख़सक तर, रोग़न-ए-कुन्जद, गाय का दूध प्रत्येक 2100 ग्राम, ज़न्जबील 420 ग्राम, फ़ानीज़ 1050 ग्राम।

निर्माण-विधिः ज़नजबील को अधकुटा कर के फानीज़, आब-ए-ख़सक, गाय के दूध, रोग़न-ए-कुन्जद में इतना पकाएँ कि शुद्ध रोग़न रह जाए। साफ़ कर के सुरक्षित कर लें।

प्रयोग-विधिः खाएँ, स्थानीय तौर पर मालिश करें और मूत्र मार्गों में टपकाएँ।

- **रोग़न-ए-ख़सक का अन्य नुस्ख़ाः**

यह मूत्रकृच्छ में लाभदायक है। गुर्दा एवं मूत्राशय की पथरी को तोड़ता है।

औषधियाँः ख़सक तर 35 ग्राम, ज़न्जबील 14 ग्राम, रोग़न-ए-कुन्जद 70 ग्राम।

निर्माण-विधिः ख़सक तर 35 ग्राम, ज़नजबील 14 ग्राम को अधकुटा कर के एक रात पानी में भिगोने के बाद हल्की आँच पर पकाएँ। हाथों से मल छान कर निचोड़ लें फिर उसे साफ़ कर के 70 ग्राम रोग़न-ए-कुन्जद के साथ दोबारा इतना पकाएँ कि पानी जल जाए और शुद्ध रोग़न शेष रह जाए। उस को साफ़ कर के शीशे के पात्र में सुरक्षित कर लें।

प्रयोग-विधि एवं अनुपानः जब भी आवश्यकता हो तो किसी उचित शर्बत के साथ पिएँ और थोड़ी मात्रा में गुर्दा एवं मूत्राशय के आस पास मालिश करें और साथ कुछ बूँद मूत्रमार्ग में टपकाएँ।

- **रोग़न-ए-माज़र्यून का नुस्ख़ाः**

यह उदरशूल को खेलता है। जलोदर के रोगियों के लिए लाभदायक है। साथ ही यह मृदुविरेचक है।

औषधियाँः माज़र्यून 175 ग्राम, शिब्रम 35 ग्राम, सना मक्की 52.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को 420 मिलीलीटर पानी में एक रात दिन भिगो कर इतना पकाएँ कि रोग़न एक चौथाई भाग रह जाए।

प्रयोग-विधिः 3.5 ग्राम से 10.5 ग्राम तक पिएँ।

अनुपानः माउलउसूल या चने का पानी।

- **रोग़न का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गरम सूजनों को घटाता है।

औषधियाँः ख़त्मी सफ़ेद, इनबुस्सअलब, इक्लीलुलमलिक, खुब्बाज़ी, पर्सियाउशाँ और बर्ग-ए-कबर प्रत्येक 45 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को अधकुटा कर के 420 मिलीलीटर पानी में पकाएँ कि पानी जल जाए। साफ़ कर के 175 मिलीलीटर रोग़न-ए-कुन्जद में दोबारा इतना पकाएँ।

सेवन-मात्राः 7 ग्राम है। मुख से सेवन करने पर यह अन्दरूनी सूजनों को समाप्त करता है और स्थानीय तौर पर मालिश करने से बाहरी सूजनों को नर्म करता है।

- **रोग़न-ए-ग़ार का नुस्ख़ाः**

ठंडे रोगों, खलित्य और ठंडक के कारण होने वाले सर दर्द में लाभदायक है। कान में टपकाने से कर्णक्ष्वेण को दूर करता है। यह जिगर के सुद्दों और जिगर के सूजनों में भी लाभदायक है।

औषधियाँः बर्ग-ए-ग़ार, हब्बुलग़ार और रोग़न-ए-कुन्जद।

निर्माण-विधिः बर्ग-ए-ग़ार और हब्बुलग़ार को एक एक भाग लेकर एक भाग

रोग़न-ए-कुन्जद में पकाएँ। शीशे के पात्र में रख कर 20 दिन धूप में रखें।

- **रोग़न का अन्य नुस्ख़ा:**

यह नुस्खा "कामिलुस्सनाअह" पुस्तक से नक़ल किया गया है। यह आमाशय की ठंडक, जिगर की ठंडक, ठंड के कारण होने वाले दिल की धड़कन (Palpitation), पक्षघात, लक़वा और सभी प्रकार के ठंडे रोगों में लाभदायक है। यह शरीर के अंगों की सुस्ती में भी लाभदायक है और शरीर को ख़ुशबूदार बनाता है।

औषधियाँ: रोग़न-ए-ज़ंबक़, रोग़न-ए-नर्गिस, रोग़न-ए-गुल, रोग़न-ए-यासमीन प्रत्येक 420 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को लेकर किसी ऐसे शीशे के पात्र में रख लें जिस को ऊद एवं काफूर की धोनी दी गई हो, फिर जौज़बुआ और बिसबासा प्रत्येक 140 ग्राम, मीअह साइला, फिलिन्जा, आक़रक़रहा, कबाबा, क़रन्फ़ुल, सुंबुलुत्तीब,गुल-ए-सुर्ख़ और सन्दलैन प्रत्येक 17.5 ग्राम, सलीख़ा 10.5 ग्राम, ऊद हिन्दी 70 ग्राम, सुक्क और ग़ालिया प्रत्येक 35 ग्राम लेकर सभी को हल्का कूट पीस लें और उपर्युक्त रोग़न के पात्र में डालें और हिलाएँ ताकि सभी औषधीय भाग एवं रोग़न आपस में अच्छी तरह मिल जाएँ फिर 40 दिन धूप में रखें। कुछ नुस्खों में यह उल्लेख है कि 40 दिन धूप में रखने के बाद मुश्क, अंबर अशहब और काफूर प्रत्येक 7 ग्राम पीस क साफ़ करें और उस में सम्मिलित करें तो यह और अधिक ख़ुशबूदार एवं बेहतर होगा।

- **रोग़न का अन्य नुस्ख़ा:**

यह नुस्खा "लखलखा सुलैमानी" के नाम से प्रसिद्ध है। यह आमाशय, जिगर और दिल की धड़कन में लाभदायक है। पक्षघात, लक़वा और ठंडे रोगों में लाभदायक है। यह दिमाग़ एवं इद्रियों को शक्ति प्रदान करता है। शरीर को ख़ुशबूदार बनाता है साथ ही यह वृद्ध व्यक्तियों की मालिश के लिए बहुत ही अनुकूल है।

औषधियाँ: रोग़न-ए-गुल, रोग़न-ए-ज़ंबक़, रोग़न-ए-यासमीन, रोग़न-ए-नर्गिस प्रत्येक 45 ग्राम, बिसबासा, जौज़बुआ 4.5 ग्राम, सलीख़ा 9 ग्राम, ऊद व मुश्क प्रत्येक 13.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को हल्का कूट छान कर उपर्युक्त रोग़नों में सम्मिलित करें और शीशे के पात्र में रख कर 40 दिनों तक धूप में रखें।

❑❑❑

पन्चम खण्ड

## सप्तम अध्याय

# मोम रोग़न के नुस्ख़े

- **मोम रोग़न का नुस्ख़ा:**

खाने के तौर पर सेवन करने एवं स्थानीय तौर मालिश करने से यह बाहरी और अन्दरूनी सख़्त सूजनों को नर्म करता और गलाता है।

औषधियाँ: हुल्बा, बाबूना, ब्रन्जासिफ़, इज़्ख़िर बुज़ुर्ग, ख़त्मी, हाशा, ज़रावन्द मुदहरज और समग़-ए-अरबी प्रत्येक 35 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को हल्का कूट छान कर 840 मिलीलीटर पानी में पकाएँ और साफ़ कर लें फिर दोबारा 210 मिलीलीटर रोग़न-ए-कुन्जद और 175 मिलीलीटर रोग़न-ए-खरूअ के साथ मिला कर इतना पकाएँ कि पानी जल जाए और और रोग़न शेष रह जाए। अंत में मोम 10.5 ग्राम, बत्त की चर्बी एवं रोग़न-ए-दुंबा प्रत्येक 35 ग्राम सम्मिलित करें और हावन में इतना कूटें कि सब मिल कर एक जैसे हो जाएँ। तत्पश्चात प्रयोग में लाएँ।

- **मोम रोग़न का अन्य नुस्ख़ा:**

यह आमाशय व जिगर की उन सूजनों में लाभदायक है जो कि गरमी से होते हैं।

औषधियाँ: सन्दलैन (सन्दल सुर्ख़ और सन्दल सफ़ेद) और वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़ प्रत्येक 14 ग्राम, इक्लीलुलमलिक 17.5 ग्राम, ज़ाफ़रान 7 ग्राम, काफ़ूर 1.75 ग्राम, मोम सफ़ेद 35 ग्राम, रोग़न-ए-गुल 210 ग्राम।

निर्माण-विधि: सभी औषधियों को थोड़े से पानी में पकाएँ फिर रोग़न-ए-गुल और मोम सम्मिलित कर के दोबारा हल्की आँच पर पकाएँ। अंत में 1 ग्राम काफ़ूर सम्मिलित कर के सभी औषधियों को मिलाएँ और ठंडा कर के प्रयोग में लाएँ।

- **मोम रोग़न का अन्य नुस्ख़ा:**

यह Pleurodynia, intercostal neuralgia, Pleurisy में लाभदायक है।

औषधियाँ: लुआब-ए-बज़रक़तूना, लुआब-ए-ख़त्मी सफ़ेद, रोग़न-ए-बादाम, मोम सफ़ेद, इक्लीलुलमलिक, गुल-ए-बाबूना।

निर्माण-विधिः सब को लेकर विधि अनुसार पकाएँ।
प्रयोग-विधिः सीना एवं पहलू पर चर्ब करें।

- **मोम रोग़न का अन्य नुस्ख़ाः**

खाने के तौर पर सेवन करने और सीने पर मालिश करने से सीने की शुष्कता और स्वररूक्षता में लाभदायक है।

औषधियाँः रोग़न-ए-बनफ़्शा, रोग़न-ए-बादाम, मस्का-ए-मीश, लुआब-ए-ख़त्मी, लुआब-ए-हुल्बा, लुआब-ए-बिहीदाना, आब-ए-किब्रीत, आब-ए-शलजम, पीह-ए-मुर्ग़ ।

निर्माण-विधिः विधि अनुसार पकाएँ और प्रयोग में लाएँ।

- **मोम रोग़न का अन्य नुस्ख़ाः**

सर्दी के मौसम में हाथ एवं पाँव में होने वाले Cracks में मालिश करने से लाभ पहुँचता है।

औषधियाँः आब-ए-बर्ग-ए-किब्रीत, आब-ए-चुक़न्दर, आब-ए-शलग़म प्रत्येक 35 मिलीलीटर, मोम सफ़ेद, पीह-ए-गुर्दा-ए-बुज़, रोग़न-ए-दुंबा और रोग़न-ए-बाबूना प्रत्येक 960 मिलीलीटर।

निर्माण-विधिः विधि अनुसार पकाएँ और प्रयोग में लाएँ।
प्रयोग-विधिः हाथ एवं पाँव पर लगाएँ।

- **मोम रोग़न का अन्य नुस्ख़ाः**

यह हाथ एवं पाँव की शुष्कता को समाप्त करता है।

औषधियाँः लुआब-ए-ख़त्मी, लुआब-ए-हुल्बा, लुआब-ए-तुख़्म-ए-कतान और आब-ए-बर्ग-ए-चुक़न्दर प्रत्येक 408 ग्राम, पीह-ए-गोस्फ़न्द, पीह-ए-मुर्ग़, रोग़न-ए-बादाम और रोग़न-ए-कदू प्रत्येक 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को हल्की आँच पर इतना पकाएँ कि उस कर क़िवाम तैयार हो जाए और अगर उस को ख़ुशबूदार बनाना चाहें तो मुश्क और गुलाब सम्मिलित करें।

- **मोम रोग़न का अन्य नुस्ख़ाः**

अगर इस रोग़न से कई बार बदन पर मालिश की जाए तो यह शरीर को मोटा, साफ़ सुथरा और तरल कर देता है।

औषधियाँः जदवार खताई को अर्क़-ए-गुलाब में पीस लें और सूरन्जान, ऊद सलीब और मोमिया-ए-कानी प्रत्येक 10.5 ग्राम, पीह-ए-बत्त, पीह-ए- शुतुर,रोग़न-ए-बिही दाना और रोग़न-ए-बादाम प्रत्येक 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः विधि अनुसार मोम रोग़न तैयार करें।

- **मोम रोग़न का अन्य नुस्ख़ाः**

यह नाक की सूजन एवं उस की शुष्कता में लाभदायक है।

औषधियाँः ज़ूफ़ा-ए-तर, पीह-ए-मुर्ग़, मग़ज़-ए-साक़-ए-गाव, मोम ज़र्द, शहद।

निर्माण-विधिः सब को अच्छी तरह मिलाएँ और प्रयोग करें।

- **मोम रोग़न का अन्य नुस्ख़ाः**

इसे शरीर पर मलने से वह खुशबूदार एवं तरल होता है।

औषधियाँः रोग़न-ए-गुल, रोग़न-ए-बनफ़्शा, रोग़न-ए-बादाम, रोग़न-ए-ज़न्बक़, रोग़न-ए-नर्गिस, रोग़न-ए-राज़की प्रत्येक 3.5 ग्राम, मोम सफ़ेद, पीह-ए-मुर्ग़, रोग़न-ए-दुंबा, मस्का-ए-मीश और रोग़न-ए-बिही दाना प्रत्येक 17.5 ग्राम, लुआब-ए-ख़त्मी 70 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को एक साथ पकाएँ फिर 1.75 ग्राम मुश्क का सफ़ूफ़ और 3.5 ग्राम अंबर उस में सम्मिलित कर के हावन ख़ूब अच्छी तरह मलें।

- **मोम रोग़न का अन्य नुस्ख़ाः**

यह फिरंगा रोग में लाभदायक है।

औषधियाँः मोम 10.5 ग्राम, रोग़न-ए-गाव 17.5 ग्राम, पीह-ए-गुर्दा-ए-बुज़ 21 ग्राम, सीमाब 18 ग्राम।

निर्माण-विधिः सीमाब को थोड़े से रोग़न के साथ मिला कर अच्छी तरह मलें फिर उसे शेष सभी औषधियों के साथ मिलाएँ और हावन में इतना मलें कि सब एक ही तरह हो जाएँ। अब उस के कई भाग कर लें और प्रतिदिन एक भाग को शरीर पर मलें। अंबर को कक्ष और रानों के अन्दरूनी भाग पर लगाएँ क्योंकि इन दोनों स्थानों पर दवा अच्छी तरह से नहीं पहुँचती है और यह दोनों स्थान ठंडी हवा से सुरक्षित रहते हैं।

- **मोम रोग़न का अन्य नुस्ख़ाः**

इस की मालिश से बवासीर एवं गुदा की फटन में लाभ मिलता है।

औषधियाँः रोग़न-ए-कोहान-ए-उशतर (ऊँट के कोहान से प्राप्त होने वाला रोग़न), रोग़न-ए-उस्तुख़्वान-ए-ज़र्द आलू, मग़ज़-ए-साक़-ए-गाव,पीह-ए-मुर्ग़ और रोग़न-ए-कुर्रास।

निर्माण-विधिः सब को एक एक भाग लेकर आपस में इस प्रकार मिलाएँ क वो एक हो जाएँ फिर उसे प्रयोग में लाएँ।

## ● मोम रोग़न का अन्य नुस्ख़ाः

यह मृदुविरेचक एवं तीक्ष्णविरेचक है। पेट पर मालिश करने से यह बलग़म का विरेचक है।

औषधियाँः ब्रंग काबुली, क़िस्साउलहिमार, सना मक्की, शब्रम प्रत्येक 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर 420 ग्राम पानी में भिगोएँ फिर इतना पकाएँ कि एक चौथाई बचे। उसे मल छान कर साफ़ कर लें और रोग़न-ए-खरूअ, रोग़न-ए-हब्बुलक़ुर्तुम और रोग़न-ए-गुल प्रत्येक 960 मिलीलीटर, बत्त की चर्बी, मुर्ग़ की चर्बी और रोग़न-ए-दुंबा प्रत्येक 480 ग्राम और मोम ज़र्द सम्मिलित कर के दोबारा इतना पकाएँ कि पानी पूर्ण रूप से जल जाए और मोम रोग़न शेष रह जाए। अब उसे साफ़ कर के प्रयोग में लाएँ।

## ● मोम रोग़न का अन्य नुस्ख़ाः

यह पक्षघात एवं कंपन्न में लाभदायक है।

औषधियाँः रोग़न-ए-सोसन, रोग़न-ए-क़ुस्त, रोग़न-ए-फ़र्फ़ियून प्रत्येक 35 ग्राम, मोम ज़र्द 17.5 ग्राम, मीअह सायला 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः मीअह और मोम को उपर्यफक्त रोग़नों में सम्मिलित करें फिर जुन्द बेद स्तर और क़ुस्त प्रत्येक 7 ग्राम को कूट छान कर उस में सम्मिलित कर के हावन में इतना मलें कि सभी अच्छी तरह मिल जाएँ। अब उसे प्रयोग में लाएँ।

## ● मोम रोग़न का अन्य नुस्ख़ाः

इस से भी वही लाभ प्राप्त होते हैं।

औषधियाँः मुक़िल, जुन्द बेद स्तर, मीअह साइला, रोग़न-ए-राज़क़ी, पीह-ए-बत्त।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को एक एक भाग लेकर हावन में इतना मलें कि वो एक हो जाएँ फिर उसे प्रयोग में लाएँ।

## ● मोम रोग़न का अन्य नुस्ख़ाः

यह गरम सूजनों, आमाशय व जिगर के लिए लाभदायक है।

औषधियाँः आब-ए-कद्दू, आब-ए-किशनीज़ सब्ज़, आब-ए-बर्ग-ए-इनबुस्सअलब, रोग़न-ए-कद्दू, रोग़न-ए-बादाम, पीह-ए-गुर्दा-ए-बुज़, मोम सफ़ेद सभी एक एक भाग।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को एक साथ इतना पकाएँ कि उन का पानी जल जाए और रोग़न शेष रह जाए। उसे साफ़ कर के हावन में अच्छी तरह मलें यहाँ तक कि वो एक हो जाएँ फिर उसे प्रयोग में लाएँ।

- **मोम रोग़न का अन्य नुस्ख़ाः**

यह चेहरे, हाथ, पैर के फटने में लाभदायक है।

औषधियाँः कतीरा, ज़ूफ़ा प्रत्येक 3.5 ग्राम, मोम सफ़ेद 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः रोग़न-ए-बादाम को गरम कर लें और लुआब-ए-कतीरा, ज़ूफा तर को मिला कर हावन में मलें।

- **मोम रोग़न का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गरम स्वभाव के व्यक्तियों के शरीर के लिए उचित है। यह त्वचा की शुष्कता और खुरदुरेपन में लाभदायक है।

औषधियाँः रोग़न-ए-बादाम और रोग़न-ए-कदू प्रत्येक 70 ग्राम, मोम सफ़ेद 24.5 ग्राम, पीह-ए-बुज़ 17.5 ग्राम, लुआब-ए-कतीरा, लुआब-ए-बज़रक़तूना, लुआब-ए-ख़त्मी, लुआब-ए-बिही दाना, रोग़न-ए-बेद मुश्क, रोग़न-ए-बनफ़्शा, रोग़न-ए-बादाम और मुश्क ताज़ा प्रत्येक 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को पतीले में रख कर हल्की आँच पर पकाएँ फिर 17.5 ग्राम काफूर सम्मिलित कर के हावन में मलें।

❑❑❑

पञ्चम खण्ड

# अष्टम अध्याय

## विभिन्न प्रकार के मरहम के नुस्ख़े

- **मरहम का नुस्ख़ाः**

यह ठोस सूजन को नर्म करता और पकाता है। यह ज़ख़्मों को मवाद से पाक साफ़ करता है।

औषधियाँः ज़िफ़्त, ज़र्नीख़ व मोम सफ़ेद प्रत्येक 90 ग्राम।

निर्माण-विधिः मोम और रोग़न को एक साथ मिला कर साफ़ करें और शेष औषधियों को मिला कर मरहम तैयार करें।

- **मरहम-ए-मुरदारसंग का नुस्ख़ाः**

यह ठोस सूजन नर्म करता और कण्ठमाला को गलाता है।

औषधियाँः मुरदारसंग 35 ग्राम, रोग़न-ए-ज़ैतून 122 मिलीलीटर, लुआब-ए-बज़रक़तूना, लुआब-ए-हुल्बा, लुआब-ए-ख़त्मी, लुआब-ए-तुख़्म-ए-मर्व प्रत्येक 175 मिलीलीटर।

निर्माण-विधिः मुरदारसंग और रोग़न-ए-ज़ैतून को एक साथ इतना पकाएँ कि उस का रंग उस में उतर जाए फिर उस का आग से उतार कर ठंडा कर लें। तत्पश्चात उस में लुआब-ए-बज़रक़तूना, लुआब-ए-हुल्बा, लुआब-ए-ख़त्मी और लुआब-ए-तुख़्म-ए-मर्व सम्मिलित कर के हल्की आँच पर इतना पकाते और करछुल से चलाते रहें किवह गाढ़ा हो जाए।

- **मरहम-ए-जवारियान का नुस्ख़ाः**

इस को "मरहम-ए-जवारियान" कहा जाता है। यह कण्ठमाला, Baldness, Cancer, Hard Swelling में लाभदायक है। यह ज़ख़्म से बेकार गोश्ता और मवाद को बाहर निकालता है। यह Fistula और Anal Fissure ठीक करता है।

औषधियाँः जावशीर, ज़ंगार, मुर मक्की और बारज़द प्रत्येक 7 ग्राम, उशक़ 24.5 ग्राम, कुन्दुर और ज़रावन्द तवील प्रत्येक 10.5 ग्राम, लअल और मुरदारसंग प्रत्येक 14

ग्राम, मोम और ज़र्नीख प्रत्येक 7 ग्राम, रोग़न-ए-ज़ैतून 420 मिलीलीटर।

निर्माण-विधिः Exudates को सिर्का में भिगोएँ और नर्म कर के हावन में मलें। साथ ही शेष सभी औषधियों को हल्का कूट छान कर मोम और रोग़न के साभ नियमानुसार मिलाएँ। तत्पश्चात सभी औषधियों को एक साभ इस प्रकार से मिलाएँ कि वो मरहम की भाँति हो जाएँ।

- **मरहम-ए-रूसुल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह ठोस सूजन, कण्ठमाला, कैंसर, प्लेग में लाभदायक है।

औषधियाँः शमा, रातीनज, मुक़िल अज़रक़ और मुरदारसंग प्रत्येक 14 ग्राम, जावशीर और ज़ंगार प्रत्येक 7 ग्राम, उशक़ 24.5 ग्राम, ज़रावन्द तवील, मीअह और क़िन्नह प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूटने योग्य औषधियों को कूट लें और पिघलने योग्य औषधियों को पिघला लें फिर सब को एक साथ इस प्रकार मिलाएँ कि वह एक हो जाएँ।

- **मरहम का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Cancer और Cervical lymphadenitis में लाभदायक है और Hard Swelling को पकाता है।

औषधियाँः मुरदारसंग 17.5 ग्राम, कुन्दुर, बादज़द और उशक़ प्रत्येक 35 ग्राम, इल्कुलबुत्म और तुरन्ज प्रत्येक 24.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः पिघलने वाली औषधियों को रोग़न-ए-ज़ैतून में पिघला लें और कूटने योग्य औषधियों को हल्का कूट लें फिर सब को हावन में इस प्रकार मलें कि मरहम की भाँति हो जाएँ।

- **मरहम-ए-ख़ूक़ का नुस्ख़ाः**

यह जालीनूस का तैयार किया हुआ नुस्खा है। यह मुश्किल से ठीक होने वाले Ulcers, Cancer, Plague और सभी प्रकार की सूजन में लाभदायक है जो कि अंगों के अन्दर मरारी मवाद के गिरने के कारण होते हैं।

औषधियाँः पीह-ए-खूक और पुराना रोग़न-ए-ज़ैतून प्रत्येक 420 ग्राम, मुरदारसंग 210 ग्राम, क़लक़तार 140 ग्राम।

निर्माण-विधिः पीह-ए-खूक और पुराने रोग़न-ए-ज़ैतून को पिघला कर साफ़ कर लें फिर मुरदारसंग और क़लक़तार को एक साथ पीस कर पीह-ए-खूक और पुराने रोग़न-ए-ज़ैतून के घोल में मिलाएँ और हावन में इतना मलें कि वह एक हो जाएँ।

- **मरहम का अन्य नुस्खा:**

यह Cracked Lips, Anal Fissure, Fistula और जलने में लाभदायक है जो कि अंगों के अन्दर मरारी मवाद के गिरने के कारण होते हैं।

औषधियाँ: मुरदारसंग और सफ़ेदाब अर्ज़ीज़ प्रत्येक 17.5 ग्राम, रोग़न-ए-कदू 70 मिलीलीटर, मोम सफ़ेद आवश्यकतानुसार।

निर्माण-विधि: मोम को रोग़न-ए-कदू में पिघलाएँ और फिर शेष सभी औषधियों को कूट छान कर उस में सम्मिलित करें फिर सब को अच्छी तरह इतना मलें कि वो नर्म हो जाएँ और उन को ठंडा कर लें। तत्पश्चात अंत में काफ़ूर सफ़ेद 24 मिलीग्राम और मुर्गी का एक अन्डा उस में सम्मिलित करें और सब अच्छी तरह इतना मिलाएँ कि वो नर्म हो जाएँ।

- **मरहम का अन्य नुस्खा:**

औषधियाँ: सफ़ेदाब मग़सूल और मोम सफ़ेद प्रत्येक 17.5 ग्राम, रोग़न-ए-गुल 70 मिलीलीटर, काफ़ूर 1.75 ग्राम, सफ़ेदी-ए-बैज़ा-ए-मुर्ग़ 2 की संख्या में।

निर्माण-विधि: नियमानुसार मरहम तैयार करें।

- **मरहम-ए-खल्ल का नुस्खा:**

यह नया गोश्त तैयार करता है, ज़ख़्म को गन्दगी से पाक करता और सुखाता है।

औषधियाँ: मुरदारसंग 56 ग्राम हल्का कूटा हुआ, मोम सफ़ेद, रोग़न-ए-गुल और सिर्का थोड़ी मात्रा में।

निर्माण-विधि: सभी औषधियों को एक साथ मिलाएँ और हावन में इतना मलें कि वह मरहम की भाँति हो जाए।

- **मरहम-ए-ज़न्जार का नुस्खा:**

इस को "मरहम-ए-सब्ज़" भी कहा जाता है। यह मुर्दा गोश्त को खा जाता है। ज़ख़्म को गन्दगी से पाक करता है। पुराने ज़ख़्मों को सुखाता है और ज़ख़्म के स्थान पर नया गोश्त पैदा करता है।

औषधियाँ: ज़ंगार 7 ग्राम, मोम, ज़र्नीख़ और इल्कुलबुत्म प्रत्येक 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: ज़ंगार को भून लें। Exudate को मोम और रोग़न-ए-ज़ैतून में पिघला लें। तत्पश्चात अनज़रूत 17.5 ग्राम को पीस लें और फिर सभी औषधियों को एक साथ इस प्रकार मलें कि वह मरहम हो जाए।

- **मरहम-ए-ज़न्जार का अन्य नुस्खा:**

इस से भी वही लाभ प्राप्त होते हैं।

औषधियाँ: उशक़ और ज़ंगार प्रत्येक 31.5 ग्राम, समग़-ए-सनोबर 94.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: उशक़ को आब-ए-सुद्दाब में घोल लें। मोम को रोग़न-ए-ज़ैतून में पिघला लें। ज़ंगार को हल्का भून लें। सब को एक साथ इस प्रकार मलें कि वह मरहम हो जाए।

- **मरहम-ए-इस्फ़ीदबाज का नुस्ख़ाः**

यह आग, गरम पानी और गरमी से जलने वाले ज़ख़्मों में लाभदायक है। यह नया गोश्त भी पैदा करता है।

औषधियाँ: इस्फ़ीदबाज, रसास, काफ़ूर प्रत्येक 7 ग्राम, मुरदारसंग 3.5 ग्राम, मोम सफ़ेद, रोग़न-ए-गुल प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधि: पिघलने वाली औषधियों को एक साथ पिघला लें और फिर शेष सभी औषधियों को हल्का कूट छान कर उस में सम्मिलित करें और मरहम तैयार करें।

- **मरहम-ए-मुरदारसंग का नुस्ख़ाः**

यह मुर्दा गोश्त को खाता और ज़ख़्मों को ठीक रकता है।

औषधियाँ: मुरदारसंग 202.5 ग्राम, ज़िफ्त रूमी 70 ग्राम, इल्कुलबुतम 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधि: इल्कुलबुत्म को ज़िफ्त में पिघलाएँ, मुरदारसंग मग़सूल को हल्का पका कर मिलाएँ और हावन में मलें।

- **मरहम-ए-ख़ल्ल का नुस्ख़ाः**

यह कान के ज़ख़्म में लाभदायक है।

औषधियाँ: सिर्का 24.5 ग्राम, अस्ल अर्थात शहद 70 ग्राम, अन्ज़रूत 7 ग्राम, ज़न्जार 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: सिर्का और शहद को पका कर क़िवाम तैयार करें। अन्ज़रूत, ज़न्जार को हल्का कूट छान कर उस में सम्मिलित करें। सब को एक साथ अच्छी तरह मलें और मरहम तैयार करें।

प्रयोग-विधि: एक फतीले को लथेड़ कर कान पर रखें।

- **मरहम-ए-सफ़ेदाब का नुस्ख़ाः**

यह नया गोश्त बनाता और गरम मौसम में लाभदायक है।

औषधियाँ: सफ़ेदाब अर्ज़ीज़ 10.5 ग्राम, रोग़न गुल 35 ग्राम, दमुलअखवैन, अन्ज़रूत, सिब्र, कुन्दुर प्रत्येक 7 ग्राम, मोम 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को हल्का कूट छान कर मोम और रोग़न-ए-गुल के साथ

पिघलाएँ और साफ़ कर लें फिर सब को अच्छी तरह मिलाएँ और मरहम तैयार करें।

- **मरहम-ए-आहक का नुस्ख़ाः**

यह जलने से होने वाले ज़ख़्म में लाभदायक है।

औषधियाँः आहक एवं मुरदारसंग मग़सूल, खुब्सुलफ़िज्ज़ह, सफ़ेदी बैज़ा-ए-मुर्ग़, मोम सफ़ेद, रोग़न-ए-गुल 1-1 भाग।

निर्माण-विधिःनियमानुसार मरहम तैयार करें।

- **मरहम-ए-आहक का अन्य नुस्ख़ाः**

यह जलने में मुजर्रब है।

औषधियाँः दस बार मीठे पानी में धोया हुआ आहक मग़सूल 135 ग्राम, क़ैमूलिया मग़सूल 90 ग्राम, गुल-ए-रूमी 45 ग्राम, सफ़ेदाब मग़सूल 31.5 ग्राम, तूतिया, मुरदारसंग प्रत्येक 31.5 ग्राम, अक़लीमिया-ए-नुक़रह 22.5 ग्राम, उसारा-ए-असर्राई 36 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर रोग़न-गुल सुर्ख़ और मोम सफ़ेद के साथ हल्का पकाएँ और मरहम तैयार करें।

- **मरहम-ए-माज़ू का नुस्ख़ाः**

यह ज़ख़्म से मैल को पाक करता है।

औषधियाँः माज़ू सब्ज़, मुरदारसंग, ज़र्द चौबा प्रत्येक 1-1 भाग, गुलनार फ़ारसी, उसारा-ए-लिसानुलहम्ल प्रत्येक 2 भाग, मोम सफ़ेद और रोग़न-ए-गुल आवश्यकतानुसार।

निर्माण-विधिः नियमानुसार मरहम तैयार करें।

- **मरहम-ए-गोगर्द का नुस्ख़ाः**

यह ज़ख़्म से मैल को साफ़ करता है।

औषधियाँः शहद, अन्ज़रूत सफ़ेद और रोग़न-ए-गुल।

निर्माण-विधिःशहद को पका कर गाढ़ा कर लें और उस के समभाग अन्ज़रूत सफ़ेद को कूट छान कर सम्मिलित करें। तत्पश्चात रोग़न-ए-गुल के साथ मिला कर मरहम तैयार करें।

- **मरहम-ए-गोगर्द का नुस्ख़ाः**

यह संक्षारक घाव और खुजली में लाभदायक है।

औषधियाँः गोगर्दज़र्द, सीमाब, क़िन्बील, मुरदारसंग, ज़िफ़्त।

निर्माण-विधिः सब को एक एक भाग ले कर रोग़न-ए-गुल के साथ मिलाएँ और

नियमानुसार मरहम तैयार करें।

- **मरहम-ए-शन्जरफ़ का नुस्ख़ाः**

यह Syphilis के ज़ख़्म, Chronic ulcers, Scabies में लाभदायक है।

औषधियाँः शन्जरफ़, तुरन्ज, मोम सफ़ेद, मुरदारसंग, तूतिया-ए-हिन्दी मुहर्रक़ सफ़ेदाब और बैज़ा-ए-मुर्ग़ मुकल्लस।

निर्माण-विधिः सब को एक एक भाग ले कर कूट छान लें और रोग़न-ए-गुल और मोम मिला कर मरहम तैयार करें।

- **मरहम का अन्य नुस्ख़ाः**

यह अधिकतर ज़ख़्मों और अल्सर में लाभदायक है।

औषधियाँः सफर जिस को इल्कुलबुत्म भी कहा जाता है 35 ग्राम, चौब-ए-सनोबर मुहर्रक़ 24.5 ग्राम, तूबाल-ए-मिसस 17.5 ग्राम, तूबाल-ए-आहन 17.5 ग्राम, मुर मक्की 7 ग्राम, ज़रावन्द मुदहरज और कुन्दुर प्रत्येक 24.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः Exudates को सिर्का में घोल लें और शेष कोकूट कर मोम, रोग़न-ए-ज़ैतून में मिला करमरहम तैयार करें।

- **मरहम-ए-तूबाल-ए-मिस्स का नुस्ख़ाः**

यह पागल कुत्ते या पागल आदमी के काटने से होने वाले ज़ख़्म में लाभदायक है और ज़ख़्मों को ठीक करता है।

औषधियाँः तूबाल-ए-मिसस, ज़ंगार, बीख़-ए-सोसन आसमान्जोनी प्रत्येक 7 ग्राम, ख़ुब्सुलफ़िज़्ज़ह 14 ग्राम, क़िन्नह 3.5 ग्राम, रोग़न-ए-ज़ैतून और शहद प्रत्येक 70 ग्राम।

निर्माण-विधिः नियमानुसार मरहम तैयार करें।

- **मरहम-ए-क़फ़रूलयहूद का नुस्ख़ाः**

यह साँप, बिच्छू और कीड़े मकोड़ों के काटे में लाभदायक है। साथ ही यह Scabies, Cancrum और Ring worm में लाभदायक है।

औषधियाँः क़फ़रुलयहूद और ज़र्नीख़ प्रत्येक 420 ग्राम, दिक़ाक़-ए-कुन्दु 210 ग्राम, सफ़ेदाब और क़लक़न्द प्रत्येक 126 ग्राम, जावशीर 9 ग्राम, पुराना सिर्का 630 मिलीलीटर, रोग़न-ए-ज़ैतून 630 मिलीलीटर।

निर्माण-विधिः Exudates को सिर्का में घोल लें। शेष को हल्का कूट छान लें। सब को मिला कर मरहम तैयार करें।

- **मरहम-ए-हब्वह का नुस्ख़ाः**

यह ज़ख़्मों को बहुत जल्दी ठीक करता है और नया गोश्त पैदा करता है।

औषधियाँः हब्ब-ए-हब्वह 7 ग्राम, अन्ज़रूत, सफ़ेदाब प्रत्येक 3.5 ग्राम, रोग़न-ए-कुन्जद 35 मिलीलीटर, मोम सफ़ेद 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को हल्का कूट छान कर पीस लें और मोम को रोग़न-ए-कुन्जद में पिघला लें फिर सब को एक साथ हावन में मल कर मरहम तैयार करें।

- **मरहम-ए-हब्वह का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से भी वही लाभ प्राप्त होते हैं।

औषधियाँः हब्ब-ए-हब्वह 7 ग्राम, मोम 22.5 ग्राम, रोग़न-ए-गुल 67.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः हब्ब-ए-हब्वह को रोग़न-ए-गुल के साथ इतना पकाएँ कि उस का प्रभाव रोग़न-ए-गुल में चला जाए। उसे साफ़ कर के मोम डालें और मरहम तैयार करें।

- **मरहम का अन्य नुस्ख़ाः**

यह पुराने ज़ख़्मों को ठीक करता और Fistula के ज़ख़्म में भी लाभदायक है।

औषधियाँः मुरदारसंग मग़सूल, तूतिया-ए-हिन्दी और अन्ज़रूत प्रत्येक 7 ग्राम, ज़ंगार 1.75 ग्राम, दमुलअखवैन 3.5 ग्राम, इल्कुलबुत्म 10.5 ग्राम, रोग़न-ए-गाव जो पुराना हो गया हो 52.5 ग्राम, पुराना सिर्का 17.5 ग्राम, मोम सफ़ेद 14 ग्राम।

निर्माण-विधिः सबको कूट छान कर हावन में ख़ूब मलें और मरहम तैयार करें।

- **मरहम का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बच्चों के सर पर होने वाले ज़ख़्मों को ठीक करता है।

औषधियाँः कात हिन्दी, दमुलअखवैन, कफ़-ए-दरिया, अन्ज़रूत, ज़ंगार, तूतिया क़लमी।

निर्माण-विधिः कूट छान कर सिर्का व रोग़न-ए-दुंबा के साथ मरहम तैयार करें।

- **मरहम-ए-तूतियाई का नुस्ख़ाः**

यह उस ज़ख़्म में लाभदायक है जो लिंग के बाहरी और अगले भाग पर होता है।

औषधियाँः तूतिया-ए-मग़सूल 70 ग्राम, मोम और रोग़न।

निर्माण-विधिः तूतिया को हल्का पका कर मोम व रोग़न में मिलाएँ और हावन में इतना मलें कि वह अच्छी तरह नर्म हो जाए।

- **मरहम-ए-क़िन्नह का नुस्ख़ाः**

यह लिंग के ज़ख़्म को दो दिन में ठीक करता है।

औषधियाँः क़िन्नह, तूतिया-ए-किर्मानी, माज़ू प्रत्येक 7 ग्राम, ज़ाज मुहर्रक़,

अन्ज़रूत और दमुलअखवैन प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को हल्का कूट छान कर रोग़न-ए-गुल और मोम सफ़ेद के साथ मिलाएँ और मरहम तैयार करें।

- **मरहम-ए-तूतिया का नुस्ख़ाः**

यह Penitis में लाभदायक है। यह उस को बहुत जल्दी ठीक करता और मुजर्रब है।

औषधियाँः तूतिया-ए-किर्मानी, पोस्त-ए-बैज़ा-ए-मुर्ग़ जिस को कुशता किया गया हो, काग़ज़ सोख़्ता, ज़ाज सोख़्ता, माज़ू सोख़्ता एक एक भाग, मुरदारसंग डेढ़ भाग, दमुलअखवैन दो भाग।

निर्माण-विधिः सब को हल्का कूट कर मरहम तैयार करें।

- **मरहम का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से भी वही लाभ प्राप्त होते हैं। यह लिंग और अन्डकोष के ज़ख़्म को दो दिन में ठीक कर देता है।

औषधियाँः क़िन्नह, तूतिया-ए-हिन्दी, माज़ू एक एक भाग।

निर्माण-विधिः क़िन्नह को तांबे के हावन में गरम पानी के साथ मिला कर नर्म कर लें फिर बारीक कपड़े से छान कर साफ़ कर लें। थोड़ी मात्रा में सीमाब लेकर सिफ़ाल के पात्र में मलें ताकि वह कुम्हला जाए। तूतिया और माज़ू को कूट छान कर नर्म कर लें फिर सब को एक साथ मिला कर मोम सफ़ेद और रोग़न-ए-कुन्जद के साथ मिलाएँ और मरहम तैयार करें।

प्रयोग-विधिः ज़ख़्म के स्थान को गरम पानी से धोने के बाद यह मरहम लगाएँ।

- **मरहम-ए-मुक़िल का नुस्ख़ाः**

यह बवासीर में लाभदायक है।

औषधियाँः मुक़िल, पियाज़ पुख़्ता, मीअह सायला, रोग़न-ए-उस्तुखवान-ए-ज़र्द आलू, ज़र्दी-ए-बैज़ा-ए-मुर्ग़, कोहान-ए-शुत्र सभी एक एक भाग।

निर्माण-विधिःमुक़िल को आब-ए-गन्दना में घोल लें, और कोहान-ए-शुत्र को पिघला कर साफ़ कर लें फिर सब को एक साथ मिला कर मरहम तैयार करें।

- **मरहम-ए-साक़-ए-गाव का नुस्ख़ाः**

यह बवासीर में लाभदायक है।

औषधियाँः मग्ज़-ए-साक़-ए-गाव, पीह-ए-मुर्ग़, कोहान-ए-शुत्र और रोग़न-ए-गुल।

निर्माण-विधिः सब को पकाएँ और थोड़ी मात्रा में अफ़ियून सम्मिलित कर के

पत्थर के हावन में अच्छी तरह मलें यहाँ तक कि वह अच्छी तरह नर्म हो जाए।

- **मरहम-ए-पीह-ए-बत्त का नुस्ख़ाः**

इस से भी वही लाभ प्राप्त होते हैं।

औषधियाँः पीह-ए-बत्त और पीह-ए-बुज़ प्रत्येक 17.5 ग्राम, मीअह सायला 7 ग्राम और मुक़िल अज़रक़ 70 ग्राम।

निर्माण-विधिः मुक़िल को आब-ए-गन्दना में मिला कर नर्म कर लें फिर साफ़ कर के रोग़न-ए-उस्तुखवान-ए-शफ़्तालू 35 मिलीलीटर मिला कर मरहम तैयार करें।

- **मरहम का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बवासीर में अधिक ख़ून आने को रोकता है और Fistula को सुखाता है।

औषधियाँः गिल-ए-अरमनी 3.5 ग्राम, काफ़ूर 416 मिलीग्राम, अफ़ियून 208 मिलीग्राम, पीह-ए-मुर्ग़, कोहान-ए-शुत्र, रोग़न-ए-उस्तुखवान-ए-ज़र्द आलू प्रत्येक 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को लेकर मरहम तैयार करें।

- **मरहम-ए-साजिज़ का नुस्ख़ाः**

यह बवासीर और Anal fissure में बहुत लाभदायक है।

औषधियाँः रोग़न-ए-बनफ़्शा व बादाम, रोग़न-ए-गुल-ए-बादाम प्रत्येक 3.5 ग्राम, उसारा-ए-लिहयतुत्तीस, तीन-ए-क़बरसी, गिल-ए-अरमनी, शादनज मग़सूल प्रत्येक 10.5 ग्राम, अफ़ियून 1.75 ग्राम, मोम सफ़ेद 17.5 ग्राम, इस्फ़ीदबाज 7 ग्राम, ज़ाफ़रान 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान लें और मोम व रोग़न को पिघला कर साफ़ कर लें फिर सब को उस घोल में डाल कर एक संकीर्ण हावन में इतना मलें कि वो एक हो जाएँ और उस के बाद प्रयोग करें।

- **मरहम का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बवासीर के लिए विशेष औषधि है।

औषधियाँः मोम सफ़ेद और कोहान-ए-शुत्र, ज़िफ़्त रूमी 7 ग्राम, फ़ुतरासालियून 3.5 ग्राम, मुक़िल 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः मोम सफ़ेद और कोहान-ए-शुत्र को एक साथ मिला कर पिघला लें और मुक़िल को आब-ए-गन्दना में घोल लें और साफ़ कर लें।

- **मरहम का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बवासीर की विशेष औषधि है और बहुत लाभदायक है।

औषधियाँः मग़ज़-ए-उस्तुखवान-ए-शफ़्तालू, मुक़िल अज़रक़, तुख़्म-ए-गन्दना

प्रत्येक 17.5 ग्राम, गुल-ए-बादिन्जान 10.5 ग्राम, ज़िफ्त रूमी 7 ग्राम, ज़र्दी तुख़्म-ए-मुर्ग़ 2 की संख्या में, बज़रुलबन्ज 3.5 ग्राम, ज़ाफ़रान 3.5 ग्राम, अफ़ियून 250 मिलीग्राम, शादनज मग़सूल 7 ग्राम, काफ़ूर 250 मिलीग्राम, मुक़िल को आब-ए-गन्दना में घोल लें, कोहान-ए-शुत्र, मग़्ज़ क़लम-ए-गाव, मग़्ज़ क़लम-ए-बुज़ प्रत्येक 10.5 ग्राम, रोग़न उस्तुखवान-ए-ज़र्द आलू 35 ग्राम, रोग़न-ए-गुल 52.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः नियमानुसार मरहम तैयार करें।

- **मरहम-ए-नासूर का नुस्ख़ाः**

यह Fistula और Anal Fissure में लाभदायक है।

औषधियाँः मुरदारसंग मग़सूल और सफ़ेदाब प्रत्येक 17.5 ग्राम, ज़िफ्त 10.5 ग्राम, सफ़ेदी-ए-तुख़्म-ए-मुर्ग़ 2 की संख्या में।

निर्माण-विधिः सब को हावन में थोड़े से सिर्का के साथ पीसें। मोम को 70 ग्राम रोग़न-ए-गुल में डालें और सब को मिला कर हावन में इतना मलें कि वो एक हो जाएँ।

- **मरहम-ए-शफ़्तालू का नुस्ख़ाः**

यह Chronic Fistula को ठीक करता है।

औषधियाँः कुत्ते की ज़बान को धो कर जला लें और उस में से 9 ग्राम की मात्रा में ले लें। साथ ही ज़ंगार 2.25 ग्राम, तूतिया-ए-हिन्दी 3.5 ग्राम, ज़िफ्त रूमी 7 ग्राम, अन्ज़रूत, शन्जरफ़, कात-ए-हिन्दी, क़िन्नह और मुरदारसंग प्रत्येक 10.5 ग्राम, पुराना सिर्का और शहद प्रत्येक 35 ग्राम, रोग़न-ए-ज़ैतून 70 मिलीलीटर, मोम 17.5 ग्राम लें।

निर्माण-विधिः शहद, सिर्का और मोम को एक साथ इतना पकाएँ कि वह गाढ़ा हो जाए फिर सभी औषधियों को कूट छान कर उस में सम्मिलित करें और हावन में मल कर नर्म कर लें और उस के बाद प्रयोग करें।

❑❑❑

# शष्टम खण्ड

मुक़ी, विभिन्न प्रकार के विरेचक, धारण-शक्ति वाले एवं कामोद्दीपक हुक़्नों, शयाफ़, फ़रज़जा और हमूल के नुस्ख़े

यह खण्ड चार अध्यायों पर आधारित है

शष्टम खण्ड

## प्रथम अध्याय

# मुक़ी के नुस्ख़े

ज्ञात रहे कि कभी कभी सही स्वभाव के व्यक्ति के लिए उल्टी करना लाभदायक और बेहतर होता है क्योंकि यह आमाशय और शरीर को द्रव्यों से पाक करता है, रुतूबात-ए-ग़रीबा को दूर करता है, जोड़ों के रोग, गठिया, कंपन्न, पक्षघात, Melancholia, कुष्ठरोग, स्वित्रा और Ptyriasis Alba/Nigra में लाभदायक है।

हकीमों के अनुसार जब कोई व्यक्ति उल्टी करने का प्रयत्न करे तो उसे दो दिन उल्टी करना चाहिए और उल्टी उस दिन करना अधिक उचित है जिस दिन उस ने विभिन्न प्रकार की खाने और पीने की वस्तुएँ प्रयोग की हों। उल्टी करने की स्थिति में आँख और मुँह को मज़बूती से बाँध कर रखें और मुक़ी औषधियोंसे इस प्रक्रिया में सहायता प्रदान करें। उल्टी करने के बाद मुँह को ठंडे पानी और अर्क़-ए-गुलाब से धोएँ, शराब-ए-सेब, शराब-ए-बिही, शराब-ए-फ़वाकेह तुर्श, शराब-ए-अनार मुनअनअ जैसे आमाशयवर्धक शराबों और रुबूब को अर्क़-ए-गुलाब के साथ पिलाएँ, थोड़ी मात्रा में मस्तगी चबाएँ और आमाशय पर आमाशयवर्धक ज़िमाद लगाएँ।

अगर उल्टी करने के बाद शरीर में कुछ बदलाव आए जैसे ठंडा पसीना आए, आवाज़ बैठ जाए और बेचैनी हो तो थोड़ी मात्रा में माउलअस्ल हार पिलाएँ, अगर आमाशय में जलन पैदा हो जाए तो चर्ब शोरबे खिलाएँ, अगर मतली और उबकाई आए तो छींक लाने वाली औषधियों से छींक लाएँ। खाने के बाद उल्टी करने की आदत से आमाशय कमज़ोर हो जाता है। शरीर के Waste fluid materials को क़ुबूल करने लगता है और उस से आँख, कान एवं दाँत को भी हानि होने लगती है। अत्याधिक गरम हवा और अत्याधिक ठंडे मौसम में उल्टी नहीं कराना चाहिएँ

उन व्यक्तियों के लिए उल्टी कराने की अनुमति नहीं है जिन का सीना तंग हो, शरीर में गोश्त कम हो, गरदन पतली और लंबी हो, सीने और गरदन का भाग निकला हुआ हो, या जिन को सीने के रोगों का सन्देह हो, या जिन का दिमाग़ कमज़ोर हो, या जो बहुत अधिक मोटे हों।

- **दवा-ए-क़ै:**

यह शरीर से दिमाग़ की ओर चढ़ने वाले बुख़ारात को रोकती है, इन बुख़ारात के कारण होने वाले Giddiness को समाप्त करती है और Gastric cleanser है।

औषधियाँ और निर्माण-विधिः चौब-ए-शिब्त और बर्ग-ए-शिब्त प्रत्येक 35 ग्राम को 840 मिलीलीटर पानी में इतना पकाएँ कि 420 मिलीलीटर शेष रह जाए। उस को साफ़ कर लें।

प्रयोग-विधिः उस में थोड़ी थोड़ी मात्रा में नमक और शहद मिला कर दो तीन बार पिलाएँ। हर बार उँगली और मुर्ग़ के पर को हलक़ में डालें ताकि उद्धेशानुसार आमाश पाक हो जाए।

ज्ञात रहे कि शहम-ए-हन्ज़ल को हुक़नों में सम्मिलित करने से हानि होने का अवसर रहता है और खतरे से ख़ाली नहीं होता है क्योंकि या तो यह आँतों को खोलता या उन को तलछट से पाक करता है या फिर उस से सूजन हो जाती है। इसी कारण हकीमों ने कहा है कि जब तक आवश्यक ना हो, शहम-ए-हन्ज़ल को हुक्ना के द्रव्य गुणों में मिलाया ना जाए।

- **दवा-ए-क़ै:**

यह आमशय को चिपचिपे Fluid से पाक करता है।

औषधियाँः समग़ुलक़े 3.5 ग्राम, जौज़ुलक़ै 1.75 ग्राम, तुख़्म-ए-तुर्ब 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर गरम पानी में मिलाएँ और साफ़ कर लें।

प्रयोग-मात्रा और प्रयोग-विधिः यह पानी 175 मिलीलीटर की मात्रा में पिलाएँ और ऊपर से एक प्याला गरम पानी पिलाएँ। इसी विधि से उल्टी होती है।

- **दवा-ए-क़ै का अन्य नुस्ख़ा:**

यह गरम स्वभाव के व्यक्तियों के अनुकूल है। आमशय को सफ़रा से पाक करता है।

औषधियाँः आब-ए-बर्ग-ए-ख़्यार 105 ग्राम, शकर सुर्ख़ 35 ग्राम, सिकन्जबीन 35 मिलीलीटर।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को एक प्याला गरम पानी के साथ मिला कर नियमानुसार पिएँ और उल्टी करें।

- **दवा-ए-क़ै का अन्य नुस्ख़ा:**

यह तरल स्वभाव के व्यक्तियों के लिए लाभदायक है और आमशय को बलग़म और Fluids से पाक करता है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-तुर्ब, तुख़्म-ए-शिब्त और तुख़्म-ए-जिर्जीर प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को अर्धकुटा कर के 420 मिलीलीटर पानी में इतना पकाएँ कि आधा शेष रह जाए। उसे साफ़ कर लें।

प्रयोग-विधिः उस में सिकन्जबीन-ए-अस्ली 35 मिलीलीटर सम्मिलित कर के पिलाएँ और उल्टी कराएँ।

- **दवा-ए-कै़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह आमशय को बलग़म, तरल व चिपचिपे देहद्रव्यों से पाक करता है।

औषधियाँः खरदल सफ़ेद 3.5 ग्राम, बूरह अरमनी 1.75 ग्राम, कुन्दुश 875 मिलीग्राम, नमक-ए-हिन्दी 875 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः कूट छान कर गरम पानी और सिकन्जबीन-ए-अस्ली में मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः उस को पिलाएँ और उल्टी कराएँ।

- **दवा-ए-कै़ का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से सौदावी उल्टी होती है।

औषधियाँः तुर्ब छीला हुआ 52.5 ग्राम, नमक-ए-हिन्दी 17.5 ग्राम, बर्ग-ए-शिब्त 24 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को 840 मिलीलीटर पानी में इतना पकाएँ कि आधा शेष रह जाए फिर उस को साफ़ कर लें।

प्रयोग-विधिः सिकन्जबीन-ए-क़न्दी 35 मिलीलीटर मिला कर पिलाएँ और नियमानुसार उल्टी कराएँ।

- **दवा-ए-कै़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह आमाशय को बलग़म से पाक करता है।

औषधियाँः बूरह अरमनी 3.5 ग्राम, तुख़्म-ए-शिब्त, तुख़्म-ए-तुर्ब, अस्लुस्सूस और तुख़्म-ए-अस्पन्द प्रत्येक 7 ग्राम, नमक-ए-हिन्दी 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को अर्धकुटा कर के पकाएँ।

प्रयोग-विधिः उस में सिकन्जबीन-ए-अस्ली 70 मिलीलीटर मिला कर एक ही बार में पिएँ और नियमानुसार उल्टी करें।

- **दवा-ए-कै़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह सफ़रा को और आमाशय के तरल पदार्थों को दूर करता है।

औषधियाँः तुख़्म-ए-करफ़्स 21 ग्राम, कश्क-ए-जौ 70 ग्राम, बीख़-ए-ख़्यार 52.5 ग्राम, नमक-ए-तआम 7 ग्राम, सिकन्जबीन-ए-क़न्दी 35 मिलीलीटर।

निर्माण-विधिः सभी को पकाएँ और साफ़ कर लें।

प्रयोग-विधिः सिकन्जबीन-ए-क़न्दी या अस्ली में से जो भी उपलब्ध हो, उस में सम्मिलित करें फिर पिलाएँ और उल्टी कराएँ।

- **दवा-ए-कै़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह आमाशय को सफ़रा से पाक करता है और गरम स्वभाव के व्यक्तियों के अनुकूल है।

औषधियाँः आब-ए-कद्दू और कशक-ए-जौ प्रत्येक 420 मिलीलीटर, समग़ुलक़ै और नमक-ए-तआम प्रत्येक 3.5 ग्राम, सिकन्जबीन-ए-क़न्दी 70 मिलीलीटर।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को एक साथ मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः पिलाएँ और नियमानुसार उल्टी कराएँ।

- **दवा-ए-कै़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह सफ़रावी स्वभाव के व्यक्तियों के अनुकूल है और आमाशय को मिर्रह सफ़रा से पाक करता है।

औषधियाँः सिकन्जबीन-ए-क़न्दी 70 मिलीलीटर, समग़ुलक़ै 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः समग़ुलक़ै को कूट कर पानी में मिलाएँ और सख़्ती से मलें फिर उस के झाग को निकाल कर फेंक दें और उस को साफ़ कर लें।

प्रयोग-विधिः उस में सिकन्जबीन मिलाएँ और गरम दूध के साथ पिलाएँ और नियमानुसार उल्टी कराएँ।

- **दवा-ए-कै़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह आमाशय को सफ़रा से पाक करता है।

औषधियाँः गरम पानी 210 मिलीलीटर, सिकन्जबीन-ए-क़न्दी 70 मिलीलीटर और नमक-ए-तआम 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को पानी में मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः पिलाएँ और नियमानुसार उल्टी कराएँ।

❑❑❑

### शष्टम खण्ड
# द्वितीय अध्याय

# विरेचक, धारण-शक्ति वाले और कामोद्दीपक हुक़्ना के नुस्ख़े

**यह अध्याय दो वर्गों पर आधारित है**

## प्रथम वर्गः तीक्ष्ण विरेचक हुक़्ना के नुस्ख़े

ज्ञात रहे कि उपचार की सभी विधियों में हुक्ना सब से बढ़िया और लाभदायक विधि है। यह गाढ़े बेकार उत्पादों को निकालने, Nephralgia, Cystalgia, विभिन्न प्रकार के ब्वसपबे और दिमाग़ी रोगों को हल्का करने और उन में आराम देने, उन व्यक्तियों के लिए जिन को आमाशय की कमज़ोरी के कारण Purgatives से मतली व उल्टी हो जाती हो, ऊपर से नीचे की ओर पदार्थों को लाने के लिए और दिमाग़ की ओर बुख़ारात के चढ़ने को रोकने के लिए बहुत लाभदायक है लेकिन हुक्ना का अधिक प्रयोग करने और उस का आदी हो जाने की परिस्थिति में जिगर कमज़ोर हो जाता है। हुक्ना का प्रयोग ख़ाली पेट नहीं करना चाहिए। हुक़्ना से पहले मसाले वाले शोरबों के साथ गुलक़न्द एवं मस्तगी मिलाए हुए आमाशय को सशक्त करने वाले मशरूबात नहीं पीना चाहिए। हुक़्ना करने की स्थिति में गुर्दा के रोग, Sciatica, Coxalgia में रोगी को पीठ के बल लिटा दिया जाए और उस के सर और चूतड़ को ऊँचा रखा जाए प्रन्तु उस की पीठ ज़मीन पर होनी चाहिए। जब हवा अत्याधिक गरम हो या अत्याधिक ठंडी हो तो हुक्ना करें और हुक्ना में पानी की मात्रा 225 मिलीलीटर से कम नहीं होनी चाहिएँ ध्यान रखें कि हुक्ना करने की स्थिति में रोगी को खाँसी नही आने पाए क्योंकि कभी कभी खाँसी से हिचकी भी होने लगती है। हुक्ना ना बहुत ज़्यादा पतला होना चाहिए और ना ही बहुत ज़्यादा गाढ़ा बल्कि उस की ठंडक एवं गरमी और पतलापन एवं गाढ़ापन नारमल होना चाहिए।

- **हुक़्ना-ए-मुस्हिल का नुस्ख़ाः**

यह Billious hyperpyrexia, Acute Meningitis में लाभदायक है।

औषधियाँः उन्नाब, सपिस्ताँ प्रत्येक 52.5 ग्राम, गुल-ए-ख़त्मी, सबूस-ए-जौ प्रत्येक 24 ग्राम, बनफ़्शा, नीलोफ़र प्रत्येक 10.5 ग्राम, फ़ुलूस-ए-ख़्यार शंबर, रोग़न-ए-कदू और रोग़न-ए-बादाम प्रत्येक 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को नियमानसुार पकार कर साफ़ कर लें और रोग़न-ए-कदू एवं रोग़न-ए-बादाम मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः गरम दूध के साथ हुक़्ना करें।

- **हुक़्ना-ए-मुस्हिल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह आँतों से सफ़रा के जलन को दूर करता है और गरम स्वभाव के व्यक्तियों के अनुकूल है।

औषधियाँः बनफ़्शा, नीलोफ़र, ख़त्मी और सबूस-ए-जौ प्रत्येक 24 ग्राम, सना मक्की 17.5 ग्राम, उन्नाब और सपिस्ताँ प्रत्येक 20 दाना, तुरन्जबीन और फ़ुलूस-ए-ख़्यार शंबर प्रत्येक 24.5 ग्राम, रोग़न-ए-कदू 35 मिलीलीटर।

निर्माण-विधिः सब को पकार कर साफ़ कर लें। उस में तुरन्जबीन और फ़ुलूस-ए-ख़्यार शंबर मिला कर फिर साफ़ करें।

अनुपानः रोग़न-ए-कदू डाल कर हुक़्ना करें।

- **हुक़्ना-ए-मुस्हिल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गरमी से होने वाले मस्तिष्कावरण, बुखार और अन्य रोगों में लाभदायक है।

औषधियाँः कशक-ए-जौ, बनफ़्शा, नीलोफ़र प्रत्येक 960 ग्राम, उन्नाब 15 दाना, सपिस्ताँ 30 दाना, बाबूना 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को 1620 मिलीलीटर पानी में इतना पकाएँ कि आधा शेष रह जाए। शकर सुर्ख़ 960 ग्राम, रोग़न-ए-बनफ़्शा, रोग़न-ए-बादाम मिला कर प्रयोग करें।

- **हुक़्ना-ए-मुस्हिल काअन्य नुस्ख़ाः**

यह पहले की तुलना में अधिक नर्म है और बुखारों में लाभदायक है।

औषधियाँः अर्धकुटा जौ मुक़श्शर, गुल-ए-ख़त्मी सफ़ेद और बनफ़्शा प्रत्येक 24 ग्राम, उन्नाब 10 दाना, सपिस्ताँ 20 दाना, रोग़न-ए-बादाम और तुरन्जबीन प्रत्येक 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को उचित मात्रा में पकाएँ और साफ़ कर लें फिर नमक और बूरह अरमनी प्रत्येक 1.75 ग्राम, डाल कर हुक़्ना तैयार करें और प्रयोग में लाएँ।

- **हुक़्ना-ए-मुस्हिल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Hyperpyrexia और दिमाग़ी रोगों में लाभदायक है।

औषधियाँ: उन्नाब 20 दाना, सपिस्ताँ 30 दाना, सना मक्की, बनफ़्शा, नीलोफ़र, कशक-ए-जौ, गुल-ए-ख़त्मी प्रत्येक 17.5 ग्राम, शकर सुर्ख़, रोग़न-ए-कुन्जद प्रत्येक 35 ग्राम।

निर्माण-विधि: नियमानुसार हुक्ना तैयार कर के प्रयोग करें।

- **हुक़्ना-ए-मुस्हिल का अन्य नुस्ख़ा:**

यह Tertian Fever में लाभदायक है।

औषधियाँ: बनफ़्शा, नीलोफ़र, ख़त्मी और बाबूना प्रत्येक 35 ग्राम, सबूस-ए-गन्दुम 24 ग्राम, अन्जीर 5 दाना, सपिस्ताँ 50 कशक-ए-जौ 24 ग्राम, अर्धकुटा बीख़-ए-सोसन 17.5 ग्राम, बर्ग-ए-चुक़ुन्दुर 24 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को नियमानुसार पकाएँ। उस में रोग़न-ए-बनफ़्शा और रोग़न-ए-बादाम 35 मिलीलीटर सम्मिलित कर के हुक्ना तैयार करें।

- **हुक़्ना-ए-मुस्हिल का अन्य नुस्ख़ा:**

यह Tertian Fever, Paroxysmal fever और अधिकतर Billious fevers में लाभदायक है।

औषधियाँ: सना मक्की 17.5 ग्राम, तुख़्म-ए-कासनी, बनफ़्शा, नीलोफ़र प्रत्येक 10.5 ग्राम, गुल-ए-सुर्ख़ 17.5 ग्राम, उन्नाब, सपिस्ताँ, आलू प्रत्येक 20 दाना, कश्क-ए-जौ 24 ग्राम, लबलाब, बर्ग-ए-चुक़ुन्दुर प्रत्येक 24 ग्राम, ख़त्मी सफ़ेद 24 ग्राम।

निर्माण-विधि: सभी औषधियों को 1260 मिलीलीटर पानी में इतना पकाएँ कि 420 मिलीलीटर शेष रह जाए फिर उस को निचोड़ कर साफ़ कर लें। तत्पश्चात उस में फ़ुलूस-ए-ख़्यार शंबर, शकर सुर्ख़, शरबत-ए-बनफ़्शा और रोग़न-ए-बादाम प्रत्येक 35 ग्राम सम्मिलित कर के दोबारा साफ़ करें और रोग़न-ए-बनफ़्शा और रोग़न-ए-बादाम सम्मिलित कर के हुक्ना तैयार करें और प्रयोग में लाएँ।

- **हुक़्ना-ए-मुस्हिल का अन्य नुस्ख़ा:**

यह ठंडे देहद्रव्यों से होने वाले सर दर्द, कोमा, दिमाग़ी रोगों में लाभदायक है।

औषधियाँ: ख़सक, शिब्त, बाबूना, सना मक्की प्रत्येक 24.5 ग्राम,अस्लुस्सूस तराशीदा और नीमकोब 10.5 ग्राम, राज़ियाना और तुख़्म-ए-करफ़्स प्रत्येक 7 ग्राम, उशक़ और मुक़िल प्रत्येक 17.5 ग्राम, सकबीनज 416 मिलीग्राम।

निर्माण-विधि: सभी औषधियों को 2520 मिलीलीटर पानी में इतना पकाएँ कि 840 मिलीलीटर शेष रह जाए फिर उस को साफ़ कर लें। तत्पश्चात उस में बूरह अरमनी और नमक-ए-तआम प्रत्येक 1.75 ग्राम, रोग़न-ए-ज़ैतून, शहद और आबकामा प्रत्येक 35 ग्राम मिला कर हल्का गरम हुक्ना करें।

- **हुक्ना-ए-मुस्हिल का अन्य नुस्ख़ाः**

गरमी से होने वाले रोग व सर दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँः उन्नाब और सपिस्ताँ प्रत्येक 30 दाना, सना मक्की 24.5 ग्राम,जौ मुक़श्शर अर्धकुटा 35 ग्राम, ख़त्मी, ख़सक, इक्लीलुलमलिक, बाबूना, बनफ़्शा और नीलोफ़र प्रत्येक 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को 1260 मिलीलीटर पानी में इतना पकाएँ कि आधा रह जाए, उस को साफ़ कर लें फिर शकर सुर्ख़, तुरन्जबीन, रोग़न-ए-बनफ़्शा, रोग़न-ए-बादाम और रोग़न-ए-गुल प्रत्येक 35 ग्राम मिलाने कर गरम दूध के साथ हुक्ना करें।

- **हुक्ना-ए-मुस्हिल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Paralysis, Apoplexy, Epilepsy, बलग़म से होने वाले उदरशूल में लाभदायक है।

औषधियाँ एवं निर्माण-विधिः शहम-ए-हन्ज़ल, क़न्तूरियू नदक़ीक़, नानख़्वाह, शिब्त, सुद्दाब प्रत्येक 24 ग्राम, सकबीनज 7 ग्राम, बूरह अरमनी 7 ग्राम, रोग़न-ए-बादाम तल्ख़ 35 ग्राम, अंगबीन 35 ग्राम को ज़हरा-ए-गाव में मिलाएँ और नियमानुसार हुक्ना तैयार कर के प्रयोग करें।

- **हुक्ना-ए-मुस्हिल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह पक्षघात, मिर्गी और Bell's palsy में लाभदायक है।

औषधियाँ एवं निर्माण-विधिः शहम-ए-हन्ज़ल, क़न्तूरियू नदक़ीक़, नानख़्वाह , शिब्त, अन्जोदान, हुल्बा और सुद्दाब प्रत्येक 24 ग्राम, सकबीनज और बूरह अरमनी प्रत्येक 7 ग्राम में रोग़न-ए-बादाम तल्ख़, शहद, ज़हरा-ए-गाव और बूरह मिलाएँ और नियमानुसार हुक्ना तैयार कर के प्रयोग करें।

- **हुक्ना-ए-मुस्हिल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Phlegmocolic एवं Pneumocolic में लाभदायक है।

औषधियाँः हुल्बा बुज़ुर्ग, क़न्तूरियून दक़ीक़, बाबूना और ख़त्मी प्रत्येक 24 ग्राम, अन्जीर 30 दाना, सबूस-ए-गन्दुम 24 ग्राम, बर्ग-ए-चुक़ुन्दुर, सुद्दाब और कबर प्रत्येक 24 ग्राम, सकबीनज, मुक़िल और जावशीर प्रत्येक 10.5 ग्राम, मग़ज़-ए-हब्बुलक़ुरतुम अर्धकुटा 70 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को पका कर साफ़ कर लें फिर मुक़िल, जावशीर, नमक-ए-हिन्दी मिलाएँ और शकर सुर्ख़ व आबकामा सम्मिलित कर के हुक्ना तैयार करें।

- **हुक़्ना का अन्य नुस्ख़ाः**

यह उदरशूल को खोलता है।

औषधियाँः ख़सक, बाबूना, इक्लीलुलमलिक, जअदह, हब्बुलखरूअ मुक़श्शर, शिब्त, राज़ियाना, करफ़्स, अनीसून, नानख़्वाह, कमून किर्मानी, ख़त्मी, हुल्बा, वरक़-ए-कबर, बर्ग-ए-सुद्दाब प्रत्येक आवश्यकतानुसार, अन्जीर 10 दाना, अस्लुस्सूस, मुर साफ़ प्रत्येक 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को पका कर साफ़ कर लें। सकबीनज, बूरह अरमनी, रोग़न-ए-कुन्जद, शकर डाल कर हुक्ना तैयार करें।

- **हुक़्ना-ए-मुस्हिल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह उदरशूल में आराम देता है।

औषधियाँः ख़सक, बाबूना, इक्लीलुलमलिक, जअदह, हब्बुलखरूअ मुक़श्शर, शिब्त, राज़ियाना, करफ़्स, अनीसून, नानख़्वाह, कमून किर्मानी, ख़त्मी, हुल्बा, वरक़-ए-कबर और बर्ग-ए-सुद्दाब प्रत्येक आवश्यकतानुसार, अन्जीर 10 दाना, अस्लुस्सूस और मुर साफ़ प्रत्येक 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को पका कर साफ़ कर लें। सकबीनज, बूरह अरमनी, रोग़न-ए-कुन्जद, शकर डाल कर हुक्ना तैयार करें।

- **हुक़्ना-ए-मुस्हिल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह उदरशूल में अजीब तरह से लाभ पहुँचाता और एक घंटे में आराम देता है।

औषधियाँ एवं निर्माण-विधिः वरक़-ए-सुद्दाब को रोग़न में इतना पकाएँ कि आधा रह जाए। आग से उतार कर साफ़ कर लें। उस रोग़न में सकबीनज, मुक़िल, जुन्दबेद स्तर, जावशीर को इस प्रकार मिलाएँ कि सब हो जाएँ। उस को साफ़ कर लें और दो तीन बार हुक्ना करें। यह विशेषतः Pneumocloic में बहुत लाभदायक है।

- **हुक़्ना-ए-मुस्हिल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Pneumocolic में लाभदायक है जो Enteritis के कारण होता है और उस के साथ बुख़ार, प्यास और गरमी भी गलती है।

औषधियाँः सना मक्की 24.5 ग्राम, बनफ़्शा, नीलोफ़र प्रत्येक 10.5 ग्राम, जौ मुक़श्शर नीमकोब, ख़त्मी, सबूस-ए-गन्दुम प्रत्येक 24 ग्राम, वरक़-ए-खुब्बाज़ी, वरक़-ए-चुक़ुन्दुर प्रतयेक 24 ग्राम, फ़ुलूस-ए-ख़्यार शंबर, शकर सुर्ख़, तुरन्जबीन, रोग़न-ए-बनफ़्शा, रोग़न-ए-बादाम प्रत्येक 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः नियमानुसार हुक्ना तैयार करें।

- **हुक़्ना-ए-मुस्हिल का अन्य नुस्ख़ाः**

  यह ऐसे उदरशूल व मस्तिष्कावरण में लाभदायक है जो किसी सूजन से होता है।

  औषधियाँः ख़ुब्बाज़ी, ख़त्मी, बिही दाना प्रत्येक 17.5 ग्राम।

  निर्माण-विधिः सब को एक पोटली में बन्द कर के 1620 मिलीलीटर पानी में इतना पकाएँ कि आधा शेष रह जाए फिर उस में फ़ुलूस-ए-ख़्यार शंबर और शीर-ए-खिशत प्रत्येक 35 ग्राम और रोग़न-ए-बनफ़्शा 52.5 ग्राम मिला कर हुक़्ना करें।

- **हुक़्ना का अन्य नुस्ख़ाः**

  औषधियाँ, निर्माण एवं प्रयोग-विधिः शकर सुर्ख़ 35 ग्राम,आब-ए-बर्ग-ए-चुक़ुन्दुर 175 ग्राम, रोग़न-ए-बादाम 35 ग्राम, बूरह 7 ग्राम को एक साथ मिलाएँ और गरम दूध के साथ मिला कर हुक़्ना करें।

- **हुक़्ना-ए-मुस्हिल का अन्य नुस्ख़ाः**

  यह Pneumocolic में लाभदायक है।

  औषधियाँः शहम-ए-हन्ज़ल 3.5 ग्राम, क़न्तूरियू नदक़ीक़ 17.5 ग्राम, वरक़-ए-सुद्दाब और फ़ूदनह प्रत्येक 21 ग्राम, सअतर फ़ारसी 17.5 ग्राम।

  निर्माण-विधिः सब को पका कर साफ़ कर लें। शहद 35 ग्राम, रोग़न-ए-कुन्जद 35 ग्राम, जुन्द बेद स्तर, सकबीनज, जावशीर प्रत्येक 17.5 ग्राम मिला कर हुक़्ना करें।

- **हुक़्ना-ए-मुस्हिल का अन्य नुस्ख़ाः**

  यह Pneumocolic में लाभदायक है जो मल के सूखेपन के कारण होता है।

  औषधियाँः हुल्बा, तुख़्म-ए-कताँ, ख़त्मी और बाबूना प्रत्येक 17.5 ग्राम, उन्नाब और सपिस्ताँ प्रत्येक 20 दाना, सबूस-ए-गन्दुम 24 ग्राम, रोग़न-ए-कुन्जद 52.5 ग्राम, शहद 35 ग्राम, ज़हरा-ए-गाव 7 ग्राम, नमक और बूरह अरमनी प्रत्येक 3.5 ग्राम, शकर सुर्ख़ और तुरन्जबीन 52.5 ग्राम।

  निर्माण-विधिः सब को मिलाकर हुक़्ना तैयार करें।

- **हुक़्ना का अन्य नुस्ख़ाः**

  यह उदरशूल में लाभदायक है।

  औषधियाँः हुल्बा, बज्र-ए-कताँ, अन्जीर, उन्नाब, सपिस्ताँ, बनफ़्शा, ख़त्मी, बाबूना, इक्लीलुलमलिक, ख़सक, शिब्त और सबूस प्रत्येक 24 ग्राम।

  निर्माण-विधिः सब को नियमानुसार पकाएँ फिर फ़ानीज़ 35 ग्राम, बूरह अरमनी 7 ग्राम, नमक-ए-हिन्दी 3.5 ग्राम, रोग़न-ए-कुन्जद 24.5 ग्राम सम्मिलित करें।

- **हुक़्ना-ए-मुस्हिल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Phlegmocolic, क़ूलन्ज सिफ़ली, Pneumocolic में लाभदायक है। उदरशूल को खोलता व आँतों को साफ़ करता है।

औषधियाँ, निर्माण-विधि एवं प्रयोग-विधिः तुख़्म-ए-कताँ, हुल्बा, मग़ज़-ए-हब्बुलक़ुरतुम प्रत्येक 35 ग्राम, अन्जीर 10 दाना, सुद्दाब, शिब्त प्रत्येक 17.5 ग्राम, बर्ग-ए-चुक़ुन्दुर, बर्ग-ए-कबर प्रत्येक 24 ग्राम, सबूस-ए-गन्दुम 24 ग्राम, बादाम तल्ख़ मुक़श्शर 17.5 ग्राम, बर्ग-ए-ख़त्मी 35 ग्राम, उन्नाब, सपिस्ताँ प्रत्येक 30 दाना, अस्लुस्सूस, बर्ग-ए-ग़ार प्रत्येक 35 ग्राम को नियमानुसार पका कर साफ़ कर लें फिर सकबीनज, मुक़िल, उशक़ प्रत्येक 3.5 ग्राम, जावशीर 1.75 ग्राम, जुन्द बेद स्तर 832 मिलीग्राम, नमक-ए-निफ़्ती 3.5 ग्राम, फ़ानीज़ 42 ग्राम, रोग़न-ए-कलकलानह 24.5 ग्राम, माजून-ए-कलकलानज 42 ग्राम, शहद 35 ग्राम, रोग़न-ए-पीह-बत्त, पीह-ए-मुर्ग़ प्रत्येक 35 ग्राम को पिघलाएँ। नियमानुसार हुक्ना तैयार कर के हल्का गरम हुक्ना करें। यह हुक्ना बहुत शक्तिशाली और अच्छे स्वभाव के व्यक्तियों के लिए लाभदायक है। आवश्यकतानुसार इन औषधियों में अधिक शक्ति वाली औषधियों का वज़न कम कर दें या फिर उन को निकाल दें।

- **हुक़्ना-ए-मुस्हिल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Gout और Arthralgia में लाभदायक है।

औषधियाँः शाहतरह, क़ैसूम, ज़रावन्द, बीख़-ए-कबर, ज़रावन्द, बीख़-ए-कबर, क़न्तूरियू नदक़ीक़, बीख़-ए-इस्पन्दान, सअतर, सूरन्जान और हाशा प्रत्येक 35 ग्राम, शहाम-ए-हन्ज़ल और माज़रयून प्रत्येक 1.75 ग्राम, रोग़न-ए-कुन्जद 70 ग्राम।

निर्माण-विधिः नियमानुसार हुक्ना तैयार कर के प्रयोग करें।

- **हुक़्ना का अन्य नुस्ख़ाः**

यह पहले नुस्खे की तुलना में अधिक शक्तिशाली है। Arthralgia में लाभदायक है।

औषधियाँः हुल्बा, मग़ज़-ए-बादाम तल्ख़ मुक़श्शर, बज्र-ए-कताँ प्रत्येक 24 ग्राम, बाबूना, शिब्त, हब्बुलग़ार प्रत्येक 17.5 ग्राम, अफ़्सन्तीन 24.5 ग्राम, सकबीनज, उशक़, जावशीर, हन्ज़ल प्रत्येक 10.5 ग्राम, बज्र-ए-सुद्दाब, बज़्र-ए-शिब्त, बज्र-ए-करफ़्स प्रत्येक 52.5 ग्राम, उन्नाब 10 दाना, सपिस्ताँ 40 दाना, सूरन्जान, मुक़िलुलयहूद प्रत्येक 35 ग्राम।

निर्माण-विधि एवं प्रयोग-विधिः कूटने योग्य औषधियों को अर्धकुटा कर के पकाएँ। Exudates को घोल लें। सब को मिलाएँ। रोग़न-ए-ख़ैरी 280 मिलीलीटर मिला कर प्रयोग करें।

## • हुक़्ना-ए-मुस्हिल का अन्य नुस्ख़ाः

यह Phlegm और Pneum के कारण होने वाले Arthralgia, Gout और कमर दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँः बाबूना, इक्लीलुलमलिक, ख़सक, हुल्बा, मग़ज़-ए-हब्बुलक़ुरतुम, तुख़्म-ए-कताँ प्रत्येक 35 ग्राम, अन्जीर ज़र्द, उन्नाब, सपिस्ताँ प्रत्येक 20 दाना, सकबीनज, मुक़िल प्रत्येक 7 ग्राम, जुन्द बेद स्तर 3.5 ग्राम, बर्ग-ए-चुक़ुन्दुर 24 ग्राम।

निर्माण-विधि एवं प्रयोग-विधिः सब को नियमानुसार पका कर साफ़ कर लें फिर Exudates को उस में घोलें। तत्पश्चात उस में साफ़ शहद, रोग़न-ए-गाव और आबकामा प्रत्येक 35 ग्राम, रोग़न-ए-सोसन, रोग़न-ए-खैरी प्रत्येक 17.5 ग्राम मिलाएँ।

सेवन-मात्रा एवं प्रयोग-विधिः आवश्यकतानुसार प्रयोग करें।

## • हुक़्ना-ए-मुस्हिल का अन्य नुस्ख़ाः

इस से भी वही लाभ प्राप्त होते हैं।

औषधियाँः गुल-ए-बाबूना, शिब्त, हुल्बा, सूरन्जान, बूज़ीदान प्रत्येक 24.5 ग्राम, उन्नाब, सपिस्ताँ प्रत्येक 15 दाना, मवीज़ मुनक़्क़ा 20 दाना, तुख़्म-ए-करफ़्स 7 ग्राम, मग़ज़-ए-बादाम तल्ख़ 10.5 ग्राम, सकबीनज, मुक़िल प्रत्येक 7 ग्राम, अन्जीर 10 दाना, शकर सुर्ख़ 35 ग्राम, नमक और बूरह अरमनी प्रत्येक 3.5 ग्राम, रोग़न-ए-खैरी और रोग़न-ए-बेद अन्जीर प्रत्येक 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधि एवं प्रयोग-विधिः जैसा कि कई बार उल्लेख किया गया है, कूटने योग्य औषधियों को अर्धकुटा कर लें फिर सब को एक साथ पका कर साफ़ कर लें और Exudates को उस में घोलें। तत्पश्चात उस में रोग़न और शकर मिलाएँ।

सेवन-मात्रा एवं प्रयोग-विधिः आवश्यकतानुसार प्रयोग करें।

## • हुक़्ना-ए-मुस्हिल का अन्य नुस्ख़ाः

यह छोटे कीड़ों के कारण होने वाली गुदा की खारिश और दग़दग़ा में लाभदायक है।

औषधियाँः बाबूना, इकलीलुलमलिक, दरमना तुर्की, ब्रन्जासिफ़, वरक़-ए-सुद्दाब और बर्ग-ए-दरख़्त-ए-शफ़्तालू प्रत्येक 17.5 ग्राम, बर्ग-ए-चुक़ुन्दुर 24 ग्राम।

निर्माण-विधि एवं प्रयोग-विधिः पका कर साफ़ करें। रोग़न-ए- मग़ज़-ए-शफ़्तालू 35 मिलीलीटर, ज़हरा-ए-गाव, नमक, बूरह अरमनी प्रत्येक 1.75 ग्राम मिला कर प्रयोग करें।

## • हुक़्ना-ए-मुस्हिल का अन्य नुस्ख़ाः

यह तरल स्वभाव के व्यक्तियों के लिए लाभदायक है। यह आँतों को कीड़ों और तरल पदार्थों से पाक करता है।

औषधियाँ: शहम-ए-हन्ज़ल 3.5 ग्राम, क़न्तूरियून दक़ीक़ और अफ़्सन्तीन रूमी प्रत्येक 35 ग्राम।

निर्माण-विधि एवं प्रयोग-विधि: इन तीनों औषधियों को 420 मिलीलीटर पानी में इतना पकाएँ कि 210 मिलीलीटर शेष रह जाए फिर उस को साफ़ कर लें और उस में रोग़न-ए-ज़ैतून 35 मिलीलीटर, आबकामा 70 ग्राम, शहद 35 ग्राम, नमक 1.75 ग्राम डाल कर अच्छी तरह मिलाएँ और नियमानुसार हुक्ना तैयार करें।

### ● हुक़्ना-ए-मुस्हिल का अन्य नुस्ख़ा:

यह गरम स्वभाव के व्यक्तियों के लिए लाभदायक है। यह आँतों को कीड़ों से पाक करता है।

औषधियाँ, निर्माण व प्रयोग-विधि: पोस्त-ए-दरख़्त-ए-तूत, पोस्त-ए-दरख़्त-ए-अनार तुर्श प्रत्येक 35 ग्राम को 420 मिलीलीटर पानी में पकाएँ फिर उस मतबूख में से 105 मिलीलीटर लेकर 70 मिलीलीटर आब-ए-बर्ग-ए-शफ़्तालू के साथ मिलाएँ और 35 मिलीलीटर रोग़न-ए-मग़ज़-ए-उस्तुख़्वान-ए-शफ़्तालू सम्मिलित कर के हुक्ना करें।

### ● हुक़्ना का अन्य नुस्ख़ा:

यह शरीर के निचले भागों में ठंडक व सुस्ती में लाभदायक है। यह कमर दर्द और Sciatica में भी लाभदायक है।

औषधियाँ, निर्माण-विधि और प्रयोग-विधि: मुक़िल, उशक और सकबीनज प्रत्येक 17.5 ग्राम, जावशीर और जुन्द बेद स्तर प्रत्येक 3.5 ग्राम, नानख़्वाह , राज़ियाना, तुख़्म-ए-करफ़्स और सीसालियूस प्रत्येक 7 ग्राम, हुल्बा, ख़सक, शिब्त और बाबूना प्रत्येक 24.5 ग्राम को 420 मिलीलीटर पानी और 1260 मिलीलीटर बकरी के दूध में इतना पकाएँ कि एक तिहाई शेष रह जाए। उस को साफ़ कर लें और उस में रोग़न-ए-गाव, रोग़न-ए-कुन्जद और शहद प्रत्येक 35 ग्राम मिला कर प्रयोग करें।

### ● हुक़्ना का अन्य नुस्ख़ा:

यह Renal ulcer, Nephralgia एवं Nephritis में आराम पहुँचाता है।

औषधियाँ, निर्माण-विधि और प्रयोग-विधि: कशक-ए-जौ, आब-ए-बर्ग-ए-असर्राई, आब-ए-बर्ग-ए-लिसानुलहमल, सबूस-ए-गन्दुमप्रत्येक एक एक भाग लेकर पकाएँ और साफ़ करने के बाद उस पानी में उस के समभाग रोग़न-ए-गुल मिला कर हुक्ना करें।

### ● हुक़्ना-ए-मुस्हिल का अन्य नुस्ख़ा:

यह Nephritis में लाभदायक है, दर्द में आराम पहुँचाता है और Nephrolith/

Renal Stone को पारा पारा करता है।

औषधियाँ, निर्माण-विधि, प्रयोग-विधिः कशक-ए-जौ, सबूस-ए-गन्दुम, ख़सक, पर्सियाउशाँ, ख़त्मी, बर्ग-ए-चुक़ुन्दुर, बर्ग-ए-कबर प्रत्येक 1-1 भाग लेकर पकाएँ। साफ़ करने के बाद उस के समभाग में रोग़न-ए-गुल मिला कर हुक़्ना तैयार करें।

प्रयोग-विधिः आवश्यकतानुसार हुक़्ना करें।

- **हुक़्ना-ए-मुस्हिल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Nephritis, Cystitis/Urethritis में दर्द लाभदायक है, Analgesic है और Nephrolith को पारा पारा करता है।

औषधियाँ, निर्माण-विधि और प्रयोग-विधिः कशक-ए-जौ, सबूस-ए-गन्दुम, ख़सक, पर्सियाउशाँ, ख़त्मी, बर्ग-ए-चुक़ुन्दुर और बर्ग-ए-कबर में से प्रत्येक एक एक भाग लेकर पकाएँ और साफ़ कर के रोग़न-ए-बनफ़्शा 35 ग्राम और फ़ुलूस-ए-ख़्यार शंबर 35 ग्राम मिला कर हुक़्ना करें।

- **हुक़्ना का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Nephritis और Cystitis में लाभदायक है, Analgesic है। Nephrolith को पारा पारा करता है।

औषधियाँः ख़त्मी सफ़ेद 35 ग्राम, हुल्बा और जौ मुक़श्शर प्रत्येक 24 ग्राम, काकनज 17.5 ग्राम, तुख़्म-ए-ख़ुब्बाज़ी और तुख़्म-ए-कताँ प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को पका कर साफ़ करें। रोग़न-ए-गुल, लुआब-ए-तुख़्म-ए-मर्व, अस्ल-ए-फ़ुलूस-ए-ख़्यार शंबर प्रत्येक 35 ग्राम मिला कर घोल तैयार करें।

❑❑❑

## द्वितीय वर्ग: धारण-शक्ति वाले हुक़्ना के नुस्ख़े जो शक्तिवर्धक, कामोद्दीपक हैं और शरीर मोटा करते हैं

- **हुक़्ना-ए-मुम्सिक का नुस्ख़ा:**

यह आँतों के ज़ख़्म और पेचिश में लाभदायक है।

औषधियाँ: तुरन्ज फ़ारसी 70 ग्राम, अदस मुक़श्शर 35 ग्राम, जौ मुक़श्शर 52.5 ग्राम, गुलनार फ़ारसी 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को 840 मिलीलीटर पानी में इतना पकाएँ कि 210 मिलीलीटर शेष रह जाए फिर उस को साफ़ कर लें और सफ़ेदाब अर्ज़ीज़, तीन-ए-क़ब्रसी और काग़ज़ मुहर्रक़ प्रत्येक 35 ग्राम को हल्का कूट कर पके हुए ज़र्दी-ए-तुख़्म-ए-मुर्ग़ 2 की संख्या में और रोग़न-ए-गाव 7 ग्राम के साथ हावन में इतना मलें कि मरहम की भाँति हो जाए फिर उस को आब-ए-तुरन्ज और आब-ए-अदस में डाल कर हाथों से अच्छी तरह मिलाएँ यहाँ तक कि मरहम में अच्छी तरह मिल जाएँ।

प्रयोग-विधि: गरम दूध के साथ नियमानुसार प्रयोग करें।

- **हुक़्ना-ए-मुम्सिक का अन्य नुस्ख़ा:**

यह Intestinal Ulcers और Dysenteric diarrhoea में लाभदायक है।

औषधियाँ: कशक-ए-जौ, पीह-ए-गुर्दा-ए-बुज़ लुआब-ए-ब्रन्ज, प्रत्येक 1.75 ग्राम, ज़ाफ़रान, शयाफ़-ए-अबयज़ प्रत्येक 3.5 ग्राम, 1 पका हुआ ज़र्दी-ए-तुख़्म-ए-मुर्ग़।

निर्माण-विधि: सब को रोग़न-ए-गुल 7 ग्राम के साथ हावन में इत प्रकार मले कि वह मरहम की भाँति हो जाए फिर उस को लुआब-ए-ब्रन्ज और कशक-ए-जौ में डाल कर प्रयोग करें।

- **हुक़्ना-ए-मुम्सिक का अन्य नुस्ख़ा:**

यह Intestinal injury और Enteritis में लाभदायक है।

औषधियाँ एवं निर्माण-विधि: पोस्त-ए-दरख़्त-कनार, बलूत प्रत्येक 35 ग्राम, गुलनार, दाना-ए-मूरद, वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़ प्रत्येक 17.5 ग्राम, बर्ग-ए-मूरद 42 ग्राम को पकाएँ, आब-ए-लिसानुलहमल 17.5 ग्राम, ज़र्दी-ए-तुख़्म-ए-मुर्ग़, पीह-ए-गुर्दा-ए-बुज़, रोग़न-ए-गुल प्रत्येक 35 ग्राम, बुसुद, काग़ज़ मुहर्रक़ प्रत्येक 3.5 ग्राम, निशास्ता बिरयां, दमुलअखवैन, उसारा-ए-लिहयतुत्तीस प्रत्येक 17.5 ग्राम के साथ मिला कर नियमानुसार हुक़्ना तैयार करें।

- **हुक़्ना का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Intestinal injury और पेट से ख़ून बहने में लाभदायक है।

औषधियाँः माज़ू, शिब-ए-यमानी, अक़ाक़िया, दमुलअखवैन, वदअ मुहर्रक़, समग़-ए-अरबी, निशास्ता बिरयां प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर ऐसे पानी में पकाएँ जिस में तुरन्ज सुर्ख़, गुलनार, बर्ग-ए-मूरद प्रत्येक 24 ग्राम मिलाया गया हो। फिर उस में 2 पके हुए ज़र्दी-ए-बैज़ा-ए-मुर्ग़ और रोग़न-ए-बादाम 35 ग्राम सम्मिलित करें फिर सब को एक साथ अच्छी तरह मिलाएँ और नियमानुसार हुक़्ना तैयार करें।

- **हुक़्ना-ए-मुम्सिक का नुस्ख़ाः**

यह बवासीर के कारण होने वाले Proctalgia और Proctitis में लाभदायक है।

औषधियाँः बर्ग-ए-हिना, बर्ग-ए-इनबुस्सअलब, बर्ग-ए-कबर प्रत्येक 24 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को 420 मिलीलीटर पानी में पका कर साफ़ कर लें। रोग़न-ए-उस्तुख़्वान-ए-ज़र्द आलू 35 ग्राम, 2 ज़र्दी-ए-बैज़ा-ए-मुर्ग मिला कर नियमानुसार हुक़्ना तैयार करें।

- **हुक़्ना का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बादी बवासीर में लाभदायक है।

औषधियाँ एवं निर्माण-विधिः आब-ए-बर्ग-ए-शिब्त और आब-ए-बर्ग-ए-कबर प्रत्येक 10.5 ग्राम, रोग़न-ए-कुन्जद और रोग़न-ए-हब्बतुलखज़रा प्रत्येक 17.5 ग्राम, फ़ानीज़ 70 ग्राम को मिला कर नियमानुसार हुक़्ना तैयार करें।

- **हुक़्ना-ए-मुम्सिक का नुस्ख़ाः**

यह बवासीर और Proctitis में लाभदायक है।

औषधियाँ एवं निर्माण-विधिः आब-ए-बर्ग-ए-हिना, आब-ए-बर्ग-ए-खुर्फ़ह, आब-ए- लिसानुलहमल, आब-ए-असराई प्रत्येक 35 ग्राम को ज़र्दी-ए-बैज़ा-ए-मुर्ग़ 2 की संख्या में और रोग़न-ए-गुल 35 ग्राम के साथ मिला कर हुक़्ना तैयार करें।

- **हुक़्ना-ए-मुम्सिक का नुस्ख़ाः**

यह Cerebral Anemia में लाभदायक व कामोद्दीपक है।

औषधियाँ एवं निर्माण-विधिः आब-ए-ख़सक ताज़ा 70 ग्राम, बर्ग-ए-चुक़ुन्दुर 24 ग्राम, हुल्बा 24 ग्राम, पीह-ए-गुर्दा-ए-बुज़, मग़्ज़-ए-कल्ला-ए-बुज़, खुस्या-ए-बुज़ प्रत्येक 105 ग्राम को 1260 मिलीलीटर शीर-ए-गाव और 1260 मिलीलीटर पानी में इतना

पकाएँ कि आधा शेष रह जाए फिर उस को साफ़ कर लें और गरम दूध के साथ तीन बार प्रयोग करें।

- **हुक़्ना-ए-मुम्सिक का नुस्ख़ाः**

यह संभोग की शक्ति बढ़ाता और शरीर मोटा करता है।

औषधियाँ एवं निर्माण-विधिः कल्ला-ए-गोस्फ़न्द, खाया-ए-गोस्फ़न्द, हुल्बा, बूज़ीदान, दाना-ए-मुहल्लब, ख़ार-ए-ख़सक और तुख़्म-ए-शलग़म प्रत्येक 24 ग्राम को अर्धकुटा कर के 1620 मिलीलीटर साफ़ पानी में अच्छी तरह पकाएँ और साफ़ कर लें और फिर उस में रोग़न-ए-हब्बुलबान 70 ग्राम मिलाएँ और नियमानुसार हुक्ना तैयार करें।

- **हुक़्ना-ए-मुम्सिक का नुस्ख़ाः**

यह शरीर को मोटा करता है और कामोद्दीपक है।

औषधियाँ एवं निर्माण-विधिः दुंबा ताज़ा, पीह-ए-बत्त, कबूतर बच्चा, अन्जीर खुश्क, मवीज़ मुनक्क़ा, मग़ज़-ए-बिही दाना, मग़ज़-ए-हब्बुलक़ुर्तुम, मग़ज़-ए-हब्बतुलख़ज़रा, हुल्बा, तुख़्म-ए-कताँ प्रत्येक उचित मात्रा में लेकर भेड़ के दूध जिस में पानी मिलाया गया हो, में मिला कर इतना पकाएँ कि सभी द्रव्य गुण गल जाएँ। उस को साफ़ कर के रोग़न-ए-नरगिस और रोग़न-ए-खैरी मिला कर गरम दूध के साथ हुक्ना करें। लगातार तीन दिन इसी प्रकार से हुक्ना तैयार कर के प्रयोग करें।

- **हुक़्ना का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः कल्ला-ए-गोस्फ़न्द 1, कबूतर बच्चा 3, नखूद मुक़श्शर 24 ग्राम, मुग़ास, बूज़ीदान, शक़ाक़ुल मिश्री प्रत्येक 35 ग्राम, पीह-ए-सोसमार, रोग़न-ए-दाना-ए-मुहल्लब प्रत्येक 17.5 ग्राम, दूध 52.5 मिलीलीटर।

निर्माण-विधिःसभी औषधियों को कल्ला के साथ तन्दूर में पकाएँ और अच्छी तरह गला कर साफ़ कर लें फिर कल्ला के उस पानी को 175 मिलीलीटर की मात्रा में लेकर रोग़नों औरं ताज़ा दूध के साथ मिला कर हुक्ना तैयार करें।

- **हुक़्ना-ए-मुम्सिक का नुस्ख़ाः**

यह ऐसे ठंडे स्वभाव के व्यक्ति के लिए लाभदायक है जो यौन-संबंध के समय कमज़ोर पड़ जाता हो।

औषधियाँः तुख़्म-ए-कताँ और हुल्बा प्रत्येक 105 ग्राम, तुख़्म-ए-तुर्ब 35 ग्राम, तुख़्म-ए-जिर्जीर 17.5 ग्राम, तुख़्म-ए-अन्जीर 70 ग्राम।

निर्माण-विधिःसभी औषधियों को 1680 मिलीलीटर पानी में इतना पकाएँ कि दो तिहाई भाग जल जाए और एक तिहाई भाग शेष रह जाए फिर उस को साफ़ कर लें और रोग़न-ए-सोसन और रोग़न-ए-नरगिस प्रत्येक 17.5 ग्राम, पीह-ए-बत्त, पीह-ए-शुत्र, पीह-ए-गुर्दा-ए-गाव प्रत्येक 17.5 ग्राम को पानी की भाँति करने के बाद उसी मतबूख़ में मिलाएँ और हुक़्ना तैयार करें।

- **हुक़्ना का अन्य नुस्ख़ाः**

यह यौन-संबंध की शक्ति को बढ़ाता है और कमर की कमज़ोरी में लाभदायक है।

औषधियाँः बकरे का कल्ला और पायचा, बकरे का खाया, गोस्फ़न्द का खाया, तुख़्म-ए-पियाज़, तुख़्म-ए-गन्दना, तुख़्म-ए-शलग़म, ख़सक और हुल्बा प्रत्येक 24 ग्राम।

निर्माण-विधिःसभी औषधियों को 1260 मिलीलीटर पानी में इतना पकाएँ कि 420 मिलीलीटर शेष रह जाए फिर उस को साफ़ कर लें और रोग़न-ए-हब्बतुलखज़रा, रोग़न-ए-गर्दगान, रोग़न-ए-ख़सक और रोग़न-ए-बिहीदान प्रत्येक 17.5 मिलीलीटर को उपर्युक्त मतबूख़ में मिलाएँ और तीन बार हुक़्ना तैयार करें।

- **हुक़्ना का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः मग़ज़-ए-पंबादाना, मग़ज़-ए-हब्बतुलखज़रा, मग़ज़-ए-हब्बतुलक़ुर्तम, पीह-ए-बत्त, पीह-ए-खरूस प्रत्येक 35 ग्राम, शहदाना 70 ग्राम, माही रूबियान 35 ग्राम, खाया-ए-गोस्फ़न्द और क़ज़ीब-ए-गाव प्रत्येक 2 की संख्या में, हल्यून 70 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को सिर्का, आब-ए-ख़सक ताज़ा और भेड़ के दूध में मिला कर साफ़ कर लें और हुक़्ना करें तो यह बहुत प्रभावी होता है लेकिन शर्त यह है कि इस के प्रयोग के बाद दस दिनों तक यौन संबंध ना बनाया जाए और जिस दिन भी हुक़्ना करें उस के दस दिनों के बाद ही यौन संबंध बनाएँ।

❑❑❑

शष्टम खण्ड

# तृतीय अध्याय

# विरेचक एवं धारण-शक्ति वाले शयाफ़ के नुस्खे

**यह अध्याय दो वर्गों पर आधारित है**

## प्रथम वर्गः तीक्ष्ण-विरेचक शयाफ़ के नुस्खे

ज्ञात रहे कि शयाफ़ औषधियों को प्रभाव, हुक्ना की तुलना में कमज़ोर होता है लेकिन जिन व्यक्तियों को बहुत जल्दी मलत्याग होता है अर्थात शौच के लिए थोड़ी सी हरकत की ही आवश्यकता पड़ती है, उन के लिए लाभदायक होता है। जब बड़ी आँत और Colon के अन्दर मवाद एकत्रित हो जाते हैं और शरीर को थोड़ी सहायता की आवश्यकता पड़ती है तो उस स्थिति में शयाफ़ का प्रयोग लाभदायक होता है। शयाफ़ का प्रयोग पट्ठों के रोग, Backache, Sciatica, Nephralgia, Enteritis, गुदा के रोग, Uterine Disease और यौनि के रोगों में बहुत लाभदायक है। ऐसे कमज़ोर व्यक्ति के लिए शयाफ़ का प्रयोग ज़्यादा बेहतर है जो कमज़ोरी या किसी अन्य कारण से मुस्हिल और हुक्ना को बरदाशत ना कर पाता हो। अगर यह मालूम हो कि रोगी को शौच साफ़ और आसानी से होता है तो मात्र शयाफ़ का प्रयोग करना चाहिए क्योंकि यह अधिक बेहतर एवं लाभदायक है।

- **शयाफ़-ए-मुस्हिल का नुस्खाः**

यह उदरशूल को खोलता है, बलग़म और सफ़रा को शरीर से बाहर निकालता है और कमर दर्द में आराम पहुँचाता है।

औषधियाँः सकबीनज, मुक़िल, जावशीर, उशक़, नमक-ए-हिन्दी, शहम-ए-हन्ज़ल, बूरह अरमनी, सक़मूनिया, तुर्बुद सफ़ेद और हब्बुन्नील सभी समभाग में।

निर्माण-विधिः Exudates को सुद्दाब में घोलें, शेष को कूट छान कर उस में मिलाएँ।

- **शयाफ़-ए-मुस्हिल का अन्य नुस्खाः**

यह कमर दर्द में आराम पहुँचाता है, रेचक है। शौच साफ़ लाता है। बलग़म के

कारण होने वाले विभिन्न प्रकार के जोड़ों के रोगों में लाभदायक है।

औषधियाँः सकबीनज, जावशीर, बूरह अरमनी, उशक़, ज़न्जबील, सूरन्जान, बूज़ीदान, शहम-ए-हन्ज़ल, तुख़्म-ए-करफ़्स, राज़ियाना, अनीसून, नमक-ए-हिन्दी, अन्ज़रूत, जुन्द बेद स्तर, ज़रन्बाद, क़ुस्त तल्ख़, माहीज़हरज, सुद्दाब ख़ुश्क।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-सुद्दाब के साथ मिलाएँ।

- **शयाफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह जोड़ों के दर्द, कमर दर्द, बवासीर में लाभदायक है।

औषधियाँः सकबीनज, जावशीर, मुक़िल, बारज़द, शहम-ए-हन्ज़ल, मग़्ज़-ए-बिही दाना, बेद अन्जीर, महीज़हरज और बूज़ीदान प्रत्येक 5.25 ग्राम, सूरन्जान और तुर्बुद सफ़ेद प्रत्येक 10.5 ग्राम, जुन्द बेद स्तर 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सबको कूट छान कर आब-ए-गन्दनाके साथ मिलाएँ।

- **शयाफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह क़ूलन्ज को खोलता है और रेचक है।

औषधियाँः बनफ़्शा 7 ग्राम, गुल-ए-ख़त्मी सफ़ेद 10.5 ग्राम, सना मक्की 17.5 ग्राम, नमक-ए-हिन्दी 3.5 ग्राम, अस्ल-ए-ख़्यार शंबर और शकर सुर्ख़ प्रत्येक 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर मिलाएँ और शयाफ़ तैयार कर के प्रयोग करें।

- **शयाफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से भी वही लाभ प्राप्त होते हैं।

औषधियाँः बनफ़्शा 17.5 ग्राम, बूरह अरमनी, तुर्बुद सफ़ेद प्रत्येक 10.5 ग्राम, सक़मूनिया, नमक-ए-हिन्दी प्रत्येक 7 ग्राम, क़राक़रूत, फ़ानीज़ प्रत्येक 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः नियमानुसार शयाफ़ तैयार करें।

- **शयाफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Ascites Succatous में लाभदायक है।

औषधियाँः सुद्दाब ख़ुश्क, हुरमुल, तुख़्म-ए-करफ़्स, तुर्बुद, राज़ियाना, बूरह अरमनी प्रत्येक 3.5 ग्राम, शकर सुर्ख़ 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः आब-ए-सुद्दाब के साथ शयाफ़ तैयार करें।

- **शयाफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

जब मुस्हिल देने के समय कोई कमी रह जाती है तो उस मुस्हिल के बाद यह शयाफ़ प्रयोग करते हैं।

औषधियाँः साबून इराक़ी, गुल, नमक प्रत्येक 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर शकर सुर्ख़ के क़िवाम में मिलाएँ।

- **शयाफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह क़ूलन्ज को खोलता है।

औषधियाँः जुन्द बेद स्तर, ज़हरा-ए-गाव, बूरह अरमनी और क़िस्साउलहिमार प्रत्येक एक एक भाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर शयाफ़ तैयार करें।

- **शयाफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गरमी से होने वाले बुख़ार और रोगों में लाभदायक है।

औषधियाँः गुल-ए-ख़त्मी, बनफ़्शा, नमक-ए-तआम, साबून इराक़ी प्रत्येक एक एक भाग, बूरह अरमनी अर्धभाग।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान लें और शकर के क़िवाम में मिला कर शयाफ़ तैयार करें।

प्रयोग-समय एवं विधिः आवश्यकता के समय प्रयोग करें।

- **शयाफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गरमी के कारण होने वाले बुख़ार और रोगों में लाभदायक है। यह आसानी से शौच लाता है।

औषधियाँः बनफ़्शा, ख़त्मी प्रत्येक 7 ग्राम, नमक-ए-तआम 3.5 ग्राम, अस्ल-ए-ख़्यार शंबर 17.5 ग्राम, शकर सुर्ख़ 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर नियमानुसार शयाफ़ तैयार करें। रोग़न-ए-गुल या बनफ़्शा से चर्ब करने के बाद प्रयोग करें।

- **शयाफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह छोटे कीड़ों के कारण होने वाली गुदा की खारिश और दग़दग़ा में लाभदायक है और कृमिनाशक है।

औषधियाँः मग़ज़-ए-उश्ना, शफ़्तालू, बूरह अरमनी, ज़हरा-ए-गाव, शहमए-हन्ज़ल और नमक-ए-हिन्दी 1-1 भाग।

निर्माण-विधिः नियमानुसार शयाफ़ बना कर प्रयोग करें।

- **शयाफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से भी वही लाभ प्राप्त होते हैं।

औषधियाँः शहमए हन्ज़ल, नमक हिन्दी, अफ़्सन्तीन रूमी, तुर्मुस शामी, क़िन्बील, क़न्तूरियून दक़ीक़, मग़्ज़ उस्तुख़्वान-ए-शफ़्तालू।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर आब-ए-बर्ग-ए-शफ़्तालू में मिलाएँ और शयाफ़ तैयार करें। आवश्यकता पड़ने पर प्रयोग करें।

- **शयाफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह उदरशूल में लाभदायक है।

औषधियाँः गुल-ए-ख़त्मी, बनफ़्शा, अन्ज़रूत, बूरह अरमनी प्रत्येक एक एक भाग, सक़मूनिया एक चौथाई भाग।

निर्माण-विधिः कूट कर शकर-ए-मुतअक़्क़द में मिलाएँ।

- **शयाफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह उदरशूल के रोगियों के लिए लाभदायक है।

औषधियाँः ज़हरा-ए-गाव, शहम-ए-हन्ज़ल, गुल-ए-ख़त्मी, बूरह अरमनी प्रत्येक 105, सकबीनज 3.5, और मुक़िल 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः आवश्यकतानुसार शयाफ़ तैयार करें।

- **शयाफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह रेचक है, यह गरमी के कारण होने वाले बुख़ार और रोगों में लाभदायक है। यह बच्चों के लिए लाभदायक है।

औषधियाँ एवं निर्माण-विधिः तुरन्जबीन 35 ग्राम को पानी में घोल कर साफ़ कर के इतना पकाएँ कि गाढ़ा हो जाए। उस में बूरह अरमनी और साबून इराक़ी मिला कर फ़तीले तैयार करें और सुखा लें फिर उस में से इच्छानुसार फ़तीले का प्रयोग करें।

- **शयाफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बच्चों और कमज़ोर व्यक्तियों के लिए लाभदायक है।

औषधियाँः मोम आब ग़ैरमग़सूल 7 ग्राम, नमक, बूरह अरमनी प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः नमक, बूरह अरमनी कूट कर मोम के साथ शयाफ़ बनाएं। रोग़न-ए-गुल से चर्ब करने के बाद प्रयोग करें।

- **शयाफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँ एवं निर्माण-विधिः साबून ताज़ा को शयाफ़ की भाँति तैयार करें। उस पर रोग़न-ए-गुल चर्ब कर के प्रयोग करें।

- **शयाफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह क़ूलन्ज को खोलता है, गुदा में खारिश का कारण बनने वाले कीड़ों और गाढ़े चिपचिपे द्रव्यों को बाहर निकालता है। अगर इस को रोग़न-ए-बादाम तल्ख़ में घोल कर कान में क़तूर किया जाए तो यह कान में भारीपन, Tinnitus, और गाढ़ी Pneum के कारण पैदा होने वाली आवाज़ में लाभदायक है।

औषधियाँः शहम-ए-हन्ज़ल 3.5 ग्राम, बूरह अरमनी 10.5 ग्राम, जुन्द बेद स्तर, ज़रावन्द तवील, उसारा-ए-अफ़्सन्तीन और क़ुस्त तल्ख़प्रत्येक 1.75 ग्राम, फ़र्फ़ियून 416 मिलीग्राम, नमक-ए-हिन्दी और हब्बुस्सुंबुल प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर ज़हरा-ए-गाव में मिलाएँ। शयाफ़ तैयार कर के सुखा लें और जब भी इच्छा हो प्रयोग करें।

- **शयाफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह तरल पदार्थों और बलग़म से होने वाले Sciatica, Gout, Arthralgia, Coxalgia में लाभदायक है और क़ूलन्ज को खोलता है।

औषधियाँः मुक़िल, जावशीर, नमक-ए-हिन्दी, सकबीनज, शहम-ए-हन्ज़ल, उशक़, ज़रन्बाद, सूरन्जान, ज़न्जबील, अन्ज़रूत, माहीज़हरज, बर्ग-ए-सुद्दाब, अनीसून, बूरह अरमनी 1-1 भाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर फ़ानीज़ के साथ फ़तीला बनाएँ जिन में से प्रत्येक फ़तीला खिन्सर उँगली के बराबर का हो, और आवश्यकता के समय चर्ब कर के प्रयोग करें।

- **शयाफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Pneumocolic में लाभदायक है।

औषधियाँः बूरह अरमनी, नानख़्वाह , नमक-ए-हिन्दी, तुख़्म-ए-शिब्त 1-1 भाग।

निर्माण-विधिः आब-ए-बर्ग-ए-सुद्दाब और शहद का क़िवाम तैयार करें। सब को कूट छान कर मिलाएँ और शयाफ़ तैयार करें।

❑❑❑

## द्वितीय वर्गः धारण-शक्ति वाले शयाफ़ के नुस्खे

- **शयाफ़-ए-मुम्सिक का नुस्ख़ाः**

यह क़ब्ज़ पैदा करता है और ख़ून बहने को रोकता है।

औषधियाँः उसारा-ए-लिहयतुत्तीस, अक़ाक़िया, जुफ्त बलूत, दमुलअखवैन प्रत्येक 3.5 ग्राम, सफ़ेदाब अर्ज़ीज़ और सदफ़ सोख़्ता प्रत्येक 1.75 ग्राम, गिल-ए-अरमनी और समग़-ए-अरबी प्रत्येक 416 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर आब-ए-लिसानुलहमल के साथ मिलाएँ, शयाफ़ तैयार करें और प्रयोग करें।

- **शयाफ़-ए-मुम्सिक का अन्य नुस्ख़ाः**

यह दस्त में लाभदायक है।

औषधियाँः मुर, अक़ाक़िया, बज़रुलबन्ज, समग़-ए-अरबी और ब्रन्ज सुर्ख़ बिरयाँ।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर आब-ए-मूरद में मिलाएँ।

- **शयाफ़-ए-मुम्सिक का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Constipative है औरख़ूनी दस्त और ख़ूनी बवासीर में लाभदायक है।

औषधियाँः अक़ाक़िया, समग़-ए-अरबी, गुलनार, कज़माज़ज, जुफ्त बलूत, अन्ज़रूत बिरयाँ।

निर्माण-विधिः कूट कर आब-ए-बर्ग-ए-मूरद में मिलाएँ।

- **शयाफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह पेचिश में लाभदायक है और अत्याधिक लाभ वाला है।

औषधियाँः कुन्दुर, मुरमक्की, दमुलअखवैन, अफ़ियून, केसर।

निर्माण-विधिः सब को 1-1 भाग लेकर कूट छान लें और आब-ए-पोस्त-ए-अनार मिला कर शयाफ़ तैयार करें।

प्रयोग समयः सोते समय प्रयोग करें।

- **शयाफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह पेचिश और दस्त में लाभदायक है।

औषधियाँः समग़-ए-अरबी बिरयां और गिल-ए-अरमनी।

निर्माण-विधिः सब को समभाग में कूट कर आब-ए-मूरद के साथ मिलाएँ।

- **शयाफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह उस पेचिश में लाभदायक है जो बहुत ज़्यादा दर्द व बेक़रारी के साथ होता है।

औषधियाँः मुर मक्की, माज़ू सब्ज़, अफ़ियून 1-1 भाग।

निर्माण-विधिः शयाफ़ तैयार करें और प्रयोग करें।

- **शयाफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह उस पेचिश में लाभदायक है जिस का कारण बड़ी आँतें होती हैं।

औषधियाँः गुल-ए-ख़त्मी, खुब्बाज़ी, हुल्बा, तुख़्म-ए-कताँ, इक्लीलुलमलिक, बाबूना सभी 1-1 भाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट लें फिर ज़र्दी-ए-बैज़ा-ए-मुर्ग़, रोग़न-ए-गुल मिला कर शयाफ़ तैयार करें और प्रयोग करें।

- **शयाफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह ख़ूनी बवासीर, पेचिश और ग़दयूत में लाभदायक है। इस को यौन-क्रिया से पहले प्रयोग करें तो ग़दयूत में लाभ पहुँचाता है।

औषधियाँः अक़ाक़िया, आमला, गुलनार, समग़ अरबी, कज़माज़ज, माज़ू, जुफ्त बलूत।

निर्माण-विधिः सब को समभाग में आब-ए-बर्ग-ए-मूरद के साथ मिला कर शयाफ़ तैयार करें और प्रयोग करें।

- **शयाफ़-ए-मुम्सिक का नुस्ख़ाः**

यह ग़दयूत में लाभदायक है।

औषधियाँः अक़ाक़िया, रामिक, गुलनार, कुन्दुर और माज़ू प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर ऐसे आब-ए-बर्ग-ए-मूरद में मिलाएँ जिस में समग़-ए-अरबी को घोला गया हो, फिर शयाफ़ तैयार करें और प्रयोग करें।

- **शयाफ़-ए-मुम्सिक का नुस्ख़ाः**

यह बवासीर के ख़ून को रोकता है और Constipative है।

औषधियाँः कुन्दुर, अन्ज़रूत, दमुलअखवैन, गुलनार, क़िर्फ़ह, ज़ाज सफ़ेद प्रत्येक 3.5 ग्राम, ज़न्गार 416 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः शहद मिलाकर शयाफ़ तैयार करें।

- **शयाफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Fistula में लाभदायक है, बवासीरी ख़ून को रोकता है।

औषधियाँः क़न्तूरियून दक़ीक़, बीख़-ए-सोसन, अन्ज़रूत, माज़ू प्रत्येक 2.25 ग्राम,

ज़न्गार 416 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान कर दाने दार शहद में मिलाएँ और शयाफ़ तैयार कर के प्रयोग करें।

- **शयाफ़-ए-मुम्सिक का नुस्खा:**

यह यौनि से खून बहने, उसके अल्सर व ज़ख़्म को ठीक करता है।

औषधियाँः सफ़ेदाब मग़सूल, गिल-ए-मख़्तूम, कुन्दुर, दमुलअखवैन प्रत्येक 3.5 ग्राम, अफ़ियून 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर सफ़ेदी-ए-बैज़ा-ए-मुर्ग़ के साथ मिलाएँ और शयाफ़ तैयार कर के मूत्रमार्ग में रखें।

- **शयाफ़-ए-मुम्सिक का नुस्खा:**

इस से भी वही लाभ प्राप्त होते हैं। यह Urethral Ulcer और मूत्रमार्ग में ज़ख्म के कारण होने वाले पेशाब के जलन में आराम पहुँचाता है और मुजर्रब है।

औषधियाँः शादनज मग़सूल, दमुलअखवैन 1-1 भाग, मग़ज़ तुख़्म-ए-हिन्दुवाना, गिल-ए-अरमनी, निशास्ता प्रत्येक अर्धभाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान लें और शीर-ए-दुख़्तरान के साथ मिला कर शयाफ़ तैयार करें और मूत्रमार्ग में लगाएँ।

- **शयाफ़-ए-मुम्सिक का नुस्खा:**

यह Urethral Ulcer को ठीक करता है। Urethral Ulcer एवं Urethral injury के कारण होने वाले पेशाब के जलन में आराम पहुँचाता है और मुजर्रब है।

औषधियाँः सफ़ेदाब, अन्ज़रूत, कुन्दुर, निशास्ता, समग़-ए-अरबी, दमुलअखवैन प्रत्येक एक भाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर सफ़ेदी-ए-बैज़ा-ए-मुर्ग़ के साथ मिलाएँ और शयाफ़ तैयार कर के मूत्रमार्ग में रखें।

- **शयाफ़ का अन्य नुस्खा:**

यह बवासीरी ख़ून और गुदा के ज़ख़्म में लाभदायक है।

औषधियाँः अक़ाक़िया, उसारा-ए-लिहयतुत्तीस, गिल-ए-अरमनी, गुलनार फ़ारसी प्रत्येक 3.5 ग्राम, वदअ मुहर्रक़ और सफ़ेदाब अर्ज़ीज़ प्रत्येक 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर आब-ए-लिसानुलहमल या आब-ए-ख़ुर्फ़ह के साथ मिलाएँ और शयाफ़ तैयार करें।

- **शयाफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Dilator है और बवासीरी के दर्द में आराम देता है।

औषधियाँ एवं निर्माण-विधिः बख़ूर-ए-मरियम, मुक़िल, शहम-ए-हन्ज़ल, ज़हरा-ए-गाव, मग़्ज़-ए-उस्तुखवान-ए-ज़र्द आलू में से प्रत्येक को थोड़ी मात्रा में लेकर आब-ए-पियाज़ और मुतअक़्क़द फ़ानीज़ के साथ मिलाएँ और फ़तीला बना लें फिर रोग़न-ए-उस्तुखवान-ए-शफ़्तालू से चर्ब कर के प्रयोग करें।

- **शयाफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बवासीरी के दर्द में आराम देता है और Proctitis में लाभदायक है।

औषधियाँ एवं निर्माण-विधिः मीअह सायला, सफ़ेदाब मग़सूल, मुक़िल, ख़त्मी सफ़ेद, मग़्ज़-ए-उस्तुखवान-ए-शफ़्तालू, मग़्ज़-ए-क़लम-ए-गाव, रोग़न-ए-गुल, प्रत्येक 3.5 ग्राम, अफ़ियून 416 मिलीग्राम, ज़ाफ़रान 1.75 ग्राम, बाबूना, इक्लीलुलमलिक प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को मिला कर शयाफ़ तैयार करें।

❑❑❑

शष्टम खण्ड

# चतुर्थ अध्याय

## फ़रज़जह और हमूल के नुस्खे़
### जो स्त्री रोगों में विशेष रूप से प्रयोग किए जाते हैं

ज्ञात रहे कि Uterine एवं Vulval Diseases में फ़रज़जह व हमूल अत्याधिक प्रभावी व लाभकारी होते हैं क्योंकि जब कोई औषधि हलक़, आमाशय व शरीर के अन्य अंगों से होते हुए निर्धारित स्थान पर पहुँचती है तो लंबी दूरी से आने के कारण उस को प्रभाव कम हो जाता है, उस में इतनी शक्ति नहीं रह जाती है कि वह रोग का हरण कर सके। यही कारण है कि ऐसी स्थिति में किसी औषधि के प्रयोग के लिए पहली विधि को अधिक उचित माना गया है। इसी प्रकार गुदा के रोगों में शयाफ़ अधिक प्रभावी होते हैं जिस को उद्धेश्य हकीमों के सामने छुपा नहीं है।

- **फ़रज़जह का नुस्ख़ाः**

  यह Hysteria में लाभदायक है।

  औषधियाँः पीह-ए-मुर्ग़, पीह-ए-बत्त, ज़ाफ़रान, हमामा, मस्तगी प्रत्येक 3.5 ग्राम, रोग़न-ए-बलसाँ, रोग़न-ए-सोसन प्रत्येक 10.5 ग्राम, मोम सफ़ेद 21 ग्राम।

  निर्माण-विधिः कूटने वाली को कूट और शेष को पिघला लें। सब को मिलाएँ। नर्मऊनी कपड़े में लथेड़ कर प्रयोग करें।

- **फ़रज़जह का अन्य नुस्ख़ाः**

  यह Atony of Uterus में लाभदायक है।

  औषधियाँः हब्ब-ए-बलसाँ व रोग़न-ए-नारदीन प्रत्येक 10.5 ग्राम, क़रन्फ़ुल, जौज़बोवा और कताँ मुहर्रक़ प्रत्येक 3.5 ग्राम।

  निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर रोग़न-ए-बलसाँ में मिलाएँ और हल्के नर्म ऊनी कपड़े में लथेड़ कर प्रयोग करें।

- **फ़रज़जह का अन्य नुस्ख़ाः**

  यह Physiometra में लाभदायक है।

  औषधियाँः तुख़्म-ए-शिब्त, क़िन्न्ह, सकबीनज, मस्तगी, ज़ीरा, हमामा, क़ुस्त,

मीअह सायला, सुंबुलुत्तीब, इल्कुलअंबात, उशक़, जुन्द बेद स्तर।

निर्माण-विधिः सब को समभाग में लेकर कूट छान लें और रोग़न-ए-शिब्त और रोग़न-ए-बाबूना में मिलाएँ जैसा कि पहले बयान किया गया है और फिर प्रयोग करें।

- **फ़रज़जह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह अत्यार्तव और रक्तप्रदर में लाभदायक है।

औषधियाँः मुर, अक़ाक़िया, गुलनार, सदफ़ मुहर्रक़ और शिब-ए-यमानी प्रत्येक 3.5 ग्राम, अफ़ियून 832 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः कूट कर आब-ए-मूरद में मिलाएँ। फ़रज़जह तैयार कर के प्रयोग करें।

- **फ़रज़जह का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से भी वही लाभ प्राप्त होते हैं।

औषधियाँः अक़ाक़िया, रेवन्द चीनी, लाज़न, ज़ाफ़रान, काफ़ूर, गिल-ए-अरमनी।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर आब-ए-लिसानुलहमल के साथ मिलाएँ और फ़रज़जह तैयार करें।

- **फ़रज़जह का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से भी वही लाभ प्राप्त होते हैं।

औषधियाँः गुलनार, गिल-ए-अरमनी, आब-ए-बर्ग-ए-मूरद, आब-ए-लिसानुलहमल, शिब-ए-यमानी, आब-ए-बर्ग-ए-सर्व।

निर्माण-विधिः सब को एक साथ मिलाएँ। उस में काफ़ूर 416 मिलीग्राम डालें। नर्म ऊनी कपड़े में लथेड़ कर यौनि में रखें।

- **फ़रज़जह का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँ एवं निर्माण-विधिः काग़ज़ मुहर्रक़, माज़ू, अक़ाक़िया, उसारा-ए-लिहयतुत्तीस, गुल-ए-सुर्ख़, हुज़ुज़, पोस्त-ए-ख़शख़ाश मुहर्रक और जुफ्त बलूत प्रत्येक एक एक भाग लेकर कूट छान लें और आब-ए-बर्ग-ए-मूरद के साथ मिलाएँ और हल्के ऊनी या सूती कपड़े में लथेड़ कर यौनि में रखें।

- **फ़रज़जह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह यौनि को संकीर्ण करता है और Uterine tonic है।

औषधियाँः निशास्ता, सुंबुलुत्तबी, मरज़न्जोश, क़ुशूर-ए-कुन्दुर, सअतर, गुल-ए-ख़ैरी, गुल-ए-सुर्ख़, पोस्त-ए-बीख़-ए-कबर और तुरमुस।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को समभाग में लेकर कूट छान लें और रोग़न-ए-

नारदीन के साथ मिलाएँ और हल्के ऊनी कपड़े में लथेड़ कर प्रयोग करें।

- **फ़रज़जह का अन्य नुस्ख़ा:**

यह यौनि को गरम और संकीर्ण करता है साथ ही यह उस को ख़ुशबूदार बनाता है।

औषधियाँ: माज़ू सब्ज़, फ़ुक़ाह-ए-इज़्ख़िर, सुक्क और रामिक प्रत्येक 1.75 ग्राम, मुश्क और ज़ाफ़रान 416 मिलीग्राम।

निर्माण-विधि: सब को थोड़ी सी शराब में पकाएँ फिर उस में एक ऊनी कपड़ा डाल कर निकालें और यौनि में रखें।

- **फ़रज़जह का अन्य नुस्ख़ा:**

यह यौनि को संकीर्ण और गरम करता है साथ ही यह उस को ख़ुशबूदार बनाता है।

औषधियाँ: सुक्क, ज़ाफ़रान, सअद, ऊद हिन्दी और क़रन्फ़ुल प्रत्येक 3.5 ग्राम, फ़ुक़ाह-ए-इज़्ख़िर और तुख़्म-ए-गुल प्रत्येक 1.75 ग्राम, माज़ू सब्ज़ 1 की संख्या में, अंबर अशहब 832 मिलीग्राम, मुश्क 416 मिलीग्राम, आमला 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को कूट कर अर्क़-ए-गुलाब में मिलाएँ, शयाफ़ तैयार करें, या ऊनी कपड़े में लथेड़ कर यौनि में रखें।

प्रयोग-विधि: फ़रज़जह करें।

- **फ़रज़जह का अन्य नुस्ख़ा:**

यह यौनि को संकीर्ण करता है, उस को ख़ुशबूदार बनाता है और Uterus की बदबू को दूर करता है।

औषधियाँ एवं निर्माण-विधि: सुक्क व ज़ाफ़रान एक एक भाग लेकर शराब में पकाएँ और फिर उस में सूती कपड़े के तह किए हुए टुकड़े लथेड़ कर प्रयोग करें।

प्रयोग-विधि: फ़रज़जह करें।

- **फ़रज़जह का अन्य नुस्ख़ा:**

यह यौनि को इतना संकीर्ण करता है कि वह कुंवारी लड़की की यौनि की भाँति हो जाती है।

औषधियाँ एवं निर्माण-विधि: ज़हरा-ए-ख़र अर्थात गधे का पित्ता थोड़ी मात्रा में लेकर थोड़े से मुश्क और ज़ाफ़रान के साथ बारीक पीस कर शयाफ़ तैयार करें और फ़रज़जह करें।

- **फ़रज़जह का अन्य नुस्ख़ा:**

यह Uterus से तरल पदार्थों के बहने को रोकता है और यौनि को संकीर्ण करता है।

औषधियाँ एवं निर्माण-विधि: माज़ू सब्ज़, तुख़्म-ए-हुम्माज़, ज़िफ़्त, बलूत,

कज़माज़ज, बर्ग-ए-मूरद और गुलनार प्रत्येक एक एक भाग लेकर अर्धकुटा कर लें और पका कर साफ़ कर लें फिर ख़ुब्सुलहदीद और सुरमा प्रत्येक 832 मिलीग्राम को हल्का पीस कर उस में मिलाएँ और सूती कपड़े के टुकड़ों को उस में लथेड़ कर सुखा लें और उस में एक टुकड़ा यौनिय में रखें।

- **फ़रज़जह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह यौनि को ख़ुशबूदार व संकीर्ण बनाता है। Uterus की तरलता को सोखता है।

औषधियाँ एवं निर्माण-विधिः सुक्क, बर्ग-ए-गुल-ए-सुर्ख़, बर्ग-ए-मूरद, कज़माज़ज, कनार, सअद, सुंबुल, पोस्त-ए-अनार, फ़ोफ़ल प्रत्येक 1-1 भाग लेकर अर्धकुटा कर के पकाएँ और साफ़ करें। उस में मुश्क 1.75 ग्राम पीस कर मिलाएँ।

- **फ़रज़जह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह यौनि को संकीर्ण, गरम और ख़ुशबूदार बनाता है और Uterus की तरलता और बदबू को दूर करता है।

औषधियाँ एवं निर्माण-विधिः सुक्क, रामिक, ज़ाफ़रान, रासन, क़रन्फ़ुल प्रत्येक 3.5 ग्राम, सुंबुलुत्तीब और फ़ुक़ाह-एइज़्ख़िर प्रत्येक 7 ग्राम, तुख़्म-ए-गुल 1.75 ग्राम, लाज़न 3.5 ग्राम, मुश्क 832 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर अर्क़-ए-गुलाब में मिलाएँ।

प्रयोग-विधिः यौनि में रखें।

- **फ़रज़जह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह यौनि को इतना चौड़ा करता है कि अगर चार साल की लड़की पर भी इस का प्रयोग किया जाए तो उस का Hymen आसानी से फट जाता है।

औषधियाँ एवं निर्माण-विधिः नमक-ए-इन्द्राणी, रोग़न-ए-गाव, साफ़ शहद प्रत्येक थोड़ी मात्रा में लेकर मिलाएँ और फ़रज़जह तैयार करें।

- **फ़रज़जह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह आर्तवजनक है। तरल पदार्थों से होने वाले Metralgia में लाभदायक है।

औषधियाँः कुन्दुर और मुक़िल प्रत्येक 7 ग्राम, जावशीर, उशक़, ज़ाफ़रान, बाबूना और पीह-ए-बत्त प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः Exudates को घोल लें, पीह को पिघला लें और कूटने योग्य औषधियों को कूट लें फिर सब को मिलाएँ और उस में ऊनी कपड़े के टुकड़ को लथेड़ कर यौनि में रखें।

- **फ़रज़जह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह आर्तवजनक है और मरे हुए बच्चे को माँ के पेट से बाहर निकालता है।

औषधियाँः मर्व, फ़ूदनह, अबहल प्रत्येक 14 ग्राम, सुद्दाब 17.5 ग्राम, मवीज़ 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान लें और ज़हरा-ए-गाव एवं मवीज़ के साथ मिला कर फ़रज़जह तैयार करें।

- **फ़रज़जह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह आर्तवजनक है। ज़िन्दा एवं मरे हुए बच्चे को माँ के पेट से बाहर निकालता है।

औषधियाँः अबहल, सुद्दाब, उश्नान, मुश्कतरामशीअ, क़िन्नह प्रत्येक 1.75 ग्राम, शोनीज़ और फ़रासियून प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को नत्रून के साथ मिलाएँ।

- **फ़रज़जह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Placenta व मरे बच्चे को माँ के पेट से निकालता है।

औषधियाँ एवं निमाण-विधिः ज़रावन्द मुदहरज, अबहल, हुर्फ़ प्रत्येक 1-1 भाग को कूट छान कर नत्रून के साथ मिलाएँ।

- **फ़रज़जह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह ज़िन्दा व मरे बच्चे को माँ के पेट से निकालता है।

औषधियाँ एवं निमाण-विधिः उश्नान फ़ारसी, आक़रक़रहा, शोनीज़, सुद्दाब, फ़रासियून को कूट छान लें और रोग़न-ए-ज़ैतून के साथ मिला कर प्रयोग करें।

- **फ़रज़जह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह मरे हुए बच्चे को माँ के पेट से बाहर निकालता है।

औषधियाँ एवं निमाण-विधिः मुर मक्की, जावशीर, ख़रबक़ सफ़ेद और फ़र्फ़ियून प्रत्येक थोड़ी मात्रा में लेकर कूट छान लें और ज़हरा-ए-गाव में मिला कर प्रयोग करें।

- **फ़रज़जह का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से भी वही लाभ प्राप्त होते हैं।

औषधियाँः उश्नान, आक़रक़रहा, जावशीर, सुद्दाबप्रत्येक 1.75 ग्राम।

निमाण-विधिः कूट छान कर क़ुतरान के साथ मिलाएँ।

- **फ़रज़जह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह माहवारी बन्द करता और अत्यार्तव रोकता है।

औषधियाँ एवं निमाण-विधिः सुरमा, गुलनार, तिनकार, अक़ाक़िया, शिब-ए- यमानी, माज़ू सब्ज़, काग़ज़ मुहर्रक़ एक एक भाग लेकर कूट छान लें और आब-ए-बर्ग-ए-मूरद के साथ मिलाएँ फिर ऊनी कपड़े के टुकड़ को लथेड़ कर यौनि में रखें।

- **फ़रज़जह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Pro-conceptive है।

औषधियाँ एवं निमाण-विधिः सर्गीन-ए-बुज़ कोही और माया-ए-खरगोश प्रत्येक थोड़ी मात्रा में लेकर कूट छान लें और गरम शहद में मिलाएँ फिर ऊनी कपड़े के टुकड़ को लथेड़ कर माहवारी के बाद यौनि में रखें।

- **फ़रज़जह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Pro-conceptive है।

औषधियाँः मामीरान चीनी, सूरन्जान, ज़ुबदुलबहर, माया-ए-खरगोश, दार-ए-चीनी, अंबर, ज़ाज, नबात।

निमाण-विधिः सब को कूट छान लें और अर्क़-ए-गुलाब मिला कर प्रयोग करें।

- **फ़रज़जह का अन्य नुस्ख़ाः**

जब इस को माहवारी के बाद प्रयोग किया जाए तो यह Pro-conceptive है।

औषधियाँ एवं निर्माण-विधिः माया-ए-खरगोश, सर्गीन दोनों थोड़ी थोड़ी मात्रा में लेकर शहद के साथ मिलाएँ और ऊनी कपड़े के टुकड़ को लथेड़ कर माहवारी के बाद यौनि में रखें। इसी प्रकार तीन दिनों तक लगातार प्रयोग करें और फिर अगर तीन रातों के बाद कोई व्यक्ति किसी स्त्री के साथ संबंध बनाए तो हमल ठहर जाता है।

- **फ़रज़जह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Pro-conceptive है और अत्याधिक लाभदायक है।

औषधियाँः ज़ाफ़रान, हमामा, सुंबुलुत्तीब, इक्लीलुलमलिक प्रत्येक 10.5 ग्राम, साज़ज हिन्दी, क़िर्दमाना प्रत्येक 35 ग्राम, पीह-ए-बत्त, पीह-ए-मुर्ग, ज़र्दी-ए-तुख़्म-ए-मुर्ग ब्रशता प्रत्येक 70 ग्राम, रोग़न-ए-नारदीन।

निर्माण-विधिः कूटने वाली को कूट लें, पिघलाने वाली को पिघला लें फिर सब को मिलाएँ और ऊनी कपड़े के टुकड़ को लथेड़ कर माहवारी के बाद यौनि में रखें। उस के बाद मर्द स्त्री के साथ उस समय तक संबंध बनाता रहे जब तक कि उस को हमल ना हो जाए।

- **फ़रज़जह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गर्भाधारण के लिए बहुत लाभदायक और मुजर्रब है।

औषधियाँ एवं निर्माण-विधिः अन्फ़हा-ए-खरगोश, सर्गीन-ए-खरगोश, ज़हरा-ए-गुर्ग और ज़हरा-ए-माही प्रत्येक थोड़ी थोड़ी मात्रा में लेकर शहद के साथ मिलाएँ और और ऊनी कपड़े के टुकड़ को लथेड़ कर माहवारी के बाद यौनि में रखें। उस के बाद मर्द स्त्री के साथ संबंध बनाएँ

- **फ़रज़जह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गर्भाधारण के लिए बहुत लाभदायक है और इस को लगाने से औरता को हमल ठहर जाता है।

औषधियाँः सर्गीन-ए-क़िन्बील, खरदल, हब्बुलक़िलक़िल, उस्तुख़्वान-ए-ज़अरूर।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर मीअह सायला के साथ मिलाएँ और ऊनी कपड़े में लगा कर प्रयोग करें तो गर्भाधारण हो जाता है।

- **फ़रज़जह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गर्भनिरोधक है। मुर्दा एवं जिन्दा बच्चे को माँ के पेट से बाहर निकालता है।

औषधियाँ एवं निर्माण-विधिः शगूफ़ा-ए-कबर, तुख़्म-ए-कबर, उश्नान प्रत्येक थोड़ी थोड़ी मात्रा में लेकर कूट छान लें और पानी के साथ मिला कर प्रयोग करें।

- **फ़रज़जह का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गर्भनिरोधक है। इस के प्रयोग के बाद कभी गर्भाधारण नहीं होता है और अगर होता है तो वह गिर जाता है।

औषधियाँः माज़ू 4 दाना, बर्ग-ए-सुद्दाब सेहराई 7 ग्राम, क़ुतरान 3.5 ग्राम, अबहल 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान कर ऐसे पानी में मिलाएँ जिस को हाथी के गोबर से ताज़ा ताज़ा निचोड़ा गया हो और फिर नियमानुसार प्रयोग करें।

- **हमूल का नुस्ख़ाः**

यह गर्भनिरोधक है। इस के प्रयोग के बाद कभी गर्भाधारण नहीं होता है।

औषधियाँः क़ुतरान 3.5 ग्राम, सक़मूनियसा 416 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः इन को मिलाएँ और हल्के नर्म ऊनी कपड़े में लथेड़ कर प्रयोग करें।

- **हमूल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गर्भनिरोधक है।

औषधियाँ एवं निर्माण-विधिः हब्बुलआस और माज़ू को कूट छान लें और गरम पानी के साथ मिला कर फ़रज़जह तैयार करें। यौन-संबंध से पहले प्रयोग करें।

- ***हमूल का अन्य नुस्ख़ाः***

इस से भी वही लाभ होते हैं औंर यह गर्भनिरोधक है।

औषधियाँ एवं निर्माण-विधिः ज़ाफ़रान और काफ़ूर प्रत्येक 416 मिलीग्राम, मुरदारसंग 832 मिलीग्राम, हब्बुलग़ार 1.75 ग्राम को कूट छान कर सफ़ेदी-ए-बैज़ा-ए-मुर्ग़ और रोग़न-ए-गुल में मिला कर फ़रज़जह तैयार करें और प्रयोग करें।

- ***हमूल का अन्य नुस्ख़ाः***

यह Pruritus uteri में लाभदायक है।

औषधियाँ एवं निर्माण-विधिः सुद्दाब, पोस्त-ए-अनार, नअनाअ और अदस-ए-मुक़श्शर प्रत्येक एक एक भाग लें कर थोड़ी मात्रा में अर्क़-ए-गुलाब और सिर्का में पकाएँ फिर ऊनी कपड़े में लथेड़ कर प्रयोग करें।

- ***हमूल का अन्य नुस्ख़ाः***

यह Pruritus uteri जिस को ''इल्लतुन्निसा'' कहा जाता है, को दूर करता है और उस में लाभदायक है।

औषधियाँ एवं निर्माण-विधिः सुद्दाब कोही, पोदीना दशती, पोस्त-ए-अनार, अदस-ए-मुक़श्शर और शयाफ़-ए-मामीसा प्रत्येक एक एक भाग लें कर थोड़ी मात्रा में नबीज़ या अर्क़-ए-गुलाब और सिर्का में पकाएँ फिर ऊनी कपड़े में लथेड़ कर प्रयोग करें।

- ***हमूल का अन्य नुस्ख़ाः***

यह बवासीर या Sclerotitis या गर्भाशय के ज़ख़्म से होने वाले Metralgia में लाभदायक है।

औषधियाँः बाबूना, पीह-ए-बत्त, मोम सफ़ेद, उशक़ मक़लू प्रत्येक एक भाग।

निर्माण-विधिः Exudates को खल्ल में घोलें, पीह को मोम के साथ पिघलाएँ। सब को मिला कर फ़रज़जह तैयार करें।

- ***हमूल का अन्य नुस्ख़ाः***

यह मुर्दा बच्चे को माँ के पेट से बाहर निकालता है।

औषधियाँः मुर मक्की, ख़रबक़, जावशीर, ज़हरा-ए-गाव।

निर्माण-विधिः सब को मिला कर शयाफ़ तैयार करें। बलूत बना कर यौनि में रखें।

- ***हमूल का अन्य नुस्ख़ाः***

यह मुर्दा और ज़िन्दा बच्चे को माँ के पेट से निकालता है, हैज़ जारी करता है और द्रव्यों के कारण होने वाले Pruritus uteri में लाभ पहुँचाता है।

औषधियाँः अबहल, ज़रावन्द, तुरमुस, तुख़्म-ए-तेरह तुज़क प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान कर सिर्का के साथ मिलाएँ और शयाफ़ तैयार कर के यौनि में रखें।

- **हमूल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह अत्यार्तव और रक्तप्रदर में लाभायक है।

औषधियाँ एवं निर्माण-विधिः माज़ू मुहर्रकद्व पोस्त-ए-तुख़्म-ए-मुर्ग़ मुहर्रक़, सुरमा, दाना-ए-खरमा-ए-मुहर्रक़, शादनज मुहर्रक़, कहरुबा, दमुलअख़वैन और गिल-ए-अरमनी प्रत्येक एक एक भाग ले कर कूट छान लें और आब-ए-लिसानुलहमल के साथ मिलाएँ और बीच की उँगली के बराबर शयाफ़ तैयार कर के यौनि में रखें।

- **हमूल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह रुके हुए हैज़ को जारी करता है।

औषधियाँ एवं निर्माण-विधिः अबहल और उश्नान प्रत्येक 1.75 ग्राम, पोदीना कोही और सुद्दाब बर्री प्रत्येक 875 मिलीग्राम, मुश्क तुर्की और शहम-ए-हन्ज़ल प्रत्येक 24 ग्राम को कूट छान कर ज़हरा-ए-गाव या आब-ए-सुद्दाब में मिलाएँ और शयाफ़ तैयार कर के प्रयोग करें।

- **हमूल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Uterine tonic है, Seminorrhoea को रोकता है और तरल पदार्थों को सोखता है।

औषधियाँः सुक्क, रामिक और ज़ाफ़रान प्रत्येक 3.5 ग्राम, अक़्माउलवर्द, फ़ुक़ाह-ए-इज़्ख़िर, सअद और लाज़न प्रत्येक 5.25 ग्राम, कज़माज़ज, माज़ू और बज़रुलवर्द प्रत्येक 832 मिलीग्राम, मुश्क 500 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर दाना दार फ़ानीज़ व अर्क़-ए-गुलाब के साथ मिलाएँ और फ़तीला तैयार कर के इतनी मात्रा में रखें कि रोगी को पता चलें।

❑❑❑

# सप्तम खण्ड

## नेत्र में प्रयोग की जाने वाली औषधियों के नुस्खे

यह खण्ड पाँच अध्यायों पर आधारित है

सप्तम खण्ड

## प्रथम अध्याय

# विभिन्न प्रकार के कुहल के नुस्ख़े

जो व्यक्ति आँख की रक्षा करना चाहता है, उस को इस संदर्भ में अत्याधिक सावधानी से रहना चाहिए, आँख को धूल मिट्टी से सुरक्षित रखे, सूरज एवं तेज़ चमकदार वस्तुओं को देखने बारी लिखी हुई लिपि को पढ़ने और बारीक नक़्शों एवं तसवीरों को देखने से बचे, धूप में नंगे सर निकलने एवं अत्याधिक रोने धोने से बचे, भूनी हुई खाने की वस्तुओं, कबाब, कल्ला पायचा, प्याज़, लहसुन, कुन्दुर, बादरूज, अदस, बाक़ला, क़ीमा, नमकसूद मछली और सिर्का जैसे तीखे एवं तेज़, भारी एवं गाढ़े और आमाशय में उत्तेजनपैदा करने वाली वस्तुओं से परहेज़ करे। रात में अधिक देर से खाना खाना, खाली पेट की स्थिति में सोना, भरे पेट की स्थिति में यौन-संबंध बनाना, सर में अधिक तेल लगाना, नबीज़ पीना, उल्टी करना, अत्याधिक गरम हम्माम में जाना, रात भर जागना और दिन में सोना और अत्याधिक संभोग करना आँख के लिए हानिकारक हैं और आँख की रोशनी कम करतें हैं।

आँख के लिए लाभदायक तरीक़े यह हैं कि कभी अयारिज फ़ीक़रा, हब्ब-ए-क़ौक़ाया, हब्ब-ए-अयारिज और हब्ब-ए-इस्तमखीक़ून प्रयोग किया जाए, दिमाग़ से विकृत देहद्रव्यों को साफ़ किया जाए, इत्रीफ़ल किश्नीज़ी को खा कर दिमाग़ और आँख से बुख़ारात को दूर किया जाए और कभी सुरमा, तुतिया, ग़ौरह एवं आँख की रोशनी बढ़ाने वाले बरूद अथवा कुहल औषधियों से आँख को सशक्त बनाया जाए, हरे भरे दृशयों, साफ़ पानी, ख़ूबसूरत तसवीरों, ख़ूबसूरत चेहरों एवं दृशयों को देखा जाए क्योंकि इन से आँख की रोशनी तेज़ होती है। इस के अतिरिक्त साधारण हम्माम किया जाए। मीठे पानी में आँखें खोलने एवं बन्द करने से भी लाभ पहुँचता है।

- **बसलीकून कबीर का नुस्ख़ा:**

यह अंधापन, मोतियाबिन्द के प्रारंभ, आँख में खुजली, Granular Conjunctivitis, Pannus, Pterygium और अश्रुपात में लाभदायक है। तरल पदार्थों को सोखता है और आँख को मज़बूत करता है।

औषधियाँ: ज़ुबदुलबहर, अक़लीमिया-ए-नुक़रह प्रत्येक 35 ग्राम, मिस्स सोख़्ता 17.5 ग्राम, नमक-ए-इन्द्राणी, साज़ज हिन्दी, सफ़ेदाब अर्ज़ीज़, फ़िलफ़िल, दार-ए-फ़िलफ़िल, सुंबुलुत्तीब, सुर्मा अस्फ़हानी प्रत्येक 7 ग्राम, नमक-ए-हिन्दी, उश्ना, क़रन्फ़ुल प्रत्येक 3.5 ग्राम, सिब्र सक़ूतरी और उसारा-ए-मामीसा प्रत्येक 17.5 ग्राम, मुर साफ़, मामीरान चीनी, नौशादर और ज़र्द चौबा प्रत्येक 10.5 ग्राम, पोस्त-ए-हलीला ज़र्द 14 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को हल्का कूट कर रेशमी कपड़े से छान लें और दोबारा हावन में इतना पीसें कि वह ग़ुबार की भाँति हो जाए फिर आवश्यकता के समय सलाई से आँख में लगाएँ।

- **बासलीक़ून सग़ीर का नुस्ख़ा:**

इस से भी बासलीक़ून कबीर जैसे लाभ प्राप्त होते हैं।

औषधियाँ: अक़लीमिया-ए-नुक़रह और ज़बदुलबहर प्रत्येक 35 ग्राम, मिस्स सोख़्ता 17.5 ग्राम, सफ़ेदाब मग़सूल, नमक-ए-इन्द्राणी, नौशादर, जअदह, फ़िलफ़िल, दार-ए-फ़िलफ़िल प्रत्येक 7 ग्राम, क़रन्फ़ुल और उश्ना प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को अच्छी तरह पीसें और सलाई से आँख में लगाएँ।

- **बासलीक़ून का अन्य नुस्ख़ा:**

औषधियाँ: अक़लीमिया-ए-नुक़रह, ज़बदुलबहर प्रत्येक 35 ग्राम, मिस्स सोख़्ता 17.5 ग्राम, सफ़ेदाब मग़सूल, नमक-ए-इन्द्राणी, नौशादर, जअदह, फ़िलफ़िल, दार-ए-फ़िलफ़िल प्रत्येक 7 ग्राम, क़रन्फ़ुल, उश्ना प्रत्येक 3.5 ग्राम, फ़िलफ़िल 14 ग्राम, काफ़ूर 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधि: सभी औषधियों को हल्का कूट छान लें और रेशम के कपड़े से हल्का छान कर सलाई से आँख में लगाएँ।

- **बासलीक़ून का अन्य नुस्ख़ा:**

औषधियाँ: अक़लीमिया-ए-फ़िज़्ज़ह 24.5 ग्राम, दार-ए- फ़िलफ़िल, शादनज मग़सूल प्रत्येक 7 ग्राम, मिस्स सोख़्ता, सफ़ेदाब, नमक-ए-इन्द्राणी प्रत्येक 17.5 ग्राम, ज़ुबदुलबहर 14 ग्राम, नमक-ए-हिन्दी, क़रन्फ़ुल, दाना-ए-अबहल, उश्ना, सुंबुलुत्तीअ प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को कूट लें और रेशम के कपड़े से छान कर सोने या चाँदी की सलाई से आँख में लगाएँ।

- **कुहल बनफ़्सजी का नुस्ख़ा:**

यह अंधापन, अश्रुपात, Granular Conjunctivitis में लाभदायक है।

औषधियाँः शादनज मग़सूल 7 ग्राम, दमुलअखवैन 416 मिलीग्राम, रूसख़्तज, दार-ए-फ़िलफ़िल और सुंबुल प्रत्येक 1.75 ग्राम, साज़ज हिन्दी 832 मिलीग्राम, क़ाक़ला और मुश्क प्रत्येक 416 मिलीग्राम, काफ़ूर 208 मिलीग्राम, माज़ू 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट लें और हल्का छान कर सलाई से आँख में लगाएँ।

- **कुहल अग़बर लुलुवी का नुस्ख़ाः**

यह Granular Conjunctivitis, Blepharitis, अंधापन में लाभदायक है।

औषधियाँः तूतिया-ए-किरमानी मग़सूल और सन्ज सोख़्ता मग़सूल प्रत्येक 7 ग्राम, मरवारीद बिक्र 21 ग्राम, नबात 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः कूट छान कर गुबार की भाँति पीस कर सलाई से आँख में लगाएँ।

- **अकसरीन-ए-अहमर का नुस्ख़ाः**

यह आँख में अधिक गरमी को दूर करता है, पुतली को साफ़ करता है, आँख के फोड़ों में लाभदायक है और आँख को मज़बूत करता है।

औषधियाँः अफ़्यून, शादनज मग़सूल, निशास्ता प्रत्येक 28 ग्राम, समग़-ए-अरबी 28 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को हल्का कूट कर छान लें और सलाई से आँख में लगाएँ।

- **अकसरीन-ए-अबयज़ का नुस्ख़ाः**

यह आँख की गरमी ठंडा करता और आँख के फोड़ों में लाभदायक है।

औषधियाँः सफ़ेदाब अर्ज़ीज़ 36 ग्राम, समग़-ए-अरबी, कतीरा, अक़लीमिया-ए-नुक़रा प्रत्येक 24.5 ग्राम, अन्ज़रूत और अफ़्यून प्रत्यक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर रेशम के कपड़े से हल्का छान लें और आँख में लगाएँ।

- **अकसरीन-ए-अहमर का नुस्ख़ाः**

इस से भी वही लाभ प्राप्त होते हैं।

औषधियाँः शादनज मग़सूल 10.5 ग्राम, निशास्ता, अक़लीमिया-ए-नुक़रा, अफ़्यून, मरवारीद, बुसुद और मामीसा प्रत्येक 3.5 ग्राम, सफ़ेदाब 24.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर सलाई से प्रयोग करें।

- **कुहल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह आँख के फोड़ों और Iridoptosis में लाभदायक है।

औषधियाँः अक़लीमिया-ए-नुक़रा, समग़-ए-अरबी प्रत्येक 14 ग्राम, सफ़ेदाब 28 ग्राम,रूसख़्तज, निशास्ता, अफ़्यून प्रत्येक 7 ग्राम, शादनज मग़सूल 10.5 ग्राम, सर्मा असफ़हानी 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट लें और हल्का पीस कर सलाई से आँख में लगाएँ।

- **कुहल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह मोतियाबिन्द, Asthenopia, Amblyopia, Ptilosis, Blepharitis में बहुत अधिक लाभदायकहै।

औषधियाँः तूतिया-ए-किरमानी मग़सूल, तूबाल-ए-मिसस मुहर्रक़, मरवारीद नासुफ़्ता, बुसुद, शादनज, अक़लीमिया-ए-नुक़रा, सिब्र सक़ूतरी, सरतान-ए-बहरी मुहर्रक़, ज़ाफ़रान और सुंबुलुत्तीब प्रत्येक 7 ग्राम, शादनज अदसी मग़सूल 21 ग्राम, नौशादर, फ़िलफ़िल सफ़ेद और दार-ए-फ़िलफ़िल प्रत्येक 5.25 ग्राम, मुश्क 416 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर प्रयोग करें।

- **कुहल-ए-रोशनाई का नुस्ख़ाः**

यह Pannus, Pterygium, Conjunctivitis, अंधापन, अश्रुपात में लाभदायक है।

औषधियाँः शादनज मग़सूल 21 ग्राम, मिस्स सोख़्ता, अक़लीमिया-ए-नुक़रा, नमक-ए-हिन्दी और बूरह अरमनी प्रत्येक 14 ग्राम, ज़ुबदुलबहर 28 ग्राम, सिब्र सक़ूतरी, सुंबुल और क़रन्फ़ुल प्रत्येक 3.5 ग्राम, ज़न्जबील, ज़न्जार और तूतिया-ए-हिन्दी प्रत्येक 7 ग्राम, ज़ाफ़रान और नौशादर प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सबको कूट छान कर कुहल तैयार करें।

- **कुहल का अन्य नुस्ख़ाः**

औषधियाँः मस्सि सोख़्ता और शादनज मग़सूल प्रत्येक 17.5 ग्राम, फ़िलफ़िल, दार-ए-फ़िलफ़िल, ज़ाफ़रान और शहम-ए-हन्ज़ल प्रत्येक 14 ग्राम, ज़न्जार, सिब्र और बूरह अरमनी प्रत्येक 3.5 ग्राम, अक़लीमिया-ए-ज़र्द 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को लेकर नियमानुसार ग़ुबार की भाँति पीसें और आवश्यकता के समय सलाई से आँख में लगाएँ।

- **कुहल-ए-ज़ाफ़रान का नुस्ख़ाः**

यह अंधापन, Granular Conjunctivitis, मोतियाबिन्द में लाभदायक है।

औषधियाँः ज़ाफ़रान और सुंबुल प्रत्येक 7 ग्राम, दार-ए-फ़िलफ़िल 3.5 ग्राम, फ़िलफ़िल 624 मिलीग्राम, नौशादर 1.75 ग्राम, माज़ू 10.5 ग्राम, काफ़ूर 208 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः नियमानुसार कुहल तैयार करें।

- **कुहल-ए-जवाहर का नुस्ख़ाः**

यह आँखों की रोशनी को बढ़ाता, शोधक है और आँखों के स्वास्थ्य की रक्षा करता है।

औषधियाँः सुर्मा असफ़हानी 21 ग्राम, तूतिया-ए-हिन्दी 7 ग्राम, मामीसा, मरजान, पीह-ए-पलंग, अक़ीक़ यमनी, मामीरान चीनी, फ़िलफ़िल सफ़ेद, दार-ए-फ़िलफ़िल, अक़लीमिया-ए-तिला या अक़लीमिया-ए-नुक़रा, रूसख़्तज प्रत्येक 14 ग्राम, सरतान बहरी, मरवारीद नासुफ़्ता, साज़ज प्रत्येक 21 ग्राम, याक़ूत सुर्ख़, लाजवर्द मग़सूल, ज़ाफ़रान और तूबाल-ए-मिस्स प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर संग-ए-सुमाक़ पर पीसें। सोने या चाँदी की सलाई से आँख में लगाएँ।

- **कुहल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह आँखों की रोशनी को बढ़ाता है और आँखों के स्वास्थ्य की रक्षा करता है।

औषधियाँः सर्मा असफ़हानी 24.5 ग्राम, मामीसा 17.5 ग्राम, अक़लीमिया-ए-तिला और मरवारीद नासुफ़्ता प्रत्येक 10.5 ग्राम, ज़ाफ़रान और बुसुद प्रत्येक 1.75 ग्राम, शादनज 3.5 ग्राम, फ़्रन्जमुश्क 250 मिलीग्राम, मुश्क 250 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर पीसें और प्रयोग करें।

- **कुहल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह आँखों की रोशनी को बढ़ाता है, पलक व पुतली को पाक साफ़ करता है, Pannus व नाख़ूना को आँखों से दूर करता है और आँख की रोशनी को बढ़ाता है।

औषधियाँः पोस्त-ए-हलीला काबुली, सिब्र ज़र्द, मामीरान चीनी, ज़र्द चौबा प्रत्येक 7 ग्राम, नमक-ए-तबरज़द, मरवारीद नासुफ़्ता, कफ़-ए-दरिया, ज़ाफ़रान, सुंबुल हिन्दी, शादनज मग़सूल, तुख़्म-ए-राज़ियाना, सरतान बहरी मुहर्रक़, तूतिया-ए-हिन्दी, शयाफ़-ए-मामीसा, काफ़ूर, सफ़ेदाब अर्ज़ीज़, अक़लीमिया-ए-ज़र्द, वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़, हुज़ुज़-ए-मक्की, पोस्त-ए-हलीला ज़र्द।

निर्माण-विधिः सब को समभाग में लेकर कूटें और दोबारा आब-ए-बादियान के साथ संग-ए-सुमाक़ पर पीसें और छाँव में सुखा लें फिर दोबारा पीस कर सुरक्षित कर लें और सदैव सलाई से आँख में लगाते रहें तो अत्याधिक लाभ की प्राप्ति होती है।

- **कुहल-ए-माज़ू का नुस्ख़ाः**

यह आँख की रोशनी बढ़ाता है, अश्रुपात और Conjunctivitis में लाभदायक है।

औषधियाँः शादनज अदसी, साज़ज हिन्दी प्रत्येक 7 ग्राम, फ़िलफ़िल, दमुलअखवैन प्रत्येक 1.75 ग्राम, रूसख़्तज, माज़ू प्रत्येक 4.5 ग्राम, दाना-ए-क़ाक़ला, मुश्क प्रत्येक 416 मिलीग्राम, काफ़ूर 250 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को पीस कर कुहल तैयार करें।

- **कुहल क अन्य नुस्ख़ाः**

यह Corneal opacity और आँख के फोड़ों के निशानों को दूर करता है। पलकों के उल्टा हो जाने में लाभदायक है।

औषधियाँः ज़ुबदुलबहर, अक़लीमिया-ए-नुक़रा, सफ़ेदाब अर्ज़ीज़, मिस्स सोख़्ता प्रत्येक 14 ग्राम, सुंबुल, मरवारीद नासुफ़्ता प्रत्येक 7 ग्राम, समग़-ए-अरबी, कतीरा, अन्ज़रूत, बअरुज़्ज़ब्ब और निशास्ता प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः नियमानुसार कुहल तैयार करें।

- **कुहल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह मोतियाबिन्द में लाभदायक है।

औषधियाँः ज़हरा-ए-गाव या ज़हरा-ए-बुज़ कोही प्रत्येक 7 ग्राम, शहम-ए-हन्ज़ल 4.5 ग्राम, फ़र्फ़्रियून और नौशादर प्रत्येक 2.25 ग्राम, सकबीनज 832 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः आब-ए-राज़ियाना या आब-ए-सुदाब के साथ पीस कर सुखा लें और दोबारा पीस कर आँख में लगाएँ।

- **कुहल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह भौं के बालों को जल्दी से उगा देता है।

औषधियाँः उस्तुख़्वान-ए-ख़ुरमा मुहर्रक़ 17.5 ग्राम, मरजान और कुन्दुर प्रत्येक 14 ग्राम, सुंबुल और हब्ब-ए-बलसाँ प्रत्येक 10.5 ग्राम, लाजवर्द मग़सूल 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को बारीक पीस कर आँख में लगाएँ।

- **कुहल-ए-रैयानी का नुस्ख़ाः**

यह रोशनी बढ़ाता है। आँख से तरल पदार्थ को सोखता है और Granular Conjunctivitis, Pannus में लाभदायक है।

औषधियाँः सुर्मा अस्फ़हानी, तूतिया-ए-हिन्दी, सन्ज सोख़्ता, तूबाल-ए-मिस्स प्रत्येक 14 ग्राम, मामीरान चीनी 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान लें। आब-ए-अनारैन में मिला कर संग-ए-सुमाक़ में ख़ूब घोंटें, फिर सुखा कर दोबारा पीसें और सलाई से आँख में लगाएँ।

- **कुहल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह आँख की रक्षा करता है, अश्रुपात और आँख से तरल पदार्थों के बहने को रोकता है और रोशनी बढ़ाता है।

औषधियाँः तूतिया-ए-हिन्दी 3.5 ग्राम, सुरमा असफ़हानी 7 ग्राम, नमक-ए-इन्द्राणी

875 मिलीग्राम, ज़ाफ़रान 250 मिलीग्राम, काफ़ूर 24 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट लें, थोड़ी मात्रा में पोस्त-ए-हलीला काबुली को बारिश के पानी में पका कर साफ़ कर लें और औषधियों को उसी पानी में मिलाएँ यहाँ तक कि वह पूरे पानी को सोख ले फिर उस को सुखा कर साफ़ पीस लें और बारीक कपड़े से छाने ताकि वह ग़ुबार की भाँति हल्का हो जाए फिर उस को सलाई से आँख में लगाएँ।

- **कुहल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह आँख के स्वास्थ्य की रक्षा करता है और आँख की रोशनी बढ़ाता है।

औषधियाँ एवं निर्माण-विधिः तूतिया-ए-किरमानी 42 ग्राम को कूट लें और हल्का छान कर आब-ए-मरज़न्जोश में मिलाएँ और खुशक कर लें फिर सिब्र ज़र्द, हुज़ुज़, शयाफ़-ए-मामीसा प्रत्येक 5.25 ग्राम, ज़न्जबील, फ़िलफ़िल, दार-ए-फ़िलफ़िल और मामीरान चीनी प्रत्येक 3.5 ग्राम, काफ़ूर 875 मिलीग्राम को हल्का पीसें और सब को तूतिया के साथ मिला कर अच्छी तरह पीसें। सुबह शाम सलाई से आँख में लगाएँ।

- **कुहल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह आँख की रोशनी बढ़ाता है। आँख को मोतियाबिन्द से सुरक्षित रखता है।

औषधियाँ एवं निर्माण-विधिःतूतिया-ए-किरमानी 35 ग्राम को आब-ए-बादियान या आब-ए-मरज़न्जोश के साथ कई बार मुदब्बर करें और सुखा लें फिर ज़न्जबील, फ़िलफ़िल, दार-ए-फ़िलफ़िल और मामीरान चीनी प्रत्येक 7 ग्राम को दोबारा पत्थर पर आब-ए-बादियान के साथ पीस कर सुखा लें। आँख में लगाएँ। अगर मुश्क 250 मिलीग्राम को बढ़ा लें तो बेहतर होता है।

- **कुहल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह आँख के सूखेपन में लाभदायक है और अश्रुपात को कारण बनता है।

औषधियाँः फ़िलफ़िल, दार-ए-फ़िलफ़िल प्रत्येक 3.5 ग्राम, ज़ाफ़रान 14 ग्राम, हुज़ुज़ 21 ग्राम, सुंबुल 14 ग्राम, काफ़ूर 416 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को हल्का कूट छान कर अच्छी तरह पीसें और आवश्यकता के समय आँख में लगाएँ।

- **कुहल का अन्य नुस्ख़ाः**

यह अश्रुपात में लाभदायक है।

औषधियाँः सुरमा असफ़हानी 21 ग्राम, सन्ज सोख़्ता 7 ग्राम, कफ़-ए-दरिया

3.5 ग्राम, आब-ए-बादियान में मुदब्बर किया हुआ तूतिया-ए-किरमानी 35 ग्राम, पोस्त-ए-हलीला काबुली 35 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को इतना बारीक पीसें कि वो ग़ुबार की भाँति हो जाएँ और सलाई से आँख में प्रयोग करें। यह मुजर्रब है।

- **कुहल-ए-मरारह का नुस्ख़ा:**

यह प्रारंभिक मोतियाबिन्द और अंधापन में लाभदायक है।

औषधियाँ: उसारा-ए-बादियान, हुज़ुज़ मक्की, ज़हरा-ए-कलंग, ज़हरा-ए-खरूस, ज़हरा-ए-कबक प्रत्येक 10.5 ग्राम, ज़हरा-ए-माही शबूत, काफ़ूर प्रत्येक 624 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः इन में से सभी ज़हरात को छाँव में सुखा लें फिर सभी औषधियों को आब-ए-बादियान में पीसें और रखे रहें यहाँ तक कि सूख जाएँ फिर दोबारा पत्थर पर पीसें और सलाई से आँख में लगाएँ तो लाभ प्राप्त होगा इन्शाअल्लाह।

- **कुहल-ए-जौहरदारवी का नुस्ख़ा:**

यह आँख की रोशनी को बढ़ाता है, आँख को साफ़ और रोशन करता है और Corneal Opacity और Pannus में लाभदायक है।

औषधियाँ: लअल, फ़ीरोज़ह, पीह-ए-पलंग, ज़हरा-ए-बाज़ प्रत्येक 2.25 ग्राम, शयाफ़-ए-मामीसा 4.5 ग्राम, ज़ाफ़रान 1664 मिलीग्राम, मरवारीद नासुफ़्ता, मामीरान चीनी, हुज़ुज़ मक्की, क़रन्फ़ुल, साज़ज हिन्दी, सुरमा असफ़हानी प्रत्येक 4.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः जवाहर को नियमानुसार पीस लें और शेष औषधियों को कूट छान लें और फिर सब को एक साथ मिलाएँ और अच्छी तरह पीस कर सलाई से आँख में लगाएँ।

- **कुहल-ए-जौहरदारवी का अन्य नुस्ख़ा:**

यह आँख की रोशनी बढ़ाता है और देखने की शक्ति में बढ़ोत्तरी करता है।

औषधियाँ: याक़ूत सुर्ख़, याक़ूत कबूद, लअल आबदार प्रत्येक 13.5 ग्राम, ज़बरजद 9 ग्राम, फ़ीरोज़ह 22.5 ग्राम, मरजान 9 ग्राम, लाजवर्द मग़सूल 22.5 ग्राम, वरक़-ए-तिला, वरक़-ए-नुक़रा, अंबर अशहब प्रत्येक 6.75 ग्राम, सुरमा असफ़हानी 90 ग्राम, तूतिया-ए-किरमानी मग़सूल 45 ग्राम, बअरुज़्ज़ब्ब, सर्गीन-ए-ख़ुफ़्फ़ाश और मरवारीद नासुफ़्ता प्रत्येक 9 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को अलग अलग हल्के हाथों से ख़ूब बारीक पीस लें और सब को एक साथ मिला कर हरीर के कपड़े से छान लें और सोने की सलाई से आँख में लगाएँ।

- **कुहल का अन्य नुस्ख़ा:**

इस को "जाज़िबुन्नूर" कहा जाता है। यह आँख की रोशनी बढ़ाता है और देखने की शक्ति की रक्ष करता है।

औषधियाँ: आब-ए-बादियान में मुदब्बर सुरमा असफ़हानी 42 ग्राम, मरक़शीसा ज़हबी 28 ग्राम, आब-ए-बारां में मुदब्बर तूतिया, अक़लीमिया-ए-नुक़रा मुहर्रक़ मग़सूल प्रत्येक 35 ग्राम, मरवारीद नासुफ़्ता 7 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को हल्का पीस लें, मुश्क 832 मिलीग्राम को अलग से पीस लें, फिर सब को इतना पीसें कि वो अच्छी तरह मिल जाएँ। सलाई से आँख में लगाएँ।

- **कुहल का अन्य नुस्ख़ा:**

यह आँख की गरमी कम करता और दृष्टिक्षीणता व मंद दृष्टिता में लाभदायक है, पुतली व आँख को मज़बूत करता है।

औषधियाँ: आब-ए-बादियान में मुदब्बर सुरमा असफ़हानी, अक़लीमिया-ए-फ़िज़्ज़ी, सफ़ेदाब क़लई मग़सूल, निशास्ता प्रत्येक 17.5 ग्राम, तूतिया किरमानी 10.5 ग्राम, मामीरान चीनी 5.25 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर आँख में लगाएँ।

- **कुहल का अन्य नुस्ख़ा:**

इस को "दवाउलकातिब" कहा जाता है। यह आँख की रोशनी बढ़ाता है, देखने की शक्ति की रक्षा करता है और तरलता को सोखता है।

औषधियाँ: शयाफ़-ए-मामीसा और तुख़्म-ए-गुल प्रत्येक 3.5 ग्रमा, आब-ए-बादियान में मुदब्बर सुरमा 10.5 ग्राम,पोस्त-ए-हलीला ज़र्द 5.25 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को आब-ए-ग़ौरह में पीस कर सुखा लें फिर काफ़ूर 416 मिलीग्राम को पीस कर उस में सम्मिलित करें और दोबारा पीस कर आँख में लगाएँ।

- **कुहल का अन्य नुस्ख़ा:**

यह आँख की रोशनी बढ़ाता, उस को सशक्त करता और सुरक्षित रखता है।

औषधियाँ: बुरादा-ए-नुक़रा मुहर्रक़ एवं मग़सूल, मरवारीद नासुफ़्ता, सिब्र सक़ूतरी, नबात, तबरज़द, शीह-ए-मुहर्रक़ प्रत्येक 3.5 ग्राम, आब-ए-बाराँ में मुदब्बर सुरमा 17.5 ग्राम, मामीरान चीनी 1.75 ग्राम, काफ़ूर 832 मिलीग्राम, मुश्क 500 मिलीग्राम।

निर्माण-विधि: पीस कर रेशम के कपड़े से छान लें। सुबह शाम सलाई से आँख में लगाएँ।

❑❑❑

सप्तम खण्ड

# द्वितीय अध्याय

## ज़रूर के नुस्खे

- **ज़रूर-ए-अबयज़ का नुस्ख़ा:**

यह Conjuctivitis के अन्तिम चरण में लाभदायक है।

औषधियाँ: गधी के दूध में मुदब्बर अन्ज़रूत 35 ग्राम, नौशादर, समग़-ए-अरबी, शकर-ए-तबरज़द प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को हल्का कूट छान कर अत्याधिक बारीक पीसें और गुद्दी के बल लेटने के बाद आँख में ज़रूर करें।

- **ज़रूर-ए-असफ़र का नुस्ख़ा:**

यह Chronic Conjuctivitis और उस अश्रुपात में लाभदायक है जो विभिन्न प्रकार के तरल पदार्थ से होते हैं।

औषधियाँ: अन्ज़रूत मुदब्बर 35 ग्राम, शयाफ़-ए-मामीसा 17.5 ग्राम, सिब्र ज़र्द, ज़ाफ़रान और तुख़्म-ए-गुल प्रत्येक 17.5 ग्राम, अफ़ियून 1664 मिलीग्राम।

निर्माण-विधि: कूट कर रेशम के कपड़े से हल्का छान लें और गुद्दी के बल लेटने के बाद आँख में ज़रूर करें। थोड़ी देर तक लेटे रहें ताकि दवा प्रभाव कर सके।

- **ज़रूर-ए-काफ़ूरी का नुस्ख़ा:**

यह आँख की गरमी, Conjuctivitis में लाभदायक है। दर्द में आराम देता है।

औषधियाँ: सदफ़ मुहर्रक़, मरवारीद नासुफ़्ता प्रत्येक 7 ग्राम, नौशादर, शीह-ए-मुहर्रक़ प्रत्येक 3.5 ग्राम, काफ़ूर 416 मिलीग्राम।

निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर प्रयोग करें।

- **ज़रूर का अन्य नुस्ख़ा:**

यह Conjuctivitis के अन्तिम चरण में लाभदायक है।

औषधियाँ: अक़लीमिया-ए-नुक़रा, सिब्र सक़ूतरी प्रत्येक 3.5 ग्राम, कतीरा 70 ग्राम, समग़-ए-अरबी 14 ग्राम, निशास्ता 10.5 ग्राम, अफ़ियून 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर रेशम के कपड़े से हल्का छान लें। आब-ए-बादियान में मुदब्बर कर के सुखा लें और ज़रूर तैयार करें।

- **ज़रूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Chronic Conjuctivitis में लाभदायक है।

औषधियाँ: सफ़ेदाब मग़सूल, अक़लीमिया-ए-फ़िज़्ज़ह प्रत्येक 7 ग्राम, शादनज मग़सूल, मिस सोख़्ता प्रत्येक 12.25 ग्राम, कतीरा 21 ग्राम, समग़-ए-अरबी 14 ग्राम, अफ़ियून 1.75 ग्राम, लुलू ग़ैर मसक़ूब ज़ुबदुलबहर, नबात मिश्री, निशास्ता प्रत्येक 14 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर ज़रूर तैयार करें।

- **ज़रूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह दमवी Conjuctivitis में बहुत लाभदायक और मुजर्रब है। यह लेखक के प्रयोग में रहने वाला नुस्खा है।

औषधियाँ: बिना पोस्त के चशमीज़ा 17.5 ग्राम, दमुलअखवैन 3.5 ग्राम, कफ़, सफ़ेदा-ए-तुख़्म-ए-मुर्ग प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सफ़ेदा-ए-तुख़्म-ए-मुर्ग को चीनी के पात्र में हाथों से इतना मलें कि पुरा का पूरा झाग हो जाए फिर उस को सुखा लें। तत्पश्चात सभी औषधियों को हल्का पीसें और आवश्यकता के समय सुबह शाम ज़रूर करें।

- **ज़रूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह अश्रुपात, अंधापन, आँख की खुजली में बहुत लाभदायक है।

औषधियाँ: आब-ए-बादियान 175 ग्राम, क़िन्बील, ज़हरा-ए-कलंग, ज़हरा-ए-कबक प्रत्येक 10.5 ग्राम, मुश्क, काफ़ूर प्रत्येक 2.25 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को आब-ए-बादियान में मुदब्बर करें और सुखा कर अत्याधिक बारीक पीसने के बाद प्रयोग करें।

- **ज़रूर-ए-मलकायाः**

यह Conjuctivitis, Epidemic Conjuctivitis में लाभदायक है।

औषधियाँ एवं निर्माण-विधिः अन्ज़रूत मुदब्बर 35 ग्राम, निशास्ता, नबात प्रत्येक 10.5 ग्राम, ख़सक मुक़श्शर 17.5 ग्राम। सब को कूट छान कर ज़रूर तैयार करें।

- **ज़रूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह अश्रुपात, Granular Conjunctivitis और अंधापन में लाभदायक है।

औषधियाँ: तूतिया-ए-किरमानी मग़सूल 7 ग्राम, पोस्त-ए-हलीला ज़र्द, सिब्र

सक़ूतरी, दार-ए-फ़िलफ़िल और ज़र्द चौबा प्रत्येक 28 ग्राम, फ़िलफ़िल 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर हल्का छान लें और पीस कर प्रयोग करें।

- **ज़रूर-ए-अंबर का नुस्ख़ाः**

यह आँख के ज़ख्म, Pannus, Granular Conjunctivitis में लाभदायक है।

औषधियाँः तूतिया-ए-किरमानी मग़सूल, शीह-ए-मुहर्रक़ मग़सूल और शकर तबरज़द प्रत्येक 17.5 ग्राम, अन्ज़रूत मुदब्बर शयाफ़-ए-मामीसा प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः नियमानुसार बारीक पीस कर प्रयोग करें।

- **ज़रूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Pterygium को समाप्त करता है।

औषधियाँः मामीसा, साज़ज, हमामा प्रत्येक 416 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर रेशम के कपड़े से हल्का छान कर प्रयोग करें।

- **ज़रूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह बच्चों की आँख के दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँः अन्ज़रूत मुदब्बर और चशमीज़ा मुक़श्शर प्रत्येक 35 ग्राम, मामीरान और दमुलअखवैन प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट कर रेशम के कपड़े से छानने के बाद अच्छी तरह पीस लें और ज़रूर तैयार करें।

- **ज़रूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Pannus में लाभदायक है।

औषधियाँः तूतिया-ए-मग़सूल 7 ग्राम, मामीरान चीनी, ज़ुबदुलबहर, हुज़ुज़ मक्की, सिब्र सक़ूतरी, दार-ए-फ़िलफ़िल और पोस्त-ए-हलीला ज़र्द प्रत्येक 4.5 ग्राम, अन्ज़रूत मुदब्बर 9 ग्राम, समग़-ए-अरबी 4.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट लें। बारीक रेशमी कपड़े से छान कर ज़रूर तैयार करें।

- **ज़रूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Corneal Opacity को समाप्त करता है और आँखों को तेज़ करता है।

औषधियाँः तूतिया-ए-हिन्दी और सुरमा असफ़हानी प्रत्येक मुहर्रक़, तूबाल-ए-मिसस मुहर्रक़ प्रत्येक 10.5 ग्राम, मामीरान चीनी, मुर साफ़, सदफ़ मुहर्रक़ प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को हल्का कूट पीस कर प्रयोग करें।

- **ज़रूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह जब तक Staphyloma corneae ना हुआ हो, Corneal Opacity में लाभदायक है।

औषधियाँः सर्गीन-ए-खुताफ़, आक़रक़रहा, अन्ज़रूत, ज़न्गार, सक़मूनिया और अक़लीमिया-ए-फ़िज़्ज़ी।

निर्माण-विधिः सब को समभाग में हल्का कूट छान कर पीस लें और प्रयोग करें।

- **ज़रूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह हल्के Corneal Opacity को समाप्त करता है।

औषधियाँः अन्ज़रूत, मुर, ज़ुबदुलबहर और शकर तबरज़द।

निर्माण-विधिः सब को समभाग में पीस कर प्रयोग करें।

- **ज़रूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Corneal Opacity में लाभदायक है।

औषधियाँ एवं निर्माण-विधिः सरतान-ए-मुहर्रक़, ज़ुबदुलबहर, अक़लीमिया-ए-नुक़रा, बअरूज़्ज़ब्ब, शीह-ए-मुहर्रक। सब को पीस कर ज़रूर तैयार करें।

- **ज़रूर का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Hordeolum और Conjunctivitis में लाभदायक है।

औषधियाँः सफ़ेदाब मग़सूल, शादनज मग़सूल, अन्ज़रूत मुदब्बर प्रत्येक 7 ग्राम, दमुलअखवैन 1.75 ग्राम, चशमीज़ा मुक़श्शर 10.5 ग्राम, शीह-ए-मुहर्रक़ 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को हल्का कूट कर अत्याधिक बारीक पीसें और प्रयोग करें।

आँख के रोगों में यह सावधानी रखनी चाहिए कि प्रारंभ के तीन दिन तक आँख को उस की अपनी स्थिति पर छोड़े रखें, कुहल और ज़रूर आदि किसी भी औषधि का प्रयोग नहीं करें और आँखको किसी भी प्रकार की हानि होने से बचाएँ। ज़रूर औषधि के प्रयोग के समय यह ध्यान रखें कि उस को पलक के नीचे डालने की अनुमति नहीं है लकिन Corneal Opacity की स्थिति में ज़रूर को ठीक Corneal Opacity के ऊपर डालना चाहिए ताकि आँख और पलक को औषधि की तेज़ी से कोई नहीं पहुँचे।

❑❑❑

### सप्तम खण्ड
# तृतीय अध्याय

## बरूद के नुस्खे

- **बरूद-ए-काफ़ूरी का नुस्ख़ाः**

यह आँख में खुजली और घाव में लाभदायक है।

औषधियाँ एवं निर्माण-विधिः तूतिया-ए-किरमानी मग़सूल 17.5 ग्राम और काफ़ूर 7 ग्राम को हल्का पीस कर प्रयोग करें।

- **बरूद-ए-असवद का नुस्ख़ाः**

यह आँख के दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँः अफ़ियून 35 ग्राम, मुश्क 3.5 ग्राम, ज़ाफ़रान 832 मिलीग्राम, मुर साफ़ 17.5 ग्राम, मिस्स मुहर्रक़ 7 ग्राम, शकर तबरज़द 832 मिलीग्राम, मुर, हुज़ुज़ मक्की, हुल्बा, गुलनार और साज़ज हिन्दी प्रत्येक 416 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः नियमानुसार बरूद तैयार करें।

- **बरूद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह आँख की गरमी समाप्त करता और उसे कतल करता है।

औषधियाँः अक़लीमिया-ए-ज़हबी 14 ग्राम, तूतिया-ए-हिन्दी, सुरमा असफ़हानी प्रत्येक 17.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः तूतिया-ए-हिन्दी को जला लें और शेष को हल्का कूट छान कर अर्क़-ए-गुलाब और खल्ल-ए-खम्र में मिलाएँ फिर सूती कपड़े में बाँध कर दोबारा साफ़ पानी में मलें और धोएँ और कुछ देर के लिए रख छोड़ें ताकि वह नीचे बैठ जाएँ। उस के पानी को ऊपर से ही धीरे से अलग कर दें फिर उस को सुखा लें और काफ़ूर 832 मिलीग्राम डाल कर प्रयोग करें।

- **बरूद का अन्य नुस्ख़ाः**

यह आँख ठीक करता और आँख आने में लाभदायक है।

औषधियाँः साज़ज हिन्दी, अफ़ियून, निशास्ता प्रत्येक 24.5 ग्राम, समग़-ए-अरबी

105 ग्राम, अक़लीमिया-ए-फ़िज्ज़ी मग़सूल 140 ग्राम, सफ़ेदाब अर्ज़ीज़ 210 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट पीस लें और प्रयोग करें।

- **बरूद-ए-फ़ारसी का नुस्ख़ा:**

यह देखने की शक्ति को बढ़ाता है और और आँख की रक्षा करता है।

औषधियाँः तूतिया-ए-किरमानी, अक़लीमिया-ए-फ़िज्ज़ी, हज़ार फ़शाँ सभी मग़सूल प्रत्येक 17.5 ग्राम, सुंबुल, साज़ज हिन्दी और ज़ाफ़रान प्रत्येक 3.5 ग्राम, मरवारी बिक्र 7 ग्राम, काफ़ूर 832 मिलीग्राम और मुश्क 416 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को अधिक बारीक पीस करप्रयोग करें।

- **बरूद-ए-अहमर का नुस्ख़ा:**

यह आँख के तरल पदार्थों को सोखता है, ज़ख़्मों को समाप्त करता है और आँख को सूखा करता है।

औषधियाँः शादनज मग़सूल 35 ग्राम, रूसख़्तज 17.5 ग्राम, मरवारीद 4.5 ग्राम, नबात 832 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः नियमानुसार हल्का पीस कर प्रयोग करें।

- **बरूद-ए-रुम्मानी का नुस्ख़ा:**

यह नुस्खा "ज़खीरा" पुस्तक से लिया गया है। यह आँख को मज़बुत बनाता है और आँख की रोशनी तेज़ करता है।

औषधियाँ एवं निर्माण-विधिः अनार तुर्श व शीरीं को उन के दाना और तुख़्म समेत कूट निचोड़ कर रस प्राप्त करें। 810 मिलीलीटर आब-ए-अनारैन के साथ 350 मिलीलीटर अंगबीन बढ़ा कर देग-ए-संगीं पर हल्की आँच पर पकाएँ। उस की झाग उतारते रहें यहाँ तक कि क़िवाम तैयार हो जाए।उस को सरक्षित कर लें।

- **बरूद का अन्य नुस्ख़ा:**

यह आँख को साफ़ करता और उसकी रोशनी बढ़ाता है।

औषधियाँः शादनज मग़सूल,रूसख़्तज प्रत्येक 17.5 ग्राम, सिब्र सक़ूतरी, बूरह अरमनी प्रत्येक 3.5 ग्राम, ज़न्गार, फ़िलफ़िल, शहम-ए-हन्ज़ल, ज़ाफ़रान और नानख़्वाह प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः नियमानुसार कूट छान कर प्रयोग करें।

- **बरूद-ए-हुस्रूम:**

यह Blepharitis, Vascular keratitis, Granular Conjunctivitis और

Pterygium में लाभदायक है।

औषधियाँ: तूतिया-ए-किरमनी 26.25 ग्राम, पोस्त-ए-हलीला ज़र्द, ज़न्जबील प्रत्येक 17.5 ग्राम, ज़र्द चौबा 35 ग्राम, दार-ए-फ़िलफ़िल, मामीरानप्रत्येक 7 ग्राम, नमक-ए-हिन्दी 1664 मिलीग्राम।

निर्माण-विधि: कूट छान कर 5 या 7 बार पानी में भिगोएँ। हर बार पानी बदल दिया करें। सुखा कर बारीक पीस लें।

- **बरूद-ए-हुस्रूम का नुस्ख़ा:**

यह आँखकी गरमी, Blepharitis और अश्रुपात में लाभदायक है।

औषधियाँ एवं निर्माण-विधि: तूतिया-ए-किरमनी को कूट लें और पानी में भिगो कर पीसें फिर एक हफ़्ता तक पानी में डाले रहें और फिर दोबारा पीसें और सुखा कर प्रयोग करें।

- **बरूद का अन्य नुस्ख़ा:**

यह आँख की गरमी, Corneal Opacity, अश्रुपात, Blepharitis, Pannus और Pterygium में लाभदायक है।

औषधियाँ: तूतिया-ए-किरमनी मग़सूल और पानी में मुदब्बर 35 ग्राम, पोस्त-ए-हलीला ज़र्द, ज़न्जबील, ज़र्द चौबा प्रत्येक 17.5 ग्राम, दार-ए-फ़िलफ़िल, मामीरान चीनी प्रत्येक 10.5 ग्राम, बूरह अरमनी 1.75 ग्राम, मरवारीद नासुफ़्ता 3.5 ग्राम, नमक-ए-हिन्दी 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को हल्का कूट छान कर प्रयोग करें।

- **बरूद का अन्य नुस्ख़ा:**

यह पपोटों में होने वाले Ulcers और Pustules में लाभदायक है।

औषधियाँ: शादनज मग़सूल, रूसख़्तज, अफ़ियून, निशास्ता प्रत्येक 21 ग्राम, समग़-ए-अरबी 10.5 ग्राम, अक़लीमिया-ए-ज़हबी 140 ग्राम, सफ़ेदाब मग़सूल।

निर्माण-विधि: सब को कूटछान कर हल्का पीस लें।

❑❑❑

सप्तम खण्ड

# चतुर्थ अध्याय

## शयाफ़ के नुस्ख़े

- **शयाफ़-ए-अबयज़ का नुस्ख़ाः**

यह गर्मी से होने वाले Conjunctivitis में लाभदायक है। आराम पहुँचाता है।

औषधियाँः सफ़ेदाब अर्ज़ीज़ 24.5 ग्राम, समग़-ए-अरबी 17.5 ग्राम, अफ़ियून और कतीरा प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर सफ़ेदी-ए-बैज़ा-ए-मुर्ग़ के साथ मिलाएँ। शीर-ए-दुख़्तरान में पीसें और प्रयोग करें।

- **शयाफ़-ए-अबयज़ काफ़ूरी का नुस्ख़ाः**

यह गरमी और सफ़रा के कारण होने वाले Conjunctivitis में लाभदायक है और दर्द एवं ज़ख़्म में आराम पहुँचाता है।

औषधियाँः सफ़ेदाब मग़सूल 21 ग्राम, गधी के दूध में मुदब्बर अन्ज़रूत 10.5 ग्राम, कतीरा 7 ग्राम, निशास्ता 17.5 ग्राम, अफ़ियून 1.75 ग्राम, काफ़ूर 832 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर सफ़ेदी-ए-बैज़ा-ए-मुर्ग़ के साथ मिलाएँ। गर्द व ग़ुबार से साफ़ कर के सुखा लें। आवश्यकता के समय शीर-ए-दुख़्तरान में पीस कर आँख में क़तूर करें।

- **शयाफ़-ए-अबयज़ काफ़ूरी का नुस्ख़ाः**

यह Conjunctivitis के प्रारंभ में लाभदायक है।

औषधियाँः सफ़ेदाब मग़सूल और अन्ज़रूत मुदब्बर 10.5 ग्राम, अफ़ियून और समग़-ए-अरबी प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः नियमानुसार सफ़ेदी-ए-बैज़ा-ए-मुर्ग़ के साथ मिला कर साफ़ कर लें।

- **शयाफ़-ए-अबयज़ कुन्दरी सग़ीर का नुस्ख़ाः**

यह अल्सर, बलग़म के कारण होने वाले Conjunctivitis में लाभदायक है। यह गरमी के कारण होने वाले Conjunctivitis में विशेष रूप से लाभदायक है।

औषधियाँः सफ़ेदाब अर्ज़ीज़ 24.5 ग्राम, अन्ज़रूत मुदब्बर, अफ़ियून और कतीरा प्रत्येक 3.5 ग्राम, समग़-ए-अरबी 14ग्राम, कुन्दुर 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान लें और आब-ए-बाराँ में मिला कर शयाफ़ तैयार करें और प्रयोग करें।

- **शयाफ़-ए-शादनज का नुस्ख़ाः**

यह Vascular keratitis, Pterygium, Blepharitis और Corneal Opacity में लाभदायक है।

औषधियाँः शादनज मग़सूल 21 ग्राम, समग़-ए-अरबी 17.5 ग्राम, मिस्स मुहर्रक, ज़ाज मुहर्रक़ प्रत्येक 7 ग्राम, अफ़ियून, सिब्र सक़ूतरी प्रत्येक 1.75 ग्राम, ज़ाफ़रान, मुर मक्की प्रत्येक 416 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर शयाफ़ तैयार करें।

- **शयाफ़-ए-शादनज का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Heaviness of Eyelids, Conjunctivitis के अंतिम चरण में लाभदायक है।

औषधियाँः शादनज मग़सूल 35 ग्राम, मिस्स मुहर्रक 28 ग्राम, समग़-ए-अरबी, कतीरा और मुर साफ़ प्रत्येक 7 ग्राम, बुसुद, मरवारीद नासुफ़्ता और साज़ज हिन्दी प्रत्येक 14 ग्राम, दमुलअखवैन और ज़ाफ़रान प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-बाराँ के साथ मिलाएँ।

- **शयाफ़-ए-ज़न्गार का नुस्ख़ाः**

यह Granular Conjunctivitis, Vascular keratitis और Corneal Opacity में लाभदायक है।

औषधियाँः ज़न्गार 10.5 ग्राम, अक़लीमिया-ए-नुक़रा, समग़-ए-अरबी, सफ़ेदाब और उशक़ प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः उशक़ को आब-ए-सुद्दाब में घोलें और शेष सभी औषधियों को कूट छान कर एक साथ मिलाएँ।

- **शयाफ़-ए-अन्ज़रूत का नुस्ख़ाः**

यह मोतियाबिंद के प्रारंभ और दृष्टिहीनता में लाभदायक है।

औषधियाँः अन्ज़रूत मुदब्बर, शयाफ़-ए-मामीसा प्रत्येक 24.5 ग्राम, मुर साफ़, बूरह अरमनी, फ़िलफ़िल सफ़ेद प्रत्येक 14 ग्राम, ज़र्नीख़ ज़र्द 7 ग्राम, ज़ाफ़रान 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर शयाफ़ तैयार करें।

- **शयाफ़-ए-असवद का नुस्ख़ाः**

यह Induration of the Eyelids और आँख में पाई जाने वाली Pneum में लाभदायक है।

औषधियाँः मिस्स मुहर्रक़ और अफ़ियून प्रत्येक एक एक भाग, मरवारीद बिक्र अर्धभाग, अक़ाक़िया दो भाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर शयाफ़ तैयार करें।

- **शयाफ़-ए-हलवानी का नुस्ख़ाः**

जो Pneum आँखों में एकत्रित हो जाती है उस को समाप्त करता है और Conjunctivitis लाभदायक है।

औषधियाँः शादनज मग़सूल, मिस्स मुहर्रक़ प्रत्येक 10.5 ग्राम, अक़ाक़िया 7 ग्राम, कतीरा, समग़-ए-अरबी, सुंबुल और ज़ाफ़रान प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः पानी के साथ मिला कर शयाफ़ तैयार करें।

- **शयाफ़-ए-अनार का नुस्ख़ाः**

यह Ulcers of the eye, Iridoptosis और Induration of the Eyelids में लाभदायक है।

औषधियाँः अक़लीमिया-ए-तिला, सफ़ेदाब, मिस्स मुहर्रक़, सुरमा असफ़हानी, समग़-ए-अरबी, कतीरा, सुर्ब मुहर्रक़ प्रत्येक 24.5 ग्राम, अफ़ियून 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-बाराँ के साथ मिलाएँ।

- **शयाफ़-ए-अनार का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से प्राप्त होने वाले लाभ भी पहले की ही भाँति हैं।

औषधियाँः सुर्ब मुहर्रक, कतीरा, समग़-ए-अरबी प्रत्येक 21 ग्राम, अफ़ियून 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर शयाफ़ तैयार करें।

कुछ नुस्खों में अक़लीमिया-ए-फ़िज़्ज़ी और सफ़ेदाब प्रत्येक 21 ग्राम, कुन्दुर 14 ग्राम भी बढ़ाया जाता है।

- **शयाफ़-ए-अनार का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Ulcers of the eye और Iridoptosis में लाभदायक है और Induration of the Eyelids में आराम पहुँचाता है।

औषधियाँः अक़लीमिया-ए-तिला, तूतिया, सुरमा असफ़हानी, सफ़ेदाब, अन्ज़रूत मुदब्बर और कुन्दुर प्रत्येक 7 ग्राम, अन्ज़रूत मुहर्रक़ 10.5 ग्राम, दमुलअखवैन और

अफ़ियून प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर शयाफ़ तैयार करें।

- **शयाफ़–ए–कुन्दुर का नुस्ख़ाः**

यह Ulcers और Pustules of eyelids में लाभदायक है।

औषधियाँ: उशक़, अन्ज़रूत मुदब्बर प्रत्येक 17.5 ग्राम, कुन्दुर 35 ग्राम, ज़ाफ़रान 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर लुआब-ए-हुल्बा के साथ मिलाएँ।

- **शयाफ़–ए–क़लन्दर का नुस्ख़ाः**

यह Pterygium और Corneal Opacity में बहुत लाभदायक है।

औषधियाँ: नौशादर, क़लन्दर, बूरह अरमनी प्रत्येक 3.5 ग्राम, रू-ए-मुहर्रक़ 17.5 ग्राम, ज़न्गार 7 ग्राम, ज़र्नीख़ 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर एक हफ़्ता सिर्का में रखें फिर सब को मिला कर शयाफ़ तैयार करें और प्रयोग करें।

- **शयाफ़–ए–मुर्र का नुस्ख़ाः**

यह Pterygium और Ecchymosis of the eye में लाभदायक है।

औषधियाँ: मुर साफ़, कुन्दुर, ज़ाफ़रान प्रत्येक 17.5 ग्राम, ज़र्नीख़ सुर्ख़ 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर शयाफ़ तैयार करें।

- **शयाफ़–ए–मरारात का नुस्ख़ाः**

यह Ptilosis और मोतियाबिन्द के प्रारंभ में लाभदायक है, आँख की रोशनी को बढ़ाता है।

औषधियाँ: ज़हर-ए-बाज़, ज़हर-ए-कबक, ज़हरा-ए-बाशक, ज़हर-ए-शबूत, ज़हर-ए-बुज़ कोही, ज़हर-ए-कलंग।

निर्माण-विधिः सब को सुखा कर प्रत्येक से एक भाग लें और पीस लें फिर थोड़ी मात्रा में शहम-ए-हन्ज़ल और थोड़ी मात्रा में सकबीनज को आब-ए-बादियान में घोलें और मरारात को उस में डाल कर शयाफ़ तैयार करें और प्रयोग करें।

- **शयाफ़–ए–मरारात का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से भी वही लाभ प्राप्त होते हैं।

औषधियाँ : ज़हरा-ए-बाशक, ज़हरा-ए-मीही शबूत, ज़हरा-ए-बाज़, ज़हरा-ए-कबक, ज़हरा-ए-बुज़ कोही, ज़हरा-ए-दुर्राज, ज़हरा-ए-कबूतर, ज़हरा-ए-लक़लक़, ज़हरा-ए-

क़फ़्तार, ज़हरा-ए-रूबाह, ज़हरा-ए-खागोश, ज़हरा-ए-आहू, ज़हरा-ए-खर।

निर्माण-विधि: सब को सुखा कर एक एक भाग लें। कई बार आब-ए-बादियान में संग-ए-सुमाक़ पर पीसें। आवश्यकता के समय आब-ए-बादियान के साथ पीस कर आँख में लगाएँ।

- **शयाफ़ का अन्य नुस्ख़ा:**

यह मोतियाबिन्द के प्रथम चरण में बहुत लाभदायक है।

औषधियाँ: अन्ज़रूत 17.5 ग्राम, शयाफ़-ए-मामीसा 1.75 ग्राम, ज़ाफ़रान 2.25 ग्राम, ज़र्नीख़ सुर्ख़ 3.5 ग्राम, बूरह अरमनी, फ़िलफ़िल सफ़ेद, अफ़ियून प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को कूट कर शयाफ़ तैयार करें।

- **शयाफ़-ए-दीनारज़ून का नुस्ख़ा:**

यह Granular Conjunctivitis, Corneal Opacity, Pannus, Pterygium में लाभदायक है। यह आँख की रोशनी बढ़ाता है।

औषधियाँ: अक़लीमिया और सफ़ेदाब अर्ज़ीज़ प्रत्येक 35 ग्राम, कतीरा और मुर साफ़ प्रत्येक 17.5 ग्राम, मरवारीद नासुफ़्ता, बुसुद और दमुलअखवैन प्रत्येक 14 ग्राम, ज़र्नीख़ सुर्ख़, नबात और अक़ाक़िया प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर शयाफ़ तैयार करें।

- **शयाफ़-ए-दीनारज़ून का अन्य नुस्ख़ा:**

यह Pannus को समाप्त करता है।

औषधियाँ: ज़र्द चौबा, शादनज मग़सूल, शयाफ़-ए-मामीसा और सिब्र ज़र्द।

निर्माण-विधि: सभी औषधियों को समभाग में लेकर कूट छान लें और आब-ए-बाराँ के साथ पीस कर शयाफ़ तैयार करें।

- **शयाफ़ का अन्य नुस्ख़ा:**

यह सौदा से होने वाली Conjunctivitis में लाभदायक है।

औषधियाँ: सफ़ेदानब और अक़लीमिया प्रत्येक 35 ग्राम, अफ़ियून, निशास्ता प्रत्येक 3.5 ग्राम, कतीरा 5.25 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर नियमानुसार शयाफ़ तैयार करें।

- **शयाफ़ का अन्य नुस्ख़ा:**

यह Fistula lacrimatis में लाभदायक है।

औषधियाँ: सिब्र ज़र्द, कुन्दुर, अन्ज़रूत, दमुलअखवैन, सुरमा असफ़हानी, शिब

यमानी प्रत्येक 3.5 ग्राम, ज़न्गार 624 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर अर्क़-ए-गुलाब के साथ मिलाएँ और शयाफ़ तैयार कर के प्रयोग करें।

- **शयाफ़-ए-वर्दी का नुस्ख़ाः**

यह Staphyloma corneaev Ulcers of eye, Pustules of eye, Iridoptosis, Iris के चिपकने और Amaurosis में लाभदायक है।

औषधियाँ: वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़ 324 ग्राम, अक़लीमिया-ए-नुक़रा मग़सूल,समग़-ए-अरबी प्रत्येक 108 ग्राम, ज़ाफ़रान 27 ग्राम, मुर साफ़, अफ़ियून और सुरमा प्रत्येक 9 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-बाराँ के साथ मिलाएँ।

- **शयाफ़-ए-हिल्तीत का नुस्ख़ाः**

यह ख़्यालात व मोतियाबिन्द के पहले चरण में लाभदायक है।

औषधियाँ एवं निर्माण-विधिः हिल्तीत और ख़रबक़ स्याह प्रत्येक 35 ग्राम, सकबीनज 10.5 ग्राम को शहद में मिला कर शयाफ़ तैयार करें।

- **शयाफ़-ए-अलाई का नुस्ख़ाः**

यह आँख की पुतलियों और लैक्रिमल ग्लांड के ज़खमों, Granular Conjunctivitis, Blepharitis, अंधापन, अश्रुपात, Pannus, Pterygium और पुतलियों के खुरदुरेपन में लाभदायक है।

औषधियाँ: तूतिया-ए-किरमानी मग़सूल 21 ग्राम, मामीरान चीनी, शयाफ़-ए-मामीसा प्रत्येक 17.5 ग्राम, दार-ए-फ़िलफ़िल, ज़न्जबील, ज़ुबदुलबहर, हुज़ुज़ मक्की प्रत्येक 10.5 ग्राम, ज़ाफ़रान 7 ग्राम, कतीरा, समग़-ए-अरबी प्रत्येक 8.75 ग्राम, पोस्त-ए-हलीला ज़र्द, साज़ज हिन्दी प्रत्येक 10.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान लें। आब-ए-ग़ौरह के साथ पत्थर पर कई बार पीस कर सुखाएँ और शयाफ़ तैयार करें।

- **शयाफ़-ए-अलाई का अन्य नुस्ख़ाः**

यह आँख की रोशनी बढ़ाता है।

औषधियाँ: तूतिया-ए-किरमानी मग़सूल, पोस्त-ए-हलीला ज़र्द, कतीरा प्रत्येक 17.5 ग्राम, नौशादर 416 मिलीग्राम, ज़र्द चौबा 13.5 ग्राम, ज़न्जबील, समग़-ए-अरबी, शयाफ़-ए-मामीसा प्रत्येक 9 ग्राम, दार-ए-फ़िलफ़िल, नमक-ए-हिन्दी, मामीरान, ज़ाफ़रान, सिब्र ज़र्द और हुज़ुज़ मक्की प्रत्येक 4.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान लें। पानी के साथ कई बार हल्का पीस कर शयाफ़ तैयार करें और सुखा कर सुरक्षित कर लें। आवश्यकता के समय अर्क़-ए-गुलाब में पीस कर प्रयोग करें।

- **शयाफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Conjunctivitis में लाभदायक है।

औषधियाँः कतीरा और सफ़ेदाब अर्ज़ीज़ प्रत्येक 7 ग्राम, अफ़ियून 832 मिलीग्राम, शयाफ़-ए-मामीसा 3.5 ग्राम, हुज़ुज़ हिन्दी 1.75 ग्राम, दमुलअखवैन 875 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट कर सफ़ेदी-ए-बैज़ा-ए-मुर्ग़ में मिलाएँ और शयाफ़ तैयार करें और आवश्यकता के समय शीर-ए-दुख़्तरान में पीस कर आँखमें लगाएँ।

- **शयाफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Chronic pain में बहुत लाभदायक है।

औषधियाँः दुहना फ़रन्गी, मरवारीद तूतिया-ए-किरमानी, नासुफ़्ता, ज़ुबदुलबहर और गुल-ए-कासनी प्रत्येक एक एक भाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर रोग़न-ए-बादाम में चर्ब करें, तीन दिन तीन रात सूरज और चाँद के सामने रखें और सफ़ेदी-ए-बैज़ा-ए-मुर्ग़ के साथ मिला कर शयाफ़ तैयार करें और आँख में लगाएँ।

- **शयाफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह "ज़खीरा" पुस्तक से लिया गया है। यह Trichiasis, Granular Conjunctivitis, Amaurosis, Pannus, Blepharitis और आँख की सूजन में बहुत लाभदायक है।

औषधियाँः ज़न्गार 21 ग्राम, उशक़ समग़-ए-अरबी और उशक़ प्रत्येक 7 ग्राम, कुन्दुर ज़र्द 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-सुद्दाब के साथ मिलाएँ और शयाफ़ तैयार कर के प्रयोग करें।

- **शयाफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Trichiasis, Chronic Granular Conjunctivitis, Chronic Pannus में लाभदायक है।

औषधियाँः समग़-ए-अरबी, कतीरा, सफ़ेदाब, मुर साफ़, सिब्र ज़र्द, अन्ज़रूत मुदब्बर, ज़न्गार, ज़र्नीख़ सुर्ख़, क़लक़तार मुहर्रक़ प्रत्येक 7 ग्राम, दमुलअखवैन, अक़ाक़िया प्रत्येक 1.75 ग्राम, तूतिया, हुज़ुज़ मक्की, सुंबुलुत्तीब, माज़ू मुहर्रक़ प्रत्येक

3.5 ग्राम, सरज़ू 10.5 ग्राम, उशक़ और अफ़ियून प्रत्येक 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सरज़ू, Exudates को आब-ए-सुद्दाब और तुर्शी-ए-तुरन्ज में घोलें और शेष सब को कूट कर मिलाएँ और शयाफ़ तैयार कर के आवश्यकता के समय प्रयोग करें।

- **शयाफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह आँख आने, पलक की सूजन, पुराने आँख आने में लाभदायक है, दर्द में आराम पहुँचाता और नींद लाता है।

औषधियाँः शयाफ़-ए-मामीसा 54 ग्राम, अन्ज़रूत 27 ग्राम, शादनज मग़सूल 13.5 ग्राम, उसारा-ए-बीख़-ए-लुफ़्फ़ाह 9 ग्राम, अफ़ियून 40.5 ग्राम, समग़-ए-अरबी 6.75 ग्राम, कतीरा 13.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को हल्का कूट छान कर पानी में मिलाएँ और शयाफ़ तैयार कर के छाँव में सुखा लें और आवश्यकता के समय पानी में पीस कर आँख में लगाएँ।

- **शयाफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

इस से भी वही लाभ प्राप्त होते हैं।

औषधियाँः उसारा-ए-मामीसा 108 ग्राम, अन्ज़रूत 18 ग्राम, समग़-ए-अरबी 54 ग्राम, ज़ाफ़रान, मुर मक्की, अफ़ियून और ज़ाज़ मुहर्रक़ प्रत्येक 36 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को हल्का कूट छान करआब-ए-बाराँ में मिलाएँ और शयाफ़ तैयार करें। आवश्यकता के समय सफ़ेदी-ए-बैज़ा-ए-मुर्ग़ के साथ पीस कर प्रयोग करें।

- **शयाफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह आँख की रोशनी बढ़ाता है, Granular conjunctivitis, Pannus और मोतियाबिन्द के प्रथम चरण में लाभदायक है।

औषधियाँः अक़लीमिया-ए-ज़हबी, मरवारीद नासुफ़्ता प्रत्येक 7 ग्राम, मामीरान चीनी, फ़िलफ़िल और सफ़ेदाब प्रत्येक 3.5 ग्राम, सिब्र ज़र्द, शयाफ़-ए-मामीसा प्रत्येक 1.75 ग्राम, ज़ुबदुल बहर और रू-ए-मुहर्रक़ प्रत्येक 1.75 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को हल्का कूट छान कर आब-ए-बादियान में मिलाएँ और शयाफ़ तैयार कर के छाँव में सुखा लें। आवश्यकता के समय आब-ए-बादियान के साथ पीस कर आँख में लगाएँ।

- **शयाफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Conjunctivitis, Pannus, Corneal opacity में लाभदायक है।

औषधियाँ एवं निर्माण-विधिः ज़न्गार, समग़-ए-अरबी और सफ़ेदाब अर्ज़ीज़ प्रत्येक एक एक भाग लेकर कूट लें और रेशम के कपड़े से छानने के बाद आब-ए-सुद्दाब के साथ मिला कर शयाफ़ तैयार करें।

- **शयाफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह आँख की रोशनी बढ़ाता है, पुतली और लैक्रिमल ग्रंथियों की खुजली, पुतलियों की सूजन और Granular conjunctivitis में लाभदायक है।

औषधियाँः तूतिया-ए-किरमानी, शीह-ए-मुहर्रक़, सफ़ेदाब अर्ज़ीज़ प्रत्येक 3.5 ग्राम, मरवारीद नासुफ़्ता, नमक-ए-हिन्दी प्रत्येक 1.75 ग्राम, समग़-ए-अरबी, उसारा-ए-मामीसा प्रत्येक 3.5 ग्राम, मुश्क 7 ग्राम, शादनज मग़सूल, मामीरान चीनी, अक़लीमिया-ए-नुक़रा और मिस्स मुहर्रक़ प्रत्येक 3.5 ग्राम, मुश्क और काफ़ूर 250 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को हल्का कूट कर आब-ए-सुमाक़ के साथ मिलाएँ और शयाफ़ तैयार कर के छाँव में सुखा लें फिर आवश्यकता के समय अर्क़-ए-गुलाब में पीस कर आँख में लगाएँ।

- **शयाफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Conjunctivitis के प्रारंभिक चरण में लाभदायक है।

औषधियाँः अक़लीमिया-ए-ज़हबी और नुहास मुहर्रक़ प्रत्येक 10.5 ग्राम, शयाफ़-ए-मामीसा 7 ग्राम, अक़ाक़िया, अफ़ियून, सुरमा असफ़हानी प्रत्येक 3.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को हल्का कूट छान कर आब-ए-बाराँ में पीसें और आँख में लगाएँ।

- **शयाफ़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Corneal Opacity में लाभदायक है।

औषधियाँः मुर मक्की और ज़ाफ़रान प्रत्येक 7 ग्राम, सुंबुलुत्तीब 17.5 ग्राम, दुखान-ए-ज़ुजाज 52.5 ग्राम, समग़-ए-अरबी 14 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को हल्का कूट छान कर आब-ए-बाराँ के साथ मिलाएँ और शयाफ़ तैयार कर के छाँव में सुखा लें फिर आवश्यकता के समय आब-ए-बाराँ में पीस कर आँख में लगाएँ।

❑❑❑

सप्तम खण्ड
# पन्चम अध्याय

## तिला एवं ज़िमाद के नुस्खे़
### जो नेत्र रोगों एवं नेत्र के दर्दों के लिए विशेष रूप से लाभदायक हैं अथवा प्रयोग किए जाते हैं

- **तिला का नुस्ख़ाः**

यह गर्मी के कारण होने वाले आँख के दर्द में लाभदायक है, उस से होने वाली टीस में आराम पहुँचाता है और साथ ही दर्द एवं गर्मी में भी आराम पहुँचाता है।

औषधियाँ एवं निर्माण-विधिः शयाफ़-ए-मामीसा, हुज़ुज़ मक्की, ज़ाफ़रान, अफ़ियून, गिल-ए-अरमनी और अक़ाक़िया प्रत्येक एक एक भाग लें, कूट छान कर आब-ए- इनबुस्सअलब के साथ मिलाएँ और आँख के चारों ओर लगाएँ।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गर्मी से आँख आने और Throbbing में लाभदायक है।

औषधियाँ एवं निर्माण-विधिः शयाफ़-ए-मामीसा, सिब्र सक़ूतरी, हुज़ुज़, ज़ाफ़रान, अफ़ियून, सन्दल सुर्ख़, अदस मुक़श्शर, वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़ प्रत्येक एक एक भाग लें। कूट छान लें और आब-ए-इनबुस्सअलब में मिला कर आँख पर लगाएँ।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Conjunctivitis में लाभदायक है।

औषधियाँ एवं निर्माण-विधिः पोस्त-ए-अनार शीरीं, अदस मुक़श्शर, वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़ प्रत्येक एक एक भाग लें। कूट छान कर थोड़ी से पानी के साथ पकाएँ और आँख पर लगाएँ।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह आँख आने से होने वाले तेज़ दर्द में आराम देता है।

औषधियाँः सन्दल सुर्ख़, शयाफ़-ए-मामीसा, फ़ोफ़ल, समग़-ए-अरबी, अक़ाक़िया।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-इनबुस्सअलब या आब-ए-किशनीज़ के साथ मिलाएँ और आँख में लगाएँ।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह ठोस हो चुकी पुतलियों में लाभदायक है।

औषधियाँः पीह-ए-मुर्ग़, रोग़न-ए-गुल, ज़र्दी-ए-बैज़ा।

निर्माण-विधिः सब को मिला कर पलक पर लगाएँ।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह आँख में होने वाली खुजली में लाभदायक है।

औषधियाँः अदस मुक़श्शर, सुमाक़, वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़ और तुख़्म-ए-अनार प्रत्येक थोड़ी थोड़ी मात्रा में।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर पानी में पकाएँ और आँख के ऊपर लगाएँ।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह पलकों की सूजन को समाप्त करता है।

औषधियाँः मवीज़ज एक भाग, सिब्र ज़र्द और बूरह अरमनी प्रत्येक अर्धभाग।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर पानी के साथ मिलाएँ और भौं पर लगाएँ।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह पहले नुस्खे की तुलना में अधिक प्रभावी नुस्खा है।

औषधियाँ एवं निर्माण-विधिः सुमाक़, ज़र्नीख़, सिब्र और सफ़ेदाब अर्ज़ीज़ प्रत्येक एक एक भाग लें और सब को एक साथ मिला कर भौं के ऊपर लगाएँ।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह गरमी के कारण आँख आने में लाभदायक है।

औषधियाँः अदस मुक़श्शर और वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़ प्रत्येक एक एक भाग काफ़ूर 250 मिलीग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर आब-ए-कासनी सब्ज़ के साथ मिलाएँ और आँख पर लगाएँ।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

यह Stye/Hordeolum को समाप्त करता है।

औषधियाँ: शयाफ़-ए-मामीसा, गिल-ए-अरमनी, सिब्र ज़र्द प्रत्येक थोड़ी मात्रा में।

निर्माण-विधि: सब को कूट छान कर आब-ए-किशनीज़ सब्ज़ के साथ मिलाएँ।

- **तिला का एक अन्य नुस्ख़ा:**

यह Trichiasis/Entropion में लाभदाकय है।

औषधियाँ एवं निर्माण-विधि: सदफ़-ए-सग़ीर को जला कर क़ुतरान के साथ मिलाएँ और भौं पर लगाएँ।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ा:**

यह अधिक बालों को दूर करता है।

औषधियाँ: ख़ून-ए-ख़ारपुशत, ख़ून-ए-वज़ग़ सब्ज़, अलक़ मुहर्रक़, नौशादर, शहम मुहर्रक़।

निर्माण-विधि: सब को एक साथ मिलाएँ, बालों को उखाड़ें और उन की जड़ों में यह तिला लगाएँ। दो तीन बार यह तिला प्रयोग करें तो अधिक बाल नहीं उगेंगे।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ा:**

यह भौं में पाए जाने वाले बालों को उखाड़ता है और इस के प्रयोग से अधिक बाल नहीं आतें हैं।

औषधियाँ, निर्माण-विधि एवं प्रयोग-विधि: किन्नह जो कुत्ते के कान पर चिपकी रहती है, का ख़ून थोड़ी मात्रा में, तुख़्म-ए-मारचा और शीरा-ए-दरख़्त-ए-अन्जीर को एक साथ मिलाएँ और जहाँ का बाल उखाड़ना है उस स्थान पर लगाएँ।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ा:**

यह Conjunctivitis के अंतिम चरण में लाभदाकय है।

औषधियाँ: इक्लीलुलमलिक 17.5 ग्राम, ज़ाफ़रान 3.5 ग्राम, किशनीज़ सब्ज़ 35 ग्राम।

निर्माण-विधि: सब को कूट कर एक साथ बारीक पीस लें फिर ज़र्दी-ए-बैज़ा-ए-मुर्ग़ के साथ मिलाएँ और आँख पर लगाएँ।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ा:**

यह Conjunctivitis के प्रथम चरण और Hot Swelling में लाभदायक है। यह Repellent है।

औषधियाँ एवं निर्माण-विधि: उसारा-ए-बर्ग-ए-ख़ुर्फ़ह, उसारा-ए-बर्ग-ए-काहू, पिस्त-ए-जौ, शयाफ़-ए-मामीसा, उसारा-ए-बर्ग-ए-असर्राई, लुआब-ए-अस्पग़ोल, आब-ए-इनब, गर्द-ए-आसिया, ज़ाफ़रान, पोस्त-ए-ख़शख़ाश प्रत्येक उचित मात्रा में लें और सफ़ेदी-ए-बैज़ा-ए-मुर्ग़ मिला कर आँख के चारों ओर लगाएँ।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

  यह असंतुलित आहार के कारण आँख के पीछे हो ने वाले नीलेपन में लाभदायक है।

  औषधियाँ एवं निर्माण-विधिः सन्दल और मुरदारसंग को अर्क़-ए-गुलाब के साथ पीस कर तिला करें।

- **ज़िमाद का एक नुस्ख़ाः**

  यह Conjunctivitis, Epidemic Conjunctivitis और गरमी के कारण होने वाले Conjunctivitis में लाभदायक है।

  औषधियाँ एवं निर्माण-विधिः इक्लीलुलमलिक, ज़ाफ़रान, हुज़ुज़, सिब्र सक़ूतरी को कूट छान लें और आब-ए-किशनीज़ तर में मिला कर आँख पर लगाएँ।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

  यह Blepharitis में लाभदाकय है।

  औषधियाँ एवं निर्माण-विधिः सिब्र सक़ूतरी, शयाफ़-ए-मामीसा, अक़ाक़िया, मुर और बुसुद प्रत्येक एक एक भाग लेकर पानी में घोलें और तिला करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

  यह Conjunctivitis में लाभदाकय है और दर्द में आराम पहुँचाता है।

  औषधियाँ एवं निर्माण-विधिः तलअ ताज़ा को कूट कर बज़्रक़तूना के साथ मिलाएँ और थोड़ी थोड़ी मात्रा में सिर्का और रोग़न-ए-गुल सम्मिलिक कर के ज़िमाद करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

  यह Epidemic Conjuctivitis में लाभदायक है और दर्द में आराम पहुँचाता है।

  औषधियाँः पोस्त-ए-बेरून-ए-पिस्ता, अदस मुक़श्शर, हुज़ुज़ मक्की, पीह-ए-दरून-ए-अनार, बर्ग-ए-शिब्रम ताज़ा, बर्ग-ए-कासनी।

  निर्माण-विधिः सब को पीस कर रोग़न-ए-गुल के साथ मिलाएँ और ज़िमाद करें।

- **तिला का अन्य नुस्ख़ाः**

  यह Conjuctivitis में लाभदायक है और जलन को समाप्त करता है।

  औषधियाँ एवं निर्माण-विधिः गुल-ए-कदू, गुल-ए-कासनी, गुल-ए-नीलोफ़र, खुब्बाज़ी को पीस कर रोग़न-ए-गुल व सफ़ेदी-ए-बैज़ा-ए-मुर्ग़ में मिला कर ज़िमाद तैयार करें।

❑❑❑

# उपसंगहार

## बीख़-ए-चीनी और फ़ाद ज़हर से संबंधित मामले

यह दो भागों पर आधारित है

उपसंगहार

## प्रथम भाग

# बीख़-ए-चीनी से संबंधित मामले

**यह भाग आठ संकेतों पर आधारित है**

यह बात किसी से ढकी छुपी नहीं है कि इस उच्च कोटि एवं अत्याधिक लाभदायक औषधि का वर्णन पुराने हकीमों ने अपनी किताबों में किया है और नए हकीमों ने विभिन्न रोगों में कई बार इस औषधि का प्रयोग एवं तजरबा कर के इस को अनगिनत लाभों वाली औषधि पाया है, इसीलिए इस औषधि से संबंधित मामलों को आठ इशारात के अन्तर्गत इस विधि से वर्णित किया जा रहा है जो कि अधिकतर हकीमों के बीच प्रचलित है।

- **प्रथम संकेतः चौब चीनी की खोज**

ऐसा सुनने में आया है कि जब चीन के द्वीपों और समुन्दरी तटों पर रहने वाले लोग भुकमरी, तंगी और खाने पीने की वस्तुओं के ना पाए जाने के कारण जंगल की ओर गए तो वहाँ पर उन्हों ने अपनी भूक मिटाने के लिए पेड़, पौधों, जड़ी बूटियों और जंगली पेड़ों की पत्तियों और जड़ों को खाना प्रारंभ कर दिया। जिस एरिया में चौब चीनी की बीख़ पैदा होती थी लोग उस ओर अधिक जाया करते थे क्योंकि उस बीख़ में थोड़ा मीठापन पाया जाता था। संयोग से जो व्यक्तिय रदी सौदावी रोगों विशेष रूप से कुष्ठ रोग, बवासीर, बदबूदार फोड़ों और Syphilis आदि से ग्रस्त थे, इस बीख़ के खाने से जल्द ही पूरी तरह ठीक हो गए लकिन वो लोग इस सत्यता को नही जान रहे थे। इसी बीच अंग्रेज डाक्टरों ने, जो कि शरीर रचना विज्ञान में बहुत माहिर हुआ करते थे, अत्याधिक सोच विचार के बाद बीख़-ए-चौब चीनी को कई बार प्रयोग कर के उस से प्राप्त होने वाले लाभों का तजरबा किया और फिर धीरे धीरे यह प्रक्रिया एक देश से दूसरे देश में फैलती गई जिस से उस ज़माने के हकीमों ने इस बीख़ से प्राप्त होने वाले लाभों को अत्याधिक देखा जाना और उस पर शोध किया। इस समय यह औषधि बहुत प्रसिद्ध और प्रयोग में है। सत्यता यह है कि यह अधिकतर पुराने रोगों की दवा-ए-शाफ़ी है। वर्तमान के हकीम अधिकतर पुराने सौदावी और घातक रोगों का उपचार इसी बीख़ से करते हैं। इस प्रकार उस युग के लोगों पर अल्लाह

तआला की कृपा हुई कि उस के शफ़ाखाना-ए-रहमत से यह अत्याधिक लाभदायक औषधि जनता के सामने आई और उस की खोज हो पाई।

- **द्वितीय संकेतः बीख़-ए-चीनी की भौतिक पहचान**

रोगी का उपचार, विपरीत प्रबंधन से किया जाता है और देखने में यह आया है कि यह सौदावी रोगों में लाभदायक है और सौदा का मिज़ाज बारिद याबिस होता है। इस प्रकार यह आवश्यक है कि इस बीख़ की मिज़ाज़ Hot and wet हो हालांकि इस में अधिक गरमी नहीं पाई जाती है। अधिकतर हकीम इस बात पर एकमत हैं कि इस में प्रथम दर्जे के गरमी पीई जाती है। इस में गरमी पाए जाने की दूसरी दलील यह है कि इस की गरमी गाढ़े पदार्थों और सूजन को गला कर पदार्थों को आसानी के साथ बाहर निकालती है जब कि नारमल दर्जे की कोई भी ठंडी औषधि यह कार्य नहीं कर पाती है। इस बात की दलील कि यह दूसरे और तीसरे दर्जे की गरमी नहीं रखती है, यह है कि इस को लगातार प्रयोग करने से और नारमल मात्रा से दोगुनी मात्रा में प्रयोग करने से भी यह अधिक गरमी पैदा नहीं करती है। इस में तरलता पाए जाने की वही दलील प्रयाप्त है कि यह गाढ़े पदार्थों एवं सूजन को गला कर समाप्त करती है साथ ही गाढ़े पदार्थों एवं सूजन को पिघला कर आसानी के साथ बाहर निकाल देती है जो कि किसी याबिस औषधि से नहीं हो सकता है।

हकीमों के एक गिरोह का मानना है कि इस का मिज़ाज याबिस है और यह सौदावी रोगों (Melancholic diseases) में अपनी Specific Property या General Property से प्रभावी करती है। एक अन्य गिरोह का मानना है कि मूलतः यह याबिस है प्रन्तु पानी एवं तरलता के समीप रहने के कारण इस में dryness की मात्रा कम और कमज़ोर हो गई है और उस में तरलता आ गई है। यही नहीं बल्कि पानी के समीप रहने के कारण इस में रुतूबत-ए-फ़ज़्लियह और रुतूबत-ए-बल्लियह बढ़ गई है और कुल मिला कर उस की गरमी भी कम हो गई है।

- **तृतीय संकेतः बीख़-ए-चीनी से प्राप्त होने वाले लाभ**

लोगों ने इस बीख़ के अनगिनत लाभों को देखा है और चौब चीनी से बहुत सारे रोगों में लाभ प्राप्त किया है। इसी कारण लोगों ने यह मशहूर कर दिया कि बीख़-ए-चीनी से जीवन चलता है और उस ने अपने अन्दर जीवन को सजो लिया है। इस को लोग बहर-ए-ज़ुलमात से प्राप्त करते हैं प्रन्तु सत्यता यह है कि यह बात बेबुनियाद है क्योंकि अगर यह चीन के जज़ीरों और उस के समुन्दरी तटों से प्राप्त होती है तो यह चीन के खता इलाक़े से प्राप्त की जाती है और भारत के दूर दराज़

इलाक़ों जैसे पुराने बंगाल के पहाड़ी इलाकों में बहुत अधिक पाई जाती है। यहाँ से बिलकुल ताज़ा बीख़ प्राप्त होती है और उस से ताज़ा मुरब्बा तैयार किया जाता है और अर्क़ निकाला जाता है। यह एक सत्यता है कि इस अर्क़ को पीने के बाद बहुत सारे लोगों को पुराने रोगों से छुटकारा मिला है। उपर्युक्त अर्क़ का नुस्खा इन्शाअल्लाह अन्तिम इशारा के अन्तर्गत बयान किया जाएगा।

1. प्रथम लाभः यह Syphilis के पुराने अल्सर और ज़ख़्म में लाभदायक है। जब यह रोग किसी भी तरीक़े से समाप्त ना हों तो इस बीख़ का तबीख़ पीने से लाभ पहुँचता है।
2. द्वितीय लाभः यह Melancholic hard swelling, lymphadenitis में लाभदायक और सुद्दों को खोलने और गाढ़े पदार्थों को गलाने में काफ़ी प्रभावी है।
3. तृतीय लाभः यह मालीखोलिया व विभिन्न प्रकार के जुनून में लाभदायक है।
4. चतुर्थ लाभः यह Alopecia Furfuracea और Alopecia में लाभदायक है।
5. पन्चम लाभः यह Chronic Quartan Fever में लाभकारी है।
6. शष्टम लाभः यह Vitiligo, Ptyriasis Nigra, Ring worm और सूखेपन के कारण होने वाली खुजली में लाभदायक है।
7. सप्तम लाभः अँगों के दर्द, जोड़ों के दर्द और Coxalgia जिस को "नरकान कंको" भी कहा जाता है, में लाभदायक है।
8. अष्टम लाभः यह Leprosy और Fistula में लाभदायक है। अगर Leprosy का रोग पुराना ना हुआ हो तो यह बहुत लाभदायक है।
9. नवम लाभः यह बवासीर के विभिन्न प्रकारों और गुदा के रोगों में लाभदायक है।
10. दशम लाभः यह Varicosity, Filariasis को दूर करता है।
11. एकादशम लाभः यह पुराना दस्त और आँतों के ज़ख़्म को समाप्त करता है।
12. द्वादशम लाभः यह अफ़ियून की आदत को छुड़ाता है। साराँश में यह कि यह गाढ़े सौदावी पदार्थों से होने वाले रोगों में लाभदायक है।

इस बीख़ से अनेक लाभ प्राप्त होते हैं। नए ज़माने के हकीमों में से उच्च कोटि के हकीम इमादुद्दीन महमूद तैयब रहमतुल्लाह ने अपनी पुस्तक में बीख़-ए-चौब चीनी के लाभों का वर्णन किया है। वह इस के संदर्भ में लिखते हैं कि इस के यह लाभ मालूम और नामालूम या मालूम से अधिक कारणों से प्राप्त होते हैं।

- **चतुर्थ संकेतः बढ़िया व घटिया बीख़-ए-चीनी की पहचान**

1. प्रथमः बीख़-ए-चीनी का बेहतर रंग वह है कि वह ज़र्द अर्थात पीली ना हो बल्कि बर्ग-ए-गुल की भाँति सफ़ेदी लिए हुए सुर्ख़ अर्थात लाल हो।

2. द्वितीयः कम वज़न की हो।
3. तृतीयः ना बहुत बड़ी हो और ना बहुत छोटी व बारीक हो।
4. चतुर्थः सड़ी हुई, बहुत पुरानी और खोखली ना हो।
5. पन्चमः नारमल से अधिक वज़नी, सख़्त, खुरदुरी और गहरी भूरी रंग की ना हो। इस प्रकार की बीख़-ए-चीनी "आब गज़ीदा" कहलाती है क्योंकि उस में सख़्ती के कारण शीशा या छुरी आदि से बड़ी मुशिकल से छेद हो पाता है।
6. शष्टमः उस की सभी उपर्युक्त विशेषताएँ रंग, सख़्ती, नर्मी, कितने साल की पुरानी है, मात्रा और पुरानापन आदि समान होने चाहिएँ
7. सप्तमः काफ़ूर, फ़र्फ़ियून, अफ़ियून, जदवार की बदबू और दरिया के पानी से उस को दूर रखा जाता हो, कीड़े लगने से सुरक्षा प्रदान की गई हो, आहक के बीच में रखा गया हो ताकि सभी प्रकार के दुष्प्रभावों से सुरक्षित रह सके। इस के अतिरिक्त जिन भी कारणों से उस में बदलाव एवं हानि होने का डर हो, उन से उस को किसी भी तरह से दूर रखना आवश्यक है।

## ● पन्चम संकेतः बीख़-ए-चीनी को खाने की शर्तें

जो व्यक्ति इस बीख़ को प्रयोग करना चाहता हो उस के लिए इन सात शर्तों का ध्यान रखना आवश्यक है।

1. प्रथमः जो व्यक्ति उपर्युक्त रोगों के उपचार के संदर्भ में सभी उपचार के तरीक़ों से निराश हो चुका हो, मात्र वही व्यक्ति इस का प्रयोग करे क्योंकि रोग के बढ़ने के ज़माने में शारीरिक एवं दिमाग़ी रोग लगने के कारण कमज़ोरी एवं परहेज़ की तकलीफ़ बरदाशत करना संभव नहीं है बल्कि परहेज़ करने से लाभ मिलने के बजाए हानि पहुँच सकती है।
2. द्वितीयः बहुत अधिक गरम और बहुत अधिक ठंडे मौसम में इस का प्रयोग ना किया जाए। इस के प्रयोग का सब से बेहतरीन मौसम रबी मौसम के बीच या खरीफ़ मौसम के प्रारंभ का समय है और इस के अतिरिक्त इस के प्रयोग के अनुसार बुरे मौसम हैं या फिर मौसम, इलाक़ा, व्यक्ति और रोग में कुछ अंतर हो तो इन दिनों में इस के प्रयोग का दारोमदार हकीम की समझ पर है।
3. तृतीयः इस के प्रयोग से पहले रोगी के शरीर से उस Humour का निष्क्रमण अवश्य किया जाए जो रोग का कारण है। यह भी हकीम की समझ पर है कि मौसम, इलाक़ा, रोग और आदत का लिहाज़ करते हुए देहद्रव्यों का निष्क्रमण किया जाए।
4. चतुर्थः नमक, सब्ज़ियाँ, तरकारियाँ और खट्टी वस्तुएँ खाने, ठंडा पानी पीने,

समभोग करने, हम्माम में जाने, तेज़ आवागमन करने, झंझट झेलने, भारी आहार का सेवन करने, भरा पेट रहने, बहुत अधिक खाने और स्वास्थ्य के विपरीत सभी प्रकार के प्रभावों से भरपूर परहेज़ किया जाए।

5. पन्चमः उपर्युक्त शर्तों की रोगशनी में इस के प्रयोग की समय सीमा के बीच परहेज़ की जो समय सीमा है वह निर्धारित समय से कम नहीं होनी चाहिए उस के बाद रोगी को धीरे धीरे अपनी पुरानी आदत पर वापस लाना चाहिए।
6. शष्टमः अगर शरीर मज़बूत हो, उस में अधिक चर्बी, ताक़त और शक्ति हो तो पुराने और सख़्त रोगों में अधिक पसीना ना निकाला जाए, लेकिन अगर शरीर मज़बूत और रोग हल्का हो तो कर सकते हैं। अगर शरीर मज़बूत ना हो तो प्रतिदिन पसीना ना निकाला जाए क्योंकि अधिक पसीना निकलने से शक्ति कम होती है, शरीर कमज़ोर हो जाता है और आँखें कमज़ोर हो जाती हैं। अगर पसीना प्रतिदिन ना निकाला जा सके तो पाँच दिनों में एक बार निकाला जाए।
7. सप्तमः पसीना निकालने के बाद कपड़े ना उतारे जाएँ, स्वयं को गरम रखा जाए, बीख़-ए-चीनी का तबीख़ प्रयोग के समय अधिक ठंडा ना हो जो कि सुबह शाम पिया जाता है, क्योंकि उस से Colic, Flatulence, या पेशाब के रास्तों में सुद्दा बन सकता है। इस बीच परहेज़ का भरपूर ध्यान रखना चाहिए।

- **शष्टम संकेतः इस को पकाने खाने की कुछ प्रसिद्ध विधियाँ**

1. प्रथम विधिः नए ज़माने के हकीमों में से उच्च कोटि के हकीम जनाब इमादुद्दीन तय्यब रहमतुल्लाह अलैह और कुछ अन्य हकीमों ने इस संदर्भ में एक संविधान तैयार किया है और उस पर अधिकतर हकीम एकमत भी हैं, वह यह है कि चौथे इशारा के अन्तर्गत बयान किए गुणों एवं विशेषताओं वाली बीख़-ए-चीनी 678 ग्राम की मात्रा में लें, छील कर उस का छिलका निकाल दें, फिर छुरी या शीशे से बाक़ला के बराबर या उस से छोटे उस के टुकड़े कर लें। अगर छुरी से छोटे छोटे वरक़ बना लें तो बेहतर है। सब को मिला कर उस के 21 भाग कर लें और प्रतिदिन एक भाग को 3 लीटर 360 मिलीलीटर पानी के साथ मिला कर मिट्टी की देगची में भिगोएँ और देगची के मुँह पर मिट्टी का एक ढक्कन या एक दूसरी देगची उल्टी कर के रख दें फिर ख़मीर लगा कर उस का मुँह बन्द कर दें और चूल्हे पर सीधा चढ़ा कर पकाएँ। इस बीच देगची पर नज़र रखें कि भाप ना निकले और जहाँ से भाप निकल रही हो वहाँ ख़मीर लगा कर मज़बूती से बन्द कर दें।

   जब रात का एक भाग शेष रह जाए तो आग जलाएँ और धीरे धीरे पकाएँ। जब

आधा शेष रह जाए तो देगची रोगी के सामने रखी जाए। फिर रोगी उस के सामने खड़ा होकर धीरे से देगची के मुँह से ख़मीर हटा दे और धीरे धीरे भाप लेना प्रारंभ करे और इस प्रकार अधिक से अधिक पसीना निकालने का प्रयत्न करे, या देगची को कुर्सी के नीचे रखा जाए और सर पर लिहाफ़ डाल लिया जाए फिर ख़मीर हटा कर ख़ूब भाप ली जाए और पसीना निकाला जाएँ जो व्यक्ति इस बीच अपने सर को लिहाफ़ से ना ढक सकता हो वह अपना सर लिहाफ़ से बाहर कर ले ताकि सांस लेने में आसानी हो सके लेकिन शेष अँगों को लिहाफ़ के अन्दर रखे। भाप लेने के बाद देगची से पूरा जोशान्दा निकाल लें और उस को साफ़ करें, लिहाफ़ उतारने से पहले उस गरम पानी से एक दो प्याला गरमा गरम पिएँ फिर पूरी सावधानी के साथ धीरे धीरे पसीना सुखा कर लिहाफ़ उतार दें। जब प्यास लगे या जिस समय किसी आहार का सेवन करे तो यही पानी पिए अगर नबात और अर्क़-ए-गुलाब से तैयार किया हुआ कोई शरबत दिन रात के अन्तिम भाग में पीने की आवश्यकता पड़े तो इसी आब-ए-चौब-ए-चीनी के साथ पिए इस से उपचार के बीच सिर्फ़ आब-ए-चौब-ए-चीनी पीना चाहिए और आब-ए-ख़ालिस बिलकुल नहीं पीना चाहिए।

अगर इस में कभी अर्क़-ए-गुलाब मिलाने की आवश्यकता हो तो उस की अनुमति है। अगर पानी अधिक हो और पीने की मात्रा अधिक हो तो उस को इस से हाथ पाँव धोने और सफ़ाई के लिए प्रयोग करने की अनुमति है। अगर पानी काफ़ी ना हो तो उस में 5 लीटर सादा पानी मिला लें और इतना पकाएँ कि एक भाग जल जाए और दो भाग शेष रह जाए। अगर पीने और प्रयोग करने के बाद पानी बच जाए तो उस को देगची में डाला जाए और प्रतिदिन जो नियमित मात्रा देगची में बढ़ती है उतनी कम कर दी जाए। 21 दिनों तक प्रतिदिन उस का तलछट सुखा कर सुरक्षित करते जाएँ। अगर रोगी बरदाशत कर सके तो 21 दिनों तक दोबारा उसी तलछट को पहले की तरह उतनी ही मात्रा में कई बार पकाएँ और पानी के स्थान पर पिएँ और अगर बरदाशत ना कर सके तो पूरे तलछट के 5-6 भाग किए जाएँ और प्रतिदिन पका कर पानी के स्थान पर 4-5 दिनों तक पिया जाए।

अगर कमज़ोरी अधिक हो जाए और प्रतिदिन पसीना लाने भर की शक्ति ना हो तो प्रत्येक 2 या 3 या 4 या 5 दिन में एक बार पसीना लाए और अन्य दिनों में स्वंय को गरम रखने का प्रयत्न करे। अगर प्रतिदिन देगची को समीप रख कर उस का ढक्कन खोले ताकि उस की भाप सर और चेहरे पर पहुँचे तो बेहतर है। 21 दिनों तक ऐसे ही करे और अन्तिम दिन 21 बार भाप को चेहरे तक पहुँचाए, फिर उन्हीं पकी हुई जड़ों को दोबारा पकाए और साफ़ कर के बड़ी देर तक हम्माम के अन्दर उसी

पानी में बैठे और इस बीच यह पानी अंगों पर बहाए फिर हम्माम के पानी से शरीर का मैल और पसीना साफ़ करे। हम्माम में अधिक समय तक ना ठहरे बल्कि शीघ्र ही बाहर निकल आएँ स्वयं को हवा से सुरक्षित रखे, धीरे धीरे अपनी पुरानी हालत पर लौटे और इस बीच एक लम्हा के लिए भी परहेज़ से लापरवाही ना बरते। परहेज़ के समय चकोर, दुर्राज और कबूतर के कबाब, बकरे का गोश्त और भेड़ का दूध खा पी सकता है। हकीमों ने इस बीच ज़र्दा पुलाव, माश पुलाव, कौकवी बेसब्ज़ी, हलवा दार चीनी और मुफ़र्रेह याक़ूती खाने की अनुमति दी है। कभी कभार मग़ज़-ए-पिस्ता, बादाम, मवीज़ तायफ़ी, अंगूर, किशमिश, खरबूज़ा शीरीं आदि और खाने में डाले जाने वाले गरम मसाले जैसे क़रन्फ़ुल, दार-ए-चीनी और इलायची आदि को खाने की भी अनुमति दी है। अगर रोगी का स्वभाव बलग़मी हो तो फ़िलफ़िल भी दे सकते हैं। अगी रोगी का मन रोटी खाने का हो रही हो तो रोटी ऐसी होनी चाहिए उस का आटा बहुत नर्म और बारीक ना हो, उस में ख़मीर-ए-फ़तीर ना डाला गया हो और ना ही उस में रोग़न सम्मिलित किया गया हो। जो अफ़ियून, बीख़-ए-चीनी के साथ मिला होता है उस को आदी व्यक्ति अपने समय पर प्रयोग करे, अफ़ियून की मात्रा में कमी और बढ़ोत्तरी ना करे ताकि तबीअत में हैरानगी ना हो। ज्ञात रहे कि बीख़-ए-चीनी के प्रयोग से पेचिश और आँतों में ज़ख़्म हो जाता है। जब ऐसा हो तो शीरा-ए-ख़ुर्फ़ह पर तुख़्म-ए-ख़ुर्फ़ह बूदादा को छिड़क कर पिएँ। अगर गरमी बढ़ जाए तो उस में थोड़ी मात्रा में तबाशीर सम्मिलित करें। अगर पेचिश अधिक हो तो समग़-ए-अरबी को बिरयाँ कर के शीरा में सम्मिलित करें। अगर पेचिश और आँतों में ज़ख़्म के साथ ख़ून भी आ रह हो तो क़ुर्स-ए-कहरुबा, क़ुर्स-ए-मरजान, क़ुर्स-ए-तबाशीर क़ाबिज़ दें और आहार में माश, चावल और शीरा-ए-मग़ज़-ए-बादाम प्रयोग करे। जब तक पेचिश और आँतों में ज़ख़्म पूरी तरह से ठीक ना हो जाए तब तक गोश्त और मीठी वस्तुएँ कदापि प्रयोग ना करे। अगर इस स्थिति में बिही शीरीं और अनार शीरीं खाए तो उस की अनुमति है इसलिए जिस परहेज़ और सावधानी का वर्णन किया गया है, उन का ध्यान रखना स्वस्थ व्यक्ति के लिए अतिआवश्यक है और रोगियों के लिए तो विशेष रूप से आवश्यक है और यह उस समय अधिक आवश्यक हो जाता है जब बीख़-ए-चीनी, फ़ादज़हर और तिरयाक़ जैसी बड़ी औषधियाँ प्रयोग की जाती हैं। यह भी ज्ञात रहे कि उपर्युक्त शर्तों के साथ परहेज़, उस व्यक्ति की स्थिति के अनुकूल है जो उस की ताक़त और शक्ति रखता हो और उस का रोग पुराना एवं सख़्त हो। अगर रोगी कमज़ोर हो, पूर्ण रूप से परहेज़ करने की ताक़त ना रखता हो और रोगी आसानी महसूस कर रहा हो तो ऐसी स्थिति में बहुत अधिक परहेज़ करना चाहिए,

ताक़त एवं शक्ति के अनुसार परहेज़ करना चाहिए।

2. द्वितीय विधिः अंग्रेज़ी डाक्टरों के अनुसार चूंकि इस बीख़ के प्रयोग का उद्देश्य रोग का निवारण है इस लिए इस को उपर्युक्त शर्तों को ध्यान में रखते हुए पीना चाहिए और भरपूर परहेज़ करना चाहिए ताकि पूर्ण रूप से परिणाम आए नही तो फिर इस का प्रयोग कदापि ना किया जाए।उन डाक्टरों ने इस बीख़ की प्रयोग मात्रा 6.75 ग्राम निर्धारित की है जिस के वह लोग 21 भाग करते हैं और प्रतिदिन उस का एक भाग कूट छान कर उस के साथ थोड़ी मात्रा में नबात और दार-ए-चीनी मिलाते हैं, एक प्याला गुनगुने अर्क़-ए-गुलाब के साथ मिला कर सुबह एक बार पिलाते हैं, थोड़ा व्यायाम का हुक्म देते हैं ताकि शरीर दवा से प्रभावित हो, हरारत-ए-ग़रीज़िया भड़के, चेहरे का रंग लाल हो जाए, उस के एक घंटा बाद बिना नमक का आहार देते हैं और स्वास्थ्य के विपरीत वस्तुओं के प्रयोग से भरपूर परहेज़ कराते हैं।

3. तृतीय विधिः आसानी को ध्यान में रखते हुए लोग 6.75 ग्राम बीख़-ए-चीनी के 21 भाग कर लेते हैं, प्रतिदिन एक भाग को कूट छान कर थोड़ी सी साफ़ शहद या शीरा-ए-नबात के साथ खिलाते हैं फिर उस के ऊपर एक प्याला गुनगुना अर्क़-ए-गुलाब पिलाते हैं।

- **सप्तम संकेतः माजूनों एवं बीख़-ए-चीनी का अर्क़ निकालना**

हकीमों का एक गिरोह बीख़-ए-चीनी की एक रोग के लिए निर्धारित मात्रा को कूट छान कर हलवा तैयार करता है।

एक दूसरा गिरोह प्रत्येक रोग के अनुसार औषधियों के साथ मिला कर माज़ून तैयार करता है।

एक गिरोह उस को उचित औषधियों के साथ मिला कर अर्क़ निकालता है जैसा कि सप्तम इशारा में इस पुस्तक के लेखक और अन्य हकीमों के हवाले से नक़ल किया गया है और अगर आवश्यकता पड़ी तो आगे बयान भी करूंगा।

एक अन्य विधिः इस को मैं ने अधिकतर रोगियों पर प्रयोग किया है और इस से बहुत सारे लोगों को पुराने रोगों से निजात मिली है जिस के कारण उन्हों ने मुझे बहुत बहुत दुआएँ दी हैं। बीख़-ए-चीनी से उपचार की समय-सीमा कम से कम 21 दिन है। प्रतिदिन 31.5 ग्राम की मात्रा में बीख़-ए-चीनी को प्रयोग किया जाए। इस में से 22.5 ग्राम को नियमानुसार पानी में पकाया जाए और 11.25 ग्राम को 2.25 ग्राम दार-ए-चीनी, 13.5 ग्राम नबात के साथ कूट कर छान लिया जाए। सुबह के समय उस

को गुनगुने आब-ए-बीख़-ए-चीनी एक प्याला में मिला कर चाय, क़हवा की भाँति धीरे धीरे पियाा जाए शेष पानी को साफ़ कर के हाथ और चेहरे की सफ़ाई एवं स्वच्छता के लिए प्रयोग किया जाए आहार को बिना नमक के खिलाया जाए। इस बीच अधिक से अधिक परहेज़ किया जाए। इक्कीसवें दिन हम्माम में जाकर पसीना और मैल साफ़ किया जाए। उस के बाद 21 दिनों तक दोबारा उपर्युक्त शर्तों के साथ परहेज़ करे फिर धीरे धीरे अपनी पुरानी आदत पर लौट आए। सत्यता यह है कि बीख़-ए-चीनी प्रत्येक प्रयोग विधि से प्रयोग किए जाने पर पूर्ण रूप से लाभ पहुँचाती है।

एक अन्य विधिः हकीमों के एक गिरोह का मानना है कि चौब-ए-चीनी को हल्का गरम कर के तुख़्म-ए-बालंगो और अर्क़-ए-गुलाब में मिला लिया जाए फिर मिट्टी के पात्र में इतना पकाया जाए किवह फ़ालूदा की भाँति नर्म हो जाए फिर उस को गरम कर के चम्मच से प्रयोग किया जाए, स्वयं को गरम रखने के लिए ढाँके रखें और उस के बाद आहार का सेवन करें लेकिन आहार नमक ना प्रयोग करें और अन्य वस्तुएँ प्रयोग में लाएँ। जिस व्यक्ति ने इस बीख़ का प्रयोग किया है उस को इस से अत्याधिक लाभ पहुँचा है।

- **अष्टम संकेतः इस को उचित औषधियों के साथ प्रयोग करना**

इस दौर के कुछ हकीम बीख़-ए-चीनी को प्रत्येक रोग की संबंधित कुछ उचित औषधियों के साथ प्रयोग करते हैं, शहद के साथ मिला कर माजून तैयार करते हैं और अर्क़ निकाल कर पीते हैं।

- **माजून जिसे इमादुद्दीन रहमतुल्लाह ने तैयार किया हैः**

यह मालीख़ोलिया, बवासीर, दुःस्वप्न और सौदावी रोगों में लाभदायक है।

औषधियाँः ज़रन्बाद, जदवार, ज़रावन्द, ख़ूलन्जान, माहीज़हरज, रेवन्द चीनी, अफ़्तीमून, हलीला स्याह, लाजवर्द मग़सूल, तुर्बुद, दार-ए-चीनी, सुंबुलुत्तीब, मस्तगी, जौज़बोवा, ज़ाफ़रान, बिस्बासा, क़रन्फ़ुल और हील प्रत्येक 9 ग्राम, चौब चीनी सभी औषधियों के समभाग।

निर्माण-विधिः सभी औषधियों को कूट छान कर उन के तीन गुना साफ़ शहद के साथ मिलाएँ और माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः प्रत्येक सुबह 22.5 ग्राम की मात्रा में खाएँ।

- **माजून चौब चीनी का अन्य नुस्ख़ाः**

यह जोड़ो व अन्य अंगों के दर्द में लाभदायक है। यह आमाशय की कमज़ोरी,

Oligopepsia, Anorexia और Sciatica में लाभदायक है। कामोद्दीपक है।

औषधियाँः पोस्त-ए-हलीला काबुली, पोस्त-ए-हलीला ज़र्द, हलीला स्याह, आमला, दार-ए-चीनी, विस्बासा, सुंबुलुत्तीब, असारून, क़िर्फ़ह, ज़ाफ़रान, सूरन्जान मिश्री, ख़ूलन्जान, सअद कूफ़ी, कुन्दुर, दार-ए-फ़िलफ़िल, ज़न्जबील, राज़ियाना रूमी, नानख़्वाह, तुख़्म-ए-ज़रदक, तुख़्म-ए-शलग़म, बूज़ीदान, शक़ाक़ुल, जौज़बोवा और ऊद हिन्दी सभी समभाग में।

निर्माण-विधिः सब के समभाग चौब चीनी लें फिर कूट छान कर तीन गुना साफ़ शहद के साथ मिलाएँ और माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 13.5 ग्राम की मात्रा में खाएँ।

- **माजून चौब चीनी का अन्य नुस्ख़ाः**

कुछ हकीमों ने इस माजून में सूरन्जान की मात्रा को कभी कम और कभी बढ़ा दिया है।

औषधियाँः चौब चीनी 81 ग्राम, सूरन्जान 21 ग्राम, माहीज़हरज, बूज़ीदान, पोस्त-ए-बीख़-ए-कबर और शीतरज प्रत्येक 7 ग्राम, पोस्त-ए-हलीला ज़र्द 24.5 ग्राम, तुख़्म-ए-करफ़्स, राज़ियाना, फ़िलफ़िल और सिब्र प्रत्येक 5.25 ग्राम, नमक-ए-हिन्दी 3.5 ग्राम, दार-ए-चीनी, अफ़्तीममून, वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़, ज़न्जबील, क़ाक़ला और क़रन्फ़ुल प्रत्येक 10.5 ग्राम, तुर्बुद सफ़ेद, मस्तगी रूमी और ज़ाफ़रान प्रत्येक 7 ग्राम।

निर्माण-विधिः सब को कूट छान कर रोग़न में चर्ब कर लें और तीन गुना साफ़ शहद के साथ मिला कर माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः प्रत्येक 13.5 ग्राम में खाएँ तो गठिया, अंगों के दर्द, जोड़ों के दर्द और Coxalgia में लाभ पहुँचता है।

- **माजून चौब चीनी का अन्य नुस्ख़ाः**

यह हकीम गीलानी का तैयार किया हुआ नुस्खा है। यह पुरानी Syphilis, जोड़ो के दर्द, Flatulence, यौन दुर्बलता, ठंडक से होने वाले गुर्दा के रोगों, मूत्राशय के रोगों अथवा गुर्दा एवं मूत्राशय की कमज़ोरी में लाभदायक है।

औषधियाँः चौब चीनी 81 ग्राम, सलीख़ा, कबाबा चीनी, बहमन, सुंबुलुत्तीब, असारून, ऊद हिन्दी, मस्तगी रूमी, क़रन्फ़ुल, साज़ज हिन्दी प्रत्येक 13.5 ग्राम, फ़िलफ़िल, दार-ए-फ़िलफ़िल, ज़न्जबील और ज़ाफ़रान प्रत्येक 9 ग्राम, मुश्क और अंबर प्रत्येक 3.5 ग्राम, साफ़ शहद सभी औषधियों के तीन गुना।

निर्माण-विधिः नियमानुसार माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः 13.5 ग्राम की मात्रा में खाएँ।

## • माजून चोब चीनी का अन्य नुस्ख़ाः

यह सभी प्रकार के सौदावी रोगों में लाभदायक है। यह महत्वपूर्ण अंगों के लिए शक्तिवर्धक और कामोद्दीपक है।

औषधियाँः पोस्त-ए-हलीला काबुली, हलीला स्याह, आमला मुनक़्क़ा प्रत्येक 10.5 ग्राम, अफ़्तीमून, बिस्फ़ाइज प्रत्येक 17.5 ग्राम, लाजवर्द मग़सूल 7 ग्राम, हजर-ए-अरमनी 7 ग्राम, तुर्बुद, उस्तुखुद्दूस, बहमन, ज़रन्बाद, बादरन्जबोया प्रत्येक 10.5 ग्राम, दरूनज, सुंबुलुत्तीब, शक़ाकुल, खुस्यतुस्सअलब मिश्री, सूरन्जान प्रत्येक 7 ग्राम, बूज़ीदान, दार-ए-चीनी, क़रन्फ़ुल, जौज़बोवा, गुल-ए-सुर्ख़, ऊद हिन्दी, आब्रेशम मुक़र्रज़ प्रत्येक 5.25 ग्राम।

निर्माण-विधिः नियमानुसार सब को कूट छान लें और उन के समभाग साफ़ शहद के साथ मिला कर माजून तैयार करें।

सेवन-मात्राः प्रतिदिन 18 ग्राम की मात्रा में खाएँ।

## • माजून का अन्य नुस्ख़ाः

यह अंगों के दर्द में, सुद्दों को खोलने के लिए, बवासीर और सभी प्रकार के सौदावी एवं बलग़मी रोगों में लाभदायक है।

औषधियाँः हलीला काबुली, हलीला स्याह, आमला मुनक़्क़ा, बिस्फ़ाइज, अफ़्तीमून, तुर्बुद सफ़ेद, ज़न्जबील, क़रन्फ़ुल, दार-ए-चीनी, जौज़बोवा, क़ाक़ला किबार प्रत्येक 10.5 ग्राम, माहीज़हरज, ग़ारीक़ून, राज़ियाना, पोस्त-ए-बीख़-ए-कबर, सूरन्जान, बूज़ीदान प्रत्येक 7 ग्राम, दार-ए-फ़िलफ़िल, ज़रावन्द, अस्लुस्सूस प्रत्येक 10.5 ग्राम, फ़िलफ़िल, ज़रन्बाद, नानख़्वाह, नमक-ए-हिन्दी, नमक-ए-निफ़्ती प्रत्येक 7 ग्राम, सना मक्की 17.5 ग्राम, फ़ूह और शीतरज प्रत्येक 10.5 ग्राम, चौब चीनी 225 ग्राम।

निर्माण-विधिः तीन गुना साफ़ शहद के क़िवाम में मिलाएँ।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम की मात्रा में खाएँ।

## • अर्क़ का नुस्ख़ाः

यह बुढ़ापे की कमज़ोरी और शरीर की कमज़ोरी में लाभदायक है। यह संवेदी नसों को सशक्त बनाता, दिल के लिए प्राणपोषक, यौन विनम्रता में लाभदायक, सुद्दे खोलता, रंग साफ़ करता, पाचक, भूक बढ़ाता और अंगों के दर्द में लाभदायक है।

औषधियाँः दार-ए-चीनी सैलानी, गुल-ए-सुर्ख़ ताज़ा और रुम्मान प्रत्येक 70 ग्राम, सुंबुलुत्तीब, साज़ज हिन्दी, क़रन्फ़ुल, हील, ज़रन्बाद, बादरन्जबोया, गावज़बान गीलानी और आब्रेशम ख़ाम प्रत्येक 35 ग्राम, बहमन सफ़ेद, ऊद हिन्दी और उश्ना प्रत्येक 17.5 ग्राम, ज़ाफ़रान 10.5 ग्राम, मस्तगी 7 ग्राम, मुश्क 1.75 ग्राम, अंबर अशहब

3.5 ग्राम, चौब चीनी 675 ग्राम, सेब शीरीं पुख़्ता 50 दाना, अर्क़-ए-गुलाब 840 मिलीलीटर, नबात 70 ग्राम।

निर्माण-विधिः चौब चीनी के बारीक टुकड़े कर लें, सेब को पोस्त एवं दानों से पाक कर लें और कूटने योग्य औषधियों को अर्धकुटा कर लें फिर सब को अर्क़-ए-गुलाब और साफ़ पानी 3240 मिलीलीटर में रात भर भिगोएँ। अर्क़-ए-गुलाब की भाँति अर्क़ निकालें। ज़ाफ़रान, मस्तगी, मुश्क, अंबर को पोटली में बाँध कर ऐसे बरतन के बीच में रखें जिस में अर्क़ निकाला जाता है, फिर हल्की आँच पर रख कर अर्क़ निकालें। उस अर्क़ को सुरक्षित कर लें और खाना हज़म होने के बाद प्रत्येक दिन तीन चार प्याले चाय की तरह पिएँ। इन्शाअल्लाह अनेक लाभ प्राप्ति होंगे। सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम की मात्रा में खाएँ।

- **अर्क़ का अन्य नुस्ख़ाः**

यह टानिक, कामोद्दीपक, क्षुधावर्धक और पाचक है, स्वभाव में हर्षोल्लास पैदा करता है, रंग साफ़ करता है, Erecting agent है। Neuralgia व Palpitation में लाभदायक है।

औषधियाँः चौब चीनी जो बहुत अधिक पुरानी ना हो गई हो 99 ग्राम, वरक़-ए-गुल-ए-सुर्ख़, दार-ए-चीनी, क़रन्फ़ुल, ख़ुस्यतुस्सअलब मिश्री, शक़ाक़ुल, जौज़बोवा, बिस्बासा, आब्रेशम ख़ाम, तुख़्म-ए-ज़रदक प्रत्येक 45 ग्राम, ज़ाफ़रान, सन्दल सफ़ेद, ऊद हिन्दी, बीख़-ए-लुफ़्फ़ाह, माया-ए-शुत्र-ए-आराबी, उश्ना, आक़रक़रहा, लिसानुलअसाफ़ीर, बीख़-ए-बनफ़्शा, सुंबुलुत्तीब, ज़रन्बाद, बहमन प्रत्येक 22.5 ग्राम, मस्तगी 9 ग्राम, जदवार खताई, मीअह याबिसा प्रत्येक 13.5 ग्राम, मुश्क 2.25 ग्राम, अंबर अशहब 4.5 ग्राम।

निर्माण-विधिः चौब चीनी के बारीक बारीक टुकड़े कर लें और दो दिन साफ़ पानी में भिगो कर रखें, फिर तीसरे दिन कूटने योग्य औषधियों को अर्धकुटा कर के चौब चीनी के साथ भिगोएँ और अगले दिन अर्क़-ए-गुलाब की भाँति अर्क़ निकालें। तत्पश्चात ज़ाफ़रान, मस्तगी, मुश्क और अंबर को पोटली में बाँध कर उस बरतन में रखें जिस में अर्क़ टपक रहा हो फिर प्रत्येक दिन यह अर्क़ दो तीन प्याली ख़ाली पेट की हालत में पिएँ।

सेवन-मात्राः 10.5 ग्राम की मात्रा में खाएँ।

- **लेखक का बनाया अर्क़-ए-चौब चीनी का नुस्ख़ाः**

मैंने एक व्यक्ति को देखा कि उस को इस अर्क़ से लाभ हुआ, वह पुरानी बीमारी से ठीक हुआ और उस ने लेखक को बहुत सारी दुआएँ दीं। यह शक्तिवर्धक है, स्वभाव में हर्षोल्लास पैदा करता है और कामोद्दीपक है। इन परिस्थितियों में यह मुजर्रब नुस्खा है। इस के अतिरिक्त इस से और भी अन्य लाभ प्राप्त होते हैं

जैसे Flaccidity, Flatulence, Arthralgia, उदरशूल और गुर्दा एवं मूत्राशय की कमज़ोरी में लाभदायक है, Deobstruent है, यह गुर्दा एवं मूत्राशय की पथरी को कण कण करता है और मूत्रवर्धक है। साराँश यह है कि इस से प्राप्त होने वाले लाभ अनगिनत हैं और यह मुजर्रब है।

औषधियाँ: चौब चीनी 1350 ग्राम को कण कण कर के 21000 मिलीलीटर पानी में इस प्रकार पकएँ कि 1260 मिलीलीटर शेष रह जाए फिर सुंबुलुत्तीब, गुल-ए-सुर्ख़, ज़रन्बाद, अगर तुर्की, ऊद हिन्दी, गावज़बान, फ़्रन्जमुश्क, बादरन्जबोया, क़ाक़ला, लिसानुलअसाफ़ीर, उश्ना, साज़ज हिन्दी, ख़ार-ए-ख़सक और कबाबा चीनी प्रत्येक 22.5 ग्राम, बादियान, नानख़्वाह , दार-ए-चीनी, क़रन्फ़ुल, जौज़बोवा, बिस्बासा, तुख़्म-ए-ज़रदक, बहमन सुर्ख़, बहमन सफ़ेद, ख़ुस्यतुस्सअलब और शक़ाक़ुल प्रत्येक 45 ग्राम, पोस्त-ए-तुरन्ज, सअद कूफ़ी, क़िर्फ़ह, ख़ूलन्जान और आक़रक़रहा प्रत्येक 27 ग्राम, सन्दल सफ़ेद, तुख़्म-ए-करफ़्स और फ़िलफ़िलमोया प्रत्येक 22.5 ग्राम, बर्ग-ए-तुरन्ज और नअनाअ ताज़ा प्रत्येक 27 ग्राम, रेहान ताज़ा, उश्ना, मस्तगी रूमी और ज़ाफ़रान प्रत्येक 9 ग्राम, मुश्क ख़ालिस 4.5 ग्राम, अंबर अशहब 9 ग्राम, नबात सफ़ेद और मवीज़ मुनक़्क़ा प्रत्येक 420 मिलीलीटर।

निर्माण-विधि: इन में से ठोस औषधियों को अर्धकुटा कर लें और सब को अक़-ए-बीख़-ए-चीनी में एक रात भिगो कर रखें और फिर अर्क़-ए-गुलाब की भाँति अर्क़ निकालें। मुश्क, अंबर, मस्तगी, ज़ाफ़रान में से प्रत्येक को अलग अलग पोटली में रख कर उस बरतन में डालें, जिस में अर्क़ टपकाया गया हो और फिर उस में प्रत्येक दिन सुबह एवं शाम में एक दो प्याला चाय के तौर पर हल्का गरम पिएँ। पीने के बाद दो तीन क़दम चलें जिस से हरारत-ए-ग़रीज़िया भड़क जाए।

ज्ञात रहे कि इन माजूनों को खाने या इन अर्क़ों को पीने के साथ खट्टी चीज़ों से परहेज़ भी करें तो बेहतर होगा। उस से अधिक लाभ की प्राप्त होगा।

- **माजून-ए-चोब चीनी का नुस्ख़ा जो सालिक मोहम्मद तय्यब सहरवर्दी से लिया गया है:**

औषधियाँ: दार-ए-चीनी सैलानी 420 ग्राम, गुल-ए-सुर्ख़ 70 ग्राम, रैहान ताज़ा 24 ग्राम, सुंबुलुत्तीब और हीलबोवा प्रत्येक 35 ग्राम, चौब चीनी आला 420 ग्राम।

निर्माण-विधि: चौब चीनी की अत्याधिक बारीक कूट लें फिर 20 लीटर पानी और 40 लीटर अर्क़-ए-गुलाब में रात भर के लिए भिगो दें। तत्पश्चात उस में 50 की मात्रा में बीज एवं छिलका साफ़ किया हुआ सेब-ए-शीरीं को और 20 किलोग्राम

नबात डाल कर हल्की आँच पर अर्क़ निकालें।

सेवन-मात्राः प्रतिदिन इस अर्क़ को ख़ाली पेट 225 मिलीलीटर की मात्रा में कई बार पिएँ तो अत्याधिक लाभ की प्राप्ति होगी।

यह चोब चीनी, विभिन्न प्रकार के माजूनों एवं अर्क़ों के प्रयोग और अर्क़ निकालने की विधि है। इस के साथ ही चोब चीनी को प्रयोग करने की सभी शर्तों का विवरण समाप्त हुआ।

❑❑❑

उपसंगहार

# द्वितीय भाग

# फ़ाद ज़हर की पहचान, उस से प्राप्त होने वाले लाभ, जाँच-विधि एवं प्रयोग-विधि

### यह भाग तीन संकेतों पर आधारित है

## प्रथम संकेतः फ़ादज़हर शब्द का अर्थ एवं उस की पहचान

हकीम फ़ाद ज़हर शब्द का प्रयोग विशेष औषधि के लिए करते हैं जो ज़हरों से होने वाली हानि से मनुष्य के शरीर को बचाती है और शरीर के अन्दर हर उस वस्तु से लड़ने की क्षमता पैदा करती है जो मनुष्य के शरीर के विपरीत हैं चाहे वह गरम हों या ठंडी। ऐसी औषधि में इस प्रकार की विशेषता हकीम-ए-मुतलक़ अल्लाह की क़ुदरत-ए-कामिला के कारण होती है।

ज्ञात रहे कि सभी प्रकार के फ़ादज़हर में से हजरुत्तीस सब से अधिक प्रसिद्ध एवं लाभदायक है।

अधिकतर हकीमों के अनुसार फ़ादज़हर शब्द कहने से "हजरुत्तीस" ही माना जाता है। तिर्याक़-ए-फ़ारूक़ के बाद हजरुत्तीस जैसी कोई भी एकल या मिश्रित एंटीडोट औषधि नहीं है। बढ़िया प्रकार का फ़ादज़हर हजरुत्तीस है।

फ़ारस के क्षेत्रों और शबान्गाह के पहाड़ी क्षेत्रों का हजरुत्तीस सब से बढ़िया होता है। शबान्गाह का क्षेत्र, शीराज़ के क्षेत्रों से लगा हुआ है।

फ़ारस के पहाडों में पाए जाने वाले फ़ादज़हर की विशेषता यह है कि उस में तिरयाक़ी घास बहुत अधिक पाई जाती है। यह घास, आम घास से अधिक मात्रा में जानवरों का आहार होती है जो यहाँ की ज़मीन और पहाड़ों में पाई जाती है। यह फ़ादज़हर उसी पत्थर की शकल का, चिकना और ज़ैतूनी या अलमासी रंग का होता है जो पहाड़ी बकरी के थन या आँतों में पाया जाता है। बेहतर यह है कि फ़ादज़हर का रंग ज़ैतूनी हो, बहुत अधिक साफ़ और चमकदार हो, तहदार हो, प्याज़ की भाँति उस की परतें एक दूसरे पर हों, उस में एक बीच का भाग हो, अगर दूध में पीसा

जाए तो दूध का रंग हरा जाए और अगर थोड़ी मात्रा में लेकर चूने के साथ हथेली पर मला जाए तो पीला या हरा हो जाए। मिश्र, शाम और कुछ दूसरे देशों के लोग कृत्रिम हजरुत्तीस तैयार करते हैं जो इतना चिकना, साफ़ सुथरा और अच्छा दिखाई देता है कि माहिर लोग भी धोखा खा जाते हैं।

असली और नक़ली में अन्तर यह है कि लोहे की सूई आग में डाल कर लाल कर ली जाए। अगर सूई की नोक आसानी के साथ उस में घुस जाए और उस से काले रंग का धुआँ निकलने लगे तो यह नक़ली और कृत्रिम है लेकिन अगर सूई की नोक मुश्किल से अन्दर जाए, उस से पीला धुआं निकलें और सूई की नोक पीली पड़ जाए तो यह असली है। माहिर लोगों को मानना है कि बढ़िया फ़ादज़हर वह है कि अगर उस को धूप में रखा जाए तो वह गरम हो जाए है और पसीना निकलने लगे लेकिन ऐसा देखने में नहीं आया है।

- **हजरुत्तीस की जाँच-विधिः**

आब-ए-बादियान में पीस कर साँप या बिच्छू के डसने के स्थान पर लगाया जाए। अगर इस से दर्द में तुरन्त आराम मिल जाए तो यह बढ़िया हजरुत्तीस है। साहिब-ए-कन्नाश बुक़राती ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि एक व्यक्ति को ज़न्बूर ने डस लिया था जिस से डंक लगे स्थान पर सूजन आ गई थी और वह दर्द से कराह रहा था तो लोगों ने थोड़ी मात्रा में फ़ादज़हर को पानी में पीसा और सूजन वाले स्थान पर लगा दिया जिस से दर्द और सूजन तुरन्त ग़ायब हो गए और शरीर का रंग अपनी पुरानी स्थिति पर वापस लौट आया।

उस ने यह भी लिखा है कि एक व्यक्ति को साँप ने डस लिया और उस समय मेरे पास तिरयाक़-ए-फ़ारूक़ उपस्थित नहीं था, मैं ने शराब में 250 मिलीग्राम हजरुत्तीस घोलने का हुक्म दिया उस को लगाते ही उस को आराम मिल गया और साँप का ज़हर समाप्त हो गया। एक दूसरी विधि यह है कि साँप और बिच्छू के डसने के स्थान पर रखा जाए तो वह उस को सोख ले।

- **विभिन्न प्रकार के हजरुत्तीसः**

1. एक प्रकार का फ़ादज़हर बहर-ए-हिन्द के जज़ीरों में पाया जाता है जिस को लोग मैमून नदी से प्राप्त करते हैं। उस का रंग पीलापन लिए हुए होता है, शकल लंबी बारीक हैकली होती है। चीनी बादशाह उस को भारी क़ीमत पर खरीद लेते हैं और अपने स्वास्थ्य को ठीक रखने के लिए उस को अपने पास रखते हैं। चीनी लोग इस पत्थर को फ़ारसी फ़ादज़हर से अधिक विशेषताओं एवं गुणों

वाला मानते हैं।

2. एक प्रकार का फ़ादज़हर हिन्दी होता है जो जंगली जानवरों के पेट से प्राप्त होता है। यह भी लगभग हजरुत्तीस जैसा होता है। इस में और शबान्गाह एवं फ़ारस के क्षेत्रों में पाए जाने वाले फ़ादज़हर में कोई अन्तर करना मुश्किल होता है या फिर उस को उपर्युक्त विधि से जाँचा जाए।
3. एक अन्य प्रकार का फ़ादज़हर दक्षिणी क्षेत्रों गोलकन्डा एवं तिलंगाना से भी प्राप्त किया जाता है। इस को लोग जंगली गाय की आँतों से प्राप्त करते हैं। यह गोल एवं चिपटा होता है। यह 22.5 ग्राम से लेकर 67.5 ग्राम तक का होता है और बहुत मिलता है। यह सस्ता एवं कम विश्वास किया जाने वाला होता है। इस के अन्दर से तमर हिन्दी एवं कुचला के बराबर एक दाना निकलता है। किसी भी लेखक या हकीम ने उस को खाने का कोई लाभ नहीं लिखा है।

- **द्वितीय संकेतः हजरूत्तीस की विशेषताएँ और उस से प्राप्त होने वाले लाभ**

यह सत्य है कि ज़हरीली औषधियों, सभी प्रकार के ज़हरों और ज़हरीले जानवरों के डसे के उपचार के संबंध में कोई भी एकलद्रव्य औषधि हजरुत्तीस के दरजे की नहीं है। इस के अतिरिक्त इस के निम्नलिखित लाभ हैं।

1. यह शरीर के अन्दर पाई जाने वाली ऊष्ण ताप को भड़काता है।
2. इन्द्रियों को सशक्त बनाता है
3. शारीरिक शक्ति की सुरक्षा करता है
4. हर्षोल्लास उत्पन्न करता है और ग़मों को दूर करता है।
5. अगर इस को साँप के डसने के स्थान पर रखा जाए तो यह उस से चिपक जाता है, पूरे ज़हर को सोख लेता है और जब तक पूरे ज़हर को सोख नहीं लेता है उस से अलग नहीं होता है।
6. अगर किसी व्यक्ति को ज़हर दिया गया हो और उसी समय उस के मुँह में मुजर्रब फ़ादज़हर को रख दिया जाए तो उस को भरपूर लाभ प्राप्त होता है।
7. अगर कई मुजर्रब फ़ादज़हर चीनी के प्याले में रखे जाएँ और उन के ऊपर दूध दूहा जाए फिर थोड़ी देर प्रतीक्षा की जाए ताकि उस दूध में फ़ादज़हर घुल जाए। उस की शक्ति उस में आ जाएगी, तो ज़हर खाने वाले व्यक्ति को पिलाया जाए तो वह ज़हर से सुरक्षित हो जाएगा।
8. अगर किसी व्यक्ति का दिल बहुत अधिक ग़म से कमज़ोर हो गया हो, और वह

व्यक्ति इस को अपने पास रखे तो ग़म दूर हो जाता है और लाभ पहुँचता है।

9. अगर सूरज के बुर्ज-ए-हमल में तहवील के प्रारंभ में मुजर्रब फ़ादज़हर को 1 ग्राम की मात्रा में पीस कर अर्क़-ए-गुलाब के साथ पिए तो वह व्यक्ति एक साल तक अपने अन्दर एक विशेष प्रकार की शक्ति पाता है और हमेशा हर्षोल्लास से भरा रहता है।

7. अगर कोई व्यक्ति अधेड़ उमर में प्रत्येक साल रबी मौसम के प्रारंभ में या खरीफ़ मौसम के अन्त में फ़ादज़हर का प्रयोग करता हो, स्वयं को सब्ज़ियों, खट्टी वस्तुओं और झंझटों से दूर रखता हो तो वह पूरी ज़िन्दगी शक्तिशाली रहता है और अपने अन्दर अत्याधिक हर्ष महसूस करता है।

हकीम इमादुद्दीन महमूद रहमतुल्लाह अलैह ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि मैं ने जिन व्यक्तियों को इसे बुढ़ापे की कमज़ोरी और शरीर के अन्दर पाई जाने वाली ऊष्ण ताप के संरक्षण के लिए प्रयोग कराया, उन में नौजवानों जैसी शक्ति लौट आई, वो लाल, तरोताज़ा और मोटे हो गए और उन को देख कर बड़ा आशचर्य हुआ।

## • तृतीय संकेतः उस की सेवन-विधि, सेवन-मात्रा एवं उपर्युक्त सातों शर्तों को अपनाना

इस अत्याधिक लाभदायक, अत्यंत महत्वपूर्ण और नायाब औषधि को खाने वाले व्यक्ति के लिए सात शर्तों का ध्यान रखना आवश्यक है।

प्रथमः रोगी की आयु उचित हो अर्थात वह जवान ना हो क्योंकि जवानी में यह औषधि शरीर की गरमी को बढ़ाती है।

द्वितीयः रोगी के स्वभाव में गरमी की अधिकता ना हो।

तृतीयः प्रयोग का समय गरमी के मौसम में ना अधिक गरम हो और ना ठंडक के मौसम में अधिक ठंडा हो।

चतुर्थः इस के द्वारा उपचार प्रारंभ करने से पहले शरीर से दूषित देहद्रव्यों का निष्क्रमण कर लिया जाए।

पन्चमः इस के द्वारा उपचार करने के समय खट्टी वस्तुओं, दूध के उत्पादों, सब्ज़ियों, आमाशय एवं जिगर को खराब करने वाले आहार के प्रयोग, अधिक एवं तेज़ चलने फिरने, समभोग करने, ग़म एवं अन्य झंझटों से जितना हो सके परहेज़ किया जाएँ यह परहेज़ इस औषधि द्वारा उपचार प्रारंभ करने के दस दिन पहले और उपचार समाप्त करने के बीस दिन बाद तक आवश्यक समझा जाए।

शष्टमः इस औषधि द्वारा उपचार के बीच शरीर को नर्म, साफ़ सुथरा और

ख़ुशबूदार बना कर रखें, मन को ख़ुश रखें, दिन एवं रात ख़ूब मस्ती में गुज़ारें, हल्के आहार का सेवन करें, नर्म एवं साफ़ सुथरे बिस्तरों पर बैठें और आराम करें, अच्छी बाते करने वालें और अच्छे अन्दाज़ में बातें करने वाले दोस्तों के बीच में रहें, ख़ूबसूरत इमारतों और वस्तुओं को देखें अर्थात कुल मिलाकर यह कि जितना हो सके चैन और आराम से रहें।

सप्तमः अगर फ़ादज़हर खाने का इरादा हो तो पहले साल में 1 से 1.5 ग्राम की मात्रा से अधिक ना खाएँ फिर दूसरे साल में कुछ मात्रा बढ़ा लें। प्रत्येक वर्ष अगर तबीअत अनुमति दे और उस को क़ुबूल करे और रोगी के स्वभाव पर उस की कैफ़ियत प्रभावी ना हो तो थोड़ी मात्रा में बढ़ा लें नहीं तो स्वभाव के अनुसार उस की मात्रा पर सब्र करें।

- **फ़ादज़हर खाने की विधिः**

1. प्रथम विधिः निष्क्रमण और अन्य सभी प्रकार की शर्तों को ध्यान में रखते हुए 1 ग्राम की मात्रा में फ़ादज़हर को संग-ए-सुमाक़ में धीरे धीरे पीसें। ख़ूब बारीक हो जाने के बाद चीनी के प्याले में भर कर अर्क़-ए-गुलाब में मिलाएँ और एक क़लम मुँह में पकड़ कर इस प्रकार चूसें कि दाँतों तक ना पहुँचे।

कुछ हकीमों के अनुसार इस से हानि पहुँचती है। हालाँकि इस बात को कोई आधार नहीं है लेकिन फिर भी सावधानी आवश्यक है। उस समय नबात और अर्क़-ए-गुलाब का कोई शरबत बार बार पिएँ, नर्म बिस्तर पर एक पहलू से दूसरे पहलू पर उल्टे पुल्टें, कुछ दूर पैदल चलें अर्थात ऊष्ण ताप को भड़काने का पूरा प्रयत्न करें और लगभग उस के दो घंटे बाद खाना खाएँ। मुजर्रब फ़ादज़हर 1.5 ग्राम तीन दिनों में अर्थात प्रत्येक दिन 0.5 ग्राम की मात्रा में उपर्युक्त विधि से पीसें, अर्क़-ए-गुलाब में मिलाएँ और लपेट कर इस प्रकार हलक़ में डालें कि दाँतों को ना लगे चाहे उस के लिए उस को अर्क़-ए-गुलाब में मिला कर हब्ब बना कर खाना पड़े। नबात और अर्क़-ए-गुलाब का एक प्याला शरबत पिएँ और कुछ दूर पैदल चलें।

2. द्वितीय विधिः हकीम इमादुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह० ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि पुराने ज़माने के हकीमों ने फ़ादज़हर खाने को पूरा तरीक़ नहीं बताया है और जिस व्यक्ति ने स्वयं से उस को खाने के संदर्भ में बुद्धि का प्रयोग किया उस को बहुत हानि उठानी पड़ी, इसीलिए मैं ने उस को खाने का पूरा तरीका बयान किया है। चूँकि जिस व्यक्ति ने भी इस विधि से उस को खाया उस को पूरा लाभ प्राप्त हुआ।

3. *तृतीय विधिः आज़मूदह फ़ादज़हर 1.5 ग्राम, मरवारीद नासुफ़्ता, याक़ूत रुम्मानी, लअल, हजर-ए-यशब प्रत्येक 750 मिलग्राम लें। प्रत्येक को अलग अलग*

संग-ए-सुमाक़ के खरल में धीरे धीरे इतना बारीक पीस लें कि उस में खुरदुरे कणों को कोई पता ना चले। मोमियाई कानी, अंबर अशहब, ज़ाफ़रान और वरक़-ए-तिला प्रत्येक 0.5 ग्राम, मुश्क ख़ालिस 250 मिलीग्राम लें और सब को धीरे धीरे अर्धकुटा कर के छान लें और माजूनों की भाँति नियमानुसार शीरा-ए-नबात में मिला लें। सब को मिला कर तीन भाग कर लें और तीन दिन लगातार प्रत्येक दिन एक भाग खाएँ। उस के बाद अर्क़-ए-गुलाब और गर्म दूध एक प्याला पिएँ, कुछ देर चलें फिरें और उस के बाद नबात और सिर्फ़ गुलाब का शरबत पिएँ। इतमिनान और सुकून से रहें यहाँ तक कि ख़ूब भूक लगने लगे और खाने का मन करने लगे। तत्पश्चात हल्के आहार का सेवन करें।

4. चतुर्थ विधिः फ़ादज़हर आज़मूदह 3.5 ग्राम, याक़ूत, लअल, मरवारीद, फ़ीरोज़ा नीशापुरी प्रत्येक 1.75 ग्राम, मुश्क ख़ालिस, वरक़-ए-तिला और वरक़-ए-नुक़रह दोनों ही महलूल, ज़ाफ़रान, जदवार आज़मूदह और मोमियाई कानी प्रत्येक 832 मिलीग्राम।

सभी औषधियों को नियमानसुार अलग अलग पीस लें, फिर सब को उनकी निर्धारित मात्रा में एक साथ मिला लें। तत्पश्चात शीरा-ए-नबात के क़िवाम में मिलाएँ और हुबूब तैयार करें। प्रत्येक हब्ब को चने के बराबर तैयार करें। सब के नौ भाग तैयार करें और नौ दिनों तक लगातार एक भाग प्रत्येक दिन खाएँ। एक भाग को अर्क़-ए-गुलाब और नबात के शरबत के साथ पिएँ।

इस के प्रयोग के दौरान उपर्युक्त शर्तों को ध्यान में रखें ताकि उद्धेशय की प्राप्ति हो सके और कोशिश एवं मेहनत बरबाद ना हो।

अब यह पुस्तक अपने अन्त को पहुँच चुकी और मेरा काम भी व्यवस्थित ढंग से अपने अन्त को पहुँच गया।

यह पुस्तक 22 ज़िलहिज्जह 1257 हिजरी (1 फरवरी, 1842 ई०, मंगलवार) को आदरणीय जनाब क़ाज़ी साहब शैख़ मोहम्मद तक़ी साहब, क़स्बा हल्लौर, परगना औरंगाबाद नगर, जिला गोरखपुर के विशेष ध्यान के कारण इनायत अली के क़लम से लिखी गई।

रमज़ानुलमुबारक

हस्ताक्षर

## प्रतिबिम्ब - पांडुलिपि क़राबादीन-ए मासूमी

★ नुस्ख़ा मौलाना अबुल कलाम आज़ाद लाईब्रेरी, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़
★ नस्ख़ा सालार जंग म्यूज़ियम लाईब्रेरी, हैदराबाद
★ नुस्ख़ा रज़ा लाईब्रेरी, रामपुर
★ नुस्ख़ा ख़ुदा बख्श लाईब्रेरी, पटना

## नुस्ख़ा मौलाना अबुल कलाम आज़ाद लाईब्रेरी, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़

प्रथम पृष्ठ



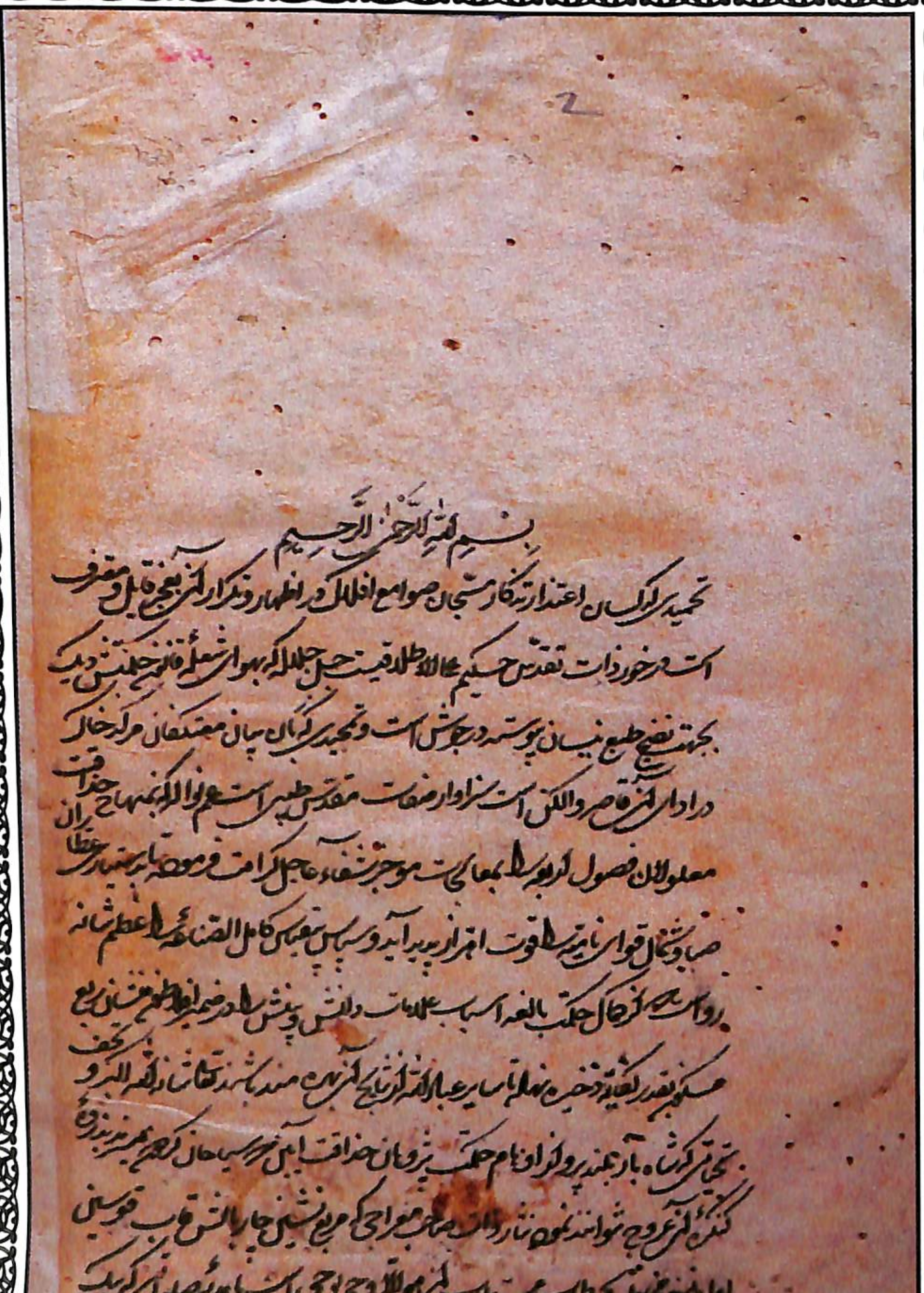
द्वितीय पृष्ठ



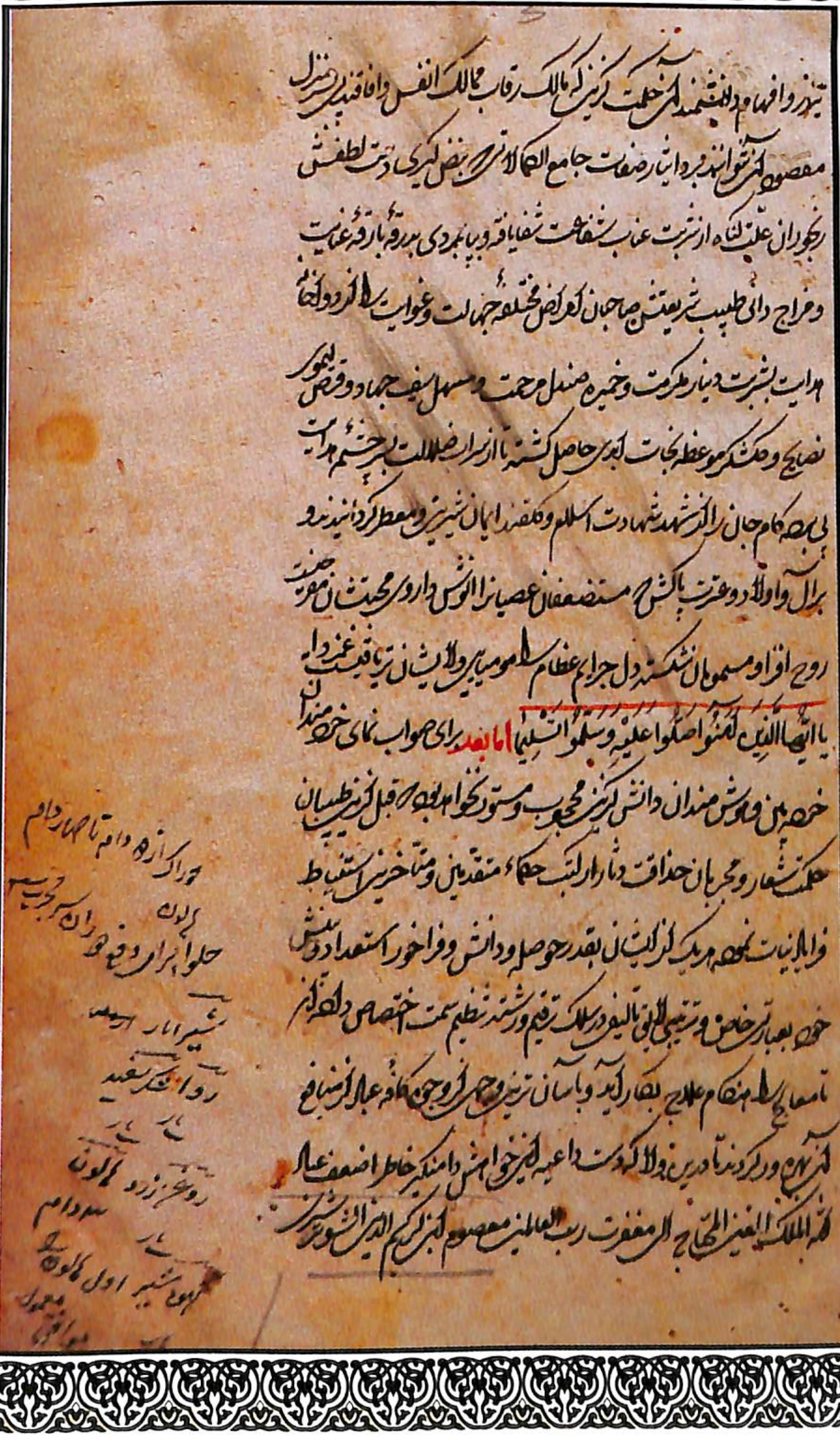
نیوی نصایح و دل شکر بو انفط نجات ابدی حاصل گشته ضلالت لیس شبیه هدایت بی بیرو و کام جان
از شهد شهادت اسلام بحلقه ایمان شیرین معطر گردانیده و بر آل و اولاد حضرت پاکش که مستفیض
عصیان را نوشین داروی محبت شان مفرحیست روح افزا و مسمومان شکسته دل جرایم عظام را
مومیای دل آسان تریاقیست نعم زدا قال یا ایها الذین امنوا صلوا علیه و سلموا
تسلیما بعد بر رای صواب نمای خردمندان خرده بین و هوشمندان دانش گزین مخفی و مستور
نخواهد بود که قبل از این طبیبان حکمت شعار و مجربان حذاقت آثار از کتب حکما متقدمین و متاخرین
استنباط قرابادینات نموده هر یک از ایشان بقدر حوصله دانش و فراخور استعداد خویش
بعبارتی خاص و ترتیبی لایق تالیفی در سلک ترقیم داشته بنظم سمت اختصاص داده اند تا معالج
بهنگام علاج بکار آید و باسان ترین وجهی از وجوه کافه عباد از منافع آن بهره ور گردند تا در خلال
که دست داعیه این خواهش دامن گیر خاطر اضعف عباد الله الملک المعین المحتاج الی مغفرت حضرت
رب العالمین معصوم ابن کریم الدین الشوشتری الشیرازی شد گردید که بقدر الوسع و الامکان
بترتیب تالیفی بپردازد که عامه انام را از آن بهره و نصیبی و آزادی در جهان یادگار ماند
بنا علی النهج المسطور از هر کتاب معمول و از کتب معتمد اولی من انواع و اقسام ادویه مرکب
المجربه بتجربه مقرون تر و احتیاج خاص و عام مردمان بیشتر بود انتخاب نموده ترکیبی چند که در کتب
حکماء متقدمین مسطور بود و اطباء متاخرین گرد بعد اخری الفاد ابر محک امتحان زده بتجربه کامل حاصل
نموده اند و پاره از مرکبات مجربه اطبای هند نیز منتظم بران ساخت تا در این هنگام که گذشته بود
از هجرت هزار و پنجاه و نه الهادی در سلک تحریر در آورده و بر سبیل انتظام سلطان نسخ لقب انتظام
در آورد و کیفیت ترکیب نمودن و آداب نگاه داشتن با دیگر فواید ضروری بعبارتی موجز
در ضمن دوازده فایده و خاتمه منضم گردانید تا کافه برایا بهترین وجهی از تناول و استعمال
و استعمال آن مستفیض گردند و آنرا بقرابادینات معصومی نامید و ترتیب این مقدمه اینست

## नुस्ख़ा सालार जंग म्यूज़ियम लाईब्रेरी, हैदराबाद

प्रथम पृष्ठ

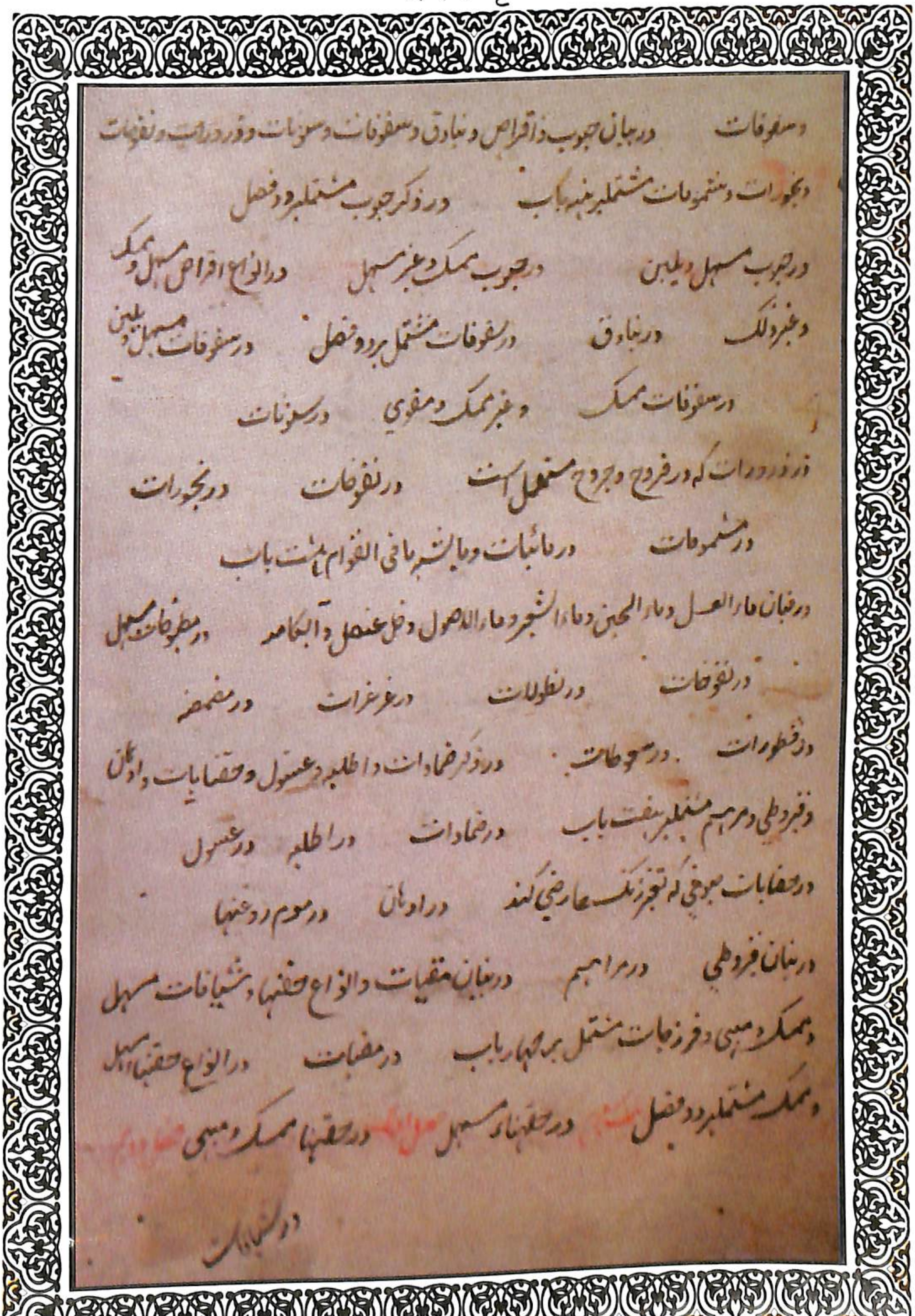


## द्वितीय पृष्ठ

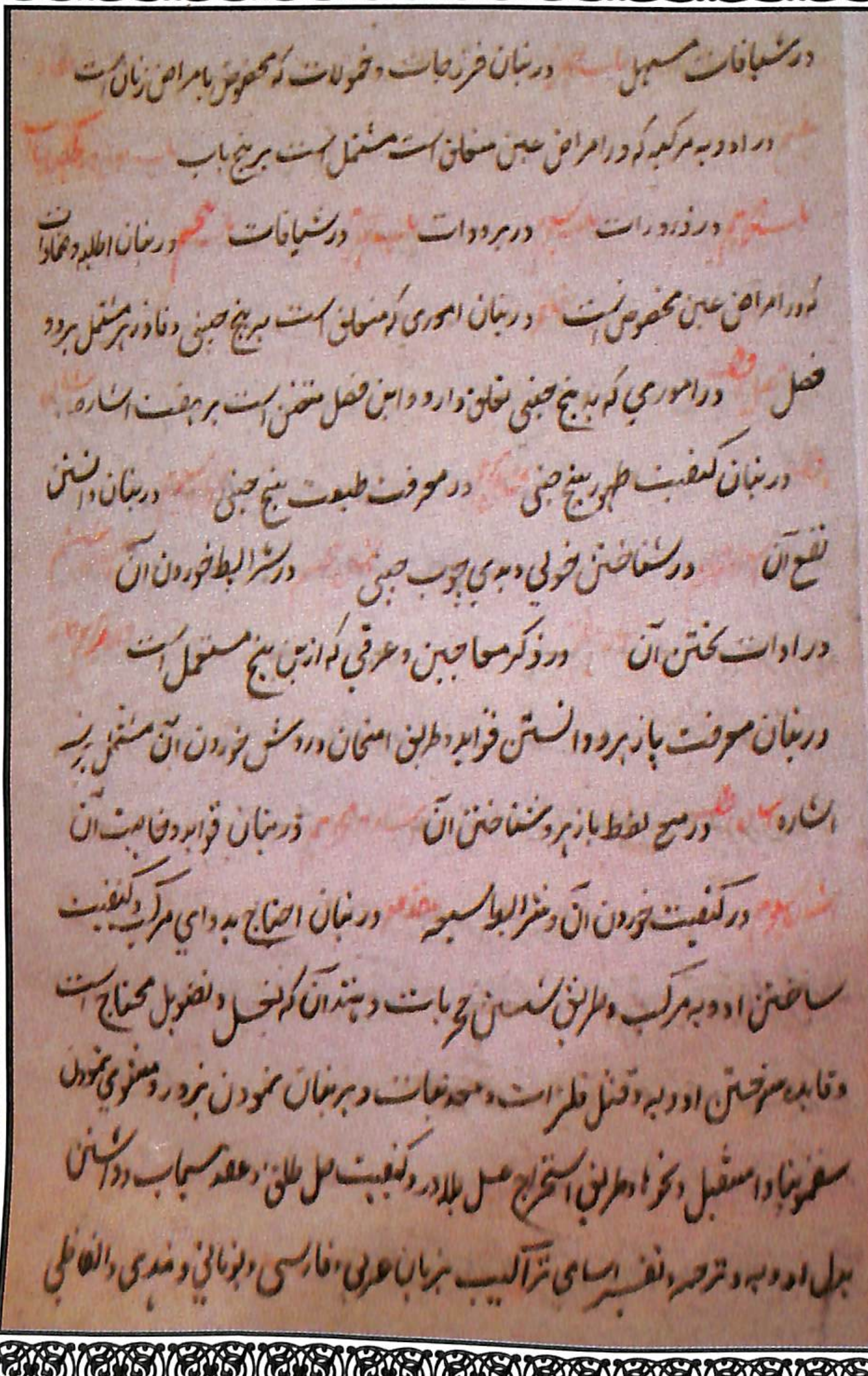

تنویر و افهام دانشمندان حکمت گزین که مالک رقاب ممالک انفس و آفاق‌اند بر منزل
مقصود آن تواند برد و اثبات صفات جامع الکمالات آن بعضی گیری ذات لطفش
رنجوران علت گناه از شربت عناب شفاعت شفا یافته و بیماردی بدرقهٔ بارقهٔ عنایت
و مزاج دانی طبیب شریعتش صاحبان امراض مختلفهٔ جهالت و غوایت را از دواخانهٔ
هدایت بشربت دینار مکرمت و خمیرهٔ صندل مرحمت و مسهل سیف جهاد و قرص لیمو
نصایح و حب شکر موعظه نجات ابدی حاصل گشته تا از بیراهی ضلالت بر چشمهٔ هدایت
بی بصر کام جان را الکن شهد شهادت اسلام و کلمهٔ ایمان شیرین و معطر گردانیده و
بر آل و اولاد و عترت پاکش که مستضعفان عصیان را الوس داروی محبت ایشان معجون جنت
روح افزا و مسموم آن شکسته دل جرایم عظام را مومیایی ولایت ایشان تریاق غم‌زدا
یا ایها الذین آمنوا صلوا علیه و سلموا تسلیما اما بعد برای صواب نمای خردمندان
خرده‌بین و موشکافان دانش گزین محجوب و مستور نخواهد بود که قبل ازین طبیبان
حکمت شعار و مجربان حذاق دثار از کتب حکماء متقدمین و متاخرین استنباط
و ایابیات نموده هر یک گزالتیان بقدر حوصله و دانش و فراخور استعداد و بینش
خود بعبارت خاص و ترتیبی الحق تالیف در سلک ترقیم و رشته نظم سمت اختصاص داده‌اند
تا معالجان را هنگام علاج بکار آید و باسانی ترتیب و جمع گروه گروه عباد از منافع
آن بهره ور گردند تا درین ولا که دست داعیه این خواهش دامنگیر خاطر اضعف عباد
الی الملک الغنی المحتاج الی مغفرت رب العالمین معصوم ابن کریم الدین الشوشتری شیرازی

# नुस्ख़ा रज़ा लाईब्रेरी, रामपुर

प्रथम पृष्ठ


درسفوفات    در بیان حبوب و اقراص و بنادق و سفوفات و سنونات و ذرورات و نفوخات
و بخورات و مشمومات مشتمل بر نه باب    در ذکر حبوب مشتمل بر دو فصل
در حبوب مسهل و ملین    در حبوب ممسک و غیر مسهل    در انواع اقراص مسهل و ممسک
و غیر ذلک    در بنادق    در سفوفات مشتمل بر دو فصل    در سفوفات مسهل و ملین
در سفوفات ممسک    و غیر ممسک و مقوی    در سنونات
در ذرورات که در قروح و جروح مستعمل است    در نفوخات    در بخورات
در مشمومات    در مائیات و ما یشبه ما فی القوام هشت باب
در بیان ماء العسل و ماء الجبن و ماء الشعیر و ماء الاصول و خل عنصل و آب کامه    در مطبوخات مسهل
در نقوعات    در نطولات    در غرغرات    در مضمضه
در قطورات    در مسوحات    در ذکر ضمادات و اطلیه و غسول و خضابات و ادهان
و قیروطی و مراهم مشتمل بر هفت باب    در ضمادات    در اطلیه    در غسول
در خضابات موی که تغیر رنگ عارضی کند    در ادهان    در موم روغنها
در بیان قیروطی    در مراهم    در بیان منقیات و انواع حقنها و شیافات مسهل
و ممسک و مبهی و فرزجات مشتمل بر چهار باب    در منقیات    در انواع حقنهای مسهل
و ممسک مشتمل بر دو فصل    در حقنهای مسهل    در حقنهای ممسک و مبهی
در شیافات

द्वितीय पृष्ठ



در شیافات مسهل — در بیان فرزجات و حمولات که مخصوص بامراض زنان است

در ادویه مرکبه که در امراض عین متعلق است مشتمل است بر پنج باب

در ذرورات — در بردودات — در شیافات — در بیان اطلیه و ضمادات

که در امراض عین مخصوص است — در بیان اموری که متعلق است به بیخ چینی و پادزهر مشتمل بر دو

فصل — در اموری که به بیخ چینی تعلق دارد و این فصل متضمن است بر هفت اشاره

در بیان کیفیت ظهور بیخ چینی — در معرفت طبیعت بیخ چینی — در بیان دانستن

نفع آن — در شناختن خوبی و بدی چوب چینی — در شرایط خوردن آن

در ادات پختن آن — در ذکر معاجین و عرقی که از بیخ مستعمل است

در بیان معرفت پادزهر و دانستن فواید و طریق امتحان و روش خوردن آن مشتمل بر

اشاره — در صحیح لفظ پادزهر و شناختن آن — در بیان فواید و خاصیت آن

در کیفیت خوردن آن و شرایط اسبعه — در بیان احتیاج به دوای مرکب و کیفیت

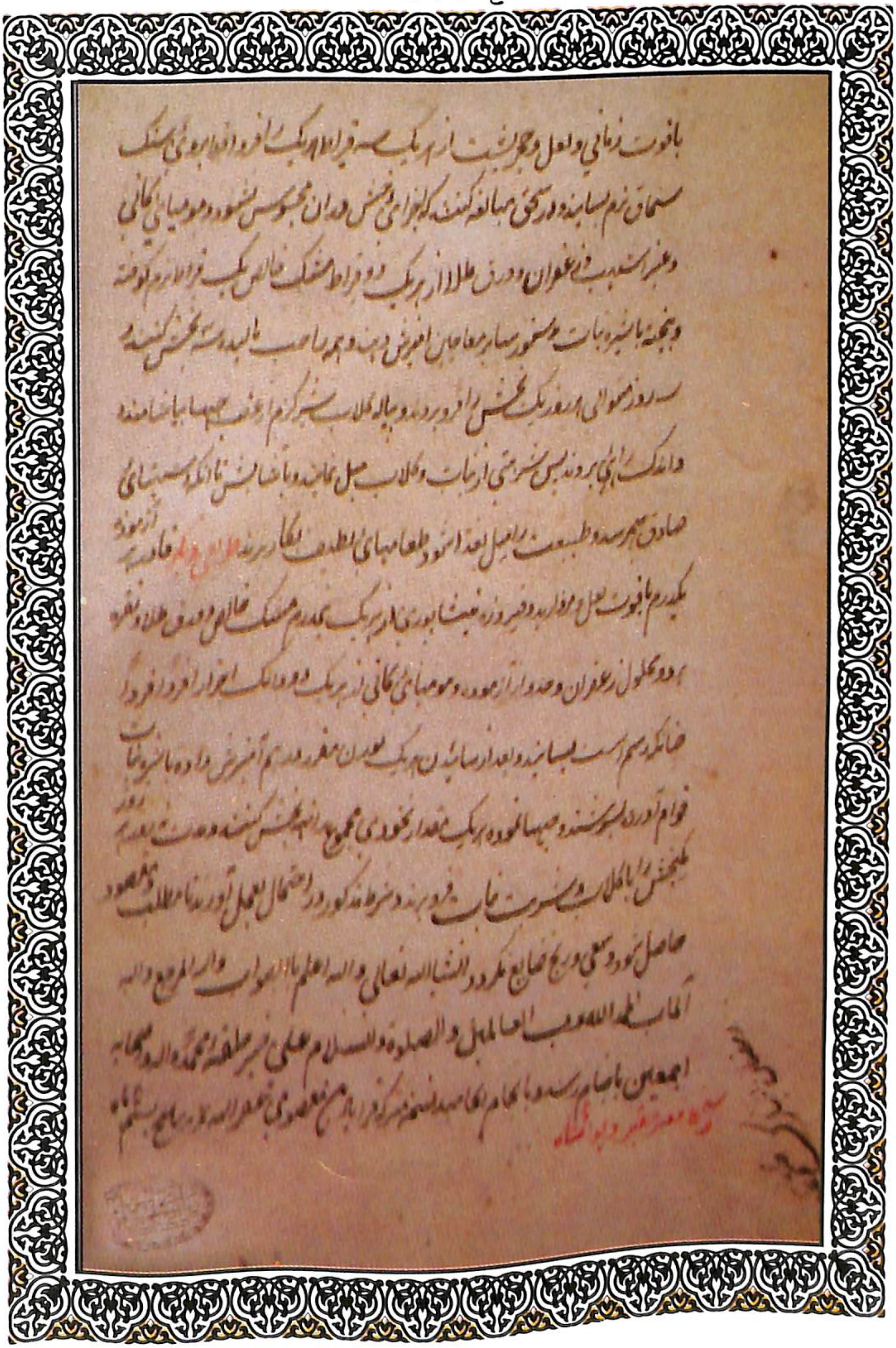
ساختن ادویه مرکب و طریق شناختن تجربات دهندان که به تحلیل و تعدیل محتاج است

و فایده سوختن ادویه و تقلیل قلم رات و ... و در بیان نمودن ... معنوی نمودن

سفوف ... و طریق استخراج عسل بلادر و کیفیت حل طلق و عقد سیماب و دانستن

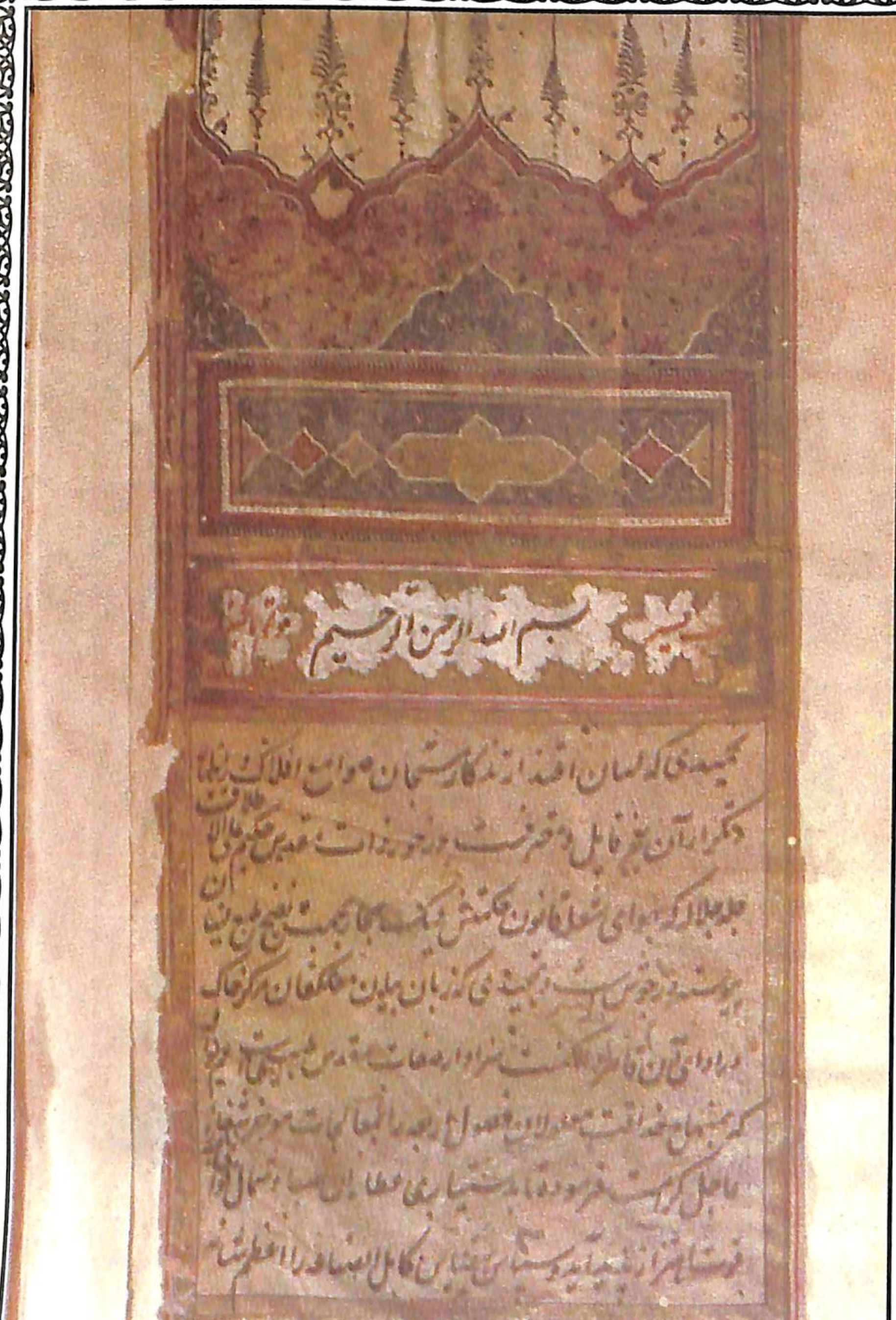
بدل ادویه و ترجمه و تفسیر اسمای تراکیب بزبان عربی و فارسی و یونانی و هندی و الفاظی

अंतिम पृष्ठ

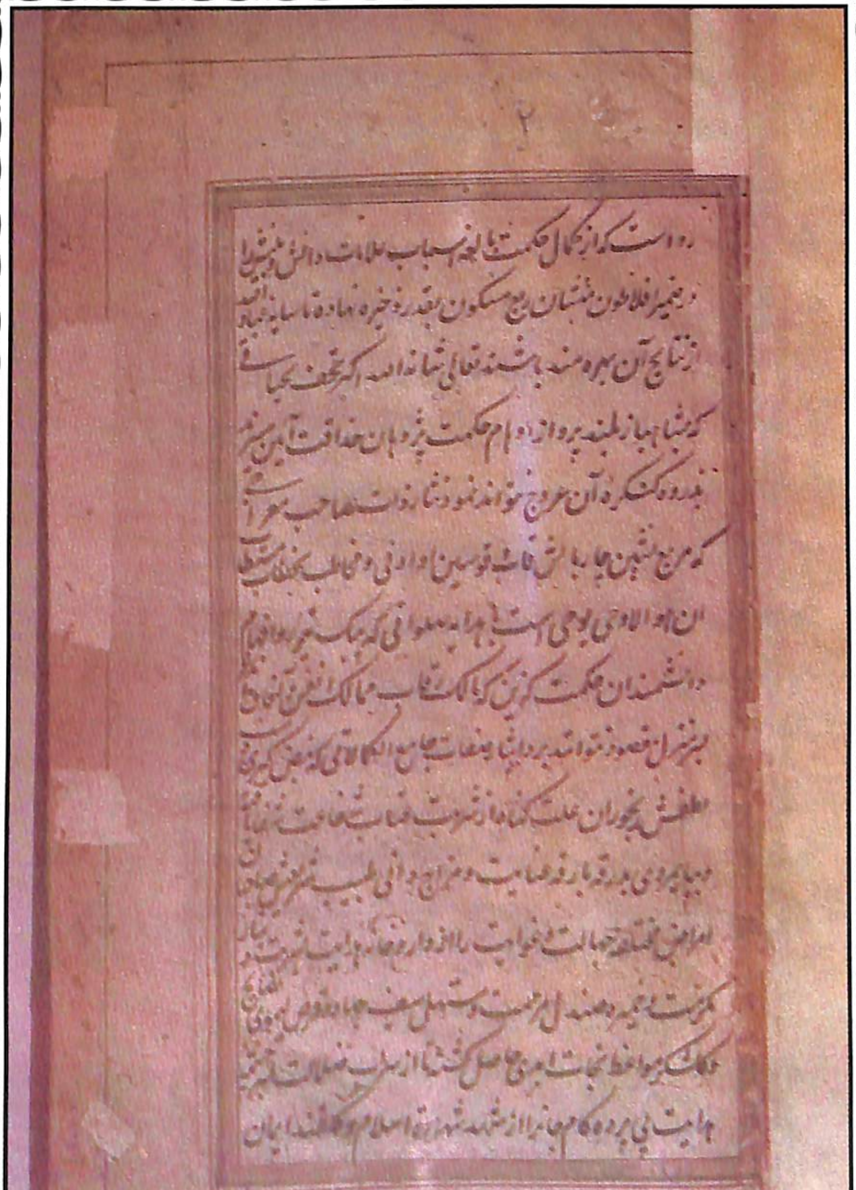

یاقوت رمانی و لعل و جگر [illegible] از هر یک سه قیراط [illegible] مشک
سماق نرم بسایند و در تحقیق مبالغه کنند که اجزای [illegible] محسوس شود و مومیائی کانی
و عنبر اشهب و زعفران و ورق طلا از هر یک دو قیراط مشک خالص یک قیراط [illegible]
و جمله با شیره نبات [illegible] مربای اطریفل [illegible]
[illegible]
[illegible]
صادق بهم رسد و طبیعت [illegible]
[illegible]
[illegible] زعفران [illegible] مومیائی کانی از هر یک [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
حاصل شود [illegible] ان شاء الله تعالی والله اعلم بالصواب والیه المرجع والمآب
[illegible] الحمد لله رب العالمین والصلوة والسلام علی خیر خلقه محمد و آله و اصحابه
اجمعین [illegible]

## नुस्ख़ा खुदा बख्श लाईब्रेरी, पटना

प्रथम पृष्ठ



## द्वितीय पृष्ठ



# अंतिम पृष्ठ

یاقوت رمانی و لعل و حجر بنفش از هر یک سه قیراط هر یک را فرود افراد بر روی سنگ
سماق نرم بسایند و در سحق مبالغه کنند که اجزای نخش در آن محسوس نشود و مومیای کانی
و عنبر اشهب و زعفران و ورق طلا از هر یک دو قیراط مشک خالص یک قیراط نرم کوفته
و بیخته با شیره نبات دستور بسیار معاجین آمیزش دهند و همه را حب مانند ... نخش کنند و
سه روز متوالی ... یک نخش را فرو برند و پیاله گلاب شکر گرم ... بیاشامند
و اندک ... برویند پس شربتی از نبات و گلاب میل نمایند و با شتاب ... تا آنکه ... های
صادق بهم رسد ... را میل بعد ... و طعامهای لطیف بکار برند طریقی دیگر فادزهر آزموده
یکدرم یاقوت لعل و مروارید و فیروزه ... از هر یک ... مشک خالص و ورق طلا و نقره
هر دو محلول زعفران و جدوار آزموده و مومیای کانی از هر یک دو دانگ اجزا را فرد فرد
چنانکه رسم است بسایند و بعد از سائیدن هر یک بعد از مفرد در هم آمیزش داده با شیره نبات
قوام آورده ... و حب ساخته هر یک مقدار نخودی مجموع را ... کنند و مدت ... روز
یک نخش را با گلاب و شربت نبات فرو برند و شرط مذکور در استعمال بعمل آورند تا مطلب و مقصود
حاصل شود و سعی ... تاخیر نکرده انشاءالله تعالی و الله اعلم بالصواب والیه المرجع والیه
المآب الحمد لله رب العالمین و الصلوة و السلام علی خیر خلقه محمد و آله و اصحابه
اجمعین باتمام رسید ...

بخط فقیر حقیر دیوانشاه

